

मुख़्तसर
सही बुख़ारी

भाग-3

मुसन्निफ :
इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह॰

नजर सानी :
शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी अनुवाद :
ऐजाज़ ख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि

मुख़्तसर सही बुख़ारी

(हिन्दी)

इमाम अबुल अब्बास जैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह.

भाग -3



उर्दू तर्जुमा और फ़ायदे
शैख़ुल हदीस अबू मुहम्मद हाफिज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफिज़हुल्लाह
(फाज़िल मदीना यूनिवर्सिटी)



नज़र सानी
शैख़ुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह



हिन्दी तर्जुमा
ऐजाज़ खान

इस्लामिक बुक सर्विस

मुख़्तसर सही बुख़ारी (भाग - 3)

मुसन्निफ :
इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह.

नजर सानी :
शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी अनुवाद :
ऐजाज़ ख़ान

ISBN 81-7231-92

प्रथम संस्करण – 2008

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-2 (भारत)
फोन : 011-23253514, 23286551, 23244556
फैक्स : 011-23277913, 23247899
E-mail: islamic@eth.net / ibsdelhi@del2.vsnl.net.in
website: www.islamicindia.co.in / www.islamicindia.in

Our Associa

- Al-Munna Book Shop Ltd., **(UAE)**
  (Sharjah) *Tel.:* 06-561-5483, 06-561-4650 / **(Dubai)** *Tel.:* 04-352-9294
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kindgom)**
  Tel.: 020-8911-9797
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarta (Indonesia)**
  Tel.: 0062-21-35-23456
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**
  Tel.: 040-6680-6285

Printed in India

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ، مَنْ يَّهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ۝٧٠ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

तर्जुमा : बिलाशुबा सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी तारीफ करते हैं, उससे मदद मांगते हैं जिसे अल्लाह राह दिखाये, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अपने दर से धुतकार दे, उसके लिए कोई रहबर नहीं हो सकता और मैं गवाही देता हूँ कि मअबूदे बरहक सिर्फ अल्लाह तआला है, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हम्दो सलात के बाद यकीनन तमाम बातों से बेहतर बात अल्लाह तआला की किताब है और तमाम तरीकों से अच्छा तरीका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों से बदतरीन काम वोह है जो (अल्लाह के दीन में) अपनी तरफ़ से निकाले जायें। और हर बिदअत गुमराही है।" (मुस्लिम, हदीस नं. 867)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो। जैसा के उससे डरने का हक़ है और तुम्हें मौत न आये मगर, इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।"

(सूरा ए आले इमरान, पारा 4, आयत नं. 102)

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और (फिर) उस जान से उसकी बीवी को बनाया और (फिर) उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा कीं और उन्हें (जमीन पर) फैलाया। अल्लाह से डरते रहो जिसके ज़रीए (जिसके नाम पर) तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तों (को कता करने) से डरो (बचो)। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।" (सूरा ए निसाअ पारा 4 आयत नं. 1)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ऐसी बात कहो जो मोहकम (सीधी और सच्ची) हो। अल्लाह तुम्हारे आमाल की इस्लाह और तुम्हारे गुनाहों को मआफ़ फरमायेगा और जिस शख़्स ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की।" (सूरा अहजाब पारा 22, आयत नं. 70, 71)

मुकद्दमतुल-किताब

हर किस्म की तारीफ अल्लाह तआला ही के लिए है, जो तमाम मख्लूकात को बेहतरीन अन्दाज और मुनासिब शक्ल व सूरत के साथ पैदा फ़रमाया है। वो ऐसा दाता, मेहरबान और रोज़ी देने वाला है कि किसी हक़दार के हक़ के बग़ैर भी मख्लूक़ को अपनी नेमतों से मालामाल किये हुए है और जब तक सुबह व शाम का यह सिलसिला जारी है, उस वक्त तक अल्लाह तआला की रहमत और सलामती उसके रसूल बरहक पर हो जो अच्छे अख़्लाक की तकमील के लिए भेजे गये थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने तमाम मख्लूकात पर बरतरी और फजीलत अता फरमाई। इसी तरह उसकी आल व औलाद पर भी अल्लाह की रहमत हो जो अल्लाह की राह में बड़ी फय्याजी से खर्च करते हैं और उनके सहाबा-ए-किराम पर भी जो इताअत गुजार और वफादार हैं।

हम्दो सलात के बाद मालूम होना चाहिए कि इमामुल मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह, मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुखारी रह. की अजीमुश्शान जामेअ सही इस्लामी किताबों में सबसे ज्यादा मोतबर और बेशुमार फायदों की हामिल है। लेकिन इसमें अहादीस तकरार के साथ मुख़्तलिफ़ अबवाब में अलग-अलग तौर पर बयान हुई हैं। अगर कोई शख़्स अपनी चाहत की हदीस ढूंढना चाहे तो बहुत इन्तहाई तलाश व जुस्तजू और सख़्त मेहनत के बाद ही उसे मालूम कर सकता है। बेशक इस किस्म के तकरार से इमाम बुख़ारी का मकसद यह था कि मुख्तलिफ असानीद के साथ अहादीस बयान की जाये। ताकि इन्हें दर्जा शोहरत हासिल हो जाये। लेकिन इस मजमूअ-ए-अहादीस से हमारा मकसद नफ्से हदीस से जानकारी हासिल करना है। बाकी रही उनकी सेहत व सिकाहत तो उसके मुताल्लिक सब जानते हैं कि इस मजमूऐ की तमाम अहादीस सही और क़ाबिले ऐतबार हैं। इमाम नववी शरह मुस्लिम के मुक़द्दमे में लिखते हैं।

हजरत इमाम बुखारी रह० एक हदीस को मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ अलग अलग अबवाब में ज़िक्र करते हैं। बाज़ औक़ात इस हदीस का ताल्लुक रखने वाले बाब से बहुत दूर का ताल्लुक़ होता है। चुनांचे अकसर औक़ात इसके मुताल्लिक यह ख़्याल तक नहीं गुज़रता कि इसका यहां ज़िक्र करना मुनासिब होगा। इसलिए एक पढ़ने वाले के लिए इस मुतालब-ए-हदीस को तलाश करना और इसकी तमाम असानीद को मालूम करना बहुत मुश्किल हो जाता है। आपने मज़ीद फ़रमाया "मुताख़्ख़िरीन में से कुछ हुफ़्फ़ाज़ (हाफिज़) इस ग़लतफ़हमी में

मुब्तला हो चुके हैं कि इन्होंने बुख़ारी में ऐसी अहादीस की मौजूदगी से इनकार कर दिया, जो अलग अलग अबवाब में दर्ज थी। लेकिन उनकी तरफ़ बसहूलत ज़ेहन की पहुंच न हो सकी। (शरह नववी, सफ़ह 15, जिल्द 1)

ऐसे हालात में मेरे अन्दर यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि मैं अपनी किताब में मन्दरजा ज़ैल बातों का एहतमाम करूं।

1. जामेअ सही की तमाम अहादीस को उनकी सनदों और तकरार के बग़ैर जमा कर दिया जाये। ताकि मतलूबा हदीस किसी क़िस्म की दुश्वारी के बग़ैर तलाश की जा सके।
2. हर मुकर्रर हदीस को एक ही जगह बयान करूंगा। लेकिन अगर किसी दूसरी जगह इस रिवायत में कोई इज़ाफ़ा हुआ तो पूरी हदीस ज़िक्र करने के बजाय इज़ाफ़ा का हवाला दूंगा।
3. अगर पहली कोई हदीस मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र हुई हो और बाद में कहीं इसकी तफ़सील हो तो इज़ाफ़ी फ़ायदा के पेशे नज़र दूसरी तफ़सीली रिवायत को नक़ल करूंगा।
4. मक़तूअ और मुअल्लक रिवायात को नज़र अन्दाज़ करते हुए सिर्फ मरफ़ूअ और मुत्तसिल अहादीस को बयान करूंगा।
5. सहाबा-ए-किराम और उनके बाद आने वाले दूसरे लोगों के वाक़यात जिनका हदीस से कोई ताल्लुक नहीं और न ही उनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र मुबारक है, जैसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. और हज़रत उमर रज़ि. का सक़ीफ़ा बनी साइदा की तरफ जाना और वहां जाकर आपस में बातचीत करना, नीज़ हज़रत उमर रज़ि. की शहादत अपने बेटे को हज़रत आइशा रज़ि. अनहा से उनके घर में दफ़न होने के लिए इजाज़त लेने की वसीयत, आइन्दा मजलिस शूरा के मुताल्लिक़ उनके इरशादात, इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि.. की बैअत, हज़रत ज़ुबैर रज़ि. की अपने बेटे को क़र्ज़ उतारने की वसीयत और इन जैसे दीगर वाक़यात को भी ज़िक्र नहीं करूंगा।
6. हर हदीस के शुरू में सिर्फ़ उसी सहाबी का नाम ज़िक्र करूंगा, जिसने इस हदीस को बयान किया है। ताकि पहली नज़र में ही उसके रावी का इल्म हो जाये।
7. रावी का नाम लेने में इन्हीं अल्फ़ाज़ का इल्तज़ाम करूंगा जैसा कि इमाम बुख़ारी रह. ने किया है। मसलन इमाम बुख़ारी कभी तो अन आइशा रज़ि.

अनहा और अन अबी अब्बास रज़ि॰ को भी अन अब्दुल्लाह बिन अब्बास कह देते हैं। कभी अन इब्ने उमर रज़ि॰. और कभी कभी अन अब्दुल्लाह बिन उमर। नीज बाज औकात अन अनस रज़ि॰ और बाज मक़ामात पर अन अनस बिन मालिक रज़ि॰. ज़िक्र करते हैं।

अलग़र्ज़ इन्हें इस मामले में उनकी पूरी मुताबक़त करूंगा। इसी तरह कभी सहाबी के हवाले से बयान करते हुए अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कभी क़ाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं।

फिर बाज औक़ात अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाला कजा के अल्फ़ाज ज़िक्र करते हैं। बहरहाल मैंने अल्फ़ाज़ के ज़िक्र करने में इमाम बुख़ारी रह॰ का पूरा पूरा इत्तेबाअ किया है। अगर किसी जगह अल्फ़ाज़ का कोई इख़्तिलाफ़ नज़र आये तो उसे मुतअद्दिद नुस्ख़ों के इख़्तिलाफ़ पर महमूल किया जाये।

तहदीसे नेमत :

अल्लाह के फ़ज़लो करम से मुझे मुख़्तलिफ़ मशाइख़े-आज़म (उस्ताद) से कई एक मुत्तसिल असानीद हासिल हैं जो इमाम बुखारी तक पहुंचती है, उनमें से कुछ ये हैं:-

पहली सनद :

यमन के दारूल हुकूमत तअज में अल्लामा नफ़ीसुद्दीन अबी रबीअ सुलेमान बिन इब्राहीम अलवी से 823 हिजरी में मैंने सही बुखारी के कुछ अजजा (हिस्से) पढ़े और अक्सर का सिमा (सुन) करके उसकी इजाज़ते (सनद) हासिल की। उन्होंने अपने वालिद मोहतरम से इजाजते हदीस ली। फिर अपने उस्ताद शर्फुल मुहद्दिसीन मूसा बिन मूसा बिन अली दिमश्क़ी से जो गजूली के नाम से मशहूर हैं, मुकम्मल तौर पर सही बुख़ारी का दरस लिया।

अल्लामा के वालिद को शैख अबू अब्बास अहमद बिन अबी तालिब हज्जारू से कौलन और उनके उस्ताद को सिमाअन इजाज़त हासिल है।

दूसरी सनद :

मुझे इमाम अबुल फतह मुहम्मद बिन इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बक्र बिन हुसैन मदनी उस्मानी से बुख़ारी के पेशतर हिस्से की सिमाअन और वैसे तमाम किताब

की इजाज़ते रिवायत हासिल है।

इसी तरह शैख इमाम शमसुद्दीन अबू अज़हर मुहम्मद बिन मुहम्मद जज़री दिमश्की से और काजी अल्लामा हाफ़िज़ तक़ीउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद फ़ारसी, जो मक्का मुकर्रमा में औहद-ए-कुज़ा पर फ़ाइज़ थे, उनसे भी मुझे बतौरे इजाज़त सनद हासिल है। इन तीनों शैख़ों को शैखुल मुहद्दिसीन अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सिद्दीक़ दिमश्की अल मअरूफ़ ब इब्ने रसाम से और इन्हें हज़रत अबू अब्बास अल जज़री से इजाज़त हासिल है।

तीसरी सनद :

मैंने अपने शैख़ अबू फ़तह के बेटे शैख़ इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बकर बिन हुसैन मदनी मरागी से भी आली सनद हासिल की है। नीज काज़ीयुलकुज़ाअ मुजद्दिदुद्दीन मुहम्मद बिन याकूब शिराज़ी से भी इजाज़ते आम्मा ली।

इन दोनो शैख़ों को हज़रत अबू अब्बास मज़ार से इजाज़त हासिल है। शैख़ अबू अब्बास अल हज्जार को शैख़ हुसैन बिन मुबारक ज़ुबैदी से उन्हें शैख़ अबुल वक्त, अब्दुल अव्वल बिन ईसा बिन शुऐब बिन अलहरबी से, उन्हें शैख़ अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद मुजफ़्फ़र दाऊदी से, उन्हें इमाम अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हमविया सरखी से और उन्हें शागिर्दे इमाम बुख़ारी शैख़ मुहम्मद बिन यूसुफ़ फरबरी से और उन्हें शैख़ कबीर इमाम मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुख़ारी से सनदे इजाज़त हासिल है।

इनके अलावा भी मुतअद्दिद असानीद हैं, जो इमाम बुख़ारी तक पहुंचती है।

मैंने सिर्फ़ मशहूर और आली इसनाद के ज़िक्र पर इक्तफ़ा किया है। वरना इनके अलावा भी मुझे अलग अलग शैखों (उस्तादों) से इजाज़त हासिल है, जिनका जिक्र तिवालत का बाइस है।

मैंने इस किताब का नाम "अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि" तजवीज़ किया है। दुआ है कि अल्लाह तआला इसे लोगों के लिए नफ़ाबख़्श बनाये और इसके ज़रीये आमालो मक़ासिद की इस्लाह फ़रमाये। आमीन!

"व सल्लल्लाहु अला नबीय्यिना मुहम्मदिंय व आलिही व असहाबिही अजमईन"

तक़दीम

मुख़्तसर सही बुख़ारी नवीं सदी की एक मुहद्दिस जनाब इमाम जैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ ज़ुबैदी रह० की लिखी हुई है। जिसका उन्होंने नाम *'अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि'* रखा है, जिसमें उन्होंने सही बुख़ारी की मरफ़ूअ मुत्तसिल अहादीस को चुना है। इमाम बुख़ारी रह० एक एक हदीस फहमी, मसाईल के इस्तंबात (मसाईल निकालने) की ख़ातिर कई बार दस-दस, बीस-बीस (और इससे कम और ज़्यादा) जगह ले आये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने मेहनत और कोशिश करके इस तकरार को ख़त्म किया है और हदीस को सिर्फ एक दफ़ा ऐसे बाब के तहत लिखा है जिसके साथ उसकी मुताबक़त बिलकुल वाज़ेह और नुमायां है। जिसकी ख़ातिर इन्होंने इमाम बुख़ारी की कुछ कुतुब और बेशुमार अबवाब भी ख़त्म कर दिये हैं।

मिसाल के तौर पर इमाम बुख़ारी रह० ने "किताबुलहीला", "किताबुलइकराही", "किताब अखबारिलआहादी" के नाम से किताब के आख़िर में उनवान क़ायम किये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने इन तीनों अहम कुतुब को हजफ कर दिया है। आखरी किताबुल तौहीद में 18 अबवाब में से इमाम ज़ुबैदी ने सिर्फ़ 7 बाब बयान किये हैं। "किताबुल इअतेसामे बिल किताबी व सुन्नती" में 28 अबवाब में से सिर्फ़ 7 अबवाब बयान किये हैं। इस तरह इमाम ज़ुबैदी की किताब सही बुख़ारी की सिर्फ़ मरफ़ूअ मुत्तसिल रिवायात का इख़्तसार व इन्तेख़ाब है और सही अहादीस का एक मुख़्तसर मजमुआ है, जो इस मक़सद के लिए तैयार किया गया है कि इन्सान इनको बिला तकलीफ याद कर सके और इनकी सेहत के बारे में उसके दिल में किसी तरह का ख़दशा या खटका न रहे। हमारे फ़ाज़िल दोस्त और मोहतरम भाई हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफ़िज़हुल्लाह जो साहिबे इल्म और अहले क़लम

हज़रात में एक ऊँचे मक़ाम पर फाइज़ हैं और बुनयादी तौर पर एक मुदर्रिस है और जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के फारिग़ होने की बिना पर अरबी ज़ुबान और अरबी अदब में महारत रखते हैं। इन्होंने इसका बहुत मेहनत व कोशिश से आसान तर्जुमा किया है और बहुत ज़रूरी जगहों पर बहुत जामेअ और मुख़्तसर फायदे लिखे हैं। वो एक मुदर्रिस होने की हैसियत से तर्जुमे की नजाकत को समझते हैं और साहिबे तहरीर होने की बिना पर उसको बेहतरीन अन्दाज़ में ढालते हैं और एक ख़तीब और वाईज की हैसियत से अवाम की ज़रूरत और जज़्बात से जानकार होने की बिना पर मुश्किल अलफाज इस्तेमाल नहीं करते। मैंने तर्जुमा और फायदे पर नज़रसानी की है। एक आम मुसन्निफ़ जो मुसन्निफ़ न हो और अरबी ज़ुबान की तराकीब और उसलूब से जानकार न हो, उसके तर्जुमे पर नज़रसानी करना और उसको ठीक करना कभी कभी तर्जुमा करने से भी मुश्किल काम होता है। लेकिन माहिर तर्जुमा करने वाले के तर्जुमे पर नज़रसानी मुश्किल काम नहीं होता। बल्कि यह तो हमवार बनी हुई ज़मीन पर बेल-बूटे उगाना होता है। इसलिए तर्जुमे की नोक पलक संवारना कोई मुश्किल काम न था। लेकिन इसके बावजूद इनके काम में कहीं कमी का रह जाना कोई बड़ी या काबिले गिरफ्त बात नहीं है। इसलिए कुछ जगहों पर नागुरेज सूरत में तर्जुमे को सही और ठीक करने की ख़ातिर कुछ लफ़्ज़ी तब्दीली की गई है और कुछ जगहों पर फ़ायदों में ज़रूरत के तहत इज़ाफा किया गया है और वहां निशानदेही भी कर दी गई है। लेकिन तर्जुमे की तसहीह में निशानदेही करना मुमकिन होता है और न मुनासिब। इसलिए इसकी निशानदेही नहीं की गई। बल्कि एक काबिले ऐतमाद साथी होने के नाते उनके इल्म में लाये बग़ैर यह इल्मी जसारत (बहादुरी) की गई है।

इस इल्मी और तहक़ीक़ी काम पर वो मुबारकबाद के हक़दार हैं और वो इदारा जो इस काम को इस्लाहे उम्मत और जज़्बे तब्लीग़ के

तहत मन्ज़रे आम पर (सबके सामने) लाया है, वो भी क़ाबिले सताईश है। हम यह उम्मीद रखते हैं कि उर्दू पढ़ने वालों के लिए दीन की समझ और इत्तबाअ-ए-सुन्नत के लिए यह तर्जुमा और फ़ायदे इन्शा अल्लाह बहुत ज़्यादा फ़ायदेमंद होंगे।

अब्दुल अज़ीज़ अलवी

फ़ैसलाबादी

22 जमादी अव्वल, 1420 हिजरी, बमुताबिक़ 16 सितम्बर, 1999

मुख़्तसर सही बुख़ारी लिखने वाले की मुख़्तसर सवानेह उमरी (हालात)

आपका पूरा नाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ़ अश शरजी ज़ुबैदी है जो इमाम ज़ुबैदी के नाम से मशहूर हैं। आप यमन के शहर ज़ुबैद के पास शरजा के मुक़ाम पर जुमे की रात तारीख़ 12 रमज़ान 812 हिजरी मुताबिक़ 1410 ईस्वी को पैदा हुये। उस वक़्त के बड़े बड़े उलमा से फ़ायदा उठाया। फन्ने हदीस पर इन्हें ख़ास ग़लबा था। अपने वक़्त के बहुत बड़े मुहद्दिस और माहिरे अदब थे। यमनी रियासतों में काफ़ी सालों तक दरसे हदीस दिया। बिल आख़िर 893 हि॰ मुताबिक़ 1488 ई॰ को अपनी उम्र की 81 बहारें देखने के बाद शहर ज़ुबैद में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं दफ़न किये गये।

फ़ेहरिस्त

बाब सं.	बाब के बारे में	पेज न.

कुरआन की तफ़सीर के बयान में

फ़ज़ाईले कुरआन के बयान में

निकाह के बयान में

तलाक के बयान में

मरीजों के बयान में

इलाज के बयान में

लिबास के बयान में

आदाब के बयान में

इजाजत लेने का बयान

तकदीर के बयान में

कसम और नजर के बयान में

बाब सं.	बाब के बारे में	पेज न.
	दियतों के बयान में	

किताबो फजाइले असहाबिनबी-ए-सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व रजि अन्हु वमन साहिबन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवराहु मिनल मुस्लिमीना फहवा मिन असहाबीही

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम रजि. के फजाईल व मनाकिब

मुसलमानों में जिस आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत इख्तेयार की या आपको देखा तो वो सहाबी है। (बशर्ते कि इस्लाम की हालत में फौत हुए हो।)

बाब 1:

١ - باب

1520: जुबैर बिन मुतईम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई तो आपने उसे हुक्म दिया कि वो फिर आपके पास आये। उसने कहा, अगर में फिर आऊं और आपको न पाऊं। इससे उसकी मुराद वफात थी। आपने फरमाया, अगर मुझे न पाओ तो अबू बकर रजि. के पास चले आना।

١٥٢٠ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَتِ ٱمْرَأَةُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ، فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، قَالَتْ: أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ؟ كَأَنَّهَا تَقُولُ: ٱلْمَوْتَ، قَالَ ﷺ: (إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ) رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ. [رواه البخاري: ٣٦٥٩]

फायदे: इस हदीस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. के खलीफा होने का इशारा मिलता है। नीज उसमें उन शिया हजरात की तरदीद है जो दावा करते हैं कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अली और हजरत अब्बास रजि. को खलीफा बनाने की वसीयत की थी।

 (औनुलबारी 7/28)

١٥٢١ : عَنْ عَمَّارٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلَّا خَمْسَةُ أَعْبُدٍ وَٱمْرَأَتَانِ، وَأَبُو بَكْرٍ. [رواه البخاري: ٣٦٦٠]

1521: अम्मार रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस वक्त देखा जबकि आपके साथ पांच गुलामों, दो औरतों और अबू बकर रजि. के अलावा और कोई न था।

फायदे: हजरत अम्मार रजि. का मतलब है कि हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. आजाद लोगों से पहले आदमी हैं, जिन्होंने अपने इस्लाम का बर सरे आम इजहार किया था, वैसे बेशुमार ऐसे मुसलमान मौजूद थे जो अपने इस्लाम को छुपाये हुए थे। (औनुलबारी 7/29)

١٥٢٢ : عَنْ أَبِي ٱلدَّرْدَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ إِذْ أَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ آخِذًا بِطَرَفِ ثَوْبِهِ، حَتَّى أَبْدَى عَنْ رُكْبَتِهِ، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (أَمَّا صَاحِبُكُمْ فَقَدْ غَامَرَ)، فَسَلَّمَ وَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ إِنَّهُ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ ٱبْنِ ٱلْخَطَّابِ شَيْءٌ، فَأَسْرَعْتُ إِلَيْهِ ثُمَّ نَدِمْتُ، فَسَأَلْتُهُ أَنْ يَغْفِرَ لِي فَأَبَى عَلَيَّ، فَأَقْبَلْتُ إِلَيْكَ، فَقَالَ: (يَغْفِرُ ٱللهُ لَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ)، ثَلَاثًا، ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ نَدِمَ فَأَتَى مَنْزِلَ أَبِي بَكْرٍ، فَسَأَلَ: أَثَمَّ أَبُو بَكْرٍ؟ فَقَالُوا: لَا، فَأَتَى إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، فَجَعَلَ وَجْهُ

1522: अबू दरदा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठा हुआ था। इतने में अबू बकर सिद्दीक रजि. अपनी चादर का किनारा उठाये हुए आये, यहां तक कि आपका घुटना नंगा हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम्हारे दोस्त किसी से लड़ कर आये हैं। फिर अबू बकर रजि. ने सलाम किया और कहा कि मेरे और इब्ने खत्ताब रजि. के बीच कुछ झगड़ा हो गया था। मैंने जल्दी से उन्हें सख्त सुस्त कर कह दिया। फिर मैं शर्मिन्दा

النَّبِيِّ ﷺ يَتَمَعَّرُ، حَتَّى أَشْفَقَ أَبُو بَكْرٍ، فَجَثَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَٱللهِ أَنَا كُنْتُ أَظْلَمَ، مَرَّتَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ بَعَثَنِي إِلَيْكُمْ فَقُلْتُمْ: كَذَبْتَ، وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: صَدَقَ. وَوَاسَانِي بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ، فَهَلْ أَنْتُمْ تَارِكُو لِي صَاحِبِي). مَرَّتَيْنِ، فَمَا أُوذِيَ بَعْدَهَا. [رواه البخاري: ٣٦٦١]

हुआ (और उनसे माफी मांगी) लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। अब मैं आपके पास हाजिर हुआ हूँ। आपने फरमाया, ऐ अबू बकर रजि.! अल्लाह तुम्हें माफ फरमाये। आपने यह तीन बार फरमाया। फिर ऐसा हुआ कि उमर रजि. शर्मिन्दा हुए और अबू बकर रजि. के घर पर आये और पूछा कि अबू बकर रजि. यहां मौजूद हैं? घर वालों ने जवाब दिया, नहीं! फिर उमर रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गये और उन्हें सलाम किया। उन्हें देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे का रंग ऐसा बदला कि अबू बकर रजि. डर गये और घुटनों के बल बैठकर कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की कसम मैंने ही ज्यादती की थी। उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ लोगों! अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ पैगम्बर बनाकर भेजा तो तुम लोगों ने मुझे झूटा कह दिया और अबू बकर रजि. ने मुझे सच्चा कहा और उन्होंने अपने माल और जान से मेरी खिदमत की। क्या तुम मेरी खातिर मेरे दोस्त को सताना छोड़ सकते हो? और आपने यह दो बार कहा। इस इरशादे गरामी के बाद अबू बकर रजि. को फिर किसी ने नहीं सताया।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी इन्सान के सामने उसकी तारीफ करना जाइज है, लेकिन यह उस वक्त जब उसके फितने में मुब्तला होने का अन्देशा न हो। अगर उस तारीफ से उसके अन्दर खुदपसन्दी के पैदा होने का खतरा है तो बचना चाहिए।

(औनुलबारी 7/31)

١٥٢٣ : عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلاَسِلِ، فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: (عائِشَةُ). فَقُلْتُ: مِنَ الرِّجَالِ؟ فَقَالَ: (أَبُوهَا)، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: (ثُمَّ عمَرُ بْنُ الخَطَّابِ). فَعَدَّ رِجالًا. [رواه البخاري: ٣٦٦٢]

1523: अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें गजवा जाते सलासील में अमीर बनाकर भेजा था। वो कहते हैं कि जब मैं वापस आपके पास आया तो मैंने कहा कि सब लोगों में से कौन आदमी आपको ज्यादा पसन्द है? आपने फरमाया, आइशा रजि.! मैंने कहा, मर्दो-में से कौन? आपने फरमाया कि उनके वालिदगरामी (अबू बकर रजि.)। मैंने पूछा फिर कौन? फिर फरमाया उमर बिन खत्ताब रजि.। इस तरह दर्जा ब दर्जा आपने कई आदमियों के नाम लिये।

फायदे: वाक्या यह था कि जिस मुहिम में हजरत अम्र बिन आस रजि. को अमीर बनाया गया था। उस दस्ते में हजरत अबू बकर और हजरत उमर रजि. भी मौजूद थे। इसी बिना पर हजरत अम्र बिन आस रजि. के दिल में ख्याल गुजरा कि शायद वो उन सबसे बेहतर हैं। इसी लिए उन्हें अमीर बनाया गया है। (औनुलबारी 7/32)

١٥٢٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلاَءَ، لَمْ يَنْظُرِ ٱللهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ أَحَدَ شِقَّيْ ثَوْبِي يَسْتَرْخِي إِلاَّ أَنْ أَتَعَاهَدَ ذٰلِكَ مِنْهُ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّكَ لَسْتَ تَصْنَعُ ذٰلِكَ خُيَلاَءَ). [رواه البخاري: ٣٦٦٥]

1524: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी घमण्ड की नियत से अपना कपड़ा नीचे लटकायेगा तो अल्लाह उसे कयामत के दिन रहमत की नजरों से नहीं देखेगा। यह सुनकर अबू बकर रजि. गोया हुए मेरे कपड़े का एक गोशा लटक जाता है। हां! खूब ख्याल रखू तो शायद न लटके। इस पर रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम ऐसा बतौर घमण्ड नहीं करते हो।

फायदे: हजरत अबू बकर रजि. पतले जिस्म वाले थे। इस बिना पर कमर में कुछ झुकाव था। कोशिश के बावजूद कई बार आपकी चादर टखनों से नीचे हो जाती। ऐसे हालात में इन्सान सख्त फटकार की जद में नहीं आता। (फतहुलबारी 10/266)

1525: अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने अपने घर वजू किया और बाहर निकले। दिल में कहने लगे कि आज मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आपके साथ रहूंगा। खैर वो मस्जिद में आये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में पूछा। लोगों ने कहा, कहीं बाहर उस तरफ तशरीफ ले गये हैं। लिहाजा मैं आपके पैरों के निशानों पर आपके बारे में पूछता हुआ रवाना हुआ और चाहे अरीस के कुए तक जा पहुंचा। और दरवाजे पर बैठ गया। उसका दरवाजा खजूर की शाखों से बना हुआ था। चूनांचे जब आप रफेअ हाजत से फारिग हुए और वजू कर चुके तो मैं आपके पास गया तो आप अरीस के कुंए यानी उसकी मुण्डेर के बीच कुंए में पांव लटकाये हुए बैठे थे और अपनी पिण्डलियों

١٥٢٥ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ خَرَجَ، قَالَ: فَقُلْتُ: لأَلْزَمَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَلأَكُونَنَّ مَعَهُ يَوْمِي هٰذَا، قَالَ: فَجَاءَ المَسْجِدَ، فَسَأَلَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالُوا: خَرَجَ وَوَجَّهَ هَا هُنَا، فَخَرَجْتُ عَلَى إِثْرِهِ، أَسْأَلُ عَنْهُ، حَتَّى دَخَلَ بِئْرَ أَرِيسٍ، فَجَلَسْتُ عِنْدَ البَابِ، وَبَابُهَا مِنْ جَرِيدٍ، حَتَّى قَضَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حَاجَتَهُ فَتَوَضَّأَ، فَقُمْتُ إِلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى بِئْرِ أَرِيسٍ وَتَوَسَّطَ قُفَّهَا، وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي البِئْرِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، ثُمَّ انْصَرَفْتُ فَجَلَسْتُ عِنْدَ البَابِ، فَقُلْتُ: لأَكُونَنَّ بَوَّابَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ اليَوْمَ، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَدَفَعَ البَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: أَبُو بَكْرٍ، فَقُلْتُ: عَلَى رِسْلِكَ، ثُمَّ ذَهَبْتُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هٰذَا أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ؟ فَقَالَ: (ائْذَنْ لَهُ

وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ). فَأَقْبَلْتُ حَتَّى قُلْتُ لِأَبِي بَكْرٍ: ٱدْخُلْ، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُبَشِّرُكَ بِالْجَنَّةِ، فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَجَلَسَ عَنْ يَمِينِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ مَعَهُ فِي الْقُفِّ، وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ كَمَا صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ، وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ، ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ، وَقَدْ تَرَكْتُ أَخِي يَتَوَضَّأُ وَيَلْحَقُنِي، فَقُلْتُ: إِنْ يُرِدِ ٱللهُ بِفُلَانٍ خَيْرًا - يُرِيدُ أَخَاهُ - يَأْتِ بِهِ، فَإِذَا إِنْسَانٌ يُحَرِّكُ الْبَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ، ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقُلْتُ: هٰذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسْتَأْذِنُ؟ فَقَالَ: (ٱئْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)، فَجِئْتُ فَقُلْتُ لَهُ: ٱدْخُلْ، وَبَشَّرَكَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ، فَدَخَلَ فَجَلَسَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي الْقُفِّ عَنْ يَسَارِهِ، وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ، ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ، فَقُلْتُ: إِنْ يُرِدِ ٱللهُ بِفُلَانٍ خَيْرًا يَأْتِ بِهِ، فَجَاءَ إِنْسَانٌ يُحَرِّكُ الْبَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ، فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ، فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: (ٱئْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ، عَلَى بَلْوَى

को खोल कर कुंए में लटका रखा था। मैं आपको सलाम करके लौट आया और दरवाजे पर बैठ गया। मैंने पूछा कि आज मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दरबान बनूंगा। इतने में अबू बकर सिद्दीक रजि. आये और उन्होंने दरवाजा खटखटाया। मैंने पूछा कौन है? उन्होंने कहा, अबू बकर रजि! मैंने कहा, जरा ठहर जाये। मैंने जाकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू बकर रजि. इजाजत मांगते हैं। आपने फरमाया, उनको आने दो और उन्हें जन्नत की खुशखबरी भी दो। लिहाजा मैंने अबू बकर रजि. से आकर कहा, अन्दर आ जाये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको जन्नत की खुशखबरी देते हैं। चूनांचे अबू बकर रजि. अन्दर आये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दायीं तरफ आपके साथ मुण्डेर पर बैठ गये और उन्होंने भी इस तरह अपने दोनों पांव कुएं में लटका दिये। जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लटका रखे थे और अपनी पिण्डलियां भी खोल दी। मैं वापस जाकर बैठ गया और मैं अपने भाई को घर में

نَصِيبُهُ)، فَجِئْتُ فَقُلْتُ لَهُ: ادْخُلْ وَبَشَّرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ، عَلَى بَلْوَى تُصِيبُكَ، فَدَخَلَ فَوَجَدَ الْقُفَّ قَدْ مُلِئَ، فَجَلَسَ وُجَاهَهُ مِنَ الشِّقِّ الآخَرِ. [رواه البخاري: ٣٦٧٤]

वजू करते छोड़ आया था। मैंने अपने दिल में कहा, अगर अल्लाह को उसकी भलाई मंजूर है तो जरूर उसको यहां ले आयेगा। इतने में क्या देखता हूँ कि कोई दरवाजा हिला रहा है। मैंने पूछा कौन है? उसने कहा, उमर बिन खत्ताब रजि.! मैंने कहा, जरा ठहर जाओ, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, आपको सलाम कहकर गुजारिश की कि उमर रजि. हाजिर हैं और आपके पास आने की इजाजत चाहते हैं। आपने फरमाया कि उन्हें इजाजत और जन्नत की खुशखबरी दे दो। इस पर मैंने वापस जाकर कहा, अन्दर आ जाये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको जन्नत की खुशखबरी दी है। चूनांचे वो अन्दर आये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कुंए की मुण्डेर पर आपके बायीं तरफ बैठ गये। और अपने दोनों पांव कुएं में लटका दिये। फिर मैं वापस आकर दरवाजे पर बैठ गया और दिल में वही कहने लगा कि अगर अल्लाह फलां के साथ भलाई चाहेगा तो उसे ले आयेगा। इतने में एक आदमी आया और दरवाजे को हरकत देने लगा। मैंने पूछा कौन है? उसने कहा, उसमान रजि.! मैंने कहा, ठहरिये! चूंनाचे मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उन्हें खबर दी तो आपने फरमाया, उन्हें अन्दर आने की इजाजत दो और आजमाईश उन्हें पहुंचेगी उसके बदले में जन्नत की खुशखबरी भी दे दो। चूनांचे मैं आया और उनसे कहा कि आ जाओ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस मुसीबत पर जो आपको पहुंचेगी, जन्नत की खुशखबरी दी है। उसमान रजि. भी अन्दर आ गये और उन्होंने मुण्डेर को भरा हुआ देखा तो वो आपके सामने दूसरी तरफ बैठ गये।

फायदेः इस हदीस में हजरत उसमान रजि. के बारे में बताया गया है कि वो एक खतरनाक फितने की जद में आयेंगे। मुसनद इमाम अहमद में पूरा खुलासा है कि आपको जुल्म के तौर पर शहीद कर दिया जाये। चूनांचे यह बताना सही तौर पर साबित हुआ। (फतहुलबारी 7/46)

1526: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे असहाब को बुरा भला न कहो, क्योंकि अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ के बराबर भी सोना खर्च करे तो वो उनके मुद या आधे मुद के बराबर भी नहीं पहुंच सकता।

١٥٢٦ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا، مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ). [رواه البخاري: ٣٦٧٣]

फायदेः इसका मकसद मुहाजिरीन अव्वलीन और अनसार की फजीलत बयान करना है जिनमें अबू बकर सिद्दीक रजि. बर सर फहरिस्त हैं। इन हजरात ने मुसलमानों पर ऐसे वक्त में खर्च किया जब कुफ्फार का गलबा था और मुसलमान माल व दौलत से मोहताज थे।

1527: अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार उहद पहाड़ पर चढ़े। आपके साथ अबू बकर सिद्दीक, उमर फारूक और उसमान रजि. भी थे। इतने में पहाड़ को जुंबीश हुई। आपने फरमाया, ऐ उहद! ठहर जा, क्योंकि तुझ पर इस वक्त एक नबी एक सिद्दीक और दो शहीद हैं।

١٥٢٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَعِدَ أُحُدًا، وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ بِهِمْ، فَقَالَ: (اثْبُتْ أُحُدُ. فَإِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ). [رواه البخاري: ٣٦٧٥]

फायदेः एक रिवायत में है कि आपने उहद पहाड़ पर पांव मारा और मजकूरा बाला इरशाद फरमाया। बिलाशुबा यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का एक मौजिजा था। हजरत उमर रजि. और हजरत उसमान रजि. शहीद हुए और हजरत अबू बकर रजि. को मकामे सिद्दीकियत से नवाजा।

١٥٢٨ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: إِنِّي لَوَاقِفٌ فِي قَوْمٍ، نَدْعُو ٱللهَ لِعُمَرَ بْنِ ٱلْخَطَّابِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَقَدْ وُضِعَ عَلَى سَرِيرِهِ، إِذَا رَجُلٌ مِنْ خَلْفِي قَدْ وَضَعَ مِرْفَقَهُ عَلَى مَنْكِبِي يَقُولُ: رَحِمَكَ ٱللهُ، إِنِّي كُنْتُ لَأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ ٱللهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ، لِأَنِّي كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (كُنْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَفَعَلْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَٱنْطَلَقْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ). فَإِنْ كُنْتُ لَأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ ٱللهُ مَعَهُمَا، فَٱلْتَفَتُّ، فَإِذَا هُوَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ. [رواه البخاري: ٣٦٧٧]

1528: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं कुछ लोगों के साथ ठहरा था और हम अल्लाह से उमर रजि. के लिए बख्शीश की दुआ कर रहे थे, जबकि उनका जनाजा चारपाई पर रखा जा चुका था। इतने में एक आदमी ने मेरे पीछे से आकर अपनी कोहनी कंधे पर रखी और कहने लगा, अल्लाह तुम पर रहम करे। मैं उम्मीद रखता हूं कि अल्लाह तुम्हें तुम्हारे साथियों के साथ रखेगा। क्योंकि मैं अक्सर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना करता था कि फलां जगह पर मैं था और अबू बकर व उमर रजि. थे। मैंने और अबू बकर व उमर रजि. ने यह किया। मैंने और अबू बकर व उमर रजि. चले। मुझे इसलिए उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हें उनके साथ रखेगा। फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो यह कलमात कहने वाले अली बिन अबी तालिब रजि. थे।

फायदे: हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. तरेसठ साल की उम्र में फौत हुए। मुद्दत खिलाफत दो साल तीन माह और चन्द दिन थी। कहते हैं कि आपने सर्दी के दिन गुस्ल फरमाया फिर पन्द्रह दिन तक बुखार रहा

और अल्लाह को प्यारे हो गये। (फतहुलबारी 7/49)

बाब 2: हजरत उमर बिन खत्ताब रजि. के फजाईल।

٢ - باب: مَنَاقِبُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

1529: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने अपने आपको ख्वाब की हालत में जन्नत में दाखिल होते हुए देखा और वहां अबू तल्हा रजि. की बीवी रूमैसा को भी देखा और मैंने एक आदमी के चलने की आवाज सुनकर पूछा, यह कौन है? किसी ने जवाब दिया कि बिलाल रजि. हैं। फिर मैंने वहां एक महल देखा, उसके सहन में एक जवान औरत बैठी हुई थी। मैंने पूछा, यह किसका महल है? किसी ने कहा, उमर रजि. का है। फिर मैंने इरादा किया कि महल में दाखिल होकर उसे देखूं, मगर ऐ उमर! तुम्हारी गैरत मुझे याद आ गई। उमर रजि. ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हो। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं आप पर गैबत करूं?

١٥٢٩ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (رأَيْتُنِي دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، فَإِذَا أَنَا بِالرُّمَيْصَاءِ، ٱمْرَأَةِ أَبِي طَلْحَةَ، وَسَمِعْتُ خَشَفَةً، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: هٰذَا بِلَالٌ، وَرَأَيْتُ قَصْرًا بِفِنَائِهِ جارِيَةٌ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هٰذَا؟ فَقَالُوا لِعُمَرَ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَهُ فَأَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ غَيْرَتَكَ). فَقَالَ عُمَرُ: بِأَبِي وَأُمِّي يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَعَلَيْكَ أَغارُ. [رواه البخاري: ٣٦٧٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि हजरत उमर रजि. उसी मजलिस में रोने लगे, शायद यह खुशी मुर्सरत की वजह से हो। एक दूसरी रिवायत में है कि हजरत उमर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपकी वजह से तो हमें हिदायत और बुलन्द रूतबा अता हुआ है। (फतहुल बारी 7/55)

1530: अनस रजि. से रिवायत है कि

١٥٣٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ

اللّٰهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ السَّاعَةِ، فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: (وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟) قَالَ: لَا شَيْءَ، إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ﷺ، فَقَالَ: (أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ). قَالَ أَنَسٌ: فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرَحَنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: (أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ). قَالَ أَنَسٌ: فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ. [رواه البخاري: ٣٦٨٨]

एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कयामत कब आयेगी? आपने फरमाया, तूने उसके लिए क्या सामान तैयार किया है? उसने कहा, कुछ भी नहीं। अलबत्ता मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता हूँ। आपने फरमाया, बस तू कयामत के दिन उन्हीं के साथ होगा, जिनसे मुहब्बत रखता है। अनस रजि. का बयान है कि हम किसी बात से इतने खुश न हुए, जिस कद्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस फरमान से खुश हुए कि जिसको तू महबूब रखता है, उन्हीं के साथ होगा। अनस रजि. कहते हैं कि मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बकर रजि. और उमर रजि. को दोस्त रखता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस मुहब्बत की वजह से मैं उनके साथ होऊंगा। अगरचे मैंने उनके से अमल नहीं किए हैं।

फायदे: ऐ अल्लाह हम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. से मुहब्बत करते हैं। इसलिए कयामत के दिन हमें भी उनकी दोस्ती नसीब फरमा। अगरचे हम उन हजरात जैसे काम नहीं कर सके।

١٥٣١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ، يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا

1531: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम से पहले बनी इस्राईल में कुछ लोग ऐसे होते थे जिनके

أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ مِنْ أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ). [رواه البخاري: ٣٦٨٩]

दिल में अल्लाह की तरफ से बात डाल दी जाती थी। हालांकि वो नबी न होते थे। लिहाजा अगर मेरी उम्मत में कोई काबिल है तो वो उमर रजि. हैं।

फायदे: एक रिवायत में हजरत उमर रजि. के बारे में मुहद्दिस का लफ्ज इस्तेमाल हुआ है। जिसका मतलब यह है कि उन्हें सही बातों की खबर होती थी। एक रिवायत में है कि हजरत उमर रजि. के दिल और जुबान पर हक जारी होता था। (फतहुल बारी 7/62)

٣ - باب: مَنَاقِبُ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

बाब 3: हजरत उस्मान बिन अफ्फान रजि. के फजाईल।

١٥٣٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ جَاءَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ مِصْرَ فَقَالَ لَهُ: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّ عُثْمَانَ فَرَّ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقَالَ: تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَدْرٍ وَلَمْ يَشْهَدْ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ٱللهُ أَكْبَرُ. قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: تَعَالَ أُبَيِّنْ لَكَ، أَمَّا فِرَارُهُ يَوْمَ أُحُدٍ، فَأَشْهَدُ أَنَّ ٱللهَ عَفَا عَنْهُ وَغَفَرَ لَهُ، وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَتْ تَحْتَهُ بِنْتُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَكَانَتْ مَرِيضَةً، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)، وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ، فَلَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِبَطْنِ

1532: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उनके पास अहले मिस्र में से एक आदमी आया और कहने लगा, तुम्हें मालूम है कि उस्मान रजि. उहद के दिन मैदान से भाग निकले थे? उन्होंने कहा, हां बेशक! फिर उसने कहा, क्या तुम्हें इल्म है कि वो जंगे बदर से गायब थे? और उसमें शरीक न हुए थे। उन्होंने कहा, हां जानता हूं। फिर उसने कहा, क्या तुम जानते हो कि वो बैयत रिजवान से भी गायब थे और उसमें शरीक न हुए थे। उन्होंने फरमाया, हां। तब उस आदमी ने नारा-ए-तकबीर बुलन्द किया। इस पर अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने फरमाया, इधर आ, मैं तुझ से बयान करता हूँ,

مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ لَبَعَثَهُ مَكَانَهُ، فَبَعَثَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ عُثْمَانَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الرِّضْوَانِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ بِيَدِهِ الْيُمْنَى: (هٰذِهِ يَدُ عُثْمَانَ). فَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ، فَقَالَ: (هٰذِهِ لِعُثْمَانَ). فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: اذْهَبْ بِهَا الآنَ مَعَكَ. [رواه البخاري: ٣٦٩٩]

उहद से भाग जाने की बाबत तो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला ने उन्हें माफ कर दिया और बख्श दिया। रहा बदर की लड़ाई में शरीक न होना तो इसकी वजह यह थी कि उनके निकाह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लख्ते जिगर (बेटी) थीं। वो बीमार हो गई तो उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हें जंगे बदर में शरीक होने वालों के बराबर हिस्सा और सवाब मिलेगा और उनका बैअत रिजवान से गायब रहना तो अगर कोई आदमी मक्का में हजरत उस्मान रजि. से ज्यादा इज्जत वाला होता तो आप उसे रवाना कर देते। लिहाजा उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भेजा था तो आप चले गये और जब बैअत रिजवान हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दायें हाथ को उसमान रजि.का हाथ करार देकर उसे अपने बायें हाथ के ऊपर रख कर फरमाया कि यह उसमान रजि. की बैअत है। फिर इब्ने उमर रजि. ने उस आदमी से फरमाया कि अब इन बातों को भी अपने साथ ले जा।

फायदे: मुसनद बज्जार की रिवायत के बारे में एक बार हजरत अब्दुल रहमान बिन औफ रजि. ने भी ऐतराजात किये थें तो हजरत उसमान रजि. ने खुद उनको वही जवाब दिया जो हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने ऐतराज करने वाले को दिया। (फतहुल बारी 7/73)

बाब 4: हजरत अली बिन अबी तालिब रजि. के फजाईल।

٤ - باب: مَنَاقِبُ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ

١٥٣٣ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ

1533: अली रजि. से रिवायत है कि

عَنْهُ: أَنَّ فاطِمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا شَكَتْ ما تَلْقَى مِنْ أَثَرِ الرَّحى، فَأَتى النَّبِيَّ ﷺ سَبْيٌ، فَٱنْطَلَقَتْ فَلَمْ تَجِدْهُ فَوَجَدَتْ عائِشَةَ فَأَخْبَرَتْهَا، فَلَمَّا جاءَ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ عائِشَةُ بِمَجِيءِ فاطِمَةَ، فَجاءَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ لِأَقُومَ، فَقَالَ: (عَلَى مَكانِكُمَا)، فَقَعَدَ بَيْنَنَا، حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، وَقالَ: (أَلاَ أُعَلِّمُكُمَا خَيْرًا مِمَّا سَأَلْتُمانِي، إِذَا أَخَذْتُمَا مَضاجِعَكُمَا، تُكَبِّرَا أَرْبَعًا وَثَلاثِينَ، وَتُسَبِّحَا ثَلاثًا وَثَلاثِينَ، وَتَحْمَدَا ثَلاثًا وَثَلاثِينَ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ). [رواه البخاري: ٣٧٠٥]

फातमा रजि. ने एक दिन उस तकलीफ की शिकायत की जो उन्हें चक्की पीसने की वजह से होती थी। चूनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जब कुछ कैदी आये तो फातिमा रजि. आपके पास गई। मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी मुलाकात न हो सकी। अलबत्ता आइशा रजि. को पाया तो उनसे कह दिया कि मैं इस मकसद के लिए आई थी। फिर जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये तो आइशा रजि. ने आपसे फातिमा रजि. के आने का जिक्र किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सुनकर हमारे घर तशरीफ लाये, जबकि हम दोनों अपनी ख्वाबगाहों में लेट चुके थे। मैंने उठने का इरादा किया तो आपने फरमाया कि तुम दोनों अपनी जगह पर रहो और आप हमारे बीच बैठ गये। यहां तक कि मैंने आपके पांव की ठण्डक अपने सीने पर महसूस की। फिर आपने फरमाया, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी बात की तालीम न दूं जो तुम्हारी मांगी गई चीज से कहीं बेहतर हो। जब तुम अपनी ख्वाबगाह में जाओ तो चौंतीस बार अल्लाहु अकबर, तैंतीस बार सुब्हान अल्लाह और तैंतीस बार अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ो। यह तुम्हारे लिए खादिम से बेहतर है।

फायदे: इमाम इब्ने तैमिया रह. फरमाते हैं कि जो आदमी इस वजीफे को पाबन्दी से पढ़ता रहे, उसे कभी थकावट का अहसास नहीं होगा। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी लख्ते जिगर हजरत फातिमा रजि. के लिए उसे तजवीज फरमाया था। (फतहुल बारी 4/291)

बाब 5: हजरत जुबैर बिन अव्वाम रजि. के फजाईल।

٥ - باب: مناقب قرابة رسول الله ﷺ

१५३४: عن عبد الله بن الزبير رضي الله عنهما قال: كنت يوم الأحزاب جعلت أنا وعمر بن أبي سلمة رضي الله عنهما في النساء، فنظرت فإذا أنا بالزبير على فرسه يختلف إلى بني قريظة مرتين أو ثلاثا، فلما رجعت قلت: يا أبت رأيتك تختلف؟ قال: أو هل رأيتني يا بني؟ قلت: نعم، قال: كان رسول الله ﷺ قال: (من يأت بني قريظة فيأتيني بخبرهم؟). فانطلقت، فلما رجعت جمع لي رسول الله ﷺ أبويه فقال: (فداك أبي وأمي). [رواه البخاري: ٣٧٢٠]

1534: अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि ऐसा हुआ जंगे अहजाब के दिन मुझे और उमर बिन अबी सलमा रजि. को (कमसिन होने की वजह से) औरतों में छोड़ दिया गया। फिर मैंने जो नजर दौड़ाई तो देखा कि जुबैर रजि. अपने घोड़े पर सवार हैं और दो या तीन बार बनी कुरैजा की तरफ गये और वापिस लौटे। जब जंग खत्म होने पर मैं लौटा तो मैंने कहा, अबू जान! मैंने आपको देखा कि बार बार इधर उधर जाते थे। उन्होंने फरमाया, बेटा तूने मुझे देखा था। मैंने कहा, जी हां। उन्होंने फरमाया, हुआ यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कोई ऐसा है जो बनी कुरैजा के पास जाये और मेरे पास उनकी खबर लाये। चूनांचे मैं गया और जब मैं वापस आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मां-बाप जमा करके फरमाया, मेरे मां-बाप तुम पर फिदा हों।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गजवा उहूद के वक्त हजरत साद बिन अबी वकास रजि. के बारे में अपने मां-बाप को जमा करके फरमाया था "मेरे मां बाप तुम पर फिदा हों।"

(फतहुल बारी 7/81)

٦ - باب: ذِكْرُ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ الله رَضِيَ الله عَنْهُ

बाब 6: हजरत तल्हा बिन उबेदुल्लाह रजि. का बयान।

١٥٣٥ : عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فِي بَعْضِ تِلْكَ الأَيَّامِ الَّتِي قَاتَلَ فِيهِنَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، غَيْرُ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ. [رواه البخاري: ٣٧٢٢، ٣٧٢٣]

1535: तल्हा बिन उबेदुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जंग के वक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मेरे और हजरत साद रजि. के अलावा कोई भी बाकी न रहता था।

फायदे: हजरत तल्हा बिन उबेदुल्लाह रजि. अशरा मुबशरा से हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जानिसार साहबा किराम से थे। हजरत उमर रजि. का फरमान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे आखिर वक्त राजी रहे। (बुखारी, 3700)

١٥٣٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ وَقَى النَّبِيَّ ﷺ بِيَدِهِ فَضُرِبَ فِيهَا حَتَّى شَلَّتْ. [رواه البخاري: ٣٧٢٤]

1536: तल्हा बिन उबेदुल्लाह रजि. से ही रिवायत है कि उन्होंने अपने हाथ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचाया था। उस हाथ में इतने तीर लगे कि वो बेजान हो गया।

फायदे: यह गजवा उहद का वाक्या है। हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. का बयान है कि हजरत तल्हा रजि. को उस दिन सत्तर से ज्यादा जख्म लगे थे और एक अंगूली भी कट गई थी। (फतहुलबारी 7/83)

٧ - باب: مَنَاقِبُ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ الزُّهْرِيِّ رَضِيَ الله عَنْهُ

बाब 7 : हजरत साद बिन अबी वकास रजि. के फजाईल।

١٥٣٧ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَمَعَ لِي النَّبِيُّ

1537: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि

ﷺ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ. [رواه البخاري: ٣٧٢٥]

उहद के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए अपने दोनों मां-बाप जमा कर दिये थे। (यानी फरमाया, मेरे मां-बाप आप पर फिदा हों)

फायदेः हजरत अली रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत साद बिन अबी वकास रजि. के अलावा किसी और सहाबी के लिए अपने मां-बाप को जमा नहीं किया था। शायद हजरत अली रजि. को इस बात का इल्म न हुआ कि हजरत जुबैर रजि. के लिए भी आपने ऐसा ही फरमाया था। या उहद के दिन हजरत साद बिन रजि. को यह एजाज (मर्तबा) हासिल हुआ था। उस दिन किसी और को यह एजाज हासिल नहीं हुआ था। वल्लाह आलम (फतहुलबारी 7/84)

٨ - باب: ذِكْرُ أَصْهَارِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 8 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामादों का बयान।

١٥٣٨ : عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ عَلِيًّا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ، فَسَمِعَتْ بِذٰلِكَ فَاطِمَةُ، فَأَتَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَزْعُمُ قَوْمُكَ أَنَّكَ لَا تَغْضَبُ لِبَنَاتِكَ، وَهٰذَا عَلِيٌّ نَاكِحٌ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ، فَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَسَمِعْتُهُ حِينَ تَشَهَّدَ يَقُولُ: (أَمَّا بَعْدُ، أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنَ الرَّبِيعِ، فَحَدَّثَنِي وَصَدَقَنِي، وَإِنَّ فَاطِمَةَ بَضْعَةٌ مِنِّي، وَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسُوءَهَا، وَٱللهِ لَا تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَبِنْتُ عَدُوِّ ٱللهِ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ)، فَتَرَكَ عَلِيٌّ ٱلْخِطْبَةَ. [رواه البخاري: ٣٧٢٩]

1538: मिस्वर बिन मख्रमा रजि. से रिवायत है कि अली रजि. ने जब अबू जहल की बेटी से मंगनी की तो फातिमा रजि. यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गई और कहा कि आपकी बिरादरी कहती है कि आप अपनी बेटियों की हिमायत में गुस्सा नहीं फरमाते। यही वजह है कि अली अबू जहल की बेटी से निकाह करना चाहते है। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए। मैं उस वक्त

सुन रहा था। जब आपने तशह्हुद के बाद फरमाया, मैंने अबू आस बिन रबीअ रजि. से एक बेटी का निकाह कर दिया तो उसने मुझ से जो बात की, उसे सच्चा कर दिखाया और बेशक फातिमा रजि. मेरे जिगर का टुकड़ा है और मैं यह बात गवारा नहीं करता कि उसे दुख पहुंचे। अल्लाह की कसम! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी और अदुउल्लाह की बेटी एक आदमी के पास नहीं रह सकती, यह सुनते ही अली रजि. ने उस मंगनी को तोड़ दिया।

फायदे: हजरत अबू आस रजि. ने हजरत जैनब रजि. से निकाह करते वक्त यह शर्त की थी कि उनकी मौजूदगी में किसी दूसरी औरत से निकाह नहीं करूंगा। उन्होंने इस शर्त को पूरा किया। शायद हजरत अली रजि. ने भी यही शर्त की होगी। मगर आप भूल गये हों। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुत्बा दिया तो शर्त याद आने पर अपने इरादे से बाज रहे। (फतहुलबारी 7/86)

१٥٣٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ، فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ فَأَحْسَنَ، قَالَ: (حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي). [رواه البخاري: ٣٧٢٩]

1539: मिस्वर बिन मख्रमा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आपने कबीला अब्द समस के अपने एक दामाद का जिक्र किया और दामादी में उसके उम्दा औसाफ की तारीफ फरमाई कि उन्होंने मुझ से जो बात कही, उसे सच्चा कर दिखाया और मुझसे जो वादा किया, उसको पूरा किया।

फायदे: हजरत अबू आस रजि. जब गजवा बदर में कैदी बन कर आये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे रिहा करते वक्त कहा था कि हजरत जैनब रजि. को वापस मदीना भेज देना। चूनांचे उन्होंने उस वादे के मुताबिक उन्हें मदीना रवाना कर दिया था।

(फतहुलबारी 4/399)

बाब 9 : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आजाद किये गये गुलाम हजरत जैद बिन हारिशा रजि. के फजाईल।

٩ - باب: مَنَاقِبُ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ

1540: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर जमा किया और उसामा बिन जैद रजि. को उसका सरदार बनाया तो कुछ लोगों ने उनकी इमारत पर ऐतराज किया। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर तुम उसामा रजि. की सरदारी पर ऐतराज करते हो तो तुमने इससे पहले उसके बाप की सरदारी पर भी ऐतराज किया था। अल्लाह की कसम! सरदारी के लिए निहायत मुनासिब थे और मुझे सब लोगों से ज्यादा महबूब थे आप के बाद यह उसामा रजि. मुझे तमाम लोगों से ज्यादा महबूब हैं।

١٥٤٠ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ بَعْثًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، فَطَعَنَ بَعْضُ النَّاسِ فِي إِمَارَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنْ تَطْعُنُوا فِي إِمَارَتِهِ، فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعُنُونَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ، وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَإِنَّ هٰذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ). [رواه البخاري: ٣٧٣٠]

फायदेः यह लश्कर रोम की तरफ जाने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मौत की बीमारी में तैयार किया था। और फौरन रवाना होने की ताकिद भी फरमाई थी। वो लश्कर अभी मदीना के करीब ही था, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु सल्लम की वफात हो गई वापस आ गया। फिर हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. ने उसे रवाना किया। (फतहुलबारी 7/87)

١٥٤١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ قائِفٌ، وَالنَّبِيُّ ﷺ شَاهِدٌ، وَأُسَامَةُ ابْنُ زَيْدٍ وَزَيْدُ بْنُ حارِثَةَ مُضْطَجِعَانِ، فَقَالَ: إِنَّ هٰذِهِ الأَقْدَامَ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ، فَسُرَّ بِذٰلِكَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَعْجَبَهُ، فَأَخْبَرَ بِهِ عائِشَةَ. [رواه البخاري: ٣٧٣١]

1541: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक कयाफा सिनास मेरे पास आया। जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मेरे पास मौजूद थे। उसामा रजि. उनके बाप जैद रजि. दोनों लेटे हुए थे तो उसने कहा, यह दोनों पांव बाहम एक दूसरे से पैदा हुए हैं। आइशा रजि. का बयान है कि इस बात से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुश हुए और यह बात आपको अच्छी मालूम हुई। फिर आपने आइशा रजि. से इसका इजहार फरमाया।

फायदे: हजरत जैद बिन हारिशा रजि. का रंग सफेद था, जबकि उनके बेटे हजरत उसामा रजि.का रंग काला था। इस वजह से मुनाफिकिन ताना देते थे कि हजरत उसामा रजि. हजरत जैद रजि. के बेटे नहीं हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कयाफा सिनास की बात से खुश हुए क्योंकि इससे मुनाफिकिन के गलत प्रोपगण्डे की तरदीद होती थी। (फतहुलबारी 4/302)

नोट : रिवायत में इख्तेसार है, कयाफा सिनास हजरत आइशा की मौजूदगी में नहीं आया था। इस वाक्ये की खबर बाहर से आकर आपने दी थी। जैसाकि आखिर लफ्ज से साबित होता है। (अलवी)

---

١٠ - باب: ذِكْرُ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ الله عَنْهُما

बाब 10: हजरत उसामा बिन जैद रजि. का बयान।

١٥٤٢ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً مِنْ بَنِي مَخْزُومٍ سَرَقَتْ، فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ فِيهَا النَّبِيَّ ﷺ؟ فَلَمْ يَجْتَرِئْ أَحَدٌ أَنْ يُكَلِّمَهُ، فَكَلَّمَهُ

1542: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि बनी मखजूम की एक औरत ने चोरी की तो लोगों ने कहा कि उसके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कौन

أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، فَقَالَ: (إِنَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَ إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ قَطَعُوهُ، لَوْ كَانَتْ فَاطِمَةُ لَقَطَعْتُ يَدَهَا). [رواه البخاري: ٣٧٣٣]

कहेगा? आखिर किसी को आपसे बातचीत करने की जुर्रत न हुई। फिर उसामा बिन जैद रजि. ने आपसे कहा तो आपने फरमाया, बनी इस्राईल का यही तरीका था कि जब उनमें से कोई इज्जतदार आदमी चोरी करता तो उसको छोड़ देते और जब कोई कमजोर आदमी चोरी करता तो उसका हाथ काट डालते और (मैं तो) अगर मेरी बेटी फातिमा रजि. भी चोरी करती तो उसका हाथ भी काट देता।

फायदे: इस हदीस के बाज सनद में है कि ऐसे मामलात में हजरत उसामा रजि. के अलावा किसी दूसरे को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बातचीत करने की जुर्रत नहीं थी। क्योंकि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत प्यारे और चहीते थे।

 (फतहुल बारी 7/89)

١٥٤٣ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالحَسَنَ، فَيَقُولُ: (اللَّهُمَّ أَحِبَّهُمَا، فَإِنِّي أُحِبُّهُمَا). [رواه البخاري: ٣٧٣٥]

1543: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें और हसन रजि. को उठा लेते और फरमाते, ऐ अल्लाह! इन दोनों से मुहब्बत कर, मैं भी इन दोनों से मुहब्बत करता हूँ।

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत उसामा रजि. को अपनी एक रान पर बैठाते और दूसरी पर हजरत हसन रजि. को बैठाकर यूं दुआ करते "ऐ अल्लाह! मैं इन पर बहुत मेहरबानी करता हूँ, तू भी इन पर रहम फरमा।"

(फतहुल बारी 7/97)

बाब 11: हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. के फजाईल।

١١ - باب: مَنَاقِبُ عَبْدِالله بْنِ عُمَرَ رَضِيَ الله عَنْهُما

1544. हजरत हफसा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि अब्दुल्लाह रजि. अच्छे नेकबख्त आदमी हैं।

١٥٤٤ : عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: (إِنَّ عَبْدَ ٱللهِ رَجُلٌ صَالِحٌ) [رواه البخاري: ٣٧٤٠، ٣٧٤١]

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब्दुल्लाह रजि. बड़ा अच्छा आदमी है। अगर रात को तहज्जुद पढ़ता होता तो उसके बाद हजरत अब्दुल्लाह रजि. रात को बहुत कम सोते थे। (सही बुखारी 3739)

बाब 12: हजरत अम्मार बिन यासिर रजि. और हजरत हुजैफा बिन यमान रजि. की खूबियाँ।

١٢ - باب: مَنَاقِبُ عَمَّارٍ وَحُذَيْفَةَ رَضِيَ الله عَنْهُمَا

1545: अबू दरदा रजि. से रिवायत है कि शाम के मस्जिद में उनके पास एक नौजवान आकर बैठ गया। उसने पहले अल्लाह से दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझे कोई नेक हम नशीन अता फरमा। तो अबू दरदा रजि. ने उससे पूछा, तुम किन लोगों में से हो? उसने कहा, मैं कूफा वालों में से हूँ। अबू दरदा रजि. ने कहा, क्या तुम में वो राजदार नहीं हैं जो ऐसे राजों से वाकिफ थे, जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता था, यानी हुजैफा रजि.। उसने कहा, हां। फिर

١٥٤٥ : عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ جَلَسَ إِلَى جَنْبِهِ غُلَامٌ فِي مَسْجِدٍ بِالشَّامِ وكَانَ قَدْ قَالَ: اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيسًا صالِحًا، فَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ قَالَ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ، قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي لاَ يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ - يَعْنِي حُذَيْفَةَ - قَالَ: قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ، أَوْ مِنْكُمْ، الَّذِي أَجَارَهُ ٱللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ، يَعْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ، يَعْنِي عَمَّارًا، قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ، أَوْ مِنْكُمْ،

صَاحِبُ السِّوَاكِ، أَوْ السِّرَارِ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: كَيْفَ كَانَ عَبْدُ ٱللهِ يَقْرَأُ: ﴿وَٱلَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۝ وَٱلنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ﴾. قَالَ: (وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى). قَالَ: مَا زَالَ بِي هٰؤُلَاءِ حَتَّى كَادُوا يَسْتَنْزِلُونِي عَنْ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٧٤٣]

उन्होंने कहा, क्या तुम में वो आदमी नहीं है, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान पर शैतान की शर से निजात दी है। यानी अम्मार रजि.। उसने कहा, हां! फिर उन्होंने कहा, क्या तुममें मिस्वाक वाले या राजदार यानी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. नहीं हैं। उसने कहा, हां। मौजूद हैं। फिर अबू दरदा रजि. ने पूछा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. सूरह लैल को किस तरह पढ़ते हैं? उसने कहा, वलजकर वलउनसा। अबू दरदा रजि. ने फरमाया कि यहां के लोग भी अजीब हैं कि मुझे इस बात से हटा देना चाहते हैं, जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी है।

फायदे: हजरत खैशमा बिन अब्दुल रहमान रजि. कहते हैं कि मैं एक बार मदीना मुनव्वरा आया तो मैंने भी यही दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझ कोई अच्छा हमनशीन अता फरमा तो मेरी मुलाकात हजरत अबू हुरैरा रजि. से हुई। उन्होंने भी हजरत अम्मार और हजरत हुजैफा रजि. के बारे में वही फरमाया जो हजरत अबू दरदा रजि. ने उनके बारे में फरमाया था। (फतहुलबारी 7/117)

١٣ - باب: مَنَاقِبُ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

बाब 13: हजरत अबू उबैदा बिन जर्राह रजि. के फजाईल।

١٥٤٦ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينًا، وَإِنَّ أَمِينَنَا، أَيَّتُهَا الأُمَّةُ، أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ

1546: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हर उम्मत में एक अमानतदार होता है और हमारी

इस उम्मत के अमानतदार अबू उबैदा बिन जर्राह हैं। الجَرَّاحِ). [رواه البخاري: ٣٧٤٤]

फायदे: अगरचे अमानत व दियानत का वसफ दीगर सहाबा किराम रजि. में भी मौजूद था, लेकिन आगे पीछे से मालूम होता है कि अबू उबैदा बिन जर्राह रजि. बतौर खास इस वस्फ के हामिल थे, जैसा कि हजरत उसमान रजि. का हयादार (शर्मवाला) और हजरत अली रजि. का मुनन्सिफ मिजाज (इन्साफ करने वाला) होना बयान हुआ है।

 (फतहुलबारी 7/117)

बाब 14: हजरत हसन और हुसैन रजि. के फजाईल।

١٤ - باب: مَنَاقِبُ الحَسَنِ وَالحُسَيْنِ رَضِيَ الله عَنْهُمَا

1547: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा तो हजरत हसन बिन अली रजि. आपके कंधे पर थे और आप फरमाते थे, ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूं, तू भी इससे मुहब्बत कर।

١٥٤٧ : عَنِ البَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَالحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِهِ، يَقُولُ: (اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ). [رواه البخاري: ٣٧٤٩]

फायदे: एक रिवायत में हजरत उसामा का बयान इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रान पर मुझे और दूसरी पर हजरत हसन रजि. को बैठाकर फरमाते, ऐ अल्लाह! इन पर रहम फरमा, इन पर रहम फरमा। मैं खुद भी इन पर शिफकत करता हूँ।

(फतहुलबारी 7/120)

1548: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हसन बिन अली रजि. से ज्यादा और कोई आदमी नबी

١٥٤٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَشْبَهَ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنَ الحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ

سَلَّمَ ... عَنْهُمَا. [رواه البخاري: ٣٧٥٢]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समान न था।

फायदे: बुखारी की एक दूसरी रिवायत के मुताबिक हजरत अनस रजि. का बयान है कि हजरत हुसैन रजि. से ज्यादा कोई और आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हमशक्ल न था। जो इस रिवायत के खिलाफ है। मुवाफिकत यूं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ हिस्सा यानी ऊपर वाले में हजरत हसन ज्यादा समान थे। और कुछ हिस्सा यानी सीने से नीचे तक हजरत हुसैन रजि. ज्यादा हमशक्ल थे। (फतहुलबारी 7/122)

١٥٤٩ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، وَسَأَلَهُ رَجُلٌ عَنِ ٱلْمُحْرِمِ يَقْتُلُ ٱلذُّبَابَ؟ فَقَالَ: أَهْلُ ٱلْعِرَاقِ يَسْأَلُونَ عَنِ ٱلذُّبَابِ، وَقَدْ قَتَلُوا ٱبْنَ ٱبْنَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (هُمَا رَيْحَانَتَايَ مِنَ ٱلدُّنْيَا). [رواه البخاري: ٣٧٥٣]

1549: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि उनसे किसी आदमी ने मुहरिम (मेहराम बांधने वाले) की बाबत सवाल किया कि अगर वो मक्खी मार डाले तो क्या है? उन्होंने फरमाया, इराक वाले मक्खी के कत्ल का मसला पूछते हैं। जबकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे को शहीद कर दिया। हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों नवासों की बाबत फरमाया था, यह दोनों दुनिया में मेरे खुश्बूदार फूल हैं।

फायदे: तिरमजी की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत हसन और हजरत हुसैन रजि. को अपने पास बुलाते और उन्हें फूल की तरह सूंघते ओर अपने जिस्म से चिमटा लेते।

 (फतहुलबारी 7/124)

١٥ - باب: ذِكْرُ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا

बाब 15: हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. का बयान।

١٥٥٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَمَّنِي النَّبِيُّ ﷺ إِلَى صَدْرِهِ وَقَالَ: (اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ ٱلْحِكْمَةَ). [رواه البخاري: ٣٧٥٦]

1550 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सीने से लगाकर फरमायाः ऐ अल्लाह! इसे हिकमत (कुरआन व हदीस) सिखा।

١٥٥١ : وَفِي رِوَايَةٍ: (اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ الكِتَابَ). [رواه البخاري: ٣٧٥٦]

1551: इब्ने अब्बास रजि. से एक रिवायत में यूं है, ऐ अल्लाह इसे कुरआन का इल्म अता फरमा।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ के नतीजे में हजरत इब्ने अब्बास रजि. कुरआन करीम की तफसीर में जमाने के मुनफरीद थे, यहां तक कि हजरत इब्ने मसऊद रजि. उन्हें तर्जुमान कुरआन के लकब से याद करते थे। (फतहुलबारी 7/126)

---

١٦ - باب: مَنَاقِبُ خالِدِ بْنِ الوَلِيدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 16: हजरत खालिद बिन वलीद रजि. के बयान।

١٥٥٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَٱبْنَ رَوَاحَةَ وَذَكَرَ بَاقِي الحَدِيثِ وقَدْ تَقَدَّمَ، ثُمَّ قَالَ: فَأَخَذَهَا - يَعْنِي الرَّايَةَ - سَيْفٌ مِنْ سُيوفِ ٱللهِ حتَّى فَتَحَ ٱللهُ عَلَيْهِمْ. (راجع: ٦٣٩) [رواه البخاري: ٣٧٥٧]

1552: अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जैद, जाफर और इब्ने रवाहा रजि. के शहीद होने की खबर लोगों से बयान फरमाई अनस रजि. ने फिर बाकी हदीस (639) बयान की है जो पहले गुजर चुकी है और फिर आपने फरमाया कि अब इस झण्डे को अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार (खालिद बिन वलीद रजि.) ने लिया है। यहां तक कि तक अल्लाह ने उनके हाथ पर मुसलमानों को फतह दी।

फायदेः एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक्त यूं दुआ की "ऐ अल्लाह! यह तेरी तलवारों में से एक तलवार है तू इसकी मदद फरमा।" (फतहुलबारी 4/315)

बाब 17: हजरत अबू हुजैफा रजि. के आजाद किए हुए गुलाम सालिम बिन माकूल रजि. के बयान।

١٧ - باب: مَنَاقِبُ سَالِم مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ

1553: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि कुरआन मजीद चार आदमियों से पढ़ो, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से पहले उनका नाम लिया। हजरत सालिम रजि. से जो अबू हुजैफा रजि. का गुलाम है, उबे बिन काब रजि. और मुआजिन जबल रजि. से।

١٥٥٣ : عَنْ عَبْدِ آللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ آللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ آللهِ ﷺ يَقُولُ: (اسْتَقْرِئُوا القُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنْ عَبْدِ آللهِ بْنِ مَسْعُودٍ - فَبَدَأَ بِهِ - وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ). [رواه البخاري: ٣٧٥٨]

फायदेः हजरत सालिम रजि. कुरआन करीम के बेहतरीन कारी थे और जो मुहाजिरीन मक्का से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा आये थे। हजरत सालिम ने मस्जिद कुबा में उनकी इमामत के फराइज सरअन्जाम देते थे। (फतहुल बारी 7/128)

बाब 18: हजरत आइशा रजि. की फजीलत।

١٨ - باب: فَضْلُ عَائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا

1554: आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने असमा रजि. से एक हार उधार लिया था जो गुम हो गया तो रसूलुल्लाह

١٥٥٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ آللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا آسْتَعَارَتْ مِنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ آللهُ عَنْهَا قِلَادَةً فَهَلَكَتْ،

فَأَرْسَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي طَلَبِهَا، فَأَدْرَكَتْهُمُ الصَّلَاةُ فَصَلَّوْا بِغَيْرِ وُضُوءٍ، فَلَمَّا أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ شَكَوْا ذٰلِكَ إِلَيْهِ، فَنَزَلَتْ آيَةُ التَّيَمُّمِ، ثُمَّ ذَكَرَ بَاقِي الحَدِيثِ، وقَدْ تَقَدَّمَ فِي كِتَابِ التَّيَمُّمِ (برقم: ٢٢٣). [رواه البخاري: ٣٧٧٣ وانظر حديث رقم: ٣٣٤]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको तलाश करने के लिए अपने कुछ सहाबा रजि. को रवाना किया। जिन्हें रास्ते में नमाज का वक्त आ गया। (चूंकि पानी न था), इसलिए उन्होंने वजू के बगैर नमाज पढ़ ली। फिर जब वो सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे शिकायत की तो उस वक्त आयत तय्यमुम नाजिल हुई। इसके बाद रावी ने बाकी हदीस (223) जिक्र की जो बाब तय्यमुम में पहले गुजर चुकी है।

फायदे: इस हदीस के आखिर में हजरत हुसैद बिन हुजेर रजि. का बयान है कि अल्लाह तुम्हें बेहतर बदला दे। अल्लाह की कसम! जब भी तुम पर कोई मुसीबत आई तो अल्लाह तआला ने आपको उससे महफूज रखा और मुसलमानों के लिए उसमें खैरो बरकत नाजिल फरमाई।

١٩ - باب: مَنَاقِبُ الأَنْصَارِ

बाब 19: अनसार के बयान।

١٥٥٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ يَوْمُ بُعَاثَ يَوْمًا قَدَّمَهُ ٱللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَقَدِ ٱفْتَرَقَ مَلَأُهُمْ، وَقُتِلَتْ سَرَوَاتُهُمْ وَجُرِّحُوا، فَقَدَّمَهُ ٱللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ فِي دُخُولِهِمْ فِي الإِسْلَامِ. [رواه البخاري: ٣٧٧٧]

1555: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि बुआस का दिन वो था कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खातिर उसको पहले वाकअ कर दिया था। जब आप मदीना तशरीफ लाये तो अनसार की जमात बिखर चुकी थी और उनके बड़े बड़े लोग मारे जा चुके थे और जख्मी हो चुके थे। गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तशरीफ लाने से पहले उस दिन को

इसलिए वाक्ये कर दिया कि वो लोग अब इस्लाम को कबूल करें।

फायदे: बुआस मदीना मुनव्वरा से दो मील के फासले पर मकाम का नाम है वहां अवस और खजरज के बीच घमासान का झगड़ा हुआ था। पहले खजरज को फतह हुई। फिर अवस के सरदार ने अपने कबीले को मजबूत किया था, उन्हें फतह हुई। यह हिजरत से चार पांच साल पहले का वाक्या है। (फतहुलबारी 7/138)

बाब 20: फरमाने नबवी: "अगर मैंने हिजरत न की होती तो मैं भी अनसार का एक आदमी होता।"

٢٠ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «لَوْلاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَءًا مِنَ الأَنْصَارِ»

1556: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर मैंने हिजरत न की होती तो मैं भी अनसार का एक आदमी होता।

١٥٥٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَوْلاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَءًا مِنَ الأَنْصَارِ). [رواه البخاري: ٣٧٧٩]

फायदे: इससे मुराद अनसार की दिलजोई और इस्लाम पर उनकी जमे रहने का बयान है। ताकि लोगों को उनके अहतराम वफाअ पर आमादा किया जाये। यहां तक कि आपने उनका एक आदमी होना पसन्द फरमाया। (फतहुलबारी 7/140)

बाब 21: अनसार से मुहब्बत रखना, ईमान का हिस्सा है।

٢١ - باب: حُبُّ الأَنْصَارِ مِنَ الإِيمَانِ

1557: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अनसार से वही मुहब्बत रखेगा जो मौमिन होगा

١٥٥٧ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الأَنْصَارُ لاَ يُحِبُّهُمْ إِلَّا مُؤْمِنٌ وَلاَ يُبْغِضُهُمْ إِلَّا مُنَافِقٌ، فَمَنْ أَحَبَّهُمْ أَحَبَّهُ اللهُ، وَمَنْ

أَبْغَضَهُمْ أَبْغَضَهُ ٱللهُ». [رواه البخاري: ٣٧٨٣]

और उनसे दुश्मनी वही रखेगा जो मुनाफिक होगा। इस बिना पर जो आदमी उनसे मुहब्बत रखेगा, उससे अल्लाह भी दोस्ती रखेगा और जो आदमी उनसे दुश्मनी रखेगा, अल्लाह तआला उससे दुश्मनी रखेगा।

फायदे: हजरत अनस रजि. की रिवायत में यह अल्फाज हैं, अनसार से मुहब्बत करना ईमान की निशानी है और अनसार से दुश्मनी रखना मुनाफिकत की निशानी है। (फतहुलबारी 3784)

---

٢٢ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ لِلأَنْصَارِ: «أَنْتُمْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ»

बाब 22: अनसार के बारे में इरशादे नबवी कि ''तुम मुझे सब लोगों से ज्यादा प्यारे हो।''

١٥٥٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَى النَّبِيُّ ﷺ النِّسَاءَ وَالصِّبْيَانَ مُقْبِلِينَ مِنْ عُرْسٍ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ مُمْثِلًا فَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ»، قالَهَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. [رواه البخاري: ٣٧٨٥]

1558: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार (अनसारी) औरतों और बच्चों को शादी से वापस आते देखा तो खड़े हो गये और फरमाने लगे, अल्लाह गवाह है तुम लोग मुझे सबसे ज्यादा प्यारे हो। आपने तीन बार यही फरमाया।

١٥٥٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في رواية، قَالَ: جَاءَتِ ٱمْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَمَعَهَا صَبِيٌّ لَهَا، فَكَلَّمَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّكُمْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ»، مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ٣٧٨٦]

1559: अनस रजि. से ही एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया कि एक अनसारी औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई, जिसके साथ एक बच्चा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे बातें करने लगे।

फिर आपने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है। तुम लोग मुझे सबसे ज्यादा प्यारे हो। आपने यह तीन बार फरमाया।

١٥٦٠ : عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَتِ الأَنْصَارُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لِكُلِّ نَبِيٍّ أَتْبَاعٌ، وَإِنَّا قَدِ ٱتَّبَعْنَاكَ، فَٱدْعُ ٱللهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا مِنَّا، فَدَعَا بِهِ. [رواه البخاري: ٣٧٨٧]

1560: जैद बिन अरकम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार अनसार ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हर नबी के कुछ पैरवी करने वाले हुआ करते हैं और हमने आपकी पैरवी की है। अब जो लोग हमारे पैरोकार हैं, उनके लिए दुआ फरमायें कि अल्लाह उन्हें भी हमारी तरह कर दे तो आपने उनके बारे में दुआ फरमाई।

फायदे: इमाम बुखारी ने इस हदीस पर (बाबो अत्बाईल अनसार) कायम किया है। अनसार का मतलब यह था कि जैसा हमारा दर्जा और मकाम है, उसी तरह हमारे गुलाम, हलीफ और करीबी रिश्तेदारों को भी वही मर्तबा हासिल हो। चूनांचे एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए इस अल्फाज में यह दुआ फरमाई। ऐ अल्लाह इनके मानने वाले लोगों को भी इन्हीं में से बना दे।

(बुखारी 3788)

٢٣ - باب: فَضْلُ دُورِ الأَنْصَارِ

बाब 23: अनसार के घरानों की फजीलत।

١٥٦١ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ خَيْرَ دُورِ الأَنْصَارِ) فَذَكَرَ الحَدِيثَ، وَقَدْ تَقَدَّمَ، ثُمَّ قَالَ: قَالَ سَعْدُ بْنُ عبادَة لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، خُيِّرَ دُورُ الأَنْصَارِ فَجُعِلْنَا آخِرًا، فَقَالَ: (أَوَ لَيْسَ بِحَسْبِكُمْ أَنْ تَكُونُوا مِنَ

1561: अबू हुमैद रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अनसार में से बेहतरीन घराना....(बनू नज्जार हैं, फिर बनू अब्दुल अशहल, फिर बनी हारिस, फिर खजरज, फिर

बनी साअद और यूं तो अनसार के तमाम घरानों में भलाई है।) फिर वो पूरी हदीस (754) बयान की जो पहले गुजर चुकी है। फिर रावी ने कहा कि हजरत साद बिन उबादा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अनसार के घरानों की फजीलत तो बयान कर दी गई तो हम सबसे आखिर में कर दिये गये। आपने फरमाया क्या तुम्हें यह बात काफी नहीं कि तुम अच्छे लोगों में हो गये हो।

الخِيَارِ) (راجع: ٧٥٤). [رواه البخاري: ٣٧٩١]

फायदे: हजरत साद बिन उबादा रजि. कबीला खजरज की शाख बनू साअदा से थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको सबसे आखिर में बयान किया था। और हजरत साद रजि. उसके सरदार थे, इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया। (फतहुलबारी 7/145)

बाब 24: अनसार के बारे में इरशादे नबवी: ''सब्र करना उस वक्त तक कि हौजे कौसर पर मुझ से तुम्हारी मुलाकात हो।''

٢٤ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ للأنصارِ: «اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الحَوْضِ»

1562: उसैद बिन हुजैर रजि. से रिवायत है कि अनसार के एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मुझे आमिल (कर्मचारी) क्यों नहीं बनाते जैसा कि आपने फलां आदमी को आमिल बना दिया है। तो आपने फरमाया, जल्द ही तुम मेरे बाद हक तलफी देखोगे। लिहाजा सब्र करना, उस वक्त तक

١٥٦٢ : عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَلاَ تَسْتَعْمِلُنِي كَمَا ٱسْتَعْمَلْتَ فُلاَنًا؟ قَالَ: (سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً، فَٱصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الحَوْضِ). [رواه البخاري: ٣٧٩٢]

कि हौजे कोसर पर मुझ से तुम्हारी मुलाकात हो।

फायदे: चूनांचे अनसार जिनकी मदद और ताईद से इस्लाम की तरक्की हुई थी, उन्हें नजरअन्दाज करके गैर मुस्तहिक और नालायक लोगों को ओहदों और मनसबों पर रखा गया। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैशीनगोई हर्फ-ब-हर्फ (वैसी की वैसी) पूरी हुई।

 (फतहुलबारी 7/147)

١٥٦٣ : وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في رواية: (وَمَوْعِدُكُمُ الحَوْضُ). [رواه البخاري: ٣٧٩٣]

1563: अनस रजि. से एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनसार से फरमाया: तुम से हौजे कोसर पर मिलने का वादा है।

٢٥ - باب: قَوْلُ الله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾

बाब 25: फरमाने इलाही: "और वो दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देते हैं कि अगरचे वो खुद जरूरतमन्द हों"

١٥٦٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَبَعَثَ إِلَى نِسَائِهِ، فَقُلْنَ: ما مَعَنَا إِلَّا المَاءُ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ يَضُمُّ أَوْ يُضِيفُ هٰذَا)، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: أَنَا، فَانْطَلَقَ بِهِ إِلَى امْرَأَتِهِ، فَقَالَ: أَكْرِمِي ضَيْفَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَتْ: ما عِنْدَنَا إِلَّا قُوتُ صِبْيَانِي، فَقَالَ: هَيِّئِي طَعَامَكِ، وَأَصْبِحِي سِرَاجَكِ، وَنَوِّمِي صِبْيَانَكِ إِذَا أَرَادُوا عَشَاءً، فَهَيَّأَتْ طَعَامَهَا، وَأَصْبَحَتْ سِرَاجَهَا، وَنَوَّمَتْ صِبْيَانَهَا، ثُمَّ قَامَتْ كَأَنَّهَا تُصْلِحُ سِرَاجَهَا فَأَطْفَأَتْهُ، فَجَعَلَا يُرِيَانِهِ

1564: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। आपने अपनी बीवियों के पास आदमी भेजा (कि खाने के लिए कुछ लाये) उन्होंने जवाब दिया कि हमारे पास तो पानी के अलावा कुछ नहीं है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कौन है जो उसको अपने साथ ले जाये? या फरमाया कि उसकी मेहमान नवाजी करे? एक अनसार ने कहा, मैं उसकी मेहमान नवाजी करूंगा। चूनांचे वो आदमी उसे

أَنَّهُمَا يَأْكُلاَنِ، فَبَاتَا طَاوِيَيْنِ، فَلَمَّا أَصْبَحَ غَدَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (ضَحِكَ ٱللهُ ٱللَّيْلَةَ، أَوْ عَجِبَ، مِنْ فَعَالِكُمَا). فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ﴾. [رواه البخاري: ٣٧٩٨]

अपने साथ लेकर अपनी बीवी के पास गया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मेहमान की खूब खातिरदारी करो। वो कहने लगी, हमारे पास तो बच्चों के खाने के सिवा कुछ नहीं है। अनसार ने कहा, तुम खाना तैयार करके चिराग जला देना और बच्चे जब खाना मांगे तो उन्हें बहलाकर सुला देना। चूनांचे उसने खाना तैयार करके चिराग रोशन किया और बच्चों को सुला दिया। फिर इस तरह उठी जैसे चिराग ठीक कर रही हो, लेकिन उसको बुझा दिया। उन दोनों ने मेहमान को यह जता दिया जैसे मियां बीवी दोनों खाना खा रहे हैं। हालांकि वो भूके सोये थे। फिर जब सुबह हुई तो वो अनसारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया। आपने फरमाया कि आज रात तुम दोनों के काम पर अल्लाह तआला हंसा (या फरमाया ताअज्जुब किया) फिर अल्लाह ने यह आयत नाजिल फरमाई "वो दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देते हैं, अगरचे वो खुद तंगी में हो और जिन्हें नफ्स (जान) की लालच से बचा लिया गया वही कामयाब हैं।"

फायदे: इस हदीस में अल्लाह तआला के लिए हंसने और ताअज्जुब करने का सबूत है और यह सिफात उस तौर पर साबित हैं। जैसा कि वो उसके लायक हो, उसे कोई गलत मायना न पहनाया जाये।

---

٢٦ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ: «اقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ»

बाब 26: अनसार के बारे में इरशादे नबवी: "उनके अच्छे काम की कद्र करो और गलती से दरगुजर करो।"

١٥٦٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ أَبُو بَكْرٍ

1565: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू

وَالعَبَّاسُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا بِمَجْلِسٍ مِنْ مَجالِسِ الأَنْصارِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ وَهُمْ يَبْكُونَ، فَقَالَ: ما يُبْكِيكُمْ؟ قالُوا: ذَكَرْنَا مَجْلِسَ النَّبِيِّ ﷺ مِنَّا، فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ بِذٰلِكَ، قالَ: فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَقَدْ عَصَبَ عَلَى رَأْسِهِ حاشِيَةَ بُرْدٍ، قالَ: فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ، وَلَمْ يَصْعَدْهُ بَعْدَ ذٰلِكَ الْيَوْمِ، فَحَمِدَ ٱللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قالَ: (أُوصِيكُمْ بِالأَنْصارِ، فَإِنَّهُمْ كَرِشِي وَعَيْبَتِي، وَقَدْ قَضَوا الَّذِي عَلَيْهِمْ وَبَقِيَ الَّذِي لَهُمْ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ). [رواه البخاري: ٣٧٩٩]

बकर रजि. और अब्बास रजि. का गुजर अनसार की मजालिस में से किसी एक मजलिस पर हुआ कि वो रो रहे थे। उन्होंने रोने की वजह पूछी तो अनसार कहने लगे, हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठना याद आया है (आप बीमार थे) यह सुनकर वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गये और आपको इस बात की खबर दी। अनस रजि. का बयान है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाये और आप अपने सर पर चादर का किनारा बांधे हुए थे। फिर आप मिम्बर पर चढ़े। पस यह आखरी बार मिम्बर पर चढ़ना था। अल्लाह की हम्दो सना की, फिर फरमाया, लोगों! मैं तुम्हें अनसार के बाबत वसीयत करता हूँ, क्योंकि यह मेरी जान व जिगर हैं। उन्होंने अपना हक अदा कर दिया है। अलबत्ता उनका हक बाकी रह गया है, लिहाजा तुम उनके अच्छे कामों को कबूल करो और उनकी गलती से दरगुजर करो।

١٥٦٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ مُتَعَطِّفًا بِهَا عَلَى مَنْكِبَيْهِ، وَعَلَيْهِ عِصابَةٌ دَسْماءُ، حَتَّى جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ، فَحَمِدَ ٱللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قالَ: (أَمَّا بَعْدُ أَيُّهَا النَّاسُ، فَإِنَّ النَّاسَ يَكْثُرُونَ، وَتَقِلُّ الأَنْصارُ حَتَّى يَكُونُوا كَالْمِلْحِ فِي

1566: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दोनों कन्धों पर एक चादर लपेट कर बाहर तशरीफ लाये। आपके सर पर एक चिकने कपड़े की पट्टी बांधी हुई थी। यहां तक कि मिम्बर पर खड़े हुए। अल्लाह की

الطَّعَامِ، فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ أَمْرًا يَضُرُّ فِيهِ أَحَدًا أَوْ يَنْفَعُهُ، فَلْيَقْبَلْ مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَيَتَجَاوَزْ عَنْ مُسِيئِهِمْ). [رواه البخاري: ٣٨٠٠]

हम्दो सना के बाद फरमाया, ऐ लोगों! और कौमें तो बढ़ती जायेंगी मगर अनसार कम होते जायेंगे। इतने कम रह जायेंगे, जैसे खाने में नमक। लिहाजा तुम में से अगर किसी को ऐसी हुकूमत मिले जो किसी को नफा या नुकसान पहुंचा सकता हो तो वो अनसार के अच्छे आदमी की कद्र करे और बुरे के कसूर से दरगुजर करे।

फायदे: कुछ लोगों ने इस हदीस से यह मतलब निकाला है कि अनसार को कभी हुकूमत नहीं मिलेगी। लेकिन यह ख्याल सही नहीं है। निज इससे मुराद वो अनसार हैं, जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने यहां जगह देकर दीने इस्लाम की मदद की। वाकई यह हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मोजिज़ा है कि अनसार दिन-ब-दिन कम हो रहे हैं। (फतहुलबारी 7/153)

٢٧ - باب: مَنَاقِبُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 27: हजरत साद बिन मुआज रजि. के बयान।

١٥٦٧ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (اهْتَزَّ الْعَرْشُ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ). [رواه البخاري: ٣٨٠٣]

1567: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जब साद बिन मुआज रजि. फौत हुए तो अर्शे इलाही झूम गया था।

फायदे: यह हदीस हजरत जाबिर रजि. ने उस वक्त बयान की जब उन्हें किसी ने हजरत बराअ बिन आजिब रजि. के बारे में बयान किया कि वो अर्श से मुराद उनकी चारपाई लेते हैं, जिस पर उनकी लाश पड़ी थी। इस रिवायत से वजाहत हो गई कि इससे अर्श इलाही ही मुराद है। (बुखारी 3803)

बाब 28: हजरत उबे बिन कअब रजि. के बयान।

٢٨ - باب: مَنَاقِبُ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ الله عَنْهُ

١٥٦٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأُبَيٍّ: (إِنَّ ٱللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ: ﴿لَمْ يَكُنِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ﴾). قَالَ: وَسَمَّانِي؟ قَالَ: (نَعَمْ). فَبَكَى. [رواه البخاري: ٣٨٠٩]

1568: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन उबे बिन कअब रजि. से फरमाया, अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं सूरह "लमयकुनिललजिन कफरू" तुझे पढ़कर सुनाऊं। उबे रजि. ने कहा कि क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लिया था? आपने फरमाया, हां! तो उबे बिन कअब रजि. रो पड़े।

फायदे: हज़रत उबे बिन कअब रजि. खुशी के मारे रो पड़े कि अल्लाह ने फरिश्तों की जमात में उनका नाम लिया है। या अल्लाह से डरते हुए खौफ तारी हुआ कि इतनी बड़ी नैमत का कैसे शुक्रिया अदा करूंगा। (फतहुलबारी 7/159)

बाब 29: हजरत जैद बिन साबित रजि. के बयान।

٢٩ - باب: مَنَاقِبُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ الله عَنْهُ

١٥٦٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ أَرْبَعَةٌ، كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ: أُبَيٌّ، وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، وَأَبُو زَيْدٍ، وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ. فَقِيلَ لِأَنَسٍ: مَنْ أَبُو زَيْدٍ؟ قَالَ: أَحَدُ عُمُومَتِي. [رواه البخاري: ٣٨١٠]

1569: अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जिन चार आदमियों ने कुरआन याद किया था वो सब अनसारी थे। उबे, मआज बिन जबल, अबू जैद और जैद बिन साबित रजि.। अनस रजि. से जब पूछा गया कि कि अबू जैद कौन थे? तो आपने फरमाया कि वो मेरे एक चचा थे।

फायदे: यह हदीस एक पिछली हदीस (1553) के खिलाफ नहीं, जिसमें जिक्र है कि कुरआन मजीद चार आदमियों से पढ़ो, वहां अबू जैद और जैद बिन साबित के बजाये हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हजरत सालिम का जिक्र है। क्योंकि इस हदीस में हजरत अनस रजि. कबीला अनसार के बारे में बयान कर रहे हैं। (फतहुलबारी 7/160)

٣٠ - باب: مَنَاقِبُ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 30: हजरत अबू तल्हा रजि. के बयान।

١٥٧٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ أُحُدٍ ٱنْهَزَمَ النَّاسُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبُو طَلْحَةَ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ ﷺ مُجَوِّبٌ بِهِ عَلَيْهِ بِحَجَفَةٍ لَهُ، وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ رَجُلًا رَامِيًا شَدِيدَ الْقِدِّ، يَكْسِرُ يَوْمَئِذٍ قَوْسَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا، وَكَانَ الرَّجُلُ يَمُرُّ مَعَهُ الْجَعْبَةُ مِنَ النَّبْلِ، فَيَقُولُ: (انْثُرْهَا لِأَبِي طَلْحَةَ). فَأَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْظُرُ إِلَى الْقَوْمِ، فَيَقُولُ أَبُو طَلْحَةَ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، لَا تُشْرِفْ يُصِيبُكَ سَهْمٌ مِنْ سِهَامِ الْقَوْمِ، نَحْرِي دُونَ نَحْرِكَ، وَلَقَدْ رَأَيْتُ عَائِشَةَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سُلَيْمٍ، وَإِنَّهُمَا لَمُشَمِّرَتَانِ، أَرَى خَدَمَ سُوقِهِمَا، تَنْقُزَانِ الْقِرَبَ عَلَى مُتُونِهِمَا، تُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ، ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَتَمْلَآنِهَا، ثُمَّ تَجِيآنِ فَتُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ، وَلَقَدْ وَقَعَ السَّيْفُ مِنْ يَدَيْ أَبِي طَلْحَةَ، إِمَّا مَرَّتَيْنِ وَإِمَّا ثَلَاثًا. [رواه البخاري: ٣٨١١]

1570: अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब उहूद के दिन मुसलमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़कर भाग गये तो अबू तल्हा रजि. चमड़े की एक ढ़ाल लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे आड़ बने हुए थे और वो बड़े तीरअन्दाज और अच्छे कमानकश थे। उस दिन दो तीन कमानें तोड़ चुके थे। जब कोई आदमी तीरों से भरा हुआ तरकश लेकर उधर आ निकला तो आप उसे फरमाते कि यह सब तीर अबू तल्हा रजि. के सामने डाल दो। एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना सर उठाकर काफिरों की तरफ देखने लगे तो अबू तल्हा रजि. ने कहा, ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप पर मेरे मां-बाप कुरबान हों। अपना सर मत उठायें।

मुबादा आपको काफिरों का तीर लग जाये। मेरा सीना आपके सीने के आगे मौजूद है और मैंने उस जंग में आइशा और उम्मे सुलैम रजि. को देखा कि यह दोनों अपने दामन उठायें हुए थीं और मैं उन दोनों के पाजेब देख रहा था। यह दोनों पानी की मश्कें (बर्तन) भरकर अपनी पीठ पर लाती थीं और लोगों के मुंह में डालकर फिर लौट जातीं और उन्हें भरकर फिर आतीं और उनको प्यासों के मुंह में डाल देती और उस दिन अबू तल्हा रजि. के हाथ से दो या तीन बार तलवार गिरी थी।

फायदे: चूनांचे यह जंग और सख्त परेशानी का वक्त था, ऐसे हालात में अगर औरत की पिण्डलियां खुल जायें तो कोई हर्ज की बात नहीं। निज उस वक्त अभी पर्दे के अहकाम भी नाजिल नहीं हुए थे।

बाब 31: हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. के बयान।

٣١ - باب: مَنَاقِبُ عَبْدِالله بْنِ سَلاَمٍ رَضِيَ الله عَنْهُ

1571: साद बिन अबी वक़ास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी ऐसे आदमी की बाबत जो जमीन पर रहता हो, यह कहते नहीं सुना कि वो जन्नती है। सिवाय अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. के और यह आयत उन्हीं के हक में नाजिल हुई। "और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इसी तरह की गवाही भी दी है।"

١٥٧١ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ لِأَحَدٍ يَمْشِي عَلَى الأَرْضِ: إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ، إِلَّا لِعَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ. قَالَ: وَفِيهِ نَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى مِثْلِهِ﴾. الآيَةَ. [رواه البخاري: ٣٨١٢]

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. के अलावा बेशुमार लोगों को दुनिया में जन्नत की खुशखबरी दी गई, जिनमें असरा मुबशिरा हैं, उनमें रावी हदीस हजरत साद रजि. भी शामिल हैं, लेकिन हजरत साद

ने यह हदीस उस वक्त बयान की जब असरा मुबशिरा में से कोई भी जिन्दा न था और अपना नाम जिक्र नहीं किया, क्योंकि अपनी तारीफ खुद अपने मुंह से सही नहीं होती। (फतहुलबारी 7/126)

١٥٧٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ سَلاَمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رُؤْيَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ، وَرَأَيْتُ كَأَنِّي فِي رَوْضَةٍ - ذَكَرَ مِنْ سَعَتِهَا وَخُضْرَتِهَا - وَسْطَهَا عَمُودٌ مِنْ حَدِيدٍ، أَسْفَلُهُ فِي الأَرْضِ وَأَعْلاَهُ فِي السَّمَاءِ، فِي أَعْلاَهُ عُرْوَةٌ، فَقِيلَ لِي: ارْقَهْ، قُلْتُ: لاَ أَسْتَطِيعُ، فَأَتَانِي مِنْصَفٌ، فَرَفَعَ ثِيَابِي مِنْ خَلْفِي، فَرَقِيتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلاَهَا، فَأَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ، فَقِيلَ لِي: اسْتَمْسِكْ، فَاسْتَيْقَظْتُ وَإِنَّهَا لَفِي يَدِي، فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: (تِلْكَ الرَّوْضَةُ رَوْضَةُ الإِسْلاَمِ، وَذٰلِكَ الْعَمُودُ عَمُودُ الإِسْلاَمِ، وَتِلْكَ الْعُرْوَةُ عُرْوَةُ الْوُثْقَىٰ، فَأَنْتَ عَلَى الإِسْلاَمِ حَتَّى تَمُوتَ). [رواه البخاري: ٣٨١٣]

1572: अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक ख्वाब देखा जो मैंने आपसे बयान किया कि जैसे मैं एक बाग में हूँ। उन्होंने उसकी कुशादगी और हरयाली बयान की। फिर कहा कि उसके बीच में एक लोहे का खम्बा है, जिसका निचला हिस्सा जमीन में, दूसरा आसमान में है। ऊपर की तरफ एक कुण्डा लगा हुआ है। ख्वाब में मुझ से कहा गया कि तुम उस पर चढ़ जाओ। मैंने कहा, मुझ से नहीं चढ़ा जाता। फिर मेरे पास एक नौकर आया। उसने पीछे की तरफ से मेरे कपड़े उठा दिये। आखिर मैं ऊपर चढ़ गया और उसकी चोटी पर पहुंचकर मैंने कुण्डे को थाम लिया। मुझ से कहा गया कि उसे मजबूती से पकड़े रहना, जब मैं जागा तो यह कुण्डा थामें हुए था। मैंने यह ख्वाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान किया तो आपने यूं ताबीर फरमाई कि वो बाग तो दीने इस्लाम है और वो खम्बा इस्लाम का खम्बा है और कुण्डा मजबूत कड़ा है और तुम अपनी मौत तक इस्लाम पर कायम रहोगे।

फायदे: इसी रिवायत के शुरू में है कि लोग हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम को जन्नती कहते थे। हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. ने इसकी वजह बयान फरमाई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे फरमाया था कि तुम मरते दम तक इस्लाम पर कायम रहोगे। (बुखारी 3813)

٣٢ - باب: تَزْوِيجُ النَّبِيِّ ﷺ خَدِيجَةَ وَفَضْلُهَا رَضِيَ الله تَعَالَى عَنْهَا

बाब 32: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हजरत खदीजा रजि. से निकाह और उनकी फजीलत का बयान।

١٥٧٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: ما غِرْتُ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِساءِ النَّبِيِّ ﷺ ما غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ، وَما رَأَيْتُهَا، وَلٰكِنْ كانَ النَّبِيُّ ﷺ يُكْثِرُ ذِكْرَهَا، وَرُبَّمَا ذَبَحَ الشَّاةَ، ثُمَّ يُقَطِّعُهَا أَعْضَاءً، ثُمَّ يَبْعَثُهَا فِي صَدَائِقِ خَدِيجَةَ، فَرُبَّمَا قُلْتُ لَهُ: كَأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ فِي الدُّنْيَا امْرَأَةٌ إِلَّا خَدِيجَةُ، فَيَقُولُ: (إِنَّهَا كانَتْ، وَكانَتْ، وَكانَ لِي مِنْهَا وَلَدٌ). [رواه البخاري: ٣٨١٨]

1573: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी बीवी पर इतना रश्क नहीं किया, जितना खदीजा रजि. पर किया। हालांकि मैंने उनको देखा तक नहीं। मगर वजह यह थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसका जिक्र बहुत किया करते थे और जब कोई बकरी जिब्ह करते तो उसके टुकड़े काटकर खदीजा रजि. की सहेलियों को भेजते थे। जब कभी मैं आपसे कहती कि गोया दुनिया में कोई औरत खदीजा रजि. के सिवा थी ही नहीं, तो आप फरमाते, वो ऐसी ही थीं और मेरी औलाद उन्हीं के पेट से हुई।

फायदे: हजरत जैनब, रूकय्या, उम्मे कलसूम, फातिमा, अब्दुल्लाह और कासिम रजि. हजरत खदीजा रजि. के पेट से थे। जबकि इब्राहिम रजि. मारिया किबतिया से पैदा हुए थे। (फतहुलबारी 7/170)

١٥٧٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى جِبْرِيلُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ هٰذِهِ خَدِيجَةُ قَدْ أَتَتْ، مَعَهَا إِنَاءٌ فِيهِ إِدَامٌ أَوْ طَعَامٌ أَوْ شَرَابٌ، فَإِذَا هِيَ أَتَتْكَ فَاقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنْ رَبِّهَا وَمِنِّي، وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لَا صَخَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ. [رواه البخاري: ٣٨٢٠]

1574: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार जिब्राइल अलैहि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह खदीजा रजि. आपके पास सालन या खाने का एक बर्तन ला रही हैं। जब वो लेकर आयीं तो उन्हें उनके परवरदीगार और मेरी तरफ से सलाम कहना और उन्हें जन्नत में मोती के एक महल की खुशखबरी देना। जिसमें न तो शोर होगा, न ही कोई तकलीफ होगी।

फायदे: कुछ रिवायतों में है कि हजरत खदीजा रजि. ने इस अलफाज के साथ जवाब दिया। अल्लाह तआला तो खुद सलामती वाले हैं। अलबत्ता हजरत जिब्राईल और ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप पर भी सलामती हो।" (फतहुलबारी 7/172)

١٥٧٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ٱسْتَأْذَنَتْ هَالَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ، أُخْتُ خَدِيجَةَ، عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَعَرَفَ ٱسْتِئْذَانَ خَدِيجَةَ فَٱرْتَاعَ لِذٰلِكَ، فَقَالَ: (ٱللَّهُمَّ هَالَةُ). قَالَتْ: فَغِرْتُ، فَقُلْتُ: مَا تَذْكُرُ مِنْ عَجُوزٍ مِنْ عَجَائِزِ قُرَيْشٍ، حَمْرَاءِ الشِّدْقَيْنِ، هَلَكَتْ فِي الدَّهْرِ، قَدْ أَبْدَلَكَ ٱللهُ خَيْرًا مِنْهَا. [رواه البخاري: ٣٨٢١]

1575: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार हाला बिन्ते खुवैलिद रजि. ने जो हजरत खदीजा रजि. की बहन थीं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से (अन्दर आने की) इजाजत मांगी तो आपको अचानक खदीजा रजि. का इजाजत मांगना याद आ गया। आप अचानक थरथराने लगे और फरमाया, ऐ अल्लाह! यह तो हाला हैं। आइशा रजि. कहती हैं कि मुझे रश्क आया और मैंने कहा, क्या आप

कुरैश की एक बूढ़ी को याद करते हैं, जिसके (दांत गिरकर) सिर्फ सूर्ख सूर्ख मसूड़े रह गये थे। और एक लम्बी मुद्दत से वो भी मर चुकी है और उसके ऐवज अल्लाह तआला ने आपको उससे बेहतर बीवी इनायत फरमा दी है।

फायदे: मुसनद इमाम अहमद की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत आइशा रजि. की बात सुनकर खफा हुए तो हजरत आइशा रजि.ने कहा, अल्लाह की कसम! आईन्दा मैं हजरत खदीजा रजि. का जिक्र भलाई के साथ करूंगी। (फतहुलबारी 7/174)

बाब 33: हिन्द बिन्ते उतबा रजि. का जिक्र खैर।

٣٣ - باب: ذِكْرُ هِنْدٍ بِنْتِ عُتْبَةَ

1576: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हिन्द बिन्ते उतबा रजि. आयीं और कहने लगी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! एक वक्त दुनिया में किसी खानदान की जिल्लत मुझे आपके खानदान की जिल्लत से ज्यादा पसन्द न थी। लेकिन अब रूये जमीन पर किसी खानदान की इज्जत मुझे आपके खानदान की इज्जत से ज्यादा पसन्द नहीं। आपने फरमाया, वाकई कसम उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है।.... बाकी हदीस (पहले गुजर चुकी है)

١٥٧٦ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: جاءَتْ هِنْدُ بِنْتُ عُتْبَةَ، قالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ما كانَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ مِنْ أَهْلِ خِبَاءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ يَذِلُّوا مِنْ أَهْلِ خِبائِكَ، ثُمَّ ما أَصْبَحَ الْيَوْمَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَهْلُ خِبَاءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ يَعِزُّوا مِنْ أَهْلِ خِبَائِكَ، وباقي الحديث قَدْ تَقَدَّمَ. (برقم: ١٠٤١) [رواه البخاري: ٣٨٢٥ وانظر حديث رقم: ٢٤٦٠]

फायदे: जिसमें हजरत अबू सुफियान रजि. की कंजूसी और सही तरीका के मुताबिक उसके माल से बिला इजाजत खर्च करने का जिक्र है।

(बुखारी 3825)

बाब 34 : जैद बिन अम्र बिन नुफैल रजि. का किस्सा।

٣٤ - باب: حَدِيثُ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ رَضِيَ الله عَنْهُ

١٥٧٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ بِأَسْفَلِ بَلْدَحٍ، قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ الْوَحْيُ، فَقُدِّمَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ سُفْرَةٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَالَ زَيْدٌ: إِنِّي لَسْتُ آكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلا آكُلُ إِلَّا ما ذُكِرَ ٱسْمُ ٱللهِ عَلَيْهِ، وَأَنَّ زَيْدَ بْنَ عَمْرٍو كانَ يَعِيبُ عَلَى قُرَيْشٍ ذَبَائِحَهُمْ، وَيَقُولُ: الشَّاةُ خَلَقَهَا ٱللهُ، وَأَنْزَلَ لَهَا مِنَ السَّمَاءِ الْمَاءَ، وَأَنْبَتَ لَهَا مِنَ الأَرْضِ، ثُمَّ تَذْبَحُونَهَا عَلَى غَيْرِ ٱسْمِ ٱللهِ، إِنْكَارًا لِذٰلِكَ وَإِعْظَامًا لَهُ. [رواه البخاري: ٣٨٢٦]

1577: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार जैद बिन अम्र बिन नुफैल रजि. से बलदा के दामन में मिले। अभी आप पर वह्य का उतरना शुरू नहीं हुआ था। वहां जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खाना पेश किया गया तो आपने उसे खाने से इनकार कर दिया। फिर जैद रजि. ने भी कहा कि मैं वो चीज नहीं खा सकता जो तुम अपने बूतों के नाम पर जिब्ह करते हो। मैं तो सिर्फ वही चीज खाता हूँ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो। नीज जैद बिन अम्र कुरैश के जिब्ह किये हुए जानवर पर ऐतराज करते थे और कहते थे कि बकरी को अल्लाह ने पैदा किया। उसी ने उसके लिए आसमान से पानी और अपनी जमीन में घास पैदा फरमाई। फिर तुम उसे गैर अल्लाह के नाम पर जिब्ह करते हो। उन मुश्रिकीन के काम पर इनकार करते थे और उन्हें बड़ा गुनाह ख्याल करते थे।

फायदे: तबरानी की एक रिवायत में है कि हजरत सईद बिन जैद और हजरत उमर रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जैद बिन अम्र बिन नुफैल के बारे में पूछा तो आपने फरमाया कि वो दीने इब्राहिम अलैहि. पर फौत हुआ। इसलिए अल्लाह ने रहम करते हुए उसे माफ कर दिया। (फतहुलबारी 7/177)

बाब 35:जाहिलियत के जमाने का बयान।

٣٥ - باب: أيام الجاهلية

1578: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जो आदमी कसम उठाना चाहे, वो अल्लाह के अलावा किसी की कसम न उठाये। जबकि कुरैश अपने बाप दादा की कसम उठाया करते थे। इसलिए आपने फरमाया कि तुम अपने बाप दादा की कसम न उठाया करो।

١٥٧٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَلاَ مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلاَ يَحْلِفْ إِلَّا بِٱللهِ)، فَكَانَتْ قُرَيْشٌ تَحْلِفُ بِآبَائِهَا، فَقَالَ: (لاَ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ). [رواه البخاري: ٣٨٣٦]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश से आपकी नबूवत तक का वक्त जाहिलियत का जमाना कहलाता है, क्योंकि उस में लोग बहुत ज्यादा जिहालत का शिकार थे। अल्लाह के अलावा अपने बाप दादा के नाम की कसम उठाना भी दौरे जाहिलियत की याद है। इसलिए मना फरमाया। (फतहुलबारी 7/184)

1579: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब से सच्ची बात जो किसी शायर ने कही वो लबीद शायर की कही बात है। आगाह रहो कि अल्लाह के अलावा है वो फना हो जायेगा और (जाहिलियत का शायर) उमय्या अबी सल्त जो मुसलमान होने के करीब था।

١٥٧٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَصْدَقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا الشَّاعِرُ، كَلِمَةُ لَبِيدٍ: أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ ٱللهَ بَاطِلُ، وَكَادَ أُمَيَّةُ بْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ). [رواه البخاري: ٣٨٤١]

बाब 36: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने का बयान।

٣٦ - باب: مَبْعَث النَّبِيِّ ﷺ

1580: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत

١٥٨٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهُمَا قَالَ: أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تُوُفِّيَ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٨٥١]

है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर चालीस साल की उम्र में वह्य उतरी। फिर आप तैरह साल तक मक्का में रहे। उसके बाद आपको हिजरत का हुक्म हुआ तो आपने मदीना की तरफ हिजरत फरमाई और आप वहां दस बरस रहे। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफात पाई।

फायदे: आपका सिलसिला नसब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिन अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुन्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मुनाफ बिन कुसय बिन किलाब बिन मुर्रा बिन कअब बिन लूवय बिन गालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नजर बिन कनाना बिन खुजैमा बिन मदरका बिन इलियास बिन मुजर बिन नजार बिन मअद बिन अदनान। मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में पन्द्रह बरस कयाम किया, लेकिन सही बात यह है कि नबूवत के बाद तैरह साल तक मक्का में ठहरे। इस तरह आपकी कुल उम्र तरेसठ बरस है। (फतहुलबारी 7/202)

٣٧ - بَاب: مَا لَقِيَ النَّبِيُّ وَأَصْحَابُهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ بِمَكَّةَ

बाब 37: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके असहाब ने मक्का में मुश्रिकीन के हाथों जो तकलीफें उठाई, उनका बयान।

١٥٨١ : عَنِ ابْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا وَقَدْ سُئِلَ عَنْ أَشَدِّ مَا صَنَعَهُ الْمُشْرِكُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي

1581: इब्ने अम्र बिन आस रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि बतलाओ सबसे ज्यादा सख्त तकलीफ कौनसी थी जो मुश्रिकीन ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि

حِجْرِ الْكَعْبَةِ، إِذْ أَقْبَلَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ، فَوَضَعَ ثَوْبَهُ فِي عُنُقِهِ، فَخَنَقَهُ خَنْقًا شَدِيدًا، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى أَخَذَ بِمَنْكِبِهِ، وَدَفَعَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ﴿أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ﴾. الآيَةَ. [رواه البخاري: ٣٨٥٦]

वसल्लम के साथ जाइज रखी? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हतीमे काबा में नमाज पढ़ रहे थे, इतने में उतबा बिन अबी मुईत आया और उसने अपना कपड़ा आपकी गर्दन में डालकर बहुत जोर से आपका गला घोंटा। उस दौरान अबू बकर रजि. ने सामने से आकर उसके दोनों कन्धे पकड़ लिए और उसे पीछे धकेल कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हटा दिया और कहा, क्या तुम ऐसे आदमी को कत्ल करते हो जो कहता है कि मेरा परवरदीगार अल्लाह है।"

फायदे: एक रिवायत में है कि एक बार मक्का के मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस कद्र मारा-पीटा कि आप बेहोश हो गये। तब अबू बकर सिद्दीक रजि. खड़े हुए और कहने लगे कि तुम ऐसे आदमी को मारते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।

 (फतहुलबारी 7/702)

बाब 38 : जिन्नात का बयान।

٣٨ - باب: ذِكْرُ الْجِنِّ

١٥٨٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وقد سئل: مَنْ آذَنَ النَّبِيَّ ﷺ بِٱلْجِنِّ لَيْلَةَ ٱسْتَمَعُوا الْقُرْآنَ؟ فَقَالَ: إِنَّهُ آذَنَتْ بِهِمْ شَجَرَةٌ. [رواه البخاري: ٣٨٥٩]

1582: अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिन्नों की खबर किसने दी थी कि उन्होने आज रात कुरआन सुना? तो उन्होंने फरमाया कि एक पेड़ ने आपको खबर दी थी।

١٥٨٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ يَحْمِلُ مَعَ النَّبِيِّ

1583: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

ﷺ إِدَاوَةً لِوَضُوئِهِ وَحَاجَتِهِ، قَدْ تَقَدَّمَ. (برقم: ١٢٤) [رواه البخاري: ٣٨٦٠ وانظر حديث رقم: ١٥٥]

वसल्लम के साथ आपके वजू और इस्तंजा (पेशाब) के लिए पानी का लोटा उठाकर जा रहे थे। बाकी हदीस (124) गुजर चुकी है।

١٥٨٤ : وزاد في هٰذِهِ الرِّوايَةِ قَوْلَهُ: (إِنَّهُ أَتَانِي وَفْدُ جِنِّ نَصِيبِينَ، وَنِعْمَ الْجِنُّ، فَسَأَلُونِي الزَّادَ، فَدَعَوْتُ ٱللهَ لَهُمْ أَنْ لَا يَمُرُّوا بِعَظْمٍ وَلَا رَوْثَةٍ إِلَّا وَجَدُوا عَلَيْهَا طَعَامًا). [رواه البخاري: ٣٨٦٠]

1584: अबू हुरैरा रजि. से ही कुछ इजाफे के साथ रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे पास शहर नसीबीन के जिन्न आये और वो कैसे अच्छे जिन्न थे। उन्होंने मुझ से सफर खर्च की ख्वाहिश की तो मैंने उनके लिए अल्लाह से यह दुआ की कि जिस हड्डी या गोबर से उनका गुजर हो तो उस पर वो खाना पायेंगे।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जिन्न कई बार हाजिर हुए। एक बार बतने नखला में जहां आप कुरआन पढ़ रहे थे। दूसरी बार हूजून में, तीसरी बार बकीअ में, चौथी बार मदीना मुनव्वरा के बाहर। उसमें जुबैर बिन अव्वाम रजि. मौजूद थे, पांचवी बार एक सफर में जिसमें बिलाल बिन हारिस रजि. मौजूद थे।

(फतहुलबारी, 4/367)

---

٣٩ - باب: هِجْرَةُ الحَبَشَةِ

बाब 39: हिजरत हब्शा का बयान।

١٥٨٥ : عَنْ أُمِّ خالِدٍ بِنْتِ خالِدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: قَدِمْتُ مِنْ أَرْضِ الحَبَشَةِ وَأَنَا جُوَيْرِيَةٌ فَكَسَانِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ خَمِيصَةً لَهَا أَعْلاَمٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَمْسَحُ الأَعْلاَمَ بِيَدِهِ وَيَقُولُ: (سَنَاهْ سَنَاهْ). يَعْنِي حَسَنٌ حَسَنٌ. [رواه البخاري: ٣٨٧٤]

1585: उम्मे खालिद बिन्ते खालिद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब मैं हब्शा से मदीना आई तो उस वक्त मैं एक कमसिन बच्ची थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे एक मनक्कश चादर ओढ़ने के लिए दी। फिर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बैल-बूटों पर हाथ फैरते और फरमाते थे,यह कैसे अच्छे हैं, यह कैसे अच्छे हैं।

फायदे: हब्शा की तरफ दो बार हिजरत हुई, पहली बार नबूवत के पांचवें साल माह रजब में बारह मर्द और चार औरतें रवाना हुई, उनमें हजरत उसमान रजि. और उनके साथ उनकी बीवी रूकय्या रजि. बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी थीं। दूसरी बार तीन सौ अस्सी आदमी और अठ्ठारह औरतों ने हिजरत की।

(फतहुलबारी 4/368)

बाब 40: अबू तालिब के किस्से का बयान।

٤٠ - باب: قِصَّةُ أَبِي طَالِبٍ

1586: अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आपने अपने चचा अबू तालिब को नफा पहुंचाया जो आपकी हिमायत किया करता था और आपकी खातिर गुस्से हुआ करता था। आपने फरमाया, वो टखनों तक आग में है, अगर मैं न होता तो वो आग की तह में बिल्कुल नीचे होता।

١٥٨٦ : عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَا أَغْنَيْتَ عَنْ عَمِّكَ، فَإِنَّهُ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَغْضَبُ لَكَ؟ قَالَ: (هُوَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنْ نَارٍ، وَلَوْلَا أَنَا لَكَانَ فِي ٱلدَّرَكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ) [رواه البخاري: ٣٨٨٣]

1587: अबू साद खुदरी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, जब आपके सामने आपके चचा अबू तालिब का जिक्र किया गया तो आपने फरमाया, उम्मीद है कि कयामत के दिन उनको मेरी सिफारिश

١٥٨٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ، وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ، فَقَالَ: (لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُجْعَلُ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ، يَغْلِي مِنْهُ دِمَاغُهُ). [رواه البخاري: ٣٨٨٥]

कुछ फायदा देगी कि उसे कम गहरी आग में रखा जायेगा। जिसमें उनके टखने डूबे हुए होंगे। मगर इससे भी उसका दिमाग उबलने लगेगा।

फायदे: अबू तालिब ने मरते वक्त आखरी अलफाज यूं कहे थे कि अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर मरता हूँ और हजरत अली ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस अलफाज खबर दी कि आपका चचा जो गुमराह था, वो मर गया है तो आपने फरमाया, उसे दफन कर दो।

(फतहुलबारी 7/234)

बाब 41: इसराअ यानी बैतुल मुकद्दस तक जाने का बयान।

٤١ - باب: حَدِيثُ الإِسْرَاءِ

1588: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जब कुरैश ने मैराज के मुत्तालिक मुझे झुटलाया तो मैं हतीम में खड़ा हो गया। अल्लाह तआला ने बैतुल मुकद्दस को मेरे सामने कर दिया। चूनांचे मैं उन लोगों को उसकी निशानियां बताने लगा और उस वक्त मैं उसे देख रहा था।

١٥٨٨ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ، قُمْتُ فِي ٱلْحِجْرِ، فَجَلاَ ٱللهُ لِي بَيْتَ المَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ). [رواه البخاري: ٣٨٨٦]

फायदे: बहकी में है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ्फार कुरैश के सामने मैराज का वाक्या बयान किया तो उन्होंने इनकार कर दिया। हजरत अबू बकर रजि. ने सुनते ही आपकी तसदीक कर दी। उस दिन से आपका लकब सिद्दीक हो गया।

(फतहुलबारी 7/239)

बाब 42: मैराज के किस्से का बयान।

٤٢ - باب: المِعْرَاج

1589: मालिक बिन सअसआ रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से उस रात का हाल बयान किया, जिसमें आपको मैराज हुई थी। आपने फरमाया, ऐसा हुआ कि मैं हतीम या हिजर में लेटा हुआ था। इतने में एक आने वाला आया और उसने मेरा सीना यहां से यहां तक चाक कर दिया। रावी कहता है, गले से नाफ के नीचे तक। फिर उसने मेरा दिल निकाला। इसके बाद सोने का एक तश्त लाया गया। जो ईमान से भरा हुआ था, मेरा दिल धोया गया और फिर उसे ईमान से भरकर अपनी जगह रख दिया गया। फिर मेरे पास एक सफेद रंग का जानवर लाया गया जो खच्चर से नीचा और गधे से ऊंचा था। रावी कहता है कि वो बुर्राक था जो अपना कदम जहां तक नजर पहुंचती थी, वहां पर रखता था तो में उस पर सवार हुआ। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे लेकर चले। आसमान पर पहुंचकर उन्होंने उसका दरवाजा खटखटाया। पूछा गया कौन है? उन्होंने जवाब दिया मैं जिब्राईल अलैहि. हूँ। पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है? उन्होंने

١٥٨٩ : عَنْ مالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ نَبِيَّ ٱللهِ ﷺ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ: (بَيْنَما أَنَا في الحَطِيمِ، وَرُبَّمَا قالَ في ٱلْحِجْرِ، مُضْطَجِعًا، إِذْ أَتَانِي آتٍ فَقَدَّ - قالَ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: فَشَقَّ - ما بَيْنَ هٰذِهِ إِلَى هٰذِهِ - قالَ الراوي: مِنْ ثُغْرَةِ نَحْرِهِ إِلَى شِعْرَتِهِ - فَٱسْتَخْرَجَ قَلْبِي، ثُمَّ أُتِيتُ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مَمْلُوءَةٍ إِيمَانًا، فَغُسِلَ قَلْبِي، ثُمَّ حُشِيَ ثُمَّ أُعِيدَ، ثُمَّ أُتِيتُ بِدَابَّةٍ دُونَ البَغْلِ وَفَوْقَ ٱلْحِمَارِ أَبْيَضَ - قالَ الراوي رحمه ٱلله تعالى: هُوَ البُرَاقُ - يَضَعُ خَطْوَهُ عِنْدَ أَقْصَى طَرْفِهِ، فَحُمِلْتُ عَلَيْهِ، فَٱنْطَلَقَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ ٱلدُّنْيَا فَٱسْتَفْتَحَ، فَقِيلَ: مَنْ هٰذا؟ قالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قالَ: مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قالَ: نَعَمْ، قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ ٱلْمَجِيءُ جاءَ فَفَتَحَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا فِيهَا آدَمُ، فَقَالَ: هٰذَا أَبُوكَ آدَمُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ السَّلاَمَ، ثُمَّ قالَ: مَرْحَبًا بِالابْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ فَٱسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هٰذا؟ قالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قالَ:

مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَفُتِحَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يَحْيَى وَعِيسَى، وَهُمَا ابْنَا الْخَالَةِ، قَالَ: هَذَا يَحْيَى وَعِيسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِمَا، فَسَلَّمْتُ فَرَدَّا، ثُمَّ قَالاَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَفُتِحَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يُوسُفُ، قَالَ: هَذَا يُوسُفُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الرَّابِعَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ فَفُتِحَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِدْرِيسُ، قَالَ: هَذَا إِدْرِيسُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ صَعِدَ بِي، حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ ﷺ، قِيلَ:

कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। पूछा गया क्या यह बुलाये गये हैं? कहा, हां! फिर जवाब मिला मरहबा, उनकी आमद खुश आईन्द और मुबारक हो। फिर वो दरवाजा खोल दिया गया। जब मैं वहां गया तो आदम अलैहि. मिले। जिब्राईल अलैहि. ने बताया कि यह आपके बाप आदम अलैहि. हैं। उन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब देते फरमाया, अच्छे बेटे खुश आमदीद! उसके बाद जिब्राईल अलैहि. मुझे ऊपर लेकर चढ़े, यहां तक कि दूसरे आसमान पर पहुंचे। और उसका दरवाजा खटखटाया, पूछा गया कौन है? उन्होंने कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया, इन्हें बुलाया गया है। उन्होंने कहा, हां! कहा गया, खुश आमदीद और जिस सफर पर तशरीफ लाये हैं, वो मुबारक और खुश गवार हो और दरवाजा खोल दिया गया। जब मैं वहां पहुंचा तो याहया अलैहि. और ईसा अलैहि. मिले। जो दोनों आपस में खालाजाद भाई हैं। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह याहया अलैहि. और ईसा अलैहि. हैं। इन्हें सलाम कीजिए। चूनांचे मैंने सलाम किया और उन दोनों ने सलाम

وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا هَارُونُ، قَالَ: هٰذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ، وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ السَّادِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هٰذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا مُوسَى، قَالَ: هٰذَا مُوسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ، وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، فَلَمَّا تَجَاوَزْتُ بَكَى، قِيلَ لَهُ: مَا يُبْكِيكَ؟ قَالَ: أَبْكِي لِأَنَّ غُلَامًا بُعِثَ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِهِ أَكْثَرُ مِمَّنْ يَدْخُلُهَا مِنْ أُمَّتِي، ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ فَاسْتَفْتَحَ جِبْرِيلُ، قِيلَ: مَنْ هٰذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ، قِيلَ: وَقَدْ بُعِثَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِبْرَاهِيمُ، قَالَ: هٰذَا أَبُوكَ إِبْرَاهِيمُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، قَالَ: فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ السَّلَامَ، قَالَ: مَرْحَبًا بِالابْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ، ثُمَّ رُفِعَتْ لِي سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى فَإِذَا نَبِقُهَا

का जवाब देते हुए मेरा इस्तकबाल किया और फरमाया, मरहबा ऐ भाई और नबी मुहतरम खुश आमदीद! फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे लेकर तीसरे आसमान पर चढ़े और उसका दरवाजा खटखटाया। पूछा गया कौन है? उन्होंने कहा, जिब्राईल अलैहि.। पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है? उन्होंने कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया वो बुलाये गये है। उन्होंने कहा, हां! कहा गया खुशआमदीद! जिस सफर पर वो तशरीफ लाये हैं, वो खुशगवार और मुबारक हो। फिर दरवाजा खोल दिया गया। जब मैं वहां पहुंचा तो यूसुफ अलैहि. मिले। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह यूसुफ अलैहि. है। इन्हें सलाम कीजिए। मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने मेरे सलाम का जवाब दिया और कहा, ऐ नेक खसलत भाई और नबी मुहतरम खुश आमदीद। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे चौथे आसमान पर लेकर पहुंचे और दरवाजा खटखटाया। पूछा गया, कौन है? उन्होंने कहा जिब्राईल अलैहि.। पूछा गया, तुम्हारे साथ कौन है? उन्होंने कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया, उन्हें दावत दी गई है? उन्होंने कहा, हां! कहा गया

مِثْلُ قِلاَلِ هَجَرَ، وَإِذَا وَرَقُهَا مِثْلُ آذَانِ الْفِيَلَةِ، قَالَ: هٰذِهِ سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى، وَإِذَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ: نَهْرَانِ بَاطِنَانِ وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ، فَقُلْتُ: مَا هٰذَانِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَنَهْرَانِ فِي الْجَنَّةِ، وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ فَالنِّيلُ وَالْفُرَاتُ، ثُمَّ رُفِعَ لِي الْبَيْتُ الْمَعْمُورُ، فإذا هو يَدْخُلُهُ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ، ثُمَّ أُتِيتُ بِإِنَاءٍ مِنْ خَمْرٍ وَإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ، وَإِنَاءٍ مِنْ عَسَلٍ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَقَالَ: هِيَ الْفِطْرَةُ الَّتِي أَنْتَ عَلَيْهَا وَأُمَّتُكَ، ثُمَّ فُرِضَتْ عَلَيَّ الصَّلَوَاتُ خَمْسِينَ صَلاَةً كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ فَمَرَرْتُ عَلَى مُوسَى، فَقَالَ: بِمَ أُمِرْتَ؟ قَالَ: أُمِرْتُ بِخَمْسِينَ صَلاَةً كُلَّ يَوْمٍ، قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تَسْتَطِيعُ خَمْسِينَ صَلاَةً كُلَّ يَوْمٍ، وَإِنِّي وَاللهِ قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ، وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ التَّخْفِيفَ لأُمَّتِكَ، فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ، فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ، فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ، فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَأُمِرْتُ بِعَشْرِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ فَقَالَ مِثْلَهُ، فَرَجَعْتُ

खुशआमदीद! और जिस सफर पर आये हैं, वो मुबारक और खुशगवार हो। फिर दरवाजा खोल दिया गया। जब मैं वहां पहुंचा तो इदरीस अलैहि. से मुलाकात हुई। हजरत जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह इदरीस अलैहि. हैं, इन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब देकर कहा, ऐ बिरादर गरामी और नबी मुहतरम खुश आमदीद। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे लेकर पांचवे आसमान पर चढ़े। दरवाजा खटखटाया, पूछा गया कौन हैं? उन्होंने कहा, जिब्राईल अलैहि.। पूछा गया, तुम्हारे साथ कौन है? उन्होंने कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया वो बुलाये गये हैं? उन्होंने कहा, हां! कहा गया, उन्हें खुशआमदीद। और जिस सफर पर आये हैं, वो खुशगवार और मुबारक हो। जब मैं वहां पहुंचा तो हारून अलैहि. मिले। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह हारून अलैहि. हैं। इन्हें सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब देकर कहा, ऐ मुआज्ज भाई और नबी मुहतरम खुशआमदीद। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे लेकर छटे आसमान पर चढ़े, उसका दरवाजा खटखटाया तो

فَأُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى، فَقَالَ: بِمَا أُمِرْتَ؟ قُلْتُ: أُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ، قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لَا تَسْتَطِيعُ خَمْسَ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ، وَإِنِّي قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ المُعَالَجَةِ، فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ التَّخْفِيفَ لِأُمَّتِكَ، قَالَ: سَأَلْتُ رَبِّي حَتَّى اسْتَحْيَيْتُ، وَلٰكِنْ أَرْضَى وَأُسَلِّمُ، قَالَ: فَلَمَّا جَاوَزْتُ نَادَانِي مُنَادٍ: أَمْضَيْتُ فَرِيضَتِي، وَخَفَّفْتُ عَنْ عِبَادِي).

وقَدْ تَقَدَّمَ حديثُ الإسْراء عَنْ أَنسٍ في أَوَّلِ كِتابِ الصَّلاةِ وَفي كُلِّ واحِدٍ مِنْهما ما لَيْسَ في الآخرِ.

(راجع: ٢٢٨) [رواه البخاري: ٣٨٨٧ وانظر حديث رقم: ٣٤٩]

पूछा गया, कौन है? उन्होंने कहा जिब्राईल अलैहि.। पूछा गया, तुम्हारे साथ कौन हैं? उन्होंने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया वो बुलाये गये हैं। उन्होंने कहा, हां! कहा गया खुशआमदीद। सफर मुबारक हो। जब मैं वहां पहुंचा तो मूसा अलैहि. मिले। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह मूसा अलैहि. हैं। इन्हें सलाम कीजिए। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने भी सलाम का जवाब देकर कहा, अखी अलमुकर्रम और नबी मुहतरम खुशआमदीद। फिर मैं जब आगे बढ़ा तो वो रोने लगे। पूछा गया, आप क्यों रोते हैं? उन्होंने कहा, मैं इसलिए रोता हूं कि एक नो उम्र जिसे मेरे बाद रसूल बनाकर भेजा गया है, उसकी उम्मत जन्नत में मेरी उम्मत से ज्यादा तादाद में दाखिल होगी। फिर जिब्राईल अलैहि. मुझे सातवें आसमान पर लेकर चढ़े और दरवाजा खटखटाया तो पूछा गया कौन है? उन्होंने कहा, जिब्राईल अलैहि.। पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है? उन्होंने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पूछा गया वो बुलाये गये हैं? उन्होंने कहा, हां। कहा गया उन्हें खुशआमदीद और जिस सफर पर तशरीफ लाये हैं, वो खुशगवार और मुबारक हो। फिर मैं वहां पहुंचा तो इब्राहिम अलैहि. मिले। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह आपके बाप इब्राहिम अलैहि. हैं। इन्हें सलाम कीजिए। लिहाज मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए फरमाया, ऐ नबी और बेटे

खुश आमदीद। मुझे बेरी के पेड़ जो कि फरिश्तों की आखरी हद है तक बुलन्द किया गया तो देखा कि उसके फल हिजर के मटकों की तरह बड़े हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों की तरह हैं। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यहीं सदरतुल मुन्तहा है और वहां चार नहरें थी। जिनमें दो तो बन्द और दो खुली हुई थीं। मैंने पूछा, ऐ जिब्राईल अलैहि. यह नहरें कैसी हैं? उन्होंने कहा कि बन्द नहरें तो जन्नत की हैं और जो खुली हैं, वो नील और फरात हैं। फिर बैतुल मामूर मेरे सामने लाया गया, देखता हूँ कि उसमें हर दिन सत्तर हजार फरिश्ते दाखिल होते हैं। फिर मेरे सामने एक प्याला शराब का, एक प्याला दूध का और एक प्याला शहद का लाया गया तो मैंने दूध का प्याला पी लिया। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, यह इस्लाम की फितरत है। जिस पर आप और आपकी उम्मत कायम है। फिर मुझ पर शबो रोज की पचास नमाजें फर्ज की गई। जब मैं वापिस लौटा तो मूसा अलैहि. पर मेरा गुजर हुआ तो उन्होंने पूछा आप को क्या हुक्म दिया गया है? मैंने कहा, मुझे दिन रात में पचास नमाजें अदा करने का हुक्म दिया गया है। मूसा अलैहि. ने कहा, आपकी उम्मत हर दिन पचास नमाजें नहीं पढ़ सकती। अल्लाह की कसम! मैं आपसे पहले लोगों का तजुर्बा कर चुका हूँ और मैं बनी इस्राईल के साथ भरपूर कोशिश कर चुका हूं। लिहाजा आप अपने रब की तरफ लौट जायें और अपनी उम्मत के लिए आसानी की दरख्वास्त करें। चूनांचें मैं लौट कर गया और अल्लाह ने मुझे दस नमाजें माफ कर दी। फिर मैं मूसा अलैहि. के पास लौट कर गया तो उन्होंने फिर वैसा ही कहा। मैं फिर गया और अल्लाह ने मुझे दस नमाजें और माफ कर दी। मैं फिर मूसा अलैहि. के पास लौट कर आया तो उन्होंने फिर वैसा ही कहा। चूनांचे मैं लौट कर गया तो मुझे दस नमाजें और माफ हुई। फिर मैं मूसा अलैहि. के पास लौटकर आया तो उन्होंने फिर वैसा ही कहा, चूनांचे मैं लौट कर गया तो मुझे हरदिन में दस नमाजों का हुक्म दिया गया। फिर

लौटा तो मूसा अलैहि. ने फिर वैसा ही कहा। मैं फिर लौटा तो मुझे हर दिन पांच नमाजों का हुक्म दिया गया। फिर मैं मूसा अलैहि. के पास लौट कर आया तो उन्होंने पूछा कि आपको किस चीज का हुक्म दिया गया है? मैंने कहा, हर दिन में पांच नमाजों का हुक्म दिया गया है। उन्होंने कहा, आपकी उम्मत हर दिन में पांच नमाजें भी नहीं पढ़ सकती। मैं तुम से पहले लोगों का खूब तजुर्बा कर चुका हूं। और बनी इस्राईल पर बहुत जोर डाल चुका हूं। तुम ऐसा करो, फिर अपने परवरदीगार के पास जाओ और अपनी उम्मत के लिए आसानी की दरख्वास्त करो। मैंने जवाब दिया, मैं अपने रब से कई बार दरख्वास्त कर चुका हूं और अब मुझे शर्म आती है। लिहाजा मैं राजी हूं और उसके हुक्म को कबूल करता हूं। आपने फरमाया, जब मैं आगे बढ़ा तो एक मुनादी ने (खुद परवरदीगार ने) आवाज दी कि मैंने हुक्म जारी कर दिया और अपने बन्दों पर आसानी भी कर दी। हदीस मेराज (228) शुरू किताबुलसलात में रिवायत हजरत अनस रजि. गुजर चुकी है। लेकिन रिवायत में बाज ऐसी बातें हैं जो दूसरी रिवायत में नहीं मिलती। इस लिए यहां दर्ज की हैं।

फायदे: औलमा-ए- सलफ का इस पर इत्तेफाक है कि इसरा और मैराज एक ही रात जिस्म और रूह दोनों के साथ जागने की हालत में हुआ। (फतहुलबारी 7/137)

1590: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि यह इरशादे इलाही: "और ख्वाब जो हमने आपको दिखाया, सिर्फ लोगों की आजमाईश के लिए था।" इससे मुराद ख्वाब नहीं, बल्कि यह आंख की रूयत थी, जो

١٥٩٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا جَعَلْنَا ٱلرُّءْيَا ٱلَّتِي أَرَيْنَٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ﴾. قَالَ: هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ، أُرِيَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ إِلَى بَيْتِ المَقْدِسِ، قَالَ: ﴿وَٱلشَّجَرَةَ ٱلْمَلْعُونَةَ فِي

ٱلْقُرْءَانِ﴾. قَالَ: هِيَ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ.
[رواه البخاري: ٣٨٨٨]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसी रात दिखाई गई थी, जिस रात आपको बैतुल मुकद्दस की सैर कराई गई थी और इब्ने अब्बास रजि. फरमाते हैं कि कुरआन में अशजरतुल मलऊना से मुराद थोहर का पेड़ है।

फायदे: मक्का के मुश्रिकों के लिए यह बात भी बाईस फितना थी कि "जकूम" का पेड़ आग में परवान चढ़ेगा। हालांकि आग पेड़ को भस्म कर देती है। यह जकूम अहले जहन्नम का खाना होगा जो पेट में गर्म पानी की तरह खोलेगा। (फतहुलबारी 8/251)

٤٣ - باب: تَزْوِيجُ النَّبِيِّ ﷺ عَائِشَةَ وَقُدُومِهَا الْمَدِينَةَ وَبِنَائِهِ بِهَا

बाब 43: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हजरत आइशा से निकाह करना फिर मदीना तशरीफ लाने के बाद उनकी रूख्सती का बयान।

١٥٩١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا بِنْتُ سِتِّ سِنِينَ، فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ، فَنَزَلْنَا فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ، فَوُعِكْتُ فَتَمَزَّقَ شَعَرِي فَوَفَى جُمَيْمَةً، فَأَتَتْنِي أُمِّي أُمُّ رُومَانَ، وَإِنِّي لَفِي أُرْجُوحَةٍ، وَمَعِي صَوَاحِبُ لِي، فَصَرَخَتْ بِي فَأَتَيْتُهَا، لَا أَدْرِي مَا تُرِيدُ بِي فَأَخَذَتْ بِيَدِي حَتَّى أَوْقَفَتْنِي عَلَى بَابِ الدَّارِ، وَإِنِّي لَأُنْهِجُ حَتَّى سَكَنَ بَعْضُ نَفَسِي، ثُمَّ أَخَذَتْ شَيْئًا مِنْ مَاءٍ فَمَسَحَتْ بِهِ

1591: हजरत आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से निकाह किया तो मैं छः बरस की थी। फिर हम मदीना आये और बनी हारिस के मुहल्ले में उतरे तो मुझे बुखार आने लगा। जिसने मेरे बाल गिरा दिये। फिर जब मेरे कन्धों तक बाल हो गये तो मेरी वाल्दा उम्मे रूमान रजि. मेरे पास आयीं। मैं अपनी उम्र की सहेलियों से झूला झूल रही थी। मेरी वाल्दा ने मुझे आवाज दी

तो मैं उनके पास चली आई और मुझे मालूम न था कि वो क्यों बुला रही हैं? उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे घर के दरवाजे पर खड़ा कर दिया। उस वक्त मेरा सांस फूल रहा था। यहां तक कि जब मेरा सांस ठीक हुआ तो उसने कुछ पानी मेरे मुंह और सर पर डाला, फिर उसे साफ करके घर के अन्दर ले गई। घर में कुछ अनसार औरतें मौजूद थी। उन्होंने कहा, मुबारक हो मुबारक हो, तुम्हारा नसीब अच्छा है। फिर मेरी मां ने मुझे उनके हवाले कर दिया। उन्होंने मेरा बनाव-सिंगार किया। फिर अचानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोपहर के वक्त तशरीफ लाये तो मैं डर गई। उन्होंने मुझे आपके हवाले कर दिया। उस वक्त मेरी उम्र नो बरस थी।

وَجْهِي وَرَأْسِي، ثُمَّ أَدْخَلَتْنِي الدَّارَ، فَإِذَا نِسْوَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فِي الْبَيْتِ، فَقُلْنَ: عَلَى الْخَيْرِ وَالْبَرَكَةِ، وَعَلَى خَيْرِ طَائِرٍ، فَأَسْلَمَتْنِي إِلَيْهِنَّ، فَأَصْلَحْنَ مِنْ شَأْنِي، فَلَمْ يَرُعْنِي إِلَّا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ ضُحًى، فَأَسْلَمَتْنِي إِلَيْهِ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ بِنْتُ تِسْعِ سِنِينَ. [رواه البخاري: ٣٨٩٤]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हजरत आइशा रजि. का अकद निकाह छः बरस की उम्र में हुआ और नौ साल की उम्र में शादी हुई। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फौत हुए तो हजरत आइशा की उम्र उठारह साल थी। (फतहुलबारी 7/266)

1592: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने तुझे दो बार ख्वाब में देखा कि तुम रेशमी कपड़े के एक टुकड़े में हो। और एक आदमी मुझ से कहता है कि यह आपकी बीवी हैं। मैंने उस कपड़े को खोला तो देखा कि तुम

١٥٩٢ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قالَ لَهَا: (أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ مَرَّتَيْنِ أَرَى أَنَّكِ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ، وَيُقَالُ: هٰذِهِ امْرَأَتُكَ، فَأَكْشِفُ عَنْهَا، فَإِذَا هِيَ أَنْتِ، فَأَقُولُ: إِنْ يَكُ هٰذَا مِنْ عِنْدِ ٱللهِ يُمْضِهِ). [رواه البخاري: ٣٨٩٥]

हो। फिर मैंने कहा, अगर यह ख्वाब अल्लाह की तरफ से है तो वो उसे जरूर पूरा करेंगे।

फायदे: इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह भी साबित किया है कि अकद निकाह से पहले अपनी मंगेतर को एक नजर देख लेने में कोई हर्ज नहीं है। चूनांचे उसके बारे में सही अहादीस भी आई हुई है। (फतहुलबारी 9/99)

٤٤ - باب: هِجْرَةُ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ رَضِيَ الله عَنْهُم إِلَى المَدِينَةِ

बाब 44: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. का मदीना की तरफ हिजरत करना।

١٥٩٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَمْ أَعْقِلْ أَبَوَيَّ قَطُّ إِلَّا وَهُما يَدِينَانِ ٱلدِّينَ، وَلَمْ يَمُرَّ عَلَيْنَا يَوْمٌ إِلَّا يَأْتِينَا فِيهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ طَرَفَي النَّهَارِ، بُكْرَةً وَعَشِيَّةً، فَلَمَّا ٱبْتُلِيَ المُسْلِمُونَ خَرَجَ أَبُو بَكْرٍ مُهَاجِرًا نَحْوَ أَرْضِ الحَبَشَةِ، حَتَّى إِذَا بَلَغَ بَرْكَ الغِمَادِ لَقِيَهُ ٱبْنُ الدَّغِنَةِ، وَهُوَ سَيِّدُ القَارَةِ، فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ يَا أَبَا بَكْرٍ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْرَجَنِي قَوْمِي، فَأُرِيدُ أَنْ أَسِيحَ فِي الأَرْضِ وَأَعْبُدَ رَبِّي، قَالَ ٱبْنُ ٱلدَّغِنَةِ: فَإِنَّ مِثْلَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ لَا يَخْرُجُ وَلَا يُخْرَجُ، إِنَّكَ تَكْسِبُ المَعْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الكَلَّ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الحَقِّ، فَأَنَا لَكَ جَارٌ، ٱرْجِعْ

1593: आइशा उम्मे मौमिनीन रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने अपने होश में अपने वाल्देन को दीने हक की पैरवी करते हुए ही देखा है और हम पर कोई दिन भी ऐसा नहीं गुजरता था कि सुबह व शाम दोनों वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास न आते हों। फिर जब मुसलमानों को सख्त तकलीफ दी जाने लगी तो अबू बकर रजि. हिजरत की नियत से मुल्के हबश जाने लगे। जब मकामे बरकुल गिमाद पहुंचे तो उन्हें इब्ने दगेना मिला जो कबीला कारा का सरदार था। उसने पूछा, ऐ अबू बकर रजि.! कहां जा रहे हो। उन्होंने कहा, मेरी कौम ने मुझे निकाल दिया है। इसलिए

وَأَعْبُدَ رَبِّكَ بِبَلَدِكَ، فَرَجَعَ وَارْتَحَلَ مَعَهُ ٱبْنُ ٱلدَّغِنَةِ، فَطَافَ ٱبْنُ ٱلدَّغِنَةِ عَشِيَّةً فِي أَشْرَافِ قُرَيْشٍ، فَقَالَ لَهُمْ: إِن أَبَا بَكْرٍ لاَ يَخْرُجُ مِثْلُهُ وَلاَ يُخْرَجُ، أَتُخْرِجُونَ رَجُلًا يَكْسِبُ المَعْدُومَ، وَيَصِلُ الرَّحِمَ، وَيَحْمِلُ الكَلَّ، وَيَقْرِي الضَّيْفَ، وَيُعِينُ عَلَى نَوائِبِ الحَقِّ، فَلَمْ تُكَذِّبْ قُرَيْشٌ بِجِوَارِ ٱبْنِ ٱلدَّغِنَةِ، وَقالُوا لاِبْنِ ٱلدَّغِنَةِ: مُرْ أَبَا بَكْرٍ فَلْيَعْبُدْ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَلْيُصَلِّ فِيهَا وَلْيَقْرَأْ ما شَاءَ، وَلاَ يُؤْذِينَا بِذٰلِكَ وَلاَ يَسْتَعْلِنْ بِهِ، فَإِنَّا نَخْشَى أَنْ يَفْتِنَ نِسَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا، فَقَالَ ذٰلِكَ ٱبْنُ ٱلدَّغِنَةِ لِأَبِي بَكْرٍ، فَلَبِثَ أَبُو بَكْرٍ بِذٰلِكَ يَعْبُدُ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، وَلاَ يَسْتَعْلِنُ بِصَلاَتِهِ وَلاَ يَقْرَأُ فِي غَيْرِ دَارِهِ، ثُمَّ بَدَا لِأَبِي بَكْرٍ، فَٱبْتَنَى مَسْجِدًا بِفِنَاءِ دَارِهِ، وَكانَ يُصَلِّي فِيهِ، وَيَقْرَأُ القُرْآنَ، فَيَنْقَذِفُ عَلَيْهِ نِسَاءُ المُشْرِكِينَ وَأَبْنَاؤُهُمْ، وَهُمْ يَعْجَبُونَ مِنْهُ وَيَنْظُرُونَ إِلَيْهِ، وَكانَ أَبُو بَكْرٍ رَجُلًا بَكَّاءً، لاَ يَمْلِكُ عَيْنَيْهِ إِذَا قَرَأَ القُرْآنَ، وَأَفْزَعَ ذٰلِكَ أَشْرَافَ قُرَيْشٍ مِنَ المُشْرِكِينَ، فَأَرْسَلُوا إِلَى ٱبْنِ ٱلدَّغِنَةِ فَقَدِمَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: إِنَّا كُنَّا أَجَرْنَا أَبَا بَكْرٍ بِجِوَارِكَ، عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَقَدْ جاوَزَ ذٰلِكَ، فَٱبْتَنَى مَسْجِدًا بِفِنَاءِ دَارِهِ، فَأَعْلَنَ بِالصَّلاةِ

मैं चाहता हूं कि जमीन का सफर और अपने परवरदिगार की इबादत करूं। इब्ने दगेना कहने लगा कि तुम्हारे जैसा आदमी न तो निकलने पर मजबूर हो सकता है और न ही कोई निकाल सकता है, क्योंकि तुम तो जो चीज लोगों के पास नहीं होती, वो उन्हें देते हो। और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सलूक करते हो, गरीबों की देखभाल करते हो, मेहमान नवाजी करते हो, और हक की राह में किसी को मुसीबत आये तो उसकी मदद करते हो। लिहाजा तुम्हारा हामी मैं हूँ, तुम मक्का लौट चलो और अपने शहर में रह कर अपने परवरदिगार की इबादत करो। चूनांचे अबू बकर रजि. इब्ने दगेना के साथ मक्का लौट आये। फिर इब्ने दगेना रात के वक्त कुरैश के सरदारों से मिला और उनसे कहा कि अबू बकर रजि. जैसा आदमी न तो निकलने पर मजबूर हो सकता है और न ही उसे कोई निकाल सकता है। क्या तुम ऐसे आदमी को निकालते हो जो लोगों को वो चीजें देता है जो उनके पास नहीं होती, रिश्तेदारों से अच्छा सलूक करता है और बेकसों की किफालत करता है और जब कभी किसी को हक के रास्ते

وَالْقِرَاءَةِ فِيهِ، وَإِنَّا قَدْ خَشِينَا أَنْ يَفْتِنَ نِسَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا، فَانْهَهُ، فَإِنْ أَحَبَّ أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ فَعَلَ، وَإِنْ أَبَى إِلَّا أَنْ يُعْلِنَ بِذٰلِكَ، فَسَلْهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْكَ ذِمَّتَكَ، فَإِنَّا قَدْ كَرِهْنَا أَنْ نُخْفِرَكَ، وَلَسْنَا مُقِرِّينَ لِأَبِي بَكْرٍ الاسْتِعْلَانَ، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَتَى ٱبْنُ ٱلدَّغِنَةِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: قَدْ عَلِمْتَ الَّذِي عَاقَدْتُ لَكَ عَلَيْهِ، فَإِمَّا أَنْ تَقْتَصِرَ عَلَى ذٰلِكَ، وَإِمَّا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيَّ ذِمَّتِي، فَإِنِّي لَا أُحِبُّ أَنْ تَسْمَعَ الْعَرَبُ أَنِّي أُخْفِرْتُ فِي رَجُلٍ عَقَدْتُ لَهُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَإِنِّي أَرُدُّ إِلَيْكَ جِوَارَكَ، وَأَرْضَى بِجِوَارِ ٱللهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَالنَّبِيُّ ﷺ يَوْمَئِذٍ بِمَكَّةَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْمُسْلِمِينَ: (إِنِّي أُرِيتُ دَارَ هِجْرَتِكُمْ، ذَاتَ نَخْلٍ بَيْنَ لَابَتَيْنِ)، - وَهُمَا الْحَرَّتَانِ - فَهَاجَرَ مَنْ هَاجَرَ قِبَلَ الْمَدِينَةِ، وَرَجَعَ عَامَّةُ مَنْ كَانَ هَاجَرَ بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ إِلَى الْمَدِينَةِ، وَتَجَهَّزَ أَبُو بَكْرٍ قِبَلَ الْمَدِينَةِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (عَلَى رِسْلِكَ، فَإِنِّي أَرْجُو أَنْ يُؤْذَنَ لِي)، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَهَلْ تَرْجُو ذٰلِكَ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي؟ قَالَ: (نَعَمْ). فَحَبَسَ أَبُو بَكْرٍ نَفْسَهُ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ لِيَصْحَبَهُ، وَعَلَفَ رَاحِلَتَيْنِ كَانَتَا

में तकलीफ पहुंचती है तो उसकी मदद करता है। नीज मेहमान नवाज है। गर्ज कुरैश ने इब्ने दगेना की पनाह रद्द न की और उससे कहा कि तुम अबू बकर रजि. को समझा दो। वो घर में अपने परवरदिगार की इबादत करे और वहीं नमाज जो चाहें अदा करें। जोर से यह काम कर के हमारे लिए मुसीबत का सबब न बने, क्योंकि जोर से करने से हमें अपनी औरतों और बच्चों के बिगड़ने का अन्देशा है। इब्ने दगेना ने अबू बकर रजि. को यह पैगाम पहुंचाया और उसी शर्त पर मक्का में रह गये वो अपने घर में अपने परवरदिगार की इबादत करते, नमाज जोर से न अदा करते और न ही अपने घर के सिवा कहीं और तिलावत करते। फिर अबू बकर रजि. के दिल में ख्याल आया तो उन्होंने अपने घर के सहन में एक मस्जिद बनाई, वहां नमाज अदा करते और कुरआन पाक की तिलावत फरमाते। फिर ऐसा हुआ कि मुश्रिकीन औरतें और बच्चे बकसरत उनके पास जमा हो जाते। सबके सब ताज्जुब करते और आपकी तरफ ध्यान देते रहते। चूंकि अबू बकर रजि. बड़े गिड़गिड़ाने वाले आदमी थे।

عِنْدَهُ وَرَقَ السَّمُرِ - وَهُوَ الْخَبَطُ - أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ.

قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: فَبَيْنَمَا نَحْنُ يَوْمًا جُلُوسٌ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، قَالَ قَائِلٌ لِأَبِي بَكْرٍ: هٰذَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مُتَقَنِّعًا، فِي سَاعَةٍ لَمْ يَكُنْ يَأْتِينَا فِيهَا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فِدَاءٌ لَهُ أَبِي وَأُمِّي، وَٱللهِ مَا جَاءَ بِهِ فِي هٰذِهِ السَّاعَةِ إِلَّا أَمْرٌ، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَٱسْتَأْذَنَ، فَأُذِنَ لَهُ فَدَخَلَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَبِي بَكْرٍ: (أَخْرِجْ مَنْ عِنْدَكَ)، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّمَا هُمْ أَهْلُكَ، بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (فَإِنِّي قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ)، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: الصُّحْبَةَ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (نَعَمْ). قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَخُذْ - بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ - إِحْدَى رَاحِلَتَيَّ هَاتَيْنِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بِالثَّمَنِ)، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجَهَّزْنَاهُمَا أَحَثَّ الْجِهَازِ، وَصَنَعْنَا لَهُمَا سُفْرَةً فِي جِرَابٍ، فَقَطَعَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ قِطْعَةً مِنْ نِطَاقِهَا، فَرَبَطَتْ بِهِ عَلَى فَمِ الْجِرَابِ، فَبِذٰلِكَ سُمِّيَتْ ذَاتَ النِّطَاقَيْنِ، قَالَتْ ثُمَّ لَحِقَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ بِغَارٍ فِي جَبَلِ ثَوْرٍ،

जब कुरआन मजीद की तिलावत करते तो उन्हें अपनी आखों पर काबू न रहता था, यह हाल देखकर कुरैश के सरदार खबरा गये। आखिरकार उन्होंने इब्ने दगेना को बुला भेजा। उसके आने पर उन्होंने शिकायत की कि हमने अबू बकर रजि. को तुम्हारी वजह से इस शर्त पर अमान दी थी कि वो अपने घर में अपने परवरदिगार की इबादत करें। मगर उन्होंने इससे आगे बढ़ते हुए अपने घर के सहन में एक मस्जिद बना ली है। जिसमें जोर से नमाज अदा करते हैं और कुरआन पढ़ते हैं। हमें डर है कि कहीं हमारी औरतें और बच्चे बिगड़ न जायें। तुम उन्हें मना करो, अगर वो यह मंजूर कर लें कि अपने घर में अपने परवरदिगार की इबादत करेंगे तो अमान बरकरार। दूसरी सूरत में अगर न मानें और इस पर जिद करें कि जोर से इबादत करेंगे तो तुम अपनी पनाह उससे वापिस मांग लो। क्योंकि हम लोग तुम्हारी पनाह तोड़ना पसन्द नहीं करते और हम अबू बकर रजि. की जोर से इबादत को किसी सूरत में बरकरार नहीं रख सकते। आइशा रजि. फरमाती हैं कि फिर इब्ने दगेना अबू बकर रजि. के

فَكَمَنَا فِيهِ ثَلاَثَ لَيَالٍ، يَبِيتُ عِنْدَهُما عَبْدُ ٱللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، وَهُوَ غُلاَمٌ شَابٌّ، ثَقِفٌ لَقِنٌ، فَيُدْلِجُ مِنْ عِنْدِهِما بِسَحَرٍ، فَيُصْبِحُ مَعَ قُرَيْشٍ بِمَكَّةَ كَبَائِتٍ، فَلاَ يَسْمَعُ أَمْرًا يُكْتَادَانِ بِهِ إِلَّا وَعَاهُ، حَتَّى يَأْتِيَهُمَا بِخَبَرِ ذٰلِكَ حِينَ يَخْتَلِطُ الظَّلاَمُ، وَيَرْعَى عَلَيْهِمَا عامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ مِنْحَةً مِنْ غَنَمٍ، فَيُرِيحُهَا عَلَيْهِمَا حِينَ تَذْهَبُ سَاعَةٌ مِنَ الْعِشَاءِ، فَيَبِيتَانِ فِي رِسْلٍ، وَهُوَ لَبَنُ مِنْحَتِهِمَا وَرَضِيفِهِمَا، حَتَّى يَنْعِقَ بِهَا عامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ بِغَلَسٍ، يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ تِلْكَ اللَّيَالِي الثَّلاَثِ، وَٱسْتَأْجَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ رَجُلًا مِنْ بَنِي ٱلدِّيلِ، وَهُوَ مِنْ بَنِي عَبْدِ بْنِ عَدِيٍّ، هَادِيًا خِرِّيتًا، وَٱلْخِرِّيتُ الْمَاهِرُ بِالْهِدَايَةِ، قَدْ غَمَسَ حِلْفًا فِي آلِ الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ السَّهْمِيِّ، وَهُوَ عَلَى دِينِ كُفَّارِ قُرَيْشٍ، فَأَمِنَاهُ فَدَفَعَا إِلَيْهِ رَاحِلَتَيْهِمَا، وَوَاعَدَاهُ غَارَ ثَوْرٍ بَعْدَ ثَلاَثِ لَيَالٍ، بِرَاحِلَتَيْهِمَا صُبْحَ ثَلاَثٍ، وَٱنْطَلَقَ مَعَهُمَا عامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ، وَٱلدَّلِيلُ، فَأَخَذَ بِهِمْ طَرِيقَ السَّوَاحِلِ.

قَالَ سُرَاقَةُ بْن مالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ، الْمُدْلِجِيُّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: جاءَنَا رُسُلُ كُفَّارِ قُرَيْشٍ، يَجْعَلُونَ فِي رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ، دِيَةَ كُلِّ

पास आया और कहने लगा, तुम्हें मालूम है कि मैंने तुम से किस बात पर वादा किया था। लिहाजा तुम इस पर कायम रहो या फिर मेरी अमान मुझे वापस कर दो। क्योंकि मैं यह नहीं चाहता कि अरब के लोग यह खबर सुने कि जिसको मैंने अमान दी थी, उसे खत्म कर दिया। इस पर अबू बकर रजि. ने कहा कि मैं तेरी अमान वापस करता हूँ और मैं सिर्फ अल्लाह की अमान पर खुश हूं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक्त मक्का में थे। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फरमाया, मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखाई गई है। वहां खजूरों के पेड़ हैं और उसके दोनों तरफ पथरीले मैदान है। यानी काले पत्थर हैं। लिहाजा यह सुनकर जिसने हिजरत की तो मदीना की तरफ रवाना हुआ और अकसर लोग, जिन्होंने हब्शा की तरफ हिजरत की थी, वो मदीना लौट आये और अबू बकर रजि. ने भी मदीना की तैयारी की तो उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ठहर जाओ, क्योंकि उम्मीद है कि मुझे भी इजाजत मिल जायेगी।

وَاحِدٍ مِنْهُمَا، لِمَنْ قَتَلَهُ أَوْ أَسَرَهُ، فَبَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ فِي مَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ قَوْمِي بَنِي مُدْلِجٍ، إِذْ أَقْبَلَ رَجُلٌ مِنْهُمْ، حَتَّى قَامَ عَلَيْنَا وَنَحْنُ جُلُوسٌ، فَقَالَ يَا سُرَاقَةُ: إِنِّي قَدْ رَأَيْتُ آنِفًا أَسْوِدَةً بِالسَّاحِلِ، أُرَاهَا مُحَمَّدًا وَأَصْحَابَهُ، قَالَ سُرَاقَةُ: فَعَرَفْتُ أَنَّهُمْ هُمْ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّهُمْ لَيْسُوا بِهِمْ، وَلٰكِنَّكَ رَأَيْتَ فُلاَنًا وَفُلاَنًا، انْطَلَقُوا بِأَعْيُنِنَا، ثُمَّ لَبِثْتُ فِي الْمَجْلِسِ سَاعَةً، ثُمَّ قُمْتُ فَدَخَلْتُ، فَأَمَرْتُ جَارِيَتِي أَنْ تَخْرُجَ بِفَرَسِي وَهِيَ مِنْ وَرَاءِ أَكَمَةٍ، فَتَحْبِسَهَا عَلَيَّ، وَأَخَذْتُ رُمْحِي، فَخَرَجْتُ بِهِ مِنْ ظَهْرِ الْبَيْتِ، فَحَطَطْتُ بِزُجِّهِ الأَرْضَ، وَخَفَضْتُ عَالِيَهُ، حَتَّى أَتَيْتُ فَرَسِي فَرَكِبْتُهَا، فَرَفَعْتُهَا تُقَرِّبُ بِي، حَتَّى دَنَوْتُ مِنْهُمْ، فَعَثَرَتْ بِي فَرَسِي، فَخَرَرْتُ عَنْهَا، فَقُمْتُ فَأَهْوَيْتُ يَدِي إِلَى كِنَانَتِي، فَاسْتَخْرَجْتُ مِنْهَا الأَزْلاَمَ فَاسْتَقْسَمْتُ بِهَا: أَضُرُّهُمْ أَمْ لاَ، فَخَرَجَ الَّذِي أَكْرَهُ، فَرَكِبْتُ فَرَسِي، وَعَصَيْتُ الأَزْلاَمَ، تُقَرِّبُ بِي حَتَّى إِذَا سَمِعْتُ قِرَاءَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ لاَ يَلْتَفِتُ، وَأَبُو بَكْرٍ يُكْثِرُ الاِلْتِفَاتَ، سَاخَتْ يَدَا فَرَسِي فِي

अबू बकर ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फिदा हों। क्या आपको इसकी उम्मीद है? आपने फरमाया, हां! फिर अबू बकर रजि. ने अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ होने के लिए रोक लिया और अपनी दोनों ऊंटनियों को चार माह तक कीकर के पेड़ के पत्ते खिलाते रहे। आइशा रजि. का बयान है कि एक दिन हम अबू बकर रजि. के घर में दोपहर के वक्त बैठे हुए थे। इतने में किसी ने कहा, देखो, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सर पर चादर औढ़े तशरीफ ला रहे हैं और आप पहले कभी उस वक्त हमारे पास न आते थे। अबू बकर रजि. ने कहा, उन पर मेरे मां-बाप फिदा हों, वो इस वक्त किसी खास जरूरत से ही आये है। आइशा रजि. का बयान है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और आपने अन्दर आने की इजाजत मांगी तो आपको इजाजत दे दी गई। फिर आपने अन्दर आकर अबू बकर रजि. से फरमाया, अपने लोगों से कहो, जरा बाहर चले जायें। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम। मेरे मां-बाप आप पर फिदां हो, यहां तो आप ही के घर वाले हैं। आपने फरमाया, मुझे तो हिजरत की इजाजत दे दी गई है। अबू बकर रजि. ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फिदां हो। मुझे भी साथ लीजिएगा। आपने फरमाया, हां। अबू बकर रजि. ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फिदां हो। तो फिर मेरी उन दो ऊंटनियों में से एक आप ले लें। आपने फरमाया, अच्छा मगर कीमत पर लूंगा।

आइशा रजि. का बयान है कि फिर हमने जल्दी से दोनों का सफर का सामान तैयार किया और दोनों के लिए चमड़े की एक थेली में खाना वगैरह रख दिया और उसमा बिन्ते अबी बकर रजि. ने अपनी पेटी (इजारबन्द) का एक टुकड़ा काट कर उससे थेली का मुंह बन्द किया। इस वजह से उनकी निस्बत जातुन निताकेन (दो पेटी वाली) रखा गया। आइशा रजि. का बयान है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रजि. ने जबल सोर के गार में जाकर छिपे और तीन दिन तक वहां छिपे रहे। अब्दुलाह बिन अबी बकर रजि. भी रात को उनके पास रहते। वो एक जहीन और चालाक

الأرضِ، حتَّى بلغنا الرُّكبتَينِ، فخررتُ عنها، ثمَّ زجرتُها فنهضت، فلم تكد تُخرجُ يديها، فلمَّا استوت قائمةً، إذا لأثرِ يديها عُثانٌ ساطعٌ في السَّماءِ مثلُ الدُّخانِ، فاستقسمتُ بالأزلامِ، فخرجَ الَّذي أكرهُ، فناديتُهم بالأمانِ فوقفوا، فركبتُ فرسي حتَّى جئتُهم، ووقعَ في نفسي حينَ لقيتُ ما لقيتُ منَ الحبسِ عنهم، أن سيظهرُ أمرُ رسولِ الله ﷺ. فقلتُ له: إنَّ قومكَ قد جعلوا فيكَ الدِّيةَ، وأخبرتُهم أخبارَ ما يريدُ النَّاسُ بهم، وعرضتُ عليهمُ الزَّادَ والمتاعَ، فلم يرزآني ولم يسألاني، إلاَّ أن قالَ: (أخفِ عنَّا). فسألتُه أن يكتبَ لي كتابَ أمنٍ، فأمرَ عامرَ ابنَ فهيرةَ فكتبَ في رقعةٍ من أديمٍ، ثمَّ مضى رسولُ الله ﷺ.

فلقيَ الزُّبيرَ رضيَ الله عنهُ في ركبٍ منَ المسلمينَ، كانوا تجَّارًا قافلينَ منَ الشَّامِ، فكسا الزُّبيرُ رسولَ الله ﷺ وأبا بكرٍ ثيابَ بياضٍ، وسمعَ المسلمونَ بالمدينةِ بمخرجِ رسولِ الله ﷺ من مكَّةَ، فكانوا يغدونَ كلَّ غداةٍ إلى الحرَّةِ، فينتظرونهُ حتَّى يردَّهم حرُّ الظَّهيرةِ،

فَانْقَلَبُوا يَوْمًا بَعْدَ ما أَطَالُوا انْتِظَارَهُمْ، فَلَمَّا أَوَوْا إِلَى بُيُوتِهِمْ، أَوْفَى رَجُلٌ مِنْ يَهُودَ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِهِمْ، لِأَمْرٍ يَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَبَصُرَ بِرَسُولِ اللّٰهِ ﷺ وَأَصْحَابِهِ مُبَيَّضِينَ يَزُولُ بِهِمُ السَّرَابُ، فَلَمْ يَمْلِكِ الْيَهُودِيُّ أَنْ قَالَ بِأَعْلَى صَوْتِهِ: يَا مَعَاشِرَ الْعَرَبِ، هٰذَا جَدُّكُمُ الَّذِي تَنْتَظِرُونَ، فَثَارَ الْمُسْلِمُونَ إِلَى السِّلَاحِ، فَتَلَقَّوْا رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ بِظَهْرِ الْحَرَّةِ، فَعَدَلَ بِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ، حَتَّى نَزَلَ بِهِمْ فِي بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، وَذٰلِكَ يَوْمَ الاثْنَيْنِ مِنْ شَهْرِ رَبِيعٍ الْأَوَّلِ، فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ لِلنَّاسِ، وَجَلَسَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ صَامِتًا، فَطَفِقَ مَنْ جَاءَ مِنَ الْأَنْصَارِ - مِمَّنْ لَمْ يَرَ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ - يُحَيِّي أَبَا بَكْرٍ، حَتَّى أَصَابَتِ الشَّمْسُ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى ظَلَّلَ عَلَيْهِ بِرِدَائِهِ، فَعَرَفَ النَّاسُ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ عِنْدَ ذٰلِكَ، فَلَبِثَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ فِي بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، وَأُسِّسَ الْمَسْجِدُ الَّذِي أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى، وَصَلَّى فِيهِ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ، ثُمَّ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ، فَسَارَ يَمْشِي مَعَهُ النَّاسُ حَتَّى بَرَكَتْ عِنْدَ مَسْجِدِ الرَّسُولِ ﷺ بِالْمَدِينَةِ،

नौजवान थे। वो रात के पिछले हिस्से में वापिस चले आते। सुबह कुरैश के साथ मक्का में इस तरह घुल-मिल जाते, जैसे रात को वहीं रहे हैं। फिर वो फिर जितनी बातें उन्हें नुकसान पहुंचाने की सुनते, उन्हें याद रखते। रात का अंधेरा आते ही यह बातें उन दोनों को पहुंचा देते। और अबू बकर रजि. का गुलाम आमिर बिन फहरा भी उनके आस-पास इस तरह बकरियां चराता कि जब कुछ रात गुजर जाती तो वो बकरियों को उनके पास लेकर जाता। वो रात को ताजा और गर्म गर्म दूध पीकर रात बसर करते। फिर सुबह को अन्धेरे ही में उन बकरियों को हांक ले जाता था। चूनांचे वो उन तीन रातों में हर रात ऐसा ही करता रहा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रजि. ने कबीला बनी दुवैल के एक आदमी को मजदूर मुकर्रर फरमाया। यह बनी अब्द बिन अदी में से था। जो बड़ा जानकार राहबर था। वो आस बिन वायल सहमी का हलीफ था और कुफ्फार कुरैश के दीन पर था। फिर उन दोनों ने उसको अमीन बना कर अपनी सवारियां दे दी। और उससे तीन दिन बाद यानी

وَهُوَ يُصَلِّي فِيهِ يَوْمَئِذٍ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، وَكَانَ مِرْبَدًا لِلتَّمْرِ، لِسُهَيْلٍ وَسَهْلٍ غُلاَمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي حَجْرِ أسعد بْنِ زُرَارَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ بَرَكَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ: (هٰذَا إِنْ شَاءَ اللهُ الْمَنْزِلُ)، ثُمَّ دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ الْغُلاَمَيْنِ فَسَاوَمَهُمَا بِالمِرْبَدِ لِيَتَّخِذَهُ مَسْجِدًا، فَقَالاَ: بَلْ نَهَبُهُ لَكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَأَبَى رَسُولُ اللهِ أَنْ يَقْبَلَهُ مِنْهُمَا هِبَةً حَتَّى ابْتَاعَهُ مِنْهُمَا، ثُمَّ بَنَاهُ مَسْجِدًا، وَطَفِقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَنْقُلُ مَعَهُمُ اللَّبِنَ فِي بُنْيَانِهِ وَيَقُولُ، وَهُوَ يَنْقُلُ اللَّبِنَ: (هٰذَا الْحِمَالُ لاَ حِمَالُ خَيْبَرْ، هٰذَا أَبَرُّ رَبَّنَا وَأَطْهَرْ. وَيَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنَّ الأَجْرَ أَجْرُ الآخِرَهْ، فَارْحَمِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ). [رواه البخاري: ٣٩٠٥، ٣٩٠٦]

तीसरे दिन की सुबह को गारे सोर पर दोनों सवारियों को लाने का वादा ले लिया। चूनांचे वो वादे के मुताबिक तीसरी रात की सुबह को ऊंटनियां लेकर हाजिर हुआ। दोनों साहब आमिर बिन फुहेरा और रास्ता बताने वाले आदमी को लेकर रवाना हुए और उस राहबर ने साहिल समन्दर का रास्ता इख्तेयार किया। सराका बिन जोशम रजि. का बयान है कि उधर हमारे पास कुफ्फार कुरैश के कासिद आये जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रजि. के बारे में उस हुक्म का ऐलान कर रहे थे कि जो आदमी उन्हें कत्ल कर देगा या गिरफ्तार करके लाये तो हर एक के बदले एक सौ ऊंट उसको दिये जायेंगे। एक बार ऐसा हुआ कि मैं बनी मुदलिज की एक मजलीस में बैठा हुआ था। इतने में उन्हीं में से एक आदमी आकर हमारे सामने खड़ा हो गया और हम बैठे थे। उसने कहा, ऐ सुराका! बेशक मैंने अभी कुछ लोगों को साहिल समन्दर पर देखा है और मेरा ख्याल है कि वो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसके सहाबा हैं। सुराका कहते हैं, मैं समझ गया कि हो न हो, यह वही हैं।

मगर मैंने ऐसे ही उससे कहा, : वो न होंगे। बल्कि तूने फलां फलां को देखा होगा जो अभी हमारे सामने से गये है। इसके बाद मैं थोड़ी देर तक उस मजलिस में ठहरा रहा। फिर खड़ा हुआ। अपने घर जाकर खादिमा से कहा कि वो मेरा घोड़ा लेकर बाहर जाये और उसको

टीले के पीछे लेकर खड़ी रहे। फिर मैंने अपना नीजा संभाला और मकान के पिछली तरफ से निकला। नीजे की नोक जमीन से लगाकर उसका ऊपर का हिस्सा झुका दिया। इस तरह मैं अपने घोड़े के पास आया और उस पर सवार हो गया। फिर उसे हवा की तरह सरपट दौड़ाया ताकि मुझे जल्दी पहुंचाये। लेकिन जब मैं उनके पास हो गया तो मेरे घोड़े ने ऐसी ठोकर खाई कि मैं घोड़े से गिर पड़ा। फिर मैंने तरकश की तरफ हाथ बढ़ाया और उसमें से तीर निकाल कर फाल ली कि मैं उन लोगों को नुकसान पहुंचा सकूंगा या नहीं! तो वो बात निकली जो नागवार थी। मगर मैं फिर अपने घोड़े पर सवार हो गया और तीरों की बात न मानी। चूनांचे मेरा घोड़ा मुझे लेकर करीब पहुंच गया। यहां तक कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पढ़ने की आवाज सुन ली और आप इधर उधर नहीं देखते। लेकिन अबू बकर रजि. इधर उधर देख रहे थे। इतने में मेरे घोड़े के अगले पांव घुटनों तक जमीन में धंस गये और खुद मैं उसके ऊपर से गिर पड़ा। मैंने घोड़े को डांटा तो बहुत मुश्किल से उसके पांव निकले। मगर जब वो सीधा हुआ तो उसके अगले दोनों पांव से धुंए की तरह गुबार नमुदार हुआ। जो आसमान तक फैल गया। मैंने फिर तीरों से फाल ली तो फिर वही निकला जिसको मैं बुरा जानता था। आखिर मैंने उन्हें अमान के साथ आवाज दी तो वो खड़े हो गये। फिर मैं अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पास पहुंचा और जब मुझे उन तक पहुंचने में रुकावटें पेश आई तो मेरे दिल में ख्याल आया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जरूर बोल-बाला होगा। चूनांचे मैंने आपको बताया कि आपकी कौम ने आपके बारे में सौ ऊंट मुकर्रर कर रखे हैं और फिर मैंने आपसे वो सब बातें बयान कर दी जो वो लोग आपके साथ करना चाहते थे। बाद अजां मैंने उन्हें सफर का खर्च और कुछ सामान पेश किया। लेकिन उन्होंने न तो मेरे माल में कमी की और न कुछ मांगा। अलबत्ता यह

जरूर कहा कि हमारा हाल छिपा हुआ रखना। मैंने उनसे दरख्वास्त की कि मेरे लिए एक तहरीर अमन लिख दें। तो आपने आमिन बिन फुहेरा को हुक्म दिया, जिसने मुझे चमड़े के एक टुकड़े पर सन्द लिख दी और फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रवाना हो गये। फिर रास्ते में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाकात सौदागर मुसलमानों की जमात से हुई जो जुबैर रजि. की निगरानी में शाम से आ रहे थे। जुबैर रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रजि. को सफेद कपड़े पहनाये। उधर मदीना वालों को आपके तशरीफ लाने की खबर पहुंची तो वो लोग मकामे हुर्रा तक हर रोज सुबह तक आपके इस्तकबाल के लिए आते और आपका इन्तेजार करते। फिर दोपहर की गर्मी उन्हें वापस जाने पर मजबूर कर देती। चूनांचे आदत के मुताबिक एक रोज बहुत इन्तेजार के बाद वापस आ गये और अपने घरों में बैठे थे कि एक यहूदी अपनी किसी चीज की तलाश में मदीना के टीलों में से किसी टीले पर चढ़ा तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा को सफेद लिबास में देखा। जितना आप नजदीक हो रहे थे, उतना ही दूर से सराब (मरीचीका) कम होता जाता, तब उस यहूदी से न रहा गया और वो फौरन बुलन्द आवाज में पुकार उठा, ऐ जमात अरब! यह है तुम्हारा मकसूद जिसका तुम शिद्दत से इन्तेजार कर रहे थे। यह सुनते ही मुसलमान हथियार लेकर आपके इस्तकबाल को दौड़े। चूनांचे मकामे हुर्रा में उनसे मुलाकात की। उन्हें साथ लिए दायीं तरफ मुड़े और बनी अम्र बिन औफ के यहां उतरे। यह वाक्या माहे रबी अलअव्वल सोमवार के दिन का है।

अजगर्ल अबू बकर रजि. खड़े होकर लोगों से मिलने लगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामोश बैठे रहे। यहां तक कि वो अनसार जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को न देखा था तो वो अबू बकर रजि. को ही सलाम करते। फिर जब रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को धूप आ गई और अबू बकर रजि. ने खड़े होकर आप पर अपनी चादर का साया किया। तब लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचाना। चूनांचे आप कबीला बनू अम्र बिन औफ में तकरीबन दस रातें ठहरे। और आपने वहीं उस मस्जिद की बुनियाद डाली, जिसकी बुनियाद तकवा पर है और उसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज पढ़ी। इसके बाद आप अपनी ऊंटनी पर चढ़ गये और लोग आपके साथ चल रहे थे, तो वो मदीना में मस्जिदे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाकर बैठ गई। उस वक्त कुछ मुसलमान वहां नमाज पढ़ते थे। यह जमीन दो यतीम लड़को सहल और सुहैल की थी और वहां खजूरें सुखाते थे। यह दोनों बच्चे असद बिन जुरारा की देख रेख में थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जहां ऊंटनी बैठ गई उसके बारे में फरमाया, इन्शा अल्लाह हमारा यही मकाम होगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों बच्चों को बुलवाया और खजूरों के सुघाने की जगह का उनसे भाव किया। ताकि उसे मस्जिद बना सके। उन दोनों ने कहा, हम इसकी कीमत नहीं लेंगे। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम यह जमीन आपको हिबा कर देते हैं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिबा लेना कबूल न फरमाया। बल्कि कीमत देकर उनसे खरीद ली और वहां मस्जिद की बुनियाद रखी और उस मस्जिद की तामीर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब लोगों के साथ ईटे उठाते और फरमाते: "यह बोझ उठाना कोई खैबर का बोझ नहीं है, बल्कि यह तो हमारे रब के नज़दीक सबसे अच्छा और पाकीजा काम है। और यह भी फरमाते, ऐ अल्लाह ! अज्र तो आखिरत का ही अज्र है। तू अनसार और मुहाजिरीन पर रहम फरमा।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैअत अकबा के तकरीबन 3 माह बाद रबी उल अव्वल के शुरू में बरोज जुमेरात हिजरत के लिए मदीना मुनव्वरा रवाना हुए। 12 रबी उल अव्वल बरोज सोमवार कुबा पहुंचे। कुछ दिन यहां रूके, फिर जुमा के दिन मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हुए। रास्ते में कबीला सालिम बिन औफ के यहां जुमा अदा किया। (फतहुलबारी 4/398)

١٥٩٤ : عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا حَمَلَتْ بِعَبْدِ ٱللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَتْ: فَخَرَجْتُ وَأَنَا مُتِمٌّ، فَأَتَيْتُ المَدِينَةَ فَنَزَلْتُ بِقُبَاءٍ، فَوَلَدْتُهُ بِهَا، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَوَضَعْتُهُ فِي حَجْرِهِ، ثُمَّ دَعَا بِتَمْرَةٍ فَمَضَغَهَا، ثُمَّ تَفَلَ فِي فِيهِ، فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ دَخَلَ جَوْفَهُ رِيقُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ حَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ، ثُمَّ دَعَا لَهُ وَبَرَّكَ عَلَيْهِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَوْلُودٍ وُلِدَ فِي الإِسْلاَمِ. [رواه البخاري: ٣٩٠٩]

1594: उसमा रजि. से रिवायत है कि (हिजरत के वक्त) वो अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. से हामिला थीं, उन्होंने फरमाया कि मैं उस वक्त (मक्का से) निकली, जब जचगी का वक्त करीब आ पहुंचा था। फिर मदीना आई और कुबा में कयाम किया तो अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. वहीं पैदा हुए। फिर मैं उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गई। फिर मैंने उसे आपके गोद में रख दिया तो आपने एक खजूर मंगवाई। उसे चबा कर उसमें अपना थूक मिलाया और बच्चे के मुंह में डाल दिया। इस तरह सब से पहले जो चीज उसके पेट में गई, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का थूक था। फिर आपने उसके मुंह में खजूर डालने के बाद उसके लिए बरकत की दुआ की। (मुहाजिरीन का) जमाने इस्लाम में पहला बच्चा था जो पैदा हुआ।

फायदेः हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. हिजरत के बाद मुहाजिरीन के पहले बच्चे थे और अनसार के पहले बच्चे मुसलमा बिन मुखलिद रजि. थे। हिजरत हब्शा के बाद पहले बच्चे अब्दुल्लाह बिन जाफर रजि. थे जो वहीं पैदा हुए थे। (फतहुलबारी 7/292)

1595: अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं गारे सोर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था, जब मैंने अपना सर उठाया तो कुछ लोगों के पांव देखे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर उनमें से किसी ने भी अपनी निगाह नीची की तो हमें देख लेगा। आपने फरमाया, ऐ अबू बकर रजि.! खामोश रहो, हम दो आदमी ऐसे हैं, जिनके साथ तीसरा अल्लाह है।

١٥٩٥ : عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا أَنَا بِأَقْدَامِ الْقَوْمِ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لَوْ أَنَّ بَعْضَهُمْ طَأْطَأَ بَصَرَهُ رَآنَا، قَالَ (اسْكُتْ يَا أَبَا بَكْرٍ، ٱثْنَانِ ٱللهُ ثَالِثُهُمَا). [رواه البخاري: ٣٩٢٢]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस तसल्ली को कुरआन करीम ने इस तरह बयान किया: आप फिक्रमन्द न हों, यकीनन अल्लाह तआला हमारे साथ हैं।'' और जिसे अल्लाह की सोहबत हासिल हो, उसे कौन नुकसान पहुंचा सकता है?

बाब 45: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. का मदीना में तशरीफ लाना।

٤٥ - باب: مَقْدَمُ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ الْمَدِينَةَ

1596: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि सब से पहले हमारे पास मुसअब बिन उमेर रजि. और इब्ने उम्मे मकतूम रजि. आये थे। वो दोनों लोगों को कुरआन करीम पढ़ाया करते थे। फिर बिलाल, साद और अम्मार बिन यासिर रजि. आये। उनके बाद उमर रजि. रसूलुल्लाह

١٥٩٦ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَوَّلُ مَنْ قَدِمَ عَلَيْنَا مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَٱبْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ، وَكَانَا يُقْرِئَانِ النَّاسَ، فَقَدِمَ بِلاَلٌ وَسَعْدٌ وَعَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ، ثُمَّ قَدِمَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِي عِشْرِينَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ، فَمَا رَأَيْتُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرِحُوا بِشَيْءٍ فَرَحَهُمْ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، حَتَّى جَعَلَ الإِمَاءُ يَقُلْنَ،

قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَمَا قَدِمَ حَتَّى قَرَأْتُ: ﴿سَبِّحِ ٱسْمَ رَبِّكَ ٱلْأَعْلَى﴾. فِي سُوَرٍ مِنَ المُفَصَّلِ. [رواه البخاري: ٣٩٢٥]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीस सहाबा किराम को साथ लिए हुए मदीना पहुंचे। उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आना हुआ। मैंने मदीना वालों को किसी बात से इतना खुश नहीं देखा, जितना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तशरीफ लाने से वो खुश हुए। लौण्डियां तक कहने लगी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये। जब आप आये तो मैं सब्बे हिस्मा रब्बिकल आला और मुफस्सल की कई सूरतें पढ़ चुका था।

फायदे: मुस्तदरक की हाकिम के रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना के करीब पहुंचे तो कबीला निजार की बच्चियां खुशी से यह शेर पढ़ रही थी: ''हम निजार की लड़कियां हैं, जहे किस्मत हमें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पड़ौस नसीब हुआ है।'' (फतहुलबारी 7/307)

٤٦ - باب: إِقَامَةُ المُهَاجِرِ بِمَكَّةَ بَعْدَ قَضَاءِ نُسُكِهِ

बाब 46: मुहाजिरीन का हज को अदा करने के बाद मक्का में ठहरना।

١٥٩٧ : عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ الحَضْرَمِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ثَلَاثٌ لِلْمُهَاجِرِ بَعْدَ الصَّدَرِ). [رواه البخاري: ٣٩٣٣]

1597: अला बिन हजरमी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुहाजिरीन को तवाफ विदाअ के बाद तीन दिन तक मक्का में रहने की इजाजत है।

फायदे: इससे मालूम हुआ कि मुसाफिर अगर किसी मकाम पर तीन दिन तक रूकता है तो उस पर अहकामे सफर जारी रहेगा। ठहरने के हुक्म तीन दिन से ज्यादा रूकने पर होंगे। (फतहुलबारी 7/313)

बाब 47: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदीना तशरीफ लाने पर यहूदियों का आपके पास आना।

٤٧ - باب: إِتْيَانُ الْيَهُودِ النَّبِيَّ ﷺ حِينَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ

1598: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर दस यहूदी भी मुझ पर ईमान ले आते तो सब यहूदी मुसलमान हो जाते।

١٥٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَوْ آمَنَ بِي عَشَرَةٌ مِنَ الْيَهُودِ لآمَنَ بِي الْيَهُودُ). [رواه البخاري: ٣٩٤١]

फायदे: मदीना मुनव्वरा में यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे। और उनमें दस आदमी बड़ा असर व रसूख रखते थे। बनी नजीर में अबू यासिर बिन अखतब, उसके भाई हुयई बिन अखतब, कअब बिन अशरफ, राफेह बिन अबील हकीक, बनू कैनुका में अब्दुल्लाह बिन हनीफ, फखास, रफाअ बिन जैद और बनू कुरैजा में जुबैर बिन बातिया, कअब बिन असद और समूविल बिन जैद। अगर यह सरदार मुसलमान हो जाते तो मदीना के तमाम यहूदी जो उनके मानने वाले थे, वो भी मुसलमान हो जाते। लेकिन उनमें से किसी को इस्लाम नसीब न हुआ। (फतहुलबारी 7/322)



किताबुल मगाजी

गजवात के बयान में

बाब 1: गजवा उशैरा।

١ - بَاب: غزوة العشيرة

1599: जैद बिन अकदम रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ्फार से कितनी लड़ाईयां लड़ी हैं? उन्होंने कहा, उन्नीस। फिर उनसे पूछा गया, उनमें से कितनी गजवाजात में तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। उन्होंने कहा, सतरह में। उनसे पूछा गया, सबसे पहला गजवा कौन सा था। उन्होंने कहा, उसैरह या उशैरह।

١٥٩٩ : عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قِيلَ لَهُ: كَمْ غَزَا النَّبِيُّ ﷺ مِنْ غَزْوَةٍ؟ قَالَ: تِسْعَ عَشْرَةَ، قِيلَ: كَمْ غَزَوْتَ أَنْتَ مَعَهُ؟ قَالَ: سَبْعَ عَشْرَةَ، قِيلَ: فَأَيُّهُمْ كَانَتْ أَوَّلَ؟ قَالَ: الْعُشَيْرُ أَوِ الْعُسَيْرَةُ. [رواه البخاري: ٣٩٤٩]

फायदेः गजवा उस जंग को कहा जाता है, जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद शिरकत की हो। सही रिवायात के मुताबिक गजवात की तादाद इक्कीस है। ऐन मुमकिन है कि अबवा और बवात में अदम शिरकत की वजह से उन्हें बयान नहीं किया, क्योंकि जैद बिन अरकम रजि. उस वक्त छोटी उम्र के थे। (फतहुलबारी 7/328)

बाब 2: फरमाने इलाही : "जब तुम अपने परवरदीगार से फरियाद कर रहे थे (..........शदीदुल इकाब) तक।

٢ - بَاب: قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿شَدِيدُ الْعِقَابِ﴾

١٦٠٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْتُ مِنَ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ مَشْهَدًا، لأَنْ أَكُونَ صَاحِبَهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا عُدِلَ بِهِ، أَتَى النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يَدْعُو عَلَى الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: لاَ نَقُولُ كما قَالَ قَوْمُ مُوسَى: (اذهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا)، وَلٰكِنَّا نُقَاتِلُ عَنْ يَمِينِكَ وَعَنْ شِمالِكَ وَبَيْنَ يَدَيْكَ وَخَلْفَكَ. فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَشْرَقَ وَجْهُهُ وَسَرَّهُ. [رواه البخاري: ٣٩٥٢]

1600: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने मिकदाद बिन असवद रजि. में ऐसी बात देखी, अगर वो बात मुझे हासिल होती तो किसी नेकी को उसके बराबर न समझता। (सबसे ज्यादा वो मुझको पसन्द होती) हुआ यह कि मिकदाद बिन असवद रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये, जबकि आप लोगों को मुश्रिकीन से लड़ने की तरगीब दे रहे थे। मिकदाद रजि. ने कहा, जिस तरह मूसा अलैहि. की कौम ने उनसे कहा था कि तू और तेरा रब दोनों लड़ो, हम ऐसा नहीं कहेंगे। जबकि हम तो आपके दायें बायें और आगे पीछे लड़ेंगे। इब्ने मसऊद रजि. का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आपका चेहरा मुबारक रोशन हो गया था और आप उन पाकिजा जज्बात से बहुत खुश हुए थे।

फायदे: हुआ यूं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर के दिन काफिला लूटने के लिए लोगों को साथ लेकर मदीना से निकले थे। वादी सफराअ में पहुंचकर पता चला कि काफिला बच कर निकल गया है और दूसरे मुश्रिकीन लड़ाई के लिए तैयार हैं। आपको ख्याल आया कि शायद मेरे सहाबा लड़ाई के लिए तैयार न हों। क्योंकि वो लड़ाई के इरादे से नहीं निकले थे। ऐसे हालात में मिकदाद रजि. ने अपने पाकिजा जज्बात का इजहार किया। (फतहुलबारी 7/335)

---

٣ - باب: عِدَّة أَصْحَابِ بَدْرٍ

बाब 3: जंगे बदर में शामिल होने वालों की तादाद।

١٦٠١ : عَنِ ٱلْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا: عِدَّةَ أَصْحَابِ طَالُوتَ، الَّذِينَ جَازُوا مَعَهُ النَّهَرَ، بِضْعَةَ عَشَرَ وَثَلاثَمِائَةٍ.

قَالَ ٱلْبَرَاءُ: لاَ وَٱللهِ مَا جَاوَزَ مَعَهُ النَّهَرَ إِلاَّ مُؤْمِنٌ. [رواه البخاري: ٣٩٥٧]

1601: बराअ रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन असहाब की तादाद जो गजवा बदर में शरीक हुए थे, हजरत तालूत के उन साथियों के बराबर थी जो नहर से पार हो गये थे और वो तीन सौ दस से कुछ ज्यादा थे। बराअ रज़ि. का बयान है कि अल्लाह की कसम! तालूत के साथ ईमान वालों के अलावा कोई दूसरा नहर से पार नहीं हुआ था।

फायदे: गजवा बदर में मुहाजिरीन साठ से ज्यादा थे और अनसार की तादाद दो सौ चालीस से ज्यादा थी। और उनके मुकाबले में कुफ्फार की तादाद उनसे कहीं ज्यादा, हर किस्म के हथियारों से लैस लेकिन मुसलमान बिना हथियार। इनके बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फतह दी। (फतहुलबारी 7/340)

बाब 4: अबू जहल के कत्ल का बयान।

٤ - باب: قتل أبي جهل

١٦٠٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ يَنْظُرُ مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ؟). فَانْطَلَقَ ٱبْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ٱبْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ، قَالَ: أَأَنْتَ أَبُو جَهْلٍ؟ قَالَ: فَأَخَذَ بِلِحْيَتِهِ، قَالَ: وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ، أَوْ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ. [رواه البخاري: ٣٩٦٢]

1602: अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कौन है जो देखे कि अबू जहल का क्या हाल हुआ? यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. गये, देखा कि अफरा के दोनों बेटों ने उसको इतना मारा है कि वो ठण्डा हो रहा था। यानी मौत के करीब था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. ने कहा, क्या तू अबू जहल है? फिर आपने उसकी दाढ़ी पकड़ ली। उसने फख्र करते हुए कहा, भला मुझ

से बढ़कर कौन आदमी है, जिसको तुमने कत्ल किया या यूं कहने लगा, उस आदमी से बढ़कर कौन है, जिसको उसकी कौम ने कत्ल किया हो?

फायदे: मुस्तदरक हाकिम की रिवायत में है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने कहा कि जब मैं अबू जहल के पास गया तो वो आखरी सांस ले रहा था। मैंने अपना पांव उसकी गर्दन पर रखा और कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह ने तुझे रूसवा करके रख दिया है। फिर मैंने उसका सर कलम कर दिया और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले आया। (फतहुलबारी 7/344)

١٦٠٣ : عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: إِنَّ نَبِيَّ ٱللهِ ﷺ أَمَرَ يَوْمَ بَدْرٍ بِأَرْبَعَةٍ وَعِشْرِينَ رَجُلًا مِنْ صَنَادِيدِ قُرَيْشٍ، فَقُذِفُوا فِي طَوِيٍّ مِنْ أَطْوَاءِ بَدْرٍ خَبِيثٍ مُخْبِثٍ، وَكَانَ إِذَا ظَهَرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلَاثَ لَيَالٍ، فَلَمَّا كَانَ بِبَدْرٍ الْيَوْمَ الثَّالِثَ أَمَرَ بِرَاحِلَتِهِ فَشُدَّ عَلَيْهَا رَحْلُهَا، ثُمَّ مَشَى وَتَبِعَهُ أَصْحَابُهُ وَقَالُوا: مَا نُرَى يَنْطَلِقُ إِلَّا لِبَعْضِ حَاجَتِهِ، حَتَّى قَامَ عَلَى شَفَةِ الرَّكِيِّ، فَجَعَلَ يُنَادِيهِمْ بِأَسْمَائِهِمْ وَأَسْمَاءِ آبَائِهِمْ: (يَا فُلَانُ بْنَ فُلَانٍ، وَيَا فُلَانُ ابْنَ فُلَانٍ، أَيَسُرُّكُمْ أَنَّكُمْ أَطَعْتُمُ ٱللهَ وَرَسُولَهُ، فَإِنَّا قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا، فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا)، قَالَ: فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَا تُكَلِّمُ مِنْ أَجْسَادٍ

1603: अबू तल्हा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन चौबीस कुरैशी सरदारों को बदर के कुंऐ में से एक गन्दे नापाक कुऐं में फैंक देने का हुक्म दिया और आपकी यह आदत थी कि जब आप किसी कौम पर फतह हासिल करते तो उस मैदान में तीन दिन तक रूकते। फिर फतह बदर के तीसरे दिन ही आपने वहां से कूच करने का हुक्म दिया। आपकी ऊंटनी पर पालान कस दिया गया। फिर आप वहां से रवाना हुए। आपके सहाबा भी आपके साथ थे। उन्होंनें कहा कि हमें अन्दाजा हो चुका था कि आप किसी नये काम के लिए तशरीफ ले जा रहे हैं, यहाँ तक कि कुंए

لاَ أَرْوَاحَ لَهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ). [رواه البخاري: ٣٩٧٦]

के किनारे पर जाकर ठहर गये और मकतुलिन कुफ्फार को नाम बनाम मय उनकी वल्दीयत इस तरह पुकारने लगे, ऐ फलां बिन फलां क्या तुमको यह आसान न था कि तुम अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करते। हम से तो जिस सवाब व अजर का हमारे मालिक ने वादा किया था, वो हमने पा लिया। तुम से जिस अजाब का परवरदिगार ने वादा किया था, तुमने भी वो पा लिया है या नहीं? रावी का बयान है कि उमर रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप ऐसी लाशों से गुफ्तगू करते हैं, जिनमें रूह नहीं है? आपने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके कब्जे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है, मैं जो बातें कर रहा हूँ, तुम उनको मुर्दों से ज्यादा नहीं सुनते।

फायदे: इस हदीस के आखिर में रावी हदीस हजरत कतादा रज़ि. फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने उन मकतूलीन को डांट पिलाने, जलील करने, इन्तेकाम लेने, आहें भरने और शर्मिन्दा करने के लिए जिन्दा कर दिया था।

٥ - باب: شُهُودُ المَلاَئِكَةِ بَدْرًا

बाब 5: फरिश्तों का जंगे बदर में हाजिर होना।

١٦٠٤ : عَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ الزُّرَقِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا، قَالَ: جَاءَ جِبْرِيلُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: مَا تَعُدُّونَ أَهْلَ بَدْرٍ فِيكُمْ؟ قَالَ: (مِنْ أَفْضَلِ المُسْلِمِينَ)، أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا، قَالَ: وَكَذٰلِكَ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ المَلاَئِكَةِ. [رواه البخاري: ٣٩٩٢]

1604: रफाअ बिन राफेअ जुरकी रज़ि. से रिवायत है और यह उन लोगों में से हैं जो जंगे बदर में हाजिर थे, उन्होंने फरमाया कि जिब्राईल अलैहि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर पूछा कि आप बदर वालों

को कैसा जानते हैं? आपने फरमाया कि वो सब मुसलमानों से अफजल हैं। या उसके बराबर कोई कलाम इरशाद फरमाया। जिब्राईल अलैहि. ने कहा, उसी तरह वो फरिश्ते जो गजवा बदर में हाजिर हुये, वो भी दूसरे फरिश्तों से बेहतर हैं।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि मुसलमान किसी काफिर को मारने के लिए दौड़ रहा था, इतने में उस पर कोड़ा लगने की आवाज आई और काफिर गिरते ही मर गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह तीसरे आसमान से मदद आई थी।

 (फतहुलबारी 7/343)

١٦٠٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمَ بَدْرٍ: (هٰذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ، عَلَيْهِ أَدَاةُ الحَرْبِ). [رواه البخاري: ٣٩٩٥]

1605: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन फरमाया कि यह जिब्राईल अलैहि. हैं जो अपने घोड़े का सर थामे हुए और लड़ाई के हथियार लगाये हुए हैं।

फायदे: एक रिवायत में है कि हजरत जिब्राईल अलैहि. सुर्ख घोड़े पर सवार थे, जिसकी पैशानी के बाल गुंथे हुए थे और जिरह पहने धूल मिट्टी से अटे हुए थे। (फतहुलबारी 7/364)

बाब 6:

٦ - باب

١٦٠٦ : عَنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَقِيتُ يَوْمَ بَدْرٍ عُبَيْدَةَ بْنَ سَعِيدِ بْنِ العَاصِ وَهُوَ مُدَجَّجٌ لاَ يُرَى مِنْهُ إِلَّا عَيْنَاهُ، وَهُوَ يُكْنَى أَبُو ذَاتِ الكَرِشِ، فَقَالَ: أَنَا أَبُو ذَاتِ الكَرِشِ، فَحَمَلْتُ عَلَيْهِ بِالعَنَزَةِ فَطَعَنْتُهُ فِي عَيْنِهِ فَمَاتَ، قَالَ: لَقَدْ

1606: जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं बदर के दिन उबैदा बिन सईद बिन आस के सामने हुआ जो हथियारों से इस तरह लैस था कि उसकी आंखों के अलावा उसके जिस्म का कोई हिस्सा दिखाई न देता था।

وَضَعْتُ رِجْلِي عَلَيْهِ، ثُمَّ تَمَطَّأْتُ، فَكَانَ الجَهْدُ أَنْ نَزَعْتُهَا وَقَدِ انْثَنَى طَرَفَاهَا، فَسَأَلَهُ إِيَّاهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا، فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَخَذَهَا، ثُمَّ طَلَبَهَا أَبُو بَكْرٍ فَأَعْطَاهُ، فَلَمَّا قُبِضَ أَبُو بَكْرٍ سَأَلَهَا إِيَّاهُ عُمَرُ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا، فَلَمَّا قُبِضَ عُمَرُ أَخَذَهَا، ثُمَّ طَلَبَهَا عُثْمَانُ مِنْهُ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا. فَلَمَّا قُتِلَ عُثْمَانُ وَقَعَتْ عِنْدَ آلِ عَلِيٍّ، فَطَلَبَهَا عَبْدُ ٱللهِ ابْنُ الزُّبَيْرِ، فَكَانَتْ عِنْدَهُ حَتَّى قُتِلَ.
[رواه البخاري ٣٩٩٨]

उसकी कुन्नीयत अबू जातिल करीश थी। उसने कहा, मैं अबू जातिल करीश यानी बहादुरी का बाप हूँ। मैंने उस पर निजे से वार किया। उसकी आंखों पर ऐसा निशाना लगाया कि वो मर गया। फिर मैंने अपना पांव उस पर रखा और अंगड़ाई लेने वाले की तरह निजा निकालने के लिए दराज हुआ। बड़ी मुश्किल से अपना निजा निकाला। उसके दोनों किनारे टेढ़े हो चुके थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुबैर रजि. से वो निजा मांगा तो उन्होंने आपको दे दिया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफात पाई तो जुबैर रजि. ने वो निजा ले लिया। फिर जुबैर से वही निजा अबू बकर ने मांगा। तो उन्होंने उनको दे दिया और जब अबू बकर रजि. ने वफात पाई तो वही निजा फिर उमर रजि. ने मांगा तो उन्होंने उनको भी दे दिया। फिर जब उमर रजि. शहीद हुए तो जुबैर रजि. ने वो निजा ले लिया। फिर उसमान रजि. ने मांगा तो उन्हें भी दे दिया। फिर जब उसमान रजि. शहीद हुए तो वो निजा आले अली रजि. के पास रहा। आखिरकार उस निजा को अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. ने ले लिया और वो उनके पास उनकी शहादत तक रहा।

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. की शहादत के बाद उनका साजो सामान अब्दुल मुलिक बिन मरवान के पास पहुंचा दिया गया था। शायद यह तारीखी निजा उसी सामान के साथ वहां पहुंचा दिया गया हो।

١٦٠٧ : عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ غَدَاةَ بُنِيَ عَلَيَّ، [فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كَمَجْلِسِكَ مِنِّي] وَجُوَيْرِيَاتٌ يَضْرِبْنَ بِٱلدُّفِّ، يَنْدُبْنَ مَنْ قُتِلَ مِنْ آبَائِي يَوْمَ بَدْرٍ، حَتَّى قَالَتْ جَارِيَةٌ: وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَا تَقُولِي هٰكَذَا، وَقُولِي مَا كُنْتِ تَقُولِينَ). [رواه البخاري: ٤٠٠١]

1607: रूबयै बिन्ते मुअविज रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास उस सुबह को तशरीफ लाये, जो मेरी मिलन रात के बाद थी। और मेरे बिस्तर पर तशरीफ फरमां हुए जिस तरह तू मेरे पास बैठा है और कुछ बच्चियां उस वक्त दुफ बजा रही थीं और मेरे उन बुजुर्गों का मरशिया पढ़ रही थीं जो बदर में कत्ल कर दिये गये थे। उनमें से एक बच्ची (गाते गाते) यह कहने लगी:

"हम में है एक नबी जो जानता है कल की बात।"। उस वक्त आपने फरमाया, इस तरह न कहो, बल्कि वही कहो जो तुम पहले कह रही थी।

फायदे: इस हदीस से खुशी के मौके पर गाने का सबूत मिलता है। बशर्ते कि गाने वाली गायिका न हो, बल्कि छोटी बच्चियां हो। और ऐसे शेर पढ़े जायें जिनमें बहादुरी और शुजाअत का जिक्र हो। इसके अलावा शरीअत के खिलाफ उनवान पर भी शामिल न हो।

١٦٠٨ : عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَانَ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: أَنَّهُ قَالَ: (لَا تَدْخُلُ المَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ). [رواه البخاري: ٤٠٠٢]

1608: अबू तल्हा रजि. से रिवायत है, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गजवा बदर में शरीक थे। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, रहमत के फरिश्ते उस घर में दाखिल नहीं होते जिसमें कुत्ता या किसी (जानवर) की तस्वीर हो।

फायदे: इस हदीस के आखिर में हजरत इब्ने अब्बास रजि. ने वजाहत फरमाई है कि तस्वीर से मुराद किसी जानवर की सूरत गिरी है। क्योंकि इससे खालिक व कायनात की तस्वीर बनाने वाले के समान होती है।

1609: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब हफ्सा रजि. अपने शौहर खुनैस बिन हुजाफा सहमी रजि. के मरने से बेवा हुई। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी थे और बदर में भी शरीक थे और मदीना में फौत हुए। उमर रजि. कहते हैं कि मैं उसमान रजि. से मिला और उनसे हफसा रजि. का जिक्र किया और कहा, अगर तुम्हारी मर्जी हो तो अपनी दुख्तर हफसा रजि. का निकाह तुम से कर दूं। उसमान रजि. ने फरमाया, मैं उस पर गौर करूंगा। फिर मैं कई रातें ठहरा रहा तो उसमान रजि. ने फरमाया, अभी मैं यही मुनासिब समझा हूँ कि इन दिनों (दूसरा) निकाह न करूं। फिर मैं अबू बकर रजि. से मिला और उनसे कहा, अगर तुम चाहो तो मैं अपनी बेटी हफसा रजि. का निकाह तुम से कर दूं। अबू बकर रजि. खामोश रहे और कुछ जवाब न दिया। मुझे उन पर उसमान रजि. से भी ज्यादा गुस्सा आया। मगर मैं कुछ रातें ही ठहरा था कि

١٦٠٩ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا مِنْ خُنَيْسِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا، تُوُفِّيَ بِالْمَدِينَةِ، قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَفْصَةَ، فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ، قَالَ: سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي، فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ، فَقَالَ: قَدْ بَدَا لِي أَنْ لاَ أَتَزَوَّجَ يَوْمِي هٰذَا. قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ، فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ، فَصَمَتَ أَبُو بَكْرٍ فَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيَّ شَيْئًا، فَكُنْتُ عَلَيْهِ أَوْجَدَ مِنِّي عَلَى عُثْمَانَ، فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ ثُمَّ خَطَبَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَنْكَحْتُهَا إِيَّاهُ، فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: لَعَلَّكَ وَجَدْتَ عَلَيَّ حِينَ عَرَضْتَ عَلَيَّ حَفْصَةَ فَلَمْ أَرْجِعْ إِلَيْكَ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَإِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرْجِعَ إِلَيْكَ فِيمَا عَرَضْتَ، إِلَّا أَنِّي قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ ذَكَرَهَا، فَلَمْ أَكُنْ لِأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَوْ

تَرَكَهَا لَقَبِلْتُهَا. [رواه البخاري: ٤٠٠٥]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हफसा रजि. को निकाह का पैगाम भेजा, जिस पर मैंने फौरन उनका निकाह आपसे कर दिया। फिर मुझे अबू बकर रजि. मिले और उन्होंने कहा, शायद तुम मुझ से नाराज हो गये हो। क्योंकि तुमने हफसा रजि. का जिक्र किया था और मैंने कुछ जवाब न दिया था। मैंने कहा, हां! मुझे दुख तो हुआ था। उन्होंने फरमाया कि दरअसल बात यह थी कि मुझे तुम्हारी पैशकश कबूल करने में कोई हुक्म रोकने वाला न था। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मुझ से) हफसा रजि. का जिक्र किया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का राज बताना मुझे मन्जूर न था। हां, अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना इरादा छोड़ देते तो मैं हफसा रजि. को जरूर कबूल कर लेता।

फायदे: हजरत उमर रजि. को हजरत अबू बकर रजि. के बारे में ज्यादा गुस्सा इसलिए आया कि हजरत उसमान रजि. ने पहले उस मालमे पर गौर व फिक्र करने की मोहलत मांगी। फिर वजह पेश कर दी। जबकि हजरत अबू बकर रजि. ने सिरे से कोई जवाब ही न दिया। इसके अलावा हजरत अबू बकर रजि. से ताल्लुक खातिर भी ज्यादा था। इसलिए नाराजगी भी ज्यादा हुई। (फतहुलबारी 4/438)

١٦١٠ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ، مَنْ قَرَأَهُمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ). [رواه البخاري: ٤٠٠٨]

1610: अबू मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी रात को सूरह बकरा की आखरी दो आयात पढ़ ले तो वो उसके लिए काफी हो जाती है।

फायदे: ज्यादातर लोगों का ख्याल है है कि अबू मसऊद उतबा बिन अम्र

अनसारी चूंकि बदर के रिहाईशी थे, इसलिए उन्हें बदरी कहा जाता है। गजवा बदर में शरीक नहीं हुए थे, लेकिन सही बुखारी (हदीस 4007) से मालूम होता है कि उन्होंने गजवा बदर में शिरकत भी की थी।

١٦١١ : عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ عَمْرٍو الْكِنْدِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، حَلِيفِ بَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا قَالَ قُلْتُ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ: أَرَأَيْتَ إِنْ لَقِيتُ رَجُلًا مِنَ الكُفَّارِ فَاقْتَتَلْنَا، فَضَرَبَ إِحْدَى يَدَيَّ بِالسَّيْفِ فَقَطَعَهَا، ثُمَّ لاَذَ مِنِّي بِشَجَرَةٍ فَقَالَ: أَسْلَمْتُ لِلهِ، أَقْتُلُهُ يَا رَسُولَ ٱللهِ بَعْدَ أَنْ قَالَهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَقْتُلْهُ). قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ إِنَّهُ قَطَعَ إِحْدَى يَدَيَّ، ثُمَّ قَالَ ذٰلِكَ بَعْدَ مَا قَطَعَهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَقْتُلْهُ، فَإِنْ قَتَلْتَهُ فَإِنَّهُ بِمَنْزِلَتِكَ قَبْلَ أَنْ تَقْتُلَهُ، وَإِنَّكَ بِمَنْزِلَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ كَلِمَتَهُ الَّتِي قَالَ). [رواه البخاري: ٤٠١٩]

1611: मिकदाद बिन अम्र किनदी रज़ि. से रिवायत है, जो बनी जहरा के हलीफ और गजवा बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, अगर मैं किसी काफिर से लडूं और लड़ाई में वो मेरा एक हाथ तलवार से उड़ा दे। फिर मुझ से डरकर एक पेड़ की पनाह लेकर मुझ से कहे, मैं तो अल्लाह के लिए मुसलमान हो गया हूँ। अब मैं उसे कत्ल करूं, जब वो ऐसा कहता है? आपने फरमाया, उसे कत्ल न करो, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसने मेरा हाथ काट दिया। फिर काटने के बाद यह कलमा कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसे हरगिज कत्ल न करो, वरना उसको वो दर्जा हासिल होगा जो तुझे उसके कत्ल से पहले हासिल था। और तेरा हाल वो हो जायेगा जो कलमा इस्लाम पढ़ने से पहले उसका था।

फायदे: इस से मालूम हुआ कि जो इन्सान कलमा शहादत अदा कर के मुसलमान हो जाता है, उसका खून और माल महफूज हो जाता है। उसके अन्दरूनी हालत कुरेदने का हमें हुक्म नहीं दिया गया है। चूनांचे

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे हालात में फरमाया कि क्या तूने उसका दिल फाड़कर देखा था कि उसमें कुफ्र छुपा हुआ है।

(फतहुलबारी 4/441)

1612: जुबैर बिन मुतईम रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर के कैदियों के मामले में इरशाद फरमाया, अगर मुतईम बिन अदी जिन्दा होता और उन गन्दे लोगों की सिफारिश करता तो मैं उसके कहने पर उन्हें छोड़ देता।

١٦١٢ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ فِي أُسَارَى بَدْرٍ: (لَوْ كَانَ ٱلْمُطْعِمُ ٱبْنُ عَدِيٍّ حَيًّا، ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هٰؤُلاَءِ ٱلنَّتْنَى، لَتَرَكْتُهُمْ لَهُ). [رواه البخاري: ٤٠٢٤]

फायदे: कुछ रिवायतों में इसकी वजह यूं बयान की गई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तायफ से वापिस लौटे तो मुतईम की पनाह में दाखिल हुए थे। उसने आपको बचाने के लिए अपने चारों बेटों को हथियार से लैस करके बैतुल्लाह के कोनों पर खड़ा कर दिया था। जिससे कुरैश डर गये और आपका कुछ न बिगाड़ सके।

(फतहुलबारी 7/376)

बाब 7: बनी नजीर का किस्सा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उनकी गद्दारी का बयान।

٧ - باب: حَدِيثُ بَنِي النَّضِيرِ وغَدْرِهِم بِرَسُولِ الله ﷺ

1613: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब बनी नजीर और बनी कुरैजा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लड़ाई की तो आपने बनी नजीर को देश निकाला दे दिया और बनी कुरैजा पर अहसान करते हुए

١٦١٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَارَبَتِ ٱلنَّضِيرُ وَقُرَيْظَةُ، فَأَجْلَى بَنِي ٱلنَّضِيرِ وَأَقَرَّ قُرَيْظَةَ وَمَنَّ عَلَيْهِمْ، حَتَّى حَارَبَتْ قُرَيْظَةُ، فَقَتَلَ رِجَالَهُمْ، وَقَسَمَ نِسَاءَهُمْ وَأَوْلاَدَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بَيْنَ ٱلْمُسْلِمِينَ، إِلَّا بَعْضَهُمْ لَحِقُوا بِالنَّبِيِّ

فَأَمَّنَهُمْ وَأَسْلَمُوا، وَأَجْلَى يَهُودَ الْمَدِينَةِ كُلَّهُمْ: بَنِي قَيْنُقَاعَ وَهُمْ رَهْطُ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَامٍ، وَيَهُودَ بَنِي حَارِثَةَ، وَكُلَّ يَهُودِ الْمَدِينَةِ. [رواه البخاري: ٤٠٢٨]

उन्हें रहने दिया। लेकिन उन्होंने दोबारा आपसे लड़ाई की तो आपने उनके मर्दो को कत्ल किया और उनकी औरतों, बच्चों और माल व असबाब को मुसलमानों में तकसीम कर दिया। मगर उनमें से कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल गये तो आपने उन्हें अमन दे दिया और वो मुसलमान हो गये। फिर आपने मदीना के बनी कैनुका के तमाम यहूद को जो अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. की कौम से थे और यहूद बनी हारिसा को और मदीना के तमाम यहूदियों को देश निकाला दे दिया।

फायदे: मदीना के यहूदियों के तीन बड़े कबीले थे और तीनों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुल्ह कर रखी थी। चूनांचे गजवा बदर के बाद बनू कैनुका ने उसकी खिलाफवर्जी की तो उन्हें अजराअत की तरफ निकला दिया गया। इसके बाद बनू नजीर ने वादा तोड़ा और गजवा खन्दक के मौके पर बनू कुरैजा ने भी उस मेल-मिलाप के वादों को तोड़ दिया तो आपने उन सब को देश निकाला दे दिया।

 (फतहुलबारी 7/384)

١٦١٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَرَّقَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ وَقَطَعَ، وَهِيَ الْبُوَيْرَةُ، فَنَزَلَتْ: ﴿مَا قَطَعْتُم مِّن لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰٓ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾. [رواه البخاري: ٤٠٣١]

1614: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी नजीर के पेड़ जलाये और कुछ काट दिये जो कि बुवैरा में थे तो उस पर यह आयत उतरी:

"जो पेड़ तुमने काटे या उन्हें उनकी जड़ों पर कायम रहने दिया यह सब अल्लाह के हुक्म ही से था।"

फायदे: बुवैरा को बुवैला भी कहते हैं। यह एक मशहूर मकामे मदीना और तयमा के बीच था, जहां कबीला बनू नजीर के बागात थे।

 (फतहुलबारी 7/387)

1715: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी ने जब उसमान रजि. को अबू बकर रजि. के पास अपना आठवां हिस्सा उस माले गनीमत में से मांगने को भेजा जो अल्लाह ने अपने रसूल को बतौर फय (वो माल जो बगैर लड़ाई के हासिल हो) दिया था तो मैं उन्हें मना करती अैर कहती रही कि क्या तुम्हें अल्लाह का डर नहीं है। और क्या तुम्हें यह मालूम नही कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि हमारे माल का कोई वारिस नहीं है। और जो कुछ हम छोड़ें वो सदका है। इससे आपकी अपनी जात मुराद थी। सिर्फ आल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस माल में से खा सकते हैं। चूनांचे सब बीवियां मेरे कहने से रुक गई।

١٦١٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَرْسَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ عُثْمانَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، يَسْأَلْنَهُ ثُمُنَهُنَّ مِمَّا أَفَاءَ ٱللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ فَكُنْتُ أَنَا أَرُدُّهُنَّ، فَقُلْتُ لَهُنَّ: أَلَا تَتَّقِينَ ٱللهَ، أَلَمْ تَعْلَمْنَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: (لَا نُورَثُ، ما تَرَكْنَا صَدَقَةٌ - يُرِيدُ بِذٰلِكَ نَفْسَهُ - إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ فِي هٰذَا المالِ)، فَانْتَهَى أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى ما أَخْبَرَتْهُنَّ.
[رواه البخاري: ٤٠٣٤]

फायदे: हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. फरमाया करते थे कि मुझे अपने रिश्तेदारों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिश्तेदार ज्यादा प्यारे हैं। लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ही सुना है कि हमारी जायदाद का किसी को वारिस न बनाया जाये। बल्कि हमारा छोड़ा हुआ माल अल्लाह की राह में सदका होगा। लिहाजा इस हदीस के पेशे नजर आपकी छोड़ी हुई जायदाद को तकसीम नहीं किया जा सकता। (सही बुखारी 4036)

٨ - باب: قتلُ كَعْبِ بنِ الأشْرَف

बाब 8: कअब बिन अशरफ यहूदी के कत्ल का बयान।

١٦١٦ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ لِكَعْبِ ابْنِ الأَشْرَفِ، فَإِنَّهُ قَدْ آذَى ٱللهَ وَرَسُولَهُ)، فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَتُحِبُّ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ قَالَ: (نَعَمْ). قَالَ: فَأْذَنْ لِي أَنْ أَقُولَ شَيْئًا، قَالَ: (قُلْ). فَأَتَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ: إِنَّ هٰذَا الرَّجُلَ قَدْ سَأَلَنَا صَدَقَةً، وَإِنَّهُ قَدْ عَنَّانَا، وَإِنِّي قَدْ أَتَيْتُكَ أَسْتَسْلِفُكَ، قَالَ: وَأَيْضًا وَٱللهِ لَتَمَلُّنَّهُ، قَالَ: إِنَّا قَدِ ٱتَّبَعْنَاهُ، فَلَا نُحِبُّ أَنْ نَدَعَهُ حَتَّى نَنْظُرَ إِلَى أَيِّ شَيْءٍ يَصِيرُ شَأْنُهُ، وَقَدْ أَرَدْنَا أَنْ تُسْلِفَنَا وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ. فَقَالَ: نَعَمْ، ٱرْهَنُونِي، قَالُوا: أَيَّ شَيْءٍ تُرِيدُ؟.

قَالَ: ٱرْهَنُونِي نِسَاءَكُمْ، قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ نِسَاءَنَا وَأَنْتَ أَجْمَلُ الْعَرَبِ، قَالَ: فَٱرْهَنُونِي أَبْنَاءَكُمْ، قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ أَبْنَاءَنَا، فَيُسَبُّ أَحَدُهُمْ، فَيُقَالُ: رُهِنَ بِوَسْقٍ أَوْ وَسْقَيْنِ، هٰذَا عَارٌ عَلَيْنَا، وَلٰكِنَّا نَرْهَنُكَ اللَّأْمَةَ فَوَاعَدَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ، فَجَاءَهُ لَيْلًا وَمَعَهُ أَبُو نَائِلَةَ، وَهُوَ أَخُو كَعْبٍ مِنَ الرَّضَاعَةِ، فَدَعَاهُمْ إِلَى ٱلْحِصْنِ، فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ، فَقَالَتْ لَهُ

1616 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कअब बिन अशरफ की कौन खबर लेता है? क्योंकि उसने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत तकलीफ दी है। मुहम्मद बिन मसलमा रजि. खड़े हुए और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आप पसन्द करते हैं कि मैं उसका काम तमाम कर दूं? आपने फरमाया, हां! उन्होंने कहा, तो फिर मुझे इजाजत दीजिए कि मैं जो मुनासिब समझूं, कहूँ। आपने फरमाया, तुझे इख्तियार है। चूनांचे मुहम्मद बिन मसलमा रजि. उसके पास आये और कहने लगे कि यह आदमी हम से सदका मांगता है। और उसने हमें बड़ी मशक्कत में डाल रखा है। लिहाजा मैं तुझ से कुछ कर्ज लेने आया हूँ। कअब बोला, अभी तो तुम उससे और भी ज्यादा तकलीफ उठाओगे। मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने कहा कि अब तो हमने उसका इतबाअ कर लिया है। हम उसे छोड़ना नहीं

امْرَأَتُهُ: أَيْنَ تَخْرُجُ هٰذِهِ السَّاعَةَ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا هُوَ مُحَمَّدُ ابْنُ مَسْلَمَةَ وَأَخِي أَبُو نَائِلَةَ، قَالَتْ: إِنِّي أَسْمَعُ صَوْتًا كَأَنَّهُ يَقْطُرُ مِنْهُ الدَّمُ، قَالَ: إِنَّمَا هُوَ أَخِي مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ، وَرَضِيعِي أَبُو نَائِلَةَ، إِنَّ الْكَرِيمَ لَوْ دُعِيَ إِلَى طَعْنَةٍ بِلَيْلٍ لأَجَابَ. قَالَ: وَيُدْخِلُ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ مَعَهُ رَجُلَيْنِ، فِي رِوَايَةٍ: أَبُو عَبْسِ بْنُ جَبْرٍ وَالحَارِثُ بْنُ أَوْسٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ. فَقَالَ: إِذَا مَا جَاءَ فَإِنِّي قَائِلٌ بِشَعْرِهِ فَأَشَمُّهُ فَإِذَا رَأَيْتُمُونِي اسْتَمْكَنْتُ مِنْ رَأْسِهِ فَدُونَكُمْ فَاضْرِبُوهُ. وَقَالَ مَرَّةً: ثُمَّ أُشِمُّكُمْ، فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ مُتَوَشِّحًا وَهُوَ يَنْفَحُ مِنْهُ رِيحُ الطِّيبِ، فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ رِيحًا، أَيْ أَطْيَبَ، قَالَ: عِنْدِي أَعْطَرُ نِسَاءِ الْعَرَبِ وَأَكْمَلُ الْعَرَبِ. فَقَالَ: أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أَشُمَّ رَأْسَكَ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَشَمَّهُ ثُمَّ أَشَمَّ أَصْحَابَهُ، ثُمَّ قَالَ: أَتَأْذَنُ لِي؟ قَالَ: نَعَمْ، فَلَمَّا اسْتَمْكَنَ مِنْهُ، قَالَ: دُونَكُمْ، فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ. [رواه البخاري: ٤٠٣٧]

चाहते। जब तक देख न लें कि आगे क्या रंग ढंग होता है। इस वक्त तो मैं तेरे पास इसलिए आया हूँ कि एक या दो वसक कर्ज लूं। कअब बिन अशरफ ने कहा, अच्छा तो मेरे पास कोई चीज गिरवी रखो। उन्होंने कहा तुम क्या चीज रखना चाहते हो? कअब ने कहा, अपनी औरतें गिरवी रख दो। उन्होंने कहा, हम अपनी औरतें तेरे पास कैसे गिरवी रख दें? तू अरब में बहुत खूबसूरत आदमी है। कअब ने कहा, तो फिर अपने बेटे मेरे यहाँ गिरवी रख दो। उन्होंने कहा, यह कैसे हो सकता है कि हम अपने बेटे तेरे पास गिरवी रख दें। उन को गाली दी जाएगी और कहा जायेगा कि उन्हें एक या दो वस्क के ऐवज गिरवी रखा गया था और यह बात हमारे लिए शर्म है। अलबत्ता हम अपने हथियार तेरे पास गिरवी रख सकते हैं। पस हथियार लेकर आने का वादा उससे किया। फिर रात के वक्त कअब के रिजाई भाई अबू नायला रजि. को लेकर आये। कअब ने उनको एक किले की तरफ बुलाया, फिर खुद उनके पास आने लगा तो उसकी बीवी ने कहा, तू इस वक्त कहां जा रहा है? कअब ने जवाब दिया यह तो सिर्फ मुहम्मद बिन मसलमा रजि. और मेरा रिजाई भाई अबू नायला रजि. है। बीवी ने कहा, मैं तो ऐसी आवाज सुनती हूँ,

जिससे खून टपकता है। कअब ने कहा, खतरे की बात नहीं, वहां पर मेरा दोस्त मुहम्मद बिन मसलमा रजि. और मेरा रिजाई भाई अबू नायला रजि. है। मेहरबान इन्सान अगर रात के वक्त निजा मारने के लिए भी बुलाया जाये तो फौरन उस दावत को कबूल कर लेता है। रावी का बयान है कि उधर मुहम्मद बिन मसलमा रजि. अपने साथ दो और आदमी लेकर आये थे और एक रिवायत के मुताबिक साथ वाले आदमी अबू अबस बिन जब्र, हारिस बिन अवस और उबाद बिन बिशर रजि. थे। हजरत मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने अपने साथियों से कहा कि जब कअब यहाँ आयेगा तो मैं उसके बाल पकड़ कर सुंघूंगा। जब तुम यह देखो कि मैंने उसके सर को मजबूती से थाम लिया है तो तुमने जल्दी से उसका काम तमाम कर देना है। रावी ने एक बार यूं बयान किया कि फिर मैं तुम्हें सुंघाऊंगा। अलगर्ज कअब उनके पास सर को चादर से लपेटे हुए आया। जिस में से खुश्बू की महक उठ रही थी। तब मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने कहा, मैंने आज की तरह खूश्बूदार हवा नहीं सूंघी। कअब ने कहा, मेरे पास अरब की वो औरत है जो सब औरतों से ज्यादा खुश्बू लगाती है और हुस्नो जमाल में भी बेनजीर है। फिर मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने कहा, क्या तू मुझे अपना सर सूंघने की इजाजत देता है। उसने कहा, हां। तब उन्होंने खुद भी सूंघा और अपने साथियों को भी सुंघाया। फिर मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने कहा, मुझे दोबारा सूंघने की इजाजत है? उसने कहा, हां! फिर जब मुहम्मद बिन मसलमा रजि. ने उसे मजबूत पकड़ लिया तो अपने साथियों से कहा, इधर आवो। चूंनांचे उन्होंने उसे कत्ल कर दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपको उसके कत्ल करने की खुशखबरी सुनाई।

फायदे: कअब बिन अशरफ यहूदी के कत्ल में पांच सहाबा किराम रजि. ने हिस्सा लिया। मुहम्मद बिन मसलमा, अबू नायला, अबू अबस बिन जब्र, हारिस बिन अवस और अब्बास बिन बिशर रजि. खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बकीअ तक उनके साथ आये। फिर अल्लाह के नाम पर उन्हें रवाना किया और दुआ फरमाई, ऐ अल्लाह! इनकी मदद फरमा। (फतहुलबारी 7/392)

नोट : वो काफिरों को मुसलमानों के खिलाफ लड़ाई के लिए अपने शेअर के जरीये उभारता था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसलमान औरतों के बारे में गैर मुनासिब शेअर कहता था। (अलवी)

٩ - باب: قَتْلُ أَبِي رَافِعٍ عَبْدِ الله بْنِ أَبِي الحُقَيْقِ، ويقال سلام بن أبي الحُقَيْق

बाब 9: अबू राफेअ अब्दुल्लाह बिन अबी हुकैक के कत्ल का बयान जिसे सलाम बिन अबी हुकैक भी कहा जाता है।

١٦١٧ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى أَبِي رَافِعٍ الْيَهُودِيِّ رِجالًا مِنَ الأَنْصارِ، فَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عَتِيكٍ، وَكانَ أَبُو رَافِعٍ يُؤْذِي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَيُعِينُ عَلَيْهِ، وَكانَ فِي حِصْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ، فَلَمَّا دَنَوْا مِنْهُ وَقَدْ غَرَبَتِ الشَّمْسُ، وَرَاحَ النَّاسُ بِسَرْحِهِمْ، فَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ لِأَصْحَابِهِ: اجْلِسُوا مَكَانَكُمْ، فَإِنِّي مُنْطَلِقٌ، وَمُتَلَطِّفٌ لِلْبَوَّابِ، لَعَلِّي أَنْ أَدْخُلَ، فَأَقْبَلَ حَتَّى دَنَا مِنَ الْبَابِ، ثُمَّ تَقَنَّعَ بِثَوْبِهِ كَأَنَّهُ يَقْضِي حاجَةً، وَقَدْ دَخَلَ النَّاسُ، فَهَتَفَ بِهِ الْبَوَّابُ، يَا عَبْدَ

1617: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है: उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ अनसार को अबू राफेअ यहूदी के पास भेजा और उन पर अब्दुल्लाह बिन अतीक रजि. को अमीर मुकर्रर रखा। यह अबू राफेअ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सख्त तकलीफ दिया करता था और आपके दुश्मनों की मदद करता था। जमीन हिजाज में उसका किला था, वो उसमें रहा करता था। जब यह लोग उसके पास पहुंचे तो सूरज डूब चुका था

اَللّٰهِ: إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ أَنْ تَدْخُلَ فَادْخُلْ، فَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُغْلِقَ الْبَابَ، فَدَخَلْتُ فَكَمَنْتُ، فَلَمَّا دَخَلَ النَّاسُ أَغْلَقَ الْبَابَ، ثُمَّ عَلَّقَ الأَغَالِيقَ عَلَى وَتِدٍ، قَالَ: فَقُمْتُ إِلَى الأَغَالِيقِ فَأَخَذْتُهَا، فَفَتَحْتُ الْبَابَ، وَكَانَ أَبُو رَافِعٍ يُسْمَرُ عِنْدَهُ، وَكَانَ فِي عَلَالِيَّ لَهُ، فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْهُ أَهْلُ سَمَرِهِ صَعِدْتُ إِلَيْهِ، فَجَعَلْتُ كُلَّمَا فَتَحْتُ بَابًا أَغْلَقْتُ عَلَيَّ مِنْ دَاخِلٍ، قُلْتُ: إِنِ الْقَوْمُ نَذِرُوا بِي لَمْ يَخْلُصُوا إِلَيَّ حَتَّى أَقْتُلَهُ، فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ فِي بَيْتٍ مُظْلِمٍ وَسْطَ عِيَالِهِ، لَا أَدْرِي أَيْنَ هُوَ مِنَ الْبَيْتِ، فَقُلْتُ: أَبَا رَافِعٍ، قَالَ: مَنْ هٰذَا؟ فَأَهْوَيْتُ نَحْوَ الصَّوْتِ فَأَضْرِبُهُ ضَرْبَةً بِالسَّيْفِ وَأَنَا دَهِشٌ، فَمَا أَغْنَيْتُ شَيْئًا، وَصَاحَ، فَخَرَجْتُ مِنَ الْبَيْتِ، فَأَمْكُثُ غَيْرَ بَعِيدٍ، ثُمَّ دَخَلْتُ إِلَيْهِ، فَقُلْتُ: مَا هٰذَا الصَّوْتُ يَا أَبَا رَافِعٍ؟ فَقَالَ: لأُمِّكَ الْوَيْلُ، إِنَّ رَجُلًا فِي الْبَيْتِ ضَرَبَنِي قَبْلُ بِالسَّيْفِ، قَالَ: فَأَضْرِبُهُ ضَرْبَةً أَثْخَنَتْهُ وَلَمْ أَقْتُلْهُ، ثُمَّ وَضَعْتُ ظُبَةَ السَّيْفِ فِي بَطْنِهِ حَتَّى أَخَذَ فِي ظَهْرِهِ، فَعَرَفْتُ أَنِّي قَتَلْتُهُ، فَجَعَلْتُ أَفْتَحُ الأَبْوَابَ بَابًا بَابًا، حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى دَرَجَةٍ لَهُ، فَوَضَعْتُ

और शाम के वक्त लोग अपने मवैशी वापस ला चुके थे। अब्दुल्लाह बिन अतीब रजि. ने अपने साथियों से कहा, तुम अपनी जगह पर बैठो मैं जाता हूँ और दरबान से मिलकर नर्म नर्म बातें करके किले के अन्दर जाने की कोई कोई रास्ता देखता हूँ। चूनांचे वो किले की तरफ रवाना हुये और दरवाजे के करीब पहुंचकर खुद को कपड़ों में इस तरह छुपाया जैसे कजाये हाजत के लिए बैठे हुए हैं। उस वक्त किले वाले अन्दर जा चुके थे। दरबान ने अपना आदमी समझकर आवाज दी कि ऐ अल्लाह के बन्दे! अगर तू अन्दर आना चाहता है तो आ जा। मैं दरवाजा बन्द कर रहा हूँ। अब्दुल्लाह बिन अतीक रजि. कहते हैं कि यह सुनकर मैं किले के अन्दर दाखिल हुआ और छुप गया। जब सब लोग अन्दर आ चुके तो दरबान ने दरवाजा बन्दर करके चाबियां घूंटी पर लटका दी। अब्दुल्लाह रजि. का बयान है कि मैंने उठकर चाबियां लीं और किले का दरवाजा खोल दिया। उधर अबू राफेअ के पास रात को किस्सा सुनाया जाता था। वो अपने ऊपर की मन्जिल में रहता था। जब किस्सा सुनाने वाले उसके

رِجْلِي، وَأَنَا أُرَى أَنِّي قَدِ ٱنْتَهَيْتُ إِلَى الأَرْضِ، فَوَقَعْتُ فِي لَيْلَةٍ مُقْمِرَةٍ، فَٱنْكَسَرَتْ سَاقِي فَعَصَبْتُهَا بِعِمَامَةٍ، ثُمَّ ٱنْطَلَقْتُ حَتَّى جَلَسْتُ عَلَى البَابِ، فَقُلْتُ: لَا أَخْرُجُ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَعْلَمَ: أَقَتَلْتُهُ؟ فَلَمَّا صَاحَ الدِّيكُ قَامَ النَّاعِي عَلَى السُّورِ، فَقَالَ: أَنْعِي أَبَا رَافِعٍ تَاجِرَ أَهْلِ الْحِجَازِ، فَٱنْطَلَقْتُ إِلَى أَصْحَابِي، فَقُلْتُ النَّجَاءَ، فَقَدْ قَتَلَ ٱللهُ أَبَا رَافِعٍ، فَٱنْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَحَدَّثْتُهُ، فَقَالَ: (ٱبْسُطْ رِجْلَكَ). فَبَسَطْتُ رِجْلِي فَمَسَحَهَا، فَكَأَنَّهَا لَمْ أَشْتَكِهَا قَطُّ. [رواه البخاري: ٤٠٣٩]

पास से चले गये तो मैं उसकी तरफ चलने लगा और जब कोई दरवाजा खोलता था तो अन्दर की तरफ से उसे बन्द कर लेता था। मेरा मतलब यह था कि अगर लोगों को मेरी खबर हो जाये तो मुझ तक अबू राफेअ को कत्ल करने से पहले न आ सकें। जब मैं उसके पास पहुंचा तो मालूम हुआ कि वो एक अंधेरे मकान में अपने बच्चों के बीच सो रहा है। चूंकि मुझे मालूम न था कि वो किस जगह पर है? इसलिए मैंने अबू राफेअ कह कर आवाज दी, उसने जवाब दिया कौन है? मैं आवाज की तरफ झुका और उस पर तलवार से जोरदार वार किया। जबकि मेरा दिल धक धक कर रहा था। इस वार से कुछ काम न निकला और वो चिल्लाने लगा तो मैं मकान से बाहर आ गया। थोड़ी देर ठहरकर फिर दाखिल हुआ। फिर मैंने कहा, ऐ अबू राफेअ। यह कैसी आवाज थी? उसने कहा, तेरी मां पर मुसीबत पड़े, अभी अभी किसी ने इस मकान में मुझ पर तलवार का वार किया था। अब्दुल्लाह रजि. का बयान है कि मैंने फिर एक और भरपूर वार किया। मगर वो भी खाली गया। अगरचे उसको जख्म लग चुका था, लेकिन वो उससे मरा नहीं था। इसलिए मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखी (खूब जोर दिया तो) वो उसकी पीठ तक पहुंच गई। जब मुझे यकीन हो गया कि मैंने उसे मार डाला है तो मैं फिर एक एक दरवाजा खोलता हुआ सीढ़ी तक पहुंच गया। चांदनी रात थी। यह ख्याल करके कि मैं जमीन पर पहुंच गया हूँ, नीचे पांव रखा तो धड़ाम से नीचे आ गिरा। जिससे मेरी पिण्डली टूट गई। मैंने अपनी पगड़ी से उसे

बांधा और बाहर निकल कर दरवाजे पर बैठ गया। अपने दिल में कहा कि मैं यहाँ से उस वक्त तक नहीं जाऊंगा जब तक मुझे यकीन न हो जाये कि मैंने उसे कत्ल कर दिया है। लिहाजा जब सुबह के वक्त मुर्गे ने अजान दी तो मौत की खबर सुनाने वाला दीवार पर खड़ा होकर कहने लगा, लोगों! हिजाज के सौदागर अबू राफेअ के मरने की तुम्हें खबर देता हूँ। यह सुनते ही मैं अपने साथियों की तरफ चला और उनसे कहा, यहाँ से जल्दी भागो। अल्लाह ने अबू राफेअ को (हमारे हाथों) कत्ल कर दिया है। फिर वहां से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा और आपको तमाम किस्सा सुनाया। आपने फरमाया, अपना टूटा हुआ पांव फैलाओ। चूनांचे मैंने अपना पांव फैलाया तो आपने अपना हाथ मुबारक उस पर फैर दिया। जिससे वो ऐसा हो गया कि जैसे मुझे उसकी कभी शिकायत ही न थी।

फायदे: औस और खजरज की जाहिलाना दोस्ती इस्लाम लाने के बाद भलाई में मुकाबला करने में बदल चुकी थी। चूंकि दुश्मन दीन कअब बिन अशरफ को अनसार अवस ने कत्ल किया था, इसलिए अबू राफेअ यहूदी को कत्ल करने के लिए खजरज ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इजाजत मांगी तो आपने अब्दुल्लाह बिन अतीक रजि. की सरदारी में हजरत मसऊद बिन सनान, अब्दुल्लाह बिन अनिस, अबू कतादा, खजाई बिन असवद और अब्दुल्लाह बिन उतबा रजि. को रवाना फरमाया। (फतेहुलबारी 7/397)

बाब 10: गजवा उहूद

١٠ - باب: غَزوَةُ أُحُدٍ

1618: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि उहूद के दिन एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया, फरमाईये

١٦١٨ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ، فَأَيْنَ أَنَا؟ قالَ: (في الجَنَّةِ). فَأَلْقَى تَمَرَاتٍ في يَدِهِ، ثُمَّ

قَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ. [رواه البخاري: ٤٠٤٦]

अगर मैं जिहाद में मारा जाऊं तो कहां जाऊंगा? आपने फरमाया तू जन्नत में जायेगा। यह सुनकर उसने फौरन अपने हाथ की खजूरें फैंक दी, फिर लड़ता रहा, यहाँ तक कि शहीद हो गया।

फायदे: इस हदीस से सहाबा किराम रजि. की दीने इस्लाम से मुहब्बत का पता चलता है। चूनांचे वो अल्लाह की जन्नत लेने के लिए अपनी जान पर खेल जाते और अल्लाह की खातिर शहादत के लिए बहुत बेकरार रहते थे। (फतहुलबारी 7/411)

١١ - باب: ﴿إِذْ هَمَّت طَّآئِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَٱللَّهُ وَلِيُّهُمَا﴾

बाब 11: फरमाने इलाही: "जब तुममें से दो गिरोहों ने हिम्मत हार देने का इरादा किया और अल्लाह उन दोनों का मददगार था, मुसलमान को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

١٦١٩ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ وَمَعَهُ رَجُلاَنِ يُقَاتِلاَنِ عَنْهُ، عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيضٌ، كَأَشَدِّ الْقِتَالِ، ما رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ. [رواه البخاري: ٤٠٥٤]

1619: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने उहूद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप के साथ दो सफेद पोश थे। जो बड़ी मुस्तैदी से आपको बचा रहे थे। जिन्हें मैंने न तो उससे पहले कभी देखा था और न ही उसके बाद देखा है।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में सराहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस तरह बचाने वाले हजरत जिब्राईल और हजरत मिकाईल अलैहि. थे। (फतहुलबारी 7/415)

١٦٢٠ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ:

1620: साद बिन अबी वकास रजि. से

نَثَلَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ كِنَانَتَهُ يَوْمَ أُحُدٍ، فَقَالَ: (ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي). [رواه البخاري: ٤٠٥٥]

ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि उहूद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने तरकश से तीर निकाल कर दिये और फरमाया, ऐ साद! तीर चलाये जा, तुझ पर मेरे मां-बाप कुरबान हों।

फायदेः मुस्तदरक हाकिम में हजरत साद बिन अबी वकास रजि. का बयान है कि जब घमासान की जंग शुरू हुई, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने आगे बैठाया और अपने तीर मेरे हवाले कर दिए। मैं उनसे काफिरों के बदन छलनी करता। (फतहुलबारी 7/416)

١٢ - باب: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ ٱلْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَٰلِمُونَ﴾.

बाब 12: फरमाने इलाही : "आपके इख्तयार में कुछ नहीं है, वो चाहे उन्हें माफ करे या उन्हें सजा दे। क्योंकि वो लोग जालिम हैं।"

١٦٢١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: شُجَّ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ، فَقَالَ: (كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ شَجُّوا نَبِيَّهُمْ؟). فَنَزَلَتْ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ ٱلْأَمْرِ شَيْءٌ﴾. [رواه البخاري: ٤٠٦٩]

1621: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि उहूद के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर मुबारक जख्मी हो गया तो आपने फरमाया, भला वो कौम कैसे कामयाब होगी जिसने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर जख्मी कर दिया। उस पर यह आयत उतरी "ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको कुछ इख्तियार नहीं है, आखिर तक।"

١٦٢٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ مِنَ الرَّكْعَةِ

1622: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना कि आप जब

الأَخِيرَةِ مِنَ الفَجْرِ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلَانًا وَفُلَانًا وَفُلَانًا)، بَعْدَ ما يَقُولُ: (سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ). فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾. [رواه البخاري: ٤٠٦٩]

नमाजे फज्र की आखरी रकअत में रूकूअ से सर उठाते तो यूं बद-दुआ करते, ऐ अल्लाह! फलां और फलां पर लानत भेज। यह बद दुआ आप, "समी अल्लाहु लिमन हमीदा, रब्बना लकल हमदु" कहने के बाद करते, उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी:

"ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको कुछ इख्तियार नहीं है, वो चाहे तो उन्हें माफ करे या उन्हें सजा दें, क्योंकि वो जालिम हैं।"

फायदे: इन दोनों अहादिस में आयते करीमा का सबब नजूल बयान हुआ है। बाज रिवायत से मालूम होता है कि जब आपने कबीला लहयान, रेल, जकवान और उसय्या पर बद दुआ शुरू की तो उस वक्त यह आयत नाजिल हुई। (फतहुलबारी 7/424)

---

١٣ - باب: قَتْلُ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ المطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 13: हजरत अमीर हमजा रजि. की शहादत।

١٦٢٣ : عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَدِيٍّ ابْنِ الْخِيَارِ أَنَّهُ قَالَ لِوَحْشِيٍّ: أَلَا تُخْبِرُنَا بِقَتْلِ حَمْزَةَ؟ قَالَ: نَعَمْ، إِنَّ حَمْزَةَ قَتَلَ طُعَيْمَةَ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ بِبَدْرٍ، فَقَالَ لِي مَوْلَايَ جُبَيْرُ ابْنُ مُطْعِمٍ: إِنْ قَتَلْتَ حَمْزَةَ بِعَمِّي فَأَنْتَ حُرٌّ، قَالَ: فَلَمَّا أَنْ خَرَجَ النَّاسُ عَامَ عَيْنَيْنِ، وَعَيْنَيْنِ جَبَلٌ بِحِيَالِ أُحُدٍ، بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ وَادٍ، خَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ إِلَى الْقِتَالِ، فَلَمَّا أَنِ اصْطَفُّوا لِلْقِتَالِ، خَرَجَ سِبَاعٌ فَقَالَ: هَلْ مِنْ مُبَارِزٍ، قَالَ: فَخَرَجَ

1623: अब्दुल्लाह बिन अदी बिन खयार रजि. से रिवायत है कि उन्होंने वहशी रजि. से कहा, क्या तू हमें कत्ल हमजा रजि. की खबर नहीं बतायेगा? उसने कहा, हां! बताऊंगा। उनके कत्ल का किस्सा यह है कि जब हमजा रजि. ने जंगे बदर के दिन तुईम्मा बिन अदी बिन खयार को कत्ल किया तो मेरे आका जुबैर बिन मुतईम रजि. ने मुझ से कहा कि अगर तू मेरे चचा के बदले में हमजा

إِلَيْهِ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، فَقَالَ: يَا سِبَاعُ، يَا ٱبْنَ أُمِّ أَنْمَارٍ مُقَطِّعَةِ الْبُظُورِ، أَتُحَادُّ ٱللهَ وَرَسُولَهُ ﷺ؟ قَالَ: ثُمَّ شَدَّ عَلَيْهِ، فَكَانَ كَأَمْسِ الذَّاهِبِ، قَالَ وَكَمَنْتُ لِحَمْزَةَ تَحْتَ صَخْرَةٍ، فَلَمَّا دَنَا مِنِّي رَمَيْتُهُ بِحَرْبَتِي، فَأَضَعُهَا فِي ثُنَّتِهِ حَتَّى خَرَجَتْ مِنْ بَيْنِ وَرِكَيْهِ، قَالَ: فَكَانَ ذَاكَ الْعَهْدَ بِهِ، فَلَمَّا رَجَعَ النَّاسُ رَجَعْتُ مَعَهُمْ، فَأَقَمْتُ بِمَكَّةَ حَتَّى فَشَا فِيهَا الإِسْلاَمُ، ثُمَّ خَرَجْتُ إِلَى الطَّائِفِ، فَأَرْسَلُوا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ رَسُولًا، فَقِيلَ لِي: إِنَّهُ لاَ يَهِيجُ الرُّسُلَ، قَالَ: فَخَرَجْتُ مَعَهُمْ حَتَّى قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَلَمَّا رَآنِي قَالَ: (آنْتَ وَحْشِيٌّ؟) قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (أَنْتَ قَتَلْتَ حَمْزَةَ؟) قُلْتُ: قَدْ كَانَ مِنَ الأَمْرِ مَا قَدْ بَلَغَكَ، قَالَ: (فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُغَيِّبَ وَجْهَكَ عَنِّي؟) قَالَ: فَخَرَجْتُ، فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَخَرَجَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ، قُلْتُ: لأَخْرُجَنَّ إِلَى مُسَيْلِمَةَ، لَعَلِّي أَقْتُلُهُ فَأُكَافِئَ بِهِ حَمْزَةَ، قَالَ: فَخَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ، فَكَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ، فَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ فِي ثَلْمَةِ جِدَارٍ، كَأَنَّهُ جَمَلٌ أَوْرَقُ، ثَائِرُ الرَّأْسِ، فَرَمَيْتُهُ بِحَرْبَتِي، فَأَضَعُهَا بَيْنَ ثَدْيَيْهِ حَتَّى خَرَجَتْ مِنْ بَيْنِ كَتِفَيْهِ، قَالَ: وَوَثَبَ

रजि. को मार डाले तो तू आजाद है। उसने कहा कि जब कुरैश के लोग कुहे अनैन की लड़ाई के साल निकले। अनैन उहद पहाड़ के बाजू में एक पहाड़ का नाम है। दोनों के बीच एक नाला है। उस वक्त मैं भी लड़ने वालों के साथ निकला। जब लोगों ने लड़ाई के लिए सफबन्दी की तो सिबाअ ने सफ से निकलकर कहा, कोई है लड़ने वाला। यह सुनते ही हमजा बिन अब्दुल्ल मुत्तलिब रजि. उसके मुकाबले के लिए निकले और कहने लगे, ऐ सिबाअ, ऐ उम्मे अनमार के बेटे! जो औरतों का खतना करती थी। क्या तू अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालफत करता है। वहशी कहता है कि उसके बाद हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. ने उस पर हमला किया और जैसे कल का दिन गुजर जाता है, इस तरह उसे दुनिया से नाबूद कर दिया। वहशी कहता है कि फिर मैं हमजा रजि. को कत्ल करने के लिए एक पत्थर की आड़ में घात लगाकर बैठ गया। जब हमजा रजि. मेरे करीब आये तो मैंने अपने निजे से उस पर वार किया और उनको निजा ऐसा पैवस्त

إِلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَضَرَبَهُ بِالسَّيْفِ عَلَى هَامَتِهِ. [رواه البخاري: ٤٠٧٢]

किया कि उनकी दोनों चुतड़ो के पार हो गया। वहशी ने कहा, बस यह उनका आखरी वक्त था। फिर जब कुरैश मक्का वापिस आये तो मैं भी उनके साथ वापस आकर मक्का में मुकीम हो गया। यहाँ तक कि मक्का में भी दीने इस्लाम फैल गया। उस वक्त मैं तायफ चला गया। लेकिन जब तायफ वालो ने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ कासिद रवाना किये और मुझ से कहा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कासिदों को कुछ नहीं कहते। लिहाजा! मैं भी उनके साथ हो गया और जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और आपकी नजर मुझ पर पड़ी तो फरमाया, वहशी तू ही है? मैंने कहा, जी हां! आपने फरमाया, हमजा रजि. को तूने ही शहीद किया था। मैंने कहा, आपको तो सब कैफियत पहुंच चुकी है। फरमाया, क्या तू अपना मुंह मुझ से छिपा सकता है? वहशी का बयान है कि फिर मैं उठकर बाहर आ गया। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई और मुसैलमा कज्जाब नमूदार हुआ तो मैंने सोचा कि मुसैलमा के मुकाबले के लिए चलना चाहिए। शायद उसे कत्ल करके हमजा रजि. का बदला उतार सकूं। फिर मैं मुसलमानों के साथ निकला और मुसैलमा के लोगों ने जो किया सो किया, वहां पर मैं इत्तेफाकन एक ऐसे आदमी को देखा जो परागन्दा बालों के साथ एक टूटी हुई दीवार की ओट में खड़ा था। जैसे वो मटीयाले रग वाले ऊंट की तरह है। मैंने अपना निजा उसके मुंह पर यूं मारा कि उसकी दोनों छातियों के बीच रखकर उसके दोनों शानों के पार कर दिया। फिर एक अनसारी ने दौड़ कर उसकी खोपड़ी पर तलवार का वार कर दिया।

फायदे: अगरचे इस्लाम लाने से आगे के गुनाह माफ हो जाते हैं, फिर भी हजरत वहशी के दिल में अल्लाह का डर था। उसने सोचा कि जिस

तरह मैंने जमाना कुफ्र में बड़े आदमी को शहीद किया, उसी तरह जमाना इस्लाम में किसी खबीस इन्सान को मारकर उसका बदला चुकाऊंगा।

बाब 14: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उहूद के दिन जो जख्म लगे, उनका बयान।

١٤ - باب: مَا أَصَابَ النَّبِيَّ مِنَ الجِرَاحِ يَوْمَ أُحُدٍ

1624: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सामने वाले दांतों की तरफ इशारा कर के फरमाया, अल्लाह का बड़ा गजब है, उस कौम पर जिन्होंने अपने नबी के साथ ऐसा सलूक किया और अल्लाह का सख्त गुस्सा है उस आदमी पर जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की राह में कत्ल किया।

١٦٢٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱشْتَدَّ غَضَبُ ٱللهِ عَلَى قَوْمٍ فَعَلُوا بِنَبِيِّهِ - يُشِيرُ إِلَى رَبَاعِيَتِهِ - ٱشْتَدَّ غَضَبُ ٱللهِ عَلَى رَجُلٍ يَقْتُلُهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي سَبِيلِ ٱللهِ). [رواه البخاري: ٤٠٧٣]

फायदे: तबरानी की रिवायत में है कि कुफ्फारे मक्का में से अब्दुल्लाह बिन कुमैया ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे को जख्मी किया और आपके अगले दो दांत तोड़े तो फरमाया, अल्लाह तुझे जरूर जलील व ख्वार करेगा। चूनांचे एक पहाड़ी बकरी ने उसे सींग मार मार कर हलाक कर दिया। (फतहुलबारी 7/423)

बाब 15: फरमाने इलाही : वो लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर लब्बेक कहा।

١٥ - باب: الَّذِينَ استجابوا لله والرَّسُول

1625: आइशा रजि. से रिवायत है,

١٦٢٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنها قالَتْ: لَمَّا أَصابَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ما أَصابَ يَوْمَ أُحُدٍ، وَٱنْصَرَفَ عَنْهُ الْمُشْرِكُونَ، خافَ أَنْ يَرْجِعُوا، قالَ: (مَنْ يَذْهَبُ في إِثْرِهِمْ؟) فَانْتَدَبَ مِنْهُمْ سَبْعُونَ رَجُلًا، قالَ: كانَ فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَالزُّبَيْرُ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما. [رواه البخاري: ٤٠٧٧]

उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जंगे उहूद में जो सदमा पहुंचाना था, वो पहुंच चुका और मुश्रिकीन वापिस चले गये तो आपको अन्देशा हुआ कि शायद वापिस आ जायें, इसलिए फरमाया, कौन है जो उन कुफ्फार के पीछे जाये। यह सुनकर सत्तर सहाबा किराम रजि. ने आपके हुक्म पर लब्बेक कहा? उनमें अबू बकर और जुबैर रजि. भी थे।

फायदे: कुछ रियावतों से मालूम होता है कि कुफ्फार मक्का का पीछा करने वालों में हजरत अबू बकर और हजरत जुबैर रजि. के अलावा हजरत उमर, हजरत उसमान, हजरत अली, हजरत अम्माद बिन यासिर, हजरत तलहा, हजरत साद बिन अबी वकास, हजरत अब्दुल रहमान बिन औफ, हजरत अबू उबैदा, हजरत हुजैफा और हजरत अब्दुल्लाह बिन मसअूद रजि. भी थे। (फतहुलबारी 7/433)

١٦ - باب: غَزْوَةُ الْخَنْدَقِ وَهِيَ الأَحْزَابُ

बाब 16: गजवा खन्दक जिसका नाम अहजाब भी है।

١٦٢٦ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: إِنَّا يَوْمَ الْخَنْدَقِ نَحْفِرُ، فَعَرَضَتْ كُدْيَةٌ شَدِيدَةٌ، فَجَاؤُوا النَّبِيَّ ﷺ فَقالُوا: هٰذِهِ كُدْيَةٌ عَرَضَتْ في الْخَنْدَقِ، فَقالَ: (أَنَا نازِلٌ). ثُمَّ قامَ وَبَطْنُهُ مَعْصُوبٌ بِحَجَرٍ، وَلَبِثْنا ثَلاثَةَ أَيَّامٍ لاَ نَذُوقُ ذَواقًا، فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ الْمِعْوَلَ فَضَرَبَ في الْكُدْيَةِ، فَعادَ كَثِيبًا أَهْيَلَ. [رواه البخاري: ٤١٠١]

1626: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम खन्दक के दिन जमीन खोद रहे थे कि अचानक एक सख्त चट्टान नमूदार हुई। सहाबा किराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! खन्दक में एक सख्त चट्टान निकल

आई है? आपने फरमाया मैं खुद उतर कर उसे दूर करता हूँ। चूनांचे आप खड़े हुए तो भूक की वजह से आपके पेट पर पत्थर बन्धे हुए थे और हम भी तीन दिन से भूके प्यासे थे। आपने कुदाल हाथ में ली और उस चट्टान पर मारी तो मारते ही रेत की तरह चूरा-चूरा हो गई।

फायदेः मुसनद इमाम अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिस्मिल्लाह पढ़कर जब कुदाल मारी तो चट्टान का तीसरा हिस्सा टूट गया। आपने अल्लाहु अकबर कहा और फरमाया कि अब मैं इलाका शाम की सुर्ख महलों को देख रहा हूँ और मुझे उसकी चाबियां सौंप दी गई है। फिर दूसरी चोट लगाई तो फरमाया, अब मैं ईरान के सफेद मेहलों को देख रहा हूँ और मुझे उस की चाबियां दे दी गई हैं। इसी तरह आपने तीसरी चोट लगाई तो यमन के बारे में भी ऐसा ही फरमाया। (फतहुलबारी 7/458)

١٦٢٧ : عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ: (نَغْزُوهُمْ وَلاَ يَغْزُونَنَا). [رواه البخاري: ٤١٠٩]

1627: सुलैमान बिन सुरद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहजाब के दिन फरमाया, जब हम ही काफिरों पर चढ़ाई करेंगे, वो हम पर चढ़ाई नहीं कर सकेंगे।

फायदेः बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि यह आपने उस वक्त फरमाया, जब तमाम कुफ्फार हार कर वापिस हो गये थे। वाकई यह आपका मोजिजा था। इसके बाद कुफ्र की कमर टूट गई और मुसलमानों पर चढ़ाई करने की उसमें ताकत न रही।

١٦٢٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ: (لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ، أَعَزَّ جُنْدَهُ،

1628: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ करते थेः "अल्लाह

وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَغَلَبَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ، فَلاَ شَيْءَ بَعْدَهُ). [رواه البخاري: ٤١١٤]

के अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं और वो बेमिसाल है, जिसने अपने लश्कर को गालिब करके अपने बन्दे की मदद की और कुफ्फार की जमात को शिकस्त दे दिया। उसकी सी हस्ती किसी की नहीं।

फायदे: बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन अलफाज में दुआ फरमाई, ऐ अल्लाह! किताब नाजिल फरमाने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले, लश्कर कुफ्फार को शिकस्त से दोचार कर, ऐ अल्लाह! उन्हें शिकस्त दे और उनके कदम उखाड़ दे। (सही बुखारी 4115)

١٧ - باب: مَرْجِعُ النَّبِيِّ ﷺ مِنَ الأَحْزَابِ وَمَخْرَجُهُ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ

बाब 17: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जंगे अहजाब से वापिस आकर बनू कुरैजा का घेराव करना।

١٦٢٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَ أَهْلُ قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ، فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى سَعْدٍ فَأَتَى عَلَى حِمَارٍ، فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْمَسْجِدِ قَالَ لِلأَنْصَارِ: (قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ، أَوْ خَيْرِكُمْ). فَقَالَ: (هٰؤُلاَءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ). فَقَالَ: تَقْتُلُ مُقَاتِلَتَهُمْ، وَتَسْبِي ذَرَارِيَّهُمْ، قَالَ: (قَضَيْتَ بِحُكْمِ ٱللهِ. وَرُبَّمَا قَالَ: بِحُكْمِ الْمَلِكِ). [رواه البخاري: ٤١٢١]

1629: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब बनू कुरैजा साद बिन मुआज रजि. के फैसले पर राजी होकर किले से उतर आये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साद रजि. को बुला भेजा। साद रजि. अपने गधे पर सवार होकर आये और जब वो मस्जिद के करीब पहुंचे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनसार से फरमाया, अपने सरदार के इस्तकबाल के लिए खड़े हो जाओ। फिर आपने साद रजि. से फरमाया कि बनू कुरैजा आपके फैसले पर राजी होकर उतरे हैं। उन्होंने

कहा, जो उनमें से लड़ाई के काबिल हैं, उन्हें तो कत्ल कर दिया जाये और उनकी औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया जाये। आपने फरमाया, तूने वही फैसला किया जैसा कि अल्लाह का हुक्म था या यह फरमाया कि जैसा कि बादशाह (अल्लाह) का हुक्म था।

फायदे: हजरत साद रजि. के साथ बनू कुरैजा का मेल-जोल का मामला था। इसलिए उनको चुना गया। फिर मुसलमानों ने उनके कत्ल के लिए नालियों खोद दी जो खून से भर गई। इस तरह दगाबाजों की गर्दनें उड़ाई गई और उनकी औरतों, बच्चों को गुलाम बनाया गया।

बाब 18: गजवा जातुर्रिकाअ

١٨ - باب: غَزْوَةُ ذَاتِ الرِّقَاعِ

1630: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सातवें गवाजा यानी गजवा जातुर्रिकाअ में अपने सहाबा किराम रजि. के साथ नमाजे खौफ पढ़ी थी।

١٦٣٠ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِأَصْحَابِهِ فِي الْخَوْفِ فِي الْغَزْوَةِ السَّابِعَةِ، غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ. [رواه البخاري: ٤١٢٥]

फायदे: गजवा जातुर्रिकाअ सात हिजरी में गजवा खैबर के बाद हुआ क्योंकि उसमें हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. भी शरीक हुए और यह हब्शा से खैबर के बाद तशरीफ लाये थे। इमाम बुखारी का भी यही रुझान है, जैसा कि उनके उनवान से मालूम होता है।

1631: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी जंग में निकले। जबकि छः छः आदमियों को सिर्फ एक एक ऊंट मिला था। हम बारी बारी उस पर सवार होते थे। चलते चलते हमारे पांव छलनी हो चुके थे। मेरे

١٦٣١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ وَنَحْنُ سِتَّةُ نَفَرٍ، بَيْنَنَا بَعِيرٌ نَعْتَقِبُهُ، فَنَقِبَتْ أَقْدَامُنَا، وَنَقِبَتْ قَدَمَايَ وَسَقَطَتْ أَظْفَارِي، وَكُنَّا نَلُفُّ عَلَى أَرْجُلِنَا ٱلْخِرَقَ، فَسُمِّيَتْ غَزْوَةَ ذَاتِ الرِّقَاعِ، لِمَا كُنَّا نَعْصِبُ مِنَ ٱلْخِرَقِ عَلَى أَرْجُلِنَا. [رواه

[البخاري: ٤١٢٨]

तो दोनों पावं छलनी होने के बाद उनके नाखून भी गिर चुके थे। हमने अपने पांव पर चिथड़े लपेट लिये। इस लड़ाई का नाम जातुर्रिकाअ इसी वजह से रख गया था।

फायदेः सहाबा किराम की लिल्लाहियत और साफ नियत का यह आलम था कि हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. इस किस्म के वाक्यात को बयान करना पसन्द नहीं करते थे और फरमाते थे कि हमने अल्लाह की राह में इसलिए तकलीफें नहीं उठाई कि उसे जाहिर करें और लोगों के सामने उसका ढिंढोरा पीटें।

١٦٣٢ : عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ ذَاتِ الرِّقَاعِ صَلَّى صَلاَةَ الخَوْفِ: أَن طَائِفَةً صَفَّتْ مَعَهُ وَطَائِفَةٌ وِجاهَ العَدُوِّ، فَصَلَّى بِالَّتِي مَعَهُ رَكْعَةً، ثُمَّ ثَبَتَ قَائِمًا، وَأَتَمُّوا لأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ ٱنْصَرَفُوا، فَصَفُّوا وِجاهَ العَدُوِّ، وَجاءَتِ الطَّائِفَةُ الأُخْرَى فَصَلَّى بِهِمُ الرَّكْعَةَ الَّتِي بَقِيَتْ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ ثَبَتَ جالِسًا، وَأَتَمُّوا لأَنْفُسِهِمْ، ثُمَّ سَلَّمَ بِهِمْ. [رواه البخاري: ٤١٢٩]

1632: सहल बिन अबी हसमा रजि. से रिवायत है और यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गजवा जातुर्रिकाअ में शरीक थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाजे खौफ इस तरह पढ़ी कि एक गिरोह ने आपके साथ सफ बनाई और एक गिरोह दुश्मन के सामने सफबस्ता रहा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथ वालों को एक रकअत पढ़ाई। फिर आप खड़े रहे और वो अपनी अपनी नमाज पूरी करके चले गये और दुमश्न के सामने जाकर खड़े हो गये। फिर दूसरा गिरोह आया और आपने उन्हें बाकी बची हुई दूसरी रकअत पढ़ाई। फिर आप बैठे रहे जब उन्होंने अपनी नमाजें पूरी कर लीं तो आपने उनके साथ सलाम फैर दिया।

फायदेः खौफ की नमाज के बारे में हदीस की किताबो में मुख्तलीफ तरीके आये है। हालत और मकाम के पैशे नजर जो सूरत मुनासिब हो,

उस पर अमल करना चाहिए और यह अमीर वक्त की चाहत पर है।

١٦٣٣ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ، فَلَمَّا قَفَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَفَلَ مَعَهُ، فَأَدْرَكَتْهُمُ ٱلْقَائِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ ٱلْعِضَاهِ، فَنَزَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ ٱلنَّاسُ فِي ٱلْعِضَاهِ يَسْتَظِلُّونَ بِٱلشَّجَرِ، وَنَزَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ تَحْتَ سَمُرَةٍ فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ. قَالَ جابِرٌ: فَنِمْنَا نَوْمَةً، فَإِذَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدْعُونَا فَجِئْنَاهُ، فَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ جالِسٌ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ هٰذَا ٱخْتَرَطَ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ، فَٱسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِي يَدِهِ صَلْتًا، فَقَالَ لِي: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قُلْتُ: ٱللهُ، فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٌ). ثُمَّ لَمْ يُعَاقِبْهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٤١٣٥]

1633: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नज्द की तरफ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में हिस्सा लिया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आये तो मैं भी आपके साथ वापस आया और एक ऐसे जंगल में दोपहर हो गई, जिसमें कांटे वाले पेड़ थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहीं पड़ाव किया और हम लोग जंगल में फैल गये और पेड़ों का साया तलाश करने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बबूल के पेड़ के नीचे उतरे और अपनी तलवार पेड़ से लटका दी। जाबिर रजि. कहते हैं कि थोड़ी ही देर सो गये कि अचानक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें आवाज दी। हम आपके पास आये तो देखा कि एक अराबी आपके पास बैठा हुआ है। आपने फरमाया कि मैं सो रहा था और उसने मेरी तलवार खींच ली। मैं जागा तो नंगी तलवार उसके हाथ में थी। कहने लगा अब तुझे मेरे हाथ से कौन बचा सकता है? मैंने कहा, मेरा अल्लाह बचायेगा और देखो यह बैठा हुआ है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे कुछ सजा न दी।

फायदे: इमाम बुखारी रह. ने दूसरी रिवायत में सराहत की है कि उस अराबी का नाम गौरस बिन हारिस था। दूसरी रिवायत से मालूम होता

है कि आखिरकार वो मुलसमान हो गया था और उसके हाथों बेशुमार लोग इस्लाम में दाखिल हुए। (फतहुलबारी 7/492)

बाब 19: गजवा बनी मुस्तलिक का बयान जो कौमे खुजाआ से है और उसको जंगे मुरैसी कहते हैं।

١٩ - باب: غَزْوَةُ بَنِي الْمُصْطَلِقِ مِنْ خُزَاعَةَ وَهِيَ غَزْوَةُ الْمُرَيْسِيع

1634: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम गजवा बनी मुस्तलिक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ निकले तो हमें अरब की लौण्डियां हाथ लगीं। फिर हमको औरतों की ख्वाहिश हुई। हमारे लिए अकेला रहना मुश्किल हो गया। हमने चाहा कि अजल (सैक्स) करें। फिर हमने सोचा कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम में मौजूद हैं तो फिर हम आपसे पूछे बगैर क्यों अजल करे। चूनांचे हमने आपसे पूछा तो आपने फरमाया कि अजल न करने में तुम्हें कोई नुकसान नहीं (और न ही करने में तुम्हें कोई फायदा है) क्योंकि जो रूह कयामत तक पैदा होने वाली है, वो जरूर पैदा होकर रहेगी।

١٦٣٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ، فَأَصَبْنَا سَبْيًا مِنْ سَبْيِ الْعَرَبِ، فَٱشْتَهَيْنَا النِّسَاءَ، وَٱشْتَدَّتْ عَلَيْنَا الْعُزْبَةُ وَأَحْبَبْنَا العَزْلَ، فَأَرَدْنَا أَنْ نَعْزِلَ، وَقُلْنَا نَعْزِلُ وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَيْنَ أَظْهُرِنَا قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَهُ، فَسَأَلْنَاهُ، عَنْ ذٰلِكَ، فَقَالَ: (ما عَلَيْكُمْ أَنْ لَا تَفْعَلُوا، ما مِنْ نَسَمَةٍ كَائِنَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا وَهِيَ كَائِنَةٌ). [رواه البخاري: ٤١٣٨]

फायदे: इस हदीस को खानदानी मन्सूबा बन्दी के लिए बतौर दलील पेश किया जाता है। हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे पसन्द नहीं फरमाया, बल्कि कुछ रिवायतों में अजल करने को पौशीदा तौर पर जिन्दा दफन करने से ताबीर फरमाया है। निज यह एक जाति मामला है। इस पर कौमी तहरीक की बुनियाद कायम करना बेवकूफी है।

बाब 20: गजवा अनमार का बयान।

٢٠ - باب: غزوةُ أنمارٍ

1635: जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि गजवा अनमार में सवारी पर किब्ले की तरफ मुंह करे निफ्ली नमाज पढ़ रहे थे।

١٦٣٥ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ الأنْصارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ في غَزْوَةِ أَنْمارٍ، يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ، مُتَوَجِّهًا قِبَلَ المَشْرِقِ، مُتَطَوِّعًا. [رواه البخاري: ٤١٤٠]

फायदे: मालूम होता है कि गजवा अनमार जंगे मुरैसी के दौरान ही पैश आया। हजरत जाबिर रजि. का बयान है कि जब आप बनू मुस्तलिक की तरफ जा रहे थे तो आपने मुझे कहीं काम के लिए रवाना किया। जब वापस आया तो अपनी सवारी पर नमाज पढ़ रहे थे।

(फतहुलबारी 7/495)

बाब 21: गजवा हुदैबिया का बयान और फरमाने इलाही "अल्लाह उन मुसलमानों से राजी हुआ जबकि वो पेड़ के नीचे तुझ से बैअत कर रहे थे।"

٢١ - باب: غزوةُ الحُدَيْبِيَةِ وقَوْلُ الله تَعالَى: ﴿لَقَدْ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنِ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ ٱلشَّجَرَةِ﴾ الآية

1636: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि तुम लोग तो फतह से मुराद फतह मक्का लेते हो। यकीनन फतह मक्का भी फतह है, मगर हम तो बैअत रिजवान को फतह समझते हैं जो हुदैबिया के दिन हुई। हुआ यह कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चौदह सौ आदमी थे। हुदैबिया एक कुआँ

١٦٣٦ : عَنِ البَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: تَعُدُّونَ أَنْتُمُ الفَتْحَ فَتْحَ مَكَّةَ، وَقَدْ كانَ فَتْحُ مَكَّةَ فَتْحًا، وَنَحْنُ نَعُدُّ الفَتْحَ بَيْعَةَ الرِّضْوانِ يَوْمَ الحُدَيْبِيَةِ، كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً، والحُدَيْبِيَةُ بِئْرٌ، فَنَزَحْنَاهَا فَلَمْ نَتْرُكْ فِيهَا قَطْرَةً، فَبَلَغَ ذٰلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَأَتَاهَا، فَجَلَسَ عَلَى شَفِيرِهَا، ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَدَعَا ثُمَّ صَبَّهُ فِيهَا،

فَتَرَكْنَاهَا غَيْرَ بَعِيدٍ، ثُمَّ إِنَّهَا أَصْدَرَتْنَا مَا شِئْنَا نَحْنُ وَرِكَابُنَا. [رواه البخاري: ٤١٥٠]

था, जिसका पानी हमने इतना खींचा कि उसमें कतरा तक न छोड़ा। यह खबर आपको पहुंची तो आप वहां तशरीफ लाये और उसके किनारे बैठ कर एक बर्तन में पानी मंगवाया। वजू किया और उसमें कुल्ली करके दुआ फरमाई। फिर वो पानी कुऐं में डाल दिया। हमने उसे थोड़ी देर तक के लिए छोड़ दिया। फिर उसने हमारी चाहत के मुताबिक हमें और हमारी सवारियों को खूब सैराब कर दिया।

फायदेः बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस कुऐं के पानी का एक डोल मंगवाया। उसमें कुल्ली फरमाई और थूक डाला और दुआ भी फरमाई। बहकी की रिवायत में है कि आपने कुऐ की गहराई में एक तीर गाड़ा तो पानी जोश मारने लगा। आपने यह सब काम किये थे। (फतहुलबारी 7/507)

١٦٣٧ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ: (أَنْتُمْ خَيْرُ أَهْلِ الأَرْضِ). وَكُنَّا أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ، وَلَوْ كُنْتُ أُبْصِرُ الْيَوْمَ لأَرَيْتُكُمْ مَكَانَ الشَّجَرَةِ. [رواه البخاري: ٤١٥٤]

1637: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हुदैबिया के दिन हमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम अहले जमीन से अफजल हो और हम उस दिन चौदह सौ आदमी थे। अगर आज मुझ में आंखों की रोशनी होती तो तुम्हें उस पेड़ की जगह दिखाता।

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, असहाबे शजरा में से कोई भी आग में दाखिल नहीं होगा। एक रिवायत में यह खुशखबरी जंगे बदर और सुल्ह हुदैबिया के शरीक होने वालों को दी गई है। (फतहुलबारी 7/508)

١٦٣٨ : عَنْ سُوَيْدِ بْنِ النُّعْمَانِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ

1638: सुवैद बिन नोमान रजि. से रिवायत है जो असहाब शजरा (पेड़ के

الشَّجَرَةِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أُتُوا بِسَوِيقٍ، فَلاكُوهُ. [رواه البخاري: ٤١٧٥]

नीचे बैअत करने वालों में) से हैं, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा किराम रजि. के पास सत्तू लाये गये तो उन्होंने उनको घोल कर पी लिया।

फायदे: यह वाक्या गजवा खैबर से वापिसी पर पैश आया। इस मकाम पर यह हदीस लाने का मकसद यह है कि हजरत सुवैद बिन नोमान रजि. को असहाब शजरा से साबित किया जाये।

١٦٣٩ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ يَسِيرُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلاً، فَسَأَلَهُ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ عَنْ شَيْءٍ، فَلَمْ يُجِبْهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا عُمَرُ، نَزَرْتَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ثَلاثَ مَرَّاتٍ كُلَّ ذٰلِكَ لا يُجِيبُكَ، قَالَ عُمَرُ: فَحَرَّكْتُ بَعِيرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ المُسْلِمِينَ، وَخَشِيتُ أَنْ يَنْزِلَ فِيَّ قُرْآنٌ، فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي، فَقُلْتُ: لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ، وَجِئْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: (لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ، لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا﴾). [رواه البخاري: ٤١٧٧]

1639: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि वो एक सफर में रात के वक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जा रहे थे। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई बात पूछी। आपने कोई जवाब न दिया। उन्होंने फिर पूछा, तब भी आपने कोई जवाब न दिया। तीसरी बार पूछा, मगर फिर भी कोई जवाब न दिया। आखिर उमर रजि. ने खुद से मुखातिब होकर कहा, ऐ उमर रजि.! तुझे तेरी मां रोये, तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बार कहा, मगर आपने एक बार भी जवाब न दिया। उमर रजि. कहते हैं कि मैंने अपने ऊंट को ऐड़ी लगाई और मुसलमानों से आगे बढ़ गया और मुझे अन्देशा था कि कहीं मेरी बाबत कुछ कुरआन में हुक्म न आ जाये। मगर मैं थोड़ी ही देर ठहरा था कि मैंने एक पुकारने

वाले की आवाज सुनी जो मुझे पुकार रहा था। मुझे और ज्यादा डर हो गया कि शायद मेरे बारे में कुछ कुरआन उतरा। आखिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आपको सलाम किया तो आपने फरमाया। आज रात मुझ पर एक सूरत नाजिल हुई है। जो मुझे दुनिया की तमाम नैमतों से प्यारी है। फिर आपने यह सूरत तिलावत फरमाई "इन्ना फतहना लकफतहम मुबिना"

फायदे: यह आयत सुल्ह हुदैबिया से वापिसी के वक्त उतरी। कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि मकामे जजनान या कुराअ-ए-गमीम या जोहफा में उनका नुजूल हुआ। यह तीनों मकाम करीब करीब है।

 (फहुलबारी, 8/447)

١٦٤٠ : عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ عامَ الحُدَيْبِيَةِ في بِضْعَ عَشْرَةَ مِائَةً مِنْ أَصْحَابِهِ، فَلَمَّا أَتَى ذَا الحُلَيْفَةِ، قَلَّدَ الهَدْيَ وَأَشْعَرَهُ وَأَحْرَمَ مِنْهَا بِعُمْرَةٍ، وَبَعَثَ عَيْنًا لَهُ مِنْ خُزَاعَةَ، وَسَارَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى كَانَ بِغَدِيرِ الأَشْطَاطِ أَتَاهُ عَيْنُهُ، قالَ: إِنَّ قُرَيْشًا جَمَعُوا لَكَ جُمُوعًا، وَقَدْ جَمَعُوا لَكَ الأَحَابِيشَ، وَهُمْ مُقَاتِلُوكَ، وَصَادُّوكَ عَنِ البَيْتِ، وَمانِعُوكَ. فَقَالَ: (أَشِيرُوا أَيُّهَا النَّاسُ عَلَيَّ، أَتَرَوْنَ أَنْ أَمِيلَ إِلَى عِيَالِهِمْ وَذَرَارِيِّ هٰؤُلاءِ الَّذِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَصُدُّونَا عَنِ البَيْتِ، فَإِنْ يَأْتُونَا كانَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ قَطَعَ عَيْنًا مِنَ المُشْرِكِينَ، وَإِلَّا تَرَكْنَاهُمْ

1640: मिस्वर बिन मखरमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुदैबिया के साल दस सौ से ज्यादा अपने सहाबा किराम रजि. को साथ लेकर (मदीना से) रवाना हुए। जब जिलहुलैफा पहुंचे तो कुरबानियों के गले में हार डाला और उनके कोहान चीरकर निशान लगा दिया। फिर वहीं से उमरह का अहराम बांधा और कौमे खुजाअ के एक जासूस को रवाना किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आगे बढ़ते रहे, जब आप गदीरे अश्तात पर पहुंचे तो आपका जासूस आया और कहने लगा, कुरैश के लोगों ने फौजें इकट्ठी की हैं और यह फौजें

مَحْرُوبِينَ؟) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ، خَرَجْتَ عَامِدًا لِهٰذَا الْبَيْتِ، لَا تُرِيدُ قَتْلَ أَحَدٍ، وَلَا حَرْبَ أَحَدٍ، فَتَوَجَّهْ لَهُ، فَمَنْ صَدَّنَا عَنْهُ قَاتَلْنَاهُ. قَالَ: (امْضُوا عَلَى اسْمِ اللهِ).
[رواه البخاري: ٤١٧٨، ٤١٧٩]

अलग अलग कबीलों से ली गई हैं। यह सब आपसे लड़ेंगे। बैतुल्लाह में नहीं आने देंगे, बल्कि आपको रोकेंगे। उस वक्त आपने अपने सहाबा किराम रजि. से फरमाया, मुझे मशवरा दो, क्या तुम्हारी राय यह है कि मैं काफिरों के बाल बच्चों की तरफ मैलान करूं (कैदी बनाऊं) जो कि हमें बैतुल्लाह से रोकने का इरादा रखे हुए हैं। अगर वो हम से लड़ने के लिए आये तो अल्लाह ने मुश्रिकों की आंखों को अलग कर दिया। अगर वो हमारे मुकाबले में न आये तो हम उनको अहलो अयाल से महरूम (मुफलिस) बना छोड़ेंगे। अबू बकर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप तो बैतुल्लाह की जियारत का पक्का इरादा लेकर निकले थे। किसी को मारना या लूटना तो नहीं चाहते। लिहाजा आप बैतुल्लाह के लिए चलें। अगर कोई हमें बैतुल्लाह से रोकेगा तो हम उससे लड़ेंगे। आपने फरमाया, फिर अल्लाह के नाम पर चलो।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस आदमी को जासूसी के तौर पर नामजद रखा था, उसका नाम बिशर बिन सुफियान खुजाई था। (फतहुलबारी 7/519)

١٦٤١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ أَبَاهُ أَرْسَلَهُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ لِيَأْتِيَهُ بِفَرَسٍ كَانَ عِنْدَ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَوَجَدَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُبَايِعُ عِنْدَ الشَّجَرَةِ، وَعُمَرُ لَا يَدْرِي بِذٰلِكَ، فَبَايَعَهُ عَبْدُ اللهِ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى

1641: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि हुदैबिया के दिन उनके वालिद ने उन्हें अपना घोड़ा लाने के लिए रवाना किया, जो एक अनसारी के पास था। उन्होंने देखा कि लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

الْفَرَسِ، فَجَاءَ بِهِ إِلَى عُمَرَ، وَعُمَرُ يَسْتَلْئِمُ لِلْقِتَالِ، فَأَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُبَايِعُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، قَالَ: فَانْطَلَقَ، فَذَهَبَ مَعَهُ حَتَّى بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَهِيَ الَّتِي يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَسْلَمَ قَبْلَ أَبِيهِ. [رواه البخاري: ٤١٨٦]

से पेड़ के नीचे बैअत कर रहे हैं। उमर को यह मालूम न था। लिहाजा अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने पहले आपकी बैअत की, फिर घोड़ा लेकर उमर रजि. के पास आये। उमर रजि. उस वक्त जंग करने के लिए जिरह पहने हुए थे। अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने उनको खबर दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पेड़ के नीचे बैअत ले रहे हैं। यह खबर सुनते ही उमर रजि. रवाना हुए। अब्दुल्लाह रजि. भी साथ गये फिर उमर रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की, इतनी सी बात है, जिसकी वजह से लोग यूं कहते हैं कि अब्दुल्लाह अपने वालिद उमर रजि. से पहले मुसलमान हुए। (हालांकि हकीकत में ऐसा नहीं है।)

फायदेः हजरत इब्ने उमर रजि. ने चूंकि बैअत पहले की थी, इसलिए लोगों में यह बात मशहूर हो गई कि शायद अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. अपने बाप से पहले मुसलमान हुए। इस हदीस में वजाहत की गई है कि बैअत पहले करने की वजूहात कुछ और थी।

١٦٤٢ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، حِينَ اعْتَمَرَ، فَطَافَ فَطُفْنَا مَعَهُ وَصَلَّى فَصَلَّيْنَا مَعَهُ، وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَكُنَّا نَسْتُرُهُ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ لَا يُصِيبُهُ أَحَدٌ بِشَيْءٍ. [رواه البخاري: ٤١٨٨]

1642: अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, जबकि आपने उमरह किया। आपने तवाफ किया तो हमने भी आपके साथ तवाफ किया। आपने नमाज पढ़ी तो हमने भी आपके साथ नमाज अदा की। फिर आपने सफा और मरवाह के बीच सई फरमाई तो हम आपको अहले मक्का से छुपाये हुए थे। शायद आप को कोई तकलीफ पहुंचाये।

फायदे: यह उमरतुल कजाअ का वाक्या है। हजरत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. भी असहाबे शजरा से थे और अगले साल उमरतुल कजाअ में भी शरीक थे। (फतहुलबारी 7/523)

---

٢٢ - باب: غَزْوَةُ ذاتِ قَرَدٍ

बाब 22: गजवा जाते करद का बयान।

١٦٤٣ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: خَرَجْتُ قَبْلَ أَنْ يُؤَذَّنَ بِالأُولَى، وَكانَتْ لِقَاحُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ تَرْعى بِذِي قَرَدٍ، قالَ: فَلَقِيَنِي غُلامٌ لِعَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ فَقالَ: أُخِذَتْ لِقَاحُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَذَكَرَ الحديث بطوله، وقَدْ تَقَدَّمَ، وَقالَ هُنا فِي آخِرِهِ قالَ: ثُمَّ رَجَعْنا وَيُرْدِفُني رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى نَاقَتِهِ حَتَّى دَخَلْنَا المَدِينَةَ. (راجع: ١٣٠٠) [رواه البخاري: ٤١٩٤ وانظر حديث رقم: ٣٠٤١]

1643: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं सुबह की अजान से पहले मदीना से रवाना हुआ और मकामे जिकरद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूध वाली ऊंटनियां चरती थी। रास्ते में मुझे अब्दुल रहमान बिन औफ रजि. का गुलाम मिला और कहने लगा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनियां पकड़ ली गई है। फिर वो तमाम हदीस (1300) बयान की जो पहले गुजर चुकी है। और यहाँ उसके आखिर में रावी ने मजीद कहा है कि फिर हम लौटे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझ को अपने पीछे ऊंटनी पर बैठाकर मदीना तक लाये।

फायदे: हजरत सलमा बिन अकवा रजि. बड़े बहादुर और तीरअन्दाज थे। लूट मार करने वालों को तीर मारते और यह शेर पढ़ते जाते थे "मैं अकवा का फरजन्द हूँ और आज कमीना खसलत लोगों की हलाकत का दिन है।"

---

٢٣ - باب: غَزْوَةُ خَيْبَرَ

बाब 23: गजवा खैबर का बयान।

٢٣ - باب: غَزْوَةُ خَيْبَرَ

١٦٤٤ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ، فَسِرْنَا لَيْلاً، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لِعَامِرٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: يَا عَامِرُ أَلاَ تُسْمِعُنَا مِنْ هُنَيْهَاتِكَ؟ وَكَانَ عَامِرٌ رَجُلًا شَاعِرًا حَدَّاءً، فَنَزَلَ يَحْدُو بِالْقَوْمِ يَقُولُ:

اللَّهُمَّ لَوْلاَ أَنْتَ مَا ٱهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَٱغْفِرْ فِدَاءً لَكَ مَا أَبْقَيْنَا
وَأَلْقِيَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
إِنَّا إِذَا صِيحَ بِنَا أَبَيْنَا
وَبِالصِّيَاحِ عَوَّلُوا عَلَيْنَا

فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ هٰذَا السَّائِقُ؟). قَالُوا: عَامِرُ بْنُ الأَكْوَعِ، قَالَ: (يَرْحَمُهُ ٱللهُ). قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: وَجَبَتْ يَا نَبِيَّ ٱللهِ، لَوْلاَ أَمْتَعْتَنَا بِهِ؟ فَأَتَيْنَا خَيْبَرَ فَحَاصَرْنَاهُمْ حَتَّى أَصَابَتْنَا مَخْمَصَةٌ شَدِيدَةٌ، ثُمَّ إِنَّ ٱللهَ تَعَالَى فَتَحَهَا عَلَيْهِمْ، فَلَمَّا أَمْسَى النَّاسُ مَسَاءَ الْيَوْمِ الَّذِي فُتِحَتْ عَلَيْهِمْ، أَوْقَدُوا نِيرَانًا كَثِيرَةً، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَا هٰذِهِ النِّيرَانُ؟ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُوقِدُونَ؟). قَالُوا: عَلَى لَحْمٍ، قَالَ: (عَلَى أَيِّ لَحْمٍ؟). قَالُوا: لَحْمُ حُمُرِ الإِنْسِيَّةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

1644: सलमा बिन अकवा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खैबर की तरफ निकले और रात भर चलते रहे। फिर किसी ने आमिर रजि. से कहा, ऐ आमिर रजि.! तू हमको अपने शेर क्यों नहीं सुनाता? आमिर रजि. शायर, हदी खां (यानी शेर पढ़कर जानवर को तेज चलाने वाले) थे। अपनी सवारी से उतर कर हदी पढ़ने के लिए यह शेर सुनाने लगे:

"गर ना होती तेरी रहमत ऐ पनाह आली सिफात तो नमाजे हम न पढ़ते और न देते हम जकात। तुझ पर सदके जब तक हम जिन्दा रहें, बख्श दे हमको लड़ाई में अता कर सिबात, अपनी रहमत हम पर नाजिल कर, शाह वाला सिफात, जब वो नाहक चीखते, सुनते नहीं हम उनकी बात, चीख चिल्लाकर उन्होंने हम से चाही है निजात।"

यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, यह कौन गा रहा है? लोगों ने कहा, आमिर बिन अकवा रजि। आपने फरमाया, उस पर रहम करे। एक आदमी सुनकर कहने लगा, ऐ अल्लाह

(أَهْرِيقُوهَا وَاكْسِرُوهَا). قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَوْ نُهَرِيقُهَا وَنَغْسِلُهَا؟ قَالَ: (أَوْ ذَاكَ). فَلَمَّا تَصَافَّ الْقَوْمُ كَانَ سَيْفُ عامِرٍ قَصِيرًا، فَتَنَاوَلَ بِهِ سَاقَ يَهُودِيٍّ لِيَضْرِبَهُ، فَرَجَعَ ذُبَابُ سَيْفِهِ، فَأَصَابَ عَيْنَ رُكْبَةِ عامِرٍ فَمَاتَ مِنْهُ، قَالَ: فَلَمَّا قَفَلُوا قَالَ سَلَمَةُ: رَآنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِي قَالَ: (مَا لَكَ؟) قُلْتُ لَهُ: فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، زَعَمُوا أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (كَذَبَ مَنْ قَالَهُ، إِنَّ لَهُ لأَجْرَيْنِ - وَجَمَعَ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ - إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ، قَلَّ عَرَبِيٌّ مَشَى بِهَا مِثْلَهُ). وَفِي رِوَايَةٍ: (نَشَأَ بِهَا). [رواه البخاري: ٤١٩٦]

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अब तो आमिर के लिए शहादत या जन्नत लाजिम हो गई। आपने हमको उनसे और फायदा क्यों नहीं उठाने दिया? खैर हम खैबर पहुंचे और खैबर वालों का घेराव कर लिया। उस दौरान हमें सख्त भूख लगी। फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को खैबर पर फतह दी। जब उस दिन की शाम हुई, जिस दिन खैबर फतह हुआ था तो मुसलमानों ने आग सुलगाई। आपने पूछा, यह कैसी आग है? और यह किस चीज के नीचे जला रहे हो? लोगों ने जवाब दिया, गोश्त पका रहे हैं। आपने पूछा, किस जानवर का गोश्त? उन्होंने कहा, घरेलू गधों का गोश्त पका रहे हैं। आपने फरमाया, उस गोश्त को फैंक दो और हंडियों को तोड़ दो। किसी आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम ऐसा न करें कि गोश्त को फैंक कर हंडियों को धो लें। आपने फरमाया, यही कर लो। फिर जब कौम सफ बन्दी कर चुकी तो आमिर रजि. ने अपनी तलवार जो छोटी थी, एक यहूदी की पिण्डली पर मारी, जिसकी नोक पलट कर आमिर रजि. के घुटने पर लगी। आमिर रजि. उस जख्म से फौत हो गये। रावी का बयान है कि जब सब लोग वापस आये तो सलमा रजि. कहते हैं कि मुझे मायूस देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और फरमाया, तेरा क्या हाल है? मैंने कहा, मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, लोग कहते हैं कि आमिर रजि. की नेकियां बेकार गईं। आपने फरमाया, कौन कहता है? वो झूठा

है। आमिर रजि. को तो दोगुना सवाब मिलेगा। आपने अपनी दो अंगुलियों को मिलाकर इशारा फरमाया कि आमिर रजि. तो बड़ी मेहनत और कोशिश से जिहाद करता था। उस जैसे अरबी जवान जो मदीना में रहते हों। एक रिवायत में है, जो वहां पला-बढ़ा हो, बहुत ही कम हैं।

फायदे: मुसनद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ आमिर रजि.! तेरा परवरदिगार तुझे बख्श दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी आदमी को मुखातिब करके यूं फरमाते तो वो जंग में जरूर शहीद हो जाता था। चूनांचे हजरत आमिर रजि. भी उस जंग में शहीद हुए। (फतहुलबारी 7/534)

١٦٤٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَتَى خَيْبَرَ لَيْلًا، وتَقَدَّمَ فِي الصَّلاة، وزَادَ هُنَا: فَقَتَلَ النَّبِيُّ ﷺ المُقَاتِلَةَ وَسَبَى ٱلذُّرِّيَّةَ. (راجع: ٢٤٣) [رواه البخاري: ٤١٩٧ وانظر حديث رقم: ٣٧١]

1645: अनस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात के वक्त खैबर पहुंचे। यह हदीस (243) किताबुल सलात में गुजर चुकी है। यहाँ इतना इजाफा है कि लड़ाई करने वालों को कत्ल किया और औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया।

फायदे: इस रिवायत के आखिर में है कि उन कैदियों में सफिया बिन्ते हुय्य रजि. भी थीं जो पहले दहिया कलबी रजि. के हिस्से में आई। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे उनको ले लिया और उससे निकाह किया। निज उसकी आजादी को हक्के महर करार दिया।

 (सही बुखारी 4200)

١٦٤٦ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا غَزَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ خَيْبَرَ، أَشْرَفَ النَّاسُ عَلَى وَادٍ، فَرَفَعُوا أَصْوَاتَهُمْ

1646: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब खैबर पर चढ़ाई की तो लोग एक ऊंची जगह

بِالتَّكْبِيرِ: اَللهُ أَكْبَرُ اَللهُ أَكْبَرُ، لاَ إِلٰهَ إِلَّا اَللهُ، فَقَالَ رَسُولُ اَللهِ ﷺ: (ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ، إِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا، وَهُوَ مَعَكُمْ). وَأَنَا خَلْفَ دَابَّةِ رَسُولِ اَللهِ ﷺ، فَسَمِعَنِي وَأَنَا أَقُولُ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، فَقَالَ لِي: (يَا عَبْدَ اَللهِ ابْنَ قَيْسٍ). قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اَللهِ، قَالَ: (أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الجَنَّةِ؟) قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اَللهِ، فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، قَالَ: (لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ). [رواه البخاري: ٤٢٠٦]

पर आये। उन्होंने आवाज बुलन्द तकबीर कही, यानी (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु) कहना शुरू किया तो आपने फरमाया, अपने आप पर आसानी करो। क्योंकि तुम किसी बेहरे या गायब को नहीं पुकार रहे हो। बल्कि तुम तो ऐसे अल्लाह को पुकारते हो, जो सुनता है और नजदीक है। वो तो तुम्हारे साथ है। उस वक्त मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी के पीछे था। आपने मेरी आवाज सुन ली। मैं कह रहा था "ला हवला वला कुव्वता इला बिल्लाह" आपने फरमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस रजि.! मैंने कहा, लब्बैक, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने फरमाया, क्या मैं तुझे एक ऐसा कलमा न पढ़ाऊ जो जन्नत के खजानों में से एक खजाना है। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जरूर बताइये। आप पर मेरे मां-बाप कुरबान हो। आपने फरमाया, वो है "ला हवला वला कुव्वता, इल्ला बिल्लाह"

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि "हाजिर व नाजिर" के अल्फाज अल्लाह के लिए इस्तेमाल नहीं करने चाहिए। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गायब के मुकाबले में अल्लाह की सिफ्त "करीब" जिक्र की है। हालांकि गायब के मुकाबले में हाजिर है।

١٦٤٧ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اَللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ

1647: सहल बिन साद साअदी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि

أَللهِ ﷺ الْتَقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتَتَلُوا، فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى عَسْكَرِهِ وَمَالَ الآخَرُونَ إِلَى عَسْكَرِهِمْ، وَفِي أَصْحَابِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ رَجُلٌ لاَ يَدَعُ لَهُمْ شَاذَّةً وَلاَ فَاذَّةً إِلَّا اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ، فَقِيلَ: مَا أَجْزَأَ مِنَّا الْيَوْمَ أَحَدٌ كَما أَجْزَأَ فُلاَنٌ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَنَا صَاحِبُهُ، قَالَ: فَخَرَجَ مَعَهُ كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ، وَإِذَا أَسْرَعَ أَسْرَعَ مَعَهُ، قَالَ: فَجُرِحَ الرَّجُلُ جُرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ، فَوَضَعَ سَيْفَهُ بِالأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ ٱللهِ، قَالَ: (وَمَا ذَاكَ؟) قَالَ الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ آنِفًا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذٰلِكَ، فَقُلْتُ: أَنَا لَكُمْ بِهِ، فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ، ثُمَّ جُرِحَ جُرْحًا شَدِيدًا، فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ، فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عِنْدَ ذٰلِكَ: (إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ، وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुश्रिकीन का मुकाबला हुआ। दोनों तरफ से लोग खूब लड़े। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लश्कर की तरफ लौटे और दूसरे अपने लश्कर की तरफ लौटे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब में से एक ऐसा आदमी दिखाई दिया जो किसी इक्के, दूक्के आदमी को न छोड़ता। उसके पीछे जाकर अपनी तलवार से उसे मार देता था। कहा गया, उसने तो आज वो काम कर दिखाया है, जो हममें से कोई न कर सका। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वो जहन्नमी है। मुसलमानों में से एक आदमी ने कहा, मैं उसके साथ रहूँगा। रावी का बयान है, चूनांचे वो आदमी उसके साथ चला गया। जब वो ठहरता तो वो भी ठहर जाता और जब चलने लगता तो यह भी चलने लगता। रावी कहता है कि वो आदमी सख़्त ज़ख्मी हो गया तो जल्द मरने के लिए उसने यूं किया कि अपनी तलवार का दस्ता जमीन पर रखा और उसकी नोक अपनी छाती से लगाई, ऊपर से अपना वज़न डालकर खुद को हलाक कर डाला। फिर वो

لِلنَّاسِ، وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٤٢٠٣، ٤٢٠٧]

दूसरा आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा, मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। आपने फरमाया, क्या बात हैं? उसने कहा, वो आदमी जिसका आपने अभी अभी जिक्र किया था, वो दोजखियों से है और लोगों पर आपका यह कहना मुश्किल गुजरा था। फिर मैंने उनसे कहा था कि मैं तुम्हारे लिए इसकी खबरगीरी करता हूँ। चूनांचे मैं उसके पीछे निकला तो देखा कि वो आदमी लड़ते लड़ते सख्त जख्मी हो गया। फिर उसने जल्द मर जाने के लिए यूं किया कि उसने अपनी तलवार का कब्जा जमीन पर लगाया और अपना वजन डाला और हलाक हो गया। उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक आदमी लोगों की नजर में अहले जन्नत के से काम करता है, हालांकि वो दोजखी होता है। जबकि एक आदमी लोगों की निगाह में दोजखियों जैसे काम करता है, हालांकि वो जन्नती होता है।

फायदे: तबरानी की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी के बारे में फरमाया, यह मुनाफिक है और अपने कुफ्र पर पर्दा डाले हुए है। मालूम हुआ कि अल्लाह के यहाँ जाहिरी अमल के बजाये साफ नियत की ज्यादा कीमत है।

(फतहुलबारी 7/540)

١٦٤٨ : وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قُمْ يَا فُلاَنُ، فَأَذِّنْ أَنَّهُ لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا مُؤْمِنٌ، إِنَّ ٱللهَ يُؤَيِّدُ ٱلدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ). [رواه البخاري: ٤٢٠٤]

1648: सहल रजि. से ही एक रिवायत में है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ बिलाल रजि. उठो और लोगों में ऐलान करो कि जन्नत में वही जायेगा जो मौमिन होगा और अल्लाह की कुदरत है कि वो कभी बदचलन आदमी से भी दीन की मदद करा देता है।

फायदेः इससे जाहिरी दिखावट और रियाकारी की बुराई साबित होती है। अल्लाह इससे महफूज रखे।

١٦٤٩ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ضُرِبْتُ ضَرْبَةً فِي سَاقِي يَوْمَ خَيْبَرَ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَنَفَثَ فِيهِ ثَلاثَ نَفَثَاتٍ، فَمَا ٱشْتَكَيْتُهَا حَتَّى السَّاعَةِ. [رواه البخاري: ٤٢٠٦]

1649: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि खैबर के दिन मुझे पिण्डली पर चोट लग गई। मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ। आपने उस पर तीन बार दम फरमाया। फिर मुझे आज तक कोई शिकायत नहीं हुई।

फायदेः इस हदीस की एक रावी हजरत यजीद बिन अबी उबैद कहते हैं कि मैंने हजरत सलमा बिन अकवा रजि. की पिण्डली पर जख्म का एक गहरा निशान देखा, पूछने पर उन्होंने यह हदीस बयान की।

١٦٥٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ خَيْبَرَ وَالْمَدِينَةِ ثَلاثَ لَيَالٍ يُبْنَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ، فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ، وما كانَ فِيهَا مِنْ خُبْزٍ وَلاَ لَحْمٍ، وما كانَ فِيهَا إِلَّا أَنْ أَمَرَ بِلاَلًا بِالأَنْطَاعِ فَبُسِطَتْ، فَأُلْقِيَ عَلَيْهَا التَّمْرُ وَالأَقِطُ وَالسَّمْنُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ: إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمِينُهُ؟ قَالُوا: إِنْ حَجَبَهَا فَهِيَ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، وَإِنْ لَمْ يَحْجُبْهَا فَهِيَ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ. فَلَمَّا ٱرْتَحَلَ وَطَّأَ لَهَا خَلْفَهُ، وَمَدَّ ٱلْحِجَابَ. [رواه البخاري: ٤٢١٣]

1650: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना और खैबर के बीच तीन रातें कयाम किया। उन्हीं में हजरत सफिया रज़ि. से मिलान हुआ। मैंने मुसलमानों को आपके वलीमे के लिए बुलाया तो उसमें न रोटी थी और न गोश्त। बल्कि सिर्फ आपने हजरत बिलाल रजि. को दस्तरखान बिछाने का हुक्म दिया। चूनांचे जब बिछा दिया गया तो उस पर खजूरें, पनीर और घी रखा गया। अब मुसलमान कहने लगे कि

सफिया रजि. मौमिन की माओं में से हैं या लौण्डी हैं? फिर खुद ही कहने लगे अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें पर्दे में रखेंगे तो मौमिन की माओं में से हैं। अगर पर्दे में न रखेंगे तो लौण्डी हैं। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कूच फरमाया तो हजरत सफिया रजि. के लिए अपने पीछे बैठने की जगह बनाई और उन पर पर्दा लटका दिया।

फायदे: हजरत सफिया रजि. का नाम जैनब था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अपने लिए पसन्द फरमाया तो उसका नाम सफिया पड़ गया। और यही असल नाम पर गालिब आ गया। उसे बच्चेदारी के साफ होने तक हजरत उम्मे सुलैम रजि. से पास ठहराया गया। (फतहुलबारी 4/548)

1651: अली बिन अबी तालिब रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर के दिन निकाह मुतआ (कुछ सामान देकर कुछ दिनों तक के लिए किसी औरत से फायदा उठाना) और घरेलू गधों का गोश्त खाने से मना फरमाया है।

١٦٥١ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ يَوْمَ خَيْبَرَ، وَعَنْ أَكْلِ الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ. [رواه البخاري: ٤٢١٦]

फायदे: इस्लाम के शुरू में खास जरूरत के पेशे नज़र मुतआ जाइज था। गजवा खैबर के मौके पर उसे हराम कर दिया गया। फिर खास हालत की बिना पर फतह मक्का के वक्त उसकी इजाजत दे दी गई। आखिरकार कयामत तक के लिए उसे हराम कर दिया गया। (4/502)

1652: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर के

١٦٥٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَسَمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِلرَّاجِلِ

سَهْمًا. [رواه البخاري: ٤٢٢٨]

दिन माले गनीमत से घोड़े के सवार को दो हिस्से और प्यादे को एक हिस्सा इनायत फरमाया।

फायदेः इस हदीस के आखिर में हजरत नाफे ने इसकी तफसील बयान की है कि अगर मुजाहिद के पास घोड़ा होता तो उसे तीन हिस्से मिलते। अगर वो अकेला होता तो उसे सिर्फ एक हिस्सा दिया जाता।

١٦٥٣ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَلَغَنَا مَخْرَجُ النَّبِيِّ ﷺ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ، فَخَرَجْنَا مُهَاجِرِينَ إِلَيْهِ أَنَا وَأَخَوَانِ لِي أَنَا أَصْغَرُهُمْ، أَحَدُهُمَا أَبُو بُرْدَةَ وَالآخَرُ أَبُو رُهْمٍ، فِي ثَلاَثَةٍ وَخَمْسِينَ مِنْ قَوْمِي، فَرَكِبْنَا سَفِينَةً، فَأَلْقَتْنَا سَفِينَتُنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، فَوَافَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا، فَوَافَقْنَا النَّبِيَّ ﷺ حِينَ ٱفْتَتَحَ خَيْبَرَ، وَكَانَ أُنَاسٌ مِنَ النَّاسِ يَقُولُونَ لَنَا، يَعْنِي لِأَهْلِ السَّفِينَةِ: سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ. وَدَخَلَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ، وَهِيَ مِمَّنْ قَدِمَ مَعَنَا، عَلَى حَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ زَائِرَةً، وَقَدْ كَانَتْ هَاجَرَتْ إِلَى النَّجَاشِيِّ فِيمَنْ هَاجَرَ، فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى حَفْصَةَ، وَأَسْمَاءُ عِنْدَهَا، فَقَالَ عُمَرُ حِينَ رَأَى أَسْمَاءَ: مَنْ هٰذِهِ؟ قَالَتْ: أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ، قَالَ عُمَرُ: آلْحَبَشِيَّةُ هٰذِهِ، آلْبَحْرِيَّةُ هٰذِهِ؟ قَالَتْ أَسْمَاءُ: نَعَمْ، قَالَ:

1653: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम लोग यमन में थे, जब हमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक्का से रवानगी की खबर मिली। हम भी हिजरत करके आपकी तरफ चल पड़े। एक मैं और दो मेरे भाई, मैं उनमें से छोटा था। एक का नाम अबू बुरदा और दूसरे का नाम अबू रूहुम था, हमारे साथ मेरी कौम के तरेपन अफराद और थे। हम सब कश्ती में सवार हुए तो हमारी कश्ती ने हमें निजाशी की सरजमीन हब्शा में जा उतारा। वहां हमारी मुलाकात हजरत जाफर बिन अबी तालिब रजि. से हुई और हमने उनके पास ही कयाम किया। फिर हम सब इकट्ठे रवाना हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस वक्त मुलाकात हुई , जब आप खैबर फतह कर चुके थे। और दूसरे लोग हम सफीना वालों से कहने लगे कि हम हिजरत के

سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ، فَنَحْنُ أَحَقُّ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْكُمْ، فَغَضِبَتْ وَقَالَتْ: كَلاَّ وَاللهِ، كُنْتُمْ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ يُطْعِمُ جَائِعَكُمْ، وَيَعِظُ جَاهِلَكُمْ، وَكُنَّا فِي دَارٍ - أَوْ فِي أَرْضِ - الْبُعَدَاءِ الْبُغَضَاءِ بِالْحَبَشَةِ، وَذٰلِكَ فِي اللهِ وَفِي رَسُولِهِ ﷺ، وَايْمُ اللهِ لاَ أَطْعَمُ طَعَامًا وَلاَ أَشْرَبُ شَرَابًا، حَتَّى أَذْكُرَ مَا قُلْتَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، وَنَحْنُ كُنَّا نُؤْذَى وَنُخَافُ، وَسَأَذْكُرُ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَسْأَلُهُ، وَاللهِ لاَ أَكْذِبُ وَلاَ أَزِيغُ وَلاَ أَزِيدُ عَلَيْهِ. فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّ عُمَرَ قَالَ كَذَا وَكَذَا؟ قَالَ: (فَمَا قُلْتِ لَهُ). قَالَتْ: قُلْتُ لَهُ: كَذَا وَكَذَا، قَالَ: (لَيْسَ بِأَحَقَّ بِي مِنْكُمْ، وَلَهُ وَلِأَصْحَابِهِ هِجْرَةٌ وَاحِدَةٌ، وَلَكُمْ أَنْتُمْ - أَهْلَ السَّفِينَةِ - هِجْرَتَانِ). [رواه البخاري: ٤٢٣٠، ٤٢٣١]

ऐतबार से तुम पर पहल कर चुके हैं। और उसमा बिन्ते उमैस रजि. भी हमारे साथ आई थीं। वो उम्मे मौमिनीन हफसा रजि. के पास मुलाकात के लिए गई और असमा ने भी निजाशी के तरफ जमाअते मुहाजिरीन के साथ हिजरत की थी। उमर रजि. हफसा रजि. के पास आये तो उस वक्त असमा बिन्ते उमैस रजि. उनके पास मौजूद थीं। उमर रजि. ने असमा रजि. को देखकर पूछा, यह कौन है? हफसा रजि. ने कहा, यह असमा बिन्ते उमैस रजि. है। उमर रजि. ने कहा, वही हब्शा से हिजरत करके आने वाली? समन्दरी रास्ते से आने वाली? असमा रजि. ने कहा, हां वही हूँ। उमर रजि. ने कहा, हमने तुमसे पहले हिजरत की है। इस बिना पर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज्यादा हक रखते हैं। यह बात सुनकर असमा रजि. गुस्से में आ गई और कहने लगीं, अल्लाह की कसम! हरगिज नहीं। तुम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। तुममें से अगर कोई भूखा होता तो आप उसे खाना खिलाते थे और तुम्हारे जाहिलों को नसीहत फरमाते थे और हम ऐसी जगह या यूं फरमाया हम सब जमीने हब्शा के ऐसे ऐसे इलाके में रहते थे जो न सिर्फ दूर था, बल्कि दीने इस्लाम से वहां नफरत थी। यह सब कुछ हमने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खातिर बर्दाश्त किया था। अल्लाह की कसम! मुझ

पर खाना पीना हराम है, जब तक मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन बातों का जिक्र न कर लूं जो आपने कही हैं और वहां हमें तकलीफ दी जाती और खौफ व डर में मुब्तला रहते थे। मैं यह सब कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करूंगी और आपसे पूछूंगी। अल्लाह की कसम! मैं न झूट बोलूंगी, न गलत कहूँगी और न ही अपनी तरफ से कोई बात बढ़ाऊंगी। चूनांचे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये तो असमा बिन्ते उमैस रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उमर रजि. ने यह और यह बातें की हैं। आपने फरमाया तूने उमर रजि. को क्या जबाब दिया। उन्होंने कहा, मैंने उमर रजि. को यह और यह कहा। आपने कहा, वो तुमसे ज्यादा मुझ पर हक नहीं रखते। उनकी और उनके साथियों की एक हिजरत है और ऐ कश्ती वालों! सिर्फ तुम्हारी दो हिजरतें हुई हैं।

फायदे: हजरत असमा बिन्ते उमैस रजि. फरमाती हैं कि यह हदीस बयान करने के बाद हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. और उसके दूसरे साथी मेरे पास आते और उस फरमाने नबवी को बार बार सुनते। क्योंकि उसमें उनकी बड़ाई को बयान किया गया था।

1654: अबू मूसा अशअरी रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं अशअरी लोगों के कुरआन पढ़ने की आवाज को पहचानता हूँ। जब वो रात को घरों में आते हैं और उनकी कयामगाहों को उनकी तिलावत कुरआन की आवाज से रात के वक्त पहचानता लेता हूँ। अगरचे दिन

١٦٥٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنِّي لأَعْرِفُ أَصْوَاتَ رُفْقَةِ الأَشْعَرِيِّينَ بِالْقُرْآنِ حِينَ يَدْخُلُونَ بِاللَّيْلِ، وَأَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ أَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ، وَإِنْ كُنْتُ لَمْ أَرَ مَنَازِلَهُمْ حِينَ نَزَلُوا بِالنَّهَارِ، وَمِنْهُمْ حَكِيمٌ، إِذَا لَقِيَ الخَيْلَ، أَوْ قَالَ: الْعَدُوَّ، قَالَ لَهُمْ: إِنَّ أَصْحَابِي يَأْمُرُونَكُمْ أَنْ تَنْظُرُوهُمْ). [رواه البخاري: ٤٢٣٢]

को जब वो उतरते हैं, उनके ठिकाने न देखे हों। और उनमें एक आदमी हकीम है, जब वो किसी जमाअत या दुश्मन से लड़ता है तो उनसे कहता है, हमारे साथी तुम से कहते हैं कि हमारा इन्तेजार करो।

फायदे: मतलब यह है कि वो हकीम बड़ा बहादुर और दिलेर इन्सान हैं। दुश्मन से मुकाबला करते हुए भागता नहीं, बल्कि यह कहता है कि जरा सब्र करो और हमारे साथियों का इन्तेजार करो ताकि दुश्मन के पांव उखड़ जायें और वो मुकाबले में न आयें। (फतहुलबारी 7/557)

1655: अबू मूसा रजि. से ही एक और रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि फतह खैबर के बाद हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खैबर की गनीमत से हिस्सा दिया और हमारे सिवा किसी और को जो फतह के वक्त हाजिर न था, हिस्सा नहीं दिया गया।

١٦٥٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بَعْدَ أَنِ ٱفْتَتَحَ خَيْبَرَ فَقَسَمَ لَنَا، وَلَمْ يَقْسِمْ لِأَحَدٍ لَمْ يَشْهَدِ الْفَتْحَ غَيْرَنَا. [رواه البخاري: ٤٢٣٣]

फायदे: हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. और उनके साथी इस तरह हजरत जाफर रजि. और उनके साथी जो हब्शा से हिजरत करके आये थे, उन्हें खैबर की माले गनीमत में शरीक करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले मुसलमानों से मशवरा किया। आपसी राय मश्वरे के बाद फिर उन्हें हिस्सेदार बनाया गया।

(फतहुलबारी 4/504)

बाब 24: उमरा-ए-कजाअ का बयान।

٢٤ - باب: عُمْرَةُ القَضَاءِ

1656: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मैमूना रजि. से जमीन हरम में निकाह

١٦٥٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ مَيْمُونَةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ، وَبَنَى بِهَا وَهُوَ حَلَالٌ،

فرمایا اور سرزمین حرم से निकलने

وَمَاتَتْ بِسَرِفَ. [رواه البخاري: ٤٢٥٨]

फरमाया और सरजमीन हरम से निकलने के बाद उनसे सोहबत (हमबिस्तरी) की और वो मकाम सरीफ में फौत हुई।

फायदे: उमरा-एकजाअ इस बिना पर है कि सुल्ह हुदैबिया के वक्त कुफ्फार कुरैश के फैसले के मुताबिक अदा किया गया था। यह इसलिए नहीं कि उसे कजाअ के तौर पर अदा किया था। (फतहुलबारी 7/571)। निज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत मैमूना रजि. से निकाह अहराम की हालत में नहीं, बल्कि उससे पहले किया था, जैसा कि खुद हजरत मैमूना रजि. का बयान है। (फतहुलबारी 9/17)

बाब 25: गजवा मूता का बयान।

٢٥ - باب: غَزْوَةُ مُؤْتَةَ مِنْ أَرْضِ الشَّامِ

١٦٥٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَّرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ مُؤْتَةَ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنْ قُتِلَ زَيْدٌ فَجَعْفَرٌ، وَإِنْ قُتِلَ جَعْفَرٌ فَعَبْدُ ٱللهِ بْنُ رَوَاحَةَ). قَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: كُنْتُ فِيهِمْ فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ، فَٱلْتَمَسْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فَوَجَدْنَاهُ فِي الْقَتْلَى، وَوَجَدْنَا مَا فِي جَسَدِهِ بِضْعًا وَتِسْعِينَ، مِنْ طَعْنَةٍ وَرَمْيَةٍ. [رواه البخاري: ٤٢٦١]

1657: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे मूता में जैद बिन हारिशा रजि. को अमीर बनाकर फरमाया, अगर जैद शहीद हो जाये तो जाफर रजि. और अगर जाफर रजि. शहीद हो जाये तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि. अमीर होंगे। अब्दुल्लाह बिन उमर रजि.फरमाते हैं कि मैं उस जंग में मौजूद था जब हमने जाफर बिन अबी तालिब रजि. की लाश तलाश की। देखा तो लाशों में पड़ी हुई थी और हमने उनके जिस्म पर निजों और तीरों के नब्बे से ज्यादा जख्म देखे।

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि. के बाद इस्लामी झण्डा हजरत खालिद बिन वलीद रजि. ने अपने हाथ में लिया, जिसके बारे में

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ अल्लाह! यह तेरी तलवारों में से एक तलवार है, तू इसकी मदद फरमा'' फिर अल्लाह ने मुसलमानों को फतह से हमकिनार किया।

 (फतहुलबारी 7/586)

---

٢٦ - باب: بَعْثُ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ ابْنَ زَيْدٍ إِلى الحُرَقَاتِ

बाब 26: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुराकात की तरफ उसामा बिन जैद रजि. को रवाना फरमाना।

١٦٥٨ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى الْحُرَقَةِ، فَصَبَّحْنَا الْقَوْمَ فَهَزَمْنَاهُمْ، وَلَحِقْتُ أَنَا وَرَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ رَجُلًا مِنْهُمْ، فَلَمَّا غَشِينَاهُ قَالَ: لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، فَكَفَّ الأَنْصَارِيُّ، فَطَعَنْتُهُ بِرُمْحِي حَتَّى قَتَلْتُهُ، فَلَمَّا قَدِمْنَا بَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (يَا أُسَامَةُ، أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ؟) قُلْتُ: كَانَ مُتَعَوِّذًا، فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا، حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ أَسْلَمْتُ قَبْلَ ذٰلِكَ الْيَوْمِ. [رواه البخاري: ٤٢٦٩]

1658: असामा बिन जैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें कबीला हुरका की तरफ रवाना किया तो हमने सुबह सवेरे उन पर हमला करके उन्हें शिकस्त दी। फिर ऐसा हुआ कि मैं और एक अनसारी आदमी हुरका के एक आदमी से भिड़ गये। जब हमने उसको घेर लिया तो वो ला इल्लाह इल्लल्लाह कहने लगा। यह सुनते ही अनसारी ने तो हाथ रोक लिया, लेकिन मैंने उसे निजा मार कर कत्ल कर डाला। फिर जब हम उस जंग से लौटकर आये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह खबर पहुंची तो आपने फरमाया, ऐ उसामा रजि.! क्या तूने उसे ला इलाहा इल्लल्लाह कहने के बाद मार डाला। मैंने कहा, वो तो अपने बचाव के लिए ऐसा कह रहा था। मगर आप बार बार यही फरमाते रहे , यहाँ तक कि मैंने यह ख्वाहिश की कि काश मैं इस दिन से पहले मुसलमान न हुआ होता।

फायदे: एक रिवायत में है कि हजरत उसामा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआये इस्तगफार की अपील की तो आपने फरमाया कि ला इलाहा इल्लल्लाह के मुकाबले तेरा क्या ख्याल होगा? इससे पता चलता है कि कलमा कहने वाले मुसलमान के मुताल्लिक कत्ल करने की पेशकदमी करना किस कद्र संगीन जुर्म है। (फतहुलबारी 12/203)

1659: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सात बार जिहाद किया और नौ बार आपके रवाना किये हुए लश्कर के साथ मिल कर लड़ा हूँ। उनमें एक बार हम पर अबू बकर रजि. अमीर थे, और एक बार हम पर उसामा बिन जैद रजि. सरदार थे।

١٦٥٩ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَوَاتٍ وَخَرَجْتُ فِيمَا يَبْعَثُ مِنَ الْبُعُوثِ تِسْعَ غَزَوَاتٍ، مَرَّةً عَلَيْنَا أَبُو بَكْرٍ، وَمَرَّةً عَلَيْنَا أُسَامَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا. [رواه البخاري: ٤٢٧٠]

फायदे: जिस सात गजवात में हजरत सलमा बिन अकवा रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए, वो यह हैं, गजवा खैबर, हुदैबिया, हुनैन, करद, फतह मक्का, गजवा तायफ और गजवा तबूक। (फतहुलबारी 7/591)

बाब 27: रमजान के महीने में गजवा मक्का।

٢٧ - باب: غَزْوَةُ الْفَتْحِ فِي رَمَضَان

1660: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माहे रमजान में दस हजार सहाबा के साथ मदीना से मक्का की तरफ रवाना हुए और यह मदीना में आपके आने के

١٦٦٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ فِي رَمَضَانَ مِنَ الْمَدِينَةِ وَمَعَهُ عَشَرَةُ الآلَافِ، وَذٰلِكَ عَلَى رَأْسِ ثَمَانِ سِنِينَ وَنِصْفٍ مِنْ مَقْدَمِهِ الْمَدِينَةَ، فَسَارَ

هُوَ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَى مَكَّةَ، يَصُومُ وَيَصُومُونَ، حَتَّى بَلَغَ الْكَدِيدَ، وَهُوَ مَاءٌ بَيْنَ عُسْفَانَ وَقُدَيْدٍ، أَفْطَرَ وَأَفْطَرُوا. [رواه البخاري: ٤٢٧٦]

साढ़े आठ बरस बाद का वाक्या है। इस सफर में आप और आपके साथ आने वाले मुसलमान रोजे से थे। फिर जब आप मकामे कुदैद पहुंचे तो उस्फान और कुदैद के बीच एक चश्मा है तो वहां आप और आपके साथियों ने रोजा इफ्तार किया।

फायदे: मालूम हुआ कि सफर के दौरान रोजा इफ्तार किया जा सकता है, चूनांचे इमाम जुहरी इस हदीस के आखिर में फरमाते हैं कि शअरी अहकाम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आखरी काम को लिया जायेगा।

١٦٦١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي رَمَضَانَ إِلَى حُنَيْنٍ، وَالنَّاسُ مُخْتَلِفُونَ، فَصَائِمٌ وَمُفْطِرٌ، فَلَمَّا ٱسْتَوَى عَلَى رَاحِلَتِهِ، دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ أَوْ مَاءٍ، فَوَضَعَهُ عَلَى رَاحَتِهِ، أَوْ: عَلَى رَاحِلَتِهِ، ثُمَّ نَظَرَ إِلَى النَّاسِ، فَقَالَ الْمُفْطِرُونَ لِلصُّوَّامِ: أَفْطِرُوا. [رواه البخاري: ٤٢٧٧]

1661: इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुनैन की तरफ माहे रमजान में रवाना हुए और आपके साथ लोगों का एक हाल न था। कुछ रोजे रखे हुए थे, जबकि कुछ रोजे के बगैर थे। जब आप अपनी ऊंटनी पर सवार हुए तो दूध या पानी का बर्तन मंगवाया और उसे ऊंटनी या अपनी हथेली पर रखा। फिर आपने लोगों की तरफ देखा तो बेरोजा लोगों ने रोजेदारों से कहा, अब रोजा इफ्तार कर लो।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस रमजान को मदीना मुनव्वरा से रवाना होते और रमजान के बीच में मक्का मुकर्रमा पहुंचे। फिर उन्नीस दिन यहाँ पड़ाव किया। फिर शव्वाल के शुरू में हुनैन का रूख किया। इसलिए रिवायत में रमजान का जिक्र गौर के काबिल है। (फतुहलबारी 7/597)

बाब 28: फतह मक्का के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झण्डा कहां गाड़ा।

٢٨ - باب: أَيْنَ رَكَزَ النَّبِيُّ ﷺ الرَّايَةَ يَوْمَ الْفَتْحِ

1662: उरवा बिन जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब फतह मक्का के साल रवाना हुए और कुरैश को यह खबर पहुंची तो अबू सुफियान, हकीम बिन हिजाम और बुदैल बिन वरकाअ आपके बारे में मालूमात लेने को निकले। चलते चलते जब मर्रूजहरान पहुंचे तो उन्होंने देखा कि आग जगह जगह जल रही है जैसे वो अरफा की आग है। अबू सुफियान ने कहा, यहाँ जगह जगह आग क्यों जल रही है? यह जगह जगह आग के यह अलाव तो मैदाने अरफात का मन्जर पेश कर रहे हैं। बुदैल बिन वरकाअ ने कहा, यह बनी अम्र की आग मालूम होती है। अबू सुफियान ने कहा, बनी अम्र के लोग तो इससे बहुत कम हैं। इतने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पासबानों ने उन्हें देखकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया और पकड़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाये

١٦٦٢ : عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا سَارَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ، فَبَلَغَ ذٰلِكَ قُرَيْشًا، خَرَجَ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ وَحَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ وَبُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ يَلْتَمِسُونَ الْخَبَرَ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَأَقْبَلُوا يَسِيرُونَ حَتَّى أَتَوْا مَرَّ الظَّهْرَانِ، فَإِذَا هُمْ بِنِيرَانٍ كَأَنَّهَا نِيرَانُ عَرَفَةَ، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: مَا هٰذِهِ، لَكَأَنَّهَا نِيرَانُ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ: نِيرَانُ بَنِي عَمْرٍو، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: عَمْرٌو أَقَلُّ مِنْ ذٰلِكَ، فَرَآهُمْ نَاسٌ مِنْ حَرَسِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَأَدْرَكُوهُمْ فَأَخَذُوهُمْ، فَأَتَوْا بِهِمْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَأَسْلَمَ أَبُو سُفْيَانَ، فَلَمَّا سَارَ قَالَ لِلْعَبَّاسِ: (احْبِسْ أَبَا سُفْيَانَ عِنْدَ خَطْمِ الْجَبَلِ، حَتَّى يَنْظُرَ إِلَى الْمُسْلِمِينَ). فَحَبَسَهُ الْعَبَّاسُ، فَجَعَلَتِ الْقَبَائِلُ تَمُرُّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، كَتِيبَةً كَتِيبَةً عَلَى أَبِي سُفْيَانَ، فَمَرَّتْ كَتِيبَةٌ، قَالَ: يَا عَبَّاسُ مَنْ هٰذِهِ؟ قَالَ: هٰذِهِ غِفَارُ، قَالَ: مَا لِي وَلِغِفَارَ، ثُمَّ مَرَّتْ جُهَيْنَةُ، قَالَ مِثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ مَرَّتْ سَعْدُ بْنُ هُزَيْمٍ فَقَالَ مِثْلَ ذٰلِكَ،

وَمَرَّتْ سُلَيْمٌ، فَقَالَ مِثْلَ ذٰلِكَ، حَتَّى أَقْبَلَتْ كَتِيبَةٌ لَمْ يَرَ مِثْلَهَا، قَالَ: مَنْ هٰذِهِ؟ قَالَ: هٰؤُلَاءِ الأَنْصَارُ، عَلَيْهِمْ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ مَعَهُ الرَّايَةُ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: يَا أَبَا سُفْيَانَ، اليَوْمَ يَوْمُ المَلْحَمَةِ، اليَوْمَ تُسْتَحَلُّ الكَعْبَةُ. فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: يَا عَبَّاسُ حَبَّذَا يَوْمُ الذِّمَارِ. ثُمَّ جَاءَتْ كَتِيبَةٌ، وَهِيَ أَقَلُّ الكَتَائِبِ، فِيهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ، وَرَايَةُ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ الزُّبَيْرِ بْنِ العَوَّامِ، فَلَمَّا مَرَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِأَبِي سُفْيَانَ قَالَ: أَلَمْ تَعْلَمْ مَا قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ؟ قَالَ: (مَا قَالَ؟). قَالَ: كَذَا وَكَذَا، فَقَالَ: (كَذَبَ سَعْدٌ، وَلٰكِنْ هٰذَا يَوْمٌ يُعَظِّمُ اللهُ فِيهِ الكَعْبَةَ، وَيَوْمٌ تُكْسَى فِيهِ الكَعْبَةُ). قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تُرْكَزَ رَايَتُهُ بِالحَجُونِ.

فَقَالَ العَبَّاسُ لِلزُّبَيْرِ: يَا أَبَا عَبْدِ اللهِ، هَا هُنَا أَمَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تَرْكُزَ الرَّايَةَ؟

قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ خَالِدَ بْنَ الوَلِيدِ أَنْ يَدْخُلَ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ مِنْ كَدَاءٍ، وَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ كُدًا، فَقُتِلَ مِنْ خَيْلِ خَالِدِ بْنِ الوَلِيدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ رَجُلَانِ: حُبَيْشُ ابْنُ الأَشْعَرِ، وَكُرْزُ بْنُ جَابِرٍ

तो अबू सुफियान रजि. मुसलमान हुए। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रवाना हुए तो अब्बास रजि. से फरमाया कि अबू सुफियान रजि. को घोड़ों के हुजूम की जगह रखना। ताकि वो मुसलमानों की शानो शौकत खुद अपनी आखों से देखे। चूनांचे अब्बास रजि. ने अबू सुफियान रजि. को ऐसी ही जगह ठहराया। अब उनके करीब से वो कबीले जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, गिरोह दर गिरोह गुजरने लगे और जब पहला कबीला गुजरा तो अबू सुफियान रजि. ने पूछा, अब्बास रजि.! यह कौन हैं? उन्होंने कहा, यह कबीला गिफार है। अबू सुफियान रजि. ने कहा, मुझे उनसे कोई गर्ज नहीं। फिर कबीला जुहैना गुजरा तो अबू सुफियान रजि. ने ऐसा ही कहा। फिर कबीला साद बिन हुजैम गुजरा तो भी उसने यही कहा। फिर कबीला सुलैम गुजरा तो भी उसने यही कहा। आखिर में एक ऐसा लश्कर गुजरा कि अबू सुफियान रजि. ने उस जैसा लश्कर कभी न देखा था तो पूछा, यह कौन है? अब्बास रजि. ने कहा, यह अनसारी हैं और उनके अमीर साद बिन

उबादा रजि. हैं जो झण्डा थामे हुए हैं। الفِهْرِيُّ. [رواه البخاري: ٤٢٨٠]
फिर साद बिन उबादा रजि. ने कहा, ऐ अबू सुफियान रजि. आज तो गर्दनें मारने का दिन है। आज काबा में कुफ्फार का कत्ल जाइज होगा। अबू सुफियान रजि. ने कहा, ऐ अब्बास रजि. हिफाजत का दिन अच्छा है। फिर एक सबसे छोटी जमात आई। उसमें खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झण्डा जुबैर बिन अवाम रजि. के हाथ में था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबू सुफियान रजि. के करीब से गुजरे तो उसने कहा, आप को मालूम नहीं कि साद बिन उबादा रजि. ने क्या कहा है? आपने पूछा, उसने क्या कहा है? अबू सुफियान ने कहा, उसनें ऐसा ऐसा कहा है। आपने फरमाया, साद रजि. ने गलत कहा, यह तो वो दिन है कि अल्लाह इसमें कअबा को बुजुर्गी देगा और इस दिन कअबा को गिलाफ पहनाया जायेगा। उरवा रजि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मकामे हुजून में अपना झण्डा गाड़ने का हुक्म दिया। अब्बास रजि. ने जुबैर रजि. से कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! क्या इस जगह झण्डा गाड़ने का तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था। उरवा रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दिन खालिद बिन वलीद रजि. को यह हुक्म दिया था कि कदाअ की उतरी तरफ से मक्का में दाखिल हों और खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कदाअ (के नशीबी इलाके) की तरफ से दाखिल हुए। उस दिन खालिद बिन वलीद की फौज से दो मर्द यानी हुबैश बिन अशअर और कुरज बिन जाबिर फेरी रजि. शहीद हुए।

फायदे: जब खालिद बिन वलीद रजि. अपना लश्करे जर्रार (बहादुर) लेकर मक्का में दाखिल हुए तो मक्का वालो ने आदत के मुताबिक उनका मुकाबला किया। नतीजे में बारह तेरह काफिर मारे गये और

बाकी भाग निकले। जबकि मुसलमानों से भी हुबैश बिन अशअर और कुरज बिन जाबिर फेरी शहीद हो गये। (फतहुलबारी 7/603)

1663: अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने फतह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऊंटनी पर सवार देखा। उस वक्त सूरह फतह (बड़ी अच्छी आवाज में) से पढ़ रहे थे। रावी कहता है कि अगर लोगों के जमा होने का अन्देशा न होता तो मैं भी उसी तरह बार बार पढ़ कर सुनाता जैसे उन्होंने पढ़कर सुनाया था।

١٦٦٣ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ عَلَى نَاقَتِهِ وَهُوَ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفَتْحِ يُرَجِّعُ، وَقَالَ: لَوْلاَ أَنْ يَجْتَمِعَ النَّاسُ حَوْلِي لَرَجَّعْتُ كَما رَجَّعَ. [رواه البخاري: ٤٢٨١]

फायदे: एक लफ्ज को आहिस्ता, फिर तेज आवाज में पढ़ने को तरजीह कहते हैं। रावी हदीस हजरत मआविया बिन कुर्रा ने हजरत अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रजि. के लब व लहजे के मुताबिक थोड़ी सी किरअत के बाज रिवायत में आवाज के तरीके को बयान भी किया गया है। (फतहुलबारी 7/607)

1664: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतह मक्का के दिन मक्का में दाखिल हुए तो उस वक्त खाना काबा के पास तीन सौ साठ बूत थे। आप अपने हाथ की छड़ी से उन बूतों को मारते और फरमाते, दीने हक आया और झूट मिट गया। हक आ चुका और झूट से न शुरू में कुछ हो सका और न आइन्दा उससे कुछ हो सकता है।

١٦٦٤ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ، وَحَوْلَ الْبَيْتِ سِتُّونَ وَثَلاَثُمِائَةِ نُصُبٍ، فَجَعَلَ يَطْعُنُهَا بِعُودٍ فِي يَدِهِ وَيَقُولُ: ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ﴾. ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ﴾. [رواه البخاري: ٤٢٨٧]

फायदे: बैतुल्लाह के अन्दर हजरत इब्राहिम, हजरत इस्माईल, हजरत ईसा और हजरत मरीयम अलैहि. की तस्वीरें थी। जबकि बैतुल्लाह के बाहर बेशुमार तस्वीरें गाड़ी हुई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी कमान के किनारे से इशारा करते। यहाँ तक कि तमाम तस्वीरें जमीन में धंस गई। (फतहुलबारी 7/116)

बाब 29:

٢٩ - باب:

1665: अम्र बिन सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक चश्में पर रहते थे। जो लोगों के लिए आम रास्ता था। हमारी तरफ से जो मुसाफिर सवार गुजरते, हम उनसे पूछते रहते कि अब लोगों का क्या हाल है? और उस आदमी की क्या हालत है? जवाब देते वो कहता है अल्लाह ने उसे रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह उसकी तरफ वह्य उतारता है। या यूं कहा कि अल्लाह ने उस पर यह वह्य भेजी है। अम्र बिन सलमा रजि. कहते हैं कि मैं वो कलाम खूब याद कर लिया करता। गोया कोई उसे मेरे सीने में जमा देता है। और अरब वाले मुसलमान होने के लिए फतह मक्का के मुन्तजीर थे। और कहते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसकी कौम को छोड़ दो। अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन

١٦٦٥ : عَنْ عَمْرِو بْنِ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنَّا بِمَا مَمَرَّ النَّاسِ، وَكَانَ يَمُرُّ بِنَا الرُّكْبَانُ فَنَسْأَلُهُمْ: مَا لِلنَّاسِ، مَا لِلنَّاسِ؟ مَا هٰذَا الرَّجُلُ؟ فَيَقُولُونَ: يَزْعَمُ أَنَّ ٱللهَ أَرْسَلَهُ، أَوْحَى إِلَيْهِ. أَوْ: أَوْحَى ٱللهُ بِكَذَا، فَكُنْتُ أَحْفَظُ ذٰلِكَ الْكَلَامَ، وَكَأَنَّمَا يُقَرُّ فِي صَدْرِي، وَكَانَتِ الْعَرَبُ تَلَوَّمُ بِإِسْلَامِهِمُ الْفَتْحَ، فَيَقُولُونَ: ٱتْرُكُوهُ وَقَوْمَهُ، فَإِنَّهُ إِنْ ظَهَرَ عَلَيْهِمْ فَهُوَ نَبِيٌّ صَادِقٌ. فَلَمَّا كَانَتْ وَقْعَةُ أَهْلِ الْفَتْحِ، بَادَرَ كُلُّ قَوْمٍ بِإِسْلَامِهِمْ، وَبَدَرَ أَبِي قَوْمِي بِإِسْلَامِهِمْ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: جِئْتُكُمْ وَٱللهِ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ حَقًّا، فَقَالَ: صَلُّوا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينِ كَذَا، وَصَلُّوا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينِ كَذَا، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤَذِّنْ أَحَدُكُمْ، وَلْيَؤُمَّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا، فَنَظَرُوا فَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَكْثَرَ قُرْآنًا مِنِّي، لِمَا كُنْتُ أَتَلَقَّى مِنَ الرُّكْبَانِ،

فَقَدَّمُونِي بَيْنَ أَيْدِيهِمْ، وَأَنَا ابْنُ سِتٍّ أَوْ سَبْعِ سِنِينَ، وَكَانَتْ عَلَيَّ بُرْدَةٌ، كُنْتُ إِذَا سَجَدْتُ تَقَلَّصَتْ عَنِّي، فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الْحَيِّ: أَلاَ تُغَطُّونَ عَنَّا اسْتَ قَارِئِكُمْ؟ فَاشْتَرَوْا فَقَطَعُوا لِي قَمِيصًا، فَمَا فَرِحْتُ بِشَيْءٍ فَرَحِي بِذَلِكَ الْقَمِيصِ. [رواه البخاري: ٤٣٠٢]

पर गालिब आ गये तो वो नबी बरहक हैं। फिर जब मक्का फतह हुआ तो हर एक कौम ने चाहा कि वो पहले मुसलमान हो जाये और मेरे बाप ने मुसलमान होने में अपनी कौम से भी जल्दी की। जब मेरा बाप मुसलमान होकर आया, तो उसने अपनी कौम से कहा, अल्लाह की कसम, मैं नबी बरहक से मुलाकात करके तुम्हारे पास आ रहा हूँ। उसने फरमाया है कि फलां वक्त यह नमाज और फलां वक्त वो नमाज पढ़ा करो और जब नमाज का वक्त आ जाये तो तुम में से एक आदमी अजान दे और जिसको ज्यादा कुरआन याद हो, वो जमात कराये। उन्होंने इस पर गौर किया तो मुझसे ज्यादा किसी को कुरआन पढ़ने वाला न पाया। क्योंकि मैं मुसाफिर सवारों से सुन सुनकर बहुत याद कर चुका था। लिहाजा सबने मुझे इमाम बना लिया। हालांकि मैं उस वक्त छः सात बरस का था। ऐसा हुआ कि उस वक्त मेरे तन पर सिर्फ एक चादर थी। वो भी जब मैं सज्दा करता तो सिकुड़ जाती (तो मेरा सतर खुल जाता)। कबीले की एक औरत ने यह मंजर देखकर कहा, तुम अपने कारी का पिछला हिस्सा हम से क्यों नहीं छिपाते। आखिरकार उन्होंने एक कपड़ा खदीर कर मेरा कुर्ता बनाया और मैं जितना उस कुर्ते से खुश हुआ, उतना किसी चीज से कभी खुश नहीं हुआ।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि नाबालिग बच्चा फराईज और नवाफिल में इमामत का फरीजा अदा कर सकता है। जबकि कुछ लोगों ने बिला वजह इस मुकिफ से इख्तेलाफ किया है।

 (फतहुलबारी 7/618)

बाब 30: गजवा हुनैन का बयान और

٣٠ - باب: قول الله: ﴿وَيَوْمَ حُنَيْنٍ﴾

إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾

फरमाने इलाही : खासकर हुनैन के दिन मदद की कि जब तुम अपनी ज्यादा तादाद पर इतरा रहे थे।''

١٦٦٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى أَنَّهُ كَانَ بِيَدِهِ ضَرْبَةٌ، قَالَ: ضُرِبْتُهَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ [رواه البخاري: ٤٣١٤]

1666: अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है कि उनके हाथ पर तलवार के जख्म का निशान था। उन्होंने फरमाया कि हुनैन के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ यह तलवार का जख्म मुझे लगा था।

फायदे: बुखारी में है कि रावी हदीस इस्माईल बिन अबी खालिद ने इब्ने अबी औफा रजि. की कलाई पर एक जख्म का निशान देखा तो उसकी वजह पूछी, उन्होंनें बताया कि मैं गजवा हुनैन और दूसरी जंगों (मसलन हुदैबिया और खन्दक) में शरीक रहा हूँ। (फतहुलबारी 7/623)

٣١ - باب: غَزْوَةُ أَوْطَاسٍ

बाब 31 : गजवा ओतास का बयान।

١٦٦٧ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا فَرَغَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ حُنَيْنٍ بَعَثَ أَبَا عَامِرٍ عَلَى جَيْشٍ إِلَى أَوْطَاسٍ، فَانْتَهَى إِلَيْهِمْ فَلَقِيَ دُرَيْدَ ابْنَ الصِّمَّةِ، فَقُتِلَ دُرَيْدٌ وَهَزَمَ ٱللهُ أَصْحَابَهُ، قَالَ أَبُو مُوسَى: وَبَعَثَنِي مَعَ أَبِي عَامِرٍ، فَرُمِيَ أَبُو عَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ، رَمَاهُ جُشَمِيٌّ بِسَهْمٍ فَأَثْبَتَهُ فِي رُكْبَتِهِ، فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ: يَا عَمِّ مَنْ رَمَاكَ؟ فَأَشَارَ إِلَى أَبِي مُوسَى فَقَالَ: ذَاكَ قَاتِلِي الَّذِي رَمَانِي، فَقَصَدْتُ لَهُ فَلَحِقْتُهُ، فَلَمَّا رَآنِي وَلَّى، فَاتَّبَعْتُهُ وَجَعَلْتُ أَقُولُ لَهُ: أَلَا

1667: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गजवा हुनैन से फारिग हुए तो आमिर रजि. को सिपहे सालार बनाकर एक लश्कर के साथ औतास की तरफ रवाना किया। जो वहां पहुंचकर दुरैद बिन सिम्मा से मुकाबला किया। दुरैद जंग में मारा गया और अल्लाह तआला ने उसके साथियों को शिकस्त से दोचार किया। अबू मूसा रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे भी अबू आमिर रजि. के

تَسْتَحِي، أَلَا تَثْبُتُ، فَكَفَّ، فَاخْتَلَفْنَا ضَرْبَتَيْنِ بِالسَّيْفِ فَقَتَلْتُهُ، ثُمَّ قُلْتُ لِأَبِي عَامِرٍ: قَتَلَ اللهُ صَاحِبَكَ، قَالَ: فَانْزِعْ هٰذَا السَّهْمَ، فَنَزَعْتُهُ فَنَزَا مِنْهُ المَاءُ، قَالَ يَا ابْنَ أَخِي: أَقْرِئِ النَّبِيَّ ﷺ السَّلَامَ، وَقُلْ لَهُ: اسْتَغْفِرْ لِي. وَاسْتَخْلَفَنِي أَبُو عَامِرٍ عَلَى النَّاسِ، فَمَكَثَ يَسِيرًا ثُمَّ مَاتَ، فَرَجَعْتُ فَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فِي بَيْتِهِ عَلَى سَرِيرٍ مُرْمَلٍ وَعَلَيْهِ فِرَاشٌ، قَدْ أَثَّرَ رِمَالُ السَّرِيرِ بِظَهْرِهِ وَجَنْبَيْهِ، فَأَخْبَرْتُهُ بِخَبَرِنَا وَخَبَرِ أَبِي عَامِرٍ، وَقَالَ: قُلْ لَهُ اسْتَغْفِرْ لِي، فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ فَقَال: (اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ). وَرَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: (اللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ القِيَامَةِ فَوْقَ كَثِيرٍ مِنْ خَلْقِكَ مِنَ النَّاسِ). فَقُلْتُ: وَلِي فَاسْتَغْفِرْ، فَقَالَ: (اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ذَنْبَهُ، وَأَدْخِلْهُ يَوْمَ القِيَامَةِ مُدْخَلًا كَرِيمًا). [رواه البخاري: ٤٣٢٣]

साथ भेजा था और अबू आमिर रजि. के घुटने में एक जोशमी आदमी का तीर लगा जो कि वहां पैवस्त होकर रह गया। मैं उनके पास गया और पूछा, चचा जान! तुझे किसने तीर मारा है? उन्होंने कबीला बनू जुश्म के एक आदमी की तरफ इशारा करते हुए बतलाया कि फलां आदमी मेरा कातिल है। जिसने मुझे तीर मारा है। मैं दौड़कर उसके पास जा पहुंचा। मगर जब उसने मुझे देखा तो भाग निकला। मैं उसके पीछे हो लिया और कहने लगा, तुझे शर्म नहीं आती, तू ठहरता क्यों नहीं? आखिर वो रूक गया। फिर मेरे और उसके बीच तलवार के दो वार हुए। आखिरकार मैंने उसे मार डाला। फिर वापिस आकर मैंने अबू आमिर रजि. से कहा, अल्लाह ने तुम्हारे कातिल को हलाक कर दिया है। उन्होंने कहा अब यह तीर तो निकालो। मैंने तीर निकाला तो जख्म से पानी बहने लगा। उन्होंने मुझे कहा, मेरे भतीजे! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में मेरी तरफ से सलाम कहना और आपसे कहना कि मेरे लिए बख्शीश की दुआ फरमाये। फिर अबू आमिर रजि. ने मुझे लोगों पर अपना नायब मुकर्रर किया और थोड़ी देर के बाद इन्तेकाल कर गये। फिर मैं वापस आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आपके घर

जाहिर हुआ। उस वक्त आप बान से बनी हुई चारपाई पर लेटे हुए थे। जिन पर बिस्तर (नहीं) था और चारपाई की बान के निशान आपके पहलू ओर पीठ पर पड़ गये थे। मैंने आपसे तमाम हालात बयान किये और अबू आमिर रजि. की शहादत का वाक्या भी अर्ज किया। और उनकी दुआये मगफिरत की दरख्वास्त भी पहुंचाई। तो आपने पानी मांगा, वजू करके हाथ उठाये और दुआ फरमाई, ऐ अल्लाह! उबैद यानी अबू आमिर रजि. को बख्श दे। मैं आपकी बगलों की सफेदी देख रहा था। फिर फरमाया, ऐ अल्लाह! इसे कयामत के दिन इन्सानों में से ज्यादातर बरतरी अता फरमा। फिर मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे लिए भी दुआये मगफिरत फरमाये। आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह बिन कैस रजि. के गुनाह बख्श दे और कयामत के दिन उन्हें इज्जत का मकाम अता फरमा।

फायदे: गजवा हुनैन के बाद कबीला हवाजिन के शिकस्त खुर्दा लोग भाग कर कुछ तो वादी औतास की तरफ चले गये और कुछ लोगों ने तायफ का रूख कर लिया। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अबू आमिर अशअरी को अमीर बनाकर वादी औतास की तरफ रवाना किया। (फतहुलबारी 7/638)

बाब 32: गजवा तायफ का बयान जो शव्वाल आठ हिजरी में हुआ।

٣٢ - باب: غَزْوَةُ الطَّائِفِ في شوَّال سنَةَ ثمَانٍ

1668: उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे यहाँ तशरीफ लाये। उस वक्त मेरे पास एक मुखन्नस (हिंजड़ा) बैठा हुआ था और अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया से कह रहा था, ऐ

١٦٦٨ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ وَعِنْدِي مُخَنَّثٌ، فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ لِعَبْدِ ٱللهِ بْنِ أُمَيَّةَ: يَا عَبْدَ ٱللهِ، أَرَأَيْتَ إِنْ فَتَحَ ٱللهُ عَلَيْكُمُ الطَّائِفَ غَدًا، فَعَلَيْكَ بِٱبْنَةِ غَيْلاَنَ، فَإِنَّهَا تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ. وَقَالَ النَّبِيُّ

ﷺ: (لَا يَدْخُلَنَّ هٰؤُلَاءِ عَلَيْكُنَّ). [رواه البخاري: ٤٣٢٤]

अब्दुल्लाह! अगर कल अल्लाह तआला तायफ फतह कर दे तो तुम गैलान की लड़की को ले लेना, क्योंकि जब वो सामने से आती है तो उसके पेट पर चार शिकन पड़ते हैं और जब वो पीठ मोड़कर जाती है तो आठ बल दिखाई देते हैं। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आईन्दा यह मुखन्नस तुम्हारे पास हरगिज न आये।

फायदे: इस मुन्नखस का नाम हैत था, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा से निकाल दिया था। जब वो बूढ़ा हो गया तो हजरत उमर रजि. ने हर जुमे मदीना में आने की उसे इजाजत दे दी। (फतहुलबारी, 4/527)

١٦٦٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا حَاصَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ الطَّائِفَ، فَلَمْ يَنَلْ مِنْهُمْ شَيْئًا، قَالَ: (إِنَّا قَافِلُونَ إِنْ شَاءَ ٱللهُ). فَثَقُلَ عَلَيْهِمْ، وَقَالُوا: نَذْهَبُ وَلَا نَفْتَحُهُ وَقَالَ مَرَّةً: (نَقْفُلُ). فَقَالَ: (اغْدُوا عَلَى الْقِتَالِ). فَغَدَوْا فَأَصَابَهُمْ جِرَاحٌ، فَقَالَ: (إِنَّا قَافِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ ٱللهُ). فَأَعْجَبَهُمْ، فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ. [رواه البخاري: ٤٣٢٥]

1669: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तायफ का घेराव किया तो दुश्मन से कुछ न पा सके। आखिर आपने फरमाया, हम इन्शा अल्लाह कल यहां से लौट जायेंगे। यह बात मुसलमानों पर गिरां गुजरी और कहने लगे हम फतह के बगैर क्यों वापिस जाये। आपने फरमाया, अच्छा सुबह जंग करो। चूनांचे उन्होंने जंग की और जख्मी हो गये। फिर आपने फरमाया कल इन्शा अल्लाह हम वापिस चलेंगे। यह सुनकर लोग बहुत खुश हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हंसी आ गई।

फायदे: काफिर किलाबन्द थे। वो अन्दर से मुसलमानों पर तीर चलाते और लोहे के गर्म टुकड़े फैंकते थे। ऐसे हालात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने हजरत नोफल बिन मुआविया रजि. से मशवरा किया तो उन्होंने कहा, यह लोग लोमड़ी की तरह अपने बिल में घुस गये है। अगर यहाँ ठहरेंगे तो उन पर काबू पाना नामुमकिन है। छोड़ने की सूरत में वो आपका नुकसान नहीं कर सकेंगे। (फतहुलबारी 7/641)

١٦٧٠ : عَنْ سَعْدٍ وَأَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَا: سَمِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنِ ٱدَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ، وَهُوَ يَعْلَمُ، فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ) [رواه البخاري: ٤٣٢٦]

1670: साद और अबू बकरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमाते थे जो अपने बाप के अलावा दानिश्ता खुद को किसी और से मनसूब करे तो उस पर जन्नत हराम है।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में है कि जब जियाद ने खुद को हजरत अबू सुफियान की तरफ मनसूब किया तो अबू उसमान रजि. ने हजरत अबू बकरा रजि. से कहा कि आपने यह क्या किया है? हालांकि मैंने हजरत साद बिन अबी वकास रजि. से यह हदीस सुनी है। वाजेह रहे कि जियाद हजरत अबू बकरा रजि. का मादरी भाई था।

 (फतहुलबारी 12/55)

١٦٧١ : وفي رواية: أَمَّا أَحَدُهُمَا فَأَوَّلُ مَنْ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، وَأَمَّا الآخَرُ فَكَانَ تَسَوَّرَ حِصْنَ الطَّائِفِ فِي أُنَاسٍ فَجَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، وَفِي رِوَايَةٍ: فَنَزَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ثَالِثَ ثَلَاثَةٍ وَعِشْرِينَ مِنَ الطَّائِفِ. [رواه البخاري: ٤٣٢٧]

1671: एक और रिवायत में है कि उन दोनों (साद व अबु बकरा रजि.) रावियों में एक तो वो आदमी है, जिसने अल्लाह की राह में सबसे पहले तीर चलाया और दूसरा वो है जो किला तायफ की दीवार से चन्द आदमियों के साथ फलांग गया था। एक दूसरी रिवायत में है जो 23 वें आदमी थे, उन लोगों में जो तायफ के किले से उतर कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये थे।

फायदे: हजरत साद बिन अबी वकास रजि. वो आदमी थे जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह की राह में तीर चलाया और हजरत अबू बकरा रजि. वो आदमी जो तायफ के किले से उतर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए थे। (सही बुखारी 4326)

1672: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था, जबकि आप जेराना में ठहरे थे जो मक्का और मदीना के बीच एक मकाम है और आपके साथ बिलाल रजि. भी थे। उस वक्त एक अराबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा। आपने मुझ से वादा किया था, उसे पूरा करें। आपने फरमाया, तेरे लिए खुशखबरी है। वो बोला, यह क्या बात है? आप अकसर ही फरमाते रहते हैं "खुश हो जाओ" यह सुनकर मालूम हुआ जैसा कि आप गुस्से में हैं। बिलाल रजि. और अबू मूसा रजि. की तरफ मुतवज्जा होकर फरमाया, इस अराबी ने खुशखबरी कबूल नहीं की। लिहाजा तुम दोनों कबूल कर लो। उन दोनों ने कहा, हमें मन्जूर है। फिर आपने पानी का एक प्याला मंगवाया, दोनों हाथ और मुंह उसमें धोये और उसमें कुल्ली भी की। फिर फरमाया उसमें से तुम दोनों पीओ, कुछ अपने मुंह और सीने पर डालो और खुश हो जाओ। हम दोनों प्याले लेकर हुक्म की तामील करने लगे तो उम्मे सलमा रजि. ने पर्दे के पीछे से पुकारा कि

١٦٧٢ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ نَازِلٌ بِٱلْجِعْرَانَةِ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ، وَمَعَهُ بِلَالٌ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: أَلَا تُنْجِزُ لِي مَا وَعَدْتَنِي؟ فَقَالَ لَهُ: (أَبْشِرْ). فَقَالَ: قَدْ أَكْثَرْتَ عَلَيَّ مِنْ أَبْشِرْ، فَأَقْبَلَ عَلَى أَبِي مُوسَى وَبِلَالٍ كَهَيْئَةِ الْغَضْبَانِ، فَقَالَ: (رَدَّ الْبُشْرَى، فَاقْبَلَا أَنْتُمَا). قَالَا: قَبِلْنَا، ثُمَّ دَعَا بِقَدَحٍ فِيهِ مَاءٌ، فَغَسَلَ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ فِيهِ وَمَجَّ فِيهِ، ثُمَّ قَالَ: (اشْرَبَا مِنْهُ، وَأَفْرِغَا عَلَى وُجُوهِكُمَا وَنُحُورِكُمَا وَأَبْشِرَا). فَأَخَذَا الْقَدَحَ فَفَعَلَا، فَنَادَتْ أُمُّ سَلَمَةَ مِنْ وَرَاءِ السِّتْرِ: أَنْ أَفْضِلَا لِأُمِّكُمَا، فَأَفْضَلَا لَهَا مِنْهُ طَائِفَةً. [رواه البخاري: ٤٣٢٨]

अपनी मां यानी मेरे लिए भी छोड़ देना तो उन्होंने कुछ पानी बचाकर उम्मे सलमा रजि. को दे दिया।

फायदे: मकामे जेराना मक्का और मदीना के बीच नहीं, बल्कि मक्का और तायफ के बीच है। शायद किसी रावी से गलती से ऐसा हुआ है।

 (फतहुलबारी 8/46)

١٦٧٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ [رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ]، فَقَالَ: (إِنَّ قُرَيْشًا حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ وَمُصِيبَةٍ، وَإِنِّي أَرَدْتُ أَنْ أَجْبُرَهُمْ وَأَتَأَلَّفَهُمْ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟) قَالُوا: بَلَى، قَالَ: (لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا، وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ شِعْبًا، لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ، أَوْ شِعْبَ الأَنْصَارِ). [رواه البخاري: ٤٣٣٤]

1673: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनसार के कुछ लोगों को इकट्ठा किया और फरमाया कुरैश अभी नये मुस्लिम और ताजा मुसीबत उठाये हुए हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि माले गनीमत से उनकी दिल जोई करूं। क्या तुम उस पर खुश नहीं हो कि दूसरे लोग तो दुनिया ले जायें और तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने साथ लेकर घरों की तरफ लौटो। उन्होंने कहा, हम तो इस पर राजी हैं। फिर आपने फरमाया, अगर और लोग वादी के अन्दर चलें और अनसार पहाड़ी रास्ते पर चलें तो मैं भी अनसार की वादी या घाटी को ही इख्तियार करूंगा।

फायदे: एक रिवायत में है कि अनसार मेरे लिए उस्तर (वो कपड़ा जो जिस्म से लगा हुआ हो) हैं और दूसरे लोग अबरा (वो कपड़ा जो जिस्म से लगे हुए कपड़े के ऊपर हो) की हैसियत रखते हैं। फिर आपने अनसार के लिए दुआ फरमाई कि ऐ अल्लाह! अनसार, उनके बेटों और पोतों पर रहम नाजिल फरमा, इस पर अनसार बहुत खुश हुए।

(फतहुलबारी 8/52)

बाब 33: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हजरत खालिद बिन वलीद को बनी जजिमा की तरफ भेजने का बयान।

٣٣ - باب: بَعْثُ النَّبِيِّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ

1674. अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खालिद बिन वलीद रजि. को बनी जजिमा की तरफ भेजा तो खालिद रजि. ने उन्हें इस्लाम की दावत दी। वो अच्छी तरह यों न कह सके कि हम इस्लाम लाये, बल्कि यूं कहने लगे कि हमने अपना दीन बदल डाला। जिस पर खालिद रजि. ने उन्हें कत्ल करना शुरू कर दिया और कुछ को कैद कर के हम में से हर एक को एक एक कैदी दे दिया। फिर एक रोज खालिद रजि. ने हुक्म दिया कि हर आदमी अपने कैदी को मार डाले। मैंने कहा, अल्लाह की कसम! मैं अपने कैदी को हरगिज कत्ल नहीं करूंगा और न ही मेरा कोई साथी अपने कैदी को मारेगा। फिर हम जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे यह किस्सा बयान किया तो आपने अपने हाथ उठाये और दुआ फरमाई, ऐ अल्लाह! मैं खालिद रजि. के काम से बरी हूँ। दोबारा यही फरमाया।

١٦٧٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ، فَدَعَاهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ، فَلَمْ يُحْسِنُوا أَنْ يَقُولُوا: أَسْلَمْنَا، فَجَعَلُوا يَقُولُونَ: صَبَأْنَا صَبَأْنَا، فَجَعَلَ خَالِدٌ يَقْتُلُ مِنْهُمْ وَيَأْسِرُ، وَدَفَعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمٌ أَمَرَ خَالِدٌ أَنْ يَقْتُلَ كُلُّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ، فَقُلْتُ: وَٱللهِ لاَ أَقْتُلُ أَسِيرِي، وَلاَ يَقْتُلُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِي أَسِيرَهُ، حَتَّى قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَرْنَاهُ، فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَهُ فَقَالَ: (اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدٌ). مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ٤٣٣٩]

फायदे: हजरत खालिद बिन वलीद रजि. से चूंकि कोशिशी गलती हुई थी, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद को जिम्मे से बरी करार दिया। लेकिन हजरत खालिद रजि. को कुछ नहीं कहा। अलबत्ता कौम के अफराद बेगुनाह मारे गये थे, इसलिए आपने हजरत अली रजि. के जरीये उनका खून बहा देकर उसकी माफी फरमाई। (फतहुलबारी 8/58)

٣٤ - باب: سَرِيَّةُ عَبْدِالله بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ. وَعَلْقَمَةَ بْنِ مُجَزِّزٍ المُدْلِجِيِّ وَيُقَالُ إِنَّهَا سَرِيَّةُ الأَنْصَارِيِّ

बाब 34: अब्दुल्लाह बिन हुजाफा सहमी और अलकमा बिन मुज्जजिद मुदलिजी रजि. के सरिया (वो लड़ाई जिसमें नबी सल्ल. शामिल न रहे हों) का बयान और इसी को "सरिया अनसार" कहा जाता है।

١٦٧٥ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً وَٱسْتَعْمَلَ عَلَيْهَا رَجُلًا مِنَ الأَنْصَارِ، وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ، فَغَضِبَ، فَقَالَ: أَلَيْسَ أَمَرَكُمُ النَّبِيُّ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى، قَالَ: فَٱجْمَعُوا لِي حَطَبًا، فَجَمَعُوا، فَقَالَ: أَوْقِدُوا نَارًا، فَأَوْقَدُوهَا، فَقَالَ: ٱدْخُلُوهَا، فَهَمُّوا وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يُمْسِكُ بَعْضًا، وَيَقُولُونَ: فَرَرْنَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مِنَ النَّارِ، فَمَا زَالُوا حَتَّى خَمَدَتِ النَّارُ، فَسَكَنَ غَضَبُهُ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ: (لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ، الطَّاعَةُ فِي المَعْرُوفِ). [رواه البخاري: ٤٣٤٠]

1675: अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर रवाना किया। उसका सालार एक अनसारी आदमी को मुकर्रर फरमाया और लोगों को हुक्म दिया कि उसकी इताअत करें। इत्तेफाकन उसको गुस्सा आया तो कहने लगा, क्या तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी इताअत का हुक्म नहीं दिया था। लोगों ने कहा, क्यों नहीं! तब उसने कहा, तुम मेरे लिए लकड़ियां जमा करो। उन्होंने जमा कर दी। उसने कहा, अब आग सुलगावो। उन्होंने आग भी सुलगाई।

फिर उसने कहा कि उसमें कूद पड़ो। उन्होंने कूदने का इरादा किया मगर कुछ एक दूसरे को रोकने लगे और उन्होंने कहा, हम आग से राहे फरार करके तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये हैं। वो यही कहते रहे, यहां तक कि आग बुझ गई। और उसका गुस्सा भी जाता रहा। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस वाक्ये की खबर पहुंची तो आपने फरमाया अगर वो उस आग में घुस जाते तो कयामत तक उससे न निकल सकते, क्योंकि इताअत उसी काम में जरूरी है जो शरीअत के खिलाफ न हो।

फायदे: मुसनद इमाम अहमद में है कि उस लश्कर का सालार हजरत अब्दुल्लाह बिन हुजाफा रजि. को बनाया था, लेकिन वो अनसारी इस मायने में हैं कि उन्होंने दीने इस्लाम के मामलात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इमदाद फरमाई थी। असल में वो मुहाजिरीन से ताल्लुक रखते हैं, ऐन मुमकिन है कि रिवायत में अनसार का लफ्ज किसी रावी का वहम हो। (फतहुलबारी 8/59)

बाब 35: हजरत अबू मूसा अशअरी और मआज बिन जबल रजि. को हजतुल विदाअ से पहले यमन रवाना करने का बयान।

٣٥ - باب: بَعْثُ أَبِي مُوسَىٰ وَمُعَاذٍ إِلَى الْيَمَنِ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ

1676. अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको और मआज बिन जबल रजि. को यमन की तरफ भेजा ओर हर एक को यमन की एक सूबे पर हाकिम बना दिया और उस वक्त यमन दो सूबों पर शामिल था। फिर आपने फरमाया, देखो

١٦٧٦ : عَنْ أَبِي مُوسَىٰ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ وَمُعَاذَ ابْنَ جَبَلٍ إِلَى الْيَمَنِ، قَالَ: وَبَعَثَ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى مِخْلاَفٍ، قَالَ: وَالْيَمَنُ مِخْلاَفَانِ، ثُمَّ قَالَ: (يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا، وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا). فَانْطَلَقَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا إِلَى عَمَلِهِ، قَالَ: وَكَانَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا

إِذَا سَارَ فِي أَرْضِهِ وَكَانَ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَحْدَثَ بِهِ عَهْدًا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، فَسَارَ مُعَاذٌ فِي أَرْضِهِ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَبِي مُوسَى، فَجَاءَ يَسِيرُ عَلَى بَغْلَتِهِ حَتَّى ٱنْتَهَى إِلَيْهِ، وَإِذَا هُوَ جَالِسٌ، وَقَدِ ٱجْتَمَعَ إِلَيْهِ النَّاسُ وَإِذَا رَجُلٌ عِنْدَهُ قَدْ جُمِعَتْ يَدَاهُ إِلَى عُنُقِهِ، فَقَالَ لَهُ مُعَاذٌ: يَا عَبْدَ ٱللهِ بْنَ قَيْسٍ أَيَّمَ هٰذَا؟ قَالَ: هٰذَا رَجُلٌ كَفَرَ بَعْدَ إِسْلاَمِهِ، قَالَ: لاَ أَنْزِلُ حَتَّى يُقْتَلَ، قَالَ: إِنَّمَا جِيءَ بِهِ لِذٰلِكَ فَٱنْزِلْ، قَالَ: مَا أَنْزِلُ حَتَّى يُقْتَلَ، فَأَمَرَ بِهِ فَقُتِلَ، ثُمَّ نَزَلَ فَقَالَ: يَا عَبْدَ ٱللهِ، كَيْفَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟ قَالَ أَتَفَوَّقُهُ تَفَوُّقًا، قَالَ: فَكَيْفَ تَقْرَأُ أَنْتَ يَا مُعَاذُ؟ قَالَ: أَنَامُ أَوَّلَ اللَّيْلِ، فَأَقُومُ وَقَدْ قَضَيْتُ جُزْئِي مِنَ النَّوْمِ، فَأَقْرَأُ مَا كَتَبَ ٱللهُ لِي، فَأَحْتَسِبُ نَوْمَتِي كَمَا أَحْتَسِبُ قَوْمَتِي. [رواه البخاري: ٤٣٤١، ٤٣٤٢]

लोगों पर आसानी करना, सख्ती से काम न लेना, उन्हें खुश रखना, नफरत न दिलाना। खैर उनमें से हर एक अपने अपने काम पर रवाना हुआ। रावी बयान करता है कि उनमें से जो कोई अपने इलाके का दौरा करते करते अपने साथी के करीब आ जाता तो उससे जरूर मुलाकात करता। उसे सलाम करता, एक बार ऐसा हुआ कि मआज रजि. के करीब पहुंच गये तो वो अपने खच्चर पर सवार होकर अबू मूसा रजि. के पास आये तो वो बैठे हुए थे और उनके पास बहुत से लोग जमा थे। वहां उन्होंने एक आदमी को देखा जिसके दोनों हाथ गर्दन से बंधे हैं। मआज रजि. ने पूछा, अब्दुल्लाह बिन कैस रजि.! यह कौन है? अबू मूसा रजि. ने जवाब दिया कि यह आदमी मुसलमान होने के बाद काफिर हो गया था। मआज रजि. ने कहा, जब तक उसे कैफर किरदार तक नहीं पहुंचाया जाता, मैं खच्चर से नहीं उतरूंगा। अबू मूसा रजि. ने कहा, उतरो तो सही, उसे कत्ल करने के लिए यहाँ लाया गया है। उन्होंने कहा, मैं उसके मारे जाने से पहले हरगिज नहीं उतरूंगा। चूनांचे अबू मूसा रजि. के हुक्म से वो कत्ल कर दिया गया। तब मआज रजि. अपनी सवारी से उतरे और पूछा, ऐ अब्दुल्लाह! तुम कुरआन कैसे पढ़ते हो? उन्होंने कहा, मैं तो थोड़ा थोड़ा हर वक्त पढ़ता रहता हूँ। फिर अबू मूसा रजि. ने पूछा, ऐ मआज रजि. तुम किस तरह तिलावत करते हो।

उन्होंने कहा, मैं अव्वल शब में सो जाता हूँ। फिर उठ बैठता हूँ फिर जितना अल्लाह को मंजूर होता है, पढ़ लेता हूँ। सोता भी सवाब की नियत से हूँ, जैसे उठता भी सवाब की नियत से हूँ।

फायदे: इबादात में ताकत और हिम्मत हासिल करने के लिए जो कुछ भी किया जायेगा वो सवाब का सबब है। ऐसे हालात में सोने, खाने और आराम करने में भी सवाब की उम्मीद की जा सकती है।

 (फतहुलबारी 8/72)

١٦٧٧ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ، فَسَأَلَهُ عَنْ أَشْرِبَةٍ تُصْنَعُ بِهَا، فَقَالَ: (وَمَا هِيَ؟) قَالَ: الْبِتْعُ وَالْمِزْرُ، فَقَالَ: (كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ). [رواه البخاري: ٤٣٤٣]

1677: अबू मूसा अशअरी रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें यमन की तरफ भेजा तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उन शराबों का हुक्म दरयाफ्त किया जो यमन में तैयार होती हैं। आपने पूछा वो कौनसी शराबें हैं? उन्होंने कहा, बित यानी शहद से तैयार होने वाली शराब और मिजर यानी जौं से तैयार होने वाली शराब। आपने फरमाया, हर वो शराब जो नशे वाली हो, हराम है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. को यमन का हाकिम बनाकर भेजना, उनकी जहानत और अकलमन्दी की जबरदस्त दलील है। जबकि शिया और ख्वारिज वाक्या सिफ्फीन को बुनियाद बनाकर उन्हें गाफिल साबित करते हैं।

٣٦ - باب: بَعْثُ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ إِلَى الْيَمَنِ

बाब 36: हजरत अली और हजरत खालिद बिन वलीद रजि. को यमन की तरफ भेजने का बयान।

١٦٧٨ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

1678: बराअ रजि. से रिवायत है,

قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مَعَ خَالِدِ ابْنِ الْوَلِيدِ إِلَى الْيَمَنِ، قَالَ: ثُمَّ بَعَثَ عَلِيًّا بَعْدَ ذٰلِكَ مَكَانَهُ، فَقَالَ ﷺ: (مُرْ أَصْحَابَ خَالِدٍ، مَنْ شَاءَ مِنْهُمْ أَنْ يُعَقِّبَ مَعَكَ فَلْيُعَقِّبْ. وَمَنْ شَاءَ فَلْيُقْبِلْ). فَكُنْتُ فِيمَنْ عَقَّبَ مَعَهُ، قَالَ: فَغَنِمْتُ أَوَاقِيَّ ذَوَاتِ عَدَدٍ. [رواه البخاري: ٤٣٤٩]

उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खालिद बिन वलीद रजि. के साथ यमन की तरफ रवाना किया। फिर खालिद रजि. की जगह अली रजि. को तैनात फरमाया। निज इरशाद फरमाया कि खालिद रजि. के साथियों से कह देना, उनमें से जो तेरे साथ जाना चाहे, वो यमन चला जाये और जो चाहे मदीना वापिस आ जाये। रावी का बयान है कि मैं भी उन्हीं लोगों में था। जो अली रजि. के साथ यमन चले गये थे और मुझे कई ओकिया चांदी माले गनीमत से हासिल हुई थी।

फायदे: मुसनद इस्माईली में है कि जब हम लौटकर हजरत अली रजि. के साथ यमन गये तो कौमे हमदान से हमारे मुकाबला हुआ। हजरत अली रजि. ने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खत पढ़कर सुनाया तो वो मुसलमान हो गये। हजरत अली रजि. ने उस वाक्ये की इत्तलाअ जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी तो आपने सज्दा शुक्र अदा किया और फरमाया कि हमदान सलामत रहे। (फतहुलबारी 8/66)

١٦٧٩ : عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ عَلِيًّا إِلَى خَالِدٍ لِيَقْبِضَ الْخُمُسَ، وَكُنْتُ أُبْغِضُ عَلِيًّا، وَقَدِ ٱغْتَسَلَ، فَقُلْتُ لِخَالِدٍ: أَلَا تَرَى إِلَى هٰذَا، فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ ذَكَرْتُ ذٰلِكَ لَهُ، فَقَالَ: (يَا بُرَيْدَةُ أَتُبْغِضُ عَلِيًّا؟) فَقُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (لَا تُبْغِضْهُ، فَإِنَّ لَهُ فِي

1679: बुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली रजि. को खालिद बिन वलीद रजि. के पास खुमुस लेने से भेजा और मैं अली रजि. से दुश्मनी रखता था। अली रजि. ने वहां गुस्ल किया। मैंने खालिद बिन वलीद रजि. से कहा

الْخُمُسِ أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ). [رواه البخاري: ٤٣٥٠]

कि आप देखते हैं। अली रजि. ने कहा क्या? फिर जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो मैंने आपसे उसका जिक्र किया, तब आपने फरमाया, ऐ बुरैरा रजि.! क्या तू अली रजि. से दुश्मनी रखता है? मैंने कहा, हां! आपने फरमाया कि तू अली रजि. से दुश्मनी न रख, क्योंकि उसका खुसुम में इससे ज्यादा हक है।

फायदे: हजरत अली रजि. को बुरा समझने की वजह यह भी थी कि उन्होंने माले गनीमत से अपने लिए एक लौण्डी का इन्तेखाब किया। फिर उससे हम बिस्तर हुए। हजरत बुरैरा रजि. को यह गुमान हो गया कि माले गनीमत में से ऐसा करना ख्यानत है। (फतहुलबारी 8/67)

١٦٨٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: بَعَثَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ مِنَ الْيَمَنِ بِذُهَيْبَةٍ فِي أَدِيمٍ مَقْرُوظٍ، لَمْ تُحَصَّلْ مِنْ تُرَابِهَا، قَالَ: فَقَسَمَهَا بَيْنَ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ: بَيْنَ عُيَيْنَةَ بْنِ بَدْرٍ، وَأَقْرَعَ بْنِ حَابِسٍ، وَزَيْدِ الْخَيْلِ، وَالرَّابِعُ: إِمَّا عَلْقَمَةُ، وَإِمَّا عَامِرُ بْنُ الطُّفَيْلِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: كُنَّا نَحْنُ أَحَقَّ بِهٰذَا مِنْ هٰؤُلَاءِ، قَالَ: فَبَلَغَ ذٰلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (أَلَا تَأْمَنُونِي وَأَنَا أَمِينُ مَنْ فِي السَّمَاءِ، يَأْتِينِي خَبَرُ السَّمَاءِ صَبَاحًا وَمَسَاءً). قَالَ: فَقَامَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ، مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ، نَاشِزُ الْجَبْهَةِ، كَثُّ اللِّحْيَةِ، مَحْلُوقُ الرَّأْسِ، مُشَمَّرُ الإِزَارِ، فَقَالَ: يَا

1680: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अली बिन अबी तालिब रजि. ने यमन से सोने का एक टुकड़ा साफ किये हुए चमड़े में लिपटा हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में रवाना फरमाया। वो अभी मिट्टी से अलग नहीं किया गया था। रावी का बयान है कि उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार आदमियों में तकसीम फरमा दिया। उऐना बिन बदर, अकरा बिन हाबिस, जैदिल खैल और चौथा अलकमा बिन अलासा या आमिर बिन तुफैल रजि. है। यह हाल रखकर आपके सहाबा में से किसी ने कहा, हम उन लोगों से

رَسُولَ ٱللهِ ٱتَّقِ ٱللهَ، قَالَ: (وَيْلَكَ، أَوَ لَسْتُ أَحَقَّ أَهْلِ الأَرْضِ أَنْ يَتَّقِيَ ٱللهَ). قَالَ: ثُمَّ وَلَّى الرَّجُلُ. قَالَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَلَا أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ: (لَا، لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ يُصَلِّي). فَقَالَ خَالِدٌ: وَكَمْ مِنْ مُصَلٍّ يَقُولُ بِلِسَانِهِ مَا لَيْسَ فِي قَلْبِهِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنِّي لَمْ أُومَرْ أَنْ أَنْقُبَ قُلُوبَ النَّاسِ وَلَا أَشُقَّ بُطُونَهُمْ). قَالَ: ثُمَّ نَظَرَ إِلَيْهِ وَهُوَ مُقَفٍّ، فَقَالَ: (إِنَّهُ يَخْرُجُ مِنْ ضِئْضِيءِ هٰذَا قَوْمٌ يَتْلُونَ كِتَابَ ٱللهِ رَطْبًا، لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ ٱلدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ - وَأَظُنُّهُ قَالَ - لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لَأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ ثَمُودَ). [رواه البخاري: ٤٣٥١]

इस सोने के ज्यादा हकदार थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह खबर पहुंची तो आपने फरमाया, तुम लोग मुझ पर यकीन नहीं करते हो। हालांकि उस परवरदिगार को मुझ पर यकीन है जो आसमान पर है और सुबह व शाम मेरे पास आसमानी खबर (वहय) आती रहती है। रावी का बयान है कि उस वक्त एक और आदमी खड़ा हुआ जिसकी आखें धंसी हुई, गाल फूले हुए, पेशानी उभरी हुई, घनी दाढ़ी, सर मुण्डा और ऊंची इजार बांधे हुए था। कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह से डरिये। आपने फरमाया, तेरी खराबी हो, क्या तमाम रूये जमीन के लोगों में अल्लाह से डरने का मैं ज्यादा हकदार नहीं हूँ? रावी कहता है फिर वो आदमी चला गया तो खालिद बिन वलीद रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं उसकी गर्दन न उठा दूं? आपने फरमाया, नहीं क्योंकि शायद वो नमाज पढ़ता हो। खालिद रजि. ने कहा, बहुत से नमाजी ऐसे हुए हैं कि मुंह से वो बातें कहते हैं जो उनके दिल में नहीं होतीं। आपने फरमाया कि मुझको किसी के दिल टटोलने या पेट चीरने का हुक्म नहीं दिया गया है। रावी का बयान है कि फिर आपने उसकी तरफ देखा, जबकि वो पीठ मोड़ कर जा रहा था और फरमाया, उस आदमी की नस्ल से ऐसी कौम निकलेगी कि किताबुल्लाह (कुरआन) की तिलावत से उनकी जबान तर होगी, हालांकि वो किताब उनके गले के नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से

इस तरह निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार के पार निकल जाता है। रावी कहता है कि मेरे ख्याल के मुताबिक आपने यह भी फरमाया, अगर वो कौम मुझे मिले तो मैं उन्हें कौमे समूद की तरह कत्ल कर दूं।

फायदे: एक रिवायत में है कि उस मरदूद की नस्ल से पैदा होने वाले मुसलमानों को कत्ल करेंगे और बुत परस्तों को छोड़ देंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पैश गोई ख्वारिज के हक में पूरी हुई जो हजरत अली रजि. की खिलाफत में जाहिर हुए। हजरत अली रजि. ने उन्हें कत्ल कर दिया। (फतहुलबारी 8/69)

٣٧ - باب: غَزْوَةِ ذِي الخلصة

١٦٨١ : تَقَدَّمَ حَدِيثُ جَرِيرٍ فِي ذَٰلِكَ، وَقَوْلُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ لَهُ: (أَلا تُرِيحُني مِنْ ذي الخَلَصَةِ؟) وَذَكَرَ فِي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ، قالَ جَرِيرٌ: وَكَانَ ذُو الخَلَصَةِ بَيْتًا بِالْيَمَنِ لِخَثْعَمَ وَبَجِيلَةَ، فِيهِ نُصُبٌ يُعْبَدُ.

قالَ: وَلَمَّا قَدِمَ جَرِيرٌ ٱلْيَمَنَ، كانَ بِهَا رَجُلٌ يَسْتَقْسِمُ بِالأَزْلَامِ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ هَا هُنَا، فَإِنْ قَدَرَ عَلَيْكَ ضَرَبَ عُنُقَكَ، قالَ: فَبَيْنَما هُوَ يَضْرِبُ بِهَا إِذْ وَقَفَ عَلَيْهِ جَرِيرٌ، فَقَالَ: لَتَكْسِرَنَّهَا وَلَتَشْهَدَنَّ: أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، أَوْ لَأَضْرِبَنَّ عُنُقَكَ؟ قالَ: فَكَسَرَهَا وَشَهِدَ. (راجع: ١٢٩٦) [رواه البخاري: ٤٣٥٧]

बाब 37: गजवा जिलखलसा का बयान।

1681: जरीर रजि. की वो हदीस (1292) पहले गुजर चुकी है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस फरमान का जिक्र है कि क्या तुम मुझे जिलखलसा को उजार कर बेफिक्र नहीं करोगे? मगर इस रिवायत में इतना इजाफा है कि जरीर रजि. ने बयान किया कि जुलखलसा यमन में कबीला खशअम और बजिला का बुतखाना था। वहां कई बुत थे। जिनकी लोग इबादत करते थे। रावी कहता है कि जब जरीर रजि. यमन पहुंचे तो वहां एक आदमी तीरों के जरीये फाल निकाल रहा था। लोगों ने उससे कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कासिद यहाँ आ पहुंचा है। अगर तू उसके हत्थे चढ़ गया तो तेरी गर्दन उड़ा देगा। रावी का बयान है कि

एक दिन ऐसा हुआ कि वो फाल खोल रहा था। इतने में जरीर रजि. वहां पहुंच गये। उन्होंने कहा कि फाल के उन तीरों को तोड़कर कलमा-ए- शहादत पढ़ ले, नहीं तो मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। चूनांचे उसने तीर तोड़कर कलमा शहादत पढ़ लिया।

फायदे: इस रिवायत के आखिर में है कि उसके बाद हजरत जरीर रजि. ने कबीला अहमस के एक अबू अरतात नामी आदमी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में रवाना किया। उसने आपको खुश खबरी दी कि कबीला अहमस ने जुलखलसा को जलाकर खुजली वाले ऊंट की तरह कर दिया। फिर आपने कबीला अहमस के घोड़ो और उनके शहसवारियों के लिए खैरो बरकत की पांच बार दुआ फरमाई। (सही बुखारी 435)

बाब 38: हजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली रजि. की यमन रवानगी।

٣٨ - باب: ذَهَابُ جَرِيرٍ إِلَى الْيَمَنِ

1682: जरीर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं यमन था कि वहां के दो आदमी जुकलाअ और जुअम्र से मिला। मैं उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हालात सुनाने लगा तो जुअम्र ने मुझ से कहा जो कुछ तूने अपने साहब के हालात मुझ से बयान किये हैं, अगर वो सही हैं तो उनको फौत हुए तीन दिन गुजर चुके हैं। फिर वो दोनों मेरे साथ आये। अभी थोड़ा सा सफर ही किया था कि हमें कुछ आदमी मदीना की तरफ से आते हुए दिखाई

١٦٨٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ بِالْيَمَنِ، فَلَقِيتُ رَجُلَيْنِ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ: ذَا كَلاَعٍ وَذَا عَمْرٍو، فَجَعَلْتُ أُحَدِّثُهُمْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ لِي ذُو عَمْرٍو: لَئِنْ كَانَ الَّذِي تَذْكُرُ مِنْ أَمْرِ صَاحِبِكَ، لَقَدْ مَرَّ عَلَى أَجَلِهِ مُنْذُ ثَلاَثٍ. وَأَقْبَلاَ مَعِي حَتَّى إِذَا كُنَّا فِي بَعْضِ الطَّرِيقِ، رُفِعَ لَنَا رَكْبٌ مِنْ قِبَلِ الْمَدِينَةِ فَسَأَلْنَاهُمْ، فَقَالُوا: قُبِضَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وَٱسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ، وَالنَّاسُ صَالِحُونَ. فَقَالاَ: أَخْبِرْ صَاحِبَكَ أَنَّا قَدْ جِئْنَا وَلَعَلَّنَا سَنَعُودُ إِنْ شَاءَ ٱللهُ، وَرَجَعَا إِلَى الْيَمَنِ. [رواه البخاري: ٤٣٥٩]

दिये। हमने उनसे हालात पूछे तो उन्होंने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हो गई है और आपके बाद हजरत अबू बकर रजि. को खलीफा मुकर्रर कर दिया गया है। बाकी सब खैरियत से है। यह सुनकर जुकलाअ और जू अम्र ने कहा, अपने साहब से कहना कि हम यहाँ तक आये थे और इन्शा अल्लाह फिर आयेंगे। इसके बाद वो दोनों यमन की तरफ वापस चले गये।

फायदेः इस रिवायत के आखिर में यह अलफाज है कि मैंने उन बातों की पहले खलीफा हजरत अबू बकर सिद्दिक रजि. को खबर दी तो आपने फरमाया कि तुम उन्हें अपने साथ क्यों नहीं लाये। उसके बाद एक बार जू अम्र ने मुझे कहा कि जरीर रजि.! तुम अरब वालों में उस वक्त तक खैरो बरकत रहेगी जब तक कि तुममें निजामे इमारत कायम रहेगा। लेकिन जब इमारत के लिए तलवार तक बात पहुंच जाये तो खैरो बरकत उठ जायेगी। (फतहुलबारी 4359)

बाब 39: गजवा सैफुल बहर का बयान।

1683: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साहिल समन्दर की तरफ एक लश्कर रवाना किया और अबू उबादा बिन जर्राह रजि. को उसका अमीर बनाया। उस लश्कर में तीन सौ आदमी थे। खैर हम मदीना से निकले। अभी रास्ते ही में थे कि सफर का खर्च खत्म हो गया। अबू उबादा रजि. ने हुक्म दिया कि सब लोग अपना अपना सफर का खर्च एक जगह

٣٩ - باب: غَزْوَةُ سِيفِ الْبَحْرِ

١٦٨٣ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَعْثًا قِبَلَ السَّاحِلِ، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الجَرَّاحِ، وَهُمْ ثَلاَثُمِائَةٍ، فَخَرَجْنَا وَكُنَّا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ فَنِيَ الزَّادُ، فَأَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِأَزْوَادِ الجَيْشِ فَجُمِعَ، فَكَانَ مِزْوَدَيْ تَمْرٍ، فَكَانَ يَقُوتُنَا كُلَّ يَوْمٍ قَلِيلًا قَلِيلًا حَتَّى فَنِيَ، فَلَمْ يَكُنْ يُصِيبُنَا إِلَّا تَمْرَةٌ تَمْرَةٌ، فَقُلْتُ: مَا تُغْنِي عَنْكُمْ تَمْرَةٌ؟ فَقَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا فَقْدَهَا حِينَ فَنِيَتْ، ثُمَّ انْتَهَيْنَا إِلَى الْبَحْرِ، فَإِذَا حُوتٌ مِثْلُ الظَّرِبِ، فَأَكَلَ مِنْهُ الْقَوْمُ ثَمَانَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، ثُمَّ

أَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِضِلَعَيْنِ مِنْ أَضْلاَعِهِ فَنُصِبَا، ثُمَّ أَمَرَ بِرَاحِلَةٍ فَرُحِلَتْ ثُمَّ مَرَّتْ تَحْتَهُمَا فَلَمْ تُصِبْهُمَا. [رواه البخاري: ٤٣٦٠]

जमा कर दे। उसके बावजूद सफर खर्च खजूर के दो थेलों के बराबर जमा हुआ। उसमें से वो हमें हर रोज थोड़ा थोड़ा देते रहे। यहाँ तक कि वो भी खत्म हो गया। फिर तो हमको हर रोज एक एक खजूर मिलती थी। उन से कहा गया, भला तुम्हारा एक खजूर से क्या काम चलता होगा। उन्होंने कहा, एक खजूर भी गनीमत थी, जब वो भी न रही तो हमको उसकी कद्र मालूम हुई। फिर समन्दर की तरफ गये तो क्या देखते हैं कि बड़े टीले की तरह एक मछली मौजूद है। हमारा तमाम लश्कर उसमें से अठारह दिन तक खाता रहा। फिर अबू उबादा रजि. ने हुक्म दिया कि उसकी दो पसलियां खड़ी की जाये। देखा तो वो इस कद्र ऊंची थी कि सवारी पर पालान रख कर उसे नीचे से गुजारा गया तो वो सवारी उनके नीचे से साफ निकल गई।

फायदेः इस रिवायत के आखिर में है कि उस वक्त लश्कर में एक फय्याज और दरियादिल कैस बिन उबादा रजि. नामी आदमी था जिसने ऐसे हालात में कई ऊंट जिब्ह करके अहले लश्कर को खिलाये। आखिरकार अमीर लश्कर ने उसे रोक दिया। (सही बुखारी 4361)

١٦٨٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في رواية، أَنَّهُ قَالَ: فَأَلْقَى لَنَا الْبَحْرُ دَابَّةً يُقَالُ لَهَا الْعَنْبَرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، وَٱدَّهَنَّا مِنْ وَدَكِهِ، حَتَّى ثَابَتْ إِلَيْنَا أَجْسَامُنَا. [رواه البخاري: ٤٣٦١]

وَعَنْهُ في رواية أخرى: قَالَ أَبُو عُبَيْدَةَ: كُلُوا، فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ ذَكَرْنَا ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (كُلُوا،

1684: जाबिर रजि. से ही एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया कि समन्दर ने हमारी तरफ एक मछली को फैंक दिया। जिसको अम्बर कहा जाता है। हम उसे पन्द्रह दिन तक खाते रहे और उसकी चर्बी से हमने मालिस की तो हमारे जिस्म असल हाल पर आ गये। एक दूसरी रिवायत में है कि अबू उबादा रजि. ने

رِزْقًا أَخْرَجَهُ ٱللهُ، أَطْعِمُونَا إِنْ كَانَ مَعَكُمْ). فَأَتَاهُ بَعْضُهُمْ بِعُضْوٍ فَأَكَلَهُ. [رواه البخاري: ٤٣٦٢]

कहा उसका गोश्त खाओ, जब हम मदीना लौट कर आये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका जिक्र किया। आपने फरमाया, अल्लाह का भेजा हुआ रिज्क था, उसे खाओ अगर तुम्हारे पास कुछ बचा हो तो हमें भी खिलाओ। यह सुनकर किसी ने आपको उसका एक टुकड़ा लाकर दिया तो आपने भी उसे खाया।

फायदे: इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि समन्दर की मरी हुई मछली खाना सही है। अगरचे कुछ औलमा ने इसे हराम कहा है, क्योंकि ऐसा परेशानी की हालत में किया गया है। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उसे खाया। हालांकि आप परेशान न थे।

 (फतहुलबारी 4/551)

٤٠ - باب: غزوة عيينة بن حصن

बाब 40: गजवा ओय्यना बिन हसन का बयान।

١٦٨٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ قَدِمَ رَكْبٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمِّرِ الْقَعْقَاعَ بْنَ مَعْبَدِ بْنِ زُرَارَةَ، فَقَالَ عُمَرُ: بَلْ أَمِّرِ الأَقْرَعَ ابْنَ حَابِسٍ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا أَرَدْتَ إِلاَّ خِلاَفِي، قَالَ عُمَرُ: مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ، فَتَمَارَيَا حَتَّى ٱرْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا، فَنَزَلَ فِي ذٰلِكَ: ﴿يَٰأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تُقَدِّمُوا﴾. حَتَّى ٱنْقَضَتْ. [رواه البخاري: ٤٣٦٧]

1685: अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब बनू तमीम के कुछ सवार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए तो अबू बकर रजि. ने कहा कि उनका अमीर कअका बिन माबद बिन जुरारा को बना दें। उमर रजि. ने कहा कि अंकरा बिन हाबिस को अमीर बनायें। अबू बकर रजि. तुम महज मेरी मुखालफत करना चाहते हो। उमर रजि. ने कहा, नहीं, मेरी गर्ज मुखालफत नहीं है, दोनों इतना झगड़े कि आवाजें बुलन्द हो गई। तब यह आयत उतरी: "ऐ ईमान वालों! और उसके रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे बढ़ बढ़ कर बातें न बनाओ। आखिर तक।

फायदे: बनू तमीम के लश्कर के आने की यह वजह थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ ओय्यना बिन हसन को कुछ सवारों के साथ रवाना किया। जिनमें कोई मुहाजिर या अनसारी न था। उसने कुछ आदमियों को कत्ल करके उनकी औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया। इस बिना पर यह जमात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई। (फतहुलबारी 8/84)

बाब 41: बनी हनीफा की जमात और शुमामा बिन उसाल रजि. का बयान।

٤١ - باب: وَفْدُ بَنِي حَنِيفَةَ وَحَدِيثُ ثُمَامَةَ بْنِ أُثَالٍ

1686: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज्द की तरफ कुछ सवार रवाना किये तो बनू हनीफा के एक आदमी को पकड़ लाये। जिसको शुमामा बिन उसाल रजि. कहा जाता था। उसको मस्जिद के एक खम्बे से बांध दिया गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास तशरीफ लाये। पूछा, ऐ शुमामा तेरा क्या हाल है? उसने कहा, मेरा अच्छा ख्याल है। अगर आप मुझे मार देंगे तो ऐसे आदमी को मारेंगे जो खूनी है और अगर आप अहसान रखकर मुझे छोड़ देंगे तो आपका शुक्रगुजार होऊंगा। अगर आप माल चाहते

١٦٨٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْلًا قِبَلَ نَجْدٍ، فَجَاءَتْ بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي حَنِيفَةَ يُقَالُ لَهُ ثُمَامَةُ بْنُ أُثَالٍ، فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟) فَقَالَ: عِنْدِي خَيْرٌ يَا مُحَمَّدُ، إِنْ تَقْتُلْنِي تَقْتُلْ ذَا دَمٍ، وَإِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ، وَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْمَالَ، فَسَلْ مِنْهُ مَا شِئْتَ، فَتُرِكَ حَتَّى كَانَ الْغَدُ، ثُمَّ قَالَ لَهُ: (مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟) قَالَ: مَا قُلْتُ لَكَ: إِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ، فَتَرَكَهُ حَتَّى كَانَ بَعْدَ الْغَدِ، فَقَالَ: (مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟) فَقَالَ: عِنْدِي مَا قُلْتُ لَكَ، فَقَالَ: (أَطْلِقُوا

ثُمَامَةَ). فَانْطَلَقَ إِلَى نَخْلٍ قَرِيبٍ مِنَ الْمَسْجِدِ، فَاغْتَسَلَ ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ، فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، يَا مُحَمَّدُ، وَاللهِ مَا كَانَ عَلَى الأَرْضِ وَجْهٌ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ وَجْهِكَ، فَقَدْ أَصْبَحَ وَجْهُكَ أَحَبَّ الْوُجُوهِ إِلَيَّ، وَاللهِ مَا كَانَ مِنْ دِينٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ دِينِكَ، فَأَصْبَحَ دِينُكَ أَحَبَّ الدِّينِ إِلَيَّ، وَاللهِ مَا كَانَ مِنْ بَلَدٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ بَلَدِكَ، فَأَصْبَحَ بَلَدُكَ أَحَبَّ الْبِلَادِ إِلَيَّ، وَإِنَّ خَيْلَكَ أَخَذَتْنِي، وَأَنَا أُرِيدُ الْعُمْرَةَ، فَمَاذَا تَرَى؟ فَبَشَّرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَمَرَهُ أَنْ يَعْتَمِرَ، فَلَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ قَالَ لَهُ قَائِلٌ: صَبَوْتَ، قَالَ: لَا وَاللهِ، وَلٰكِنْ أَسْلَمْتُ مَعَ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَا وَاللهِ، لَا يَأْتِيكُمْ مِنَ الْيَمَامَةِ حَبَّةُ حِنْطَةٍ حَتَّى يَأْذَنَ فِيهَا النَّبِيُّ ﷺ. [رواه البخاري: ٤٣٧٢]

हैं तो जितना चाहिए मांगे। यह सुनकर आपने उसे अपने हाल पर छोड़ दिया। दूसरे दिन पूछा, ऐ शुमामा क्या ख्याल है? उसने कहा, मेरा ख्याल वही है जो कल अर्ज कर चुका हूँ कि अगर आप अहसान करेंगे तो एक अहसानमन्द पर पर अहसान करेंगे। आपने फिर उसे रहने दिया और तीसरे दिन पूछा, ऐ शुमामा तेरा क्या हाल है? उसने कहा, वही जो मैं आपसे पहले बयान कर चुका हूँ। फिर आपने फरमाया, अच्छा शुमामा को छोड़ दो तो उसे छोड़ दिया गया। आखिर वो मस्जिद के करीब एक तालाब पर गया, वहां गुस्ल करके मस्जिद में आ गया और कहने लगा, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं है और बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल है। ऐ मुहम्मद! अल्लाह की कसम उठाकर कहता हूँ कि मुझे रूये जमीन पर आपसे ज्यादा किसी और से दुश्मनी न थी और अब मुझे आपका चेहरा सब चेहरों से ज्यादा प्यारा है। अल्लाह की कसम! मुझे आपके दीन से बढ़कर कोई दीन बुरा मालूम न होता था और अब आपका दीन मुझे सबसे अच्छा मालूम होता है। अल्लाह की कसम! मेरे नजदीक आपके शहर से ज्यादा कोई शहर बुरा न था, और अब आपका शहर मुझे सब शहरों से ज्यादा प्यारा है। आपके सवारों ने मुझे उस वक्त गिरफ्तार किया, जब मैं उमरह की नियत से जा रहा था। अब

आप क्या फरमाते हैं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे मुबारकबाद दी। निज उसे उमरह करने का हुक्म दिया। चूनांचे जब वो उमराह करने के लिए मक्का आया तो किसी ने उससे कहा, तू बेदीन हो गया है। उसने कहा, नहीं बल्कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर मुसलमान हो गया हूँ। अल्लाह की कसम! तुम्हारे पास अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाजत के बगैर यमामा से गन्दुम का एक दाना भी नहीं आयेगा।

फायदे: हजरत शुमामा रजि. ने वापिस यमामा जाकर यह हुक्म नामा जारी कर दिया कि मक्का वालों को गल्ला न भेजा जाये। आखिर मक्का वालों ने तंग आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खत लिखा कि आप तो रिश्तेदारी का हुक्म देते हैं। हमारे साथ यह सलूक क्यों जाईज रखा जा रहा है? चूनांचे आपने फिर उस पाबन्दी को खत्म कर दिया। (फतहुलबारी 8/88)

1687: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुसैलमा कज्जाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में आया और कहने लगा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे अपना खलीफा बनायें तो मैं उनका फरमा 'बरदार हो जाऊंगा। और वो अपनी कौम के ज्यादातर लोगों को भी साथ लाया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास तशरीफ ले गये और आपके साथ साबित बिन कैस बिन शम्मास रजि. भी थे।

١٦٨٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَجَعَلَ يَقُولُ: إِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ الأَمْرَ مِنْ بَعْدِهِ تَبِعْتُهُ، وَقَدِمَهَا فِي بَشَرٍ كَثِيرٍ مِنْ قَوْمِهِ، فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ ابْنِ شَمَّاسٍ، وَفِي يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِطْعَةُ جَرِيدٍ، حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ، فَقَالَ: (لَوْ سَأَلْتَنِي هٰذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا، وَلَنْ تَعْدُوَ أَمْرَ اللهِ فِيكَ، وَلَئِنْ أَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللهُ، وَإِنِّي لأَرَاكَ الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ، وَهٰذَا

ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ يُجِيبُكَ عَنِّي). ثُمَّ انْصَرَفَ عَنْهُ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَسَأَلْتُ عَنْ قَوْلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: (إِنَّكَ أَرَى الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ). فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ، رَأَيْتُ فِي يَدَيَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ، فَأَهَمَّنِي شَأْنُهُمَا، فَأُوحِيَ إِلَيَّ فِي الْمَنَامِ: أَنِ انْفُخْهُمَا، فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا، فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ بَعْدِي). أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيُّ، وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةُ. [رواه البخاري: ٤٣٧٣، ٤٣٧٤]

और आपके हाथ में खजूर की एक छड़ी थी। आप मुसैलमा और उसके साथियों के सामने खड़े हुए और फरमाया अगर तू मुझ से यह छड़ी मांगेगा तो मैं तूझे न दूंगा और अल्लाह ने जो तेरी तकदीर में लिख दिया है, उससे नहीं बच सकता और अगर तू खिलाफवर्जी करेगा तो अल्लाह तुझे तबाह कर देगा। बल्कि मैं तो समझता हूँ कि तू वही है जिसका हाल अल्लाह मुझे (ख्वाब में) दिखला चुका है। और अब मेरी तरफ से यह साबित बिन केस रजि. तुझ से गुफ्तगू करेगा। फिर आप वापिस तशरीफ ले गये। इब्ने अब्बास रजि. का बयान है कि इसके बाद मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस फरमान का मतलब पूछा कि यह तो वही आदमी है, जिसका हाल मुझे ख्वाब में बताया गया है। तो अबू हुरैरा रजि. ने मुझे बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे। एक बार मैं सो रहा था कि मैंने ख्वाब की हालत में अपने हाथों में सोने के दो कंगन देखे। मैं उससे फिक्रमन्द हुआ। फिर ख्वाब ही में मुझे वह्य के जरीये इरशाद हुआ कि उन दोनों पर फूंक मारो। मैंने फूंक मारी वो दोनों उड़ गये। मैंने उसकी यह ताबीर समझी कि मेरे बाद दो झूटे आदमी नबूवत का दावा करेंगे। एक असवद अनसी और दूसरा मुसैलमा कज्जाब।

फायदे: असवद अनसी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में जहन्नम में गया। अलबत्ता मुसैलमा कज्जाब हजरत अबू सिद्दीक रजि. के दौरे खिलाफत में हलाक हो गया। उसे हजरत वहशी रजि. ने कत्ल किया। (फतहुलबारी 8/90)

١٦٨٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِخَزَائِنِ الأَرْضِ، فَوُضِعَ فِي كَفِّيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَكَبُرَا عَلَيَّ، فَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنِ ٱنْفُخْهُمَا، فَنَفَخْتُهُمَا فَذَهَبَا، فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا: صَاحِبَ صَنْعَاءَ، وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ). [رواه البخاري: ٤٣٧٥]

1688: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे ख्वाब की हालत में तमाम जमीन के तमाम खजाने दिये गये और सोने के दो कंगन मेरे हाथों में पहनाये गये जो मुझे बुरे मालूम हुए। फिर मुझे वह्य के जरीये हुक्म हुआ कि मैं उन पर फूंक मारूं। मैंने उन पर फूंका तो वो दोनो उड़ गये। मैंने ख्वाब का मतलब यह समझा कि दो झूटे हैं जिनके बीच मैं खुद हूँ और वो दोनों सनाअ वाले (अनसी) और यमामा वाले (मुसैलमा)।

फायदेः इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर इन्सान ख्वाब में खुद को औरतों के जेवरात पहने देखे तो इसका मतलब परेशानी और दिक्कत है।

---

٤٢ - باب: قِصَّةُ أَهْلِ نَجْرَانَ

बाब 42: बुखरान वालों के किस्से का बयान।

١٦٨٩ : عَنْ حُذَيْفَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: جَاءَ الْعَاقِبُ وَالسَّيِّدُ، صَاحِبَا نَجْرَانَ، إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يُرِيدَانِ أَنْ يُلاَعِنَاهُ، قَالَ: فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: لاَ تَفْعَلْ، فَوَٱللهِ لَئِنْ كَانَ نَبِيًّا فَلاَعَنَّا لاَ نُفْلِحُ نَحْنُ وَلاَ عَقِبُنَا مِنْ بَعْدِنَا. قَالاَ: إِنَّا نُعْطِيكَ مَا سَأَلْتَنَا، وَٱبْعَثْ مَعَنَا رَجُلاً أَمِينًا، وَلاَ تَبْعَثْ مَعَنَا إِلاَّ أَمِينًا. فَقَالَ: (لأَبْعَثَنَّ مَعَكُمْ رَجُلاً

1689: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि आकिब और सईद नजरान के दो सरदार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मुबाहला (अपनी औलाद को कसम के लिए पेश करने) के इरादे से आये। उनमें से एक ने दूसरे से कहा, मुबाहला मत करो। क्योंकि अगर वो सच्चे नबी हैं और हम उनसे मुबाहला करें तो हमारी

أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ). فَاسْتَشْرَفَ لَهُ أَصْحَابُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ: (قُمْ يَا أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ). فَلَمَّا قَامَ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هٰذَا أَمِينُ هٰذِهِ الأُمَّةِ). [رواه البخاري: ٤٣٨٠]

और हमारी औलाद सबकी खराबी होगी। चूनांचे दोनों ने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो आप हमें फरमायेंगे, वो हम अदा करते रहेंगे। आप हमारे साथ किसी अमानतदार को भेज दें। मेहरबानी करके किसी ख्यानत करने वाले को न भेजें। आपने फरमाया, मैं तुम्हारे साथ एक ऐसे अमानतदार को भेजूंगा जो आला दर्जा का अमीन है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम गर्दनें उठाकर देखने लगे कि वो कौन खुशकिस्मत है? तो आपने फरमाया, ऐ अबू उबादा बिन जर्राह रजि.! खड़े हो जाओ। फिर जब खड़े हो गये तो आपने फरमाया, यह आदमी इस उम्मत में सबसे ज्यादा अमीन है।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नसारा नजरान से इस शर्त पर सुल्ह की कि वो कपड़ों के हजार जोड़े माहे रजब में और उतनी ही तादाद माह सफर में अदा करेंगे। और हर जोड़े के साथ एक औकिया चांदी भी देंगे।

 (फतहुलबारी 8/95)

١٦٩٠ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ، وَأَمِينُ هٰذِهِ الأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ). [رواه البخاري: ٤٣٨٢]

1690: अनस रजि. की रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, हर उम्मत में एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन अबू उबादा बिन जर्राह रजि. है।

फायदे: इमाम बुखारी इस हदीस को इस वजह से लाये हैं ताकि इसके सबब का इल्म हो जाये। यानी मजरान की जमात का आना इस हदीस के बयान करने का सबब है। (फतहुलबारी 8/95)

बाब 43: यमन वालों और अशअरी लोगों का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आना।

٤٣ - باب: قُدُومُ الأَشْعَرِيِّينَ وأَهْلِ الْيَمَنِ

१٦٩١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ نَفَرٌ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ فَاسْتَحْمَلْنَاهُ، فَأَبَى أَنْ يَحْمِلَنَا، فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَحَلَفَ أَنْ لَا يَحْمِلَنَا، ثُمَّ لَمْ يَلْبَثِ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أُتِيَ بِنَهْبِ إِبِلٍ، فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ، فَلَمَّا قَبَضْنَاهَا قُلْنَا: تَغَفَّلْنَا النَّبِيَّ ﷺ يَمِينَهُ، لَا نُفْلِحُ بَعْدَهَا أَبَدًا، فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللَّهِ، إِنَّكَ حَلَفْتَ أَنْ لَا تَحْمِلَنَا وَقَدْ حَمَلْتَنَا؟! قَالَ: (أَجَلْ، وَلٰكِنْ لَا أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ، فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، إِلَّا أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ مِنْهَا) وَفِي رِوَايَةٍ: (وَتَحَلَّلْتُهَا).

[رواه البخاري: ٤٣٨٥]

1691: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम कुछ अशअरी लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और कहा, आप हमें सवारी दें। आपने इनकार कर दिया। हमने फिर सवारी की मांग की तो आपने कसम उठाई कि आप हमें सवारी नहीं देंगे। थोड़ी देर बाद ऐसा हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास माले गनीमत के कुछ ऊंट लाये तो आपने हमारे लिए पांच ऊंटों का हुक्म दिया। जब हम ऊंट ले चुके तो आपस में मशवरा किया कि चूंकि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऊंट लेते वक्त कसम याद न दिलाई थी। इसलिए हम कभी कामयाब न होंगे। आखिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुआ और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने तो कसम उठाई थी कि मैं तुम्हें कभी सवारी नहीं दूंगा। लेकिन आपने हमें सवारी दे दी। आपने फरमाया, मुझे कसम याद थी। मगर मेरा कायदा यह है कि अगर मैं किसी बात पर कसम खा लेता हूँ। फिर उसके खिलाफ करना अच्छा समझता हूँ तो उस मुनासिब काम को इख्तियार कर लेता हूँ और कसम का कफ्फारा दे देता हूँ।

फायदे: यह हदीस हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. ने उस वक्त बयान फरमाई जब आपने एक आदमी को देखा कि उसने मुर्गी का गोश्त न खाने की कसम उठा रखी है तो आपने उसे फरमाया कि मैं तुझे कसम का इलाज बताता हूँ। फिर यह हदीस बयान की। (सही बुखारी 4385)

١٦٩٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَتَاكُمْ أَهْلُ ٱلْيَمَنِ، هُمْ أَرَقُّ أَفْئِدَةً وَأَلْيَنُ قُلُوبًا، ٱلإِيمَانُ يَمَانٍ وَٱلْحِكْمَةُ يَمَانِيَةٌ، وَٱلْفَخْرُ وَٱلْخُيَلَاءُ فِي أَهْلِ ٱلإِبِلِ، وَٱلسَّكِينَةُ وَٱلْوَقَارُ فِي أَهْلِ ٱلْغَنَمِ). [رواه البخاري: ٤٣٨٨]

1692: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, यमन के लोग तुम्हारे पास आये हैं जो नरम दिल और नरम मिजाज हैं। ईमान यमन ही का उम्दा और हिकमत भी यमन ही की अच्छी है। घमण्ड और तकब्बुर ऊंट वालों में है और इत्मिनान व सहुलत बकरी वालों में है।

फायदे: इस हदीस से यमन वालों की फजीलत मालूम होती है कि यह लोग हक बात को जल्द कबूल कर लेते हैं। जो उनके साहिबे ईमान होने की निशानी है।

---

٤٤ - باب: حَجَّةُ ٱلْوَدَاعِ

बाब 44: हजतुल विदा का बयान।

١٦٩٣ : حديث ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنْ صَلاةِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ فِي ٱلْكَعْبَةِ قَدْ تَقَدَّمَ، وذَكَرَ فِي هٰذِهِ ٱلرِّوَايَةِ قَالَ: وَعِنْدَ ٱلْمَكَانِ ٱلَّذِي صَلَّى فِيهِ مَرْمَرَةٌ حَمْرَاءُ. (راجع: ٢٩٦،٢٥٨) [رواه البخاري: ٤٤٠٠ وانظر حديث رقم: ٤٦٨]

1693: इब्ने उमर रजि. की वो हदीस (296) जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का काबा में नमाज पढ़ने का जिक्र है, पहले गुजर चुकी है, लेकिन इस रिवायत मे इतना इजाफा है कि आपने जहां नमाज पढ़ी थी, उसके पास ही सुर्ख रंग का संगमरमर बिछा हुआ था।

फायदे: इस हदीस के आगाज में सराहत है कि आप फतह मक्का के वक्त तशरीफ लाये जो कि आठ हिजरी को हुवा और हजतुल विदा दस हिजरी को हुआ। नामालूम इस हदीस को हजतुल विदा में क्यों लाया गया है। (फतहुलबारी 8/106)

١٦٩٤ : عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَزَا تِسْعَ عَشْرَةَ غَزْوَةً، وَأَنَّهُ حَجَّ بَعْدَ مَا هَاجَرَ حَجَّةً وَاحِدَةً لَمْ يَحُجَّ بَعْدَهَا، حَجَّةَ الْوَدَاعِ. [رواه البخاري: ٤٤٠٤]

1694: जैद बिन अरकम रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्नीस जंगे लड़ीं और हिजरत के बाद आपने एक ही हज किया यानी हज्जतुल विदा। इसके बाद आपने कोई हज नहीं किया।

फायदे: हिजरत से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का में रहते हुए कोई हज नहीं छोड़ा, बल्कि जुबैर बिन मुतईम रजि. बयान करते हैं कि मैंने दौरे जाहिलियत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरफात के मैदान में ठहरते हुए देखा है।

 (फतहुलबारी 8/107)

١٦٩٥ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الزَّمَانُ قَدِ ٱسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ ٱللهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، السَّنَةُ ٱثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ: ثَلاَثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ: ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ، الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ. أَيُّ شَهْرٍ هٰذَا؟). قُلْنَا: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ ٱسْمِهِ، قَالَ: (أَلَيْسَ ذَا الْحِجَّةِ؟) قُلْنَا:

1695: अबू बकरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जमाना घूमकर आज फिर उस हालत पर आ गया है जो हालत उस दिन थी, जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान व जमीन को पैदा किया। साल के बारह महीने हैं, जिसमें चार महीने हुरमत वाले हैं, तीन तो एक दूसरे के बाद लगातार आते हैं यानी जुलकअद, जिलहिजा और मुहर्रम

بَلَى، قَالَ: (فَأَيُّ بَلَدٍ هٰذَا؟). قُلْنَا: اَللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، قَالَ: (أَلَيْسَ الْبَلْدَةَ؟). قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: (فَأَيُّ يَوْمٍ هٰذَا؟). قُلْنَا: اَللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، قَالَ: (أَلَيْسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟). قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: (فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ - قَالَ الرَّاوِي: وَأَحْسِبُهُ قَالَ - وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ، كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا، فِي شَهْرِكُمْ هٰذَا، وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ، فَسَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ، أَلَا فَلَا تَرْجِعُوا بَعْدِي ضُلَّالًا، يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ، أَلَا لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَلَعَلَّ بَعْضَ مَنْ يُبَلِّغُهُ أَنْ يَكُونَ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضِ مَنْ سَمِعَهُ، أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ). مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ٤٤٠٦]

और चौथा कबीला मुजर का रजब है जो जुमादे शानी और शअबान के बीच है। फिर आपने फरमाया, यह कौनसा महीना है? हमने कहा, अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेहतर जानता है। फिर आप कुछ देर खामोश हो गये तो हमने ख्याल किया कि शायद आप इस का कोई नया नाम रखेंगे। फिर आपने फरमाया, यह महीना जुलहिज्जा का नहीं है? हमने कहा, बजा इरशाद! फिर आपने कहा, यह कौनसा शहर है? हमने कहा कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेहतर जानते हैं? फिर आप खामोश हो गये और इतनी देर तक कि हमें गुमान गुजरने लगा शायद इसका कोई नया नाम रखेंगे। फिर आपने फरमाया, क्या यह बलद अमीन यानी मक्का नहीं है? हमने कहा, बजा इरशाद! फिर आपने पूछा, आज का यह दिन कौन सा है? हमने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेहतर जानते हैं। आप फिर खामोश रहे, जिससे हमें ख्याल हुआ कि शायद आप इस का कोई और नाम रखेंगे। आपने फरमाया, क्या यह यौमुन नहर (कुर्बानी का दिन) नहीं है। हमने कहा, बजा इरशाद! आपने फरमाया तो जान रखो, तुम्हारे खून तुम्हारे माल और तुम्हारी आबरूयें तुम्हारे लिए इसी तरह हराम व मुहतरम हैं जिस तरह आज का यह दिन तुम्हारे इस मुहतरम शहर और काबिले

अहतराम मदीना में हराम व मुहतरम है और याद रखो, जल्द ही तुमको अपने रब के सामने हाजिर होना है। सो वो तुमसे तुम्हारे आमाल के बारे में पूछेगा तो ख्याल रहे कि तुम मेरे बाद दोबारा ऐसे गुमराह न हो जाना कि आपस में लड़ने लगो। और एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो, खबरदार! हर हाजिर मौजूद पर लाजिम हैं कि वो यह पैगाम उन लोगों तक पहुंचाये जो यहाँ मौजूद नहीं है। इसलिए कि बहुत मुमकिन है कि कोई ऐसा आदमी जिस तक यह अहकाम पहुंचाये जायें, वो सुनने वाले से ज्यादा याद रखने वाला हो। फिर आपने दो बार पूछा, फरमाया हां! तो क्या मैंने अल्लाह के अहकाम पहुंचा दिये हैं?

फायदे: कुफ्फार की यह आदत थी कि मतलब पूरा करने के लिए अपनी मर्जी से महीनों को आगे पीछे कर देते थे। अगर किसी कबीले से माहे मुहरम में लड़ना होता तो उसे माहे सफर की जगह ले जाते। इत्तेफाक से जिस साल आपने हज अदा किया तो उस वक्त जिलहिजा का महीना अपने मकाम पर था, तब आपने यह हदीस बयान फरमाई।

1696: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. ने हजतुल विदा में अपने सर मुण्डवाये, जबकि कुछ ने कसर किया यानी बाल कतरवाये।

١٦٩٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَلَقَ رَأْسَهُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ، وَأُنَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، وَقَصَّرَ بَعْضُهُمْ. [رواه البخاري: ٤٤١١]

फायदे: अगरचे हज के कामों से फारिग होने के बाद बाल कतरवाना भी जाइज है। लेकिन बाल मुण्डवाना अफजल है।

बाब 45 : गजवा तबूक का बयान, इसे उसरत भी कहा जाता है।

٤٥ - باب: غَزْوَةُ تَبُوكَ وَهِيَ غَزْوَةُ الْعُسْرَةِ

1697: अबू मूसा अशअरी रजि. से

١٦٩٧ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ

اَللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرْسَلَنِي أَصْحَابِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَسْأَلُهُ الحُمْلاَنَ لَهُمْ، إِذْ هُمْ مَعَهُ فِي جَيْشِ الْعُسْرَةِ، وَهِيَ غَزْوَةُ تَبُوكَ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، إِنَّ أَصْحَابِي أَرْسَلُونِي إِلَيْكَ لِتَحْمِلَهُمْ، فَقَالَ: (وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ عَلَى شَيْءٍ). وَوَافَقْتُهُ وَهُوَ غَضْبَانُ وَلاَ أَشْعُرُ، وَرَجَعْتُ حَزِينًا مِنْ مَنْعِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمِنْ مَخَافَةِ أَنْ يَكُونَ النَّبِيُّ ﷺ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ عَلَيَّ، فَرَجَعْتُ إِلَى أَصْحَابِي، فَأَخْبَرْتُهُمُ الَّذِي قَالَ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمْ أَلْبَثْ إِلاَّ سُوَيْعَةً إِذْ سَمِعْتُ بِلاَلاً يُنَادِي: أَيْ عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، فَأَجَبْتُهُ، فَقَالَ: أَجِبْ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَدْعُوكَ، فَلَمَّا أَتَيْتُهُ قَالَ: (خُذْ هٰذَيْنِ القَرِينَيْنِ، وَهٰذَيْنِ القَرِينَيْنِ - لِسِتَّةِ أَبْعِرَةٍ ابْتَاعَهُنَّ حِينَئِذٍ مِنْ سَعْدٍ - فَانْطَلِقْ بِهِنَّ إِلَى أَصْحَابِكَ، فَقُلْ: إِنَّ اللهَ، أَوْ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَحْمِلُكُمْ عَلَى هٰؤُلاَءِ فَارْكَبُوهُنَّ). فَانْطَلَقْتُ إِلَيْهِمْ بِهِنَّ، فَقُلْتُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ يَحْمِلُكُمْ عَلَى هٰؤُلاَءِ، وَلٰكِنِّي وَاللهِ لاَ أَدَعُكُمْ حَتَّى يَنْطَلِقَ مَعِي بَعْضُكُمْ إِلَى مَنْ سَمِعَ مَقَالَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، لاَ تَظُنُّوا أَنِّي حَدَّثْتُكُمْ شَيْئًا لَمْ يَقُلْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقَالُوا لِي: وَاللهِ إِنَّكَ عِنْدَنَا لَمُصَدَّقٌ، وَلَنَفْعَلَنَّ مَا أَحْبَبْتَ، فَانْطَلَقَ أَبُو مُوسَى بِنَفَرٍ

रिवायत है, उन्होंने फरमाया, मुझे मेरे दोस्तों ने जो जैशे उसरत यानी गजवा तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जाने वाले थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सवारियों के लिए भेजा। मैंने आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे दोस्तों ने मुझे भेजा है कि आप उन्हें सवारियां मुहैया करें। आपने फरमाया, अल्लाह की कसम! मैं तुम्हें कोई सवारी देने वाला नहीं। इत्तेफाक से आप उस वक्त गुस्से में थे, लेकिन मुझे मालूम न था, मैं बहुत नाराज होकर वापिस लौटा। मुझे एक दुख तो यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सवारियां नहीं दी और दूसरा दुख यह था कि कहीं आप मेरे सवारी मांगने से नाराज न हो गये हों। मैं अपने साथियों के पास आया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो फरमाया था वो उनसे कह दिया। फिर थोड़ी देर बाद मैं सुनता हूँ कि बिलाल रजि. पुकार रहे हैं, ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस रज़ि.! मैं उनके पास गया तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको

مِنْهُمْ، حَتَّى أَتَوُا الَّذِينَ سَمِعُوا قَوْلَ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ مَنْعَهُ إِيَّاهُمْ، ثُمَّ إِعْطَاءَهُمْ بَعْدُ، فَحَدَّثُوهُمْ بِمِثْلِ مَا حَدَّثَهُمْ بِهِ أَبُو مُوسَى. [رواه البخاري: ٤٤١٥]

याद फरमाया है। उनके पास जाओ। मैं आपकी खिदमत में हाजिर हुआ तो छः तैयार ऊंटों की तरफ इशारा करके फरमाया, ले जाओ। उन दो ऊंटो को और उन दो ऊंटनियों को यानी दो बार फरमाया। आपने यह ऊंट उसी वक्त साद बिन उबादा रजि. से खरीदे थे। आपने और फरमाया, इन ऊंटों को अपने साथियों के पास ले जाओ। और उनसे कह दो कि अल्लाह या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हें यह ऊंट सवारी के लिए दिये हैं। फिर मैं उन ऊंटों को लेकर उनके पास आया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हारी सवारी के लिए यह ऊंट दिये हैं। लेकिन अल्लाह की कसम! मैं तुम्हें हरगिज छोड़ने वाला नहीं हूँ। यहाँ तक कि तुम मैं से कुछ लोग मेरे साथ उस आदमी के पास चले, जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुफ्तगू सुनी थी। ताकि तुम्हें यह ख्याल न हो कि मैंने अपनी तरफ से तुम्हें ऐसी बात कह दी थी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न कही थी। उन्होंने कहा, नहीं। इस अहतमाम की कुछ भी जरूरत नहीं। हम तुझे सच्चा समझते हैं और अगर तुम तस्दीक करना चाहते हो तो हम ऐसा ही करेंगे। चूनांचे अबू मूसा रजि. कुछ आदमियों को लेकर उन लोगों के पास आये जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली गुफ्तगू और आपका इनकार सुना था। मगर इसके बाद सवारी इनायत फरमाई तो उन्होंने भी इसी तरह बयान किया, जिस तरह अबू मूसा रज़ि॰ ने उनसे कहा था। यानी अबू मूसा रजि. की तस्दीक की।

फायदे: इस हदीस से मालूम होता है कि अगर किसी काम के न करने की कसम उठाई जाये तो अगर उस काम में खैर व बरकत का पहलू नजर आये तो ऐसी कसम का तोड़ देना पसन्दीदा काम है।

(फतहुलबारी 8/112)

١٦٩٨ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَرَجَ إِلَى تَبُوكَ، وَٱسْتَخْلَفَ عَلِيًّا، فَقَالَ: أَتُخَلِّفُنِي فِي ٱلصِّبْيَانِ وَٱلنِّسَاءِ؟ فَقَالَ: (أَلَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى؟ إِلَّا أَنَّهُ لَيْسَ نَبِيٌّ بَعْدِي). [رواه البخاري: ٤٤١٦]

1698: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तबूक की तरफ तशरीफ ले जाने लगे तो आपने मदीना मुनव्वरा में अली रजि. को अपना जानशीन बनाया। उन्होंने कहा, आप मुझे बच्चों और औरतों में छोड़कर जाते हैं। आपने फरमाया, क्या तू इस बात पर खुश नहीं कि मेरे पास तेरा वही दर्जा है जो मूसा अलैहि. के यहाँ हारून अलैहि. का था। सिर्फ इतना फर्क है कि मेरे बाद कोई दूसरा नबी नहीं होगा।

फायदे: इस हदीस से शिया हजरात ने हजरत अली रजि. के लिए नबी करीम सल्ल. के बाद खलीफा होने की दलील पकड़ी है जो कई लिहाज से महले नजर है 1. हजरत हारून अलैहि. मूसा अलैहि. से पहले ही फौत हो चुके थे। इसलिए खिलाफत का कयास सही नहीं। 2. अली रजि. दीनी मामलात और घरेलू देखभाल के लिए जानशीन नामजद किया था, जैसा कि कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बीवियों और दूसरे घरेलू ख्वातीन को बुलाकर तलकीन की कि अली रजि. की बात को सुनना और उसकी इताअत करना। 3. दीनी मामलात यानी नमाज पंचगाना की इमामत के लिए हजरत इब्ने उम्मे मकतूम रजि. को नामजद फरमाया। इस लिहाज से तो खिलाफत के यह हकदार थे। 4. हजरत अबू बकर रजि. की खिलाफत पर तमाम सहाबा का इत्तेफाक हुआ। यहाँ तक कि हजरत अली रजि. ने भी आखिरकार बैअत करके इस इजमाअ को कबूल कर लिया। 5. अहादीस में वाजेह तौर पर ऐसे इरशादात मिलते हैं कि

आपके बाद हजरत अबू बकर रजि. का खलीफा बनना आपकी मर्जी के ऐन मुताबिक था।

٤٦ - باب: حَدِيثُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ الله عنهُ وقولُ الله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَعَلَى ٱلثَّلَٰثَةِ ٱلَّذِينَ خُلِّفُوا﴾

बाब 46: कअब बिन मालिक रजि. के किस्से का बयान और फरमाने इलाही: और उन तीनों से अल्लाह खुश हुआ, जिनका मामला रद्द कर दिया गया।''

١٦٩٩ : عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ أَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا إِلَّا فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ تَخَلَّفْتُ فِي غَزْوَةِ بَدْرٍ، وَلَمْ يُعَاتِبْ أَحَدًا تَخَلَّفَ عَنْهَا، إِنَّمَا خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُرِيدُ عِيرَ قُرَيْشٍ، حَتَّى جَمَعَ ٱللهُ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ عَدُوِّهِمْ عَلَى غَيْرِ مِيعَادٍ، وَلَقَدْ شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ، حِينَ تَوَاثَقْنَا عَلَى الإِسْلَامِ، وَمَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهَا مَشْهَدَ بَدْرٍ، وَإِنْ كَانَتْ بَدْرٌ أَذْكَرَ فِي النَّاسِ مِنْهَا، كَانَ مِنْ خَبَرِي: أَنِّي لَمْ أَكُنْ قَطُّ أَقْوَى وَلَا أَيْسَرَ مِنِّي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْهُ فِي تِلْكَ الْغَزَاةِ، وَٱللهِ مَا ٱجْتَمَعَتْ عِنْدِي قَبْلَهُ رَاحِلَتَانِ قَطُّ، حَتَّى جَمَعْتُهُمَا فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ، وَلَمْ يَكُنْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُرِيدُ غَزْوَةً إِلَّا وَرَّى بِغَيْرِهَا، حَتَّى كَانَتْ تِلْكَ الْغَزْوَةُ، غَزَاهَا

1699: कअब बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तमाम गजवात में शरीक रहा। सिर्फ गजवा तबूक में पीछे रह गया था। अलबत्ता गजवा बदर में भी मैं शरीक नहीं था, लेकिन जंगे बदर से पीछे रह जाने पर अल्लाह ने किसी को सजा नहीं दी, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक काफिले का इरादा करके बाहर निकले थे। लेकिन अल्लाह तआला ने वक्त तय किये बगैर मुसलमानों का सामना दुश्मन से करा दिया था। मैं तो अकबा के मौके पर भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ था। जहां मैंने इस्लाम पर कायम रहने का मजबूत कौल करार किया था। अगरचे लोगों में गजवा बदर की शोहरत ज्यादा है। लेकिन मैं यह

رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي حَرٍّ شَدِيدٍ، وَٱسْتَقْبَلَ سَفَرًا بَعِيدًا، وَمَفَازًا وَعَدُوًّا كَثِيرًا، فَجَلَّى لِلْمُسْلِمِينَ أَمْرَهُمْ لِيَتَأَهَّبُوا أُهْبَةَ غَزْوِهِمْ، فَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِ الَّذِي يُرِيدُ، وَالْمُسْلِمُونَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ كَثِيرٌ، وَلاَ يَجْمَعُهُمْ كِتَابٌ حافِظٌ، قَالَ كَعْبٌ: فَمَا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَتَغَيَّبَ إِلَّا ظَنَّ أَنْ سَيَخْفَى لَهُ، ما لَمْ يَنْزِلْ فِيهِ وَحْيُ ٱللهِ، وَغَزَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ تِلْكَ الْغَزْوَةَ حِينَ طَابَتِ الثِّمارُ وَالظِّلاَلُ، وَتَجَهَّزَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ، فَطَفِقْتُ أَغْدُو لِكَيْ أَتَجَهَّزَ مَعَهُمْ، فَأَرْجِعُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا، فَأَقُولُ فِي نَفْسِي: أَنَا قَادِرٌ عَلَيْهِ، فَلَمْ يَزَلْ يَتَمادَى بِي حَتَّى ٱشْتَدَّ بِالنَّاسِ الْجِدُّ، فَأَصْبَحَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ، وَلَمْ أَقْضِ مِنْ جِهَازِي شَيْئًا، فَقُلْتُ أَتَجَهَّزُ بَعْدَهُ بِيَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ ثُمَّ أَلْحَقُهُمْ، فَغَدَوْتُ بَعْدَ أَنْ فَصَلُوا لِأَتَجَهَّزَ، فَرَجَعْتُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا، ثُمَّ غَدَوْتُ، ثُمَّ رَجَعْتُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا، فَلَمْ يَزَلْ بِي حَتَّى أَسْرَعُوا وَتَفَارَطَ الْغَزْوُ، وَهَمَمْتُ أَنْ أَرْتَحِلَ فَأُدْرِكَهُمْ، وَلَيْتَنِي فَعَلْتُ، فَلَمْ يُقَدَّرْ لِي ذٰلِكَ، فَكُنْتُ إِذَا خَرَجْتُ فِي النَّاسِ بَعْدَ

बात पसन्द नहीं करता कि मुझे बैअत अकबा के बदले में गजवा बदर में शिरकत का मौका मिला होता और मेरा किस्सा यह है कि मैं जिस जमाने में गजवा तबूक से पीछे रहा, इतना ताकतवर और खुशहाल था कि इससे पहले कभी न हुआ था। अल्लाह की कसम! इससे पहले मेरे पास दो ऊंटनियां कभी जमा नहीं हुई थी। जबकि उस मौके पर मेरे पास दो उंटनियां मौजूद थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कायदा था कि जब किसी गजवा में जाने का इरादा करते तो उसको पूरे तौर पर जाहिर न करते, बल्कि किसी और मकाम का नाम लिया करते थे। लेकिन यह गजवा चूंकि सख्त गर्मी में हुआ और लम्बे जंगलों का सफर था और दुश्मन ज्यादा तादाद में थे। इसलिए आपने मुसलमानों से यह मामला साफ साफ बयान फरमा दिया था कि इस जंग के लिए अच्छी तरह तैयार हो जायें। और उन्हें वो तरफ भी बतला दी जिस तरफ आप जाना चाहते थे और आपके साथ मुसलमान ज्यादा तातादा में थे और कोई रजिस्टर व दफ्तर वगैरह न था, जिसमें उनके नाम दर्ज होते।

خروج رسول الله ﷺ فطفقت فيهم، أحزنني أني لا أرى إلا رجلا مغموصا عليه النفاق، أو رجلا ممن عذر الله من الضعفاء ولم يذكرني رسول الله ﷺ حتى بلغ تبوك، فقال، وهو جالس في القوم بتبوك: (ما فعل كعب؟) فقال رجل من بني سلمة: يا رسول الله، حبسه برداه، ونظره في عطفيه. فقال معاذ ابن جبل: بئس ما قلت، والله يا رسول الله ما علمنا عليه إلا خيرا. فسكت رسول الله ﷺ. قال كعب ابن مالك: فلما بلغني أنه توجه قافلا حضرني همي، وطفقت أتذكر الكذب وأقول: بماذا أخرج من سخطه غدا، واستعنت على ذلك بكل ذي رأي من أهلي، فلما قيل: إن رسول الله ﷺ قد أظل قادما زاح عني الباطل، وعرفت أني لن أخرج منه أبدا بشيء فيه كذب، فأجمعت صدقه، وأصبح رسول الله ﷺ قادما، وكان إذا قدم من سفر بدأ بالمسجد، فيركع فيه ركعتين، ثم جلس للناس، فلما فعل ذلك جاءه المخلفون، فطفقوا يعتذرون إليه ويحلفون له، وكانوا بضعة وثمانين رجلا، فقبل منهم رسول

कअब रजि. कहते हैं कि सूरते हाल ऐसी थी कि जो आदमी लश्कर में से गायब हो जाता वो यह सोच सकता था कि अगर वह्य के जरीये आपको इत्लाअ न दी गई तो मेरी गैर हाजरी का किसी को पता न चल सकेगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस जंग का इरादा ऐसे वक्त में किया था। जब फल पक चुके थे और हर तरफ साया आम था। आपने और आपके साथ दूसरे मुसलमानों ने भी सफर का सामान तैयार करना शुरू किया, लेकिन मेरी कैफियत यह थी कि मैं सुबह के वक्त इस इरादे से निकलता कि मैं भी बाकी मुसलमानों के साथ मिलकर तैयारी करूंगा। लेकिन जब शाम को वापिस आता तो कोई फैसला न कर सका होता। फिर मैं अपने दिल को यह कह कर तसल्ली कर लेता कि मैं तैयारी पूरी करने पर पूरी तरह ताकत रखता हूँ। इसी तरह वक्त गुजरता रहा, यहाँ तक कि लोगों ने जोर शोर से तैयारी कर ली। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथ मुसलमान रवाना हो गये और मैं अपनी तैयारी के सिलसिले में कुछ भी न कर

सका। फिर मैंने अपने दिल में यह कहा कि मैं आपकी रवानगी के एक या दो दिन बाद तैयारी पूरी कर लूंगा और उनसे जा मिलूंगा। लेकिन उनके रवाना हो जाने के बाद भी यही कैफियत रही कि सुबह के वक्त तैयारी के ख्याल से निकलता, लेकिन जब घर लौटता तो वही कैफियत होती, यानी कुछ भी न कर सका होता। वापिस आता तो कुछ न किया होता। मेरी कैफियत लगातार यही रही, यहां तक कि मुसलमान तेज चलकर आगे बढ़ गये। मैंने फिर इरादा किया, कि मैं भी चल पड़ूं और उनसे जा मिलूं। काश कि मैंने ऐसा कर लिया होता, लेकिन यह अच्छा काम मेरे मुकद्दर में ही न था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाने के बाद हालत यह थी कि जब मैं बाहर लोगों के पास जाता और उनमें चल फिर कर देखता तो जो बात मुझे गमगीन करती यह थी कि जो आदमी नजर आता वो सिर्फ ऐसा होता जिस पर मुनाफिक (जाहिरी तौर पर ईमान का इजहार करना और दिल में इस्लाम की दुश्मनी रखना) होने का इल्जाम था या फिर वो कमजोर और बूढ़े लोग होते, जिन्हें अल्लाह तआला

ٱللهِ ﷺ عَلَانِيَتَهُمْ، وَبَايَعَهُمْ وَٱسْتَغْفَرَ لَهُمْ، وَوَكَلَ سَرَائِرَهُمْ إِلَى ٱللهِ، فَجِئْتُهُ، فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ تَبَسَّمَ تَبَسُّمَ المُغْضَبِ، ثُمَّ قالَ: (تَعَالَ). فَجِئْتُ أَمْشِي حَتَّى جَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَقَالَ لِي: (ما خَلَّفَكَ، أَلَمْ تَكُنْ قَدِ ٱبْتَعْتَ ظَهْرَكَ؟) فَقُلْتُ: بَلَى، إِنِّي وَٱللهِ - يَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ - لَوْ جَلَسْتُ عِنْدَ غَيْرِكَ مِنْ أَهْلِ ٱلدُّنْيَا، لَرَأَيْتُ أَنْ سَأَخْرُجُ مِنْ سَخَطِهِ بِعُذْرٍ، وَلَقَدْ أُعْطِيتُ جَدَلًا، وَلٰكِنِّي وَٱللهِ، لَقَدْ عَلِمْتُ لَئِنْ حَدَّثْتُكَ ٱلْيَوْمَ حَدِيثَ كَذِبٍ تَرْضَى بِهِ عَنِّي، لَيُوشِكَنَّ ٱللهُ أَنْ يُسْخِطَكَ عَلَيَّ، وَلَئِنْ حَدَّثْتُكَ حَدِيثَ صِدْقٍ تَجِدُ عَلَيَّ فِيهِ، إِنِّي لَأَرْجُو فِيهِ عَفْوَ ٱللهِ، لَا وَٱللهِ، ما كانَ لِي مِنْ عُذْرٍ، وَٱللهِ ما كُنْتُ قَطُّ أَقْوَى وَلَا أَيْسَرَ مِنِّي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْكَ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَّا هٰذَا فَقَدْ صَدَقَ، فَقُمْ حَتَّى يَقْضِيَ ٱللهُ فِيكَ). فَقُمْتُ، وَثَارَ رِجالٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ فَٱتَّبَعُونِي، فَقَالُوا لِي: وَٱللهِ ما عَلِمْنَاكَ كُنْتَ أَذْنَبْتَ ذَنْبًا قَبْلَ هٰذَا، وَلَقَدْ عَجَزْتَ أَنْ لَا تَكُونَ ٱعْتَذَرْتَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِمَا ٱعْتَذَرَ إِلَيْهِ ٱلْمُتَخَلِّفُونَ، قَدْ كانَ كَافِيكَ ذَنْبَكَ

ने माजूर करार दे दिया था। इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रास्ते में तो मुझे कहीं भी याद न फरमाया। मगर जब तबूक पहुंच गये और एक मौके पर लोगों के साथ तशरीफ फरमा थे तो फरमाया कअब रजि. ने यह क्या किया? बनी सलमा के एक आदमी ने कहा, उसे सेहत व खुशहाली की दो चादरों ने रोक रखा है और वो अपनी उन चादरों के किनारों को देखने में मशगूल होगा। यह सुनकर मआज बिन जबल रजि. ने उससे कहा, तुमने बहुत बुरी बात कही है। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की कसम हमने कअब में भलाई के सिवाई कुछ नहीं देखा। यह गुफ्तगू सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामोश हो गये।

कअब बिन मालिक रजि. का बयान है कि फिर जब यह खबर मिली कि आप वापिस आने वाले हैं तो ख्याल हुआ कि कोई बहाना सोचना चाहिए ताकि मैं आपकी नाराजगी से बच जाऊं। और इस सिलसिले में मैंने अपने खानदान के हर मशवरा देने वाले आदमी से मदद मांगी। फिर यह इत्लाअ मिली की आप

أَسْتِغْفَارُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ لَكَ. فَوَٱللهِ ما زَالُوا يُؤَنِّبُونَنِي حَتَّى أَرَدْتُ أَنْ أَرْجِعَ فَأُكَذِّبَ نَفْسِي، ثُمَّ قُلْتُ لَهُمْ: هَلْ لَقِيَ هٰذَا مَعِي أَحَدٌ؟ قَالُوا: نَعَمْ، رَجُلاَنِ قَالاَ مِثْلَ ما قُلْتَ، فَقِيلَ لَهُمَا مِثْلُ ما قِيلَ لَكَ، فَقُلْتُ: مَنْ هُمَا؟ قَالُوا: مُرَارَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الْعَمْرِيُّ وَهِلاَلُ بْنُ أُمَيَّةَ الْوَاقِفِيُّ، فَذَكَرُوا لِي رَجُلَيْنِ صَالِحَيْنِ، قَدْ شَهِدَا بَدْرًا، فِيهِمَا أُسْوَةٌ، فَمَضَيْتُ حِينَ ذَكَرُوهُمَا لِي، وَنَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلاَمِنَا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ مِنْ بَيْنِ مَنْ تَخَلَّفَ عَنْهُ، فَٱجْتَنَبَنَا النَّاسُ وَتَغَيَّرُوا لَنَا، حَتَّى تَنَكَّرَتْ فِي نَفْسِي الأَرْضُ فَمَا هِيَ الَّتِي أَعْرِفُ، فَلَبِثْنَا عَلَى ذٰلِكَ خَمْسِينَ لَيْلَةً، فَأَمَّا صَاحِبَايَ فَٱسْتَكَانَا وَقَعَدَا فِي بُيُوتِهِمَا يَبْكِيَانِ، وَأَمَّا أَنَا فَكُنْتُ أَشَبَّ الْقَوْمِ وَأَجْلَدَهُمْ، فَكُنْتُ أَخْرُجُ فَأَشْهَدُ الصَّلاَةَ مَعَ الْمُسْلِمِينَ، وَأَطُوفُ فِي الأَسْوَاقِ وَلاَ يُكَلِّمُنِي أَحَدٌ، وَآتِي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَأُسَلِّمُ عَلَيْهِ وَهُوَ فِي مَجْلِسِهِ بَعْدَ الصَّلاَةِ، فَأَقُولُ فِي نَفْسِي: هَلْ حَرَّكَ شَفَتَيْهِ بِرَدِّ السَّلاَمِ عَلَيَّ أَمْ لاَ؟ ثُمَّ أُصَلِّي قَرِيبًا مِنْهُ، فَأُسَارِقُهُ النَّظَرَ، فَإِذَا أَقْبَلْتُ عَلَى

صَلاَتِي أَقْبَلَ إِلَيَّ، وَإِذَا الْتَفَتُّ نَحْوَهُ أَعْرَضَ عَنِّي، حَتَّى إِذَا طَالَ عَلَيَّ ذٰلِكَ مِنْ جَفْوَةِ النَّاسِ، مَشَيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ جِدَارَ حَائِطِ أَبِي قَتَادَةَ، وَهُوَ ٱبْنُ عَمِّي وَأَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَوَٱللهِ مَا رَدَّ عَلَيَّ السَّلاَمَ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا قَتَادَةَ، أَنْشُدُكَ بِٱللهِ هَلْ تَعْلَمُنِي أُحِبُّ ٱللهَ وَرَسُولَهُ؟ فَسَكَتَ، فَعُدْتُ لَهُ فَنَشَدْتُهُ فَسَكَتَ، فَعُدْتُ لَهُ فَنَشَدْتُهُ، فَقَالَ: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَفَاضَتْ عَيْنَايَ وَتَوَلَّيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ ٱلْجِدَارَ.

قَالَ: فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي بِسُوقِ الْمَدِينَةِ، إِذَا نَبَطِيٌّ مِنْ أَنْبَاطِ أَهْلِ الشَّأْمِ، مِمَّنْ قَدِمَ بِالطَّعَامِ يَبِيعُهُ بِالْمَدِينَةِ، يَقُولُ: مَنْ يَدُلُّ عَلَى كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، فَطَفِقَ النَّاسُ يُشِيرُونَ لَهُ، حَتَّى إِذَا جَاءَنِي دَفَعَ إِلَيَّ كِتَابًا مِنْ مَلِكِ غَسَّانَ، فَإِذَا فِيهِ: أَمَّا بَعْدُ، فَإِنَّهُ قَدْ بَلَغَنِي أَنَّ صَاحِبَكَ قَدْ جَفَاكَ، وَلَمْ يَجْعَلْكَ ٱللهُ بِدَارِ هَوَانٍ، وَلاَ مَضْيَعَةٍ، فَالْحَقْ بِنَا نُوَاسِكَ. فَقُلْتُ لَمَّا قَرَأْتُهَا: وَهٰذَا أَيْضًا مِنَ الْبَلاَءِ، فَتَيَمَّمْتُ بِهَا التَّنُّورَ فَسَجَرْتُهُ بِهَا، حَتَّى إِذَا مَضَتْ أَرْبَعُونَ لَيْلَةً مِنَ الْخَمْسِينَ، إِذَا رَسُولُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَأْتِينِي فَقَالَ:

मदीना के करीब आ गये हैं तो यह ख्याल बिलकुल मेरे दिल से निकल गया और मैंने यकीन कर लिया कि झूट बोलकर आपकी नाराजगी से न बच सकूंगा। इसलिए सच बोलने का इरादा कर लिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह के वक्त तशरीफ लाये और आपका दस्तूर था कि जब सफर से वापिस आते तो सबसे पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज पढ़ते। फिर लोगों से मुलाकात के लिए तशरीफ फरमाते। चूनांचे जब आप नमाज से फारिग होने के बाद मुलाकात के लिए बैठे तो पीछे रह जाने वालों ने आना शुरू किया और कसमें उठाकर आपके सामने तरह तरह के बहाने पेश करने लगे। उन लोगों की तादाद अस्सी से कुछ ज्यादा थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बयान कर्दा गलत बहानों को कबूल कर लिया। उनसे बैअत ली और उनके लिए मगफिरत की दुआ फरमाई और उनकी नियतों को अल्लाह के हवाले कर दिया। अलगर्ज मैं भी आपकी खिदमत में हाजिर हुआ। मैंने जब आपको सलाम किया तो आप मुस्कुराये, लेकिन ऐसी मुस्कराहट जिनमें

إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَأْمُرُكَ أَنْ تَعْتَزِلَ ٱمْرَأَتَكَ، فَقُلْتُ: أُطَلِّقُهَا أَمْ مَاذَا أَفْعَلُ؟ قَالَ: لاَ، بَلِ ٱعْتَزِلْهَا وَلاَ تَقْرَبْهَا. وَأَرْسَلَ إِلَى صَاحِبَيَّ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَقُلْتُ لِامْرَأَتِي: ٱلْحَقِي بِأَهْلِكِ، فَتَكُونِي عِنْدَهُمْ حَتَّى يَقْضِيَ ٱللهُ فِي هٰذَا الأَمْرِ.

قَالَ كَعْبٌ: فَجَاءَتِ ٱمْرَأَةُ هِلاَلِ ابْنِ أُمَيَّةَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ شَيْخٌ ضَائِعٌ لَيْسَ لَهُ خَادِمٌ، فَهَلْ تَكْرَهُ أَنْ أَخْدُمَهُ؟ قَالَ: (لاَ، وَلٰكِنْ لاَ يَقْرَبْكِ). قَالَتْ: إِنَّهُ وَٱللهِ مَا بِهِ حَرَكَةٌ إِلَى شَيْءٍ، وَٱللهِ مَا زَالَ يَبْكِي مُنْذُ كَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ إِلَى يَوْمِهِ هٰذَا. فَقَالَ لِي بَعْضُ أَهْلِي: لَوِ ٱسْتَأْذَنْتَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِي ٱمْرَأَتِكَ، كَمَا أَذِنَ لِامْرَأَةِ هِلاَلِ بْنِ أُمَيَّةَ أَنْ تَخْدُمَهُ؟ فَقُلْتُ: وَٱللهِ لاَ أَسْتَأْذِنُ فِيهَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، وَمَا يُدْرِينِي مَا يَقُولُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا ٱسْتَأْذَنْتُهُ فِيهَا، وَأَنَا رَجُلٌ شَابٌّ؟ فَلَبِثْتُ بَعْدَ ذٰلِكَ عَشْرَ لَيَالٍ، حَتَّى كَمَلَتْ لَنَا خَمْسُونَ لَيْلَةً مِنْ حِينَ نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ كَلاَمِنَا، فَلَمَّا صَلَّيْتُ صَلاَةَ ٱلْفَجْرِ صُبْحَ خَمْسِينَ لَيْلَةً، وَأَنَا عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ

गुस्से की मिलावट थी। फिर फरमाया, इधर आओ। मैं आगे बढ़ा और आपके सामने जाकर बैठ गया। आपने पूछा, तुम क्यों पीछे रह गये? क्या तुमने सवारी नहीं खरीदी थी? मैने कहा, बजा इरशाद! अल्लाह की कसम! मैं अगर आपके अलावा किसी और दुनियावी सख्सीयत के सामने होता तो मैं जरूर यह ख्याल करता कि मैं किसी बहाने से उसके गजब से निजात पा सकता हूँ। क्योंकि मैं बोलने और दलील पेश करने में माहिर हूँ। लेकिन अल्लाह की कसम! मुझे यकीन है कि अगर आज मैं आपके सामने झूट बोलकर आप को राजी भी कर लूं तो जल्द ही अल्लाह आपको हकीकत हाल से आगाह कर देगा। और आप मुझ से फिर नाराज हो जायेंगे। लेकिन अगर मैं आपसे सारी बात सच सच बयान करूं तो आप मुझ से नाराज तो होंगे, फिर भी मुझे उम्मीद है कि इस सूरत में अल्लाह तआला मुझे माफ फरमा देगा।

वाक्य यह है कि अल्लाह की कसम! मुझे कोई मजबूरी न थी और यह हकीकत है कि अल्लाह की कसम! मैं इतना ताकतवर और खुशहाल कभी न था जितना उस मौके पर था। जिसमें मैं

مِنْ بُيُوتِنَا، فَبَيْنَا أَنَا جَالِسٌ عَلَى الحَالِ الَّتِي ذَكَرَ ٱللهُ تَعالَى، قَدْ ضَاقَتْ عَلَيَّ نَفْسِي، وَضَاقَتْ عَلَيَّ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ، سَمِعْتُ صَوْتَ صَارِخٍ، أَوْفَى عَلَى جَبَلِ سَلْعٍ، بِأَعْلَى صَوْتِهِ: يَا كَعْبُ بْنَ مَالِكٍ أَبْشِرْ، قَالَ: فَخَرَرْتُ سَاجِدًا، وَعَرَفْتُ أَنْ قَدْ جَاءَ فَرَجٌ، وَآذَنَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِتَوْبَةِ ٱللهِ عَلَيْنَا حِينَ صَلَّى صَلاَةَ الْفَجْرِ، فَذَهَبَ النَّاسُ يُبَشِّرُونَنَا، وَذَهَبَ قِبَلَ صَاحِبَيَّ مُبَشِّرُونَ، وَرَكَضَ إِلَيَّ رَجُلٌ فَرَسًا، وَسَعَى سَاعٍ مِنْ أَسْلَمَ، فَأَوْفَى عَلَى الجَبَلِ، وَكَانَ الصَّوْتُ أَسْرَعَ مِنَ الْفَرَسِ، فَلَمَّا جَاءَنِي الَّذِي سَمِعْتُ صَوْتَهُ يُبَشِّرُنِي نَزَعْتُ لَهُ ثَوْبَيَّ، فَكَسَوْتُهُ إِيَّاهُمَا بِبُشْرَاهُ، وَٱللهِ مَا أَمْلِكُ غَيْرَهُمَا يَوْمَئِذٍ، وَٱسْتَعَرْتُ ثَوْبَيْنِ فَلَبِسْتُهُمَا، وَٱنْطَلَقْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَيَتَلَقَّانِي النَّاسُ فَوْجًا فَوْجًا، يُهَنُّونَنِي بِالتَّوْبَةِ يَقُولُونَ: لِتَهْنِكَ تَوْبَةُ ٱللهِ عَلَيْكَ، قَالَ كَعْبٌ: حَتَّى دَخَلْتُ المَسْجِدَ، فَإِذَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ جَالِسٌ حَوْلَهُ النَّاسُ، فَقَامَ إِلَيَّ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ ٱللهِ يُهَرْوِلُ حَتَّى صَافَحَنِي وَهَنَّانِي، وَٱللهِ مَا قَامَ إِلَيَّ رَجُلٌ مِنَ المُهَاجِرِينَ

आपके साथ जाने से रह गया। मेरी यह बात सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह आदमी है जिसने सही बात बताई है। फिर मुझ से मुखातिब होकर फरमाया, अच्छा जाओ और इन्तेजार करो, जब तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे बारे में कोई फैसला न फरमाये। चूनांचे मैं उठ गया और जब मैं जाने लगा तो बनी सलमा के कुछ लोग मेरे पास जमा हो गये और साथ चलने लगे। उन्होंने कहा, अल्लाह की कसम! हमारे इल्म में नहीं है कि तुमने आज से पहले कभी कोई गुनाह किया हो तो तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में बहाना पेश क्यों नहीं किया। जैसा कि दूसरे पीछे रह जाने वालों ने आपकी खिदमत में बहाने पेश किये हैं। तुमने जो गुनाह किया था, उसकी माफी के लिए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तुम्हारे लिए मगफिरत की दुआ करनी ही काफी थी। अल्लाह की कसम! उन लोगों ने मुझे इतनी मलामत की कि एक बार तो मैंने इरादा कर लिया कि मैं वापिस जांऊ और जो कुछ मैंने आपसे कहा था, उसके बारे में कहूँ की वो झूट था।

غَيْرُهُ، وَلاَ أَنْسَاهَا لِطَلْحَةَ، قَالَ كَعْبٌ: فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وَهُوَ يَبْرُقُ وَجْهُهُ مِنَ السُّرُورِ: (أَبْشِرْ بِخَيْرِ يَوْمٍ مَرَّ عَلَيْكَ مُنْذُ وَلَدَتْكَ أُمُّكَ). قَالَ: قُلْتُ: أَمِنْ عِنْدِكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَمْ مِنْ عِنْدِ ٱللهِ؟ قَالَ: (لاَ، بَلْ مِنْ عِنْدِ ٱللهِ). وَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا سُرَّ ٱسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ، وَكُنَّا نَعْرِفُ ذٰلِكَ مِنْهُ، فَلَمَّا جَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى ٱللهِ وَإِلَى رَسُولِ ٱللهِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ).

قُلْتُ: فَإِنِّي أُمْسِكُ سَهْمِي الَّذِي بِخَيْبَرَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ ٱللهَ إِنَّمَا نَجَّانِي بِالصِّدْقِ، وَإِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ لاَ أُحَدِّثَ إِلَّا صِدْقًا مَا بَقِيتُ. فَوَٱللهِ مَا أَعْلَمُ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ أَبْلاَهُ ٱللهُ فِي صِدْقِ الْحَدِيثِ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَحْسَنَ مِمَّا أَبْلاَنِي، مَا تَعَمَّدْتُ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ إِلَى يَوْمِي هٰذَا كَذِبًا، وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ يَحْفَظَنِي ٱللهُ فِيمَا بَقِيتُ. وَأَنْزَلَ ٱللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ: ﴿لَقَد تَّابَ ٱللهُ

फिर मैंने उन लोगों से पूछा क्या यह मामला जो मेरे साथ पेश आया है, मेरे अलावा किसी और के साथ भी हुआ है? वो कहने लगे, हां! दो और आदमियों ने भी वही कुछ कहा है जो तुमने कहा है और उनको भी वही जवाब मिला जो आपको मिला है। मैंने पूछा, वो दोनों कौन हैं? उन्होंने बताया कि एक मुरारा बिन रबीअ अमरी रजि. और दूसरे हिलाल बिन उमैया वाकफी रजि. हैं। गोया उन्होंने मेरे सामने दो ऐसे नेक आदमियों के नाम लिये जो गजवा बदर में शिरकत कर चुके थे और उनका तर्जे अमल मेरे लिए काबिले तकलीद मिसाल था। चूनांचे उन दोनों को जिक्र सुनकर मैं (ने अपना इरादा बदल दिया और) आगे चल पड़ा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाकी तमाम पीछे रह जाने वालों में से सिर्फ हम तीनों के साथ बातचीत करने से लोगों को मना फरमाया दिया था। लिहाजा लोग हम से दूर दूर रहने लगे और हमारे लिए इस हद तक बदल गये कि मैं महसूस करने लगा कि यह कोई अजनबी सरजमीन है। हम पचास दिन तक इस हाल में रहे, दूसरे दोनों साथी तो थक हार कर घर में बैठ

عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾. فَوَاللَّهِ مَا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ مِنْ نِعْمَةٍ قَطُّ، بَعْدَ أَنْ هَدَانِي اللَّهُ لِلْإِسْلَامِ، أَعْظَمَ فِي نَفْسِي مِنْ صِدْقِي لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، أَنْ لَا أَكُونَ كَذَبْتُهُ فَأَهْلِكَ كَمَا هَلَكَ الَّذِينَ كَذَبُوا، فَإِنَّ اللَّهَ قَالَ لِلَّذِينَ كَذَبُوا - حِينَ أَنْزَلَ الْوَحْيَ - شَرَّ مَا قَالَ لِأَحَدٍ، فَقَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: ﴿سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ﴾.

قَالَ كَعْبٌ: وَكُنَّا تَخَلَّفْنَا أَيُّهَا الثَّلَاثَةُ عَنْ أَمْرِ أُولَئِكَ الَّذِينَ قَبِلَ مِنْهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ حَلَفُوا لَهُ، فَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ، وَأَرْجَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَمْرَنَا حَتَّى قَضَى اللَّهُ فِيهِ، فَبِذَلِكَ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا﴾. وَلَيْسَ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ مِمَّا خُلِّفْنَا عَنِ الْغَزْوِ، إِنَّمَا هُوَ تَخْلِيفُهُ إِيَّانَا، وَإِرْجَاؤُهُ أَمْرَنَا، عَمَّنْ حَلَفَ لَهُ وَاعْتَذَرَ إِلَيْهِ فَقَبِلَ مِنْهُ. [رواه البخاري: ٤٤١٨]

गये और रोते रहे, लेकिन मैं चूंकि सबसे जवान और ताकतवर था, लिहाजा बाहर निकला करता था। मुसलमानों के साथ नमाज में शरीक हुआ करता और बाजारों में फिरा करता था। लेकिन मुझ से कोई आदमी बात न करता। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में भी हाजिर होता, उस वक्त जब आप नमाज के बाद लोगों के साथ तशरीफ फरमा होते, मैं जब आपको सलाम करता तो अपने दिल में यही सोचता रहता कि मेरे सलाम के जवाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लब मुबारक हिले थे या नहीं? फिर मैं आपके करीब ही नमाज पढ़ता और छिपी हुई नजरों से आपकी तरफ देखता रहता। जिस वक्त मैं नमाज की तरफ मुतव्वजा होता तो आप मेरी तरफ देखते और जब मैं आपकी तरफ देखता तो आप दूसरी तरफ देखने लगते। जब लोगों की यह बे तवज्जुही बहुत लम्बी और नाकाबिले बर्दाश्त हो गई तो एक दिन मैं अबू कतादा रजि. के बाग की दीवार फलांग कर अन्दर चला गया। यह साहब मेरे चचाजाद भाई और मेरे प्यारे दोस्त थे। मैंने उन्हें सलाम किया, लेकिन अल्लाह की कसम! उन्होंने मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया। मैंने उनसे कहा, ऐ अबू कतादा रजि.! तुम्हें अल्लाह की कसम देकर पूछता हूँ क्या तुम मुझे

अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दोस्त जानते हो? लेकिन वो खामोश रहे। मैंने उनसे दोबारा यही सवाल किया, लेकिन वो फिर खामोश रहे। मैंने फिर यही बात दोहराई तो कहने लगे, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेहतर जानते हैं। यह सुनकर मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े और मुंह मोड़कर वापिस चला आया और दीवार फलांग कर बाहर आ गया।

कअब रजि. का बयान है कि एक दिन मैं मदीना के बाजार से गुजर रहा था, मैंने देखा कि इलाके शाम का एक नबती जो मदीना में गल्ला फरोख्त करने आया था, लोगों से पूछ रहा है, कोई आदमी है जो मुझे कअब बिन मालिक रजि. का घर बता सके? लोग मेरी तरफ इशारा करके उसे बताने लगे, जब वो मेरे पास आया तो उसने मुझे गस्सान बादशाह का एक खत दिया। जिसमें लिखा हुआ था, मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारे साहब ने तुम पर ज्यादती की है, हालांकि तुम्हें अल्लाह ने इसलिए नहीं बनाया कि तुम जलील व ख्वार और बरबाद रहो, लिहाजा तुम हमारे पास चले आओ। हम तुम्हें बहुत ज्यादा इज्जत व मर्तबा देंगे। मैंने जब यह खत पढ़ा तो दिल में कहा यह भी एक इम्तिहान है और वो खत लेकर चूल्हे की तरफ गया ओर उसे जला दिया। फिर जब पचास दिनों में से चालीस रातें गुजर गई तो मेरे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक कासिद आया और कहने लगा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम अपनी बीवी से दूर हो जाओ। मेरे दोनों साथियों को भी इसी किस्म का हुक्म दिया गया था। मैंने अपनी बीवी से कहा, तुम अपने मैके चली जाओ और जब तक अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस मामले का फैसला न कर दे, वहीं रहना। कअब रजि. का बयान है कि बिलाल बिन उमय्या रजि. की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हलाल बिन उमैया रजि. एक कमजोर और बूढ़ा आदमी है, इसके पास कोई खादिम भी नहीं है तो क्या आप यह भी नापसन्द फरमायेंगे कि मैं उनकी खिदमत करती रहूँ। आपने फरमाया, नहीं। लेकिन तुम उनके करीब न जाना। उसने कहा, अल्लाह की कसम! उसे तो किसी बात का होश ही नहीं और जिस दिन से यह मामला पैश आया है, वो लगातार रो रहे हैं। यह सुनकर मेरे कुछ घर वालों ने मश्वरा दिया कि अगर तुम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी बीवी के सिलसिले में इजाजत ले लो तो क्या हर्ज है? जैसे आपने हलाल बिन उमैया रजि. की बीवी को खिदमत करने की इजाजत दे दी है।

मैंने कहा, अल्लाह की कसम! इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हरगिज इजाजत नहीं मांगूगा। नामालूम मेरे इजाजत मांगने पर आप क्या जवाब दें? क्योंकि मैं एक नौजवान आदमी हूँ। अलगर्ज इसके बाद दस दिन और गुजर गये, यहां तक कि जिस दिन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को हमारे साथ बिल्कुल दूर रहने का हुक्म दिया था। इस दिन से पचास दिन पूरे हो गये तो पचासवीं रात की सुबह को मैं अपने एक घर की छत पर नमाजे फजर पढ़ने के बाद बैठा था और मेरी हालत हुबहू वही थी जिसका जिक्र अल्लाह तआला ने किया है कि मैं अपनी जान से तंग था और जमीन अपनी खुशादगी के बावजूद मेरे लिए तंग हो चुकी थी। कि अचानक मैंने किसी पुकारने वाले की आवाज सुनी। जो सिला पहाड़ी पर चढ़कर अपनी तेज आवाज में पुकार रहा था। ऐ कअब बिन मालिक रजि.! खुश हो जाओ, मैं यह सुनते ही सज्दे में गिर गया और समझ गया कि आजमाईश का वक्त खत्म हो गया है। दरअसल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाजे फज्र के बाद ऐलान फरमाया था कि अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कबूल कर ली है। लिहाजा लोग हमें

खुशखबरी देने के लिए दौड़ पड़े। कुछ लोग खुशखबरी देने के लिए मेरे दूसरे दोनों साथियों की तरफ गये और एक आदमी घोड़ा दौड़ा कर मेरी तरफ चला और एक दौड़ने वाला जो कबीला असलम का आदमी था, दौड़ कर पहाड़ पर चढ़ गया ओर उसकी आवाज घोड़े से तेज निकली। यह आदमी जिसकी आवाज में मैंने खुशखबरी सुनी थी, मेरे पास पहुंचा तो मैंने अपने कपड़े उतार कर खुशखबरी देने वाले को इनाम में पहना दिये। अल्लाह की कसम! मेरे पास उस दिन कपड़ों के अलावा और कोई जोड़ा न था। लिहाजा मैंने दो कपड़े उधार लेकर पहने। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में जाने के लिए चल पड़ा और लोग गिरोह दर गिरोह मुझ से मिलते ओर तौबा कबूल होने की मुबारक देते हुए कहते, तुम को मुबारक हो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी तौबा कबूल फरमा ली और तुम्हें माफ कर दिया।

कअब रजि. बयान करते हैं कि जब मैं मस्जिद में पहुंचा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमां थे और लोग आपके आसपास बैठे थे। मुझे देखते ही तल्हा बिन अब्दुल्लाह रजि. दौड़ते हुए आये और उन्होंने मुसाफा किया और मुझे मुबारकबाद दी। अल्लाह की कसम! मुहाजिरीन में से उनके अलावा और कोई आदमी मेरी तरफ़ उठकर नहीं आया और तल्हा रजि. के इस सलूक को मैं कभी नहीं भूला। कअब रजि. का बयान है कि जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया तो आपने खुशी से दमकते हुए चेहरे के साथ इरशाद फरमाया, तुमको आज का दिन मुबारक हो। यह दिन उन तमाम दिनों में सब से बेहतर है जो तुम्हारी पैदाईश के बाद से आज तक तुम पर गुजरे हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह माफी आपकी तरफ से है या अल्लाह की तरफ से? आपने फरमाया, नहीं यह माफी अल्लाह की तरफ से है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस वक्त खुश होते तो आपका

चेहरा मुबारक इस तरह दमक उठता था, जैसे वो चांद का टुकड़ा हो और हम उस चेहरे को देखकर जान लिया करते थे कि आप खुश हैं। अलगर्ज जब मैं आपके सामने बैठा तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इस तौबा की खुशी में चाहता हूँ कि अपना माल अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बतौर सदका दूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सब नहीं, कुछ माल अपने पास भी रखो। क्योंकि ऐसा करना तुम्हारे लिए बेहतर होगा। मैंने कहा, अच्छा मैं अपना वो हिस्सा जो खैबर में है, रोके लेता हूँ। फिर मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! चूंकि अल्लाह तआला ने मुझे सिर्फ सच बोलने की बरकत से निजात दी है, इसलिए मैं अपनी इस तौबा की खुशी में यह वादा करता हूँ कि जब तक जिन्दा रहूँगा, हमेशा सच बात कहूँगा। चूनांचे अल्लाह की कसम! मेरे इल्म में कोई मुसलमान नहीं है, जिसका सच बोलने के सिलसिले में अल्लाह तआला ने इतना उम्दा इम्तेहान लिया हो, जितना मेरा इस दिन से लिया है, जिस दिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने यह वादा किया था।

मैंने जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बात कही, उस दिन से आज तक कभी जानबूझकर झूट नहीं बोला और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला बाकी बची जिन्दगी में भी मुझे झूट से महफूज रखेगा। इस मौके पर अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह आयत नाजिल फरमाई।

"तहकीक अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहाजिरीन और अनसार की तौबा कबूल कर ली है। अल्लाह तआला के इस कौल तक सच बोलने वालों का साथ दो।"

अल्लाह की कसम! जब से मुझे अल्लाह ने दीने इस्लाम की

रहनुमाई फरमाई है, उसके बाद से अल्लाह तआला ने मुझे जो नसीहतें अता फरमाई हैं, उनमें सबसे बड़ी नसीहत मेरी निगाह से यह है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने सच बोलने की तौफिक अता हुई और मैं झूट बोलकर हलाक न हुआ, जैसे दूसरे वो लोग हलाक हो गये, जिन्होंने झूट बोला था। क्योंकि अल्लाह ने वह्य उतारने के वक्त उन लोगों के बारे में ऐसे अल्फाज इस्तेमाल किये हैं जिससे ज्यादा बुरे अल्फाज किसी और के लिए इस्तेमाल नहीं फरमाये। फरमाने इलाही है, तुम्हारे लिए जल्द ही अल्लाह की कसमें उठायेंगे जब तुम उनकी तरफ लौटेंगे, इस आयत तक तहकीक अल्लाह तआला बद किरदार लोगों से राजी नहीं होगा।

कअब रजि. का बयान है कि हम तीनों का मामला उन लोगों के मामले से पीछे कर दिया गया था, जिनकी मजबूरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी कसमों की वजह से कबूल कर ली थी। और उनसे बैअत ली थी और उनके गुनाह माफ होने की दुआ भी फरमाई थी और हमारी तकदीर का फैसला लटका दिया था, यहाँ तक कि अल्लाह ने खुद उसका फैसला फरमाया "और वो तीनों जिनका फैसला पीछे कर दिया गया था, उनकी तोबा भी कबूल की गई।

इस आयत में "खुल्लीफुं" से मुराद यह नहीं है कि उन्होंनें जिहाद से पीछे छोड़ दिया गया था, बल्कि इससे मुराद यही है कि उन्हें पीछे छोड़ दिया गया था और उनके मुकद्दर का फैसला पीछे कर दिया गया था, जबकि उन लोगों की मजबूरी कबूल कर ली गई थी, जिन्होंने कसमें उठा उठाकर मजबूरी पेश की थी।

फायदेः मालूम हुआ कि फर्ज की अदायगी में सुस्ती मामूली चीज नहीं बल्कि कभी कभी इन्सान जानबूझकर सुस्ती करने में किसी ऐसी गलती कर बैठता है जिसका शुमार बड़े गुनाहों में होता है। निज इससे पता

चलता है कि कुफ्र व इस्लाम की कशमकश का मामला किस कद्र नजाकत का हामिल है, इसमें कुफ्र का साथ देना तो दरकिनार बल्कि जो आदमी इस्लाम का साथ देने में किसी एक मौका भी कौताही बरत जाता है, उसकी भी जिन्दगी की इबादत गुजारियां खतरे में पड़ जाती है।

बाब 47: हजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईरान का बादशाह (किसरा) और रूम का बादशाह (केसर) को खत लिखना।

٤٧ - باب: كِتَابُ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى كِسْرَى وَقَيْصَرَ

1700: अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जंगे जमल में मुझे इस बात ने नफा पहुंचाया जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना था, जबकि मैं असहाब जमल के साथ शरीक होकर लड़ाई के लिए तैयार था और वो यह है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह खबर पहुंची कि फारिस वालों ने अपने ऊपर किसरा की बेटी को बादशाह बना लिया है तो आपने फरमाया, जो कौम किसी औरत को अपने ऊपर हाकिम बनायेगी वो कभी फलाह से हमकिनार न होगी।

١٧٠٠ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي ٱللهُ بِكَلِمَةٍ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَيَّامَ الْجَمَلِ، بَعْدَ مَا كِدْتُ أَنْ أَلْحَقَ بِأَصْحَابِ الْجَمَلِ فَأُقَاتِلَ مَعَهُمْ، قَالَ: لَمَّا بَلَغَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَنَّ أَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّكُوا عَلَيْهِمْ بِنْتَ كِسْرَى، قَالَ: (لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ ٱمْرَأَةً). [رواه البخاري: ٤٤٢٥]

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि औरत को बादशाह बनाना जाईज नहीं है, खिलाफवर्जी की सूरत में बुरे अनजाम से दोचार होना यकीनी है, जैसा कि पाकिस्तान इस का दोबार कड़वा तर्जुबा कर चुका है। जनाना हुकूमत की वजह से जो मुल्क में फसाद फैला है उसकी अभी तक भरपाई नहीं हो सकी।

बाब 48: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी और वफात का बयान।

٤٨ - باب: مَرَضُ النَّبِيِّ ﷺ وَوَفَاتُهُ

1701. आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मर्जे वफात में फातिमा रजि. को बुलाया और उनके कान में बात कही तो वो रोने लगीं। फिर दोबारा बुलाया और कुछ आहिस्ता से फरमाया तो वो हंसने लगी। हमने फातिमा रजि. से इस बाबत पूछा तो उन्होंने कहा, पहले आपने यह फरमाया कि इस मर्ज में मेरी रूह कब्ज होगी तो यह सुनकर मैं रोने लगी। फिर दूसरी बार यह फरमाया, ऐ फातिमा रजि.! मेरे बाद अहले बैअत में से पहले तेरी रूह कब्ज होगी, यानी तू मुझ से मिलेगी यह सुनकर मैं हसंने लगी।

١٧٠١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: دَعا النَّبِيُّ ﷺ فاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ في شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ، فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبكَتْ، ثُمَّ دَعاهَا فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَضَحِكَتْ، فَسَأَلْنَاهَا عَنْ ذٰلِكَ، فَقَالَتْ سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ: أَنَّهُ يُقْبَضُ في وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فأخبرَني أني أوَّلُ أهْلِ بَيْتِهِ يَتْبَعُهُ، فَضَحِكْتُ. [رواه البخاري: ٤٤٣٣، ٤٤٣٤]

फायदे: एक रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी बार कान में यह कहा था कि ऐ फातिमा रजि.! तुम जन्नत में औरतों की सरदार होगी, गोया हंसने के दो असबाब थे।

(फतहुलबारी 8/138)

1702: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना करती कि कोई पैगम्बर उस वक्त तक फौत नहीं होता जब तक उसको इख्तियार

١٧٠٢ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لاَ يَمُوتُ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ في مَرَضِهِ الَّذِي ماتَ فِيهِ، وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ،

يقول: ﴿مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِم﴾. الآيَةَ، فَظَنَنْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [رواه البخاري: ٤٤٣٥]

नहीं दिया जाता कि दुनिया इख्तियार करे या आखिरत मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वफात के करीब सुना, जब आपका गला बैठ गया था कि आप यह पढ़ते हैं, या अल्लाह उन लोगों के साथ, जिन पर तूने ईनाम किया तो मैंने भी समझ लिया कि आपको इख्तियार दिया गया है।

फायदे: चूनांचे आपने आखिरत को इख्तियार फरमाया, जैसा कि दूसरी रिवायत में इसकी सराहत है। (सही बुखारी **4436**)

١٧٠٣ : وَعَنْهَا رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَحِيحٌ يَقُولُ: (إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الجَنَّةِ، ثُمَّ يُحَيَّا، أَوْ يُخَيَّرُ). فَلَمَّا اشْتَكَى وَحَضَرَهُ الْقَبْضُ، وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ، فَلَمَّا أَفَاقَ شَخَصَ بَصَرُهُ نَحْوَ سَقْفِ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ: (اللَّهُمَّ فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى). فَقُلْتُ: إِذًا لا يَخْتَارُنَا، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ حَدِيثُهُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ. [رواه البخاري: ٤٤٣٧]

1703: आइशा रजि. से ही एक और रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सेहत की हालत में फरमाते थे कि कोई नबी उस वक्त तक फौत नहीं हुआ, जब तक जन्नत में उसका मकाम उसे नहीं दिखाया जाता। फिर उसे जिन्दगी या (मौत का) इख्तियार दिया जाता है, जब आप बीमार हुए और वफात का वक्त करीब आया तो आप मेरी रान पर सर रखे हुए थे, पहले आप पर गशी तारी हुई। फिर होश आ गया तो छत की तरफ देखकर फरमाया, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रफीक आला (अल्लाह) से मिला दे। उस वक्त मैंने दिल में कहा, अब आप हमारे पास रहना पसन्द नहीं करेंगे और उससे मुझे आपकी इस हदीस की तसदीक हो गई जो आप बहालत सेहत फरमाया करते थे।

फायदे: एक दूसरी रिवायत में है कि आपने हजरत जिब्राईल, मिकाईल और इस्राफिल अलैहि. के साथी बनने को पसन्द फरमाया।

 (फतहुलबारी 8/137)

1704: आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बीमार हुए तो मौअव्वेजात (इख्लास, अलफलक, अन्नास) पढ़कर खुद पर दम किया करते थे। फिर जब आपकी बीमारी ने शिद्दत इख्तयार कर ली तो मैं खुद मोअव्वेजात पढ़कर आपके हाथ मुबारक पर दम करके आपके मुबारक जिस्म पर आप ही का हाथ मुबारक बरकत की उम्मीद से फैरा करती थी।

١٧٠٤ : وعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ إِذَا ٱشْتَكَى نَفَثَ عَلَى نَفْسِهِ بِالمعَوِّذَاتِ، وَمَسَحَ عَنْهُ بِيَدِهِ، فَلَمَّا ٱشْتَكَى وَجَعَهُ ٱلَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، طَفِقْتُ أَنْفِثُ عَلَيهِ بِالْمعَوِّذَاتِ الَّتِي كانَ يَنْفِثُ، وَأَمْسَحُ بِيَدِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْهُ. [رواه البخاري: ٤٤٣٩]

फायदे: दूसरी रिवायत में है कि एक रावी ने हजरत इमाम जहरी से पूछा कि दम कैसे किया जाता है तो आपने बताया, यह सूरतें पढ़कर दोनों हाथों पर दम करें, फिर वो हाथ अपने चेहरे (और सारे बदन) पर फैरें । (सही बुखारी 5735)

1705: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी वफात के करीब मुझ से अपनी कमर लगाये हुए बैठे थे। मैंने गौर से सुना तो आप यह दुआ पढ़ रहे थे। "ऐ अल्लाह! मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम फरमा और मुझे मेरे रफीक आला से मिला दे।"

١٧٠٥ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: قَالَتْ أَصْغَيْتُ إِلى النَّبِيِّ ﷺ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ، وَهُوَ مُسْنِدٌ إِلَيَّ ظَهْرَهُ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لِي وَٱرْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ). [رواه البخاري: ٤٤٤٠]

फायदे: इमाम बुखारी रह. ने इस हदीस से यह भी मतलब निकाला है कि अगर मौत के आसार नजर आने लगें तो अच्छी मौत की तमन्ना

करने में कोई हर्ज नहीं और इसके अलावा मौत की तमन्ना करना जाईज नहीं। (फतहुलबारी 10/130)

١٧٠٦ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا - في رواية - قالَتْ: ماتَ النَّبِيُّ ﷺ وَإِنَّهُ لَبَيْنَ حاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي، فَلاَ أَكْرَهُ شِدَّةَ المَوْتِ لِأَحَدٍ أَبَدًا بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ٤٤٤٦]

1706: आइशा रजि. से ही रिवायत है, एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर मुबारक वफात के वक्त मेरी ठोडी और सीने के बीच था और जब से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मौत की सख्ती देखी है, उसके बाद मैं मौत की सख्ती को किसी के लिए बुरा नहीं समझती।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मौत बहुत सख्त वाकेअ हुई और उस सख्ती में आपके लिए दोगुना सवाब होगा। आप पानी लेकर बार बार मुंह पर फैरते और फरमाते, ला इलाहा इल्लल्लाहु मौत में बहुत सख्तीयां हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मदद फरमा।

 (फतहुलबारी 8/140)

١٧٠٧ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ خَرَجَ مِنْ عِنْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَقَالَ النَّاسُ: يَا أَبَا الحَسَنِ، كَيْفَ أَصْبَحَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ؟ فَقَالَ: أَصْبَحَ بِحَمْدِ ٱللهِ بَارِئًا، فَأَخَذَ بِيَدِهِ عَبَّاسُ ٱبْنُ عَبْدِ المُطَّلِبِ فَقَالَ لَهُ: أَنْتَ وَٱللهِ بَعْدَ ثَلاَثٍ عَبْدُ العَصَا، وَإِنِّي وَٱللهِ لَأَرَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ سَوْفَ يُتَوَفَّى مِنْ وَجَعِهِ هٰذَا، إِنِّي لَأَعْرِفُ وُجُوهَ بَنِي عَبْدِ المطَّلِبِ عِنْدَ

1707: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि एक दिन अली बिन अबी तालिब रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से आये, जबकि आप मर्जे वफात में मुब्तला थे। लोगों ने पूछा, ऐ अबू हसन रजि! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब कैसे हैं? उन्होंने कहा, अलहम्दु लिल्लाह, अच्छे हैं! तब अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. ने उनका हाथ पकड़कर कहा, अल्लाह की कसम! तुम तीन दिन के

الْمَوْتِ، اذْهَبْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلْنَسْأَلْهُ فِيمَنْ هٰذَا الأَمْرُ، إِنْ كَانَ فِينَا عَلِمْنَا ذٰلِكَ، وَإِنْ كَانَ فِي غَيْرِنَا عَلِمْنَاهُ، فَأَوْصَى بِنَا. فَقَالَ عَلِيٌّ: إِنَّا وَاللهِ لَئِنْ سَأَلْنَاهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَمَنَعَنَاهَا لاَ يُعْطِينَاهَا النَّاسُ بَعْدَهُ، وَإِنِّي وَاللهِ لاَ أَسْأَلُهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٤٤٤٧]

बाद महकूम (जिस पर हुकूमत की जायेगी) और लाठी के गुलाम बन जाओगे। क्योंकि अल्लाह की कसम! मेरे ख्याल के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनकरीब इस मर्ज से वफात पा जायेंगे। मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद का मुंह देखकर पहचान लेता हूँ। जब वो मरने वाले होते हैं। आओ हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाकर इस हुक्म के बारे में पूछें कि आपके बाद कौन आपका खलीफा होगा? अगर आपने हम लोगों को खिलाफत दी तो मालूम हो जायेगा और अगर आपने किसी दूसरे को खिलाफत सौंपी तो भी मालूम हो जायेगा और हमारे बारे में अच्छा सलूक की उसे वसीयत फरमायेंगे। अली रजि. ने कहा, अल्लाह की कसम! अगर हम आपसे इसकी बाबत पूछें और आपने हमें महरूम फरमा दिया तो आपके बाद लोग हमें कभी खलीफा न बनायेंगे। अल्लाह की कसम! मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खिलाफत के बारे में सवाल नहीं करूंगा।

फायदे: जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फौत हो गये तो हजरत अब्बास रजि. ने हजरत अली रजि. से कहा, हाथ फैलाओ, मैं तुम्हारी बैअत करता हूँ। लेकिन हजरत अली रजि. ने ऐसा न किया। इसके बाद हजरत अली रजि. कहा करते थे, काश! मैं अब्बास रजि. का कहा मान लेता। (फतहुलबारी 8/143)

नोट : अगर हजरत अली रजि. की खिलाफत के बारे में आपने वसीअत फरमाई थी और आपके पास वह्य थी तो उन्हें यह कहने की क्या जरूरत थी कि आपने अगर हमें महरूम कर दिया तो आपके बाद लोग हमें कभी खलिफा नहीं बनायेंगे। (अलवी)

١٧٠٨ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّها كانَتْ تَقُولُ: إِنَّ مِنْ نِعَمِ ٱللهِ عَلَيَّ : أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ تُوُفِّيَ فِي بَيْتِي، وَفِي يَوْمِي، وَبَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي، وَأَنَّ ٱللهَ جَمَعَ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ: دَخَلَ عَلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ، وَبِيَدِهِ السِّوَاكُ، وَأَنَا مُسْنِدَةٌ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَرَأَيْتُهُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ، وَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ السِّوَاكَ، فَقُلْتُ: آخُذُهُ لَكَ؟ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ: (أَنْ نَعَمْ). فَتَنَاوَلْتُهُ، فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ، وَقُلْتُ: أُلَيِّنُهُ لَكَ؟ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ: (أَنْ نَعَمْ). فَلَيَّنْتُهُ، فَأَمَرَّهُ، وَبَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ أَوْ عُلْبَةٌ - يَشُكُّ عُمَرُ - فِيهَا مَاءٌ، فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي المَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ، يَقولُ: (لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ). ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ، فَجَعَلَ يَقُولُ: (فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى). حَتَّى قُبِضَ وَمالَتْ يَدُهُ. [رواه البخاري: ٤٤٤٩]

1708: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अल्लाह के अहसानात में से एक अहसान मुझ पर यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी बारी के दिन मेरे घर में वफात पाई। वफात के वक्त आपका सर मेरे फैफड़े और गर्दन के बीच था और अल्लाह ने आखिर वक्त मेरा और आपका थूक मिला दिया था, क्योंकि मेरे भाई अब्दुल रहमान रजि. एक ताजा मिस्वाक पकड़े हुए आये। मैं उस वक्त आपको सहारा दिये हुए थी। मैंने देखा कि आप मिस्वाक को टिकटिकी लगाकर देख रहे हैं और मुझे मालूम था कि आप मिस्वाक को पसन्द करते थे। मैंने कहा, यह मिस्वाक आपके लिए ले लूं। आपने सर मुबारक से इशारा करके फरमाया, हां! चूनांचे मैंने वो मिस्वाक लेकर आपको दे दी। लेकिन आपको सख्त महसूस हुई। इसलिए मैंने कहा, मैं इसे नर्म कर दूं? आपने सर के इशारे से फरमाया, हां! मैंने उसे चबाकर नर्म कर दिया। फिर आपने उसे दांतों पर फैरा और आपके सामने एक पानी का मश्कीजा या प्याला था। उसमें आप हाथ तर कर के मुंह पर फैरते और फरमाते, ला इलाहा इल्लल्लाह, मौत में बड़ी सख्तीयां होती हैं। फिर आपने अपना हाथ उठाकर फरमाया, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रफीक आला से मिला दे। यहाँ तक कि आपकी रूह मुबारक निकल गई और हाथ नीचे ढलक गया।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने अपने फजलो करम से दुनिया के आखरी और आखिरत के पहले दिन मेरा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का थूक इकट्ठा कर दिया। (सही बुखारी 4451) में इशारा था कि सिद्दीका-ए-कायनात और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया और आखिरत में एक जगह रहेंगे।

١٧٠٩ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَدَدْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِي مَرَضِهِ، فَجَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا: أَنْ لاَ تَلُدُّونِي، فَقُلْنَا: كَرَاهِيَةُ المَرِيضِ لِلدَّوَاءِ، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: (أَلَمْ أَنْهَكُمْ أَنْ تَلُدُّونِي). قُلْنَا: كَرَاهِيَةُ المَرِيضِ لِلدَّوَاءِ، فَقَالَ: (لاَ يَبْقَىٰ أَحَدٌ فِي الْبَيْتِ إِلَّا لُدَّ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَّا الْعَبَّاسَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ). [رواه البخاري: ٤٤٥٨]

1709: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बीमारी की हालत में मुंह में बूंद-बूंद दवा पिलाना चाही तो आपने मना फरमाया। हम समझे कि आपका मना करना ऐसा है, जैसे हर मरीज दवा को नापसन्द करता है। फिर जब आपको होश आया तो फरमाया, मैं तुम्हें मना करता रहा कि मुझे बूंद बूंद दवा मत पिलाओ। हमने कहा, कि मरीज तो मना किया ही करता है। आपने फरमाया, घर में कोई आदमी बाकी न रहे, सबके मुह में दवा डाली जाये। सिर्फ अब्बास रजि. को छोड़ दो, क्योंकि वो इस वक्त मौजूद न थे।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम घरवालों को अदब सिखाने के लिए उनके मुंह में दवा डालने का इहतमाम फरमाया, ताकि आइन्दा ऐसी हरकत न करें। यह काम बदला लेने या सजा देने के तौर पर न था। (फतहुलबारी 8/147)

١٧١٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ ﷺ جَعَلَ

1710: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु

يَتَغَشَّاهُ، فَقَالَتْ فاطِمَةُ: وَاكَرْبَ أَبَاهُ، فَقَالَ لَهَا: (لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ هٰذَا الْيَوْمِ). [رواه البخاري: ٤٤٦٢]

अलैहि वसल्लम पर जब बीमारी की शिद्दत हुई तो आप बेहोश हो गये। फातिमा रजि. कहने लगी, उफ मेरे बाप की तकलीफ! आपने फरमाया, तेरे बाप को इस दिन के बाद फिर तकलीफ नहीं होगी।

फायदे: इस रिवायत के आखिर में है कि जब आप फौत हो गये तो हजरत फातिमा रजि. गम की शिद्दत से कहने लगी "हाय अबू जान! आपने अपने परवरदिगार का बुलावा कबूल कर लिया, हाये पेदेरे मुहतरम। आपने जन्नते फिरदोश में ठिकाना बनाया, हाये प्यारे बाप! मैं हजरत जिब्राईल अलैहि. को आपकी वफात की खबर सुनाती हूँ।

 (फतहुलबारी 4462)

٤٩ - باب: وَفَاةُ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 49: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात का बयान।

١٧١١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ٱبْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ. [رواه البخاري: ٤٤٦٦]

1711. आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तरैसठ बरस की उम्र में इन्तेकाल फरमाया।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मक्का में दस साल कुरआन नाजिल होता रहा और दस साल मदीना में ठहरे। यह रिवायत हजरत आइशा रजि. के खिलाफ नहीं, क्योंकि पहली रिवायत में वहय के रूक जाने की मुद्दत को शामिल नहीं किया गया, जो तीन साल है। (फतहुलबारी 8/151)



किताबु तफसीरील कुरआनी

कुरआन की तफसीर के बयान में

बाब 1. सूरह फातिहा (अल्हम्दु शरीफ) की तफसीर का बयान।

١ - باب: مَا جَاءَ فِي فَاتِحَةِ الْكِتَابِ

1712. अबू सईद बिन मुअल्ला रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं मस्जिद में नमाज पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाया, लेकिन मैं उस वक्त हाजिर न हो सकता। नमाज पढ़ कर गया तो कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं नमाज पढ़ रहा था, आपने फरमाया, अल्लाह तआला का यह इरशाद गरामी नहीं है। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म मानों, जब वो तुम्हें इस जिन्दगी अता करने वाली चीज की दावत दे। फिर फरमाया कि मैं तेरे मस्जिद से बाहर जाने से पहले तुम्हें एक ऐसी सूरत बताऊंगा जो सारी सूरतों से बढ़ कर है। फिर मेरा हाथ थाम लिया, जब आपने मस्जिद से बाहर आने का इरादा फरमाया तो

١٧١٢ : عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ المعلَّى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فِي المَسْجِدِ، فَدَعَانِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي، فَقَالَ: (أَلَمْ يَقُلِ ٱللهُ: ﴿ٱسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ﴾؟). ثُمَّ قَالَ لِي: (لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ السُّوَرِ فِي القُرْآنِ، قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ المَسْجِدِ). ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ، قُلْتُ لَهُ: أَلَمْ تَقُلْ: (لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ سُورَةٍ فِي القُرْآنِ؟) قَالَ: (﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾: هِيَ السَّبْعُ المَثَانِي، وَالقُرْآنُ العَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ). [رواه البخاري: ٤٤٧٤]

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने फरमाया था, मैं तुझे एक सूरत बताऊँगा जो कुरआन की सब सूरतों से बढ़कर है। आपने फ़रमाया, वो सूरह अलहम्द यानी फातिहा है। इसमें सात आयत हैं जो हर रकअत में बार बार पढ़ी जाती है और यही सूरत वो बड़ा कुरआन है जो मुझे दिया गया है।

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: तुझे ऐसी सूरत न बताऊँ कि इस तरह की सूरत तौरात, अनजिल, जबूर और फुरकान में नहीं उतरी। इस हदीस में सूरह फातिहा की अजमत का बयान है। (फतहुलबारी 8/158)

तफसीर सूरह बकरा

बाब 2: फरमाने इलाही : तुम दानिस्ता तौर पर अल्लाह के शरीक न बनाओ।

٢ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

1713: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा गुनाह कौनसा है? आपने फरमाया कि तू किसी गैर अल्लाह को अल्लाह का शरीक ठहराये। हालांकि वो तेरा खालिक है। मैंने कहा, वाकई यह तो बुरी बात और बड़ा गुनाह है। मैंने फिर पूछा, इसके बाद कौनसा गुनाह बड़ा है? आपने फरमाया कि तू अपने बच्चों को इसलिए मार डाले कि वो तेरे साथ खाने में शरीक होंगे। मैंने फिर कहा, इसके बाद कौनसा गुनाह बड़ा है। आपने फरमाया कि तू अपने पड़ौसी की बीवी से बदकारी करे।

١٧١٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ عِنْدَ ٱللهِ؟ قَالَ: (أَنْ تَجْعَلَ لِلهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ). قُلْتُ: إِنَّ ذٰلِكَ لَعَظِيمٌ، قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: (وَأَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ تَخَافُ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ). قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: (أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ). [رواه البخاري: ٤٤٧٧]

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में सहाबी का बयान है कि अल्लाह तआला ने इन बातों की तसदीक इल अलफाज में नाजिल फरमाई, "और वो लोग जो अल्लाह के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते और न ही किसी नाहक जान को कत्ल करते हैं और वो जिना भी नहीं करते और जो इन्सान यह काम करेगा, उसने बड़े गुनाह का ऐरतकाब किया। कयामत के दिन उसे दो गुना अजाब दिया जायेगा।

 (सही बुखारी 7532)

٣ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ﴾

बाब 3: फरमाने इलाही: "और हमने तुम पर बादलों का साया किया और तुम्हारे लिए मन्ना व सलवा (खाने का नाम) उतारा"

١٧١٤ : عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ، وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ). [رواه البخاري: ٤٤٧٨]

1714: सईद बिन जैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खुंबी "मन" की एक किस्म है और उसका पानी आंख की बीमारी के लिए फायदेमन्द है।

फायदे: खुंबी का खालिस पानी इस्तेमाल करना आंखों की रोशनी के लिए बहुत फायदेमन्द है। यह खालिस इस बिना पर है कि इसके हलाल होने में जरा भी शक नहीं। इससे यह भी मालूम हुआ कि खालिस हलाल का इस्तेमाल नजर के लिए बहुत फायदेमन्द है और हराम इसके लिए नुकसान देह है। (फतहुलबारी 10/164)

٤ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ﴾

बाब 4: फरमाने इलाही: "जब हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम इस गांव में दाखिल हो जाओ।"

1715: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, बनी इस्राईल को हुक्म दिया गया था कि वो दरवाजे से सज्दा करते हुए और गुनाहों की माफी मांगते हुए दाखिल हो जाओ तो वो सुरीन के बिल घसीटते हुए दाखिल हुए और माफी मांगने की बजाये वो बाली में दाना कहने लगे।

١٧١٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (قِيلَ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ: ﴿وَٱدْخُلُوا ٱلْبَابَ سُجَّكَدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ﴾. فَدَخَلُوا يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْتَاهِهِمْ، فَبَدَّلُوا، وَقَالُوا: حِنْطَةٌ، حَبَّةٌ فِي شَعَرَةٍ). [رواه البخاري: ٤٤٧٩]

फायदेः इस तरह उन जालिमों ने हुक्म की तामील के बजाये कौल और अमल में मुखालफत की इस पर ज्यादा यह कि उन्होंने रद्दो बदल भी किये। चूनांचे इस बिना पर वो संगीन सजा से दोचार हुए।

बाब 5: फरमाने इलाही : "हम जिस आयत को मनसूख करते हैं या उसे फरामोश (भूला देना) करा देते हैं, तो इससे बेहतर या इस जैसी कोई और आयत भेज देते हैं।"

٥ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا نَنسَخْ مِنْ ءَايَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ مِثْلِهَا﴾

1716: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि उमर रजि. फरमाया करते थे, हम लोगों में उबे बिन कअब रजि. बड़े कारी और अली रजि. बेहतरीन काजी हैं। लेकिन हम उबे बिन कअब रजि. की एक बात नहीं मानते, वो कहते हैं कि मैं तो कुरआन की किसी आयत की तिलावत नहीं छोड़ूंगा। जिसे मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुन लिया है, हालांकि

١٧١٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَقْرَؤُنَا أُبَيٌّ، وَأَقْضَانَا عَلِيٌّ، وَإِنَّا لَنَدَعُ مِنْ قَوْلِ أُبَيٍّ، وَذَاكَ أَنَّ أُبَيًّا يَقُولُ: لَا أَدَعُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَقَدْ قَالَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿مَا نَنسَخْ مِنْ ءَايَةٍ أَوْ نُنسِهَا﴾. [رواه البخاري: ٤٤٨١]

अल्लाह तआला फरमाते हैं: "हम जिस आयत को मनसूख करते या फरामोश करा देते हैं...." आखिर तक।

फायदे: हजरत उमर रजि. के फरमान का मतलब यह है कि कुरआन करीम में नस्ख (एक हुक्म को खत्म करके दूसरा हुक्म लागू करना) साबित है, लेकिन हजरत उबे बिन कअब रजि. बाज ऐसी आयात भी पढ़ते थे, जिनकी तिलावत मनसूख हो चुकी थी, लेकिन उन्हें नस्ख की खबर न पहुंची थी।

٦ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ﴾

बाब 6: फरमाने इलाही: "यह लोग इस बात को कह रहे हैं कि अल्लाह औलाद रखता है।"

١٧١٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (قَالَ اللهُ: كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ، فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ فَزَعَمَ أَنِّي لَا أَقْدِرُ أَنْ أُعِيدَهُ كَمَا كَانَ، وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ لِي وَلَدٌ، فَسُبْحَانِي أَنْ أَتَّخِذَ صَاحِبَةً أَوْ وَلَدًا). [رواه البخاري: ٤٤٨٢]

1717: इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि अल्लाह तआला कहते हैं कि इब्ने आदम ने मुझे झूटा करार दिया है और मुझे गाली दी है। हालांकि उसे यह हक नहीं है। झूटा इस तरह करार दिया कि उसके ख्याल के मुताबिक मैं उसे कयामत के दिन असली हालत पर नहीं उठा सकता और गाली देना यह है कि वो कहता है "मेरी भी (अल्लाह की) औलाद है, हालांकि मैं इस बात से पाक हूँ कि किसी को बीवी या बच्चा ठहराऊं"

फायदे: खैबर के यहूदी हजरत उजैद रजि. को अल्लाह तआला का बेटा और नजरान के ईसाई हजरत ईसा अलैहि. को फरजन्दे इलाही और मुश्रिकीन मक्का फरिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहते थे। इनकी

तरदीद में यह आयत उतरी। (फतहुलबारी 8/168)

बाब 7: फरमाने इलाही: "और जिस मकाम पर हजरत इब्राहिम अलैहि. ठहरे हुए थे, उसे नमाज की जगह बना लो।"

٧ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى﴾

1718. अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि उमर रजि. ने फरमाया मेरी तीन बातें बिल्कुल वहय के मुताबिक हुई, या अल्लाह तआला ने तीन बातों में मेरे साथ इत्तेफाक किया (अव्वल) मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर आप मकामे इब्राहिम अलैहि. को जाये-नमाज करार दे लें तो बहुत अच्छा हो। उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी, मकामे इब्राहिम अलैहि. को जाये नमाज बनाओ, (दूसरी) मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपके पास अच्छे बुरे सब किस्म के लोग आते हैं। अगर आप अपनी बीवियों को पर्दे का हुक्म दे दें तो मुनासिब है। उस वक्त अल्लाह तआला ने पर्दे की आयत नाजिल फरमाई। (तीसरी) और जब मुझे मालूम हुआ कि आप किसी बीवी पर नाराज हैं। मैं उनके पास गया और उनसे कहा, देखो तुम इस किस्म की बातों से बाज आ जाओ वरना अल्लाह अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तुम से बेहतर बीवियां बदलकर देगा। लेकिन जब

١٧١٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: وَافَقْتُ ٱللهَ فِي ثَلاثٍ، أَوْ وَافَقَنِي رَبِّي فِي ثَلاثٍ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لَوِ ٱتَّخَذْتَ مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى، وَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، يَدْخُلُ عَلَيْكَ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ، فَلَوْ أَمَرْتَ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِٱلْحِجَابِ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ آيَةَ ٱلْحِجَابِ، قَالَ: وَبَلَغَنِي مُعَاتَبَةُ النَّبِيِّ ﷺ بَعْضَ نِسَائِهِ، فَدَخَلْتُ عَلَيْهِنَّ، قُلْتُ: إِنِ ٱنْتَهَيْتُنَّ أَوْ لَيُبْدِلَنَّ ٱللهُ رَسُولَهُ ﷺ خَيْرًا مِنْكُنَّ، حَتَّى أَتَيْتُ إِحْدَى نِسَائِهِ، قَالَتْ: يَا عُمَرُ، أَمَا فِي رَسُولِ ٱللهِ ﷺ مَا يَعِظُ نِسَاءَهُ، حَتَّى تَعِظَهُنَّ أَنْتَ؟ فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿عَسَىٰ رَبُّهُۥٓ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُۥٓ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنكُنَّ مُسْلِمَاتٍ﴾ الآيَةَ. [رواه البخاري: ٤٤٨٣]

मैं आपकी एक बीवी के पास गया तो वो बोल उठी, ऐ उमर रजि.! तुम जो नसीहत करते हो तो क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों को नसीहत नहीं कर सकते? तब अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी "अगर पैगम्बर तुम्हें तलाक दे दे तो अजब नहीं कि उनका परवरदिगार तुम्हारे बदले में उनको तुम से बेहतर बीवियां दे दे जो मुसलमान हों" आखिर तक।

फायदे: मकामे इब्राहीम बैतुल्लाह से मिला हुआ था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हजरत अबू बकर रजि. के जमाने तक अपने पहले मकाम पर रहा। हजरत उमर रजि. ने देखा कि इससे तवाफ करने वालों और नमाजियों को तकलीफ होती है तो आपने उसे पीछे हटा दिया। (फतहुलबारी 8/169)

٨ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿قُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا﴾

बाब 8: फरमाने इलाही : तुम कहो कि हम अल्लाह पर और जो किताब हम पर उतारी गई है, उस पर ईमान लाये।"

١٧١٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَقْرَؤُونَ التَّوْرَاةَ بِالْعِبْرَانِيَّةِ، وَيُفَسِّرُونَهَا بِالْعَرَبِيَّةِ لأَهْلِ الإِسْلاَمِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللَّهِ ﷺ: (لاَ تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلاَ تُكَذِّبُوهُمْ، وَ﴿قُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا﴾ الآيَةَ). [رواه البخاري: ٤٤٨٥]

1719: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि यहूदी अहले किताब तौरात को इबरानी जबान में पढ़ा करते और उसका तर्जुमा मुसलमानों के लिए अरबी जबान में करते तो आपने फरमाया कि तुम अहले किताब को सच्चा समझो, न झूटा कहो, बल्कि आम तौर पर कहो "हम अल्लाह पर और जो किताब हम पर नाजिल की गई है, उस पर ईमान लाये हैं।" आखिर तक।

फायदे: यह हुक्मे नबवी यहूदियों की ऐसी बातों के मुताल्लिक है जिनका सही या गलत होना मुमकिन हो, लेकिन जो बातें हमारी शरीयत के

मुताबिक हैं, उनकी तसदीक और जो बातें हमारी शरीअत के मुखालिफ हैं उनकी तकजीब करना इस हुक्म में शामिल नहीं।

 (फतहुलबारी 8/170)

٩ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَٰكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ﴾

बाब 9: फरमाने इलाही : "और इसी तरह हमने तुम्हें बीच वाली उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो।"

١٧٢٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (يُدْعى نُوحٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ يَا رَبِّ، فَيَقُولُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ، فَيُقَالُ لأُمَّتِهِ: هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: ما أَتَانَا مِنْ نَذِيرٍ، فَيَقُولُ: مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ، فَيَشْهَدُونَ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ: ﴿وَيَكُونَ ٱلرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾. فَذٰلِكَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَٰكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ وَيَكُونَ ٱلرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾). [رواه البخاري: ٤٤٨٧]

1720: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत के दिन जब नूह अलैहि. को बुलाया जायेगा तो वो कहेंगे, परवरदिगार मैं हाजिर हूँ। जो इरशाद हो, बजा लाऊंगा। परवरदिगार फरमायेगा, क्या तुमने लोगों को हमारे अहकाम बता दिये थे। वो कहेंगे, हां! फिर उनकी उम्मत से पूछा जायेगा, क्या उसने मेरा हुक्म पहुंचाया था। वो कहेंगे, हमारे पास कोई डराने वाला आया ही नहीं तो अल्लाह नूह अलैहि. से फरमायेगा, तेरा कोई गवाह है? वो कहेंगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी उम्मत गवाह है। फिर इस उम्मत के लोग गवाही देंगे कि नूह अलैहि. ने अल्लाह का पैगाम पहुंचाया था और पैगम्बर तुम पर गवाह बनेंगे। अल्लाह तआला इस इरशाद गरामी का यही मतलब है और इसी तरह हमने तुम्हें बीच वाली उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो. ....आखिर तक।

फायदे: एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला इस उम्मत से पूछेगा, तुम्हें इस बात का इल्म कैसे हुआ? वो कहेंगे कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खबर दी थी कि तमाम रसूलों ने अपनी अपनी उम्मत को अल्लाह का हुक्म पहुंचा दिया था और उनकी खबर सही है। (फतहुलबारी 8/172)

नोट : इससे साबित हुआ कि शहादत के लिए किसी चीज का देखना या वहां हाजिर होना जरूरी नहीं है। बल्कि इल्म व इत्लाअ होना काफी है, वरना उम्मते मुहम्मदीया, नूह अलैहि. के हक में गवाही कैसे देंगे। क्या वो हाजिर नाजिर थी? (अलवी)

बाब 10: फरमाने इलाही: "फिर जहां से लोग वापिस होते हैं वहां से तुम भी वापिस हुआ करो।"

١٠ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ﴾

1721: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कुरैश और उनके साथी मुजदलफा में वकूफ करते और उन्हें हुम्स कहा जाता था। फिर जब इस्लाम का जमाना आया तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि पहले अरफात जायें, वहां ठहरें फिर वहां से लौटकर मुजदलफा आयें।

١٧٢١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: كانَتْ قُرَيْشٌ وَمَنْ دَانَ دِينَهَا يَقِفُونَ بِالْمُزْدَلِفَةِ، وَكانُوا يُسَمَّوْنَ الْحُمْسَ، وَكانَ سَائِرُ الْعَرَبِ يَقِفُونَ بِعَرَفَاتٍ، فَلَمَّا جَاءَ الإِسْلاَمُ، أَمَرَ اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ أَنْ يَأْتِيَ عَرَفَاتٍ، ثُمَّ يَقِفَ بِهَا، ثُمَّ يُفِيضَ مِنْهَا. [رواه البخاري: ٤٥٢٠]

फायदे: हुम्स, अहमस की जमा है, जिसका मायना दीन में मजबूत और पुख्ता के हैं। कुरैश अपने आपको हुम्स कहलाते थे। उनका ख्याल था कि हम चूंकि अल्लाह वाले और हरम के खादिम हैं, इसलिए वो हरम की हद से बाहर नहीं जाते और अरफात हरम की हद से बाहर था।

(फतहुलबारी 4/826)

١١ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً﴾ الآية

बाब 11: फरमाने इलाहीः ऐ हमारे परवरदीगार! हमें दुनिया में भी नैमत अता फरमा और आखिर में भी अपना फजल इनायत कर।

١٧٢٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ). [رواه البخاري: ٤٥٢٢]

1722: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ फरमाया करते थे, "ऐ हमारे परवरदीगार! हमें दुनिया में भी रहमत अता फरमा और आखिरत में भी अपने फजल से नवाज और हमें आग के अजाब से महफूज रख।"

फायदे: यह जामेअ दुआ दुनिया और आखिरत की तमाम नैमतों पर मुस्तमिल है, बुखारी की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज्यादातर यह दुआ किया करते थे।

(फतहुलबारी 11/191)

١٢ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَا يَسْـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ إِلْحَافًا﴾

बाब 12: फरमाने इलाहीः वो लोगों से चिमट कर सवाल नहीं करते।"

١٧٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَيْسَ الْمِسْكِينُ الَّذِي تَرُدُّهُ التَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ، وَلَا اللُّقْمَةُ وَلَا اللُّقْمَتَانِ، إِنَّمَا الْمِسْكِينُ الَّذِي يَتَعَفَّفُ. وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ). يَعْنِي قَوْلَهُ: ﴿لَا يَسْـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ إِلْحَافًا﴾. [رواه البخاري: ٤٥٣٩]

1723: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मिस्कीन (गरीब) वो नहीं हैं जिसे एक या दो खजूरें और एक या दो लुक्में दर-ब-दर फिरने पर मजबूर करते हों, बल्कि मिस्कीन वो आदमी है जो किसी से सवाल न करे। अगर तुम मतलब समझना चाहते हो तो इस आयत को पढ़ो "वो लोगों से चिमट कर सवाल नहीं करते।"

फायदा: मतलब यह है कि मखलूक से सवाल करने की बजाये अल्लाह से सवाल करें, हदीस में आता है कि जिसके पास एक औकिया चांदी हो, अगर वो सवाल करता है तो गौया चिमट कर मांगता है, औकिया चालीस दिरहम के बराबर है। (फतहुलबारी 8/203)

सूरह आले इमरान की तफसीर

बाब 13: कुरआन की बाज आयात मुहकम (जिनका मतलब वाजेह है) हैं और वही असल किताब हैं और बाज आयात मुतशाबेह (जिनका मतलब वाजेह नहीं है) हैं।

١٣ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مِنْهُ ءَايَٰتٌ مُّحْكَمَٰتٌ هُنَّ أُمُّ ٱلْكِتَٰبِ وَأُخَرُ مُتَشَٰبِهَٰتٌ﴾ الآية

1724: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फरमाई: उस अल्लाह ने तुम पर किताब नाजिल की है, उस किताब में दो तरह की आयात हैं। एक मुहकमात जो किताब की असल बुनियाद हैं और दूसरी मुतशाबेहात जिन लोगों के दिलों में टेढ़ हैं, वो फितने की तलाश में हमेशा मुतशोबहात ही के पीछे पड़े रहते हैं और उनको मायना पहनाने की कोशिश किया करते हैं। हालांकि उनका हकीकी मफहूम अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। बखिलाफत इसके जो लोग इल्म में पुख्ताकार हैं, वो कहते हैं कि हमारा

١٧٢٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تَلاَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ هٰذِهِ الآيَةَ: ﴿هُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ مِنْهُ ءَايَٰتٌ مُّحْكَمَٰتٌ هُنَّ أُمُّ ٱلْكِتَٰبِ وَأُخَرُ مُتَشَٰبِهَٰتٌ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَٰبَهَ مِنْهُ ٱبْتِغَآءَ ٱلْفِتْنَةِ وَٱبْتِغَآءَ تَأْوِيلِهِۦ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُۥٓ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱلرَّٰسِخُونَ فِى ٱلْعِلْمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ﴾. قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (فَإِذَا رَأَيْتِ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ، فَأُولٰئِكَ الَّذِينَ سَمَّى ٱللهُ، فَٱحْذَرُوهُمْ). [رواه البخاري: ٤٥٤٧]

उन पर इम्तेहान है। यह सब हमारे रब ही की तरफ से हैं और सच यह है कि किसी चीज से सही सबक तो सिर्फ अकलमन्द ही हासिल करते हैं।'' आइशा रजि. बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो कुरआन मजीद की मुतशाबीह आयात का खोज लगाने की कोशिश करते हैं तो यह समझ लो कि यही वो लोग हैं जिनका नाम अल्लाह ने असहाबे जैग (टेढ़े दिल वाले) व फितना रखा है। ऐसे लोगों से दूरी रखो।

फायदेः पहले यहूदियों ने हुरूफ मुक्कतिआत (अलग अलग पढ़े जाने वाले हुरूफ, अलिफ, लाम, मिम, काफ, हा, ऐयन, स्वाद) की तावील की, फिर ख्वारिज के नक्शे कदम पर चले। हजरत उमर रजि. ने ऐसा काम करने वाले एक आदमी को इतना मारा कि उसके सर से खून बहने लगा। (फतहुलबारी 8/211)

बाब 14: फरमाने इलाहीः जो लोग अल्लाह तआला के वादे और पैमान और अपने कौलो करार को थोड़ी सी कीमत के ऐवज बेच डालते हैं''

١٤ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾

1725: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि उनके पास दो औरतें एक मुकदमा लायीं जो एक मकान या कमरे में सिलाई करती थीं। उनमें से एक इस हालत में बाहर निकली कि सुआ उसके हाथ में गड़ा हुआ था। उसने दूसरी के खिलाफ दावा कर दिया। दोनों का मुकदमा इब्ने अब्बास रजि. के पास लाया गया। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

١٧٢٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ اخْتَصَمَ إِلَيْهِ امْرَأَتَانِ كَانَتَا تَخْرِزَانِ فِي بَيْتٍ - أَوْ فِي الْحُجْرَةِ - فَخَرَجَتْ إِحْدَاهُمَا وَقَدْ أُنْفِذَ بِإِشْفًى فِي كَفِّهَا، فَادَّعَتْ عَلَى الأُخْرَى، فَرُفِعَ أَمْرُهُمَا إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (لَوْ يُعْطَى النَّاسُ بِدَعْوَاهُمْ، لَذَهَبَ دِمَاءُ قَوْمٍ وَأَمْوَالُهُمْ). ذَكِّرُوهَا بِاللهِ، وَاقْرَؤُوا عَلَيْهَا: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ

بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾ فَذَكَّرُوهَا فَاعْتَرَفَتْ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الْيَمِينُ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ). [رواه البخاري: ٤٥٥٢]

वसल्लम ने फरमाया कि महज लोगों के दावे की बिना पर इनके हक में अगर फैसला कर दिया जाये तो लोगों के जान और माल हलाक हो जायेंगे। लिहाजा उस दूसरी औरत को अल्लाह याद दिलाओ और यह आयत पढ़कर सुनाओ। बेशक जो लोग अल्लाह के वादे व पैमान और अपने कौलो करार को थोड़ी सी कीमत से फरोख्त कर देते हैं। आखिर तक।

चूनांचे लोगों ने नसीहत की तो उसने जुर्म कबूल कर लिया। तब इब्ने अब्बास रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि कसम जिस पर दावा किया गया है, उस पर लाजिम आती है।

फायदे: बहकी की रिवायत में है कि दावेदार के जिम्मे अपने दावे के सबूत के लिए दलील मुहय्या करना है और अगर मुद्दा अलैहि इनकार करता है तो उसके जिम्मे कसम आती है। अलबत्ता आपस में एक दूसरे का कसम खाने के मसले में दावेदार को दलील के बजाये कसम देना होती है। (फतहुलबारी 4/636)

١٥ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ﴾ الآية

बाब 15: फरमाने इलाही: कुफ्फार ने तुम्हारे मुकाबले के लिए ज्यादा लश्कर किया है।''

١٧٢٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ﴿حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾. قَالَهَا إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ حِينَ أُلْقِيَ فِي النَّارِ، وَقَالَهَا مُحَمَّدٌ ﷺ حِينَ قَالُوا: ﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا

1726: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमें अल्लाह काफी है जो बेहतरीन कारसाज है। इब्राहिम अलैहि. ने उस वक्त कहा था, जब उनको आग में डाला गया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

وَقَالُوا حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ﴾.
[رواه البخاري: ٤٥٦٣]

ने उस वक्त कहा था जब मुनाफिकीन ने अफवाह फैलाई कि कुफ्फार ने आपके साथ लड़ने के लिए बहुत से लोग जमा किये हैं। लिहाजा उनसे डरते रहना। यह खबर सुनकर सहाबा रजि. का ईमान बढ़ गया। उन्होंने भी यही कहा, हमें अल्लाह काफी है जो अच्छा काम करने वाला है।

फायदे: एक रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादगरामी बायस अल्फाज मनकूल है कि जब तुम किसी खौफनाक मामले से दोचार हो जाओ तो "हस्बुनल्लाह व निअमल वकील" पढ़ा करो। (फतहुलबारी 4/638)

١٦ - باب: قوله عزَّ وجلَّ: ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوٓا أَذًى كَثِيرًا﴾

बाब 16: फरमाने इलाही: तुम अपने से पेशतर अहल किताब से और उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया, बहुत सी तकलीफ देह बातें सुनोगे।"

١٧٢٧ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ، عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ، وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ، يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي ٱلْحَارِثِ ٱبْنِ ٱلْخَزْرَجِ، قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ. حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ أُبَيٍّ ٱبْنُ سَلُولَ، وَذٰلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ ٱللهِ ٱبْنُ أُبَيٍّ، فَإِذَا فِي ٱلْمَجْلِسِ أَخْلَاطٌ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ وَٱلْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ ٱلْأَوْثَانِ، وَٱلْيَهُودِ وَٱلْمُسْلِمِينَ، وَفِي ٱلْمَجْلِسِ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا

1727: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुये, जिस पर इलाका फिदक की बनी हुई चादर डाली गई थी और मुझे भी अपने पीछे बैठा लिया। आप बनी हारिस बिन खजरज के मुहल्ले में साद बिन उबादा रजि. की इयादत के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। यह वाक्या गजवा बदर से पहले का है। रास्ते में आप एक मजलिस से गुजरे, जिसमें सब लोग यानी मुसलमान,

مُشرिकीन और यहूदी मिले-जुले बैठे थे। उन्हीं लोगों में अब्दुल्लाह बिन उबे (मुनाफिक) भी था जो अभी (बजाहिर भी) मुसलमान नहीं हुआ था और उसी मजलिस में अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि. भी मौजूद थे। जब सवारी की धूल मिट्टी लोगों पर पड़ी तो अब्दुल्लाह बिन उबे ने अपनी नाक पर चादर डाल ली और कहने लगा, हम पर धूल मिट्टी न उड़ाओ। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अस्सलामु अलैकुम कहा और ठहर गये। सवारी से नीचे उतरकर उन्हें इस्लाम की दावत दी और कुरआन पढ़कर सुनाया तो अब्दुल्लाह बिन उबे ने कहा, आपकी बातें बहुत अच्छी हैं, लेकिन जो कुछ आप कहते हैं, अगर सच भी हो तब भी आप हमारी मजलिसों में आकर हमको तकलीफ न दिया करें बल्कि अपने घर वापिस चले जायें। फिर हममें से जो आदमी आपके पास आये, उसे आप अपनी बातें सुनायें। इब्ने रवाहा रजि. ने कहा, आप सिर्फ हमारी मजलिसों में तशरीफ लाकर हमें यह बातें सुनाया करें, क्योंकि हम इन बातों को पसन्द करते है। फिर बात इस हद तक बढ़ गई कि मुसलमानों, मुश्रिकों

غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ، ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا، فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ، فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ، وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ: أَيُّهَا الْمَرْءُ، إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا، فَلاَ تُؤْذِنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا، ٱرْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ، فَمَنْ جَاءَكَ فَٱقْصُصْ عَلَيْهِ. فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، فَٱغْشَنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا، فَإِنَّا نُحِبُّ ذٰلِكَ. فَٱسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ، فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَنُوا، ثُمَّ رَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ دَابَّتَهُ، فَسَارَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: (يَا سَعْدُ، أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ - يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ ابْنَ أُبَيٍّ - قَالَ: كَذَا وَكَذَا). قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ، ٱعْفُ عَنْهُ، وَٱصْفَحْ عَنْهُ، فَوَالَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ، لَقَدْ جَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ وَلَقَدِ ٱصْطَلَحَ أَهْلُ هٰذِهِ الْبُحَيْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُونَهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا أَبَى اللهُ ذٰلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ اللهُ شَرِقَ بِذٰلِكَ، فَذٰلِكَ فَعَلَ بِهِ مَا رَأَيْتَ. فَعَفَا عَنْهُ

رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَكانَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحابُهُ يَعْفُونَ عَنِ الْمُشْرِكِينَ وَأَهْلِ الْكِتابِ كَما أَمَرَهُمُ اللهُ، وَيَصْبِرُونَ عَلَى الأذى، حَتَّى أَذِنَ اللهُ فِيهِمْ، فَلَمَّا غَزا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَدْرًا، فَقَتَلَ اللهُ بِهِ صَنادِيدَ كُفَّارِ قُرَيْشٍ، قالَ ابْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَعَبَدَةِ الأَوْثانِ: هٰذا أَمْرٌ قَدْ تَوَجَّهَ، فَبايَعُوا الرَّسُولَ ﷺ عَلَى الإِسْلامِ فَأَسْلَمُوا. [رواه البخاري: ٤٥٦٦]

और यहूदियों ने एक दूसरे को बुरा भला कहना शुरू कर दिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि एक दूसरे पर हमला करने के लिए तैयार हो गये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लगातार उनको खामोश करने की कोशिश फरमाते रहे और झगड़े को खत्म करने की कोशिश फरमाते रहे। बाद अजां आप अपनी सवारी पर बैठकर साद बिन उबादा रजि. के पास तशरीफ ले गये और फरमाया, ऐ साद बिन उबादा रजि. क्या तुमने सुना, उस आदमी अबू हुबाब यानी अब्दुल्लाह बिन उबे ने क्या कहा है? उस आदमी ने यह बातें की हैं। साद बिन उबादा रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसे माफ कर दें और दरगुजर से काम लें। कसम है उस जात की जिसने आप पर किताब नाजिल फरमाई। अल्लाह की तरफ से आप पर जो कुछ नाजिल हुआ, वो बरहक और सच है। वाक्या यह है कि उस बस्ती वालों ने यह फैसला कर लिया था कि उस आदमी (अब्दुल्लाह बिन उबे) की ताजपोशी करें और उसके सर पर सरदारी की पगड़ी बंधवा दें। लेकिन जब अल्लाह तआला ने यह तजवीज इस हक के जरीये जो आपको अता फरमा रद्द कर दी तो वो उस वजह से आपसे जलने लगा है और यह जो कुछ उसने किया है, उसी जलन का नतीजा है। चूनांचे आपने उसे माफ कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. की यह आदत रही है कि बुतपरस्ती और यहूदियों की नाजाईज हरकतो को माफ कर दिया करते थे। जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया था और उनके तकलीफ पहुंचाने पर सब्र करते थे। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने

काफिरों के बाब में जिहाद की इजाजत दी। फिर जब आपने जंगे बदर लड़ी और उस जिहाद की वजह से अल्लाह तआला ने बड़े बड़े कुरैश सरदारों को मार डाला तो अब्दुल्लाह बिन उबे बिन सलूल और उसके साथी मुश्रिकीन और बुतपरस्तों ने कहा कि अब यह काम यानी इस्लाम जाहिर व गालिब हो चुका है। तब उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की और मुसलमान हो गये।

फायदेः मालूम हुआ कि जिस मजलिस में मुसलमान और काफिर मिले जुले हों, उन्हें सलाम करना दुरूस्त है, लेकिन सलाम में नियत मुसलमानों के बारे में की जाये। कुफ्फार को सलाम करने में पहल करने की इजाजज नहीं है। (फतहुलबारी 8/232)

बाब 17: फरमाने इलाहीः आप उनको जो अपने नापसन्द कामों से खुश होते हैं (अजाब से निजात याफ्ता) ख्याल न करें।

١٧ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوا﴾

1728: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में कुछ मुनाफिक ऐसे थे कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद को तशरीफ ले जाते तो वो मदीना में पीछे रह जाते और पीछे रहने पर खुश होते। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद से लौटकर वापस आते तो बहाना बनाकर कसम उठा लेते और इस बात को पसन्द करते कि जो काम उन्होंने

١٧٢٨ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رِجالًا مِنَ المُنَافِقِينَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، كانَ إِذَا خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى الغَزْوِ تَخَلَّفُوا عَنْهُ، وَفَرِحُوا بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَإِذَا قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ اعْتَذَرُوا إِلَيْهِ وَحَلَفُوا، وَأَحَبُّوا أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا، فَنَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ فِيهِم ﴿لَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا﴾ الآيَةَ.

[رواه البخاري: ٤٥٦٧]

नहीं किया, उसमें उनकी तारीफ की जाये, तब मजकूरा आयात उनके बारे में नाजिल हुई।

फायदे: अगली रिवायत से मालूम होता है कि इस आयत के उतरने का सबब मदीना के यहूदियों का गैर मुनासिब किरदार है। जबकि इस हदीस से साबित होता है कि इसका सबब मुनाफिकीन हैं, मुमकिन है कि दोनों गिरोहों के किरदार को नुमाया करने के लिए यह आयत उतरी हो।

 (फतहुलबारी 8/233)

١٧٢٩ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا وقد قيل له: لَئِنْ كانَ كُلُّ ٱمْرِئٍ فَرِحَ بِمَا أُوتِيَ، وَأَحَبَّ أَنْ يُحْمَدَ بِمَا لَمْ يَفْعَلْ، مُعَذَّبًا لَنُعَذَّبَنَّ أَجْمَعُونَ. فَقَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: وَما لَكُمْ وَلِهٰذِهِ، إِنَّمَا دَعا النَّبِيُّ ﷺ يَهُودَ فَسَأَلَهُمْ عَنْ شَيْءٍ، فَكَتَمُوهُ إِيَّاهُ، وَأَخْبَرُوهُ بِغَيْرِهِ، فَأَرَوْهُ أَنْ قَدِ ٱسْتَحْمَدُوا إِلَيْهِ بِمَا أَخْبَرُوهُ عَنْهُ فِيما سَأَلَهُمْ، وَفَرِحُوا بِمَا أَتَوْا مِنْ كِتْمَانِهِمْ. [رواه البخاري: ٤٥٦٨]

1729: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उनसे कहा गया कि जो आदमी उस चीज से खुश हो जो उसे अता की गई है और यह बात भी पसन्द करे कि नहीं किये हुए काम में उसकी तारीफ की जाये तो आखिरत में उसे अजाब होगा। इस तरह तो हम सब अजाब से दोचार किये जायेंगे। इब्ने अब्बास रजि. ने फरमाया, मजकूरा आयत करीमा से तुम मुसलमानों को क्या मतलब है? असल वाक्या तो यह है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ यहूदियों को बुलाकर उनसे कोई बात पूछी तो उन्होंने असल बात छिपाकर कोई और बात बता दी और आपको यह बताया कि आपके सवाल का जवाब देकर उन्होंने काबिले तारीफ का काम किया है। और इस तरह बात छिपाने से बहुत खुश हुए।

फायदे: इस हदीस की शुरूआत यूं है कि हजरत मरवान बिन हिकम रजि. ने अपने दरबान राफेअ को हजरत इब्ने अब्बास रजि. की खिदमत में भेजा था कि इस मजकूरा आयत का मतलब पूछा जाये।

(सही बुखारी 2568)

सूरह निसा

१٨ - باب: قوله تعالى: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي ٱلْيَتَٰمَىٰ﴾

बाब 18: फरमाने इलाही: अगर तुम्हें इस बात का अन्देशा हो कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ न कर सकोगे।"

١٧٣٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّها سَأَلَها عُرْوَةُ عَنْ قَوْلِ ٱللهِ تَعالَى: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي ٱلْيَتَٰمَىٰ﴾. فَقالَتْ: يا ٱبْنَ أُخْتِي، هٰذِهِ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ في حَجْرِ وَلِيِّها، تَشْرَكُهُ في مالِهِ، وَيُعْجِبُهُ مالُها وَجَمالُها، فَيُرِيدُ وَلِيُّها أَنْ يَتَزَوَّجَها بِغَيْرِ أَنْ يُقْسِطَ في صَداقِها، فَيُعْطِيَها مِثْلَ ما يُعْطِيها غَيْرُهُ، فَنُهُوا عَنْ أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ وَيَبْلُغُوا لَهُنَّ أَعْلَى سُنَّتِهِنَّ في الصَّداقِ، فَأُمِرُوا أَنْ يَنْكِحُوا ما طابَ لَهُمْ مِنَ النِّساءِ سِواهُنَّ. قالَتْ عائِشَةُ: وَإِنَّ النّاسَ ٱسْتَفْتَوْا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بَعْدَ هٰذِهِ الآيَةِ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي ٱلنِّسَآءِ﴾. قالَتْ عائِشَةُ: وَقَوْلُ ٱللهِ تَعالَى في آيَةٍ أُخْرَى: ﴿وَتَرْغَبُونَ أَن تَنكِحُوهُنَّ﴾. رَغْبَةُ أَحَدِكُمْ عَنْ يَتِيمَتِهِ، حِينَ تَكُونُ قَلِيلَةَ المالِ وَالجَمالِ، قالَتْ: فَنُهُوا - أَنْ يَنْكِحُوا - عَمَّنْ رَغِبُوا في مالِهِ وَجَمالِهِ مِنْ يَتامَى النِّساءِ إِلَّا بِالْقِسْطِ، مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ عَنْهُنَّ إِذا

1730: आइशा रजि. से रिवायत है कि उनसे उरवा रजि. ने इस आयत का मतलब पूछा: "अगर तुम को अन्देशा हो कि यतीमों के साथ इन्साफ न कर सकोगे तो जो औरतें तुमको पसन्द आयें, उनमें से दो दो, तीन तीन, चार चार से निकाह कर लो।"

उम्मे मौमिनीन रजि. ने फरमाया, ऐ भांजे! इसका मतलब यह है कि एक यतीम लड़की जो अपने वली की जैर किफालत हो, वो उसकी जायदाद में हिस्सेदार भी हो। फिर उस वली को उसका माल और जमाल पसन्द आ जाये तो उसने उससे निकाह का इरादा किया। मगर महर देने की बाबत उसकी नियत बदली हुई थी। यानी यह चाहिए कि उसको इतना महर न दे, जितना उसको दूसरे मर्द से मिलता है। तो इस आयत में इस बात से मना कर दिया गया है कि ऐसी लड़की के साथ महर के मामले में इन्साफ के लिए बगैर निकाह

كُنَّ قَلِيلاَتِ المَالِ وَالجَمَالِ. [رواه البخاري: ٤٥٧٤]

न किया जाये और वली अगर उससे निकाह करना चाहे तो उसे भी वो पूरा महर का हक अदा करे जो ज्यादा से ज्यादा उसे मिल सकता है और यह हुक्म दिया गया कि उन लड़कियों के अलावा जो औरतें तुम को पसन्द हों, उनसे निकाह कर लो। आइशा रजि. फरमाती हैं कि इस आयत के उतरने के बाद लोगों ने फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में फतवा मांगा तो यह आयत उतरी "और लोग आपसे औरतों की बाबत फतवा पूछते हैं।"

आइशा रजि. फरमाती हैं कि दूसरी आयत में जो फरमाया, जिनके निकाह करने से तुम बाज रहते हो या लालच की बिना पर तुम खुद उनसे निकाह करना चाहते तो, इससे मुराद यही है कि अगर किसी को अपनी जेर परवरिश यतीम लड़की जिस का माल और जमाल कम है, उसके साथ निकाह करने से नफरत है तो माल और जमाल वाली यतीम लड़की से भी निकाह न करो। जिसके साथ तुम्हें निकाह की ख्वाहिश है, मगर इस सूरत में कि इन्साफ के साथ उसे पूरा महर का हक अदा करो।

फायदेः दोनों सूरतों में यह हुक्म दिया गया है कि यतीम लड़की से इन्साफ किया जाये। अगर खुद निकाह करना हो तो दस्तूर के मुताबिक पूरा महर अदा करें और अगर निकाह करने की रगबत न हो तो भी इन्साफ किया जाये कि किसी दूसरी जगह उनका निकाह कर दिया जाये। (फतहुलबारी 8/241)

١٩ - باب: قَوله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾

बाब 19: तुम्हारी औलाद के बारे में अल्लाह तुम्हें हिदायत करता है।

١٧٣١ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَادَنِي النَّبِيُّ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ فِي

1731. जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

بَنِي سَلِمَةَ ماشِيَيْنِ، فَوَجَدَنِي النَّبِيُّ ﷺ لاَ أَعْقِلُ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ مِنْهُ ثُمَّ رَشَّ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ، فَقُلْتُ لَهُ: ما تَأْمُرُنِي أَنْ أَصْنَعَ فِي مالِي يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَنَزَلَتْ: ﴿يُوصِيكُمُ ٱللَّهُ فِىٓ أَوْلَـٰدِكُمْ﴾ [رواه البخاري: ٤٥٧٧]

वसल्लम और अबू बकर रजि. ने पैदल आकर बनू सलीमा में मेरी इयादत की और आपने मुझे ऐसी हालत में देखा कि मैं बेहोश पड़ा था। आपने पानी मंगवाया, उससे वजू किया और आपने पानी मुझ पर छिड़क दिया। मुझे होश आ गया तो पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप क्या हुक्म फरमाते हैं कि मैं अपने माल को क्या करूं? उस वक्त यह आयत उतरी, ''अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद की बाबत वसीयत करता है..''

फायदे: एक रिवायत में है कि हजरत जाबिर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! न तो मेरे वाल्देन जिन्दा हैं और न ही मेरी औलाद है। ऐसे हालात में मेरी जायदाद का वारिस कौन होगा? तो यह आयत उतरी। (फतहुलबारी 8/243)

---

٢٠ - باب: قوله تعالى: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ﴾ الآية

बाब 20: फरमाने इलाही: अल्लाह किसी पर जर्रा (कण) बराबर भी जुल्म नहीं करता।''

١٧٣٢ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى نَاسٌ النَّبِيَّ ﷺ قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَذَكَرَ حَدِيثَ الرُّؤْيَةِ وقَدْ تَقَدَّمَ بِكامِلِهِ ثُمَّ قَالَ: (إِذَا كانَ يَوْمُ الْقِيامَةِ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ: تَتْبَعُ كُلُّ أُمَّةٍ ما كانَتْ تَعْبُدُ، فَلاَ يَبْقَى مَنْ كانَ يَعْبُدُ غَيْرَ ٱللهِ مِنَ الأَصْنَامِ وَالأَنْصَابِ إِلَّا يَتَسَاقَطُونَ فِي النَّارِ. حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلَّا مَنْ

1732: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ लोग आये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या हम कयामत के दिन अपने परवरदिगार को देखेगे? उसके बाद हदीस (463) अल्लाह तआला को देखने का जिक्र है जो पहले गुजर चुकी है। इस रिवायत

كانَ يَعْبُدُ ٱللهَ، مِنْ بَرٍّ أَوْ فاجِرٍ، وَغُبَّرَاتُ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَيُدْعَى الْيَهُودُ، فَيُقَالُ لَهُمْ: مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قالُوا: كُنَّا نَعْبُدُ عُزَيْرًا ٱبْنَ ٱللهِ، فَيُقَالُ لَهُمْ: كَذَبْتُمْ، ما ٱتَّخَذَ ٱللهُ مِنْ صَاحِبَةٍ وَلاَ وَلَدٍ، فَمَاذَا تَبْغُونَ؟ فَقَالُوا: عَطِشْنَا رَبَّنَا فَاسْقِنَا، فَيُشَارُ: أَلاَ تَرِدُونَ؟ فَيُحْشَرُونَ إِلَى النَّارِ، كَأَنَّهَا سَرَابٌ يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا، فَيَتَسَاقَطُونَ فِي النَّارِ. ثُمَّ يُدْعى النَّصَارَى فَيُقَالُ لَهُمْ: مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قالُوا: كُنَّا نَعْبُدُ المَسِيحَ ٱبْنَ ٱللهِ، فَيُقَالُ لَهُمْ: كَذَبْتُمْ، ما ٱتَّخَذَ ٱللهُ مِنْ صَاحِبَةٍ وَلاَ وَلَدٍ، فَيُقَالُ لَهُمْ: ماذا تَبْغُونَ؟ فَكَذٰلِكَ مِثْلَ الأَوَّلِ. حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلَّا مَنْ كانَ يَعْبُدُ ٱللهَ، مِنْ بَرٍّ أَوْ فاجِرٍ، أَتَاهُمْ رَبُّ العَالَمِينَ فِي أَدْنَى صُورَةٍ مِنَ الَّتِي رَأَوْهُ فِيهَا، فَيُقَالُ: مَاذَا تَنْتَظِرُونَ، تَتْبَعُ كُلُّ أُمَّةٍ مَا كَانَتْ تَعْبُدُ، قالُوا: فَارَقْنَا النَّاسَ فِي الدُّنْيَا عَلَى أَفْقَرِ مَا كُنَّا إِلَيْهِمْ وَلَمْ نُصَاحِبْهُمْ، وَنَحْنُ نَنْتَظِرُ رَبَّنَا الَّذِي كُنَّا نَعْبُدُ، فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ، فَيَقُولُونَ: لاَ نُشْرِكُ بِٱللهِ شَيْئًا). مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. [رواه البخاري: ٤٥٨١]

में इतना इजाफा है कि कयामत के दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा कि हर गिरोह उसके पीछे हो जाये, जिसकी वो इबादत करता था और अल्लाह के सिवा बुतों और पत्थरों की इबादत करने वालों में से कोई बाकी न रहेगा। सब दोखज में गिर पड़ेंगे। सिर्फ वही लोग बाकी रह जायेंगे जो अल्लाह तआला की इबादत करते थे और उनमें अच्छे बुरे (सब तरह के) मुसलमान और अहले किताब के कुछ बाकी बचे लोग होंगे। सबसे पहले यहूदियों को बुलाया जायेगा और उनसे कहा जायेगा, वो कौन हैं? जिसकी तुम इबादत करते थे, वो कहेंगे कि उजैर अलैहि. की इबादत करते थे जो अल्लाह का बेटा है। तब उनसे कहा जायेगा, तुम झूटे हो। क्योंकि अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी और बेटा नहीं बनाया। अच्छा अब तुम क्या चाहते हो? वो कहेंगे ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं, हमें पानी पिलाओ। उन्हें शराब की तरफ इशारा किया जायेगा और कहा जायेगा कि वहां जाओ। हकीकत में वो पानी नहीं बल्कि वो जहन्नम होगी, जिसका एक हिस्सा दूसरे को चकनाचूर कर रहा होगा। वो बेताब होकर उसकी तरफ दौड़ेंगे और

आग में गिर पड़ेंगे। इसके बाद ईसाईयों को बुलाया जायेगा। और इसी तरह पूछा जायेगा कि तुम किसकी इबादत करते थे। वो कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे हजरत मसीह (ईसा अलैहि.) की इबादत करते थे। उनसे कहा जायेगा तुम झूटे हो। भला अल्लाह के लिए बीवी और औलाद कहां से आई? फिर उनसे कहा जायेगा, अब तुम क्या चाहते हो? वो भी ऐसा ही कहेंगे, जैसे यहूदियों ने कहा था और वो भी उनकी तरह दोखज में जा गिरेंगे। अब वही लोग रह जायेंगे जो खालिस अल्लाह की इबादत करते थे। उनमें अच्छे बुरे सब तरह के (मुवहिद) लोग होंगे। उस वक्त परवरदिगार एक सूरत में जलवागर होगा। जो पहली सूरत से मिलती जुलती होगी, जिसे वो देख चुके होंगे। उन लोगों से कहा जायेगा, तुम किसके इन्तेजार में खड़े हो। हर उम्मत तो अपने माबूद के साथ चली गई है। वो कहेंगे, हमें दुनिया में जब उन लोगों की जरूरत थी, उस वक्त तो हमनें उनका साथ न दिया तो अब क्यों दें? बल्कि हम तो अपने सच्चे परवरदिगार का इन्तेजार कर रहे हैं, जिसकी हम दुनिया में इबादत करते थे। उस वक्त परवरदिगार फरमायेगा, मैं तुम्हारा रब हूँ। फिर सब दो या तीन बार यूं कहेंगे, हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराने वाले नहीं थे।

फायदे: सही बुखारी की एक रिवायत में है कि अल्लाह उनके सामने ऐसी सूरत में जलवागर होगा जिसे वो नहीं पहचानते होंगे और जब अल्लाह उनसे फरमायेगा कि मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो कहें कि हम तुझ से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। (सही बुखारी, 6573)

बाब 21: फरमाने इलाही: उस वक्त क्या हालत होगी, जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लायेंगे।''

٢١ - باب: قوله عزّ وجلّ: ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ﴾

١٧٣٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (ٱقْرَأْ عَلَيَّ). قُلْتُ: آقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: (فَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي). فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ سُورَةَ ٱلنِّسَاءِ، حَتَّى بَلَغْتُ: ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ شَهِيدًا﴾. قَالَ: (أَمْسِكْ). فَإِذَا عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ. [رواه البخاري: ٤٥٨٢]

1733: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया कि मुझे कुरआन पढ़कर सुनाओ। मैंने कहा, भला मैं आपको क्या सुनाऊंगा? आप पर तो खुद कुरआन उतरा है। आपने फरमाया, मुझे दूसरों से सुनना अच्छा लगता है। फिर मैंने सूरह निसा पढ़ना शुरू की। यहाँ तक कि जब मैं इस आयत पर पहुंचा "भला उस दिन क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत में से हालतें बताने वाले को बुलायेंगे। फिर आपको उन लोगों पर गवाह की हैसीयत से खड़ा करेंगे।" फिर आपने फरमाया, बस रूक जाओ। मैंने देखा कि आपकी आखों से आंसू बह रहे थे।

फायदे: आपको अपनी उम्मत पर तरस आ गया, इसलिए रोये, क्योंकि आपने अपनी उम्मत के किरदार पर गवाही देना है। जबकि कुछ उम्मत के बाज आमाल ऐसे होंगे जो जहन्नम में जाने का सबब होंगे। (फतहुलबारी 9/99)

٢٢ - باب: قَوْلِه عَزَّ وَجَلَّ: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِيٓ أَنفُسِهِمْ﴾

बाब 22: फरमाने इलाही: जो लोग अपनी जानों पर जुल्म करते हैं, जब फरिश्ते उनकी जानें कब्ज करने लगते हैं (आखिर तक)

١٧٣٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ نَاسًا مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ كَانُوا مَعَ ٱلْمُشْرِكِينَ، يُكَثِّرُونَ

1734: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में कुछ मुसलमान

سَوَادَهُم عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، يَأْتِي السَّهْمُ فَيُرْمَى بِهِ، فَيُصِيبُ أَحَدَهُمْ فَيَقْتُلُهُ، أَوْ يُضْرَبُ فَيُقْتَلُ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ تَوَفَّـٰهُمُ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ﴾. الآيَـةَ. [رواه البخاري: ٤٥٩٦]

मुश्रिकीन के साथ होकर उनकी तादाद और ताकत बढ़ाते थे। लड़ाई के मौके पर कोई तीर आता और उनमें से किसी को लगता तो वो मर जाता। इस मौके पर यह आयत उतरी " जो लोग अपने नफ्स पर जुल्म कर रहे थे, उनकी रूहें जब फरिश्तों ने कब्ज करीं तो उनसे पूछा गया कि तुम किस हाल में मुब्तला थे.... (आखिर तक)

फायदे: इस रिवायत का सबब बयान कुछ यूं है कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. की हुकूमत में अहले शाम से लड़ने के लिए अहले मदीना में से एक दस्ता तैयार किया गया। उनमें अबू असवद मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान भी थे। वो हजरत इकरमा से मिले तो उन्होंने यह हदीस बयान की। उनका मतलब यह था कि अहले शाम भी मुसलमान हैं, उनसे लड़ते हुए जो लोग मारे जायेंगे, उनका खात्मा इस आयत के वजूब की वजह से बुरा होगा।

٢٣ - باب: قوله تعالى: ﴿إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ﴾ إِلَى قوله: ﴿وَيُونُسَ وَهَـٰرُونَ وَسُلَيْمَـٰنَ﴾

बाब 23: फरमाने इलाही: हमने तुम्हारी तरफ इस तरह वह्य भेजी है जिस तरह नूह अलैहि. और उसके बाद पैगम्बरों की तरफ वह्य भेजी थी....(आखिर तक)

١٧٣٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَالَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى، فَقَدْ كَذَبَ). [رواه البخاري: ٤٦٠٣]

1735: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जो आदमी कहे कि मैं यूनुस बिन मत्ता अलैहि. से अच्छा हूँ तो वो झूटा है।

फायदे: हजरत यूनुस अलैहि. से एक गलती हो गई थी जो अल्लाह तआला ने माफ कर दी। रिसालत का दर्जा तो बहुत बड़ा है, किसी

शख्स को यह हक नहीं कि वो अपने आपको हजरत यूनुस से बेहतर ख्याल करे। (फतहुलबारी 8/267)

तफसीर सूरह माइदा

٢٤ - باب: قوله عز وجل: ﴿يَأَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ الآية

बाब 24: ऐ पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो इरशादात अल्लाह की तरफ से तुम पर नाजिल हुए हैं, वो सब लोगों को पहुंचा दो।"

١٧٣٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ كَتَمَ شَيْئًا مِمَّا أُنْزِلَ عَلَيْهِ فَقَدْ كَذَبَ، وَاللَّهُ يَقُولُ: ﴿يَأَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ﴾. الآيَةَ. [رواه البخاري: ٤٦١٢]

1736: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया (ऐ मसरूक) जो आदमी तुझ से यह कहे कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के पैगाम में से कुछ छिपाया है तो वो झूटा है। क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है, "ऐ पैगम्बर! जो कुछ तेरे रब की तरफ से तुझ पर उतरा, वो लोगों को पहुंचा दो।"

फायदे: इस हदीस का आगाज यूं है कि "जो आदमी बयान करे कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को देखा है, उसने झूट कहा है, क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है कि आंखें अल्लाह को नहीं देख सकतीं और जो आदमी बयान करे कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गैब (छिपी हुई बातें) जानते हैं, उसने भी झूट कहा, क्योंकि इरशाद बारी तआला है कि अल्लाह के अलावा कोई और गैब नहीं जानता। (सही बुखारी 7380)

٢٥ - باب: قوله عز وجل: ﴿يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ

बाब 25: फरमाने इलाही: ऐ ईमान वालों! जो पाकीजा चीजें अल्लाह ने तुम्हारे

اللَّهُ لَكُمْ﴾

लिए नाजिल की हैं, उनको हराम न ठहराओ (आखिर तक)

١٧٣٧ : عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَلَيْسَ مَعَنَا نِسَاءٌ، فَقُلْنَا: أَلا نَخْتَصِي؟ فَنَهَانَا عَنْ ذٰلِكَ، فَرَخَّصَ لَنَا بَعْدَ ذٰلِكَ أَنْ نَتَزَوَّجَ الْمَرْأَةَ بِالثَّوْبِ، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ﴾. [رواه البخاري: ٤٦١٥]

1737: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में जाया करते थे और हमारे साथ औरतें न थीं तो हमने कहा, हम अपने आपको खस्सी क्यों न कर डालें? तो आपने मना फरमाया और फिर इजाजत दी कि किसी औरत से कपड़े वगैरह के बदले (एक फिक्स मुद्दत के लिए) निकाह कर लें, फिर आपने यह आयत पढ़ी "ऐ ईमान वालों जो पाकीजा चीजें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हराम न करो (आखिर तक)

फायदे: इस हदीस से मालूम होता है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. सफर के दौरान जरूरत के वक्त निकाह के कायल थे, लेकिन जब उन्हें हुक्म के खत्म हो जाने का इल्म हुआ तो उस ख्याल से पलट गये। (फतहुलबारी 9/119) और अपने आपको खस्सी करना, अल्लाह की हलाल की हुई चीज को अपने ऊपर हराम ठहराना है। इसलिए नसबन्दी कैसे जाईज हो सकती है। जों इन्सान को औलाद से महरूम करने का सबब बन सकती है, जिसके हसूल के लिए निकाह किया जाता है।

٢٦ - باب: قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ﴾

बाब 26: फरमाने इलाही: ऐ ईमान वालों! यह शराब, जुआ, आस्ताने (बूतों के रखने की जगह) और पांसे (बदफाली के तीर) यह सब गन्दे शैतानी काम हैं।

1738: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमारे यहाँ फजीख शराब के अलावा और किसी किस्म की शराब न थी। बस यही शराब जिसे तुम फजीख कहते हो, मैं खड़ा अबू तल्हा रजि. और फलां फलां को फजीख पिला रहा था। इतने में एक आदमी आया और कहने लगा कि तुम्हें कुछ खबर भी है? उन्होंने पूछा क्या हुआ? उसने कहा, शराब हराम हो गई है। तब उन लोगों ने कहा, ऐ अनस रजि. इन मटको को बहा दो। अनस रजि. का बयान है कि जब उस आदमी ने यह खबर दी। उन्होंने न शराब के बारे में सवाल किया और न ही रोकने पर उसकी खिलाफवर्जी की।

١٧٣٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ما كَانَ لَنَا خَمْرٌ غَيْرُ فَضِيخِكُمْ هٰذا الَّذِي تُسَمُّونَهُ الْفَضِيخَ، فَإِنِّي لَقَائِمٌ أَسْقِي أَبَا طَلْحَةَ وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا إِذْ جاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: وَهَلْ بَلَغَكُمُ الْخَبَرُ؟ فَقَالُوا: وَما ذَاكَ؟ قَالَ: حُرِّمَتِ الخَمْرُ، قالُوا: أَهْرِقْ هٰذِهِ الْقِلاَلَ يَا أَنَسُ، قَالَ: فَمَا سَأَلُوا عَنْهَا وَلاَ رَاجَعُوهَا بَعْدَ خَبَرِ الرَّجُلِ. [رواه البخاري: ٤٦١٧]

फायदे: फजीख शराब की उस किस्म को कहते हैं जो आधी पकी हुई खजूरों से हासिल की जाती थी, उस वक्त मदीना में पांच चीजों से शराब तैयार की जाती थी, जौ, गन्दुम, शहद, खजूर और अंगूर। बहरहाल दीने इस्लाम में हर नशा वाली चीज हराम है।

बाब 27: फरमाने इलाही: ईमान वालों! ऐसी बातें मत पूछा करो जो तुम पर जाहिर कर दी जाये तो तुम्हें नागवार हो।''

٢٧ - باب: قَوله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَا تَسْـَٔلُوا عَنْ أَشْيَآءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾

1739: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक खुत्बा इरशाद फरमाया। मैंने अब तक इस जैसा उम्दा

١٧٣٩ : عَنْ أَنَسٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ خُطْبَةً ما سَمِعْتُ مِثْلَهَا قَطُّ قالَ: (لَوْ تَعْلَمُونَ ما أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا

وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا). قَالَ فَغَطَّى أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ ﷺ وُجُوهَهُمْ لَهُمْ خَنِينٌ، فَقَالَ رَجُلٌ: مَنْ أَبِي؟ قَالَ: (فُلاَنٌ). فَنَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾. [رواه البخاري: ٤٦٢١]

खुत्बा न सुना था। आपने फरमाया, अगर तुम्हें वो बातें मालूम हो जो मुझे मालूम हैं तो तुम बहुत कम हंसो और ज्यादा रोते रहो। अनस रजि. ने कहा कि यह सुनकर सहाबा किराम रजि. ने अपने चेहरों को ढांप लिया और सिसकियां भरकर रोने लगे। इतने में एक आदमी ने पूछा, मेरा बाप कौन है? आपने फरमाया, फलां है। तब ऊपर जिक्र की गई आयत नाजिल हुई।

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन हुजाफा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बाप के बारे में सवाल किया था। क्योंकि कुछ लोगों को उनके बाप के बारे में शकूक व शुबहात थे और उन्हें वाजेह तौर पर जाहिर भी करते थे। इसलिए उन्होंने यह सवाल किया।

(फतहुलबारी 8/657)

١٧٤٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ نَاسٌ يَسْأَلُونَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ٱسْتِهْزَاءً، فَيَقُولُ ٱلرَّجُلُ: مَنْ أَبِي؟ وَيَقُولُ ٱلرَّجُلُ تَضِلُّ نَاقَتُهُ: أَيْنَ نَاقَتِي؟ فَأَنْزَلَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيهِمْ هٰذِهِ ٱلآيَةَ: ﴿يَٰأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾. حَتَّى فَرَغَ مِنَ ٱلآيَةِ كُلِّهَا. [رواه البخاري: ٤٦٢٢]

1740: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, कुछ लोग आपसे बतौर मजाक सवाल किया करते थे कोई कहता था, बतायें मेरा बाप कौन है? कोई कहता मेरी ऊंटनी गुम हो गई है। बतलायें कहां है? उस वक्त अल्लाह ने यह आयत उतारी। "ऐ ईमान वालों! ऐसी बातें मत पूछा करो कि अगर वो तुम पर जाहिर कर दी जायें तो तुम्हें नागवार गुजरें।

फायदे: इस आयते करीमा के उतरने की मुख्तलीफ वजहें थीं, कुछ लोग आपको मजाक के तौर पर सवाल करते तो कुछ आपका इम्तेहान

लेने के लिए पूछते, जबकि कुछ और हटधर्मी का रवैया इख्तियार करते। उन तमाम असबाब के पैशे नजर इस आयत का उतरना हुआ।

(फतहुलबारी 8/282)

तफसीर सूरह अनआम

٢٨ - باب: قوله عزَّ وجلَّ: ﴿قُلْ هُوَ ٱلْقَادِرُ عَلَىٰٓ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ﴾ الآية

बाब 28: फरमाने इलाही: कहो वो इस पर कादिर है कि तुम पर कोई अजाब ऊपर से उतार दे (आखिर तक)

١٧٤١ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿قُلْ هُوَ ٱلْقَادِرُ عَلَىٰٓ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ﴾. قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَعُوذُ بِوَجْهِكَ). ﴿أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾. قالَ: (أَعُوذُ بِوَجْهِكَ). ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ﴾. قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هٰذَا أَهْوَنُ، أَوْ هٰذَا أَيْسَرُ). [رواه البخاري: ٤٦٢٨]

1741: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब यह आयत उतरी "कहो, वो इस पर कादिर है कि तुम पर कोई अजाब ऊपर से उतार दे।" तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अल्लाह! मैं तेरी जात की पनाह लेता हूँ।

फिर अल्लाह तआला ने फरमाया, अजाब तुम्हारे कदमों के नीचे से बरपा कर दे। इस पर भी आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! मैं तेरी जात की पनाह लेता हूँ।

फिर अल्लाह तआला ने फरमाया, या तुम्हें गिरोहों में तकसीम करके एक गिरोह को दूसरे गिरोह की ताकत का मजा चखा दे। तो आपने फरमाया, हां यह पहले अज़ाबों से हल्का या आसान है।

फायदे: ऊपर से अजाब रजम (पत्थर की बारिश) की सूरत में और कदमों के नीचे से अजाब जमीन में धंस जाने की शक्ल में होता है। जैसा कि एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत से रजम

और खसफ के अजाब को बन्द रखा है। (फतहुलबारी 8/292)

बाब 29: फरमाने इलाही: यही लोग (अम्बिया अलैहि.) अल्लाह की तरफ से हिदायत याफ्ता हैं, इन्हीं के रास्ते पर तुम चलो।"

٢٩ - باب: قوله عزَّ وَجلَّ: ﴿أُوْلَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾

1742. इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि आया सूरह साद में सज्दा है? उन्होंने कहा, हां! फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी "यही लोग (अम्बिया अलैहि.) अल्लाह की तरफ से हिदायत याफ्ता हैं, इन्हीं के रास्ते पर तुम चलो।"

١٧٤٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سُئِلَ: أَفِي صَ سَجْدَةٌ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، ثُمَّ تَلاَ: ﴿وَوَهَبْنَا لَهُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾. ثُمَّ قَالَ: نَبِيُّكُمْ ﷺ مِمَّنْ أُمِرَ أَنْ يَقْتَدِيَ بِهِمْ. [رواه البخاري: ٤٦٣٢]

मजीद फरमाया कि तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इनमें से हैं, जिन्हें हजराते अम्बिया किराम अलैहि. की पैरवी का हुक्म हुआ है।

फायदे: मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी गुजिश्ता अम्बिया अलैहि. की शरीअत पर चलने के पाबन्द थे। हां अगर इसका नस्ख आ जाता तो यह पाबन्दी खुद ब खुद खत्म हो जाती। (फतहुलबारी 8/295)

बाब 30: फरमाने इलाही: "और बेशर्मी की बातों के करीब भी न जाओ, वो खुली हों या छुपी।"

٣٠ - باب: قوله عزَّ وَجلَّ: ﴿وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ﴾

1743. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अल्लाह

١٧٤٣ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (لاَ أَحَدَ أَغْيَرُ

مِنَ اللهِ، وَلِذٰلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ، وَلاَ شَيْءَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ، وَلِذٰلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ). [رواه البخاري: ٤٦٣٤]

से ज्यादा गैरतमन्द कोई नहीं है, इसलिए उसने जाहिरी और छुपी तमाम बुरी चीजों और बेशर्मी की बातों को हराम किया है और अल्लाह के नजदीक तारीफ से ज्यादा पसन्दीदा कोई चीज नहीं है। इसलिए उसने अपनी तारीफ खुद फरमाई है।

फायदेः इस हदीस ये मालूम हुआ कि सिफ्ते गैरत (इज्जत) अल्लाह के लिए उसकी शान के मुताबिक साबित है, इसकी ताविल की कोई जरूरत नहीं दूसरी रिवायत में ''ला शख्स'' के अल्फाज हैं। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह के लिए लफ्जे शख्स का इस्तेमाल भी हो सकता है। (फतहुलबारी 7416)

तफसीर सूरह आराफ

٣١ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ﴾ الآية

बाब 31: फरमाने इलाहीः अफव इख्तियार करो और लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दो।''

١٧٤٤ : عَنْ ابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَرَ اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ أَنْ يَأْخُذَ الْعَفْوَ مِنْ أَخْلاَقِ النَّاسِ. [رواه البخاري: ٤٦٤٤]

1744. इब्ने जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि (इस आयते करीमा में) अल्लाह तआला ने लोगों के अख्लाक व आदात में से अपने पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अफव इख्तियार करने का हुक्म दिया है।

फायदेः कुछ लोगों ने ''अफव'' के मायने जरूरियात से ज्यादा माल ले लेने के लिए हैं। इमाम बुखारी का मतलब यह है कि इस आयत में अफव से मुराद दरगुजर करना और माफ कर देना है, यानी यह आयत अच्छे अख्लाक के बारे में है।

तफसीर सूरह अनफाल

باب ٣٢: قوله تعالى: ﴿وَقَٰتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ ٱلدِّينُ كُلُّهُۥ لِلَّهِ﴾

बाब 32: फरमाने इलाहीः कुफ्फार से लड़ो, यहाँ तक कि दीन से फिरना बाकी न रहे।"

١٧٤٥ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أنه قيل له: كَيْفَ تَرَى فِي قِتَالِ الْفِتْنَةِ؟ فَقَالَ: وَهَلْ تَدْرِي مَا الْفِتْنَةُ؟ كَانَ مُحَمَّدٌ ﷺ يُقَاتِلُ الْمُشْرِكِينَ، وَكَانَ الدُّخُولُ عَلَيْهِمْ فِتْنَةً، وَلَيْسَ كَقِتَالِكُمْ عَلَى الْمُلْكِ. [رواه البخاري: ٤٦٥١]

1745. अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि कताल फितना में आपकी क्या राय है? तो उन्होंने फरमाया, तू जानता है कि फितने से क्या मुराद है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुश्रिकीन से लड़ते थे, ऐसे हालात में मुश्रिकीन के पास कोई मुसलमान जाता तो फितने में पड़ जाता। लिहाजा उनकी लड़ाई तुम्हारी तरफ दुनिया हासिल करने और सल्तनत के लिए बिलकुल नहीं थी।

फायदेः ख्वारिज में से किसी ने हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से कहा कि तुम हजरत अली रजि. और हजरत मआविया रजि. की आपसी चपकलश में हिस्सेदार क्यों नहीं बनते हो? तो हजरत इब्ने उमर रजि. ने उसे जवाब दिया जो हदीस में मौजूद है। (फतहुलबारी 8/310)

तफसीर सूरह तौबा

باب ٣٣: قوله تعالى: ﴿وَءَاخَرُونَ ٱعْتَرَفُوا۟ بِذُنُوبِهِمْ﴾ الآية

बाब 33: फरमाने इलाहीः "दूसरे लोग वो हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का ऐरतकाब किया।"

١٧٤٦ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَنَا: (أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ،

1746. समरा बिन जुन्दूब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया

فَٱبْتَعَثَانِي، فَٱنْتَهَيَا بِي إِلَى مَدِينَةٍ مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ، فَتَلَقَّانَا رِجَالٌ: شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ، كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ، وَشَطْرٌ كَأَقْبَحِ مَا أَنْتَ رَاءٍ، قَالاَ لَهُمْ: ٱذْهَبُوا فَقَعُوا فِي ذٰلِكَ النَّهْرِ، فَوَقَعُوا فِيهِ، ثُمَّ رَجَعُوا إِلَيْنَا، قَدْ ذَهَبَ ذٰلِكَ السُّوءُ عَنْهُمْ، فَصَارُوا فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ، قَالاَ لِي: هٰذِهِ جَنَّةُ عَدْنٍ، وَهٰذَاكَ مَنْزِلُكَ، قَالاَ: أَمَّا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَانُوا شَطْرٌ مِنْهُمْ حَسَنٌ، وَشَطْرٌ مِنْهُمْ قَبِيحٌ، فَإِنَّهُمْ خَلَطُوا عَمَلاً صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا، تَجَاوَزَ ٱللهُ عَنْهُمْ). [رواه البخاري: ٤٦٧٤]

कि आज रात मेरे पास आने वाले आये और मुझे एक मकान में ले गये जो सोने और चांदी की ईटों से बना हुआ था। वहां हमें कई ऐसे आदमी मिले जिनका आधा बदन तो निहायत खूबसूरत और बाकी आधा इन्तेहाई बदसूरत था। फिर उन फरिश्तों ने उनसे कहा, इस नदी में घुस जाओ तो वो उसमें घुस गये। फिर वो हमारे पास आये तो उनकी बदसूरती जाती रही और इन्तेहाई खूबसूरत हो गये। उन फरिश्तों ने मुझ से कहा यह हमेशगी की जन्नत है और तुम्हारा मकान भी यहीं है। फिर कहने लगे कि जिनका आधा बदन खूबसूरत और बाकी आधा बदसूरत देखा तो वो ऐसे लोग हैं जिन्होंने (दुनिया में) अच्छे और बुरे सब तरह के काम किये। अल्लाह ने उनसे दरगुजर फरमाया और उन्हें माफ कर दिया।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक थी कि सुबह की नमाज के बाद अल्लाह के जिक्र से फारिग होकर जाते तो अपने सहाबा किराम रजि. की तरफ मुंह करके बैठ जाते और फरमाते कि आज तुमने कोई ख्वाब देखा है। फिर कोई ख्वाब बयान करता। यह हदीस भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तवील ख्वाब का एक हिस्सा है, जिसकी तफसील किताबुल ताबिर्रुरोया में आयेगी। इन्शा अल्लाह

तफसीर सूरह हूद

٣٤ - باب: قوله تعالى: ﴿وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَآءِ﴾

बाब 34: फरमाने इलाहीः और उसका अर्श पानी पर था।

١٧٤٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (قَالَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: أَنْفِقْ أُنْفِقْ عَلَيْكَ، وَقَالَ: يَدُ ٱللهِ مَلأَى لاَ يَغِيضُهَا نَفَقَةٌ، سَحَّاءُ ٱللَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ. وَقَالَ: أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ ٱلسَّمَاءَ وَٱلأَرْضَ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ، وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى ٱلْمَاءِ، وَبِيَدِهِ ٱلْمِيزَانُ يَخْفِضُ وَيَرْفَعُ). [رواه البخاري: ٤٦٨٤]

1747: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है (ऐ इब्ने आदम) तू खर्च कर, मैं भी तुझ पर खर्च करूंगा। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। अल्लाह का हाथ भरा हुआ है, कितना ही खर्च हो, वो कम नहीं होता। रात और दिन उसका कर्म जारी है और आपने यह भी फरमाया, क्या तुम नहीं देखते कि जब से उसने जमीन आसमान को पैदा किया है, वो बराबर खर्च किये जा रहा है। इसके बावजूद उसके हाथ में जो था, वो कम नहीं हुआ और उसका अर्श पानी पर था। उसके हाथ में तराजू है, जिसके लिए चाहता है यह तराजू झुका देता है और जिसके लिए चाहता है, उठा देता है।

फायदे: इल्म और हुनर रिज्क के असबाब तो जरूर हैं, लेकिन जब अल्लाह की मसीयत शामिल हाल न हो, उस वक्त तक यह कारगर साबित नहीं होते। किसी ने सही फरमाया है, "हुनर बेकार नयायद जो बख्ते बदबाशद" तर्जुमा : जो बदबख्त हे उसके लिए हुनर भी बेकार हो जाता है।

---

٣٥ - باب: قوله تعالى: ﴿وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ ٱلْقُرَىٰ﴾ الآية

बाब 35: फरमाने इलाही: और तुम्हारे परवरदिगार का जब नाफरमान बस्तियों को पकड़ता है तो उसकी पकड़ इसी तरह की होती है...आखिर तक।

١٧٤٨ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ:

1748: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

(إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ، حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ). قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ ﴿وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾. [رواه البخاري: ٤٦٨٦]

अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला जालिम को कुछ मोहलत देता है, लेकिन जब पकड़ लेता है तो फिर उसे छोड़ता नहीं अबू रजि. कहते हैं फिर आपने इस आयत की तिलावत फरमाई "और तुम्हारा परवरदिगार जो नाफरमान बस्तियों को पकड़ता है, तो उसकी पकड़ इस तरह की होती है, यकीनन इसकी पकड़ बड़ी सख्त और दर्दनाक है।

फायदे: मजकूरा आयत में जुल्म से मुराद शिर्क है। यानी मुश्रिक इन्सान हमेशा अजाब में गिरफ्तार रहेगा। अगर जुल्म से मुराद जुल्म का आम मायने है तो इसका मतलब यह होगा कि जब तक जुल्म की सजा पूरी न होगी उस वक्त तक अजाब से दोचार रहेगा।

 (फतहुलबारी 8/355)

तफसीर सूरह हजर

٣٦ - باب: قَوله تَعَالَى: ﴿إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ﴾ الآية

बाब 36: फरमाने इलाही: "मगर वो शैतान जो आसमान के करीब जाकर बातों को चुराता है,....आखिर तक।

١٧٤٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ: (إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ فِي السَّمَاءِ، ضَرَبَتِ المَلاَئِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ، كَالسِّلْسِلَةِ عَلَى صَفْوَانٍ، فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ، قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ، قَالُوا لِلَّذِي قَالَ: الْحَقَّ، وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ. فَيَسْمَعُهَا مُسْتَرِقُو

1749: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह तआला आसमान पर जब कोई हुक्म देता है तो फरिश्ते उसके हुक्म पर आजजी से अपने पर इस तरह मारते हैं, जैसे कोई जंजीर पत्थर पर लगती है।

السَّمْعِ، وَمُسْتَرِقُو السَّمْعِ هٰكَذَا وَاحِدٌ فَوْقَ آخَرَ، فَرُبَّمَا أَدْرَكَ الشِّهَابُ الْمُسْتَمِعَ قَبْلَ أَنْ يَرْمِيَ بِهَا إِلَى صَاحِبِهِ فَيُحْرِقَهُ، وَرُبَّمَا لَمْ يُدْرِكْهُ حَتَّى يَرْمِيَ بِهَا إِلَى الَّذِي يَلِيهِ، إِلَى الَّذِي هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ، حَتَّى يُلْقُوهَا إِلَى الأَرْضِ، فَتُلْقَى عَلَى فَمِ السَّاحِرِ، فَيَكْذِبُ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ، فَيَصْدُقُ فَيَقُولُونَ: أَلَمْ يُخْبِرْنَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، يَكُونُ كَذَا وَكَذَا، فَوَجَدْنَاهُ حَقًّا؟ لِلْكَلِمَةِ الَّتِي سُمِعَتْ مِنَ السَّمَاءِ). [رواه البخاري: ٤٧٠١]

जब उनके दिलों से डर जाता रहता है तो एक दूसरे से पूछते हैं कि अल्लाह तआला ने क्या हुक्म दिया है? तो मुकर्रबीन उनसे कहते हैं जो कुछ फरमाया, वो बजा इरशाद फरमाया और वह ऊंचा और साहिबे अजमत है। फरिश्तों की यह बातें शैतान भी सुन लेते हैं और वो ऊपर नीचे होते हैं। ऊपर वाला नीचे वाले से और वो अपने से नीचे वाले से कह देता है। कभी ऐसा भी होता है कि आग का शोला सब से ऊपर के शैतान को लग जाता है और उससे पहले कि वो अपने पास वाले से सुनी हुई खबर आगे बयान करे, वो जल जाता है और कभी ऐसा होता है कि यह शोला उस तक नहीं पहुंचता और वो आपने नीचे वाले को बात सुना देता है। ऐसे ही जो जमीन पर है, उसे खबर हो जाती है। फिर वो बात नजूमी जादूगर के मुंह में डाली जाती है। वो एक बात में सौ झूट मिलाकर लोगों से बयान करता है। इत्तेफाकन अगर कोई बात सच्ची निकलती है तो लोग कहने लगते हैं, देखो उस जादूगर ने हमें फलां दिन यह खबर दी थी कि आइन्दा ऐसा ऐसा होगा। उसकी बात सच निकली। हालांकि यह वो बात होती है जो आसमान से शैतान ने चुराई थी।

फायदे: हमारे यहाँ "जो चाहें, सो पूछें" के बोर्ड लगाकर मुख्तलिफ सूरतों में जादूगर नजर आते हैं। हदीस में उनकी ही की तसवीर कशी की गई है।

तफसीर सूरह नहल

बाब 37: फरमाने इलाही: "और तुममें कुछ ऐसे होते हैं जो इन्तेहाई खराब उम्र को पहुंच जाते हैं.... आखिर तक।"

٣٧ - باب: قوله تعالى: ﴿وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ﴾

1750: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं दुआ करते थे: "ऐ अल्लाह! मैं बुखल, सुस्ती, बुढ़ापे, अजाबे कब्र, फितना दज्जाल और मौत व जिन्दगी के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

١٧٥٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ يَدْعُو: (أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ، وَأَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَفِتْنَةِ ٱلدَّجَّالِ، وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ). [رواه البخاري: ٤٧٠٧]

फायदे: यह बड़ी जामेअ दुआ है। बन्दा मुस्लिम को इसका इल्तेजाम करना चाहिए। जिन्दगी का फितना यह है कि इन्सान दुनिया में ऐसा मसरूफ हो कि उसे अल्लाह की याद भूल जाये, मौत का फितना सकरात (मौत की बेहाशी) के वक्त से शुरू हो जाता है। उस वक्त शैतान आदमी का ईमान बिगाड़ना चाहता है। (फतहुलबारी 2/319)

तफसीर सूरह इसरा

बाब 38: यह सब अम्बिया उनकी नस्ल से है, जिनको हमने हजरत नूह अलैहि. के साथ कश्ती में सवार किया था, यकीनन वो बड़े शुक्रगुजार बन्दे थे।"

٣٨ - باب: قوله تعالى: ﴿ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُۥ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا﴾

1751: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गोश्त लाया गया। चूनांचे दस्ती (बाजू) का गोश्त आपको पेश किया गया। वो आपको

١٧٥١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أُتِيَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِلَحْمٍ، فَرُفِعَ إِلَيْهِ ٱلذِّرَاعُ، وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ، فَنَهَسَ مِنْهَا نَهْسَةً ثُمَّ قالَ: (أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَهَلْ

تَدْرُونَ مِمَّ ذٰلِكَ؟ يَجْمَعُ ٱللّٰهُ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، يُسْمِعُهُمُ الدَّاعِي وَيَنْفُذُهُمُ الْبَصَرُ، وَتَدْنُو الشَّمْسُ، فَيَبْلُغُ النَّاسَ مِنَ الغَمِّ وَالْكَرْبِ ما لاَ يُطِيقُونَ وَلاَ يَحْتَمِلُونَ، فَيَقُولُ النَّاسُ: أَلاَ تَرَوْنَ ما قَدْ بَلَغَكُمْ، أَلاَ تَنْظُرُونَ مَنْ يَشْفَعُ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ؟ فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ لِبَعْضٍ: عَلَيْكُمْ بِآدَمَ، فَيَأْتُونَ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَيَقُولُونَ لَهُ: أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ، خَلَقَكَ ٱللّٰهُ بِيَدِهِ، وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ، وَأَمَرَ المَلاَئِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلا تَرى إِلَى ما نَحْنُ فيهِ؟ أَلاَ تَرَى إِلَى ما قَدْ بَلَغَنَا؟ فَيَقُولُ آدَمُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنَّهُ قَدْ نَهَانِي عَنِ الشَّجَرَةِ فَعَصَيْتُهُ، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى نُوحٍ. فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُونَ: يَا نُوحُ، إِنَّكَ أَنْتَ أَوَّلُ الرُّسُلِ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ، وَقَدْ سَمَّاكَ ٱللّٰهُ عَبْدًا شَكُورًا، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى إِلَى ما نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ: إِنَّ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنَّهُ قَدْ كَانَتْ لِي دَعْوَةٌ دَعَوْتُهَا عَلَى قَوْمِي، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا

बहुत पसन्द था। आपने उसे दांतों से नोच नोच कर खाया। इसके बाद फरमाया, कयामत के दिन मैं लोगों का सरदार होऊंगा। तुम जानते हो किस वजह से ऐसा होगा? अल्लाह तआला अगले पिछले सब लोगों को एक चटील मैदान में जमा करेगा, जहां आवाज देने वाले की आवाज सब को पहुंच सकेगी और नजर सब को देख सकेगी। और सूरज बहुत करीब होगा। लोगों को नाकाबिल बर्दाश्त गम और ताकत न रखने की तकलीफ होगी। आखिरकार आपस में कहेंगे, देखो कैसी तकलीफ हो रही है। कोई सिफारिश करने वाला तलाश करो, जो परवरदिगार के पास जाकर तुम्हारे बारे में कुछ कहे। फिर बाहमी मश्वरा करके यह कहेंगे कि आदम अलैहि. के पास चलो। फिर आदम अलैहि. के पास आयेंगे। और कहेंगे, आप इन्सानों के बाप हैं। अल्लाह तआला ने आपको अपने हाथों से बनाया है और फिर आप में रूह फूंकी। फरिश्तों को सज्दा करने का हुक्म दिया, उन्होंने आपको सज्दा किया। क्या आप देखते नहीं कि हमें कैसी तकलीफ हो रही है? बराहे करम आप हमारी सिफारिश करें। आदम अलैहि.

إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى إِبْرَاهِيمَ. فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُونَ: يَا إِبْرَاهِيمُ، أَنْتَ نَبِيُّ اللهِ وَخَلِيلُهُ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ لَهُمْ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنِّي قَدْ كُنْتُ كَذَبْتُ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى مُوسَى. فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُونَ: يَا مُوسَى، أَنْتَ رَسُولُ اللهِ، فَضَّلَكَ اللهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ عَلَى النَّاسِ، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنِّي قَدْ قَتَلْتُ نَفْسًا لَمْ أُومَرْ بِقَتْلِهَا، نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى عِيسَى. فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُونَ: يَا عِيسَى، أَنْتَ رَسُولُ اللهِ، وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَكَلَّمْتَ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا، اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ عِيسَى: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ قَطُّ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ - وَلَمْ يَذْكُرْ ذَنْبًا - نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى مُحَمَّدٍ ﷺ، فَيَأْتُونَ

कहेंगे, आज मेरा रब बहुत गुस्से में है। ऐसा गुस्सा न कभी पहले किया था और न आइन्दा करेगा। मुझे उसने एक पेड़ के फल से मना किया था, लेकिन मैंने खा लिया था। मुझे खुद अपनी पड़ी है। तुम किसी दूसरे के पास जाओ। बल्कि नूह पैगम्बर अलैहि. के पास जाओ। लोग नूह अलैहि. के पास आयेंगे और कहेंगे आप सबसे पहले रसूल होकर जमीन पर आये और अल्लाह ने आपको अपना शुक्रगुजार बन्दा फरमाया। अब आप परवरदिगार के पास हमारी सिफारिश करें। आप नहीं देखते कि हमें कैसी तकलीफ हो रही है? वो कहेंगे, आज मेरा रब बहुत गुस्से में है। इससे पहले कभी ऐसे गुस्से में नहीं आया। और न आइन्दा आयेगा। और मेरे लिए एक दुआ का हुक्म था और वो मैं अपनी कौम के खिलाफ मांग चुका हूँ। मुझे तो खुद अपनी पड़ी है। मेरे सिवा तुम किसी और के पास जाओ और अब इब्राहिम अलैहि. के पास जाओ। यह सुनकर सब लोग इब्राहिम अलैहि. के पास आयेंगे और कहेंगे, ऐ इब्राहिम अलैहि.! आप अल्लाह के नबी और तमाम अहले जमीन से उसके दोस्त हो। आप परवरदिगार के

مُحَمَّدًا ﷺ فَيَقُولُونَ: يَا مُحَمَّدُ أَنْتَ رَسُولُ ٱللهِ، وَخَاتَمُ الأَنْبِيَاءِ، وَقَدْ غَفَرَ ٱللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، ٱشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، أَلَا تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَأَنْطَلِقُ فَآتِي تَحْتَ الْعَرْشِ، فَأَقَعُ سَاجِدًا لِرَبِّي عَزَّ وَجَلَّ، ثُمَّ يَفْتَحُ ٱللهُ عَلَيَّ مِنْ مَحَامِدِهِ وَحُسْنِ الثَّنَاءِ عَلَيْهِ شَيْئًا لَمْ يَفْتَحْهُ عَلَى أَحَدٍ قَبْلِي، ثُمَّ يُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ٱرْفَعْ رَأْسَكَ، سَلْ تُعْطَهْ، وَٱشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَقُولُ: أُمَّتِي يَا رَبِّ، أُمَّتِي يَا رَبِّ، أُمَّتِي يَا رَبِّ، فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ أَدْخِلْ مِنْ أُمَّتِكَ مَنْ لَا حِسَابَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْبَابِ الأَيْمَنِ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ، وَهُمْ شُرَكَاءُ النَّاسِ فِيمَا سِوَى ذٰلِكَ مِنَ الأَبْوَابِ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّ مَا بَيْنَ الْمِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَحِمْيَرَ، أَوْ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَبُصْرَى). [رواه البخاري: ٤٧١٢]

पास हमारी सिफारिश करें। क्या आप नहीं देखते कि हमें कैसी तकलीफ हो रही है? आप फरमायेंगे, आज मेरा रब बहुत गुस्से में है। इससे पहले न कभी इतना गुस्सा हुआ और न आइन्दा होगा। मैंने (दुनिया में) तीन खिलाफ वाक्या बातें की थी, अब मुझे तो अपनी पड़ी है। मेरे अलावा तुम किसी और के पास जाओ। अच्छा मूसा अलैहि. के पास जाओ। यह लोग मूसा अलैहि. के पास जायेंगे। और कहेंगे, ऐ मूसा अलैहि.! आप अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह तआला ने आपको अपनी कलाम व रिसालत से फजीलत अता फरमाई। आज आप अल्लाह के सामने हमारी सिफारिश करेंगे। क्या आप नहीं देखते कि हम किस किस्म की तकलीफ में हैं? मूसा अलैहि. कहेंगे। आज तो मेरा मालिक बहुत गुस्से में है। इतना गुस्से में कभी नहीं हुआ था। न होगा। निज मैंने एक आदमी को कत्ल कर दिया था, जिसके कत्ल का मुझे हुक्म न था। लिहाजा मुझे तो अपनी पड़ी है। तुम किसी और के पास जाओ। अच्छा ईसा अलैहि. के पास जाओ। चूनांचे सब लोग ईसा अलैहि. के पास आयेंगे। और कहेंगे ऐ ईसा अलैहि. आप अल्लाह के रसूल और वो कलमा हैं जो उसने मरीयम अलैहि. की तरफ भेजा था। आप उसकी रूह हैं और आपने गोद में रहकर बचपन में लोगों से बातें की थी। कुछ सिफारिश करो

और देखो हम किस मुसीबत में गिरफ्तार हैं? ईसा अलैहि. कहेंगे कि आज मेरा परवरदिगार इन्तेहाई गुस्से में है। इतना कभी न हुआ था और न आइन्दा होगा। ईसा अलैहि. अपने बारे में किसी गुनाह को बयान नहीं करेंगे। अलबत्ता यह जरूर कहेंगे कि मुझे तो अपनी पड़ी है। मेरे अलावा किसी और के पास जाओ। तुम लोग हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ। चूनांचे सब लोग हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयेंगे और कहेंगे, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। आप अल्लाह तआला के रसूल और खातिमुल अम्बिया है। अल्लाह तआला ने आपके अगले पिछले सब गुनाह माफ कर दिये हैं। आप अल्लाह से हमारी सिफारिश फरमायें, देखें हमें कैसी तकलीफ हो रही है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि उस वक्त मैं अर्श के नीचे जाकर अपने रब के सामने सज्दा रैज हो जाऊंगा। अल्लाह तआला अपनी तारीफ और खूबी की वो वो बातें मेरे दिल पर खोल देगा, जिनका मुझ से पहले किसी पर जाहिर नहीं हुआ होगा। चूनांचे मैं इसी तरह के मुताबिक हम्द व सना बजा लाऊंगा। तो फिर हुक्म होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! सर उठा, मांग जो मांगता है। वो दिया जायेगा। तुम जिसकी सिफारिश करोगे। हम सुनेंगे। मैं सर उठाकर कहूँगा, परवरदिगार! मेरी उम्मत पर रहम फरमा। मेरे परवरदिगार! मेरी उम्मत पर रहम फरमा। फरमाने इलाही होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अपनी उम्मत के वो लोग, जिनका हिसाब नहीं होगा, उन्हें जन्नत के दायें दरवाजे से दाखिल करो। अगरचे वो लोगों के साथ शरीक होकर दूसरे दरवाजों से भी जन्नत में जा सकते हैं। फिर आपने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, जन्नत के दोनो दरवाजों का बीच का फासला मक्का और हिमयर या मक्का और बसरा के बीच फासले जितना है।

फायदे: हजरत इब्राहिम अलैहि. के बारे में इस रिवायत में इख्तेसार है। दूसरी रिवायत में इसकी तफसील यूं है कि आपने अपनी कौम से कहा था कि मैं बीमार हूँ। निज बुतों को तोड़ने का मामला उनके बड़े ने किया है और अपनी बीवी सारा के बारे में कहा था कि यह मेरी बहन है।

(सही बुखारी 3358)

नोट: इस तरह तौरिया और तारीज से काम लिया था और इस तौरिया और तारीज को भी वो अपनी शान रफेअ के मुनाफी ख्याल करके उसको झूट से ताबीर करेंगे। वो सिफारिश करने से मजबूरी पेश करेंगे।(अलवी)

बाब 39: फरमाने इलाही: उम्मीद है कि आपका परवरदीगार आपको कयामत के दिन मकामे महमूद अता करेगा।

٣٩ - باب: قوله تعالى: ﴿عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا﴾

1752: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कयामत के दिन लोगों के गिरोह गिरोह हो जायेंगे और हर गिरोह अपने नबी के पीछे लगेगा और कहेगा, साहब! हमारी कुछ सिफारिश करो, जनाब! हमारी कुछ सिफारिश करो। आखिरकार सिफारिश का मामला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आ ठहरेगा। इसी दिन अल्लाह तआला आपको मकामे महमूद अता फरमायेगा।

١٧٥٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ النَّاسَ يَصِيرُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جُثًا، كُلُّ أُمَّةٍ تَتْبَعُ نَبِيَّهَا يَقُولُونَ: يَا فُلاَنُ اشْفَعْ، يَا فُلاَنُ اشْفَعْ، حَتَّى تَنْتَهِي الشَّفَاعَةُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَذٰلِكَ يَوْمَ يَبْعَثُهُ ٱللهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ. [رواه البخاري: ٤٧١٨]

फायदे: मकामे महमूद से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बाबे जन्नत का हलका पकड़ना या आपको लिवाउल हम्द (तारीफ का झण्डा) का मिलना या आपका अर्श पर बैठना है। निज आपकी यह सिफारिश लोगों के बारे में फैसला करने के बारे में होगी।

(फतहुलबारी 8/400)

٤٠ - باب: قوله تعالى: ﴿وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا﴾

बाब 40: अपनी किरअत न तो ज्यादा जोर से पढ़ो और न ही बिल्कुल धीरे। बल्कि बीच का तरीका इख्तियार करो।

١٧٥٣ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ﴾. قَالَ: نَزَلَتْ وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ مُخْتَفٍ بِمَكَّةَ، كَانَ إِذَا صَلَّى بِأَصْحَابِهِ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ، فَإِذَا سَمِعَهُ الْمُشْرِكُونَ سَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ، فَقَالَ ٱللهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ ﷺ: ﴿وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ﴾ أَيْ بِقِرَاءَتِكَ، فَيَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ فَيَسُبُّوا الْقُرْآنَ ﴿وَلَا تُخَافِتْ بِهَا﴾ عَنْ أَصْحَابِكَ فَلَا تُسْمِعُهُمْ ﴿وَٱبْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا﴾. [رواه البخاري: ٤٧٢٢]

1753: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, यह मजकूरा आयत उस वक्त नाजिल हुई, जब आप मक्का में छुपे रहते थे। आप जब नमाज पढ़ाते तो बुलन्द आवाज कुरआन पढ़ते। मुश्रिकीन जब सुनते तो कुरआन करीम को नाजिल करने वाले को और जिस पर नाजिल हुआ, सब को बुरा भला कहते थे। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने रसूलुल्लाह मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया, किरआत इतनी बुलन्द आवाज से न करो कि मुश्रिकीन सुनें तो उसे गालियां दे और न इतनी धीमी आवाज से पढ़ो कि मुक्तदी भी न सुन सके। बल्कि बीच का तरीका इख्तेयार करो।

फायदे: बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि यह आयत दुआ के बारे में नाजिल हुई है। मुमकिन है कि नमाज के दौरान दुआ के बारे में नाजिल हुई हो। क्योंकि कुछ रिवायतों में है कि तशह्हुद के बारे में नाजिल हुई थी। (फतहुलबारी 8/506)

तफसीर सूरह कहफ

٤١ - باب: قوله تعالى: ﴿أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ﴾ الآية

बाब 41. फरमाने इलाही: "यही वो लोग हैं, जिन्होंने अल्लाह की निशानियां और

उससे मुलाकात पर यकीन न किया....
आखिर तक।

1754: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन एक बहुत मोटा आदमी लाया जायेगा और एक मच्छर के पर के बराबर उसकी कद्र न होगी और फरमाया, अगर चाहो तो पढ़ लो "कयामत के दिन हम ऐसे लोगों को कुछ वजन नहीं देंगे।"

١٧٥٤ : عَنْ أبي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (يُؤْتَى بِالرَّجُلِ الْعَظِيمِ السَّمِينِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، لاَ يَزِنُ عِنْدَ ٱللهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ. وَقَالَ: ٱقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَزْنًا﴾). [رواه البخاري: ٤٧٢٩]

फायदे: एक रिवायत में है, उस आदमी की खूबी लम्बे कद और ज्यादा खाने वाला होना भी बयान किया गया है।(फतहुलबारी 8/426)

तफसीर सूरह मरीयम

बाब 42: फरमाने इलाही: उन लोगों को हसरत व अफसोस के दिन से चौकन्ना कर दो।

٤٢ - باب: قَوله تَعالَى: ﴿وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ ٱلْحَسْرَةِ﴾ الآية

1755: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत के दिन मौत को एक चितकबरे मैंडे की सूरत में लाया जायेगा। फिर एक मुनादी करने वाला आवाज देगा, ऐ अहले जन्नत! तो वो ऊपर नजर उठाकर देखेंगे। वो कहेगा, क्या तुम इसको पहचानते हो?

١٧٥٥ : عَنْ أَبي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُؤْتَى بِالْمَوْتِ كَهَيْئَةِ كَبْشٍ أَمْلَحَ، فَيُنَادِي مُنَادٍ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ، فَيَشْرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ، فَيَقُولُ: هَلْ تَعْرِفُونَ هٰذَا؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، هٰذَا الْمَوْتُ، وَكُلُّهُمْ قَدْ رَآهُ. ثُمَّ يُنَادِي: يَا أَهْلَ النَّارِ، فَيَشْرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ، فَيَقُولُ: هَلْ تَعْرِفُونَ هٰذَا؟ فَيَقُولُونَ:

نَعَمْ، هٰذَا الْمَوْتُ، وَكُلُّهُمْ قَدْ رَآهُ، فَيُذْبَحُ. ثُمَّ يَقُولُ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ﴾ وَهٰؤُلاَءِ فِي غَفْلَةٍ أَهْلُ الدُّنْيَا ﴿وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ﴾. [رواه البخاري: ٤٧٣٠]

वो कहेंगे, हां! यह मौत है और सब ने सोते वक्त उसको देखा है। फिर वो आवाज देगा, ऐ अहले दोजख! तो वो भी अपनी गर्दन उठाकर देखेंगे। फिर वो कहेगा, क्या तुम इसको पहचानते हो? वो कहेगें, हां। सबने सोते वक्त उसे देखा है। फिर उस मैण्डे को जिब्ह कर दिया जायेगा और आवाज देने वाला कहेगा, ऐ अहले जन्नत! तुम्हें हमेशा यहाँ रहना है, अब किसी को मौत नहीं आयेगी। ऐ अहले जहन्नम! तुम्हें भी यहाँ हमेशा रहना है, अब किसी को मौत नहीं आयेगी। फिर आपने यह आयत तिलावत फरमाईः "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! काफिरों को उस अफसोसनाक दिन से डरावो, जब आखरी फैसला कर दिया जायेगा और इस वक्त दुनिया में यह लोग गफलत में पड़े हुए हैं और ईमान नहीं लाये हैं।

फायदेः बुखारी की एक रिवायत में है कि जिब्ह मौत का मंजर अहले जन्नत की खुशी में इजाफे का सबब होगा। जबकि अहले जहन्नम रोना पीटना और ज्यादा कर देंगे। (सही बुखारी 6548)

तफसीर सूरह नूर

٤٣ - باب: قوله تعالى: ﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ﴾

बाब 43: जो लोग अपनी बीवियों को जिना का इल्जाम लगायें और खुद अपने अलावा और कोई गवाह न हो तो उनमें से एक की गवाही यही है कि वो अल्लाह की कसम उठाकर चार बार कह दे कि वो सच्चा है।

1756: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है कि ओवेमीर रजि. जनाब आसिम बिन अदी रजि. के पास आया, जो कबीला बनी अजलान का सरदार था और कहने लगा, जो आदमी अपनी बीवी के पास किसी गैर मर्द को देखे तो तुम उसके बारे में क्या कहते हो? क्या उसको कत्ल कर दे। फिर तो तुम लोग उसे भी कत्ल कर दोगे, आखिर करे तो क्या करे? लिहाजा तुम मेरी खातिर यह मसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछो। चूनांचे आसिम रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस किस्म के सवालात को बुरा समझा और ऐब वाला ख्याल किया। जब ओवेमीर रजि. ने आसिम रजि. से पूछा तो आसिम रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी बातें पूछने से कराहत का इजहार फरमाया है, इस पर ओवेमीर रजि. ने कहा, अल्लाह की कसम! मैं बाज न आऊंगा, जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह मसला न पूछ

١٧٥٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ عُوَيْمِرًا أَتَى عاصِمَ بْنَ عَدِيٍّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، وَكانَ سَيِّدَ بَنِي عَجْلاَنَ، فَقَالَ: كَيْفَ تَقُولُونَ فِي رَجُلٍ وَجَدَ مَعَ ٱمْرَأَتِهِ رَجُلًا، أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَصْنَعُ؟ سَلْ لِي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ. فَأَتَى عاصِمٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَكَرِهَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ المَسَائِلَ وعَابَها، فَسَأَلَهُ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَرِهَ المَسَائِلَ وَعابَهَا، قالَ عُوَيْمِرٌ: وَٱللهِ لاَ أَنْتَهِي حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ، فَجَاءَ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، رَجُلٌ وَجَدَ مَعَ ٱمْرَأَتِهِ رَجُلًا، أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَصْنَعُ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قَدْ أَنْزَلَ ٱللهُ الْقُرْآنَ فِيكَ وَفِي صَاحِبَتِكَ). فَأَمَرَهُمَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالْمُلاَعَنَةِ بِمَا سَمَّى ٱللهُ فِي كِتَابِهِ، فَلاَعَنَهَا، ثُمَّ قالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنْ حَبَسْتُهَا فَقَدْ ظَلَمْتُهَا، فَطَلَّقَهَا، فَكَانَتْ سُنَّةً لِمَنْ كانَ بَعْدَهُمَا فِي المُتَلاعِنَيْنِ، ثُمَّ قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱنْظُرُوا، فَإِنْ جاءَتْ بِهِ أَسْحَمَ، أَدْعَجَ الْعَيْنَيْنِ، عَظِيمَ الأَلْيَتَيْنِ، خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ، فَلاَ أَحْسِبُ عُوَيْمِرًا إِلَّا قَدْ صَدَقَ عَلَيْهَا. وَإِنْ جاءَتْ بِهِ أُحَيْمِرَ، كَأَنَّهُ وَحَرَةٌ، فَلاَ أَحْسِبُ

عُوَيْمِرًا إِلَّا قَدْ كَذَبَ عَلَيْهَا. فَجَاءَتْ بِهِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعَتَ بِهِ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنْ تَصْدِيقِ عُوَيْمِرٍ، فَكَانَ بَعْدُ يُنْسَبُ إِلَى أُمِّهِ. [رواه البخاري: ٤٧٤٥]

लूं। लिहाजा वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर कोई आदमी अपनी बीवी के साथ किसी गैर मर्द को देख ले तो उसको क्या करना चाहिए। उसको कत्ल कर दे। तो आप उसे बदले में कत्ल कर देंगे। या और कोई सूरत इख्तियार करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने तेरे और तेरी बीवी के बारे में कुरआन में हुक्म दिया है। फिर आपने मियां बीवी दोनों को आप में एक दूसरे पर लानत करने का हुक्म दिया, जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में हुक्म दिया था। आखिर ओवेमीर रजि. ने अपनी बीवी से लेआन (आपस में एक का दूसरे पर लानत करना) किया। फिर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर मैं अब इस औरत को अपने पास रखूं तो मैंने इस पर जुल्म किया। इस वजह से उन्होंने तलाक दे दी। फिर हर मियां बीवी में जो लेआन करें, यही तरीका कायम हो गया। उधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, देखो! अगर काला रंग, काली आंखों का बड़े सुरीन और मोटी मोटी पिण्डलियों वाला बच्चा उसके यहाँ पैदा हुआ तो यकीनन ओवेमीर रजि. ने सच कहा है और अगर गिरगिट की तरह सुर्ख रंग का बच्चा पैदा हुआ तो मैं समझूंगा कि ओवेमीर रजि. अपनी बीवी पर झूटी तोहमत लगाई है। चूनांचे उस औरत के यहाँ उसी शक्ल व सूरत का बच्चा पैदा हुआ। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओवेमीर रजि. की तस्दीक में बयान फरमाया था। लिहाजा वो बच्चा अपनी मां की तरफ मनसूब किया गया।

फायदे: लेआन के बाद मियां के बीच जुदाई करा दी जाती है। यानी बीवी को तलाक देने की जरूरत नहीं। निज जिस मियां बीवी के बीच

लेआन के जरीये जुदाई हो, वो कभी दोबारा आपस में निकाह नहीं कर सकते। (फतहुलबारी 4/690)

٤٤ - باب: قوله تعالى: ﴿وَيَدْرَؤُا عَنْهَا ٱلْعَذَابَ أَن تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَـٰدَٰتٍۭ بِٱللَّهِ﴾ الآية

बाब 44: फरमाने इलाही: और उस (मुल्जिम) औरत से इस तरह सजा टल सकती है कि वो चार बार अल्लाह की कसम उठा कर कहे कि वो मर्द झूटा है।''

١٧٥٧: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَذَفَ ٱمْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِشَرِيكِ بْنِ سَحْمَاءَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ٱلْبَيِّنَةَ أَوْ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ). فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِذَا رَأَى أَحَدُنَا عَلَى ٱمْرَأَتِهِ رَجُلًا يَنْطَلِقُ يَلْتَمِسُ الْبَيِّنَةَ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: (ٱلْبَيِّنَةَ وَإِلَّا حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ). فَقَالَ هِلاَلٌ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنِّي لَصَادِقٌ، فَلَيُنْزِلَنَّ ٱللهُ مَا يُبَرِّئُ ظَهْرِي مِنَ الْحَدِّ، فَنَزَلَ جِبْرِيلُ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ: ﴿وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَٰجَهُمْ﴾ فَقَرَأَ حَتَّى بَلَغَ ﴿إِن كَانَ مِنَ ٱلصَّـٰدِقِينَ﴾. فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا، فَجَاءَ هِلاَلٌ فَشَهِدَ، وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ ٱللهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟). ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ، فَلَمَّا كَانَتْ عِنْدَ الْخَامِسَةِ وَقَّفُوهَا وَقَالُوا: إِنَّهَا مُوجِبَةٌ. قَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: فَتَلَكَّأَتْ وَنَكَصَتْ، حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهَا تَرْجِعُ، ثُمَّ قَالَتْ: لاَ أَفْضَحُ قَوْمِي

1757: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि हिलाल बिन उमैया रजि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपनी बीवी पर शरीक बिन सहमाअ रजि. से जिना करने की तोहमत लगाई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, चार गवाह पेश करो। वरना तुम्हारी पीठ पर तोहमद की सजा लगाई जायेगी। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर हम में से कोई अपनी बीवी के साथ किसी को बुरा काम करते देखे तो गवाह तलाश करता फिरे, लेकिन आप वही फरमाते रहे कि चार गवाह पेश करो। वरना तुम्हारी पीठ पर तोहमद की सजा जारी की जायेगी। उस वक्त हिलाल रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उस

سَائِرَ الْيَوْمِ، فَمَضَتْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَبْصِرُوهَا، فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَكْحَلَ الْعَيْنَيْنِ، سَابِغَ الأَلْيَتَيْنِ، خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ، فَهُوَ لِشَرِيكِ ابْنِ سَحْمَاءَ). فَجَاءَتْ بِهِ كَذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْلاَ مَا مَضَى مِنْ كِتَابِ اللهِ، لَكَانَ لِي وَلَهَا شَأْنٌ). [رواه البخاري: ٤٧٤٧]

अल्लाह की कसम, जिसने आपको हक के साथ माबूस किया है। मैं सच्चा हूँ और अल्लाह तआला कुरआन में जरूर ऐसा हुक्म नाजिल करेगा, जिससे मेरी तोहमद की सजा टल जायेगी। फिर उस वक्त जिब्राईल अलैहि. आये और यह आयत उतरी "वो लोग जो अपनी बीवियों को किसी से जिना करने पर इल्जाम लगाते हैं.......अगर वो सच्चा है (तक)

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुतवज्जा हुए, उस औरत को बुलाया और हिलाल भी आ गये और उसने लेआन की गवाहियां दी। आप बदस्तूर यही फरमाते रहे, अल्लाह जानता है कि तुम में एक जरूर झूटा है। लिहाजा तुम में से कोई तौबा करने वाला है? यह सुनकर औरत उठी और उसने भी गवाहियां दीं। जब पांचवीं गवाही का वक्त आया तो लोगों ने उसे रोक दिया कि यह बात अगर झूट हुई तो अजाब को वाजिब कर देने वाली है। इब्ने अब्बास रजि. का बयान है कि फिर वो औरत हिचकिचाई तो हमने ख्याल किया कि शायद रजूअ कर लेगी। आखिर कुछ देर ठहर कर कहने लगी, मैं अपनी कौम को हमेशा के लिए दाग नहीं लगाऊंगी। फिर उसने पांचवीं गवाही भी दे दी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब देखते रहो, अगर उसके यहाँ काली आखों वाला मोटे सुरीन वाला और गोश्त से भरी हुई पिण्डलियों वाला बच्चा पैदा हुआ तो वो शरीक बिन सहमाअ का नुत्फा है। चूनांचे उस औरत के यहाँ ऐसी ही शक्लो सूरत का बच्चा पैदा हुआ। उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर कुरआन में लेआन का हुक्म नाजिल न हुआ होता तो मैं उस औरत को अच्छी तरह सजा देता।

फायदे: लेआन के बाद पैदा होने वाला बच्चा अपने मां की तरफ मनसूब होगा। और अपनी मां का वारिस होगा। वो उसकी वारिस होगी। क्योंकि उसने उसे जिना का बच्चा कबूल नहीं किया। चूनांचे बाप की तरफ से आपस में एक दूसरे के वारीस होने का सिलसिला खत्म हो जायेगा, क्योंकि उसने उसे बेटा कबूल नहीं किया है।

तफसीर सूरह फुरकान

बाब 45: फरमाने इलाही: जो लोग कयामत के दिन सर के बल जहन्नम में जमा किये जायेंगे (आखिर तक)

٤٥ - باب: قوله تعالى: ﴿الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ﴾

1758: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कयामत के दिन काफिर अपने सर के बल कैसे उठाये जायेंगे? आपने फरमाया कि जिस परवरदिगार ने आदमी को दो पांव पर चलाया है, क्या वो उसको कयामत के दिन मुंह के बल नहीं चला सकता।

١٧٥٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، كَيْفَ يُحْشَرُ الكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: (أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى الرِّجْلَيْنِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٤٧٦٠]

फायदे: एक रिवायत में है कि मैदाने महशर में तीन तरह के लोग होंगे। कुछ सवारियों पर होंगे। कुछ पैदल चलेंगे। जबकि कुछ मुंह के बल चलकर अल्लाह के सामने पेश होंगे। इस पर किसी ने सवाल किया कि मुंह के बल कैसे चलेंगे? तो आपने यह जवाब दिया।

 (फतहुलबारी 8/492)

तफसीर सूरह रूम

बाब 46: फरमाने इलाही: अलिफ लाम

٤٦ - باب: قوله تعالى: ﴿الٓمٓ ۝﴾

﴿غُلِبَتِ ٱلرُّومُ﴾

मिम -अहले रूम करीबी मुल्क में हार गये।

١٧٥٩ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَقَدْ بَلَغَهُ رَجُلٌ يُحَدِّثُ في كِنْدَةَ فَقَالَ: يَجِيءُ دُخانٌ يَوْمَ القِيامَةِ فَيأْخُذُ بِأَسْماعِ المُنَافِقِينَ وَأَبْصارِهِمْ، وَيأْخُذُ المُؤمِنَ كَهَيْئَةِ الزُّكامِ، فَفَزِعْنا، فَأَتَيْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ وَكانَ مُتَّكِئًا، فَغَضِبَ، فَجَلَسَ فَقالَ: مَنْ عَلِمَ فَلْيَقُلْ، وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلْ: ٱللهُ أَعْلَمُ، فَإِنَّ مِنَ العِلْمِ أَنْ تَقُولَ لِمَا لَا يَعْلَمُ لَا أَعْلَمُ، فَإِنَّ ٱللهَ قالَ لِنَبِيِّهِ ﷺ: ﴿قُلْ مَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُتَكَلِّفِينَ﴾ وَإِنَّ قُرَيْشًا أَبْطَؤُوا عَنِ الإِسْلَامِ، فَدَعا عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ). فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ حَتَّى هَلَكُوا فِيهَا، وَأَكَلُوا المَيْتَةَ وَالعِظَامَ، وَيَرَى الرَّجُلُ ما بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ كَهَيْئَةِ الدُّخانِ، فَجَاءَهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، جِئْتَ تَأْمُرُنَا بِصِلَةِ الرَّحِمِ، وَإِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا فَادْعُ ٱللهَ. فَقَرَأَ: ﴿فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِى ٱلسَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿عَآئِدُونَ﴾ أَفَيُكْشَفُ عَنْهُمْ عَذَابُ الآخِرَةِ إِذَا جَاءَ ثُمَّ عَادُوا إِلَى كُفْرِهِمْ، فَذَلِكَ

1759: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्हें खबर पहुंची कि एक आदमी कबीला किन्दा में यह हदीस बयान करता है कि कयामत के दिन एक धूंआ उठेगा, जिससे मुनाफिकीन तो अंधे और बेहरे हो जायेंगे और इमान वालों के लिए इससे जुकाम की सी हालत पैदा हो जायेगी। जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. को यह खबर मिली तो वो तकिया लगाये बैठे थे। नाराज हुए और सीधे होकर बैठ गये। फिर फरमाया, जिसे कोई बात मालूम हो तो उसे बयान करे। और जो नहीं जानता, उसकी बाबत कह दे कि अल्लाह ही खूब जानता है। यह भी इल्म की ही बात है कि जिस बात को न जानता हो, उसके बारे में कह दे कि मैं नहीं जानता। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया, "ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कह दो कि मैं तुमसे अपने तबलिग पर कोई मजदूरी नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ के साथ बात बताने वालों से नहीं हूँ।"

قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ﴾. يَوْمَ بَدْرٍ، وَ﴿لِزَامًا﴾ يَوْمَ بَدْرٍ، ﴿الٓمٓ ٥ غُلِبَتِ الرُّومُ﴾ إِلَى ﴿سَيَغْلِبُونَ﴾. وَالرُّومُ قَدْ مَضَى.

[رواه البخاري: ٤٧٧٤]

इसके बाद उन्होंने फरमाया कि जब कुरैश ने इस्लाम लाने में देर की तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए बद-दुआ फरमाई। फरमाया, ऐ अल्लाह! कुरैश के मुकाबले में मेरी इस तरह मदद फरमा कि उन पर यूसुफ अलैहि. के सात साला अकाल की तरह सात बरस का अकाल भेज। आखिरकार ऐसा अकाल पैदा हुआ कि बहुत से आदमी तो मर गये और जो बच गये उन्होंने मुर्दार और हड्डियां खाना शुरू कर दी। आदमी का यह हाल था कि उसे आसमान व जमीन के बीच एक धुंआ सा दिखाई देता था। आखिरकार अबू सुफियान रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप तो हमें सिलारहमी का हुक्म देते हैं और अब तुम्हारी कौम हलाक हो रही है। आप अल्लाह से दुआ करें, आपने दुआ फरमाई, फिर यह पढ़ा "उस दिन का इन्तेजार करो कि आसमान से सरीह धुंआ उठेगा जो लोगों पर छा जायेगा।....तुम फिर कुफ्र करने लगोगे। (यहाँ तक)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने फरमाया, अगर इससे कयामत के दिन का धुंआ मुराद हो तो क्या आखिरत का अजाब जब आ जाये तो वो दूर हो सकता है? चूनांचे अजाब के रूक जाने पर कुरैश फिर कुफ्र पर कायम रहे और अल्लाह तआला के इस इरशाद गरामी "जिस दिन हम बड़ी सख्त पकड़ करेंगे, यकीनन हम इन्तेकाम लेंगे।" इससे गजवा बदर मुराद है और लिजामन से मुराद उनका बदर में कैद हो जाना है। इसलिए दुखान, बतशा, लिजाम और आयते रूम की सच्चाई पहले गुजर चुकी है।

फायदे: जिस चीज के बारे में मालूमात न हो, उसे तकल्लुफ (खुद से

बनाकर) से बयान करना बजाये खुद एक जिहालत है, बल्कि सल्फ का कौल है कि ला अदरी यानी मैं नहीं जानता, कहना भी निस्फ इल्म है। (फतहुलबारी 8/512) वाजेह रहे यह हदीस पहले (549) गुजर चुकी है।

तफसीर सूरह सज्दा

बाब 47: फरमाने इलाही: कोई नफ्स नहीं जानता कि उनके लिए कैसी आखों की ठण्डक छुपाकर रखी गई है।

٤٧ - باب: قوله تعالَى: ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ﴾

1760. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, आपने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशादगरामी है, मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नैमतें तैयार कर रखी हैं जिसको किसी आंख ने नहीं देखा और न किसी कान से सुना और न ही किसी आदमी के दिल पर उनका ख्याल गुजरा है। और कई तरह की नैमतें मैंने तुम्हारे लिए इक्ट्ठी कर रखी हैं। लिहाजा उनके मुकाबले वो नैमतें जो तुमको दुनिया में मालूम हो गई हैं, उनका जिक्र छोड़ो (क्योंकि वो उनके मुकाबले में बेहकीकत है) आपने यह आयत तिलावत फरमाई ''फिर जैसा कुछ आंखों की ठण्डक का सामान उनके आमाल की जजा में उनके लिए छुपाकर रखा गया है, उसकी किसी नफ्स को खबर नहीं है।''

١٧٦٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَقُولُ ٱللهُ تَعَالَى: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ: ما لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ، ذُخْرًا، بَلْهَ ما أُطْلِعْتُمْ عَلَيْهِ). ثُمَّ قَرَأَ: ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾. [رواه البخاري: ٤٧٨٠]

फायदे: एक रिवायत में है कि जन्नत की नैमतों पर न तो कोई करीब रहने वाला फरिश्ता जानता है और न ही किसी नबी की उन तक पहुच हुई है। (फतहुलबारी 8/516)

तफसीर सूरह अहजाब

बाब 48: फरमाने इलाही: और आपको यह भी इख्तियार है कि जिस बीवी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो... आखिर तक"

٤٨ - باب: قوله تعالى: ﴿تُرْجِي مَن تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَن تَشَاءُ﴾

1761: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, मुझे उन औरतों के खिलाफ बहुत गैरत आती है जो अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हिबा कर देती थी, और मैं कहा करती थी, क्या औरत भी अपने आपको हिबा कर सकती है? फिर जब अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको यह भी इख्तियार है, जिस बीवी को चाहो अलग रखो और जिसे चाहो, अपने पास रखो और जिसको आपने अलग रखा हो, उसको फिर अपने पास तलब करो तो आप पर कोई गुनाह नहीं।"

١٧٦١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَغَارُ عَلَى ٱللَّاتِي وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَأَقُولُ أَتَهَبُ ٱلْمَرْأَةُ نَفْسَهَا؟ فَلَمَّا أَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿تُرْجِي مَن تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَن تَشَاءُ وَمَنِ ٱبْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ﴾. قُلْتُ: مَا أَرَى رَبَّكَ إِلَّا يُسَارِعُ فِي هَوَاكَ. [رواه البخاري: ٤٧٨٨]

उस वक्त मैंने अपने दिल में कहा कि मैं देखती हूँ, अल्लाह तआला आप की ख्वाहिश के मुवाफिक जल्द ही हुक्म जारी कर देता है।

फायदे: जिन औरतों ने अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिबा करने की पेशकश की, वो एक से ज्यादा हैं। उनमें खौला बिन्ते हकीम, उम्मे शरीक, फातिमा बिन्ते शरीक और जैनब बिन्ते खुजैमा रजि. भी शामिल हैं। (फतहुलबारी 8/525)

١٧٦٢ : وعنها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ يَسْتَأْذِنُ في يَوْمِ المَرْأَةِ مِنَّا، بَعْدَ أَنْ أُنْزِلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿تُرْجِى مَن تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِىٓ إِلَيْكَ مَن تَشَآءُ وَمَنِ ٱبْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ﴾. فَكُنْتُ أَقُولُ لَهُ: إِنْ كانَ ذَاكَ إِلَيَّ، فإِنِّي لاَ أُرِيدُ يَا رَسُولَ ٱللهِ أَنْ أُوثِرَ عَلَيْكَ أَحَدًا. [رواه البخاري: ٤٧٨٩]

1762: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब यह आयत उतरी ''आप जिस बीवी को चाहें, अलग रखें और जिसे चाहें अपने पास रखें। (आखिर तक) तो उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह काम इख्तियार कर लिया था कि अगर किसी बीवी की बारी में आपको दूसरी बीवी पसन्द होती तो आप उससे इजाजत लिया करते थे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर मुझको ऐसा इख्तेयार दिया जाये तो मैं आपकी मुहब्बत के सबब किसी और को आप पर तरजीह नहीं दे सकती।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बीवियों के बारे में बारी की पाबन्दियां नहीं थी, लेकिन आपने अल्लाह की तरफ से इजाजत के बावजूद बारी को कायम रखा और किसी औरत की बारी के वक्त दूसरी बीवी के पास नहीं रहे। (फतहुलबारी 8/526)

---

٤٩ - باب: قوله عزَّ وَجلَّ: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَدْخُلُوا۟ بُيُوتَ ٱلنَّبِىِّ﴾

बाब 49: फरमाने इलाहीः मौमिनों! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में न जाया करो, मगर इस सूरत में कि तुम्हें खाने के लिए इजाजत दी जाये... आखिर तक।

١٧٦٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: خَرَجَتْ سَوْدَةُ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، بَعْدَ ما ضُرِبَ ٱلْحِجَابُ لِحَاجَتِهَا، وَكانَتِ ٱمْرَأَةً جَسِيمَةً، لاَ

1763: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि पर्दे का हुक्म उतरने के बाद सौदा रजि. कजाये हाजत के लिए बाहर निकलीं, चूंकि वो कुछ मोटी

تَخْفَىٰ عَلَىٰ مَنْ يَعْرِفُهَا، فَرَآهَا عُمَرُ ابْنُ الخَطَّابِ، فَقَالَ: يَا سَوْدَةُ، أَمَا وَٱللهِ مَا تَخْفَيْنَ عَلَيْنَا، فَٱنْظُرِي كَيْفَ تَخْرُجِينَ. قَالَتْ: فَٱنْكَفَأَتْ رَاجِعَةً، وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي بَيْتِي، وَإِنَّهُ لَيَتَعَشَّى وَفِي يَدِهِ عَرْقٌ، فَدَخَلَتْ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي خَرَجْتُ لِبَعْضِ حَاجَتِي، فَقَالَ لِي عُمَرُ كَذَا وَكَذَا، قَالَتْ: فَأَوْحَى ٱللهُ إِلَيْهِ، ثُمَّ رُفِعَ عَنْهُ، وَإِنَّ الْعَرْقَ فِي يَدِهِ مَا وَضَعَهُ، فَقَالَ: (إِنَّهُ قَدْ أُذِنَ لَكُنَّ أَنْ تَخْرُجْنَ لِحَاجَتِكُنَّ). [رواه البخاري: ٤٧٩٥]

जिस्म थी, इसलिए पहचानने वाले से छिपी न रह सकती थी। उमर रजि. ने उन्हें देख कर फरमाया, अल्लाह की कसम! तुम तो अब भी छिपी हुई नहीं हो। आप खुद देखें, कैसे बाहर निकलती हो? आइशा रजि. का बयान है कि सौदा रजि. लौटकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई तो आप मेरे घर में शाम का खाना खा रहे थे और एक हड्डी आपके हाथ में थी। सौदा रजि. अन्दर आयीं और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं कजाये हाजत के लिए बाहर जा रही थी कि उमर रजि. ने ऐसा ऐसा कहा है। यह सुनते ही आप पर वह्य उतरना शुरू हुई फिर जब वह्य की हालत खत्म हो गई और हड्डी बदस्तूर आपके हाथ में थी, जिसे आपने रखा नहीं था। आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने तुम्हें इजाजत दी है कि जरूरत के वक्त बाहर जा सकती हो।

फायदेः उमर रजि. चाहते थे कि जिस तरह बीवियों के लिए जिस्म का ढ़का होना जरूरी है, उसी तरह उनकी शख्सीयत लोगों की निगाहों से छिपी हुई हो। चूनांचे हदीस में उसकी वजाहत कर दी गई है।

٥٠ - باب: قوله عزَّ وجلَّ: ﴿إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ﴾

बाब 50: फरमाने इलाहीः अगर तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसे छिपाकर रखो तो अल्लाह हर चीज से बाखबर है।"

١٧٦٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

1764: आइशा रजि. से रिवायत है,

عَنْهَا قَالَتْ: اَسْتَأْذَنَ عَلَيَّ أَفْلَحُ أَخُو أَبِي الْقُعَيْسِ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ فَقُلْتُ: لاَ آذَنُ لَهُ حَتَّى أَسْتَأْذِنَ فِيهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَإِنَّ أَخَاهُ أَبَا الْقُعَيْسِ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي، وَلٰكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَةُ أَبِي الْقُعَيْسِ، فَدَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، إِنَّ أَفْلَحَ أَخَا أَبِي الْقُعَيْسِ اسْتَأْذَنَ عَلَيَّ، فَأَبَيْتُ أَنْ آذَنَ لَهُ حَتَّى أَسْتَأْذِنَكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَمَا مَنَعَكِ أَنْ تَأْذَنِي، عَمُّكِ). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، إِنَّ الرَّجُلَ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي، وَلٰكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَةُ أَبِي الْقُعَيْسِ، فَقَالَ: (ائْذَنِي لَهُ، فَإِنَّهُ عَمُّكِ تَرِبَتْ يَمِينُكِ). [رواه البخاري: ٤٧٩٦]

उन्होंने फरमाया कि पर्दे का हुक्म उतरने के बाद अबू कुएस के भाई अफलह ने मेरे पास आने की इजाजत मांगी तो मैंने कहा, जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इजाजत न देंगे, मैं इजाजत न दूंगी। क्योंकि उनके भाई अबू कुएस ने मुझे दूध नहीं पिलाया है। बल्कि उसकी बीवी ने मुझे दूध पिलाया है। फिर जब मेरे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अबू कुएश के भाई अफलह ने मुझ से अन्दर आने की इजाजत मांगी तो मैंने आपकी इजाजत के बगैर उसे इजाजत देने से इनकार कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तूने अपने चचा को अन्दर आने की इजाजत क्यों न दी? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मर्द ने तो मुझे दूध नहीं पिलाया बल्कि अबू कुएस की बीवी ने पिलाया है। आपने फरमाया, तेरे हाथ खाक आलूद हो, उनको आने की इजाजत दो क्योंकि वो तुम्हारे चचा हैं।

फायदे: इस हदीस के आखिर में हजरत आइशा रजि. का बयान है कि जितने रिश्ते तुम खून की वजह से हराम समझते हो, वो दूध की वजह से हराम हैं। यानी रजायी चचा और रजायी मामू सब महरम हैं और उनसे पर्दा नहीं है।

बाब 51: फरमाने इलाही: बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ते हैं..... आखिर तक।

٥١ - باب: قوله عزَّ وَجلَّ: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ﴾ الآية

1765: कअब बिन उजरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि किसी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको सलाम करना तो हमको मालूम हो गया है। (तशहहुद में पढ़ा जाता है) लेकिन दरूद आप पर कैसे भेजें? आपने फरमाया, दरूद यह है'' इलाही! रहमो करम फरमा, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल (घर वालों) पर जिस तरह रहमो करम फरमाया, तूने हजरत इब्राहिम अलैहि. की आल पर। बेशक तू तारीफ के लायक और बुजुर्गी वाला है।

١٧٦٥ : عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَمَّا السَّلاَمُ عَلَيْكَ فَقَدْ عَرَفْنَاهُ، فَكَيْفَ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: (قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ). [رواه البخاري: ٤٧٩٧]

ऐ अल्लाह! बरकत नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल पर, जिस तरह बरकत नाजिल की तूने हजरत इब्राहिम अलैहि. की आल पर। बेशक तू तारीफ के लायक और बुजुर्गी वाला है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलाम बायस तौर पर मालूम हुआ था कि अतहयात में ''अस्स्लामु अलैका अहयुन नबयु व रहमतुल्लाह व बरकातहु'' पढ़ा जाता है। चूंकि आयते करीमा में सलात पढ़ने का भी जिक्र है, इसलिए दरयाफ्त किया कि दरूद कैसे पढ़ा जाये? (फतहुलबारी 8/533)

١٧٦٦ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، هٰذَا التَّسْلِيمُ فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ قَالَ: (قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ). [رواه البخاري: ٤٧٩٨]

1766: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! सलाम करना तो हमको मालूम हो गया है, लेकिन आप पर दरूद कैसे भेजें। आपने फरमाया, यूं कहो "इलाही! रहमो करम फरमा, अपने बन्दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, जिस तरह रहमो करम फरमाया तूने हजरत इब्राहिम अलैहि. की आल पर और बरकत नाजिल फ़रमा। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल पर जिस तरह बरकत नाजिल फरमाई तूने हजरत इब्राहिम अलैहि. पर।

फायदे: इसे दरूद इब्राहिम कहा जाता है, बुखारी में मुख्तलिफ अलफाज से मनकूल है, देखिये हदीस नम्बर 6357, 6358, 6360। अलबत्ता जो दरूद हम नमाज में पढ़ते हैं वो हदीस नम्बर 3370 में नकल है।

---

٥٢ - باب: قوله عزَّ وجلَّ: ﴿لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ ءَاذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ ٱللَّهُ﴾

बाब 52: फरमाने इलाही: मौमिनो! तुम उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने हजरत मूसा को रंज पहुंचाया तो अल्लाह तआला ने उनको बे-ऐब साबित किया।"

١٧٦٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (إِنَّ مُوسَى كَانَ رَجُلًا حَيِيًّا، وَذٰلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا

1767: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मूसा अलैहि. बड़े शर्मीले इन्सान थे। अल्लाह

﴿تَكُونُوا كَالَّذِينَ ءَاذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا﴾. [رواه البخاري: ٤٧٩٩]

तआला के उस फरमान का यही मायना है "ऐ मौमिनों! उन लोगों की तरह न बनो, जिन्होंने मूसा अलैहि. को तकलीफ पहुंचाई, अल्लाह तआला ने उनको सही करार दिया, अल्लाह तआला के यहाँ इज्जत व बुजुर्गी वाले थे।

फायदे: इस हदीस में जिस वाक्ये की तरफ इशारा है, उसकी तफसील सही बुखारी 3404 में देखी जा सकती है।

तफसीर सूरह सबा

٥٣ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ﴾

बाब 53: फरमाने इलाही : वो तो तुम्हें एक सख्त अजाब के आने से पहले खबरदार करने वाला है।"

١٧٦٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ الصَّفَا ذَاتَ يَوْمٍ، فَقَالَ: (يَا صَبَاحَاهُ). فَاجْتَمَعَتْ إِلَيْهِ قُرَيْشٌ، قَالُوا: مَا لَكَ؟ قَالَ: (أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ الْعَدُوَّ يُصَبِّحُكُمْ أَوْ يُمَسِّيكُمْ، أَمَا كُنْتُمْ تُصَدِّقُونِي؟). قَالُوا: بَلَى، قَالَ: (فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ). فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ تَبًّا لَكَ، أَلِهٰذَا جَمَعْتَنَا؟ فَأَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿تَبَّتْ يَدَآ أَبِي لَهَبٍ﴾. [رواه البخاري: ٤٨٠١]

1768: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार सफा पहाड़ी पर चढ़े और आपने फरमाया, 'या सबाहा'। तो कुरैश के लोग आपके पास जमा हो गये और कहने लगे क्या बात है? आपने फरमाया, अगर मैं तुम्हें खबर दूं कि दुश्मन सुबह या शाम हमला करने वाला है तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सबने कहा, हां! फिर आप ने फरमाया, मैं तुम्हें एक सख्त अजाब के आने से पहले खबरदार करता हूँ। अबू लहब ने कहा, तेरे दोनों हाथ टूट जायें। तूने हमें इसलिए जमा किया था? तो अल्लाह ने उसी वक्त यह आयत उतारी, टूट गये दोनों हाथ अबू लहब के और वो खुद भी हलाक हो गया। (आखिर तक)

फायदेः यह वाक्या दो बार पेश आया। पहली बार मक्का मुकर्रमा में जिसकी तफसील सही बुखारी हदीस रकमः 4770 में मौजूद है और दूसरी बार मदीना मुनव्वरा में, जब आपने अपनी बीवियों और घरवालों को जमा करके आगाह फरमाई। (फतहुलबारी 8/50)

तफसीर सूरह जुमर

٥٤ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَٰعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ﴾ الآية

बाब 54: फरमाने इलाहीः ऐ मेरे बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है''

١٧٦٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ نَاسًا مِنْ أَهْلِ الشِّرْكِ، كَانُوا قَدْ قَتَلُوا وَأَكْثَرُوا، وَزَنَوْا وَأَكْثَرُوا، فَأَتَوْا مُحَمَّدًا ﷺ فَقَالُوا: إِنَّ الَّذِي تَقُولُ وَتَدْعُوا إِلَيْهِ لَحَسَنٌ، لَوْ تُخْبِرُنَا أَنَّ لِمَا عَمِلْنَا كَفَّارَةً، فَنَزَلَ: ﴿وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ﴾. وَنَزَلَ: ﴿قُلْ يَٰعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ﴾. [رواه البخاري: ٤٨١٠]

1769: इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है कि कुछ मुश्रिकीन ने जिना और खून-खराबा कसरत से किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहने लगे, आप जो कुछ कहते और जिसकी दावत देते हैं, वो बहुत अच्छा है। अगर आप यह बतला दें कि जो गुनाह हम कर चुके हैं, वो (इस्लाम लाने से) मआफ हो जायेगें तो उस वक्त यह आयत उतरी ''लोगों जो अल्लाह के साथ किसी और को माबूद बनाकर नहीं पुकारते और हक के अलावा किसी नफ्स को कत्ल नहीं करते, जिसे अल्लाह ने हराम किया है, और न ही जिना करते हैं। (आखिर तक)

और यह आयत भी उतरी '' ऐ पैगम्बर मेरी तरफ से लोगों को कह दो कि ऐ मेरे बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हों।''

फायदे: पहली आयत के आखिर में है कि'' जो आदमी साफ दिल से तौबा कर ले और अपने किरदार की इस्लाह कर ले तो उसकी तमाम बुराईयां नेकियों में बदल दी जायेगी।'' इस आयत के आम हुक्म का तकाजा है कि तौबा करने से तमाम गुनाह माफ हो जाते हैं।

 (फतहुलबारी 8/550)

٥٥ - باب: قوله تعالى: ﴿وَمَا قَدَرُوا ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ﴾

बाब 55: फरमाने इलाही '' उन लोगों की अल्लाह ने कद्र न की, जैसा कि कद्र करने का हक है।''

١٧٧٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ حَبْرٌ مِنَ ٱلأَحْبَارِ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِنَّا نَجِدُ: أَنَّ ٱللهَ يَجْعَلُ ٱلسَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ وَٱلأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَٱلشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَٱلمَاءَ وَٱلثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ، وَسَائِرَ ٱلخَلَائِقِ عَلَى إِصْبَعٍ، فَيَقُولُ أَنَا ٱلمَلِكُ، فَضَحِكَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ تَصْدِيقًا لِقَوْلِ ٱلحَبْرِ، ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: ﴿وَمَا قَدَرُوا ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ﴾. [رواه البخاري: ٤٨١١]

1770: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि औलामा-ए-यहूद में से एक आलिम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम तोरात में लिखा हुआ पाते हैं कि अल्लाह तआला आसमानों को एक उंगली पर रख लेगा और एक पर तमाम जमीनों को और एक पर दरखतों को और एक पर पानी और गिली मिट्टी को और एक पर दूसरे मख्लूकात को और फरमायेगा, मैं ही बादशाह हूँ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कद्र मुस्कुराये कि आपकी कुचलियां (दाढ़ के दांत) खुल गई। आपने उस आलिम की तसदीक की, फिर यह आयत पढ़ी: ''उन लोगों ने अल्लाह की कद्र न की, जैसा कि उसकी कद्र करने का हक था।

फायदेः इस हदीस से अल्लाह सुब्हाना व तआला के लिए अंगुलियों का सबूत मिलता है, उनके बारे में सलफ का अकीदा यह है कि उन्हें बिला ताविल व रद्दो बदल के जाहिर मायना मुराद लिया जाये और उनकी असल हकीकत व कैफियत को अल्लाह के हवाले किया जाये कि वही बेहतर जानता है। (औनुलबारी 4/718)

बाब 56: फरमाने इलाहीः और कयामत के दिन पूरी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी।"

٥٦ - باب: قوله عزَّ وَجلَّ: ﴿وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾

1771: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि अल्लाह तआला जमीन को एक मुट्ठी में ले लेगा और आसमान को दायें हाथ में लपेटकर फरमायेगा, मैं बादशाह हूँ, दूसरे जमीन के बादशाह कहां गये?

١٧٧١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (يَقْبِضُ ٱللهُ الأَرْضَ، وَيَطْوِي السَّمَاوَاتِ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا المَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ). [رواه البخاري: ٤٨١٢]

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि कयामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेटकर दायें हाथ में और जमीन को लपेटकर बायें हाथ पकड़ेगा और फरमायेगा, मैं बादशाह हूँ, दुनिया के सख्तगीर कहां हैं?

 (फतहुलबारी 8/719)

बाब 57: फरमाने इलाही : जिस रोज सूर फूंका जायेगा, तो सब मरकर गिर जायेंगे जो आसमानों और जमीन में हैं, सिवाये उनके, जिन्हें अल्लाह जिन्दा रखना चाहे।

٥٧ - باب: قوله تعالى: ﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ﴾

1772: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, दोनों सूरों के बीच चालीस का फासिला है, लोगों ने कहा, ऐ अबू हुरैरा! चालीस दिन का? अबू हुरैरा रजि. ने कहा, मैं नहीं कह सकता, फिर उन्होंने कहा, चालीस बरस का। अबू हुरैरा ने कहा, मैं नहीं कह सकता। फिर उन्होंने कहा, चालीस महीनों का? अबू हुरैरा ने जवाब दिया, मैं कुछ नहीं कह सकता। अलबत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन्सान की हर चीज गल जायेगी, मगर दुमची (रीढ़ की हड्डी) बाकी रहेगी। फिर कयामत के दिन उसी से आदमी का ढांचा खड़ा किया जायेगा।

١٧٧٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ). قَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، أَرْبَعُونَ يَوْمًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ: أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ: أَرْبَعُونَ شَهْرًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. (وَيَبْلَى كُلُّ شَيْءٍ مِنَ الإِنْسَانِ إِلَّا عَجْبَ ذَنَبِهِ، فِيهِ يُرَكَّبُ الخَلْقُ) [رواه البخاري: ٤٨١٤]

फायदेः मरने के बाद मिट्टी इन्सान के जिस्म को खा जाती है, अलबत्ता हजरत अम्बिया अलैहि. के बाबरकत जिस्म महफूज रहते हैं, क्योंकि अहादीस में है कि जमीन उनके जिस्म को नहीं खाती। (फतहुलबारी 8/553)

तफसीर सूरह शुरा

बाब 58: फरमाने इलाहीः अलबत्ता कराबत (करीबी रिश्तेदारी) की मुहब्बत जरूर चाहता हूँ।"

٥٨ - باب: قوله عزَّ وجلَّ: ﴿إِلَّا ٱلْمَوَدَّةَ فِي ٱلْقُرْبَىٰ﴾

1773: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुरैश के हर कबीले में कराबत थी, इस बिना पर आपने

١٧٧٣ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ بَطْنٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلَّا كَانَ لَهُ فِيهِمْ قَرَابَةٌ، فَقَالَ: (إِلَّا أَنْ تَصِلُوا مَا

بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ مِنَ الْقَرَابَةِ) [رواه البخاري: ٤٨١٨]

फरमाया, मैं उसके सिवा तुम से और कोई मुतालबा नहीं करता, तुम मेरी और अपनी बाहमी कराबत की वजह से मेरे साथ मुहब्बत से रहो।

फायदे: हजरत इब्ने अब्बास रजि. की दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि कुरबा से मुराद हजरत फातिमा रजि. और उनकी औलाद है, लेकिन यह रिवायत सख्त जईफ है। इसका एक रावी हुसैन अश्कर है जो राफजी (शिया) और अहादीस घड़ने वाला है। (औनुलबारी 4/722)

तफसीर सूरह दुखान

٥٩ - باب: قوله تعالى: ﴿رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ﴾

बाब 59: फरमाने इलाही: ऐ परवरदिगार हम पर से यह अजाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं।"

١٧٧٤ : فِيهِ حَدِيثٌ لابْنِ مَسْعود الْمُتَقَدِّم فِي سُورَة الرُّوم.

1774: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से मरवी इसके बारे में हदीस (1759) सूरह रूम की तफसीर में गुजर चुकी है।

١٧٧٥ : وَزادَ فِي هٰذِهِ الرِّوايَةِ قالُوا: ﴿رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ﴾. فَقِيلَ لَهُ: إِنْ كَشَفْنَا عَنْهُمُ [الْعَذَابَ] عادُوا، فَدَعا رَبَّهُ فَكَشَفَ عَنْهُمْ [الْعَذَابَ] فَعادُوا، فَانْتَقَمَ اللهُ مِنْهُمْ يَوْمَ بَدْرٍ. [رواه البخاري: ٤٨٢٢]

1775: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. की मजकूरा रिवायत में यहाँ इतना इजाफा है कि उस वक्त कहने लगे, ऐ परवरदीगार! यह अजाब उठा दे, हम अभी ईमान लाते हैं तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाया, अगर हम उनसे अजाब दूर करेंगे तो यह फिर काफिर हो जायेंगे। चूनांचे आपने अपने परवरदिगार

से दुआ की तो वो अजाब दूर हो गया और वो लोग इस्लाम से फिर गये तो अल्लाह ने जंगे बदर में उनसे इन्तेकाम लिया।

फायदे: इस हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बद-दुआ के नतीजे में अहले मक्का पर ऐसा कहत आया कि वो मुरदार और हड्डियां खाने लगे। यहाँ तक कि जब वो आसमान की तरफ नजर उठाते तो भूख की वजह से उन्हें धुंआ नजर आता।

 (सही बुखारी 4823)

तफसीर सूरह जासिया

٦٠ - باب: قَوله تَعالَى: ﴿وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ﴾

बाब 60: फरमाने इलाहीः दिनों की गर्दीश (उलट-फेर) के अलावा कोई चीज हमें हलाक नहीं करती।"

١٧٧٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: يُؤْذِينِي ابْنُ آدَمَ، يَسُبُّ الدَّهْرَ وَأَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِي الأَمْرُ، أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ). [رواه البخاري: ٤٨٢٦]

1776: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद गरामी है कि आदम की औलाद मुझे तकलीफ देती है। इस तौर के जमाने को बुरा भला कहती है, हालांकि मैं खुद जमाना हूँ। सब काम मेरे हाथ में है। रात दिन का बदलना मेरे कब्जे में है।

फायदे: यह हदीस इस बात पर दलालत नहीं करती कि अल्लाह के नामों में से एक दहर (जमाना) भी है, क्योंकि इस हदीस में "अनद दहर" की तफसीर इन अल्फाज में बयान की गई है कि मेरे हाथ में तमाम मामलात हैं, मैं ही रात दिन का उल्ट-फेर करता हूँ।

(शरह किताबुत तौहिद 2/351)

तफसीर सूरह अहकाफ

बाब 61: फरमाने इलाहीः फिर जब उन्होंने (अजाब को) देखा कि बादल (की सूरत में) उनके मैदानों की तरफ आ रहा है।"

٦١ - باب: قَوله تَعالَى: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾ الآية

1777: उम्मे मौमिनीन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस तरह हंसते हुए नहीं देखा, जिस तरह आपका हलक खुल जाये, बल्कि आप मुस्कुराया करते थे। बाकी हदीस (1355) किताबो बदइल खलक में गुजर चुकी है।

١٧٧٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوجِ النَّبِيِّ ﷺ، قالَتْ: ما رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ، إِنَّمَا كانَ يَتَبَسَّمُ. وَذَكَرَتْ باقِي الحَدِيث وَقَدْ تَقَدَّمَ في بَدْءِ الخَلْقِ. (برقم:١٣٥٥) [رواه البخاري: ٤٨٢٨ وانظر حديث رقم: ٣٢٠٦]

फायदेः जिसमें जिक्र है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आसमान पर बादल का कोई टुकड़ा देखते तो परेशान हो जाते और जब बारिश बरसती तो आपकी परेशानी दूर हो जाती और खुश हो जाते और हजरत आइशा रजि. ने इस परेशानी की वजह पूछी तो आपने मजकूरा आयत तिलावत फरमाई।

तफसीर सूरह मुहम्मद

बाब 62: फरमाने इलाहीः अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम बन जाओ तो मुल्क में खराबी करने लगो और अपने रिश्तों को तोड़ डालो।"

٦٢ - باب: قَوله تَعالَى: ﴿وَتُقَطِّعُوٓا أَرْحَامَكُمْ﴾

१७٧٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (خَلَقَ ٱللهُ الْخَلْقَ، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْهُ قَامَتِ الرَّحِمُ، فَأَخَذَتْ بِحَقْوِ الرَّحْمٰنِ، فَقَالَ لَهُ: مَهْ، قَالَتْ: هٰذَا مَقَامُ العَائِذِ بِكَ مِنَ القَطِيعَةِ، قَالَ: أَلاَ تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ، وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ؟ قَالَتْ: بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ: فَذَاكِ). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي ٱلْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوٓا أَرْحَامَكُمْ﴾. [رواه البخاري: ٤٨٣٠]

1778: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब अल्लाह तआला सब मख्लूकात को पैदा कर चुका तो उस वक्त रहीम ने खड़े होकर परवरदिगार की कमर थाम ली। अल्लाह तआला ने फरमाया, रूक जाओ। वो कहने लगा, मेरा यूं खड़ा होना तेरी पनाह के लिए है। उस आदमी से जो कतअ रहमी करेगा, अल्लाह ने फरमाया, क्या तू इस पर खुश नहीं कि जो तेरे रिश्ते का हक अदा करेगा, मैं उस पर मेहरबानी करूंगा और जो तेरे रिश्ते का हक अदा न करेगा, मैं उससे रिश्ता खत्म कर लूं। उस वक्त रहीम कहने लगा, परवरदिगार मैं इस पर राजी हूँ। परवरदिगार ने कहा, ऐसा ही होगा।

फायदे: हक्व उस मकाम को कहते हैं, जहां तेहबन्द बांधी जाती है, इस हदीस से अल्लाह सुब्हाना व तआला के लिए हक्व का पता चलता है, हमारे असलाफ ने उसे अपनी जाहिरी मायने पर महमूल किया है। लेकिन जैसे अल्लाह की शायाने शान है।

١٧٧٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فِي رِوَايَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ﴾). [رواه البخاري: ٤٨٣١]

1779: अबू हुरैरा रजि. से ही एक रिवायत में है, उन्होंने कहा, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो : "अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम

हो जाओ तो मुल्क में खराबी करने लगो और अपने रिश्तों को तोड़ डालो।''

तफसीर सूरह काफ

٦٣ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ﴾

बाब 63: फरमाने इलाही: जहन्नम कहेगी कि क्या मेरे लिए कुछ ज्यादा भी है?''

١٧٨٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يُلْقَى فِي النَّارِ وَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ، فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ). [رواه البخاري: ٤٨٤٨]

1780: अनस रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब जहन्नम वाले जहन्नम में डाले जायेंगे तो जहन्नम यही कहती रहेगी कि कुछ ज्यादा है। यहाँ तक कि अल्लाह अपना कदम उस पर रखेंगे तब दोजख कहेगी, बस बस।

फायदे: कुछ लोगों ने कदम रखने से मुराद, उसका जलील करना लिया है हालांकि सिफात की तावील करना, इस्लाफ का मसलक नहीं, बल्कि उन्होंने कदम और रिजल को बगैर रद्दो बदल और बगैर मिसाल व खराबी के अल्लाह की सिफात में शुमार किया है। (फतहुलबारी 8/597)

١٧٨١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ، فَقَالَتِ النَّارُ: أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ، وَقَالَتِ الْجَنَّةُ: مَا لِي لَا يَدْخُلُنِي إِلَّا ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ. قَالَ ٱللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى لِلْجَنَّةِ: أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَقَالَ لِلنَّارِ: إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابِي أُعَذِّبُ بِكِ

1781: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत और दोजख का आपस में झगड़ा हुआ। दोजख ने कहा, मैं तो घमण्डी और बदतमीज लोगों के लिए बनाई गई हूँ और जन्नत ने कहा, हमारा क्या है? मेरे अन्दर तो कमजोर और खाकसार होंगे। अल्लाह

مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا مِلْؤُهَا، فَأَمَّا النَّارُ: فَلاَ تَمْتَلِىءُ حَتَّى يَضَعَ رِجْلَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ، فَهُنَالِكَ تَمْتَلِىءُ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ، وَلاَ يَظْلِمُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا، وَأَمَّا الْجَنَّةُ: فَإِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يُنْشِىءُ لَهَا خَلْقًا.

[رواه البخاري: ٤٨٥٠]

तआला ने जन्नत से फरमाया, तू मेरी रहमत है, अपने बन्दों में से जिसको चाहूँगा तेरे जरीये रहमत से हमकिनार करूंगा और दोजख से कहा तू मेरा अजाब है, मैं तेरी वजह से अपने जिन बन्दों को चाहूँगा, अजाब दूंगा और तुममें से हर एक को भरा जायेगा। लेकिन दोजख उस वक्त तक न भरेगी, जब तक अल्लाह उस पर अपना कदम न रखेगा। उस वक्त वो कहेगी, बस बस उस वक्त वो भर जायेगी और भरकर सिमट जायेगी। और अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे पर जुल्म नहीं करेगा। अलबत्ता जन्नत की भरती इस तरह होगी कि उसे भरने के लिए अल्लाह तआला और मख्लूक पैदा करेगा।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि अहले जन्नत को जन्नत में दाखिल करने के बाद उसकी काफी जगह बची रहेगी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला वहां मौके पर किसी मख्लूक को पैदा फरमाकर जन्नत को भर देगा। (सही बुखारी, 7384) लेकिन बुखारी की कुछ रिवायात (7449) में इस किस्म के अल्फाज जहन्नम के बारे में भी मनकूल हैं। मुहद्दशीन के फैसले के मुताबिक यह अल्फाज किसी रावी के वहम का नतीजा है। निज अल्लाह तआला के अदलो इन्साफ के भी खिलाफ हैं।

तफसीर सूरह तूर

٦٤ - باب: قوله تعالى: ﴿وَالطُّورِ وَكِتَبٍ مَّسْطُورٍ﴾

बाब 64: फरमाने इलाही: कसम है तूर की और एक ऐसी खुली किताब की जो रकीक (बारीक) जिल्द में लिखी हुई है।

١٧٨٢ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ، فَلَمَّا بَلَغَ هٰذِهِ الآيَةَ: ﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۝ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ﴾. كَادَ قَلْبِي أَنْ يَطِيرَ. [رواه البخاري: ٤٨٥٤]

1782: जुबैर बिन मुतईम रजि. से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाजे मगरीब में सूरह तूर पढ़ते सुना। जब आप इस आयत पर पहुंचे, क्या यह किसी खालिक के बगैर खुद पैदा हो गये हैं? या यह खुद खालिक हैं? या आसमानों और जमीन को उन्होंने पैदा किया है? असल बात यह है कि यह यकीन नहीं रखते, क्या तेरे रब के खजाने उनके कब्जे में हैं। या उन पर उन्हीं का हुक्म चलता है? मारे डर के मेरा दिल उड़ने के करीब हो गया।

फायदे: गोया हजरत जुबैर बिन मुतइम रजि. वो सबब बयान करते हैं जो उनके ईमान लाने में हायल था। यानी अदमे यकीन, उसके बाद उनका दिल कांप गया और इस्लाम की तरफ पलट गया।

 (फतहुलबारी 8/603)

तफसीर सूरह नजम

٦٥ - باب: قوله تعالى: ﴿أَفَرَءَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ﴾

बाब 65: फरमाने इलाही: क्या तुम लोगों ने लात और उज्जा (काफिरों के बुतों के नाम) को देखा है?

١٧٨٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ حَلَفَ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: وَاللَّاتِ وَالْعُزَّى، فَلْيَقُلْ: لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أُقَامِرْكَ، فَلْيَتَصَدَّقْ). [رواه البخاري: ٤٨٦٠]

1783: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह ने फरमाया: जो आदमी लात और उज्जा की कसम उठाये तो वो (ईमान को नया करते हुए) ला इलाहा इल्लल्लाह कहे और जो आदमी दूसरे से कहे आओ हम जुआ खेंले तो वो (कफ्फारा के तौर पर) कुछ खैरात करे।

फायदे: हजरत साद बिन अबी वकास रजि. फरमाते हैं कि हम नये नये मुसलमान हुए थे। एक बार मैंने बातचीत के दौरान लात और उज की कसम उठा ली तो मेरे साथियों ने मुझे बुरा भला कहा। मैंने इसका तजकिरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया तो आपने यह हदीस बयान फरमाई। (फतहुलबारी 8/612)

तफसीर सूरह कमर

٦٦ - باب: قوله تعالى: ﴿بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ﴾

बाब 66: फरमाने इलाही: बल्कि उनके वादे का वक्त तो कयामत है और कयामत बड़ी सख्त और बहुत कड़वी है।"

١٧٨٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، قالَتْ: لَقَدْ أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ بِمَكَّةَ، وَإِنِّي لَجَارِيَةٌ أَلْعَبُ: ﴿بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ﴾. [رواه البخاري: ٤٨٧٦]

1784: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मक्का में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब यह आयत उतरी "बल्कि उनके वादे का वक्त तो कयामत है और कयामत बड़ी सख्त और बहुत कड़वी है।" तो मैं उस वक्त कमसिन बच्ची खेला करती थी।

फायदे: सही बुखारी हदीस नम्बर 4993) में हजरत आइशा रजि. के उस बयान की वजाहत भी जिक्र हुई है कि एक इराकी ने उसके यहाँ कुरआन की मौजूदा तरतीब पर ऐतराज किया तो आपने उसकी हिकमत बयान की। आगाज में लोगों को अकीदा तौहिद की दावत दी गई। फिर अहले ईमान को खुशखबरी और नाफरमानों को सजा सुनाई गई। जब लोग मुतमईन हो गये तो शरई अहकाम नाजिल हुए।

(फतहुलबारी 9/40)

तफसीर सूरह रहमान

बाब 67: फरमाने इलाही: और इन दो बागों के अलावा दो और बाग हैं।''

٦٧ - باب: قوله تعالى: ﴿وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ﴾

1785. अब्दुल्लाह बिन कैस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, दो जन्नतें सोने की हैं और उनके बर्तन और तमाम सामान भी सोने के हैं। और दो जन्नतें चांदी की हैं, उनके बरतन और तमाम सामान भी चांदी का है। निज हमेशगी की जन्नत में इसके मकीनों (रहने वालों) और उनके परवरदिगार के बीच सिर्फ जलाल की एक चादर पर्दा होगी जो अल्लाह तआला के चेहरे अकदस पर पड़ी होगी।

١٧٨٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ قَيْسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (جَنَّتَانِ مِنْ فِضَّةٍ، آنِيَتُهُمَا وَما فِيهِمَا، وَجَنَّتَانِ مِنْ ذَهَبٍ آنِيَتُهُمَا وَما فِيهِمَا، وَما بَيْنَ الْقَوْمِ وَبَيْنَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلاَّ رِدَاءُ الْكِبْرِ، عَلَى وَجْهِهِ فِي جَنَّةِ عَدْنٍ). [رواه البخاري: ٤٨٧٨]

फायदे: एक रिवायत के मुताबिक यह चार जन्नतें होगी उनमें सोने के सामान पर मुश्तमिल पहले ईमान कबूल करने वालों और अल्लाह तबारक व तआला से करीब रहने वाले के लिए और चांदी के साजो सामान वाली दो जन्नत दायें वाले के लिए होगी। (फतहुलबारी 8/624)

बाब 68: फरमाने इलाही: वो हूरें खैमों में छुपी हुई हैं।''

٦٨ - باب: قوله تعالى: ﴿حُورٌ مَّقْصُورَٰتٌ فِي ٱلْخِيَامِ﴾

1786: अब्दुल्लाह बिन कैस रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जन्नत में एक खोलदार मौती का खैमा है, जिसका अर्ज साठ मील है और उसके हर गोशा

١٧٨٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ قَيْسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ فِي الْجَنَّةِ خَيْمَةً مِنْ لُؤْلُؤَةٍ مُجَوَّفَةٍ، عَرْضُهَا سِتُّونَ مِيلاً، فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ ما يَرَوْنَ الآخَرِينَ، يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُونَ)

وَقَدْ تَقَدَّمَ بَاقِي الحَدِيثِ آنِفًا. (برقم: ١٧٨٥) [رواه البخاري: ٤٨٧٩، وانظر حديث رقم: ٣٢٤٥، ٤٨٧٨]

में जन्नती की बीवीयां होगी। एक बीवी दूसरी बीवी को दिखाई भी नहीं देगी। अहले ईमान उन सबके पास आता जाता रहेगा। इस हदीस का बाकी हिस्सा भी (7185) गुजरा है।

फायदेः कुरानी आयत में लफ्ज ख्यिाम की खूबियां इस हदीस में बयान हुई हैं। (फतहुलबारी 8/624)

तफसीर सूरह मुमतहिना

٦٩ - باب: قوله تعالى: ﴿لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ﴾

बाब 69: फरमाने इलाहीः ऐ ईमान दारों! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ।''

١٧٨٧ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالمِقْدَادَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ، فَذَكَرَ حَدِيثَ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ، وَقَالَ فِي آخِرِهِ: وَنَزَلَتْ فِيهِ: ﴿يَا أَيُّهَا ٱلَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ﴾. [رواه البخاري: ٤٨٩٠]

1787: अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे, जुबैर और मिकदार रजि. को रवाना किया। उसके बाद हातिब बिन अबी बलता रजि. के वाकयो का तजकूरा है, उसके आखिर में से कि उस वक्त यह आयत नाजिल हुई। ''ऐ लोगों! जो ईमान लाये हो तुम अपने और मेरे दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ।''

फायदेः हजरत हातिब बिन अबी बलतआ रजि. का तफसीली वाक्या सही बुखारी हदीस नम्बर 3007, 3081, 3983, 4274, 4890, 6259, 6939 में देखा जा सकता है।

٧٠ - باب: قوله تعالى: ﴿إِذَا جَاءَكَ ٱلْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ﴾

बाब 70: फरमाने इलाहीः ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जब तुम्हारे

पास मौमिन ख्वातीन बैअत करने को आयें.....

١٧٨٨ : عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: بَايَعْنَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَقَرَأَ عَلَيْنَا: ﴿أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِٱللَّهِ شَيْئًا﴾. وَنَهَانَا عَنِ النِّيَاحَةِ، فَقَبَضَتِ ٱمْرَأَةٌ يَدَهَا، فَقَالَتْ: أَسْعَدَتْنِي فُلَانَةُ، أُرِيدُ أَنْ أَجْزِيَهَا، فَمَا قَالَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ شَيْئًا. فَٱنْطَلَقَتْ وَرَجَعَتْ، فَبَايَعَهَا. [رواه البخاري: ٤٨٩٢]

1788: उम्मे अतिया रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की तो आपने हमें यह आयत सुनाई: "अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करो।" और मुसीबत के समय रोने से मना फरमाया तो इस पर एक औरत ने बैअत से अपना हाथ खींच लिया और कहने लगी कि मेरी मुसीबत के वक्त फलां औरत ने रोने में मेरा साथ दिया था। पहले मैं उसका बदला चुका दूं। उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ न फरमाया। चूनांचे वो गई और (बदला चुकाकर) वापिस आई तो आपने उससे बैअत फरमा ली।

फायदे: एक रिवायत के मुताबिक बैअत के वक्त हाथ खींचने वाली खुद हजरत उम्मे अतिया रजि. हैं। उन्होंने पहले रोने पीटने के के बारे में अपना कर्ज चुकाया। फिर बैअत की। इसके बाद रोना पीटना बिलकुल हराम कर दिया गया। (फतहुलबारी 8/639)

तफसीर सूरह जुमआ

٧١ - باب: قوله تعالى: ﴿وَءَاخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا۟ بِهِمْ﴾

बाब 71: फरमाने इलाही : (इस रसूल की नबूवत) उन दूसरे लोगों के लिए भी है जो अभी उनसे नहीं मिले हैं।

١٧٨٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ

1789: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

النَّبِيِّ ﷺ فَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْجُمُعَةِ: ﴿وَءَاخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ﴾. قَالَ: قُلْتُ: مَنْ هُمْ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ فَلَمْ يُرَاجِعْهُ حَتَّى سَأَلَ ثَلَاثًا، وَفِينَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ، وَضَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ، ثُمَّ قَالَ: (لَوْ كَانَ الإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا، لَنَالَهُ رِجَالٌ، أَوْ رَجُلٌ، مِنْ هٰؤُلَاءِ). [رواه البخاري: ٤٨٩٧]

वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि सूरह जुमआ नाजिल हुई जब आप इस आयत पर पहुंचे "और उन दूसरे लोगों के लिए भी है जो अभी उनसे नहीं मिले हैं।" तो कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कौन लोग मुराद हैं? आपने कोई जवाब न दिया। हालांकि तीन बार पूछा गया और उस मजलिस में सलमान फारसी रजि. भी मौजूद थे। आपने अपना हाथ शिफकत उन पर रखा और फरमाया, अगर ईमान सुरैया सितारे के करीब भी होता तो भी यह लोग या इनमें से कोई आदमी उस तक जरूर पहुंच जाता।

फायदे: कुछ रिवायतों के मुताबिक उन खुशकिस्मत हजरात के औसाफ बायस अलफाज बयान हुए हैं कि वो इन्तेहाई नरम दिल, सुन्नत की पैरवी करने वाले और बकसरत दरूद पढ़ने वाले होंगे। यकीनन इन औसाफ के हामिल मुहद्दसीन एजाम हैं और वही उस हदीस पर अमल करने वाले हैं। (फतहुलबारी 8/643)

तफसीर सूरह मुनाफिकुन

٧٢ - باب: قوله تعالى: ﴿إِذَا جَآءَكَ الْمُنَٰفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ ٱللَّهِ﴾

बाब 72: फरमाने इलाही: "जब मुनाफिक आपके पास आते हैं तो कहते हैं हम गवाही देते हैं कि आप यकीनन अल्लाह के रसूल हैं।"

١٧٩٠ : عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ فِي غَزَاةٍ، فَسَمِعْتُ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولَ

1790: जैद बिन अरकम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक लड़ाई में शरीक था, उनमें अब्दुल्लाह

يَقُولُ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ ٱللهِ حَتَّى يَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِهِ، وَلَئِنْ رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ. فَذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِعَمِّي أَوْ لِعُمَرَ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَدَعَانِي فَحَدَّثْتُهُ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أُبَيٍّ وَأَصْحَابِهِ، فَحَلَفُوا مَا قَالُوا، فَكَذَّبَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَصَدَّقَهُ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي الْبَيْتِ، فَقَالَ لِي عَمِّي: مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَمَقَتَكَ؟ فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿إِذَا جَآءَكَ ٱلْمُنَٰفِقُونَ﴾. فَبَعَثَ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقَرَأَ فَقَالَ: (إِنَّ ٱللهَ قَدْ صَدَّقَكَ يَا زَيْدُ). [رواه البخاري: ٤٩٠٠]

बिन उबे (मुनाफिक) को यह कहते सुना, लोगों! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब रजि. को खर्च के लिए कुछ न दो, यहाँ तक कि वो खुद उसका साथ छोड़ कर उससे अलग हो जायेंगे और अगर हम इस लड़ाई से लौटकर मदीना पहुंचे तो देख लेना जो इज्जत वाला है, वो जिल्लत वाले को बाहर निकाल देगा। मैंने यह बात अपने चचा या उमर रजि. से बयान की। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कह दिया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाया। मैंने सब बात बता दी। फिर आपने अब्दुल्लाह बिन उबे और उसके साथियों को बुलाया, पूछने पर उन्होंने हलफ उठाकर साफ इनकार कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे झूटा और अब्दुल्लाह बिन उबे को सच्चा ख्याल फरमाया। मुझे इतना दुख हुआ कि ऐसा कभी न हुआ था। मैं दुखी होकर घर में बैठ गया। मेरे चचा ने मुझे कहा तूने ऐसी बात क्यों कही जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुझे झूटा समझा और तुझ से नाराज भी हुए तो उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयात नाजिल फ़रमाई "(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब आपके पास मुनाफिक लोग आते हैं (आखिर तक)"

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे बुला भेजा और यह सूरह पढ़कर सुनाई और फरमाया, ऐ जैद रजि. अल्लाह ने तेरी तसदीक कर दी।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि अपने ख्याल के मुताबिक बड़े लोगों की गलतियों को नजरअन्दाज कर देना चाहिए ताकि उनके पैरोकार बिदक न जायें। अगरचे उनके झूटे होने पर सबूत भी मौजूद हों। फिर भी डांट डपट और सजा देने में कोई हर्ज नहीं है।

(फतहुलबारी 8/646)

١٧٩١ : وَعَنْهُ في رِوَايَةٍ قَالَ فَدَعَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ لِيَسْتَغْفِرَ لَهُمْ فَلَوَّوْا رُؤُوسَهُمْ. [رواه البخاري: ٤٩٠٣]

1791: जैद बिन अरकम रजि. से ही एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक्त अब्दुल्लाह बिन उबे और उसके साथियों को बुलाया ताकि उनके लिए (उनके मान लेने के बाद) इस्तगफार करें तो उन्होंनें सर हिलाकर इनकार कर दिया।

١٧٩٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلأَنْصَارِ، وَلأَبْنَاءِ الأَنْصَارِ). وَشَكَّ الراوي في: (أَبْنَاءِ أَبْنَاءِ الأَنْصَارِ). [رواه البخاري: ٤٩٠٦]

1792: जैद बिन अरकम रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते हुए सुना, "ऐ अल्लाह! अनसार को और अनसार के बेटो को बख्श दे। रावी को शक है कि शायद आपने यह भी फरमाया था कि अनसार के पोतों को भी बख्श दे।

फायदे: हजरत अनस रजि. बसरा में ठहरे हुए थे। जब उन्हें वाक्या हुर्रा के बारे में इल्म हुआ तो बहुत गमजदा हुए। उस वक्त हजरत जैद बिन अरकम रजि. ने उनसे ताजीयत करते हुए यह लिखा कि मैं आपको अल्लाह की तरफ से एक खुशखबरी सुनाता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनसार के हक में यूं दुआ की थी: "ऐ अल्लाह! अनसार उनकी औलाद, और औलाद दर औलाद को बख्श दे।"

(फतहुलबारी 8/651)

तफसीर सूरह तहरीम

बाब 73: फरमाने इलाही: ऐ नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो चीज अल्लाह ने तुम्हारे लिए जाइज की है, तुम उससे किनारा कशी क्यों करते हो।"

٧٣ - باب: قوله تعالى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ ٱللَّهُ لَكَ﴾

1793: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैनब बिन्ते जहश रजि. के घर में शहद पिया करते थे और वहीं काफी देर ठहरते थे। मैंने और हफसा रजि. ने यह तय किया कि हममें से जिनके पास भी आप तशरीफ लायें, वो यूं कहे कि आपने मगाफिर नौश किया है, मुझे आपसे इस मगाफिर की बू आती है। चूनांचे आप जब तशरीफ लाये तो हमने ऐसा ही किया। आपने फरमाया, नहीं लेकिन मैंने जैनब रजि. के घर से शहद नोश किया है और आज से मैंने कसम उठा ली है कि अब शहद नहीं पीऊंगा। लेकिन किसी को खबर न करना।

١٧٩٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَشْرَبُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، وَيَمْكُثُ عِنْدَهَا، فَوَاطَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ عَنْ: أَيَّتُنَا دَخَلَ عَلَيْهَا فَلْتَقُلْ لَهُ: أَكَلْتَ مَغَافِيرَ، إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ، قالَ: (لَا، وَلٰكِنِّي كُنْتُ أَشْرَبُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، فَلَنْ أَعُودَ لَهُ، وَقَدْ حَلَفْتُ، لَا تُخْبِرِي بِذٰلِكَ أَحَدًا).
[رواه البخاري: ٤٩١٢]

फायदे: इस रिवायत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहह पिलाने वाली हजरत जैनब रजि.थीं और सही बुखारी हदीस नम्बर 5268 से मालूम होता है कि शहद पिलाने वाली हजरत हफसा बिन्ते उमर रजि. थी। शायद कई एक वाक्यात हों। शहद की मक्खी जिस जड़ी बुटी से रस चूंसती है, उसका असर शहद पर

होता है। मदीना मुनव्वरा में अरफत बूटी मौजूद थी और उसके रस में एक किस्म की बू थी।

तफसीर सूरह नून वलकलम

बाब 74: फरमाने इलाही: सख्त आदत वाला और उसके अलावा बदजात (बुरी जात वाला) है।"

٧٤ - باب: قوله تعالى: ﴿عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ﴾

1794: हारिसा बिन वहब खुजाई रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, क्या मैं तुम्हें जन्नती लोगों की खबर न दूं? हर कमजोर आजजी करने वाला अगर अल्लाह के भरोसे किसी बात की कसम उठा बैठे तो अल्लाह उसको पूरा कर दे और क्या तुम्हें अहले जहन्नम की खबर न दूं? दोजखी झगड़ालू, घमण्डी और बदमाश लोग होंगे।

١٧٩٤: عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ الخُزَاعِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الجَنَّةِ؟ كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ، لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ. أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ: كُلُّ عُتُلٍّ، جَوَّاظٍ، مُسْتَكْبِرٍ). [رواه البخاري: ٤٩١٨]

बाब 75: फरमाने इलाही: जिस दिन पिण्डली से कपड़ा उठाया जायेगा और कुफ्फार सज्दे के लिए बुलाये जायेंगे तो सज्दा न कर सकेंगे।"

٧٥ - باب: قوله تعالى: ﴿يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ﴾

1795: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए

١٧٩٥: عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (يَكْشِفُ رَبُّنَا عَنْ سَاقِهِ، فَيَسْجُدُ لَهُ

كُلُّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ، وَيَبْقَى كُلُّ مَنْ كَانَ يَسْجُدُ فِي الدُّنْيَا رِيَاءً وَسُمْعَةً، فَيَذْهَبُ لِيَسْجُدَ، فَيَعُودُ ظَهْرُهُ طَبَقًا وَاحِدًا). [رواه البخاري: ٤٩١٩]

सुना (कयामत के दिन) जब हमारा परवरदिगार अपनी पिण्डली खोलेगा तो तमाम मौमिन मर्द व औरतें सज्दा करेंगे। वो लोग रह जायेंगे जो दुनिया में लोगों को दिखाने और सुनाने के लिए सज्दा किया करते थे। वो सज्दा करना चाहेंगे, लेकिन सज्दा के लिए उनकी कमर टेढ़ी न होगी, बल्कि तख्ता बन जायेगी।

फायदे: इस हदीस में अल्लाह तआला के लिए पिण्डली का सबूत है। इसके ताविल की कोई जरूरत नहीं बल्कि दूसरे सिफात की तरह यह भी एक सिफ्त है, जिसे उसके जाहिरी मायने पर महमूल करना चाहिए। लेकिन इसकी कैफियत अल्लाह ही खूब जानता है।

तफसीर सूरह नाजिआत

١٧٩٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ بِإِصْبَعَيْهِ هٰكَذَا، بِالْوُسْطَى وَالَّتِي تَلِي الإِبْهَامَ: (بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ). [رواه البخاري: ٤٩٣٦]

1796: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा, आपने बीच की अंगुली और शहादत की अंगुली से इशारा करके फरमाया, मैं और कयामत इस तरह मिलाकर भेजे गये हैं (यानी बीच में कोई पैगम्बर नहीं आयेगा)

फायदे: इसका मतलब यह है कि अब कयामत तक कोई रसूल या नबी जिल्ली या बरवजी नहीं आयेगा।

तफसीर सूरह अबस

١٧٩٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ

1797: आइशा रजि. से रिवायत है, वो

رسول‌ عنها، عن النبي ﷺ قال: (مَثَلُ الَّذِي يَقرأُ القُرآنَ، وَهُوَ حافِظٌ لَهُ، مَعَ السَّفَرَةِ الكِرامِ [البَرَرَةِ]، وَمَثَلُ الَّذِي يَقرأُ، وَهُوَ يَتَعاهَدُهُ، وَهُوَ عَلَيهِ شَدِيدٌ، فَلَهُ أَجرانِ). [رواه البخاري: ٤٩٣٧]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी कुरआन को पढ़ता है, और उसे खूब याद है, वो (कयामत के दिन) किरामन कातबिन (बुजुर्ग लिखने वाले फरिश्तों) के साथ होगा और जो आदमी पाबन्दी से कुरआन पढ़ता है, लेकिन पढ़ने में मशक्कत उठाता है, उसे दोहरा सवाब मिलेगा।

फायदे: दोहरे सवाब से मुराद यह है कि एक सवाब कुरआन मजीद की तिलावत करने का और दूसरा उसके बारे में मशक्कत उठाने का। इसका यह मतलब नहीं है कि कुरआन के माहिर से ज्यादा सवाब का हकदार होगा। (औनलबारी 4/749)

तफसीर सूरह मुतफ्फेफीन

٧٦ - باب: قوله تعالى: ﴿يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

बाब 76. फरमाने इलाही: जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।"

١٧٩٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (﴿يَوْمَ يَقُومُ ٱلنَّاسُ لِرَبِّ ٱلْعَالَمِينَ﴾. حَتَّى يَغِيبَ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ). [رواه البخاري: ٤٩٣٨]

1798: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।" इससे कयामत का दिन मुराद है। कुछ लोग अपने पसीने में आधे आधे कान तक डूबे हुए होंगे।

फायदे: सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि कयामत के दिन सूरज

एक मील की दूरी पर होगा। लोग अपने आमाल के बकद्र पसीने में होंगे। कुछ लोगों को टखनों तक और कुछ को कमर तक जबकि कुछ बदकिस्मत अपने पसीने में डूबे होंगे। (फतहुलबारी 8/699)

तफसीर सूरह इनशकाक

٧٧ - باب: قوله تعالى: ﴿فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا﴾

बाब 77: फरमाने इलाही: उससे आसान हिसाब लिया जायेगा।

١٧٩٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قالَتْ: قالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (لَيْسَ أَحَدٌ يُحَاسَبُ إِلَّا هَلَكَ). وباقِي الحَدِيث تَقَدَّمَ في كِتابِ العِلْمِ. (برقم:٨٨) [رواه البخاري: ٤٩٣٩ وانظر حديث رقم: ١٠٣]

1799: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस आदमी से कयामत के दिन हिसाब लिया गया तो वो यकीनन हलाक होगा। बाकी हदीस (88) किताबुल इल्म में गुजर चुकी है।

फायदे: इस के अल्फाज यह हैं "मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तो फरमाता है कि नेक लोगों का भी हिसाब आसान होगा। आपने फरमाया कि यहाँ हिसाब से मुराद सिर्फ आमाल का बता देना है और जिस आदमी का हिसाब लेते वक्त पूछताछ की गई तो वो हलाक हो गया।

٧٨ - باب: قوله تعالى: ﴿لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ﴾

बाब 78: फरमाने इलाही "एक हालत से दूसरी हालत तक जरूर पहुंचोगे।"

١٨٠٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: قالَ ﴿لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ﴾. حالاً بَعْدَ حالٍ، قالَ: هٰذَا نَبِيُّكُم ﷺ. [رواه البخاري: ٤٩٤٠]

1800. इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि "तबकन अन तबकिन" से आगे पीछे हालतों का बदलना मुराद है। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खिताब है।

फायदे: "लतर कबुन्ना" को दो तरह से पढ़ा गया है। "बा" के जबर के साथ यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खिताब है। जैसा कि मजकूरा रिवायत में हजरत इब्ने अब्बास रजि. ने फरमाया है। दूसरा "बा" के पेश के साथ यह तमाम उम्मत को खिताब किया गया है, आम किराअत यही है। (फतहुलबारी 8/698)

तफसीर सूरह शमस

बाब 79:

٧٩ - باب

١٨٠١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَمْعَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ، وَذَكَرَ النَّاقَةَ وَالَّذِي عَقَرَها، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: ﴿إِذِ ٱنْبَعَثَ أَشْقَنٰهَا﴾ ٱنْبَعَثَ لَهَا رَجُلٌ عَزِيزٌ عارِمٌ، مَنِيعٌ فِي رَهْطِهِ، مِثْلُ أَبِي زَمْعَةَ). وَذَكَرَ النِّسَاءَ فَقَالَ: (يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ يَجْلِدُ ٱمْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ، فَلَعَلَّهُ يُضَاجِعُهَا مِنْ آخِرِ يَوْمِهِ). ثُمَّ وَعَظَهُمْ فِي ضَحِكِهِمْ مِنَ الضَّرْطَةِ، وَقَالَ: (لِمَ يَضْحَكُ أَحَدُكُمْ مِمَّا يَفْعَلُ).

وَعَنْهُ فِي رِوايَةٍ: (مِثْلُ أَبِي زَمْعَةَ عَمِّ الزُّبَيْرِ ابْنِ الْعَوَّامِ). [رواه البخاري: ٤٩٤٢]

1801: अब्दुल्लाह बिन जमआ रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खुत्बे के दौरान सुना। आपने सालेह अलैहि. की ऊंटनी और उसे जख्मी करने वाले का जिक्र फरमाया और "इजिम बअस अशकाहा" को यूं तफसीर फरमाई कि उनमें एक जोर आवर शरीरुन्नफस और मजबूत आदमी जो अपनी कौम में अबू जमआ की तरह था, उठ खड़ा हुआ और आपने औरतों का भी जिक्र फरमाया कि तुम में से कोई अपनी बीवी को गुलाम लौण्डी की तरह मारता है। फिर उस दिन शाम को उससे हम बिस्तर होता है। उसके बाद लोगों को गौज पर हंसने की बाबत नसीहत फरमाई कि उस काम पर क्यों हंसते हो जो खुद भी करते हो। एक और रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (उस हदीस में) यूं फरमाया था, अबू जमआ की तरह जो जुबैर बिन अव्वाम रजि. का चचा था।

फायदेः दौरे जाहिलियत की एक बुरी रस्म यह थी कि मजलिस में जरता (हवा छोड़कर) लगाकर खूब हंसते। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें खबरदार किया।

तफसीर सूरह अलक

बाब 80: फरमाने इलाहीः देखो, अगर वो बाज न आयेगा... आखिर तक।

٨٠ - باب: قوله تعالى: ﴿كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ﴾

1802: अब्दुल्लाह बिन रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, अबू जहल मरदूद कहने लगा, अगर मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खाना काबा के करीब नमाज पढ़ता देख लूं तो उनकी गर्दन ही कुचल डालूं। यह खबर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आपने फरमाया, अगर वो ऐसा करता तो फरिश्ते उसे पकड़कर उसकी बोटी तक कर देते।

١٨٠٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ أَبُو جَهْلٍ: لَئِنْ رَأَيْتُ مُحَمَّدًا يُصَلِّي عِنْدَ الْكَعْبَةِ لأَطَأَنَّ عَلَى عُنُقِهِ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (لَوْ فَعَلَهُ لأَخَذَتْهُ الْمَلاَئِكَةُ). [رواه البخاري: ٤٩٥٨]

फायदेः निसाई की एक रिवायत में है कि अबू जहल अपने मनसूबे को अमली जामा पहनाने के लिए एक बार आगे बढ़ा तो फौरन ऐढ़ियों के बल पलट गया। लोगों के पूछने पर उसने बताया कि मुझे वहां आग की खन्दक, खौफनाक मन्जर और परों की आवाज सुनाई दी। इस पर आपने फरमाया कि अगर मेरे करीब आता तो फरिश्ते उसे उचक कर उसका जोड़ जोड़ अलग कर देते। (फतहुलबारी 8/724)

तफसीर सूरह कौसर

बाब 81:

٨١ - باب

1803: अनस रजि. से रिवायत है,

١٨٠٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

قال: لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى السَّمَاءِ، قال: (أَتَيْتُ عَلَى نَهَرٍ، حافَتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ مُجَوَّفًا، فَقُلْتُ: ما هٰذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قال: هٰذَا الْكَوْثَرُ). [رواه البخاري: ٤٩٦٤]

उन्होंने कहा कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैराज होती तो आप उसका किस्सा बयान करते हुए फरमाया, मैं एक नहर पर गया, जिसके दोनों किनारों पर खौलदार मोतियों के कुब्बे थे। मैंने जिब्राईल अलैहि. से पूछा, यह नहर कैसी है? उन्होंने कहा, यह कोसर है (जो अल्लाह ने आपको अता की है)

फायदे: हजरत इब्ने अब्बास रजि. से कोसर की तफसीर खैरे कसीर से भी की गई है। अगरचे उमूम के लिहाज से यह भी सही है। फिर भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसकी तफसीर इन अलफाज में मरवी है कि वो एक नजर है जिसमें खैरे कसीर होगी।

 (फतहुलबारी 8/732)

١٨٠٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا وقد سُئِلَتْ عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ﴾. قالَتْ: نَهَرٌ أُعْطِيَهُ نَبِيُّكُمْ ﷺ، شَاطِئَاهُ عَلَيْهِ دُرٌّ مُجَوَّفٌ، آنِيَتُهُ كَعَدَدِ النُّجُومِ. [رواه البخاري: ٤٩٦٥]

1804: आइशा रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि इस इरशादे इलाही "बेशक हमने आपको कोसर अता की है" में कोसर से क्या मुराद है। तो उन्होंने फरमाया कि कोसर एक नहर है जो तुम्हारे पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता हुई है। इसके दोनों किनारों पर खोलदार मोती (के कुब्बे) हैं जिसमें सितारों के बराबर बर्तन रखे गये हैं।

तफसीर सूरह फलक

١٨٠٥ : عَنْ أُبَيِّ بنِ كَعْبٍ رَضِيَ

1805: उबे बिन कअब रजि. से रिवायत

اَللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ عَنِ الْمُعَوِّذَتَيْنِ فَقَالَ: (قِيلَ لِي، فَقُلْتُ). فَنَحْنُ نَقُولُ: كما قال رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٤٩٧٦]

है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोअव्वेजतेन की बाबत पूछा तो आपने फरमाया कि (हजरत जिब्राईल के जरीये) मुझ से कहा गया है कि यूं कहो, तो मैंने उसी तरह कहा। उबे रजि. ने कहा, हम भी वही कहते हैं जो रसूलुल्लाह ने कहा। (यानी यह दोनों सूरतें कुरआन में दाखिल हैं)

फायदेः बुखारी की दूसरी रिवायत में सराहत है कि हजरत उबे बिन कअब रजि. से सवाल हुआ कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. मोअव्वेजतेन के बारे में यूं कहते हैं (उसे मसहफ में नहीं लिखते) इस पर हजरत उबे बिन कअब रजि. ने यह जवाब दिया जो हदीस में मजकूर हैं। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. की राय से कोई और सहाबी मुत्तिफक न हुआ, बल्कि सहाबा किराम रजि. का इस बात पर इत्तेफाक था कि यह दोनों सूरतें कुरआन करीम का हिस्सा हैं और रसूलुल्लाह उन्हें नमाज में तिलावत करते थे। (फतहुलबारी 8/742) महज फूंकने के लिए न थीं।



किताबो फजाईलिल कुरआनी

फजाईले कुरआन के बयान में

बाब 1: वह्य उतरने की कैफियत (हालत) और पहले क्या उतरा।

١ - باب: كَيْفَ نَزَلَ الوَحْيُ، وَأَوَّلُ مَا نَزَلَ

1806: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जितने अम्बिया अलैहि. तशरीफ लाये हैं, उनमें से हर एक को ऐसे मोजिजात दिये गये, जिन्हें देखकर लोग ईमान ला सकें (बाद के जमाने में उनका कोई असर न रहा) मुझे कुरआन की शक्ल में अल्लाह तआला ने मोजिजा दिया जो वह्य के जरीये मुझे अता हुआ (उसका असर कयामत तक बाकी रहेगा)। इसलिए मुझे उम्मीद है कि कयामत के दिन मेरे पैरोकार दूसरे अम्बिया अलैहि. की बनीसबत ज्यादा होंगे।

١٨٠٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ما مِنَ الأَنْبِيَاءِ نَبِيٌّ إِلَّا أُعْطِيَ مِنَ الآيَاتِ ما مِثْلُه آمَنَ عَلَيْهِ الْبَشَرُ، وَإِنَّمَا كَانَ الَّذِي أُوتِيتُهُ وَحْيًا أَوْحَاهُ ٱللهُ إِلَيَّ، فَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَكْثَرَهُمْ تَابِعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٤٩٨١]

फायदे: अल्लाह तआला ने हर नबी को उसकी जरूरत को सामने रखते हुए मोजिजा फरमाया। मसलन मूसा अलैहि. के जादू के जमाने का बहुत चर्चा था और उनके मोजिजा से जादू का तोड़ किया गया। हजरत ईसा अलैहि. के जमाने में यूनानी डाक्टरी का जोर था। लिहाजा उन्हें ऐसे मोजिजा दिये गये जिनका जवाब यूनान के बड़े बड़े डाक्टरों के पास न था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में

फसाहत व बलागत (जुबानजोरी) को बहुत शोहरत थी। कुरआनी मोजिजा ने उन्हें लाजवाब कर दिया। (फतहुलबारी 9/6)

1807: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यबा के आखरी दौर में अल्लाह तआला ने पय-दर पय और लगातार वह्य नाजिल फरमाई और आपकी वफात के करीब तो आप पर बहुत ज्यादा वह्य का उतरना हुआ। उसके बाद आप फौत हुए।

١٨٠٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱللهَ تَعالَى تَابَعَ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ الْوَحْيَ قَبْلَ وَفَاتِهِ، حَتَّى تَوَفَّاهُ أَكْثَرَ مَا كَانَ الْوَحْيُ، ثُمَّ تُوُفِّيَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَعْدُ. [رواه البخاري: ٤٩٨٢]

फायदे: दरअसल हजरत अनस रजि. से किसी ने सवाल किया था कि आया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात से कुछ वक्त पहले लगातार वह्य का सिलसिला बन्द हो गया था। अनस ने वही जवाब दिया जो हदीस में है। कसरत वह्य की वजह यह थी कि फतूहात के बाद मआमलात व मुकदमात भी बढ़ गये तो उन्हें निपटाने के लिए कसरत से वह्य आना शुरू हो गई। (फतहुलबारी 9/8)

बाब 2: कुरआन मजीद को सात मुहावरों पर नाजिल किया गया।

٢ - باب: أُنْزِلَ القُرآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ

1808: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में हशाम बिन हकीम रजि. को सूरह फुरकान पढ़ते सुना। जब मैंने उसके पढ़ने पर गौर किया तो मालूम हुआ कि उनका तिलावत करने का अन्दाज

١٨٠٨ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ هِشَامَ ابْنَ حَكِيمٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَٱسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ، فَإِذَا هُوَ يَقْرَأُ عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ،

فَتَصَبَّرْتُ حَتَّى سَلَّمَ، فَلَبَّبْتُهُ بِرِدَائِهِ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هٰذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ، فَقُلْتُ: كَذَبْتَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ قَدْ أَقْرَأَنِيهَا عَلَى غَيْرِ مَا قَرَأْتَ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ أَقُودُهُ إِلَى رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ، فَقُلْتُ: إِنِّي سَمِعْتُ هٰذَا يَقْرَأُ بِسُورَةِ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: (أَرْسِلْهُ، اقْرَأْ يَا هِشَامُ). فَقَرَأَ عَلَيْهِ الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ يَقْرَأُ، فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: (كَذٰلِكَ أُنْزِلَتْ). ثُمَّ قَالَ: (اقْرَأْ يَا عُمَرُ). فَقَرَأْتُ الْقِرَاءَةَ الَّتِي أَقْرَأَنِي، فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: (كَذٰلِكَ أُنْزِلَتْ، إِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ، فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٤٩٩٢]

उससे कुछ अलग था, जिस तरह रसूलुल्लाह ने हमें तालीम फरमाया था। मैंने इरादा किया कि नमाज ही में उनको पकड़कर ले जाऊं। लेकिन मैंने सब्र से काम लिया। जब उन्होंने नमाज से सलाम फैरा तो मैंने उनके गले में चादर डालकर पूछा कि यह अन्दाजे तिलावत तुम्हें किसने सिखाया? उन्होंने कहा, मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाया, मैंने कहा, तुम झूटे हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो खुद मुझे यह सूरत एक और अन्दाज से पढ़ाई है जो तुम्हारे अन्दाज के उल्टे है। फिर मैं उन्हें खींचकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह सूरह फुरकान को एक जुदागाना तर्ज पर पढ़ते हैं जो आपने हमें नहीं पढ़ाया। आपने फरमाया, हशाम को छोड़ दो। इसके बाद आपने हशाम रजि. से कहा, पढ़ो। उन्होंने उसी तरीके से पढ़ा, जिस तरह मैंने उसने सुना था। तो आपने फरमाया, यह सूरह इसी तरह उतरी है। फिर फरमाया, यह कुरआन सात मुहावरों पर उतरा है, उनमें से जो मुहावरा तुम पर आसान हो, उसके मुताबिक पढ़ लो।

फायदे: ''सबअतु अहरूफीन'' के बारे में बहुत इख्तलाफ है। अलबत्ता इसका कायदा यह है कि जो लफ्ज सही सनद से मनकूल हो और

अरबी में उसकी मुनासिब खुलासा किया जा सकता हो, निज ईनाम के मुस्हफ की लिखावंट के खिलाफ न हो, वो सात मुहावरों में शुमार होगा। वरना रद्द कर दिया जायेगा। (फतहुलबारी 9/32)

---

٣ - باب: كَانَ جِبْرِيلُ يَعْرِضُ الْقُرْآنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

बाब 3: हजरत जिब्राईल अलैहि. का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दौरे कुरआन करना।

١٨٠٩ : عَنْ فَاطِمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، قَالَتْ: أَسَرَّ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ: (أَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُنِي بِالْقُرْآنِ كُلَّ سَنَةٍ، وَإِنَّهُ عَارَضَنِي الْعَامَ مَرَّتَيْنِ، وَلاَ أُرَاهُ إِلَّا حَضَرَ أَجَلِي). [رواه البخاري: ٤٩٩٧]

1809: फातिमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे आहिस्ता से इरशाद फरमाया कि जिब्राईल अलैहि. मुझ से हमेशा एक बार कुरआन करीम का दौर किया करते थे। इस साल दो बार किया है। मैं समझता हूँ कि मेरी वफात जल्द ही होने वाली है।

फायदे: इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस साल वफात पाई, रमजानुल मुबारक में बीस रातों का ऐतकाफ किया, जबकि पहले आप दस रातों का ऐतकाफ करते थे। (सही बुखारी 4998)

١٨١٠ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وَٱللهِ لَقَدْ أَخَذْتُ مِنْ فِي رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِضْعًا وَسَبْعِينَ سُورَةً. [رواه البخاري: ٥٠٠٠]

1810: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अल्लाह की कसम मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह से सत्तर से कुछ ज्यादा सूरतें सीखीं हैं।

फायदे: दरअसल बात यह थी कि हजरत उसमान रजि. के हुक्म से हजरत जैद बिन साबित रजि. के जैरे निगरानी सरकारी तौर पर एक सहीफा तैयार हुआ, जिसकी नकलें मुख्तलिफ शहरों में भेजी गई।

उसके अलावा दूसरे अनफिरादी मसाईफ को जला देने का हुक्म दिया। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने इससे इत्तेफाक न किया। हदीस में आपके बयान का पस मन्जर यही है। (फतहुलबारी 9/48)

1811: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से ही रिवायत है कि शहर हिमस में उन्होंने सूरह यूसुफ की तिलावत की तो एक आदमी ने कहा, यह इस तरह नाजिल नहीं हुई। इब्ने मसऊद रजि. ने फरमाया, मैंने तो यह सूरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पढ़ी थी तो आपने उसकी अच्छाई बयान की। फिर आपने देखा, इसके मुंह से शराब की बू आ रही थी। तब आपने फरमाया, इधर अल्लाह की किताब को झूटलाता है और उधर शराब पीता है। इन दोनों अलग अलग चीजों को जमा करता है। फिर आपने उस पर शराब पीने की हद लगाई।

١٨١١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ كانَ بِحِمْصَ، فَقَرَأَ سُورَةَ يُوسُفَ، فَقَالَ رَجُلٌ: ما هٰكَذَا أُنْزِلَتْ، قالَ: قَرَأْتُ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (أَحْسَنْتَ). وَوَجَدَ مِنْهُ رِيحَ الخَمْرِ، فَقَالَ: أَتَجْمَعُ أَنْ تُكَذِّبَ بِكِتَابِ ٱللهِ وَتَشْرَبَ الخَمْرَ؟ فَضَرَبَهُ الحَدَّ. [رواه البخاري: ٥٠٠١]

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने खुद हद नहीं लगाई थी, बल्कि हाकिम वक्त के जरीये उसे सजा दी, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. कूफा के हाकिम थे। हिमस में उनकी हुकूमत न थी। (फतहुलबारी 9/50)

बाब 4: "कुलहु वल्लाहु अहद" की फजीलत का बयान।

٤ - باب: فَضْلِ ﴿قُلْ هُوَ ٱللهُ أَحَدٌ﴾

1812: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि एक आदमी ने किसी दूसरे को सूरह कुल-हु वल्लाहु अहद बार बार पढ़ते सुना, जब सुबह हुई तो वो

١٨١٢ : عَنْ أَبِي سَعِيدِ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا سَمِعَ رَجُلًا يَقْرَأُ: ﴿قُلْ هُوَ ٱللهُ أَحَدٌ﴾. يُرَدِّدُهَا، فَلَمَّا أَصْبَحَ جاءَ إِلَى رَسُولِ

रसूलुल्लाह के पास आया और आपसे उसके मुकर्रर पढ़ने का जिक्र किया गया तो उसने समझा कि उसमें कुछ बड़ा सवाब न होगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, यह सूरह इख्लास एक तिहाई कुरआन के बराबर है।

اَللهِ ﷺ فَذَكَرَ ذٰلِكَ لَهُ، وَكَأَنَّ الرَّجُلَ يَتَقَالُّهَا، فَقَالَ رَسُولُ اَللهِ ﷺ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ). [رواه البخاري: ٥٠١٣]

फायदे: सूरह इख्लास को मायने के लिहाज से तिहाई कुरआन के बराबर करार दिया गया है। क्योंकि कुरआन करीम में तोहीद, अखबार और अहकाम पर मुस्तमील मुजामिन हैं और इस सूरत में अकीदा-ए-तौहीद को बड़े अन्दाज में बयान किया गया है।

1813: अबू सईद खुदरी रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम रजि. से फरमाया, क्या तुम में से कोई रात भर में तिहाई कुरआन पढ़ने की ताकत रखता है। सहाबा को यह दुश्वार मालूम हुआ। कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ऐसी ताकत हमसे कौन रखता है? आपने फरमाया कि सूरह इख्लास जिस में अल्लाह वाहिद समद की सिफात मजकूर हैं, तिहाई कुरआन के बराबर है।

١٨١٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ اَللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَصْحَابِهِ: (أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ ثُلُثَ الْقُرْآنِ فِي لَيْلَةٍ). فَشَقَّ ذٰلِكَ عَلَيْهِمْ وَقَالُوا: أَيُّنَا يُطِيقُ ذٰلِكَ يَا رَسُولَ اَللهِ؟ فَقَالَ: (اَللهُ الْوَاحِدُ الصَّمَدُ ثُلُثُ الْقُرْآنِ). [رواه البخاري: ٥٠١٥]

फायदे: कुछ उलेमा के बयान के मुताबिक सूरह इख्लास की कलमा तौहिद से गहरा ताल्लुक है, क्योंकि यह भी कलमा इख्लास की तरह नफी व इसबात मुस्तमिल है। वो इस तरह कि इसे कोई भी रोकने वाला नहीं, जैसा कि वालिद अपनी औलाद को किसी काम से रोक सकता है और न ही कोई शरीक है और न ही उसके मनसूबे जात को पाया

तकमील तक पहुंचाने के लिए उसका कोई मुआविन है। जैसा कि बाप के लिए बेटा मुआविन होता है। इस सूरत में अल्लाह तआला के लिए उन तीनों चीजों की नफी की गई है। (फतहुलबारी 9/61)

बाब 5: मोअव्वेजात (इख्लास, फलक और नास) की फजीलत का बयान।

٥ - باب: فَضْلُ الْمُعَوِّذَاتِ

1814: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने बिस्तर पर आराम करते तो हर शब अपने दोनों हाथों को इकट्ठा करके उनमें कुल-हु वल्लाहु अहद, कुल अऊजुबिरब्बिल फलक और कुल अऊजु बिरब्बिन-नास पढ़कर दम करते। फिर उन्हें तमाम बदन पर जहां तक मुमकिन होता, फैर लेते। हाथ फैरने की शुरूआत, सर, चेहरे और जिस्म के आगे से होती। तीन बार यह अमल किया करते थे।

١٨١٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ إذَا أَوَى إلَى فِرَاشِهِ كُلَّ لَيْلَةٍ، جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيهِمَا، فَقَرَأَ فِيهِمَا: ﴿قُلْ هُوَ ٱللهُ أَحَدٌ﴾. وَ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾. وَ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾. ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا ما ٱسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهِ، يَبْدَأُ بِهِمَا عَلَى رَأْسِهِ وَوَجْهِهِ، وَما أَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهِ، يَفْعَلُ ذٰلِكَ ثَلاثَ مَرَّاتٍ. [رواه البخاري: ٥٠١٧]

फायदे: सही बुखारी ही की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बीमार होते तो सूरह इख्लास, सूरह फलक और सूरह नास पढ़ कर अपने आप पर दम करते और जब बीमारी ज्यादा हो गई तो हजरत आइशा रजि. बरकत के ख्याल से यह सूरतें पढ़कर आपका हाथ आपके बदन पर फैरतीं। (सही बुखारी 5016)

बाब 6: तिलावत कुरआन के वक्त सकीनत और फरिश्तों के उतरने का बयान।

٦ - باب: نُزُولُ السَّكِينَةِ وَالمَلائِكَةِ عِنْدَ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ

١٨١٥ : عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَما هُوَ يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ سُورَةَ الْبَقَرَةِ، وَفَرَسُهُ مَرْبُوطَةٌ عِنْدَهُ، إِذْ جَالَتِ الْفَرَسُ، فَسَكَتَ فَسَكَتَتْ، فَقَرَأَ فَجَالَتِ الْفَرَسُ، فَسَكَتَ وَسَكَتَتِ الْفَرَسُ، ثُمَّ قَرَأَ فَجَالَتِ الْفَرَسُ، فَانْصَرَفَ، وَكَانَ ٱبْنُهُ يَحْيَى قَرِيبًا مِنْهَا، فَأَشْفَقَ أَنْ تُصِيبَهُ، فَلَمَّا ٱجْتَرَّهُ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ حَتَّى ما يَرَاهَا، فَلَمَّا أَصْبَحَ حَدَّثَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (ٱقْرَأْ يَا ٱبْنَ حُضَيْرٍ، ٱقْرَأْ يَا ٱبْنَ حُضَيْرٍ). قَالَ: فَأَشْفَقْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ أَنْ تَطَأَ يَحْيَى، وَكَانَ مِنْهَا قَرِيبًا، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَانْصَرَفْتُ إِلَيْهِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي إِلَى السَّمَاءِ، فَإِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فِيهَا أَمْثَالُ الْمَصَابِيحِ، فَخَرَجْتُ حَتَّى لَا أَرَاهَا، قَالَ: (وَتَدْرِي ما ذَاكَ؟). قُلْتُ: لَا، قَالَ: (تِلْكَ المَلَائِكَةُ دَنَتْ لِصَوْتِكَ، وَلَوْ قَرَأْتَ لَأَصْبَحَتْ يَنْظُرُ النَّاسُ إِلَيْهَا، لَا تَتَوَارَى مِنْهُمْ). [رواه البخاري: ٥٠١٨]

1815: उसैद बिन हुजैर रजि. से रिवायत है कि वो एक रात सूरह बकरा पढ़ रहे थे कि उनका घोड़ा जो करीब ही बंधा हुआ था, बिदकने लगा। वो खामोश हो गये तो घोड़ा भी ठहर गया। यह फिर पढ़ने लगे तो घोड़ा फिर बिदकने लगा। यह फिर खामोश हो गये तो वो भी ठहर गया। यह फिर तिलावत करने लगे तो घोड़ा फिर बिदका। उसके बाद उसैद रजि. ने पढ़ना छोड़ दिया। चूंकि उनका बेटा यहया घोड़े के करीब था। इसलिए उन्हें अन्देशा हुआ कि कहीं घोड़ा उसे न कुचल डाले। उन्होंने सलाम फैरकर अपने बेटे को अपने पास खींच लिया। फिर उन्होंने जब सर उठाकर देखा तो आसमान नजर न आया (बल्कि एक बादल सा नजर आया, जिस पर चिराग जल रहे थे) सुबह के वक्त उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर होकर सारा वाक्या बयान किया तो आपने फरमाया, ऐ इब्ने हुजैर रजि. तुम पढ़ते रहते। ऐ इब्ने हुजैर तुम पढ़ते रहते। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे अपने बेटे यहया के बारे में खतरा महसूस हुआ था कि कहीं घोड़ा उसे कुचल ही न डाले। क्योंकि यहया घोड़े के बिल्कुल करीब था। इसलिए सर उठाकर मैंने उधर ख्याल किया और फिर आसमान की तरफ सर उठाया तो देखा कि एक अजीब किस्म की

छतरी है, जिसमें बहुत से चिराग रोशन हैं। फिर मैं बाहर आ गया तो फिर वो बादल का साया न देख सका। आपने फरमाया, तुम जानते हो वो क्या था? उसैद रजि. ने कहा, नहीं! आपने फरमाया, यह फरिश्ते थे जो तेरी आवाज सुनकर तेरे करीब आ गये थे। अगर तुम पढ़ते रहते तो सुबह के वक्त लोग उन्हें देखते और वो उनकी नजरों से औझल न होते।

फायदे: इस हदीस से नमाज के दौरान खुशुअ व खुजूअ की फजीलत मालूम होती है। निज दुनियावी जाईज काम में मस्रूफ होना बहुत ज्यादा भलाई के छूट जाने का सबब है। अगरचे हम नमाज में नाजाईज कामों की मस्रूफियत की वजह से खुशुअ को बर्बाद कर दें।

 (फतहुलबारी 9/64)

---

٧ - باب: اغْتِبَاطُ صَاحِبِ الْقُرْآنِ

बाब 7: कुरआन पढ़ने वाले का काबिले रश्क होना।

١٨١٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ حَسَدَ إِلَّا فِي ٱثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ عَلَّمَهُ ٱللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ فَسَمِعَهُ جَارٌ لَهُ فَقَالَ: لَيْتَنِي أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ فُلاَنٌ، فَعَمِلْتُ مِثْلَ مَا يَعْمَلُ، وَرَجُلٌ آتَاهُ ٱللهُ مَالاً فَهُوَ يُهْلِكُهُ فِي الْحَقِّ، فَقَالَ رَجُلٌ: لَيْتَنِي أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ فُلاَنٌ، فَعَمِلْتُ مِثْلَ مَا يَعْمَلُ). [رواه البخاري: ٥٠٢٦]

1816: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया काबिले रश्क दो आदमी हैं। एक वो जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन दिया और वो उसे रात दिन पढ़ता हो। सो उसका हमसाया यूं रश्क कर सकता है, काश मुझे भी उस आदमी की तरह कुरआन दिया जाता तो मैं भी उसे पढ़कर उसी तरह अमल करता, जिस तरह फलां ने किया है। दूसरा वो आदमी जिसे अल्लाह तआला ने रिज्क हलाल दिया हो और वो उसे राहे हक में

खर्च करता है। तो उस पर कोई आदमी यूं रश्क कर सकता है, काश मुझे भी ऐसी ही दौलत मिलती तो मैं भी उसी तरह खर्च करता, जिस तरह फलां करता है।

फायदे: इस हदीस में हस्द का मतलब रश्क है। यानी दूसरे को जो अल्लाह ने कोई नैमत दी हो, उसकी आरजू करना, जबकि दूसरे की नैमत का खत्म हो जाना, चाहना हस्द (जलन) है।

٨ - باب: خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ القُرآنَ وَعَلَّمَهُ

बाब 8: तुममें से बेहतर वो इन्सान है जो कुरआन सीखता और सिखाता है।

١٨١٧ : عَنْ عُثْمانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ القُرْآنَ وَعَلَّمَهُ). [رواه البخاري: ٥٠٢٧]

1817: उस्मान रजि. से रिवायत है वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया तुम में से बेहतर वो आदमी है जो कुरआन सीखता और सिखाता है।

फायदे: चूनांचे इस हदीस की वजह से हजरत अबू रहमान सलमी रह. हजरत उसमान रजि. के दौरे खिलाफत से लेकर हज्जाज बिन यूसुफ के दौरे हुकूमत तक खिदमत कुरआन में मसरूफ रहे।

(सही बुखारी 5027)

١٨١٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - في رواية - قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ أَفْضَلَكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ القُرْآنَ وَعَلَّمَهُ). [رواه البخاري: ٥٠٢٨]

1818: उस्मान रजि. से ही एक रिवायत हैं कि उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम में से अफजल वो आदमी है जो कुरआन खुद सीखता है। फिर आगे दूसरों को उसकी तालीम देता है।

फायदे: इस हदीस में तालीम कुरआन की तरगीब दी गई है। निज

उसके पैशे नजर इमाम सुफियान सवरी रजि. तालीमे कुरआन को जिहाद पर फजीलत दिया करते थे। (फतहुलबारी 9/77)

बाब 9: कुरआन मजीद को याद रखने और बाकायदा पढ़ने का बयान।

٩ - باب: اسْتِذْكَارُ القُرْآنِ وَتَعَاهُدُهُ

1819: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हाफिज कुरआन की मिसाल उस आदमी की सी है जिसने अपने ऊंट की टांग को बांध रखा हो। अगर उसकी निगरानी करता रहेगा तो उसे रोके रखेगा और अगर उसे आजाद छोड़ देगा तो वो कहीं चला जायेगा।

١٨١٩ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ القُرْآنِ كَمَثَلِ صَاحِبِ الإِبِلِ المُعَقَّلَةِ: إِنْ عَاهَدَ عَلَيْهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ أَطْلَقَهَا ذَهَبَتْ). [رواه البخاري: ٥٠٣١]

फायदे: इस हदीस के पेशे नजर हाफिजे कुरआन को चाहिए कि वो पाबन्दी से कुरआन करीम की तिलावत करता रहे। क्योंकि अगर उसे पढ़ना छोड़ दिया जाये तो भूल जायेगा। ऐसा करने से सारी मेहनत बर्बाद हो जाती है। (फतहुलबारी 9/79)

1820: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, किसी आदमी का यह कहना कि मैं फलां फलां आयत भूल गया हूँ, नामुनासिब बात है। बल्कि इस तरह कहना चाहिए कि वो मुझे भुला दी गई है। कुरआन को लगातार याद करते रहो, क्योंकि कुरआन (गफलत बरतने वाले) लोगों के सीनों से निकल जाने में वहशी ऊंटों से भी ज्यादा तेज है।

١٨٢٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (بِئْسَ مَا لأَحَدِهِمْ أَنْ يَقُولَ: نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ، بَلْ نُسِّيَ، وَٱسْتَذْكِرُوا القُرْآنَ، فَإِنَّهُ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنْ صُدُورِ الرِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ). [رواه البخاري: ٥٠٣٢]

फायदेः कसरत गफलत और अदम तवज्जुह की वजह से कुरआन करीम भूल जाता है। अगर यूं कहा जाये कि मैं कुरआन भूल गया हूँ तो अपनी कोताही पर खुद गवाही देना है। इसलिए यूं कहा जाये कि अल्लाह ने मुझे भुला दिया है, ताकि हर फअल खालिक हकीकी की तरफ मनसूब हो। अगरचे कुरआन व हदीस की रू से ऐसे काम की निस्बत बन्दों की तरफ करना भी जाईज है। (फतहुलबारी 5/24)

١٨٢١ : عَنْ أبي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (تَعَاهَدُوا الْقُرْآنَ، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَهُوَ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنَ الإِبِلِ فِي عُقُلِهَا). [رواه البخاري: ٥٠٣٣]

1821: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कुरआन को हमेशा पढ़ते रहो। इसलिए कि उस जात की कसम, जिसके हाथ में मेरी जान है कुरआन निकल कर भागने में उन ऊंटों से ज्यादा तेज है जिनके पांव की रस्सी खुल चुकी है।

फायदेः इस हदीस में तीन चीजों की तरह करार दिया गया है। हाफिजे कुरआन को ऊंट के मालिक से और कुरआन करीम को ऊंट से और उसके याद रखने को बांधने से। निज इसमें कुरआन करीम को पाबन्दी से पढ़ने की तलकीन की गई है। (फतहुलबारी 9/83)

١٠ - باب: مَدُّ الْقِرَاءَةِ

बाब 10: मद्‌दो शद (खूब खूब खीचंकर) से कुरआन पढ़ने का बयान।

١٨٢٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُئِلَ: كَيْفَ كَانَتْ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقَالَ: كَانَتْ مَدًّا، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ﴾، يَمُدُّ بِبِسْمِ ٱللهِ، وَيَمُدُّ بِالرَّحْمٰنِ، وَيَمُدُّ بِالرَّحِيمِ. [رواه البخاري: ٥٠٤٦]

1822: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तरह किराअत करते थे तो उन्होंने जवाब दिया कि खूब खींचकर पढ़ते थे। फिर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर बताया कि बिस्मिल्लाह और अर्रहमान और अर्रहिम खींच कर पढ़ा करते थे।

फायदे: बिस्मिल्लाह में अल्लाह के लाम को, रहमान में उस मीम को जो नून से पहले और रहीम में हा को जो मीम से पहले है, खींचकर पढ़ते थे। यानी हुरूफे मद्दा को खींच कर पढ़ा करते थे।

बाब 11: अच्छी आवाज से कुरआन पढ़ना।

١١ - باب: حُسْنُ الصَّوْتِ بِالْقِرَاءَةِ

1823: अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से मुखातिब होकर फरमाया, ऐ अबू मूसा रजि. तुम को दाउद अलैहि. की खुश इलहानी में से हिस्सा दिया गया है।

١٨٢٣ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَهُ: (يَا أَبَا مُوسَى، لَقَدْ أُوتِيتَ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيرِ آلِ دَاوُدَ). [رواه البخاري: ٥٠٤٨]

फायदे: हजरत अबू मूसा अशअरी बड़े खुश इलहान थे। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हजरत आइशा रजि. रात के वक्त जा रहे थे कि हजरत अबू मूसा रजि. को घर में कुरआन पढ़ते सुना तो सुबह मुलाकात के वक्त आपने उनकी हौसला अफजाई फरमाई। (फतहुलबारी 9/93)

बाब 12: (कम से कम) कितनी मुद्दत में कुरआन खत्म किया जाये?

١٢ - باب: فِي كَمْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ

1824: अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे वालिद ने एक अच्छे खानदान की औरत से मेरा निकाह कर दिया था। वो अपनी

١٨٢٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَنْكَحَنِي أَبِي ٱمْرَأَةً ذَاتَ حَسَبٍ، فَكَانَ يَتَعَاهَدُ كَنَّتَهُ فَيَسْأَلُهَا عَنْ بَعْلِهَا، فَتَقُولُ: نِعْمَ الرَّجُلُ مِنْ رَجُلٍ، لَمْ يَطَأْ لَنَا

فِرَاشًا، وَلَمْ يُفَتِّشْ لَنَا كَنَفًا مُذْ أَتَيْنَاهُ، فَلَمَّا طَالَ ذٰلِكَ عَلَيْهِ، ذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: (أَلْقِنِي بِهِ). فَلَقِيتُهُ بَعْدُ، فَقَالَ: (كَيْفَ تَصُومُ؟). قُلْتُ: كُلَّ يَوْمٍ قَالَ: (وَكَيْفَ تَخْتِمُ؟). قُلْتُ: كُلَّ لَيْلَةٍ، قَالَ: (صُمْ فِي كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةً، وَاقْرَإِ الْقُرْآنَ فِي كُلِّ شَهْرٍ). قُلْتُ: أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ، قَالَ: (صُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فِي الْجُمُعَةِ). قُلْتُ: أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ هٰذَا، قَالَ: (أَفْطِرْ يَوْمَيْنِ وَصُمْ يَوْمًا). قَالَ: قُلْتُ: أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ، قَالَ: (صُمْ أَفْضَلَ الصَّوْمِ، صَوْمَ دَاوُدَ، صِيَامَ يَوْمٍ وَإِفْطَارَ يَوْمٍ، وَاقْرَأْ فِي كُلِّ سَبْعِ لَيَالٍ مَرَّةً). فَلَيْتَنِي قَبِلْتُ رُخْصَةَ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ، وَذَاكَ أَنِّي كَبِرْتُ وَضَعُفْتُ، فَكَانَ يَقْرَأُ عَلَى بَعْضِ أَهْلِهِ السُّبْعَ مِنَ الْقُرْآنِ بِالنَّهَارِ، وَالَّذِي يَقْرَؤُهُ يَعْرِضُهُ مِنَ النَّهَارِ، لِيَكُونَ أَخَفَّ عَلَيْهِ بِاللَّيْلِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَتَقَوَّى أَفْطَرَ أَيَّامًا، وَأَحْصَى وَصَامَ مِثْلَهُنَّ، كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتْرُكَ شَيْئًا فَارَقَ النَّبِيَّ ﷺ عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٥٠٥٢]

बहू से खाविन्द का हाल पूछते रहते थे। वो जवाब देती थी कि हां वो नेक मर्द हैं। लेकिन जब से मैं उसके निकाह में आई हूँ, न तो उसने मेरे बिस्तर पर कदम रखा है और न ही मेरे कपड़े में कभी हाथ डाला है। यानी वो मेरे कभी करीब नही आंया। जब एक लम्बी मुद्दत इस तरह गुजर गई तो उन्होंने मजबूर होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका जिक्र किया। आपने फरमाया, उसे मेरे पास लाओ। अब्दुल्लाह रजि. कहते हैं कि मैं आपकी खिदमत में हाजिर हुआ तो आपने पूछा, तू रोजे कैसे रखता है? मैंने कहा, रोजाना रोजा रखता हूँ। फिर पूछा और कितनी मुद्दत में कुरआन खत्म करता है? मैंने कहा, हर रात एक खत्म करता हूँ। आपने फरमाया कि रोजे हर महीने में तीन रखा करो और कुरआन एक महीने में खत्म किया करो। मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे तो इससे ज्यादा ताकत हासिल है। आपने फरमाया, अच्छा हर हफ्ते में तीन रोजा रखा करो। मैंने फिर कहा, मुझे तो इससे भी ज्यादा ताकत है। आपने फरमाया, दो दिन इफ्तार करके एक दिन का रोजा रख लिया कर। मैंने कहा, मुझे तो इससे ज्यादा ताकत हासिल है। आपने फरमाया अच्छा

सब रोजों से अफजल रोजा दाउद अलैहि. का इख्तियार कर एक दिन रोजा रख। दूसरे दिन इफ्तार कर और कुरआन सात रातों में खत्म करो। अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. कहा करते थे, काश! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूख्सत कबूल कर लेता, क्योंकि अब मैं बूढ़ा और कमजोर हो गया हूँ। रावी कहता है कि अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. फिर ऐसा किया करते थे कि कुरआन का सातवां हिस्सा अपने किसी घर वाले को दिन में सुना देते ताकि रात में पढ़ना आसान हो जाये और जब रोजा रखने की ताकत हासिल करना चाहते तो कुछ रोज तक बराबर इफ्तार करते, लेकिन दिन गिनते जाते। फिर इतने ही दिन बराबर रोजा रखते। उनको यह मालूम हुआ कि उस मामूल में कमी आ जाये जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने किया करता था।

फायदे: कुरआन मजीद कम से कम कितनी मुद्दत में खत्म करना चाहिए? इसके बारे में मुख्तलीफ रिवायात हैं। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से बयान करने वाले अकसर रावी कम से कम सात रात बयान करते हैं। बुखारी की कुछ रिवायत (5054) में कम से कम सात रात मुद्दत बयान करने के बाद आप का इरशाद गरामी है कि इस मुद्दत से आगे न बढ़ना कुछ रिवायतों में पांच और तीन का भी जिक्र है। बल्कि तिरमजी की रिवायत के मुताबिक जिसने तीन रात से कम मुद्दत में कुरआन खत्म किया, उसने कुरआन को नहीं समझा। अगरचे कुछ इस्लाफ से एक रात में कुरआन खत्म करना भी मनकूल है। फिर भी बिदअत से बचते हुए खैरो बरकत को इत्तेबाअ में ही तलाश करना चाहिए।

बाब 13: उस आदमी का गुनाह हो कुरआन को रियाकारी, कस्ब मआश

١٣ - باب: إِثْمِ مَنْ رَاءَى بِقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ أَوْ تَأَكَّلَ بِهِ الخ

(रोजी कमाने) या इज्हारे फख के लिए पढ़ता है।

١٨٢٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (يَخْرُجُ فِيكُمْ قَوْمٌ تَحْقِرُونَ صَلاَتَكُمْ مَعَ صَلاَتِهِمْ، وَصِيَامَكُمْ مَعَ صِيَامِهِمْ، وَعَمَلَكُمْ مَعَ عَمَلِهِمْ، وَيَقْرَؤُونَ القُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يَنْظُرُ فِي النَّصْلِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَنْظُرُ فِي القِدْحِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَنْظُرُ فِي الرِّيشِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَتَمَارَى فِي الفُوقِ). [رواه البخاري: ٥٠٥٨]

1825: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, तुम में से कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे कि तुम अपनी नमाज को उनकी नमाज के मुकाबले में, अपने रोजों को उनके रोजे के मुकाबले में और अपने दूसरे नेक आमालों को उनके आमालों के मुकाबले में कमतर ख्याल करोगे। और वो कुरआन तो पढ़ेंगे, लेकिन वो उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से ऐसे निकल जायेंगे, जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। ऐसा कि शिकारी तीर के फल को देखता है तो उसे कुछ नजर नहीं आता। फिर वो पैकान की जड़ को देखता है तो वहां भी उसे कुछ नहीं मिलता। फिर वो तीर की लकड़ी को देखता है तो उसे कोई निशान नजर नहीं आता। फिर वो तीन के पर को देखता है, तब भी उसे कुछ नहीं मिलता। सिर्फ उसे शक गुजरता है। (क्योंकि वो तीन जानवर के खून और लीद के बीच से गुजर कर आया है।)

फायदे: इस हदीस का मिस्दाक खारिजी लोग थे जो बजाहिर बड़े तहज्जुद गुजार और शब बेदार थे। लेकिन दिल में जरा भी नूरे ईमान न था। बात बात पर मुसलमानों के काफिर कहना उनकी आदत थी। बुखारी की रिवायत (5057) के मुताबिक उन्हें कत्ल करने का हुक्म दिया गया है।

١٨٢٦ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (المُؤْمِنُ الَّذِي يَقْرَأُ القُرْآنَ وَيَعْمَلُ بِهِ كَالأُتْرُجَّةِ، طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَرِيحُهَا طَيِّبٌ. وَالمُؤْمِنُ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ القُرْآنَ وَيَعْمَلُ بِهِ كَالتَّمْرَةِ، طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَلاَ رِيحَ لَهَا. وَمَثَلُ المُنَافِقِ الَّذِي يَقْرَأُ القُرْآنَ كَالرَّيْحَانَةِ، رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ. وَمَثَلُ المُنَافِقِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ القُرْآنَ كَالحَنْظَلَةِ، طَعْمُهَا مُرٌّ، وَخَبِيثٌ، وَرِيحُهَا مُرٌّ). [رواه البخاري: ٥٠٥٩]

1826: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, उस मौमिन की मिसाल जो कुरआन की तिलावत करता है और उस पर अमल पैरा रहता है नारंगी की सी है, जिसकी खुश्बू भी उमदा और जायका भी उमदा है। और उस मौमिन की मिसाल जो कुरआन की तिलावत नहीं करता, मगर उस पर अमल करता है, खजूर की सी है कि उसका जायका तो अच्छा है लेकिन खुशबू नहीं है। और जो मुनाफिक कुरआन पढ़ता है, उसकी मिसाल बबूना के फूल की सी है, जिसकी खुशबू तो अच्छी है, लेकिन मजा कड़वा है और उस मुनाफिक की मिसाल जो कुरआन भी नहीं पढ़ता इन्दराईन के फल की तरह से, जिसमें खुश्बू नहीं और मजा भी कड़वा है।

फायदे: बुखारी की बाज रिवायत (5020) "व यामलू बिह" के अल्फाज नहीं हैं, ऐसी रिवायत को इस रिवायत पर महमूल किया जायेगा। क्योंकि तिलावत से मुराद अमल करना है। निज इस हदीस से कारी कुरआन की फजीलत भी साबित होती है। (औनुलबारी 5/33)

١٨٢٧ : عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اقْرَؤُوا القُرْآنَ مَا ٱئْتَلَفَتْ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمْ، فَإِذَا ٱخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا عَنْهُ). [رواه البخاري: ٥٠٦٠]

1827: जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कुरआन मजीद को उस वक्त तक पढ़ो जब तक तुम्हारा दिल और

जुबान एक दूसरे के मुताबिक हो और जब दिल और जुबान में इख्तलाफ हो जाये तो पढ़ना छोड़ दो।

फायदेः इमाम बुखारी ने इस पर हदीस बायस अलफाज उनवान कायम किया है। "कुरआन उस वक्त तक पढ़ो जब तक उससे दिल लगा रहे।" मतलब यह है कि जब दिल में उकताहट पैदा हो जाये तो कुरआन करीम को नहीं पढ़ना चाहिए।



किताबुल निकाह

निकाह के बयान में

बाब 1. निकाह की ख्वाहिश दिलाने का बयान।

1828: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, तीन आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों के घर पर आये। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत के बारे में पूछा। जब उन्हें बताया गया तो उन्होंने आपकी इबादत को बहुत कम ख्याल किया। फिर कहने लगे, हम आपकी कब बराबरी कर सकते हैं? क्योंकि आपके तो अगले पिछले सब गुनाह माफ कर दिये गये हैं। चूनांचे उनमें से एक कहने लगा, मैं तो उम्र भर पूरी पूरी रात नमाज पढ़ता रहूँगा। दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोजेदार रहूँगा और कभी इफ्तार नहीं करूंगा और तीसरे ने कहा, मैं तमाम उम्र औरतों से दूर रहूँगा और कभी शादी नहीं करूंगा। इस गुफ्तगू

١ - باب: التَّرْغِيبُ فِي النِّكَاحِ

١٨٢٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ ثَلَاثَةُ رَهْطٍ إِلَى بُيُوتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ، يَسْأَلُونَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا أُخْبِرُوا كَأَنَّهُمْ تَقَالُّوهَا، فَقَالُوا: وَأَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَدْ غَفَرَ ٱللهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ، فَقَالَ أَحَدُهُمْ: أَمَّا أَنَا فَإِنِّي أُصَلِّي اللَّيْلَ أَبَدًا، وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَصُومُ الدَّهْرَ وَلَا أُفْطِرُ، وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا أَتَزَوَّجُ أَبَدًا، فَجَاءَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: (أَنْتُمُ الَّذِينَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا؟ أَمَا وَٱللهِ إِنِّي لَأَخْشَاكُمْ لِلهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهُ، لَكِنِّي أَصُومُ وَأُفْطِرُ، وَأُصَلِّي وَأَرْقُدُ، وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ، فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي). [رواه البخاري: ٥٠٦٣]

की खबर जब आपको मिली तो आप उनके पास तशरीफ लाये और फरमाया, तुम लोगों ने ऐसी बातें की हैं। अल्लाह की कसम! मैं तुम्हारी निस्बत अल्लाह से ज्यादा डरने वाला और तकवा इख्तेयार करने वाला हूँ। लेकिन मैं रोजे भी रखता हूँ और इफ्तार भी करता हूँ। रात को नमाज भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ। निज औरतों से निकाह भी करता हूँ। आगाह रहो जो आदमी मेरे तरीके से मुंह मोड़ेगा, वो मुझ से नहीं।

फायदेः इस हदीस में सुन्नत से मुराद तरीका नबवी है जो उससे नफरत करते हुए मुंह मोड़ता है, वो इस्लाम के दायरे से निकला हुआ है। मतलब यह है कि जो इन्सान निकाह के बारे में नबी के तरीके को नजर अन्दाज करके तन्हाई की जिन्दगी बसर करता है, और रहबानियत चाहता है, वो हममें से नहीं है। (फतहुलबारी 9/105)

बाब 2: तन्हा रहने और खस्सी हो जाने की मनाही।

٢ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّبَتُّلِ وَالخِصَاءِ

1829: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस्मान बिन मजऊन रजि. को तर्क निकाह (तन्हा रहने) से मना फरमा दिया था। अगर आप उसे निकाह के बगैर रहने की इजाजत दे देते तो हम सब खस्सी होना पसन्द करते।

١٨٢٩ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَدَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ التَّبَتُّلَ، وَلَوْ أَذِنَ لَهُ لاخْتَصَيْنَا. [رواه البخاري: ٥٠٧٣]

फायदेः खस्सी हो जाने से मुराद यह है कि हम ऐसी दवा या चीजें इस्तेमाल करते हैं, जिससे ख्वाहिश जाती रहती है या कम हो जाती है। क्योंकि खस्सी होना इन्सान के लिए हराम है। (फतहुलबारी 9/118)

1830: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है,

١٨٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ

वो कहते हैं, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं जवान आदमी हूँ। अन्देशा है कि कहीं मुझ से बदकारी न हो जाये। क्योंकि मुझ में किसी औरत से निकाह करने की ताकत नहीं है। आपने उसे कोई जबाब न दिया। मैंने फिर कहा, तो फिर खामोश रहे। मैंने फिर कहा तो आप भी खामोश रहे। मैंने फिर कहा तो आपने फरमाया, ऐ अबू हुरैरा रजि. जो कुछ आपकी तकदीर में है, वो कलम लिख कर सूख गया है, अब तू चाहे खस्सी हो या चाहे न हो।

عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنِّي رَجُلٌ شَابٌّ، وَأَنَا أَخَافُ عَلَى نَفْسِي ٱلْعَنَتَ، وَلاَ أَجِدُ مَا أَتَزَوَّجُ بِهِ ٱلنِّسَاءَ، فَسَكَتَ عَنِّي، ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَسَكَتَ عَنِّي، ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَسَكَتَ عَنِّي، ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذٰلِكَ فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، جَفَّ ٱلْقَلَمُ بِمَا أَنْتَ لاَقٍ، فَٱخْتَصِ عَلَى ذٰلِكَ أَوْ ذَرْ). [رواه البخاري: ٥٠٧٦]

फायदे: एक रिवायत में है कि हजरत अबू हुरैरा रजि. ने कहा, अगर इजाजत हो तो मैं खस्सी हो जाऊं। इस सूरत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जवाब सवाल के मुताबिक हो जायेगा। आपके जवाब में इशारा है कि खस्सी होने में कोई फायदा नहीं। लिहाजा इस ख्याल को छोड़ दें। (फतहुलबारी 9/119)

बाब 3: कुंआरी लड़की से निकाह करने का बयान।

٣ - باب: نِكَاحُ الأَبْكَارِ

1831: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर आप किसी जंगल में तशरीफ ले जायें और वहां एक पेड़ हो कि उससे किसी जानवर ने कुछ खा लिया हो और एक ऐसा पेड़ हो, जिसको किसी ने छुआ

١٨٣١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَرَأَيْتَ لَوْ نَزَلْتَ وَادِيًا وَفِيهِ شَجَرَةٌ قَدْ أُكِلَ مِنْهَا، وَوَجَدْتَ شَجَرًا لَمْ يُؤْكَلْ مِنْهَا، فِي أَيِّهَا كُنْتَ تُرْتِعُ بَعِيرَكَ؟ قَالَ: (فِي ٱلَّذِي لَمْ يُرْتَعْ مِنْهَا). تَعْنِي أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَمْ يَتَزَوَّجْ بِكْرًا غَيْرَهَا. [رواه البخاري: ٥٠٧٧]

तक न हो तो आप अपना ऊंट किस पेड़ से चरायेंगे। आपने फरमाया, उस पेड़ से जिस में कुछ खाया न गया हो। आइशा रजि. का मकसद यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे अलावा किसी कुंआरी औरत से निकाह नहीं किया।

फायदेः इस हदीस से मालूम हुआ की शादी के लिए किसी पाकबाज लड़की को चुनना चाहिए। अगरचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दावत देने की गर्ज और मकसद के पेशे नजर असर शादियां शौहर वाली औरत से की हैं। (फतहुलबारी 9/121)

बाब 4: कमसिन लड़की का निकाह किसी बुजुर्ग से करना।

٤ - باب: تَزْوِيجُ الصِّغَارِ مِنَ الكِبَارِ

1932: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रजि. से उनकी बाबत पैगामे निकाह दिया तो अबू बकर रजि. ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं तो आपका भाई हूँ। आपने जवाब दिया कि आप तो मेरे भाई अल्लाह के दीन और उसकी किताब के ऐतबार से हैं। लिहाजा आइशा रजि. मेरे लिए हलाल है।

١٨٣٢ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْها أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَطَبَها إِلَى أَبِي بَكْرٍ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّما أَنَا أَخُوكَ، فَقالَ: (أَنْتَ أَخِي فِي دِينِ ٱللهِ وَكِتَابِهِ، وَهِيَ لِي حَلَالٌ). [رواه البخاري: ٥٠٨١]

फायदेः हजरत अबू बकर रजि. के ख्याल के मुताबिक दीनी भाईचारगी शायद निकाह के लिए रूकावट हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वजाहत फरमाई कि खूनी और खानदानी निकाह के लिए रूकावट बन सकती है, लेकिन इस्लामी भाईचारगी रूकावट का कारण नहीं।

बाब 5: हमपल्ला (एक जैसा) होने में

٥ - باب: الأَكْفَاءُ فِي الدِّينِ

दीनदार को तरजीह देना (मियां बीवी का दीन में एक तरह का होना।)

1833: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि अबू हुजैफा बिन उतबा बिन रबीया बिन अब्दुल शमस जो जंगे बदर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीक थे, उन्होंने सालिम रजि. को अपना मुंह बोला बेटा बनाया था। और उससे अपनी भतीजी हिन्दा दलीद बिन उतबा बिन राबीया की लड़की का निकाह कर दिया था। जबकि सालिब रजि. एक अनसारी औरत के गुलाम थे (अबू हुजैफा रजि. ने उसे अपना मुंह बोला बेटा बना लिया था) जैसा कि जैद रजि. को रसूलुल्लाह ने अपना बेटा बना लिया था। जमाना जाहिलियत का यह दस्तूर था कि अगर कोई किसी को अपना बेटा बनाता तो लोग उसकी तरफ मनसूब करके उसे पुकारते और उसके मरने के बाद वारिस भी वही होता था। यहां तक कि अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी ''हर आदमी को उस असल बाप के नाम से पुकारो और अल्लाह के नजदीक यही बेहतर है। अगर तुम्हें किसी के हकीकी बाप का इल्म न हो तो वो तुम्हारे दीनी भाई और मौला हैं।''

١٨٣٣ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ أَبَا حُذَيْفَةَ بْنَ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، تَبَنَّى سَالِمًا، وَأَنْكَحَهُ بِنْتَ أَخِيهِ هِنْدَ بِنْتَ الْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَهُوَ مَوْلًى لِامْرَأَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ، كَمَا تَبَنَّى النَّبِيُّ ﷺ زَيْدًا، وَكانَ مَنْ تَبَنَّى رَجُلًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ دَعاهُ النَّاسُ إِلَيْهِ وَوَرِثَ مِنْ مِيرَاثِهِ، حَتَّى أَنْزَلَ ٱللهُ: ﴿ٱدْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَمَوَالِيكُمْ﴾ فَرُدُّوا إِلَى آبَائِهِمْ، فَمَنْ لَمْ يُعْلَمْ لَهُ أَبٌ كانَ مَوْلًى وَأَخًا فِي الدِّينِ، فَجَاءَتْ سَهْلَةُ بِنْتُ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو القُرَشِيُّ ثُمَّ العَامِرِيُّ - وَهِيَ امْرَأَةُ أَبِي حُذَيْفَةَ بْنِ عُتْبَةَ - النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ إِنَّا كُنَّا نَرَى سَالِمًا وَلَدًا، وَقَدْ أَنْزَلَ ٱللهُ فِيهِ مَا قَدْ عَلِمْتَ. فَذَكَرَ الحَدِيثَ. [رواه البخاري: ٥٠٨٨]

इसके बाद तमाम मुंह बोले बेटा अपने हकीकी बाप के नाम से

पुकारे जाने लगे। अगर किसी का बाप मालूम न होता तो उसे मौला और दीनी भाई कहा जाता था। इसके बाद अबू हुजैफा की बीवी सहला दुख्तर सोहेल बिन अम्र कुरैशी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम तो आज तक सालिम को अपने हकीकी बेटे की तरह समझते थे। अब अल्लाह ने जो हुक्म उतारा, आपको मालूम है। फिर आखिर तक तमाम हदीस बयान की।

फायदे: अबू दाउद में पूरी हदीस यूं है कि हजरत सहला रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अब हम हजरत सालिम रजि. से पर्दा करें। आपने फरमाया कि उसे पांच बार दूध पिला दो फिर वो तुम्हारे बेटे की तरह होगा, जिससे पर्दा नहीं है।

 (फतहुलबारी 9/134)

١٨٣٤ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى ضُبَاعَةَ بِنْتِ الزُّبَيْرِ، فَقَالَ لَهَا: (لَعَلَّكِ أَرَدْتِ الحَجَّ؟). قَالَتْ: وَٱللهِ لاَ أَجِدُنِي إِلَّا وَجِعَةً، فَقَالَ لَهَا: (حُجِّي وَٱشْتَرِطِي، وَقُولِي: اللَّهُمَّ مَحِلِّي حَيْثُ حَبَسْتَنِي). وَكَانَتْ تَحْتَ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ. [رواه البخاري: ٥٠٨٩]

1834: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुबाअ दुख्तर जुबैर रजि. के पास गये और पूछा कि शायद तेरा हज को जाने का इरादा है। उसने कहा, हां! लेकिन मैं अपने आपको बीमार महसूस करती हूँ। आपने फरमाया कि हज का अहराम बांध ले और अहराम के वक्त यह शर्त कर ले कि ऐ अल्लाह! मुझे तू जहां पर रोक देगा, वहीं अहराम खोल दूंगी। और यह कुरैशी औरत मिकदाद बिन असवद के निकाह में थी।

फायदे: हजरत मिकदाद के बाप का नाम अम्र था, लेकिन असवद बिन अब्द यगूस की तरफ इसलिए मनसूब था कि उसने उसे मुंह बोला बेटा

बनाया था। हजरत मिकदाद की बीवी कबीला बनी हाशिम से थीं, जबकि मिकदाद कुरैशी न थे। (फतहुलबारी 9/531)

1835: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, औरत से मालदारी, खानदानी, वजाहत, हुस्नो जमाल और दीनदारी के सबब निकाह किया जाता है। तेरे दोनों हाथ खाक आलूद हों। तुझे कोई दीनदार औरत हासिल करना चाहिए।

١٨٣٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (تُنْكَحُ المَرْأَةُ لأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا ولِحَسَبِهَا وَجَمَالِهَا وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ ٱلدِّينِ، تَرِبَتْ يَدَاكَ). [رواه البخاري: ٥٠٩٠]

फायदेः इब्ने माजा की रिवायत में है कि किसी औरत से सिर्फ हुस्न की बिना पर निकाह न करो, क्योंकि मुमकिन है, हुस्न उसके लिए हलाकत का सबब हो और न ही सिर्फ मालदारी देखकर किसी औरत से शादी की जाये, क्योंकि माल व दौलत से दिमाग खराब हो जाता है, लेकिन दीनदारी को बुनियाद बनाकर निकाह किया जाये। (फतहुलबारी 9/135)

1836: सहल रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक मालदार आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से गुजरा तो आपने पूछा, तुम लोग उसे कैसा जानते हो? उन्होंने कहा कि यह अगर किसी से रिश्ता मांगे तो निकाह कर देने के काबिल है। अगर किसी की सिफारिश करे तो फौरन मंजूर की जाये। अगर बात करे तो बगौर सुनी जाये। फिर आप खामोश हो गये। इतने में मुसलमानों में से एक फकीर और

١٨٣٦ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ غَنِيٌّ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (ما تَقُولُونَ في هٰذَا؟). قالُوا: حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ أَنْ يُشَفَّعَ، وَإِنْ قَالَ أَنْ يُسْتَمَعَ. قَالَ: ثُمَّ سَكَتَ، فَمَرَّ رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ المُسْلِمِينَ، فَقَالَ: (ما تَقُولُونَ في هٰذَا؟). قالُوا: حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ لاَ يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ أَنْ لاَ يُشَفَّعَ، وَإِنْ قَالَ أَنْ لاَ يُسْتَمَعَ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هٰذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الأَرْضِ مِثْلَ هٰذَا). [رواه البخاري: ٥٠٩١]

नादार वहां से गुजरा तो आपने पूछा कि उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने जवाब दिया कि यह अगर रिश्ता मांगे तो कबूल न किया जाये। सिफारिश करे तो मंजूर न हो, अगर बात कहे तो कोई कान न धरे। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तमाम रूये जमीन के ऐसे अमीरों से यह फकीर बेहतर है।

फायदेः इमाम बुखारी इस हदीस को किताबुल रिकाक में फकीर की फजीलत बयान करने के लिए भी लाये हैं। दूसरी हदीस में है कि मुसलमानों में गरीब लोग मालदारों से पांच सौ बरस पहले जन्नत में जायेंगे।

बाब 6: फरमाने इलाहीः तुम्हारी कुछ बेगमें और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं" इसके पेशे नजर औरत की नहूस्त (बद-बख्ती) से परहेज करना।

٦ - باب: مَا يُتَّقَى مِنْ شُؤمِ المَرْأَةِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ مِنْ أَزْوَٰجِكُمْ وَأَوْلَٰدِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ﴾

1837: उसामा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे नबी होने के बाद दुनिया में जो फितने बाकी रह गये हैं, उनमें मर्दों के लिए औरतों से ज्यादा नुकसान देह फितना और कोई नहीं।

١٨٣٧ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ). [رواه البخاري: ٥٠٩٦]

फायदेः औरत बावजूद इसके कि दीन व अकल के लिहाज से अधूरी है, लेकिन मकरो-फरेब और फितनागिरी में बहुत माहिर है। चूंकि कुरआन करीम ने जहां शैतान की तदबीरों का जिक्र किया तो फरमाया कि उसकी तदबीरें बहुत कमजोर होती हैं और जब औरतों के बारे में फरमाया तो इरशाद हुआ कि यकीनन तुम्हारा मकरो-फरेब तो बहुत बड़ा होता है।

बाब 7: फरमाने इलाही : "वो मायें हराम हैं, जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और इरशादे नबवी जो रिश्ता खून से हराम होता है, वो दूध से भी हराम हो जाता है।

٧ - باب: ﴿وَأُمَّهَٰتُكُمُ ٱلَّٰتِيٓ أَرۡضَعۡنَكُمۡ﴾ وَيَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ

1837: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया, आप हमजा रजि. की दुख्तर से शादी क्यों नहीं कर लेते। तो आपने फरमाया, वो दूध के रिश्ते में मेरी भतीजी है।

١٨٣٨ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَلَا تَتَزَوَّجُ ٱبْنَةَ حَمْزَةَ؟ قَالَ: (إِنَّهَا ٱبْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ). [رواه البخاري: ٥١٠٠]

फायदे: हजरत अली रजि. ने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप कुरैश से बहुत दिलचस्पी रखते हैं। हमें नजरअन्दाज करते हैं। आपने फरमाया कि तुम्हारे पास कोई चीज है तो हजरत अली रजि. ने कहा कि आप दुख्तर हमजा रजि. से शादी कर लें। इसके बाद आपने वो जवाब दिया जो हदीस में मजकूरा है।

(फतहुलबारी 9/126)

1839: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने एक आदमी की आवाज सुनी जो हफ्जा रजि. के घर में आने की इजाजत मांग रहा था। आइशा रजि. का बयान है कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह आदमी आपके घर आने की इजाजत मांग रहा

١٨٣٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ رَجُلٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هٰذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أُرَاهُ فُلَانًا). لِعَمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: لَوْ كَانَ

فَلاَنٌ حَيًّا - لِعَمِّهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ دَخَلَ عَلَيَّ؟ فَقَالَ: (نَعَمْ، الرَّضَاعَةُ تُحَرِّمُ مَا تُحَرِّمُ الْوِلاَدَةُ). [رواه البخاري: ٥٠٩٩]

है। आपने फरमाया, मैं जानता हूँ कि यह फलां आदमी है जो हफसा रजि. का रिजाई (दूध शरीक) चचा है। आइशा रजि. ने पूछा कि फलां आदमी जिन्दा होता जो कि दूध के रिश्ते में मेरा चचा है तो क्या वो मेरे पास यूं आ सकता है? आपने फरमाया, हां! जो रिश्ते नस्ब से हराम हैं, वो दूध पीने से भी हराम हो जाते हैं।

फायदे: रिजाअत (दूध पिलाने) के बारे में कायदा यह है कि दूध पिलाने वाली के तमाम रिश्तेदार दूध पीने वाले के महरम हो जाते हैं। लेकिन दूध पीने वाले की तरफ से वो खुद या उसकी औलाद महरम होती है। उसका बाप भाई, चचा और मामू वगैरह दूध पिलाने वाली के लिए महरम नहीं होंगे। (फतहुलबारी 9/141)

١٨٤٠ : عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ بِنْتِ أَبِي سُفْيَانَ - رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا - قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنْكِحْ أُخْتِي بِنْتَ أَبِي سُفْيَانَ، فَقَالَ: (أَوَ تُحِبِّينَ ذٰلِكِ؟). فَقُلْتُ: نَعَمْ، لَسْتُ لَكَ بِمُخْلِيَةٍ، وَأَحَبُّ مَنْ شَارَكَنِي فِي خَيْرٍ أُخْتِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ ذٰلِكِ لاَ يَحِلُّ لِي). قُلْتُ: فَإِنَّا نُحَدَّثُ أَنَّكَ تُرِيدُ أَنْ تَنْكِحَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ؟ قَالَ: (بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، فَقَالَ: (لَوْ أَنَّهَا لَمْ تَكُنْ رَبِيبَتِي فِي حَجْرِي مَا حَلَّتْ لِي، إِنَّهَا لاَبْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ، أَرْضَعَتْنِي وَأَبَا سَلَمَةَ ثُوَيْبَةُ، فَلاَ

1840: उम्मे हबीबा दुख्तर अबू सुफियान रजि. से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मेरी बहन दुख्तर अबू सुफियान से निकाह कर लें। आपने फरमाया, क्या तू यह पसन्द करती है? मैंने कहा, हां! अब भी तो मैं आपकी अकेली बीवी नहीं हूँ और क्या मुझे अपनी बहन को खैरो बरकत में अपने शरीक करना गवारा नहीं है? आपने फरमाया, वो मेरे लिए हलाल नहीं। मैंने कहा, हमने सुना है कि आप अबू सलमा रजि. की बेटी से निकाह करना चाहते

تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ). [رواه البخاري: ٥١٠١]

हैं। आपने पूछा, वो जो उम्मे सलमा रजि. के पेट से है? मैंने कहा, हां! आपने फरमाया, अगर वो मेरी रबीबा (मेरी गोद में पली) न होती तब भी मेरे लिए हलाल न थी, क्योंकि वो दूध के रिश्ते से मेरी भतीजी है। मुझे और अबू सलमा रजि. को सौयबा ने दूध पिलाया था। देखो, मुझे अपनी बेटियों और बहनों से निकाह की पेशकश न किया करो।

फायदे: जिस औरत से निकाह किया जाये, उसकी बेटी जो पहले खाविन्द से हो, फक्त निकाह करने से हराम हो जाती है। चाहे उसने सौतेले बाप के घर में परवरीश पाई हो या ना पाई हो। अगरचे कुरआन मजीद में परवरिश का जिक्र है, लेकिन यह सिर्फ रिश्ते की नजाकत जाहिर करने के लिए हैं।

٨ - باب: مَنْ قال لا رِضاع بَعْد حَوْلَيْنِ لِقوله تَعالَى: ﴿حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ﴾ وما يُحَرِّمُ مِنْ قَلِيلِ الرَّضاعِ وَكَثِيرِه

बाब 8: उस आदमी की दलील जो कहता है कि दो साल के बाद रिजाअत (दूध पिलाने) का कोई ऐतबार नहीं, क्यों कि फरमाने इलाही है "मायें अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें, यह उस आदमी के लिए है जो मुद्दत रिजाअत पूरा करना चाहता हो" निज रिजाअत ज्यादा हो या कम, उससे हराम होना साबित हो जाता है।

١٨٤١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا رَجُلٌ، فَكَأَنَّهُ تَغَيَّرَ وَجْهُهُ، كَأَنَّهُ كَرِهَ ذٰلِكَ، فَقَالَتْ: إِنَّهُ أَخِي، فَقَالَ: (ٱنْظُرْنَ مَنْ إِخْوَانُكُنَّ، فَإِنَّمَا الرَّضَاعَةُ مِنَ الْمَجَاعَةِ). [رواه

1841: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ लाये तो उस वक्त एक आदमी उनके पास बैठा था। यह देखकर आप का चेहरा मुबारक

[البخاري: ٥١٠٢]

बदल गया। आप पर यह नागवार गुजरा। आइशा रजि. ने कहा, यह मेरा दूध शरीक भाई है। आपने फरमाया, गौरो-फिक्र करो कि तुम्हारा भाई कौन कौन है? उसी दूध पीने का ऐतबार किया जायेगा जो बतौरे गिजा पिया जाये।

फायदेः रिश्तों की हुरमत का ऐतबार ऐसे जमाने में दूध पीने पर होगा, जब दूध पीने पर ही बच्चे की गिजा का निर्भर हो। रिजाअत कबीर (बड़ा होने के बाद दूध पिलाने) का ऐतबार किसी हकीकी जरूरत के वक्त सिर्फ पर्दा न करने या घर आने जाने के बारे में ही किया जा सकता है।

١٨٤٢ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبدِ الله رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ تُنْكَحَ المَرْأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا أَوْ خالَتِهَا. [رواه البخاري: ٥١٠٨]

1842: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना फरमाया कि किसी औरत को उसकी फूफी या खाला के साथ निकाह में जमा किया जाये।

फायदेः दो औरतों को जमा करने की हुरमत के बारे में कायदा यह है कि अगर उनमें एक को मर्द ख्याल करें तो दूसरी उसकी महरम हो, जैसे दो बहनों या फूफी भतीजी और खाला भतीजी का निकाह में जमा करना वगैरह। (फतहुलबारी 5/59)

बाब 9: निकाह शिगार

٩ - باب: الشغار

١٨٤٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الشِّغَارِ. [رواه البخاري: ٥١١٢]

1843: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह शिगार से मना फरमाया है।

फायदेः इस हदीस के आखिर में निकाह शिगार की तारीफ बायस

अल्फाज की गई है कि एक आदमी अपनी बेटी (या बहन) का निकाह इस शर्त पर दूसरे से करे कि वो भी अपनी बेटी (या बहन) का निकाह उससे कर दे और बीच में कोई चीज बतौर हक्के महर न हो। वाजेह रहे कि हक्के महर होने या न होने से कोई असर नहीं पड़ता। असल बात दोनों तरफ से शर्त लगाना है।

बाब 10: आखरी वक्त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह मतआ (कुछ वक्त के लिए किसी औरत से फायदा उठाना) से मना फरमाया है।

١٠ - باب: نَهْيُ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ نِكَاحِ الْمُتْعَةِ أَخِيرًا

1844: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. और सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम एक लश्कर में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास तशरीफ लाये और इरशाद फरमाया कि तुम्हें मुतआ करने की इजाजत है। अगर चाहो तो मुतआ कर लो।

١٨٤٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ وَسَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: كُنَّا فِي جَيْشٍ، فَأَتَانَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ أُذِنَ لَكُمْ أَنْ تَسْتَمْتِعُوا، فَاسْتَمْتِعُوا. [رواه البخاري: ٥١١٧، ٥١١٨]

फायदे: इस हदीस के आखिर में इमाम बुखारी फरमाते हैं कि खुद हजरत अली रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसी हदीस बयान की है जिससे मालूम होता है कि यह इजाजत मनसूख हो चुकी है। चूनाचे सही बुखारी में हजरत अली रजि. की रिवायत (5115) मौजूद है। दरअसल निकाह मुतआ खैबर से पहले जाइज था। फिर खैबर के मौके पर हराम हुआ। उसके बाद खास जरूरत के पैशे नजर फत्तह मक्का के मौके पर इजाजत दी गई। फिर तीन दिन के बाद हमेशा तक के लिए हराम कर दिया गया।

١١ - باب: عَرْضُ المَرْأَةِ نَفْسَهَا عَلَى الرَّجُلِ الصَّالِحِ

बाब 11: औरत का किसी नेक आदमी से अपने निकाह की दरख्वास्त करना।

١٨٤٥ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱمْرَأَةً عَرَضَتْ نَفْسَهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ زَوِّجْنِيهَا، فَقَالَ: (ما عِنْدَكَ؟). قَالَ: ما عِنْدِي شَيْءٌ، قَالَ: (ٱذْهَبْ فَٱلْتَمِسْ وَلَوْ خاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ) فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ، فَقَالَ: لاَ وَٱللهِ ما وَجَدْتُ شَيْئًا وَلاَ خاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ، وَلٰكِنْ هٰذَا إِزَارِي وَلَهَا نِصْفُهُ، قَالَ سَهْلٌ وما لَهُ رِدَاءٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَما تَصْنَعُ بِإِزَارِكَ، إِنْ لَبِسْتَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ وإِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ مِنْهُ شَيْءٌ). فَجَلَسَ الرَّجُلُ حَتَّى إِذَا طَالَ مَجْلِسُهُ قَامَ، فَرَآهُ النَّبِيُّ ﷺ فَدَعَاهُ أَوْ دُعِيَ لَهُ، فَقَالَ لَهُ: (مَاذَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟). فَقَالَ: مَعِي سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا، لِسُوَرٍ يُعَدِّدُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَمْلَكْنَاكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ). [رواه البخاري: ٥١٢١]

1845: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है कि एक औरत ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपने आपको पेश किया तो एक आदमी ने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इसका मुझ से निकाह कर दीजिए। आपने पूछा, तेरे पास (महर देने के लिए) क्या चीज है? उसने कहा, मेरे पास तो कुछ भी नहीं। आपने फरमाया, कुछ तलाश करो। चाहे लोहे की अंगूठी ही क्यों न हो, चूनांचे वो गया और वापिस आकर कहने लगा। अल्लाह की कसम! मुझे तो कुछ भी नहीं मिला। लोहे की एक अंगूठी भी नहीं मिली। अलबत्ता यह तहबन्द मेरे पास है। आधा इसको दे दूं। सहल कहते हैं कि उसके पास औढ़ने के लिए चादर न थी। आपने फरमाया, तू अपनी इजार को क्या करेगा। अगर तुम उसे इस्तेमाल करोगे तो इसके हिस्से में कुछ नहीं आयेगा। और अगर वो इस्तेमाल करेगी तो तुम्हारे हिस्से में कुछ नहीं रहेगा। यह सुनकर वो बैठ गया। जब देर तक बैठा रहा तो मायूस होकर उठा और चला गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे देखा और उसे अपने पास बुलाया

और पूछा, तुझे कुरआन की कौन कौन सी सूरतें याद हैं? उसने कुछ सूरतों के नाम लेकर कहा कि फलां फलां सूरत याद है। आपने फरमाया, हमने उन सूरतों की तालीम के ऐवज यह औरत तेरी निकाह में दे दी।

फायदे: इससे मालूम हुआ कि तालीम कुरआन को हक्के महर ठहराकर किसी औरत से निकाह करना जाइज है। (औनुलबारी 5/64)

बाब 12: औरत को निकाह से पहले देख लेने का बयान।

١٢ - باب: النَّظَرُ إِلَى المَرْأَةِ قَبْلَ التَّزْوِيجِ

١٨٤٦ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّ ٱمْرَأَةً جاءَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، جِئْتُ لِأَهَبَ لكَ نَفْسِي، فَنَظَرَ إِلَيْهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَصَعَّدَ النَّظَرَ إِلَيْهَا وَصَوَّبَهُ، ثُمَّ طَأْطَأَ رَأْسَهُ، فَذَكَرَ الحَدِيثَ، وَقَالَ فِي آخِرِهِ: (أَتَقْرَؤُهُنَّ عَنْ ظَهْرِ قَلْبِكَ). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (ٱذْهَبْ فَقَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ القُرْآنِ).

[رواه البخاري: ٥١٢٦]

1846: सहल बिन साद रजि. से ही रिवायत है कि एक औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं आपको अपना नफ्स हिबा करने आई हूँ। आपने ऊपर तले उस औरत को खूब देखा फिर आपने अपना सर झूका लिया। रावी ने पूरी हदीस (1845) बयान की जिसके आखिर में है, तुझे यह सूरतें जबानी याद हैं? उसने कहा, हां! आपने फरमाया जा मैंने यह औरत इन्हीं सूरत के ऐवज तेरे निकाह में दे दी।

फायदे: कुछ हदीसों में निकाह से पहले अपनी होने वाली बीवी को सरसरी नजर से देख लेने की इजाजत मरवी है। चूनांचे मुस्लिम में है कि एक आदमी ने किसी औरत से निकाह का इरादा किया तो आपने उसे एक नजर देख लेने के बारे में तलकीन फरमाई।

(फतहुलबारी 9/181)

बाब 13: जो कहते हैं कि निकाह वली के बगैर नहीं होता।

١٣ - باب: مَنْ قالَ: لاَ نِكَاحَ إِلَّا بِوَلِيٍّ

1847: मअकिल बिन यसार रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने अपनी बहन की शादी एक आदमी से कर दी। फिर उसने उसे तलाक दे दी। जब उसकी इद्दत पूरी हो गई तो उसने दोबारा निकाह का पैगाम भेजा। मैंने उसे जवाब दिया, मैंने अपनी बहन की तुझ से शादी की और उसे तेरी बीवी बनाकर तेरी ताजीम की थी। मगर तूने उसे तलाक दे दी। अल्लाह की कसम! अब वो दोबारा तुझे नहीं मिल सकती। हालांकि उस आदमी में कोई ऐब नहीं था और मेरी बहन भी चाहती थी कि उसकी बीवी बन जाये। उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी " तुम औरतों के अपने पहले खाविन्द से निकाह पर पाबन्दी न लगाओ।"

١٨٤٧ : عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: زَوَّجْتُ أُخْتًا لِي مِنْ رَجُلٍ فَطَلَّقَهَا، حَتَّى إِذَا ٱنْقَضَتْ عِدَّتُهَا جاءَ يَخْطُبُهَا، فَقُلْتُ لَهُ: زَوَّجْتُكَ وَفَرَشْتُكَ وَأَكْرَمْتُكَ، فَطَلَّقْتَهَا، ثُمَّ جِئْتَ تَخْطُبُهَا، لاَ وَٱللهِ لاَ تَعُودُ إِلَيْكَ أَبَدًا. وَكانَ رَجُلًا لاَ بَأْسَ بِهِ، وَكَانَتِ ٱلْمَرْأَةُ تُرِيدُ أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ هٰذِهِ ٱلآيَةَ: ﴿فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ﴾. فَقُلْتُ: ٱلآنَ أَفْعَلُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قالَ: فَزَوَّجَهَا إِيَّاهُ. [رواه البخاري: ٥١٣٠]

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अब तो मैं उस हुक्म को जरूर पूरा करूंगा। फिर उसने अपनी बहन का निकाह उससे कर दिया।

फायदे: बाज अहादीस में सराहत है कि वली की इजाजत के बगैर निकाह नहीं होता। इस हदीस से भी यही मालूम होता है, क्योंकि हजरत मअकिल रजि. ने अपनी बहन का निकाह उसके पहले वाले खाविन्द से न होने दिया। हालांकि उसकी बहन ऐसा चाहती थी। मालूम हुआ कि निकाह वली के इख्तियार में है। (फतहुलबारी 5/66)

बाब 14: बाप या कोई दूसरा सरपरस्त कुंआरी या शौहरदीदा का निकाह उसकी रजामन्दी के बगैर नहीं कर सकता।

١٤ - باب: لا يُنكِحُ الأبُ وَغَيرُهُ الْبِكْرَ وَالثَّيِّبَ إِلَّا بِرِضاهما

1848: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बेवा का निकाह उसकी इजाजत के बगैर न किया जाये। इसी तरह कुआंरी का निकाह भी उसकी इजाजत के बगैर न किया जाये। सहाबा किराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कुंआरी इजाजत कैसे देगी? आपने फरमाया, उसकी इजाजत यही है कि वो सुनकर खामोश हो जाये।

١٨٤٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قالَ: (لاَ تُنكَحُ الأَيِّمُ حَتَّى تُسْتَأْمَرَ، وَلاَ تُنكَحُ الْبِكْرُ حَتَّى تُسْتَأْذَنَ). قالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَكَيْفَ إِذْنُهَا؟ قالَ: (أَنْ تَسْكُتَ). [رواه البخاري: ٥١٣٦]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शौहरदीदा के लिए अम्र और कुंवारी के लिए इजन का लफ्ज इस्तेमाल किया है। अम्र से मुराद यह है कि वो जबान से खुले तौर अपनी मर्जी का इजहार करे, जबकि इजन में जुबान से सिराहत जरूरी नहीं, बल्कि उसकी खामोशी को ही रजा के बराबर करार दिया गया है। (फतहुलबारी 5/67)

1849: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कुंआरी लड़की तो शर्म करती है, आपने फरमाया, उसका खामोश हो जाना बजाये खुद रजामन्दी है।

١٨٤٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ الْبِكْرَ تَسْتَحِي؟ قالَ: (رِضَاهَا صَمْتُهَا). [رواه البخاري: ٥١٣٧]

फायदे: कुंआरी अगर पूछने पर खामोश न रहे, बल्कि सराहतन इनकार कर दे तो निकाह जाईज न होगा। कुछ ने यह भी कहा कि कुंवारी को

इस बात का इल्म होना चाहिए कि उसकी खामोशी ही उसका इजन है। (फतहुलबारी 9/193)

---

١٥ - باب: إذا زَوَّجَ الرَّجُلُ ابْنَتَهُ وَهِيَ كَارِهَةٌ فَنِكَاحُهُ مَرْدُودٌ

बाब 15: अगर बेटी की रजामन्दी के बगैर निकाह कर दिया जाये तो वो नाजाइज है।

١٨٥٠ : عَنْ خَنْسَاءَ بِنْتِ خِذَامٍ الأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ أَبَاهَا زَوَّجَهَا وَهِيَ ثَيِّبٌ فَكَرِهَتْ ذٰلِكَ، فَأَتَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَرَدَّ نِكَاحَهُ. [رواه البخاري: ٥١٣٨]

1850: खनसा बिन्ते खिदाम रजि. कहती हैं कि उनके बाप ने उनका निकाह कर दिया और वो शौहरदीदा थीं। और यह दूसरा निकाह उसे नापसन्द था। आखिरकार वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई तो आपने उसके बाप का किया हुआ निकाह खत्म करने का इख्तियार दे दिया।

फायदे: अगरचे हदीस में शौहरदीदा लड़की का जिक्र है, फिर भी हुक्म आम है कि औरत की मर्जी के खिलाफ निकाह जाइज नहीं है। (फतहुलबारी 5/70)

---

١٦ - باب: لا يَخْطُبُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ حَتَّى يَنْكِحَ أَوْ يَدَعَ

बाब 16: कोई मुसलमान अपने भाई के पैमागे निकाह पर पैगाम न भेजे जब तक कि वो निकाह करे या उसका ख्याल छोड़ दे।

١٨٥١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: (نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَبِيعَ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلاَ يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ، حَتَّى يَتْرُكَ الخَاطِبُ قَبْلَهُ أَوْ يَأْذَنَ لَهُ الخَاطِبُ). [رواه البخاري: ٥١٤٢]

1851: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना फरमाया है कि कोई आदमी किसी दूसरे आदमी के सौदे पर सौदा करे। इसी तरह कोई

आदमी अपने मुसलमान भाई के पैगाम पर अपने लिए पैगामें निकाह न दे। जब तक कि पहला आदमी उस जगह निकाह का इरादा छोड़ दे या उसे पैगाम देने की इजाजत दे दे।

फायदे: मंगनी पर मंगनी करने की एक सूरत तो हदीस में मजकूर है, एक सूरत यह भी है कि अगर पैगामे निकाह देने वाले को मालूम हो कि किसी दूसरे आदमी का पैगाम आने वाला है, जिसके साथ लड़की वाला खुशी खुशी निकाह करेगा, तब भी पैगामे निकाह नहीं भेजना चाहिए। यह तब है जब पैगाम देने वालो की बात पक्की हो गई हो।

 (फतहुलबारी 9/201)

बाब 17: उन शर्तो का बयान जिनका निकाह के वक्त तय करना जाइज नहीं।

١٧ - باب: الشُّرُوطُ الَّتِي لَا تَحِلُّ فِي النِّكَاحِ

1852: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी औरत के लिए रवा नहीं कि वो अपनी मुसलमान बहन के लिए तलाक का सवाल करे ताकि उसके हिस्से का प्याला भी खुद उढ़ेल ले। क्योंकि उसकी तकदीर में जो होगा, वही मिलेगा।

١٨٥٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَا يَحِلُّ لِامْرَأَةٍ تَسْأَلُ طَلَاقَ أُخْتِهَا، لِتَسْتَفْرِغَ صَحْفَتَهَا، فَإِنَّمَا لَهَا مَا قُدِّرَ لَهَا). [رواه البخاري: ٥١٥٢]

फायदे: निकाह के वक्त नाजाइज शर्त लगाना सही नहीं, मसलन निकाह के वक्त शर्त लगाना कि दूसरी शादी नहीं करूंगा या औरत की तरफ से शर्त हो कि पहली बीवी को तलाक देगा। ऐसी शर्तो का पूरा करना जरूरी नहीं है। (फतहुलबारी 9/219)

बाब 18: जो औरतें खैरो बरकत की दुआओं के साथ दुल्हन को दुल्हा के

١٨ - باب: النِّسْوَةُ اللَّاتِي يُهْدِينَ الْمَرْأَةَ إِلَى زَوْجِهَا وَدُعَائِهِنَّ بِالْبَرَكَةِ

लिए पेश करें, उनका क्या हक है?

1853: आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने एक अनसारी दुल्हा के लिए उसकी दुल्हन को तैयार किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ आइशा रजि.! क्या तुम्हारे साथ कोई खेल कूद का सामान न था? क्योंकि अनसारी लोग गाने बजाने से खुश होते हैं।

١٨٥٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا : أَنَّها زَفَّتِ ٱمْرَأَةً إِلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ نَبِيُّ ٱللهِ ﷺ : (يَا عائِشَةُ، ما كانَ مَعَكُمْ لَهْوٌ؟ فَإِنَّ الأَنْصَارَ يُعْجِبُهُمُ اللَّهْوُ). [رواه البخاري: ٥١٦٢]

फायदे: एक रिवायत के मुताबिक हजरत आइशा रजि. का बयान है कि मैं एक यतीम बच्ची की शादी में दुल्हन के साथ गई। जब वापिस आई तो आपने पूछा कि तुमने दुल्हे वालों के पास जाकर क्या कहा। हमने कहा कि सलाम कहा और मुबारकबाद दी। (फतहुलबारी 9/225)

बाब 19: खाविन्द जब अपनी बीवी के पास आये तो क्या कहे।

١٩ - باب: مَا يَقُولُ الرَّجُلُ إِذَا أَتَى أَهْلَهُ

1854: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर कोई अपनी बीवी के पास आते वक्त बिस्मिल्लाह कहे और यह दुआ पढ़े, ऐ अल्लाह मुझे शैतान से दूर रख और जो औलाद हमको दे, शैतान को उससे भी दूर रख। तो उनके यहां जो बच्चा पैदा होगा, उसे शैतान कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा।

١٨٥٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَمَا لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ يَقُولُ حِينَ يَأْتِي أَهْلَهُ: بِٱسْمِ ٱللهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبْنِي الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ ما رَزَقْتَنَا، ثُمَّ قُدِّرَ بَيْنَهُمَا فِي ذٰلِكَ، أَوْ قُضِيَ بَيْنَهُما وَلَدٌ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا). [رواه البخاري: ٥١٦٥]

फायदे: मालूम हुआ कि अल्लाह का जिक्र करना चाहिए और हर वक्त अल्लाह तआला से शैतान मरदूद की पनाह मांगते रहना चाहिए। क्योंकि

शैतान हर वक्त इन्सान के साथ रहता है। सिर्फ अल्लाह के जिक्र के वक्त उससे दूर हट जाता है। (फतहुलबारी 9/229)

बाब 20: वलीमे में एक बकरी भी काफी है।

٢٠ - باب: الْوَلِيمَةُ وَلَوْ بِشَاةٍ

1855: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी किसी बीवी का ऐसा वलीमा नहीं किया जैसा कि उम्मे मौमिनीन जैनब रजि. का किया था। उनकी दावते वलीमा में एक बकरी को जिब्ह किया गया।

١٨٥٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: ما أَوْلَمَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَيْءٍ مِنْ نِسَائِهِ ما أَوْلَمَ عَلَى زَيْنَبَ، أَوْلَمَ بِشَاةٍ. [رواه البخاري: ٥١٦٨]

फायदे: इस हदीस से कुछ लोगों ने यह साबित किया है कि वलीमे की ज्यादा से ज्यादा हद एक बकरी है। लेकिन सही यह है कि अकसर की कोई हद नहीं। जरूरत के मुताबिक जितना दरकार हो, उतना ही तैयार किया जा सकता है। (फतहुलबारी 5/237)

बाब 21: एक बकरी से कम का वलीमा करना भी जाइज है।

٢١ - باب: مَنْ أَوْلَمَ بِأَقَلَّ مِنْ شَاةٍ

1856: सफिया बिन्ते शैबा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी कुछ बीवियों का वलीमा दो मुद जौ से किया था।

١٨٥٦ : عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: أَوْلَمَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ بِمُدَّيْنِ مِنْ شَعِيرٍ. [رواه البخاري: ٥١٧٢]

फायदे: रिवायत में ऐसे इरशाद मिलते हैं कि इस किस्म का वलीमा हजरत उम्मे सलमा रजि. से निकाह के वक्त किया गया था। मुमकिन है कि इससे मुराद अफराद खाना में किसी औरत का वलीमा हो जैसा

कि हजरत अली रजि. ने भी बड़ी सादगी से वलीमा किया था।
(फतहुलबारी 9/240)

बाब 22: दावते वलीमे का कबूल करना जरूरी है। निज अगर कोई सात दिन तक दावते वलीमा खिलाये तो जाइज है।

٢٢ - باب: حَقِّ إِجابَةِ الوَلِيمَة وَالدَّعْوَةِ وَمَنْ أَوْلَمَ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَنَحْوَهُ

1857: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर किसी को दावते वलीमा पर बुलाया जाये तो उसमें जरूर शरीक होना चाहिए।

١٨٥٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَر رضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْوَلِيمَة فَلْيَأْتِهَا). [رواه البخاري: ٥١٧٣]

फायदे: एक रिवायत में है कि पहले दिन दावते वलीमा जरूरी, दूसरे दिन जाइज और तीसरे दिन रियाकारी है। इमाम बुखारी इस ख्याल की तरदीद करते हैं कि ऐसी रिवायात सही नहीं हैं। और न ही दावते वलीमे के लिए दिनों की हदबन्दी सही है। (फतहुलबारी 9/243) मुख्तलिफ दोस्त अहबाब को मुख्तलिफ दिनों में दावते वलीमा खिलाई जा सकती है।

बाब 23: औरतों से अच्छा बर्ताव करने की वसीयत।

٢٣ - باب: الوَصَاةِ بِالنِّسَاء

1858: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी अल्लाह पर ईमान और कयामत पर यकीन रखता है, उसे चाहिए कि अपने हमसाये को तकलीफ न दे। निज

١٨٥٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (مَنْ كانَ يُؤْمِنُ بِٱللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلا يُؤْذِ جارَهُ، وَٱسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، فَإِنَّهُنَّ خُلِقْنَ مِنْ ضِلَعٍ، وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلاهُ، فَإِنْ ذَهَبْتَ تُقِيمُهُ كَسَرْتَهُ، وَإِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ

يَزَلْ أَعْوَجَ، فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا). [رواه البخاري: ٥١٨٦]

औरतों से अच्छा सलूक करते रहो, क्योंकि औरतों की पैदाईश पसली से हुई है और पसली का सबसे टेढ़ा हिस्सा ऊपर वाला होता है। अगर तुम उसे सीधा करना चाहोगे तो उसे तोड़ डालोगे और अगर ऐसे ही रहने दोगे तो वैसी ही टेढ़ी रहेगी। इसलिए औरतों की खैर ख्वाही के सिलसिले में वसीयत कबूल करो।

फायदेः ऊपर वाले हिस्से से मुराद सर है कि उस हिस्से में जबान होती है जो दूसरों के लिए तकलीफ पहुंचाने का जरीया है। मुस्लिम की रिवायत में है कि उस टेढ़ी पसली को तोड़ने से मुराद उसे तलाक देना है।

٢٤ - باب: حُسْنُ المُعَاشَرَةِ مَعَ الأَهْلِ

बाब 24: अपने घरवालों के साथ अच्छा सलूक करना।

١٨٥٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: جَلَسَ إِحْدَى عَشْرَةَ امْرَأَةً، فَتَعَاهَدْنَ وَتَعَاقَدْنَ أَنْ لاَ يَكْتُمْنَ مِنْ أَخْبَارِ أَزْوَاجِهِنَّ شَيْئًا، قالَتِ الأُولَى: زَوْجِي لَحْمُ جَمَلٍ غَثٌّ، عَلَى رَأْسِ جَبَلٍ، لاَ سَهْلٍ فَيُرْتَقَى وَلاَ سَمِينٍ فَيُنْتَقَلُ. قالَتِ الثَّانِيَةُ: زَوْجِي لاَ أَبُثُّ خَبَرَهُ، إِنِّي أَخَافُ أَنْ لاَ أَذَرَهُ، إِنْ أَذْكُرْهُ أَذْكُرْ عُجَرَهُ وَبُجَرَهُ. قالَتِ الثَّالِثَةُ: زَوْجِي الْعَشَنَّقُ، إِنْ أَنْطِقْ أُطَلَّقْ وَإِنْ أَسْكُتْ أُعَلَّقْ. قالَتِ الرَّابِعَةُ: زَوْجِي كَلَيْلِ تِهَامَةَ، لاَ حَرٌّ وَلاَ قُرٌّ، وَلاَ مَخَافَةَ وَلاَ سَآمَةَ. قالَتِ الْخَامِسَةُ: زَوْجِي إِنْ دَخَلَ فَهِدَ، وَإِنْ خَرَجَ أَسِدَ، وَلاَ

1859: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि ग्यारह औरतें बैठी। उन्होंने आपस में यह वादा किया कि अपने अपने शौहरों के बारे में एक दूसरे से कोई बात न छुपायेंगी। चूनांचे पहली औरत ने कहा, मेरे खाविन्द की मिसाल दुबले ऊंट के ऐसे गोश्त की सी है जो पहाड़ की चोटी पर रखा हो। न तो उस तक पहुंचने का रास्ता आसान है और न वो गोश्त ऐसा मोटा ताजा है कि कोई उसे वहां से उड़ा लाने की तकलीफ गवारा करे।

दूसरी औरत ने कहा, मैं अपने

يَسْأَلَ عَمَّا عَهِدَ. قَالَتِ السَّادِسَةُ: زَوْجِي إِنْ أَكَلَ لَفَّ، وَإِنْ شَرِبَ اشْتَفَّ، وَإِنِ اضْطَجَعَ الْتَفَّ، وَلَا يُولِجُ الْكَفَّ لِيَعْلَمَ الْبَثَّ. قَالَتِ السَّابِعَةُ: زَوْجِي غَيَايَاءُ، أَوْ عَيَايَاءُ، طَبَاقَاءُ، كُلُّ دَاءٍ لَهُ دَاءٌ، شَجَّكِ أَوْ فَلَّكِ أَوْ جَمَعَ كُلًّا لَكِ. قَالَتِ الثَّامِنَةُ: زَوْجِي الْمَسُّ مَسُّ أَرْنَبٍ، وَالرِّيحُ رِيحُ زَرْنَبٍ. قَالَتِ التَّاسِعَةُ: زَوْجِي رَفِيعُ الْعِمَادِ، طَوِيلُ النِّجَادِ، عَظِيمُ الرَّمَادِ، قَرِيبُ الْبَيْتِ مِنَ النَّادِ. قَالَتِ الْعَاشِرَةُ: زَوْجِي مَالِكٌ وَمَا مَالِكٌ، مَالِكٌ خَيْرٌ مِنْ ذٰلِكَ، لَهُ إِبِلٌ كَثِيرَاتُ الْمَبَارِكِ، قَلِيلَاتُ الْمَسَارِحِ، وَإِذَا سَمِعْنَ صَوْتَ الْمِزْهَرِ، أَيْقَنَّ أَنَّهُنَّ هَوَالِكُ. قَالَتِ الْحَادِيَةَ عَشْرَةَ: زَوْجِي أَبُو زَرْعٍ، فَمَا أَبُو زَرْعٍ؟ أَنَاسَ مِنْ حُلِيٍّ أُذُنَيَّ، وَمَلَأَ مِنْ شَحْمٍ عَضُدَيَّ، وَبَجَّحَنِي فَبَجِحَتْ إِلَيَّ نَفْسِي، وَجَدَنِي فِي أَهْلِ غُنَيْمَةٍ بِشِقٍّ، فَجَعَلَنِي فِي أَهْلِ صَهِيلٍ وَأَطِيطٍ، وَدَائِسٍ وَمُنَقٍّ، فَعِنْدَهُ أَقُولُ فَلَا أُقَبَّحُ، وَأَرْقُدُ فَأَتَصَبَّحُ، وَأَشْرَبُ فَأَتَقَنَّحُ. أُمُّ أَبِي زَرْعٍ، فَمَا أُمُّ أَبِي زَرْعٍ؟ عُكُومُهَا رَدَاحٌ، وَبَيْتُهَا فَسَاحٌ. ابْنُ أَبِي زَرْعٍ، فَمَا ابْنُ أَبِي زَرْعٍ؟ مَضْجَعُهُ كَمَسَلِّ شَطْبَةٍ، وَيُشْبِعُهُ ذِرَاعُ الْجَفْرَةِ. بِنْتُ

खाविन्द की बात जाहिर नहीं कर सकती। मुझे डर है कि मैं सब बयान न कर सकूंगी। अगर मैं उसके बारे में कुछ बयान करूंगी तो उसके जाहिरी और छुपे हुए तमाम ऐब बयान कर दूंगी। तीसरी ने कहा, मेरा खाविन्द बे ढ़प लम्बा और बदमिजाज है। अगर मैं उसके बारे में बात करती हूँ तो मुझे तलाक मिल जायेगी और अगर चुप रहती हूँ तो मुझे लटकी हुई छोड़ देगा।

चौथी औरत ने कहा, मेरा खाविन्द तो तहामा की रात की तरह है। न गर्म, न ठण्डा, न उससे किसी तरह का खौफ है और न रंज (यह उसकी तारीफ है कि वो अच्छे मिजाज और उम्दा अख्लाक का हामिल है।)

पांचवी औरत ने कहा, मेरा खाविन्द जब घर होता है तो चीते की तरह और जब बाहर होता है तो शेर की तरह होता है। और जो माल व असबाब घर में छोड़ जाता है, उसके बारे में कुछ नहीं पूछता।

छटी औरत ने कहा, मेरा खाविन्द जब खाने पर आता है तो सब कुछ चट कर जाता है और अगर पीता है तो तलछट तक चढ़ा जाता है। जब सोता

أَبِي زَرْعٍ، فَمَا بِنْتُ أَبِي زَرْعٍ؟ طَوْعُ أَبِيهَا، وَطَوْعُ أُمِّهَا، وَمِلْءُ كِسَائِهَا، وَغَيْظُ جَارَتِهَا. جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ، فَمَا جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ؟ لاَ تَبُثُّ حَدِيثَنَا تَبْثِيثًا، وَلاَ تُنَقِّثُ مِيرَتَنَا تَنْقِيثًا، وَلاَ تَمْلأُ بَيْتَنَا تَعْشِيشًا. قَالَتْ: خَرَجَ أَبُو زَرْعٍ وَالأَوْطَابُ تُمْخَضُ، فَلَقِيَ امْرَأَةً مَعَهَا وَلَدَانِ لَهَا كَالْفَهْدَيْنِ، يَلْعَبَانِ مِنْ تَحْتِ خَصْرِهَا بِرُمَّانَتَيْنِ، فَطَلَّقَنِي وَنَكَحَهَا، فَنَكَحْتُ بَعْدَهُ رَجُلاً سَرِيًّا، رَكِبَ شَرِيًّا، وَأَخَذَ خَطِّيًّا، وَأَرَاحَ عَلَيَّ نَعَمًا ثَرِيًّا، وَأَعْطَانِي مِنْ كُلِّ رَائِحَةٍ زَوْجًا، وَقَالَ: كُلِي أُمَّ زَرْعٍ، وَمِيرِي أَهْلَكِ، قَالَتْ: فَلَوْ جَمَعْتُ كُلَّ شَيْءٍ أَعْطَانِيهِ، مَا بَلَغَ أَصْغَرَ آنِيَةِ أَبِي زَرْعٍ. قَالَتْ عَائِشَةُ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: (كُنْتُ لَكِ كَأَبِي زَرْعٍ لأُمِّ زَرْعٍ). [رواه البخاري: ٥١٨٩]

है तो अलग थलक अपने बदन को लपेटकर सोता है और मुझ पर हाथ नहीं डालता। ताकि किसी का दुख दर्द मालूम कर सके।

सातवीं औरत ने कहा, मेरा खाविन्द नामर्द है या बदमाश और ऐसा बेवकूफ है कि बातचीत करना नहीं जानता। दुनिया भर की बीमारियां उसमें हैं। जालिम ऐसा है कि या तो तेरा सर फोड़ देगा या हाथ तोड़ देगा या सर और हाथ दोनों मरोड़ देगा।

आठवीं औरत ने कहा, मेरा खाविन्द छूने में खरगोश की तरह नर्म व नाज़ुक और उसकी खुशबू जाफरान की खुशबू की तरह है।

नवीं औरत ने कहा, मेरा खाविन्द ऊंचे सतूनों (महलात) वाला, लम्बे परतले वाला (बहादुर), बहुत ज्यादा राख वाला (सखी) और उस का घर मशवरा गाह के नजदीक है (यानी वो सरदार, बहादुर और सखी है।)

दसवीं ने कहा, मेरा ख़ाविन्द का नाम मालिक है, लेकिन ऐसा मालिक? ओर ऐसा मालिक कि उससे बेहतर कोई मालिक नहीं है। उसके ऊंट ज्यादा ऊंटखाने में बैठते हैं और चरागाह में चरने के लिए हम जाते हैं। उसके ऊंट जब बाजे की आवाज सुन लेते हैं तो यकीन कर लेते हैं कि अब उनके हलाक होने का वक्त करीब आ गया है। ग्यारवी औरत ने कहा, मेरे खाविन्द का नाम अबू जरअ है और अबू

जरअ के क्या कहने, उसने मेरे दोनों कानों को जेवरात से बोझल कर दिया और मेरे दोनों बाजूओं को चर्बी से भर दिया है और उसने मुझे इतना खुश किया है कि मैं खुद पर नाज करने लगी हूँ। मुझे एक तरफ पड़े हुए गरीब चरवाहों से ले आया था। लेकिन उसने मुझे घोड़ों, ऊंटों, खेत और खलिहानों का मालिक बना दिया। मैं उसके सामने बात करती हूँ तो मुझे बुरा नहीं कहता। सोती हूँ तो सुबह तक सोती रहती हूँ और पीती हूँ तो सैराब हो जाती हूँ और अबू जरअ की मां भी क्या खूब मां है? जिसके घर बड़े बड़े और अबू जरअ का घर कुशादा है। बेटा भी क्या खूब बेटा है, जिसकी ख्वाबगाह गोया तलवार की मयान। बकरी का एक बाजू खाकर पेट भर लेता है। अबू जरअ की बेटी भी क्या बेटी है! अपने वाल्देन की फरमां बरदार अपने लिबास को पूरा भर देने वाली और अपनी पड़ौसन के लिए बायस रंज व हस्द, अबू जरअ की लौण्डी भी क्या लौण्डी है जो न तो हमारी बात इधर उधर फैलाती है और न हमारे खुराक के जखीरे को कम करती है। और न हमारे घर को कूड़ा करकट से अलूदा रखती है। उम्मे जरअ ने बयान किया कि एक दिन अबू जरअ घर से ऐसे वक्त निकला जब मश्कों में भरे दूध से मक्खन निकाला जा रहा था। और उसकी मुलाकात एक ऐसी औरत से हुई जिसके दो बच्चे थे। जो चीतों की तरह उसके जैरे बगल दो अनारों यानी पिस्तानों से खेल रहे थे। फिर अबू जरअ ने मुझे तलाक देकर उस औरत से निकाह कर लिया तो मैंने भी एक शरीफ आदमी से शादी कर ली, जो अरबी घोड़े पर सवार होता और खत्ती निजा हाथ में रखता था। उसने मुझ पर बेशुमार नैमतें न्यौछावर कीं और हर सामान राहत का जोड़ा जोड़ा दिया और उसने मुझ से कहा, ऐ उम्मे जरअ, खुद भी खा और अपने रिश्तेदारों को भी खिला।

उम्मे जरअ का बयान है कि उस खाविन्द ने मुझे जो कुछ दिया, वो सब का सब अबू जअर के एक छोटे बर्तन को नहीं पहुंच सकता।

आइशा रजि. बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया, मैं भी तेरे लिए ऐसा हूँ जैसा कि अबू जरअ, उम्मे जरअ के लिए था।

फायदेः एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अबू जरअ ने तो उम्मे जरअ को तलाक दी थी, जबकि मैं ऐसा नहीं करूंगा। इस पर हजरत आइशा रजि. ने जवाब दिया कि मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, आप तो अबू जरअ से भी बढ़कर मुझ से अच्छा सलूक और मुहब्बत से पेश आते हैं। (फतहुलबारी 9/275)

बाब 25: औरत निफ्ली रोजा खाविन्द की इजाजत से रखे।

٢٥ - باب: صَوْمُ المَرْأَةِ بِإِذْنِ زَوْجِهَا تَطَوُّعًا

1860: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, औरत के लिए जाइज नहीं है कि अपने खाविन्द की मौजूदगी में उसकी इजाजत के बगैर रोजा रखे और न ही उसकी मर्जी के बगैर किसी अजनबी को घर में आने दे और जो औरत अपने खाविन्द की इजाजत के बगैर खर्च करती है, तो उसका आधा सवाब खाविन्द को अदा किया जायेगा।

١٨٦٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يَحِلُّ لِلْمَرْأَةِ أَنْ تَصُومَ وَزَوْجُهَا شَاهِدٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ، وَلاَ تَأْذَنَ فِي بَيْتِهِ إِلَّا بِإِذْنِهِ، وَمَا أَنْفَقَتْ مِنْ نَفَقَةٍ عَنْ غَيْرِ أَمْرِهِ فَإِنَّهُ يُؤَدَّىٰ إِلَيْهِ شَطْرُهُ). [رواه البخاري: ٥١٩٥]

फायदेः सोम रमजान के लिए खाविन्द की इजाजत जरूरी नहीं, यह सिर्फ नफ्ली रोजों से मुताअल्लिक है। चूनांचे एक हदीस में इसकी वजाहत है कि खाविन्द का बीवी पर हक है कि वो निफ्ली रोजा उसकी इजाजत के बगैर न रखे। अगर उसने खिलाफवर्जी की तो उसका रोजा कबूल न होगा। (फतहुलबारी 9/296)

बाब 26:

٢٦ - باب

1861: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मैं जन्नत के दरवाजे पर खड़ा हुआ क्या देखता हूँ कि उसमें ज्यादातर मोहताज और कमजोर थे और मालदारों को दरवाजे पर रोक दिया गया है। लेकिन दोजखी मालदारों को तो पहले ही जहन्नम में भेजने का हुक्म दिया गया था। फिर मैंने दोजख के दरवाजे पर खड़े होकर देखा तो उसमें ज्यादातर औरतें थी।

١٨٦١ : عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (قُمْتُ عَلَى بَابِ الجَنَّةِ، فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا المَسَاكِينُ، وَأَصْحَابُ الجَدِّ مَحْبُوسُونَ، غَيْرَ أَنَّ أَصْحَابَ النَّارِ قَدْ أُمِرَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ، وَقُمْتُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا النِّسَاءُ). [رواه البخاري: ٥١٩٦]

फायदे: यह बाब पहले बाब की तकमील है, क्योंकि उसमें वो सजा बयान की गई है जो पहले बाब में बयानशुदा मामलात की खिलाफवर्जी की सूरत में औरतों को कयामत के दिन दी जायेगी। (फतहुलबारी 9/298)

बाब 27: सफर में साथ ले जाने के लिए बैगमों के बीच पर्ची करना।

٢٧ - باب: القُرْعَةُ بَيْنَ النِّسَاءِ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا

1862: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर के लिए तशरीफ ले जाते तो अपनी बीवियों के बीच पर्ची डालते। एक सफर में आइशा और हफ्सा रजि. दोनों के नाम पर्ची निकली तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल होता था कि सफर करते तो आइशा रजि. के साथ बातें करते रहते थे। एक बार हफ्सा

١٨٦٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ، فَطَارَتِ القُرْعَةُ لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا كَانَ بِاللَّيْلِ سَارَ مَعَ عَائِشَةَ يَتَحَدَّثُ، فَقَالَتْ حَفْصَةُ: أَلَا تَرْكَبِينَ اللَّيْلَةَ بَعِيرِي وَأَرْكَبُ بَعِيرَكِ، تَنْظُرِينَ وَأَنْظُرُ؟ فَقَالَتْ: بَلَى، فَرَكِبَتْ، فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى جَمَلِ عَائِشَةَ

وَعَلَيْهِ حَفْصَةُ، فَسَلَّمَ عَلَيْهَا، ثُمَّ سَارَ حَتَّى نَزَلُوا، وَٱفْتَقَدَتْهُ عَائِشَةُ، فَلَمَّا نَزَلُوا جَعَلَتْ رِجْلَيْهَا بَيْنَ الإِذْخِرِ وَتَقُولُ: يَا رَبِّ سَلِّطْ عَلَيَّ عَقْرَبًا أَوْ حَيَّةً تَلْدَغُنِي، وَلاَ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقُولَ لَهُ شَيْئًا. [رواه البخاري: ٥٢١١]

रजि. ने आइशा रजि. से कहा, तुम ऐसा करो कि आज रात तुम मेरे ऊंट पर बैठो और मैं तुम्हारे ऊंट पर बैठती हूं ताकि मैं तुम्हारे ऊंट का तमाशा देखूं। और तुम मेरे ऊंट को मुलाहिजा करो। आइशा रजि. ने इस पेशकश को कबूल कर लिया और उसके ऊंट पर सवार हो गई। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आइशा रजि. के ऊंट की तरफ आये तो उस पर हफ्सा रजि. तशरीफ फरमा रही थीं। आप ने उन्हें सलाम किया। फिर चलने लगे, फिर जब मन्जिल पर उतरे तो आइशा रजि. ने अपने दोनों पांव इजखिर घास में डाल लिये और कहने लगीं, ऐ अल्लाह! मुझ पर सांप या बिच्छू को मुस्लत कर दे ताकि वो मुझे काट ले, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैं कुछ कह ही नहीं सकती हूँ।

फायदे: चूंकि तीरों के जरीये किस्मत आजमाईश करना मना है। इसलिए लोगों ने पर्ची को भी नाजाईज कहा है, जबकि उसका सबूत कई हदीसों से मिलता है कि अगर कुछ लोग किसी हक में बराबर तौर शरीक हो तो पर्ची के जरिये फैसला किया जा सकता है। (औनुलबारी 5/100)

٢٨ - باب: إِذَا تَزَوَّجَ البِكْرَ عَلَى الثَّيِّبِ

बाब 28: शौहरदीदा की मौजूदगी में कुंवारी से शादी करने का बयान।

١٨٦٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - قَالَ: وَلَوْ شِئْتُ أَنْ أَقُولَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ - وَلٰكِنْ قَالَ: السُّنَّةُ إِذَا تَزَوَّجَ البِكْرَ أَقَامَ عِنْدَهَا سَبْعًا، وَإِذَا تَزَوَّجَ الثَّيِّبَ أَقَامَ عِنْدَهَا ثَلاثًا. [رواه البخاري: ٥٢١٣]

1863: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, अगर मैं चाहूँ तो कह सकता हूँ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मगर अनस रजि. ने फरमाया, सुन्नत यह है कि अगर

कोई आदमी शौहरदीदा की मौजूदगी में कुंआरी से शादी करे तो उसके पास सात दिन रूके और अगर कुंवारी की मौजूदगी में बेवा से शादी करे तो उसके पास तीन दिन तक रूके।

फायदे: सही बुखारी की एक रिवायत में है कि इसके बाद पहले के मामूल के मुताबिक तकसीम की शुरूआत करे। (सही बुखारी 5214)

٢٩ - باب: المُتَشَبِّعُ بِمَا لَمْ يَنَل وَمَا يُنْهَى مِنِ افْتِخَارِ الضَّرَّةِ

बाब 29: औरत का (घमण्ड के तौर पर) बनावटी संवरना और सौतन पर फख करना मना है।

١٨٦٤ : عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ لِي ضَرَّةً، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ إِنْ تَشَبَّعْتُ مِنْ زَوْجِي غَيْرَ ٱلَّذِي يُعْطِينِي؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (المُتَشَبِّعُ بِمَا لَمْ يُعْطَ كَلاَبِسِ ثَوْبَيْ زُورٍ). [رواه البخاري: ٥٢١٩]

1964: असमा रजि. से रिवायत है कि एक औरत ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी एक सौतन है। अगर मैं उसका दिल जलाने के लिए उसके सामने किसी चीज के मिलने का इजहार करूं, जो मेरे खाविन्द ने नहीं दी है, तो क्या मुझ पर गुनाह होगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, न दी हुई चीज को जाहिर करने वाला ऐसा है जैसे किसी ने धोकेबाजी का जोड़ा पहना हो।

फायदे: धोके बाजी का जोड़ा पहनने का मतलब यह है कि सर से पांव तक झूटा और धोकेबाज है या हकीकत के ना पाये जाने और झूठ के इजहार करने जैसी दो बुराई के काबिल दो हालतों का सजावार है। (सही बुखारी 9/318)

٣٠ - باب: الغَيْرَةِ

बाब 30: गैरत का बयान।

١٨٦٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ

1865: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है,

عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (إِنَّ اللهَ يَغَارُ، وَغَيْرَةُ اللهِ أَنْ يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ ما حَرَّمَ اللهُ). [رواه البخاري: ٥٢٢٣]

वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह गैरत करता है और उसे गैरत इस बात पर आती है, जब एक बन्दा मौमिन किसी हराम का इरतेकाब करता है।

फायदे: खलफ ने अल्लाह तआला के लिए गैरत की ताविल की है कि इससे मुराद उस का लाजमी नतीजा यानी सजा देना है और अजाब करना, जबकि सलफ उसकी ताविल नहीं करते, बल्कि उसे हकीकत पर मामूल करते हुए उसकी कैफियत व शक्लो सूरत को अल्लाह के हवाले करते हैं। (औनुलबारी 5/401)

١٩٦٦ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: تَزَوَّجَنِي الزُّبَيْرُ وَما لَهُ فِي الأَرْضِ مِنْ مَالٍ وَلاَ مَمْلُوكٍ، وَلاَ شَيْءٍ غَيْرَ نَاضِحٍ وَغَيْرَ فَرَسِهِ، فَكُنْتُ أَعْلِفُ فَرَسَهُ وَأَسْتَقِي الْمَاءَ، وَأَخْرِزُ غَرْبَهُ وَأَعْجِنُ، وَلَمْ أَكُنْ أُحْسِنُ أَخْبِزُ، وَكَانَ يَخْبِزُ جَارَاتٌ لِي مِنَ الأَنْصَارِ، وَكُنَّ نِسْوَةَ صِدْقٍ، وَكُنْتُ أَنْقُلُ النَّوَى مِنْ أَرْضِ الزُّبَيْرِ الَّتِي أَقْطَعَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى رَأْسِي، وَهِيَ مِنِّي عَلَى ثُلُثَيْ فَرْسَخٍ، فَجِئْتُ يَوْمًا وَالنَّوَى عَلَى رَأْسِي، فَلَقِيتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنَ الأَنْصَارِ، فَدَعَانِي ثُمَّ قَالَ: (إِخْ إِخْ). لِيَحْمِلَنِي خَلْفَهُ، فَاسْتَحْيَيْتُ أَنْ

1966: असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब जुबैर बिन अव्वाम रजि. ने मुझ से निकाह किया तो वो उस वक्त बिल्कुल गरीब थे। उनके पास न रूपया-पैसा था और न लौण्डी गुलाम और न ही कोई और चीज। सिर्फ एक आबकस (पानी खींचने वाला) ऊंट और एक घोड़ा था। मैं खुद ही उसके घोड़े को चारा डालती और पानी पिलाती थी। पानी का डोल भी खुद सेती और आटा भी आप ही गुंधती। अलबत्ता मुझे रोटी अच्छे तरह से पकाना नहीं आती थी तो वो अनसार की नेक सीरत औरतें जो हमारे पड़ौस में रहती

أَسِيرَ مَعَ الرِّجَالِ، وَذَكَرْتُ الزُّبَيْرَ وَغَيْرَتَهُ وَكَانَ أَغْيَرَ النَّاسِ، فَعَرَفَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنِّي قَدِ ٱسْتَحْيَيْتُ فَمَضَى، فَجِئْتُ الزُّبَيْرَ فَقُلْتُ: لَقِيَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَعَلَى رَأْسِي النَّوَى، وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَأَنَاخَ لِأَرْكَبَ، فَٱسْتَحْيَيْتُ مِنْهُ وَعَرَفْتُ غَيْرَتَكَ، فَقَالَ: وَٱللهِ لَحَمْلُكِ النَّوَى كَانَ أَشَدَّ عَلَيَّ مِنْ رُكُوبِكِ مَعَهُ، قَالَتْ: حَتَّى أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ بَعْدَ ذٰلِكَ بِخَادِمٍ يَكْفِينِي سِيَاسَةَ الْفَرَسِ، فَكَأَنَّمَا أَعْتَقَنِي. [رواه البخاري: ٥٢٢٤]

थीं, पका दिया करती थीं। हमारे यहां दो मील के फासले पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुबैर रजि. को कुछ जमीन दी थी। वहां जाती और अपने सर पर खजूरों की गुठलियां उठाकर ला रही थी। एक दिन मैं अपने सर पर गुठलियां उठाकर ला रही थी कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिले और आपके साथ कुछ अनसार भी थे। आपने मुझे आवाज दी। फिर मुझे अपने पीछे बैठाने के लिए अपने ऊंट को इख इख किया, लेकिन मुझे मर्दों के साथ चलने से शर्म आती और मुझे जुबैर रजि. की गैरत भी याद आ गई कि वो बहुत गैरतमन्द थे। मेरी इस हालत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहचान लिया कि मुझे शर्म आती है। इस वजह से आप चल पड़े। फिर जुबैर रजि. के पास आई और तमाम वाक्या बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिले थे। जबकि मेरे सर पर गुठलियों का वजन था और आप के साथ कुछ सहाबी भी थे। आपने मुझे सवार करने के लिए ऊंट को बैठाया तो मुझे शर्म आई और मुझ को तुम्हारी गैरत भी याद आ गई। जुबैर रजि. ने फरमाया कि तुम्हारा सर पर गुठलियां उठाकर लाना आपके साथ सवार होने से मुझे ज्यादा नागवार था। असमा रजि. कहती हैं कि उसके बाद अबू बकर सिद्दीक रजि. ने मेरे पास एक नौकर भेज दिया जो घोड़े की देखभाल करने में मुझे काफी हो गया। गोया उन्होंने (गुलाम भेजकर) मुझे आजाद कर दिया।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि जरूरत के वक्त औरत गैर महरम के साथ सवार हो सकती है। बशर्ते कि तन्हाई न हो, यहां भी तन्हाई न थी, क्योंकि दूसरे सहाबा किराम रजि. आपके साथ थे।

 (फतहुलबारी 9/324)

बाब 31: औरतों की गैरत और गुस्से का बयान।

٣١ - باب: غَيْرَةُ النِّسَاءِ وَوَجْدُهُنَّ

1867: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम मुझ से खुश या नाराज होती हो तो मैं पहचान लेता हूँ। आइशा रजि. का बयान है कि मैंने कहा, आप कैसे पहचान लेते हैं? आपने फरमाया कि जब तुम मुझ से खुश होती हो तो कसम उठाते वक्त यूं कहती हो, नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रब की कसम! और जब तू मुझ से खफा होती है तो कहती हो, नहीं इब्राहिम अलैहि. के रब की कसम। आइशा रजि. फरमाती हैं, मैंने कहा हां! अल्लाह की कसम! ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं सिर्फ आपका नाम ही छोड़ती हूँ (आपकी मुहब्बत नहीं छोड़ती)।

١٨٦٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنِّي لأَعْلَمُ إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً، وَإِذَا كُنْتِ عَلَيَّ غَضْبَى). قَالَتْ: فَقُلْتُ: مِنْ أَيْنَ تَعْرِفُ ذٰلِكَ؟ فَقَالَ: (أَمَّا إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً، فَإِنَّكِ تَقُولِينَ: لاَ وَرَبِّ مُحَمَّدٍ، وَإِذَا كُنْتِ غَضْبَى، قُلْتِ: لاَ وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ). قَالَتْ: قُلْتُ: أَجَلْ وَٱللهِ يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَا أَهْجُرُ إِلَّا ٱسْمَكَ.

[رواه البخاري: ٥٢٢٨]

फायदे: गैरत के बारे में जाबता यह है कि गुनाह और शक की बिना पर गैरत आना अल्लाह को पसन्द है और बिला वजह गैरत आना अल्लाह को नापसन्द है। अगर औरत खाविन्द की बदकारी की वजह से गैरत करे तो यह गैरत जाइज और अल्लाह को पसन्द है।

(फतहुलबारी 9/326)

बाब 32: महरम के अलावा कोई दूसरा औरत से तन्हाई में न हो और न उस औरत के पास कोई जाये, जिसका शौहर गायब हो।

٣٢ - باب: لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إلاَّ ذُو مَحْرَمٍ وَالدُّخُولُ عَلَى المُغِيبَةِ

1868: उकबा बिन आमिर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया औरतों के पास तन्हाई में जाने से परहेज करो। एक अनसारी मर्द ने कहा, आप देवर के बारे में बतायें, क्या हुक्म है? आपने फरमाया, देवर तो मौत है।

١٨٦٨ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عامِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (إِيَّاكُمْ وَٱلدُّخُولَ عَلَى النِّسَاءِ). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَفَرَأَيْتَ الحَمْوَ؟ قالَ: (الحَمْوُ المَوْتُ). [رواه البخاري: ٥٢٣٢]

फायदे: हम्व से मुराद खाविन्द के वो रिश्तेदार हैं जिनका उसकी औरत से निकाह हो सकता है। मसलन खाविन्द का भाई, भतीजा, चचा और मामू वगैरह। लेकिन वो रिश्तेदार जो महरम हैं, वो मुराद नहीं हैं। जैसे खाविन्द का बेटा और बाप वगैरह। (फतहुलबारी 9/331)

बाब 33: कोई औरत किसी औरत से मिलकर उसकी तारीफ अपने शौहर से न करे।

٣٣ - باب: لاَ تُبَاشِرِ المَرْأَةُ المَرْأَةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا

1869: इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कोई औरत दूसरी औरत से मिलकर उसकी तारीफ अपने शौहर से इस तरह न करे, जैसे वो औरत को सामने देख रहा है।

١٨٦٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ تُبَاشِرِ المَرْأَةُ المَرْأَةَ، فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا). [رواه البخاري: ٥٢٤٠]

फायदेः इसमें हिकमत यह है कि ऐसा करने से खाविन्द फितने में पड़ सकता है। मुमकिन है कि वो दूसरी औरत के हुस्नो जमाल के पेशे नजर उसे तलाक दे दे। लिहाजा इस जराये के तौर पर उससे मना फरमा दिया। (फतहुलबारी 9/338)

बाब 34: घर से बाहर गये बहुत ज्यादा वक्त गुजर जाये हो तो अचानक अपने घर रात को न आये।

٣٤ - باب: لا يَطْرُقْ أهْلَهُ لَيْلًا إذَا أطَالَ الغَيْبَةَ

1870: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम्हें घर से गायब रहते बहुत ज्यादा वक्त गुजर जाये तो रात को अपने घर न आया करो।

١٨٧٠ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إذَا أطَالَ أحَدُكُمُ الغَيْبَةَ فَلاَ يَطْرُقْ أهْلَهُ لَيْلًا). [رواه البخاري: ٥٢٤٤]

फायदेः लम्बे सफर के बाद अचानक घर आने से इसलिए मना फरमाया है कि मुबादा अपने घर वालों को कोई तोहमत लगाने या कोई और ऐब तलाश करने का मौका पैदा हो।

1871: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर तुम रात के वक्त घर वापिस आओ तो घर में न जाओ। ताकि वो औरत जिसका खाविन्द गायब था, शर्मगाह के बालों की सफाई कर सके और जिसके बाल बिखरे हुए हैं, वो कंघी करके उन्हें संवार सके।

١٨٧١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إذَا دَخَلْتَ لَيْلًا، فَلا تَدْخُلْ عَلَى أهْلِكَ، حَتَّى تَسْتَحِدَّ المُغِيبَةُ، وَتَمْتَشِطَ الشَّعِثَةُ). [رواه البخاري: ٥٢٤٦]

फायदे: सही इब्ने खुजैमा में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में दो आदमियों ने इस हुक्मे इम्तनाई की खिलाफवर्जी की और रात को अचानक अपने घर आये तो देखा तो उनकी बीवियों के पास दो गैर मर्द मौजूद थे। (फतहुलबारी 9/341)



किताबुत्तलाक

तलाक के बयान में

١٨٧٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهِيَ حائِضٌ، عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَسَأَلَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (مُرْهُ فَلْيُرَاجِعْهَا، ثُمَّ لِيُمْسِكْهَا حَتَّى تَطْهُرَ، ثُمَّ تَحِيضَ ثُمَّ تَطْهُرَ، ثُمَّ إِنْ شَاءَ أَمْسَكَ بَعْدُ، وَإِنْ شَاءَ طَلَّقَ قَبْلَ أَنْ يَمَسَّ، فَتِلْكَ العِدَّةُ الَّتِي أَمَرَ اللهُ أَنْ تُطَلَّقَ لَهَا النِّسَاءُ). [رواه البخاري: ٥٢٥١]

1872: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में अपनी बीवी को हैज की हालत में तलाक दे दी। तो उमर बिन खत्ताब रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके बारे में हुक्म पूछा तो आपने फरमाया, उसे हुक्म दो कि उससे रूजूअ करे। फिर पाक होने तक उसको रोके रखे। फिर जब हैज आये और पाक हो जाये तो उस वक्त उसे इख्तियार है। चाहे तो उसे रोके रखे और चाहे तो हमबिस्तरी करने से पहले तलाक दे दे। यही इद्दत का वक्त है, जिसके बारे में अल्लाह ने फरमाया है कि औरतों को उस वक्त तलाक दी जाये।

फायदेः हैज के दौरान दी हुई तलाक के बारे में इख्तेलाफ है कि वाक्य होगी या नहीं होगी, चारो इमाम और जमहूरे फुकआ के नजदीक यह तलाक शुमार होगी। जबकि इमाम तैमिया और उनके शागिर्द रशीद इमाम इब्ने कईम रह. के नजदीक शुमार न होगी, लेकिन इब्ने उमर रजि. ने खुद ऐतराफ किया है कि हैज के दौरान दी हुई तलाक को

शुमार किया गया। खुद इमाम बुखारी का रूझान भी इसी तरफ है, जैसा कि अगले बाब से मालूम होता है।

---

١ - باب: إذا طُلِّقَت الحَائِضُ تُعْتَدُّ بِذلِكَ الطَّلاَقِ

बाब 1: अगर औरत को हैज के वक्त तलाक दी जाये तो क्या यह तलाक भी शुमारी की जायेगी।

١٨٧٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قال: حُسِبَتْ عَلَيَّ بِتَطْلِيقَةٍ. [رواه البخاري: ٥٢٥٣]

1873: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जो तलाक मैंने हैज की हालत में दी थी, मुझ पर शुमार की गई।

फायदे: हजरत इब्ने उमर रजि. से इसके बारे में मुख्तलिफ रिवायत में हैं अबू दाउद की रिवायत में है कि उसे कोई चीज ख्याल न किया, जो फुकहा हैज के दौरान दी हुई तलाक के वाक्ये के कायल है। वो इस हदीस की ताविल करते हैं, फिर भी सही बुखारी की रिवायत सही है।

---

٢ - باب: مَنْ طَلَّقَ وَهَلْ يُوَاجِهُ امْرَأَتَهُ بِالطَّلاَقِ

बाब 2: तलाक देने का बयान। निज क्या तलाक देते वक्त औरत की तरफ मुतव्वजा होना जरूरी है?

١٨٧٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱبْنَةَ الجَوْنِ، لَمَّا أُدْخِلَتْ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَدَنا مِنْهَا قالَتْ: أَعُوذُ بِٱللهِ مِنْكَ، فَقالَ لَهَا: (لَقَدْ عُذْتِ بِعَظِيمٍ، ٱلْحَقِي بِأَهْلِكِ). [رواه البخاري: ٥٢٥٤]

1874: आइशा रजि. से रिवायत है कि दुख्तर जोन को जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाया गया और आप उसके करीब हुए तो कहने लगी, मैं आप से अल्लाह की पनाह चाहती हूँ। आपने उससे फरमाया तूने बहुत बड़ी हस्ती की पनाह ली है। अब अपने मायके चली जाओ।

फायदे: अपने मायके चली जाओ" तलाक के लिए यह अल्फाज वाजेह

नहीं हैं। इस किस्म के अल्फाज के वक्त कहने वाले की नियत को देखा जाता है। अगर नियत तलाक की हो तो तलाक वाकई हो जायेगी और अगर नियत तलाक की न हो, जैसा कि कअब बिन मालिक रजि. ने भी अपनी बीवी को यही अल्फाज कहे थे तो तलाक वाकई नहीं होगी।

 (फतहुलबारी 9/360)

1875: अबू उसैद रजि. से एक रिवायत है कि दुख्तर जोन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाई गई तो उसके साथ उसकी दाया (परवरिश करने वाली औरत) भी थी जो उसकी परवरिश करती थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे फरमाया, तू अपना आपको मुझे हिबा कर दे तो उसने जवाब दिया, कहीं शहजादी भी बाजारियों को अपना नफ्स हिबा कर सकती है? आपने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया, ताकि उसका दिल मुतमईन हो जाये। वो कहने लगी, आपसे अल्लाह की पनाह चाहती हूँ। उस वक्त आपने फरमाया, तूने ऐसी हस्ती की पनाह ली है जो पनाह देने के काबिल है। फिर आप बाहर तशरीफ लाये और फरमाया, ऐ अबू उसैद रजि.! उसे राजकी कपड़ों का एक जोड़ा देकर उसके घर वालों के यहां पहुंचा दो।

١٨٧٥ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهَا أُدْخِلَتْ عَلَيْهِ وَمَعَهَا دَايَتُهَا حَاضِنَةٌ لَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هَبِي نَفْسَكِ لِي). قَالَتْ: وَهَلْ تَهَبُ المَلِكَةُ نَفْسَهَا لِلسُّوقَةِ؟ قَالَ: فَأَهْوَى بِيَدِهِ يَضَعُ يَدَهُ عَلَيْهَا لِتَسْكُنَ، فَقَالَتْ: أَعُوذُ بِٱللهِ مِنْكَ، فَقَالَ: (قَدْ عُذْتِ بِمَعَاذٍ). ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا فَقَالَ: (يَا أَبَا أُسَيْدٍ، ٱكْسُهَا رَازِقِيَّيْنِ وَأَلْحِقْهَا بِأَهْلِهَا). [رواه البخاري: ٥٢٥٥]

फायदे: रिवायत में है कि यह औरत उम्र भर अफसोस करती रही और अपने आपको बदनसीब कह कर कौसती रही। (फतहुलबारी 9/357)

बाब 3: जो आदमी तीन तलाकें देना जाईज रखता है।

٣ - باب: مَنْ جَوَّزَ الطَّلَاقَ الثَّلَاثَ

1876: आइशा रजि. से रिवायत है कि

١٨٧٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهَا: أَن ٱمْرَأَةَ رِفاعَةَ الْقُرَظِيِّ جاءَتْ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ رِفاعَةَ طَلَّقَنِي فَبَتَّ طَلاَقِي، وَإِنِّي نَكَحْتُ بَعْدَهُ عَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ الزَّبِيرِ الْقُرَظِيَّ، وَإِنَّمَا مَعَهُ مِثْلُ الْهُدْبَةِ، قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَعَلَّكِ تُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفاعَةَ؟ لاَ، حَتَّى يَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ وَتَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ). [رواه البخاري: ٥٢٦٠]

रिफाअ कुरजी रजि. की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई और कहने लगी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! रिफाअ रजि. ने मुझे तलाक देकर बाईन (अलग) कर दिया है। इसके बाद मैंने अब्दुल रहमान बिन जुबैर रजि. से शादी की। उसके पास कपड़े के फुन्दने के अलावा कुछ नहीं। यानी वो नामर्द है। आपने फरमाया, शायद तू रिफाअ रजि. के पास जाना चाहती है? यह उस वक्त तक नहीं हो सकता, जब तक वो तेरा मजा न चखे और तू उसका मजा न चखे ले।

फायदे: इस हदीस से एक ही दफा दी हुई तीनों तलाकों के निफाज का दलील पकड़ा सही नहीं है। क्योंकि हजरत रिफाअ कुरजी रजि. ने एक ही बार तीन तलाकें न दी थी। बल्कि अलग अलग तीन तलाक देने का फैसला और उस पर अमल किया था। चूनांचे बुखारी की रिवायत (6084) में है कि उसने तीन तलाकों में से आखरी तलाक भी दे दी। यह अन्दाजे बयान इस बात का सबूत है कि उसने अलग अलग तीन तलाकें दी थीं। निज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में हजरत रूकाना रजि. ने अपनी औरत को एक मजलिस में तीन तलाकें दीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह तो एक ही है। अगर चाहो तो रुजूअ कर लो। चूनांचे उसने रुजूअ करके दोबारा अपना घर आबाद कर लिया। (मुसनद इमाम अहमद 1/265) इस मसले में यह हदीस ऐसी पक्के सबूत और फैसला करने वाली हैसियत रखती है कि उसकी कोई और ताविल नहीं की जा सकती। (फतहुलबारी 9/362)

٤ - باب: ﴿لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ ٱللَّهُ لَكَ﴾

बाब 4: ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो चीज अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, उसे क्यों हराम करते हो।

١٨٧٧ : وعنها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُحِبُّ العَسَلَ وَالْحَلْوَاءَ، وَكانَ إذا ٱنْصَرَفَ مِنَ الْعَصْرِ دَخَلَ عَلَى نِسَائِهِ، فَيَدْنُو مِنْ إحْدَاهُنَّ، فَدَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ بِنْتِ عُمَرَ، فَٱحْتَبَسَ أَكْثَرَ ما كانَ يَحْتَبِسُ، فَغِرْتُ، فَسَأَلْتُ عَنْ ذٰلِكَ، فَقِيلَ لِي: أَهْدَتْ لَهَا ٱمْرَأَةٌ مِنْ قَوْمِهَا عُكَّةً مِنْ عَسَلٍ، فَسَقَتِ النَّبِيَّ ﷺ مِنْهُ شَرْبَةً، فَقُلْتُ: أَما وَٱللهِ لَنَحْتَالَنَّ لَهُ، فَقُلْتُ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: إنَّهُ سَيَدْنُو مِنْكِ، فَإذَا دَنَا مِنْكِ فَقُولِي: أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ فَإنَّهُ سَيَقُولُ لَكِ: لاَ، فَقُولِي لَهُ: ما هٰذِهِ الرِّيحُ الَّتِي أَجِدُ مِنْكَ؟ فَإنَّهُ سَيَقُولُ لَكِ: سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ، فَقُولِي لَهُ: جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعُرْفُطَ، وَسَأَقُولُ ذٰلِكَ، وَقُولِي أَنْتِ يَا صَفِيَّةُ ذَاكِ. قالَتْ: تَقُولُ سَوْدَةُ: فَوَٱللهِ ما هُوَ إلَّا أَنْ قامَ عَلَى الْبَابِ، فَأَرَدْتُ أَنْ أُبَادِيَهُ بِمَا أَمَرْتِنِي بِهِ فَرَقًا مِنْكِ، فَلَمَّا دَنَا مِنْهَا قالَتْ لَهُ سَوْدَةُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ قالَ: (لاَ). قالَتْ: فَما هٰذِهِ الرِّيحُ الَّتِي

1877: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शिरीनी और शहद बहुत पसन्द था। आपका मामूल था कि जब असर की नमाज पढ़ लेते तो अपनी बीवियों के पास जाते, किसी के करीब होते, एक बार हफ्सा बिन्ते उमर रजि. के पास गये और वहां अपने मामूल से ज्यादा वक्त रूके। फरमाया, इसलिए मुझे गैरत आई। मैंने इसकी वजह पूछी तो मुझे कहा गया कि हफ्सा रजि. के मायके से किसी औरत ने चमड़े के एक मश्कीजे में कुछ शहद बतौर तौहफा भेजा था। जिसमें से कुछ उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी पिलाया। मैंने दिल में कहा, अल्लाह की कसम! मैं जरूर कुछ हैला करूंगी। लिहाजा मैंने सवदा बिन्ते जमआ रजि. से कहा कि जब आप तेरे पास आयें तो कहना आपने मगाफिर खाया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

أَحدٌ مِنكَ؟ قالَ: (سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ). فَقالَتْ: جَرَسَتْ نَحْلُهُ العُرْفُطَ، فَلَمَّا دارَ إِلَيَّ قُلْتُ لَهُ نَحْوَ ذٰلِكَ، فَلَمَّا دارَ إِلَى صَفِيَّةَ قالَتْ لَهُ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَلَمَّا دارَ إِلَى حَفْصَةَ قالَتْ: يا رَسُولَ اللهِ، أَلاَ أَسْقِيكَ مِنْهُ؟ قالَ: (لاَ حاجَةَ لِي فِيهِ). قالَتْ: تَقُولُ سَوْدَةُ: وَاللهِ لَقَدْ حَرَمْنَاهُ، قُلْتُ لَهَا: اسْكُتِي. [رواه البخاري: ٥٢٦٨]

वसल्लम तुझ से इनकार करेंगे तो फिर कहना, यह बू आपके मुंह से मुझे कैसे आ रही है? आप फरमायेंगे कि हफ्सा रजि. ने मुझे कुछ शहद पिलाया था तो कहना शायद उस शहद की मक्खी ने दरख्त उरफूत का रस चूंसा था और मैं भी यही कहूँगी और ऐ सफिया रजि. तुम भी यही कहना। आइशा रजि. का बयान है कि सवदा रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आकर अभी मेरे दरवाजे पर खड़े हुए ही थे। मैंने तुम्हारे डर से इरादा किया कि अभी से पुकार कर आपसे वो कह दूं जो तुमने कहा था। मगर जब आप सवदा रजि. के करीब पहुंचे तो उसने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आपने मगाफिर खाया है? आपने फरमाया, नहीं। तो उन्होंने दोबारा कहा, फिर आपके मुंह से मुझे बू कैसी आती है? आपने जवाब दिया कि हफ्सा रजि. ने मुझे शहद का शर्बत पिलाया है। तब सवदा रजि. ने कहा कि शायद उसकी मक्खी ने उरफूत का रस चूंसा होगा। फिर जब आप मेरे पास तशरीफ लाये तो मैंने भी आपसे यही कहा। फिर जब सफिया रजि. के पास गये तो उन्होंने यही कहा। चूनांचे जब आप हफ्सा रजि. के पास दोबारा तशरीफ ले गये तो हफ्सा रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको शहद और पिलाऊं। आपने फरमाया, मुझे शहद की जरूरत नहीं। आइशा रजि. का बयान है, फिर सवदा रजि. ने खुश होकर कहा, अल्लाह की कसम, हमने (इस हैला) से आपको शहद से महरूम कर दिया। मैंने उससे कहा, खामोश रहो।

फायदे: सही बुखारी की हदीस (5267) में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत जैनब रजि. के यहां शहद पीया। कुछ

रिवायतों में हजरत सवदा और हजरत सलमा रजि. के यहां शहद पीने का जिक्र है। राजेह बात यह है कि आप हजरत जैनब रजि. के यहां शहद पीते थे। मुख्तलीफ वाक्यात भी हो सकते हैं। अलबत्ता आयते तहरीम का जिक्र हजरत जैनब रजि. के बारे में हुआ है।

 (फतहुलबारी 9/376)

٥ - باب: الْخُلْعُ وَكَيْفَ الطَّلاقُ فِيهِ وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا مِمَّا ءَاتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَن يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ﴾

बाब 5: खुलआ (औरत का शौहर का दिया हुआ माल उसे वापिस देकर अपने आपको उससे अलग कर लेने) का बयान और उसमें तलाक कैसे होगी? फरमाने इलाही: "तुम्हारे लिए जाईज नहीं कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसे वापिस लो। मगर इस अन्देशे की सूरत में कि मियां-बीवी अल्लाह की हद की पाबन्दी नहीं कर सकेंगे।"

١٨٧٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ امْرَأَةَ ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ ما أَعْتِبُ عَلَيْهِ فِي خُلُقٍ وَلَا دِينٍ، وَلٰكِنِّي أَكْرَهُ الْكُفْرَ فِي الإِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (أَتَرُدِّينَ عَلَيْهِ حَدِيقَتَهُ؟). قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (اقْبَلِ الْحَدِيقَةَ وَطَلِّقْهَا تَطْلِيقَةً). [رواه البخاري: ٥٢٧٥]

1878: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि साबित बिन कैस रजि. की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में जाहिर हुई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं साबित बिन कैस रजि. की दीनदारी और रवादारी में कुछ ऐब नहीं पाती। मगर मुझे यह नागवार है कि मुसलमान होकर खाविन्द की नाशुक्री का ऐरतकाब करूं। आपने फरमाया, क्या तू उसका बाग उसे वापिस करती है? उसने कहा, जी हां! उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फरमाया, ऐ साबित रजि.! अपना बाग लेकर उसे एक तलाक दे दो।

फायदे: हजरत साबित बिन कैस रजि. ने पहले हजरत हबीबा बिन्ते सहल रजि. से निकाह किया तो उसने भी उनसे खुलआ लिया। और यह इस्लाम में पहला खुलआ था। फिर उन्होंने जमीला बिन्ते उबे रजि. से निकाह किया। जिसका जिक्र इस हदीस में है। उसने भी खुलआ के जरीये अलग हो गई।

٦ - باب: شَفَاعَةُ النَّبِيِّ ﷺ فِي زَوْجِ بَرِيرَةَ

बाब 6: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बरीरा रजि. के शौहर से सिफारिश करना।

١٨٧٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ زَوْجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبْدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خَلْفَهَا يَبْكِي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبَّاسٍ: (يَا عَبَّاسُ، أَلاَ تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ، وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَةَ مُغِيثًا؟). فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْ رَاجَعْتِهِ). قَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَتَأْمُرُنِي؟ قَالَ: (إِنَّمَا أَنَا أَشْفَعُ). قَالَتْ: فَلاَ حَاجَةَ لِي فِيهِ. [رواه البخاري: ٥٢٨٣]

1879: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि बरीरा रजि. का मुगीस रजि. नामी खाविन्द गुलाम था। गोया कि मैं उसे इस वक्त देख रहा हूँ कि अपनी दाढ़ी पर आंसू बहाये हुए बरीरा रजि. के पीछे घूम रहा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्बास रजि. से फरमाया, ऐ अब्बास रजि.! क्या तुम्हें मुगीस की बरीरा से मुहब्बत और बरीरा की मुगीस से नफरत पर ताज्जुब नहीं। फिर आपने फरमाया, ऐ बरीरा रजि! अगर तू मुगीस के पास आ जाओ तो अच्छा है। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या यह आप का हुक्म है? आपने फरमाया, (हुक्म नहीं) बल्कि सिफारिश करता हूँ। उसने कहा, अब मुझे उसके पास रहने की ख्वाहिश नहीं है।

फायदेः आजादी के वक्त अगर खाविन्द गुलाम हो तो औरत को इख्तियार रहता है कि उसे खाविन्द की हैसियत से कबूल किये रखे। या उससे अलग हो जाये। हजरत बरीरा रजि. को जब आजादी मिली तो उसके खाविन्द हजरत मुगीस रजि. किसी के गुलाम थे। इसलिए हजरत बरीरा रजि. को इख्तियार दिया गया। कुछ रिवायतों में उसके खाविन्द के आजाद होने का जिक्र है, लेकिन यह सही नहीं। बल्कि वो गुलाम थे। (फतहुलबारी 9/407)

बाब 7: लिआन का बयान।

٧ - باب: اللِّعَانُ

1880: सहल बिन साद साइदी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहादत की अंगूली और बीच की अंगूली से इशारा करके फरमाया, मैं और यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में इस तरह (करीब) होंगे कि दोनों अंगूलियों के बीच थोड़ा सा फासला रखा हुआ था।

١٨٨٠ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ ٱلسَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيمِ فِي الجَنَّةِ هٰكَذَا). وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى، وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا. [رواه البخاري: ٥٣٠٤]

फायदेः कुछ लोगों का ख्याल है कि अगर गूंगा इशारे से अपनी बीवी पर जिना का इल्जाम लगाये तो उस पर हद कज्फ नहीं और न ही लेआन वाजिब होता है। हालांकि यह बात गलत है। इमाम बुखारी ने मुतअद्द अहादीस लाकर साबित किया है इशारा भी बात के कायम मकाम होता है। मजकूरा हदीस में भी इसी ख्याल को साबित किया गया है। (फतहुलबारी 9/441)

बाब 8: अगर कोई इशारतन अपने बच्चे का इन्कार करे तो क्या हुक्म है?

٨ - باب: إِذَا عَرَّضَ بِنَفْيِ الْوَلَدِ

١٨٨١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وُلِدَ لِي غُلَامٌ أَسْوَدُ، فَقَالَ: (هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (مَا أَلْوَانُهَا؟). قَالَ: حُمْرٌ، قَالَ: (هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (فَأَنَّى ذٰلِكَ؟). قَالَ: لَعَلَّهُ نَزَعَهُ عِرْقٌ، قَالَ: (فَلَعَلَّ ٱبْنَكَ هٰذَا نَزَعَهُ عِرْقٌ). [رواه البخاري: ٥٣٠٥]

1881: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे यहां काला लड़का पैदा हुआ है। आपने फरमाया, तेरे पास ऊंट हैं? उसने कहा, हां! आपने फरमाया, उनका रंग कैसा है? उसने कहा, उनका रंग सूर्ख है। आपने फरमाया कि उनमें कोई खाकिस्तरी भी है? उसने कहा, हां! आपने फरमाया, यह कहां से आ गया? कहने लगा, शायद किसी रग ने यह रंग खींच लिया हो। आपने फरमाया, तेरे बेटे का रंग भी किसी रग ने खींच लिया होगा।

फायदे: मतलब यह है कि महज शक की वजह से बच्चे का इन्कार करना अकलमन्दी नहीं है। जब तक यह बात पक्की न हो जाये। मसलन अपनी बीवी को जिनाकारी करते हुए देखा हो या दूसरे कारण मौजूद हों कि निकाह के बाद कुछ माह से पहले बच्चा पैदा हो गया हो। (फतहुलबारी 5/130)

٩ - باب: اسْتِتَابَةُ الْمُتَلَاعِنَيْنِ

बाब 9: लेआन करने वालों को तौबा करने की तलकीन करना।

١٨٨٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا فِي حَدِيثِ الْمُتَلَاعِنَيْنِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْمُتَلَاعِنَيْنِ: (حِسَابُكُمَا عَلَى ٱللهِ، أَحَدُكُمَا كَاذِبٌ، لَا سَبِيلَ لَكَ عَلَيْهَا). قَالَ: مَالِي؟

1882: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो दो लेआन करने वालों की हदीस बयान करते हुए फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों लेआन करने वालों से फरमाया, अल्लाह

قَالَ: (لاَ مَالَ لَكَ، إِنْ كُنْتَ صَدَقْتَ عَلَيْهَا فَهُوَ بِمَا اسْتَحْلَلْتَ مِنْ فَرْجِهَا، وَإِنْ كُنْتَ كَذَبْتَ عَلَيْهَا فَذَاكَ أَبْعَدُ لَكَ). [رواه البخاري: ٥٣١٢]

तआला तुम दोनों से हिसाब लेने वाला है। तुम में से एक जरूर झूटा है। फिर मर्द से मुखातिब होकर आपने फरमाया, अब तेरा ताल्लुक औरत से नहीं रहा। उसने कहा, मेरा माल तो मुझे वापिस मिलना चाहिए। आपने फरमाया, वो हक्के महर अब तेरा माल नहीं रहा। क्योंकि अगर तू सच्चा है तब भी उसकी शर्मगाह से फायदा उठा चुका है और अगर तू झूटा है तब तो और ज्यादा तुझे माल नहीं मिलना चाहिए।

फायदे: एक रिवायत में है कि लेआन करते वक्त पांचवीं कसम के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को हुक्म दिया कि वो उसके मुंह पर हाथ रखे। इसी तरह औरत के मुंह पर भी हाथ रखा गया। लेकिन उसने आखिर कसम भी दे डाली और कहा कि मैं अपनी बिरादरी को रूसवा नहीं करना चाहती। (फतहुलबारी 9/446)

١٠ - باب: الْكُحْلُ لِلْحَادَّةِ

बाब 10: सोग करने वाली औरत को सुरमा लगाना मना है।

١٨٨٣ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً تُوُفِّيَ زَوْجُهَا، فَخَشُوا عَلَى عَيْنَيْهَا، فَأَتَوْا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَٱسْتَأْذَنُوهُ فِي ٱلْكُحْلِ، فَقَالَ: (لاَ تَكَحَّلْ، قَدْ كَانَتْ إِحْدَاكُنَّ تَمْكُثُ فِي شَرِّ أَحْلاَسِهَا، أَوْ شَرِّ بَيْتِهَا، فَإِذَا كَانَ حَوْلٌ فَمَرَّ كَلْبٌ رَمَتْ بِبَعَرَةٍ، فَلاَ حَتَّى تَمْضِيَ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وَعَشْرٌ). [رواه البخاري: ٥٣٣٨]

1883. उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है कि एक औरत का खाविन्द वफात पा गया। उसकी आंखों के मुताल्लिक घर वालों ने खतरा महसूस किया। वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे सुरमा लगाने की इजाजत मांगी कि आपने फरमाया, वो सुरमा नहीं लगा सकती। इससे पहले औरत एक साल तक खराब से खराब

कपड़े पहने हुए बुरे से बुरे झोंपड़ों में पड़ी रहती थी। जब साल पूरा हो जाता तो भी कुत्ता गुजरने पर उसे मिंगनी मारती (तब इद्दत से फारिग होती) लिहाजा अब हरगिज सुरमा जाईज नहीं, जब तक कि चार माह दस दिन न गुजर जाये।

फायदे: कुछ रिवायतों में है कि औरत को आंख आने की बीमारी हुई और आंख के बेकार होने का डर था। इसके बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोग वाली औरत को सुरमा लगाने की इजाजत नहीं दी। लेकिन मौता में है कि इन्तेहाई जरूरत के पेशे नजर रात के वक्त सुरमा लगाया जाये और दिन के वक्त उसे साफ कर दिया जाये। बेहतर है कि दूसरे तरीकों से इलाज किया जाये और सुरमा वगैरह के इस्तेमाल से अलग रहा जाये। (फतहुलबारी 9/488)



किताबुल नफकात
अखराजात के बयान में

1884: अबू मसऊद रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब मुसलमान आदमी अपने घर वालों पर अल्लाह का हुक्म अदा करने की नियत से खर्च करे तो उसमें उसको सदके का सवाब मिलता है।

١٨٨٤ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُ نَفَقَةً عَلَى أَهْلِهِ، وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا، كَانَتْ لَهُ صَدَقَةً). [رواه البخاري: ٥٣٥١]

फायदे: सवाब चाहने की नियत से अगर कोई खुश तबई के तौर पर बीवी के मुंह में लुकमा डालेगा तो वो भी सवाब का हकदार होगा। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत साद बिन अबी वकास रजि. से यही फरमाया था। (सही बुखारी: 56)

1885: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी बेवाओं और मोहताजों के लिए दौड़-धूप करता हो उसका सवाब इतना है, जैसे कोई अल्लाह की राह में जिहाद कर रहा हो। या जैसे कोई रात को तहज्जुद गुजार और दिन के वक्त रोजेदार हो।

١٨٨٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ، كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ، أَوِ الْقَائِمِ اللَّيْلَ الصَّائِمِ النَّهَارَ). [رواه البخاري: ٥٣٥٣]

फायदे: एक रिवायत में है कि वो ऐसे तहज्जुद गुजार की तरह है, जो थकता न हो और ऐसे रोजादार की तरह जो इफ्तार ही न करे, यानी ऐसा आदमी बेशुमार अज्रो सवाब का हकदार है। (सही बुखारी 2007)

١ - باب: حَبْسُ الرَّجُلِ قُوتَ سَنَةٍ عَلَى أَهْلِهِ وَكَيْفَ نَفَقَاتُ الْعِيَالِ

बाब 1: अपने घर वालों के लिए साल भर का खर्च रखने और उन पर खर्च करने की कैफियत।

١٨٨٦ : عَنْ عُمَرَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَبِيعُ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ، وَيَحْبِسُ لِأَهْلِهِ قُوتَ سَنَتِهِمْ. [رواه البخاري: ٥٣٥٧]

1886: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू नजीर की खजूरें भेजते थे और अपने घर वालों के लिए साल भर की खुराक जमा कर लेते थे।

फायदे: अम्वाल बनू नजीर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खास थे। साल भर के लिए घर के अखराजात के लिए खजूरें रख कर बाकी अल्लाह की राह में जिहाद के लिए हथियारों और दूसरे जिहादी सामानों की खरीदारी में खर्च कर देते। (सही बुखारी 2904)



किताबुल अतइमती

खाने के अहकाम व मसाईल

1887: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार मुझे बहुत सख्त भूख लगी। इस हालत में उमर बिन खत्ताब रजि. से मेरी मुलाकात हुई। तो मैंने उनसे कुरआन पाक की एक आयत पढ़ने की फरमाईश की। वो घर में दाखिल हो गये और मुझे आयत का मायना बता दिया। मैं वहां से थोड़ी दूर चला तो थकान और भूख की वजह से मुंह के बल गिर पड़ा। इतने में क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे सिरहाने तशरीफ फरमां हैं। आपने फरमाया, ऐ अबू हुरैरा रजि.! मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं हाजिर हूँ। फिर आपने मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठाया। आप पहचान गये कि भूख के मारे मेरी यह हालत हो रही है। लिहाजा मुझे वो अपने घर ले गये। फिर दूध का

١٨٨٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَصَابَنِي جَهْدٌ شَدِيدٌ، فَلَقِيتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، فَٱسْتَقْرَأْتُهُ آيَةً مِنْ كِتَابِ ٱللهِ، فَدَخَلَ دَارَهُ وَفَتَحَهَا عَلَيَّ، فَمَشَيْتُ غَيْرَ بَعِيدٍ فَخَرَرْتُ لِوَجْهِي مِنَ الجَهْدِ وَالجُوعِ، فَإِذَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِي، فَقَالَ: (يَا أَبَا هُرَيْرَةَ). فَقُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ ٱللهِ وَسَعْدَيْكَ، فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَقَامَنِي وَعَرَفَ الَّذِي بِي، فَٱنْطَلَقَ بِي إِلَى رَحْلِهِ، فَأَمَرَ لِي بِعُسٍّ مِنْ لَبَنٍ فَشَرِبْتُ مِنْهُ، ثُمَّ قَالَ: (عُدْ فَاشْرَبْ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ). فَعُدْتُ فَشَرِبْتُ، ثُمَّ قَالَ: (عُدْ). فَعُدْتُ فَشَرِبْتُ، حَتَّى ٱسْتَوَى بَطْنِي فَصَارَ كَالقِدْحِ، قَالَ: فَلَقِيتُ عُمَرَ، وَذَكَرْتُ لَهُ الَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِي، وَقُلْتُ لَهُ: تَوَلَّى ٱللهُ ذٰلِكَ مَنْ كَانَ أَحَقَّ بِهِ مِنْكَ يَا عُمَرُ، وَٱللهِ لَقَدِ ٱسْتَقْرَأْتُكَ الآيَةَ، وَلأَنَا أَقْرَأُ لَهَا مِنْكَ. قَالَ عُمَرُ: وَٱللهِ لأَنْ أَكُونَ أَدْخَلْتُكَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَكُونَ لِي

مِثْلُ حُمْرِ النَّعَمِ. [رواه البخاري: ٥٣٧٥]

प्याला पीने के लिए दिया। मैंने उससे कुछ पिया। आपने फरमाया और पिओ। मैंने और पिया, फिर फरमाया और पिओ, मैंने और पिया। यहां तक कि मेरा पेट फूल कर प्याले जैसा हो गया (या इतना पिया कि मेरा पेट तनकर तीर की तरह बराबर हो गया) अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि इसके बाद उमर रजि. से मिला और उनके पास आने का सारा मामला बयान किया और उनसे यह भी कहा कि अल्लाह तआला ने मेरी भूख दूर करने के लिए ऐसे आदमी को भेज दिया जो आप से ज्यादा इस बात के लायक थे। अल्लाह की कसम! मैंने जो आयत आपसे पढ़ने की फरमाईश की थी, वो मुझे आप से बेहतर आती थी, उमर रजि. कहने लगे, अल्लाह की कसम! अगर मैं समझ लेता तो उतनी खुशी मुझे सुर्ख ऊंट के मिलने से न होती जितनी तुम्हें खाना खिलाने से होती।

फायदे: कुछ रिवायतों में है कि सूरह आले इमरान की कोई आयत थी। हजरत अबू हुरैरा रजि. चूंकि उस दिन रोजा रखे हुए थे और इफ्तारी के लिए खाने पीने की कोई चीज मौजूद न थी। इसलिए उन्होंने ऐसा किया। (9/520)

١ - باب: التَّسْمِيَةُ عَلَى الطَّعَامِ وَالأَكْلُ بِالْيَمِينِ

बाब 1: खाना शुरू करते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ें, फिर दायें हाथ से खाना खायें।

١٨٨٨ : عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: كُنْتُ غُلَامًا فِي حَجْرِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَكَانَتْ يَدِي تَطِيشُ فِي الصَّحْفَةِ، فَقَالَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَا غُلَامُ، سَمِّ ٱللهَ، وَكُلْ بِيَمِينِكَ، وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ). فَمَا زَالَتْ تِلْكَ طِعْمَتِي بَعْدُ. [رواه البخاري: ٥٣٧٦]

1888: उमर बिन अबी सलमा रजि. से रिवायत है, कि मैं अभी नाबालिग और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जैरे किफालत था। खाना खाने के वक्त मेरा हाथ रकाबी के चारों तरफ घूमता मुझे इस तरह देख कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया,

बरखुरदार, बिस्मिल्लाह पढ़कर दायें हाथ से खाओ और अपने आगे से खाओ। फिर उसके बाद मेरे खाने का यही तरीका रहा।

फायदे: अबू दाउद की एक रिवायत में है कि खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहें, अगर शुरू में भूल जायें तो बीच में "बिस्मिल्लाह अव्वलहु व आखिरहु" कहें। निज बायें हाथ से शैतान खाता है, इसलिए हमें दायें हाथ से खाने का हुक्म है। (फतहुलबारी 9/521)

बाब 2: जिसने पेट भरकर खाया (उसने सही किया)

٢ - باب: مَن اكل حَتَّى شبعَ

1889: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई तो उस वक्त हमें खजूर और पानी पेट भरकर मिलने लगा था।

١٨٨٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ شَبِعْنَا مِنَ الأَسْوَدَيْنِ: التَّمْرِ وَالمَاءِ. [رواه البخاري: ٥٣٨٣]

फायदे: फतह खैबर के बाद पेट भर खाना पीना नसीब हुआ। कुछ रिवायतों में पेट भरकर खाने से मना भी किया है। इसका मतलब यह है कि इस कद्र न खाया जाये जो आंत में भारीपन, नींद और सुस्ती का सबब हो। (फतहुलबारी 9/528)

बाब 3: चपाती का इस्तेमाल और ऊंचे दस्तरख्वान पर खाना।

٣ - باب: الخبزُ المُرَقَّقُ والأكلُ عَلَى الخِوَانِ

1890: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफात तक कभी चपाती (या बारीक रोटी) और भूनी हुई बकरी नहीं खाई।

١٨٩٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ما أَكَلَ النَّبِيُّ ﷺ خُبْزًا مُرَقَّقًا، وَلاَ شَاةً مَسْمُوطَةً حَتَّى لَقِيَ ٱللهَ. [رواه البخاري: ٥٣٨٥]

फायदे: अबू हुरैरा रजि. के सामने एक बार चपाती रखी गई तो उसे देखकर रोने लगे और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस किस्म की चपाती को जिन्दगी भर कभी नहीं खाया था। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गरीबी खाना खाते थे।

 (फतहुलबारी 9/531)

١٨٩١ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في روايةٍ، قالَ: ما عَلِمْتُ النَّبِيَّ ﷺ أكَلَ عَلى سُكُرُّجَةٍ قَطُّ، وَلاَ خُبِزَ لَهُ مُرَقَّقٌ قَطُّ، وَلاَ أكَلَ عَلى خِوَانٍ قَطُّ. [رواه البخاري: ٥٣٨٦]

1891: अनस रजि. से ही एक रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे मालूम नहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी रकाबी में खाना खाया हो या आपके लिए चपाती का अहतमाम किया गया हो। या ऊंचे दस्तरख्वान पर बैठकर कभी खाना खाया हो।

फायदे: ऊंचे मैज पर खाना रखकर अमीर लोग खाते हैं ताकि उन्हें झूकना न पड़े। जबकि दौरे नबवी में इसका रिवाज न था। चूनांचे इस हदीस के आखिर में है कि रावी ने पूछा, उस वक्त खाना किस चीज पर रख खाया जाता था? हजरत अनस रजि. ने फरमाया, दस्तरख्वान पर।

٤ - باب: طَعَامُ الوَاحِدِ يَكْفِي الاثْنَيْنِ

बाब 4: एक आदमी का खाना दो के लिए काफी हो सकता है।

١٨٩٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (طَعَامُ الاثْنَيْنِ كَافِي الثَّلاثَةِ، وطَعَامُ الثَّلاثَةِ كَافِي الأَرْبَعَةِ). [رواه البخاري: ٥٣٩٢]

1892: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, दो आदमियों का खाना तीन को काफी है और तीन का खाना चार आदमियों की भूख मिटा सकता है।

फायदे: मिल-बैठ कर इकट्ठे खाने में बरकत हासिल होती है। जैसा कि

एक रिवायत में इसकी सराहत है कि मिल बैठकर खाओ और अलग अलग मत बैठो। क्योंकि ऐसा करने से एक का खाना दो के लिए काफी हो सकता है।

बाब 5: मुसलमान एक आंत में खाता है।

٥ - باب: المُؤمِنُ يَأكُلُ فِي مِعيً وَاحِدٍ

1893: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उनकी आदत थी, जब तक वो किसी गरीब को बुलाकर साथ न खिलाते, खुद भी न खाया करते। एक दिन एक आदमी लाया गया ताकि वो आपके साथ खाना खाये तो उसने बहुत खाया। तब उन्होंने अपने खादिम से कहा, आइन्दा उसे मेरे पास न लाना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि मौमिन तो एक आंत में खाता है, जबकि काफिर सात आंतों में खाता है।

١٨٩٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كَانَ لاَ يَأْكُلُ حَتَّى يُؤْتَى بِمِسْكِينٍ يَأْكُلُ مَعَهُ، فَأَتِيَ يَوْمًا بِرَجُلٍ يَأْكُلُ مَعَهُ فَأَكَلَ كَثِيرًا، فَقَالَ لِخَادِمِهِ: لاَ تُدْخِلْ هٰذَا عَلَيَّ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (المُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعىً وَاحِدٍ، وَالكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ). [رواه البخاري: ٥٣٩٣]

फायदे: इसका मतलब यह है कि मौमिन को दुनिया की इस कद्र लालच नहीं होती, इसलिए उसे थोड़ा-सा खाना ही काफी है, जबकि इसके उल्टे काफिर दुनिया का बड़ा लालची होता है, लिहाजा दुनिया जमा करना ही उसका मकसद होता है। (फतहुलबारी 9/538)

बाब 6: तकिया लगाकर खाना मना है।

٦ - باب: الأكل مُتَّكِئًا

1894: अबू हुजैफा रजि. से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर था। आपने अपने पास मौजूद एक आदमी से फरमाया कि मैं तकिया लगाकर नहीं खाता हूँ।

١٨٩٤ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهُ: (لاَ آكُلُ وَأَنَا مُتَّكِئٌ). [رواه البخاري: ٥٣٩٩]

फायदे: बेहतर है कि घूटनों के बल बैठकर खाना खाया जाये या कदमों पर बैठकर खाया जाये या दायां पांव खड़ा करके बायें पांव पर बैठकर भी खाना खाया जा सकता है। टेक लगाकर खाने से पेट बढ़ जाता है। इसलिए मना फरमाया। (9/542)

बाब 7: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाने को कभी बुरा नहीं कहा।

٧ - باب: مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا

1895: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी खाने को बुरा नहीं कहा, अगर दिल चाहता तो खाते वरना छोड़ देते।

١٨٩٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ، إِنِ ٱشْتَهَاهُ أَكَلَهُ، وَإِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ. [رواه البخاري: ٥٤٠٩]

फायदे: खाने के आदाब से है कि ऐब जोई न की जाये। यानी उसमें नमक थोड़ा या ज्यादा है या उसका सोरबा बहुत पतला या गाढ़ा है। या अच्छी तरह पका हुआ नहीं है। क्योंकि इससे पकाने वाले की हिम्मत छोटी हो जाती है। (फतहुलबारी 9/548)

बाब 8: जौं के आटे से फूंक मारकर भूसा दूर करना।

٨ - باب: النَّفْخُ فِي الشَّعِيرِ

1896: सहल बिन साद साइदी रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि तुमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मैदा देखा था। उन्होंने कहा, नहीं। उनसे फिर पूछा गया, तुम जौं के आटे को छानते थे? उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि फूंक मारकर भूसा उड़ा देते थे।

١٨٩٦ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: هَلْ رَأَيْتُمْ فِي زَمَانِ النَّبِيِّ ﷺ النَّقِيَّ؟ قَالَ: لاَ، قِيلَ: فَهَلْ كُنْتُمْ تَنْخُلُونَ الشَّعِيرَ؟ قَالَ: لاَ، وَلٰكِنْ كُنَّا نَنْفُخُهُ. [رواه البخاري: ٥٤١٠]

फायदेः एक रिवायत में है कि किसी ने हजरत सहल बिन साद रजि. से पूछा, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में छलनियां होती थी? उन्होंने जवाब दिया कि नबी होने के बाद से वफात तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छलनी को देखा तक नहीं। (सही बुखारी 5413)

बाब 9: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रजि. की खुराक का बयान।

٩ - باب: مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ وأصْحَابُهُ يَأكُلُونَ

1897: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम रजि. में खजूरें तकसीम कीं तो हर एक आदमी को सात सात खजूरें दीं। चूनांचे मुझे भी सात खजूरें दी। उनमें एक खराब भी थी। उनमें से कोई भी खजूर मुझे उससे ज्यादा पसन्द न थी। क्योंकि मैं उसे देर तक चबाता रहा।

١٨٩٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا بَيْنَ أَصْحَابِهِ تَمْرًا، فَأَعْطَى كُلَّ إِنْسَانٍ سَبْعَ تَمَرَاتٍ، فَأَعْطَانِي سَبْعَ تَمَرَاتٍ إِحْدَاهُنَّ حَشَفَةٌ، فَلَمْ يَكُنْ فِيهِنَّ تَمْرَةٌ أَعْجَبَ إِلَيَّ مِنْهَا، شَدَّتْ فِي مَضَاغِي. [رواه البخاري: ٥٤١١]

फायदेः हजरत अबू हुरैरा रजि. का मतलब है कि उस वक्त मुसलमानों पर ऐसी तंगी थी कि एक आदमी को खाने के लिए सिर्फ सात खजूरें मिलती। जिनमें खराब और सख्त खजूरें भी होती थीं।

1898: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, कि उनका एक ऐसे गिरोह से गुजर हुआ जिसके पास भूनी हुई बकरी थी।

١٨٩٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ مَرَّ بِقَوْمٍ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ شَاةٌ مَصْلِيَّةٌ، فَدَعَوْهُ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ

وَقَالَ: خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَلَمْ يَشْبَعْ مِنْ خُبْزِ ٱلشَّعِيرِ. [رواه البخاري: ٥٤١٤]

उन्होंने उन्हें भी खाने की दावत दी। उन्होंने इनकार कर दिया और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया से तशरीफ ले गये लेकिन कभी जौ की रोटी पेट भरकर न खाई थी।

फायदे: हजरत अबू हुरैरा रजि.ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुजर औकात याद करके उसका खाना गवारा न किया। चूंकि यह दावते वलीमा न थी, इसलिए उसे कबूल न किया, क्योंकि वलीमे के अलावा दूसरी दावतों को कबूल करना जरूरी नहीं है।

(फतहुलबारी 9/550)

١٨٩٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: ما شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ، مُنْذُ قَدِمَ ٱلمَدِينَةَ، مِنْ طَعَامِ ٱلبُرِّ ثَلاثَ لَيَالٍ تِبَاعًا، حَتَّى قُبِضَ. [رواه البخاري: ٥٤١٦]

1899: उम्मे मौमिनीन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ लाये, आपके घरवालों ने तीन दिन तक लगातार कभी गेहूँ की रोटी पेट भरकर नहीं खाई। यहां तक कि आप दुनिया से तशरीफ ले गये।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जिन्दगी गुजारने के हालात यह थे कि कभी गेहूँ की रोटी मिलती तो अगले दिन जौ की रोटी खाने को मिलती और कभी जौ की रोटी भी नसीब न होगी तो पानी और खजूरों पर ही गुजारा करते।

बाब 10: तलबीना का बयान।

١٠ - باب: التَّلْبِينَة

١٩٠٠ : وعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا كَانَتْ إِذَا مَاتَ المَيِّتُ مِنَ

1900: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उनकी आदत थी कि जब उनका कोई

أَهْلِهَا، فَجْتَمِعَ لِذٰلِكَ النِّسَاءُ، ثُمَّ تَفَرَّقْنَ إِلَّا أَهْلَهَا وَخَاصَّتَهَا، أَمَرَتْ بِبُرْمَةٍ مِنْ تَلْبِينَةٍ فَطُبِخَتْ ثُمَّ صُنِعَ ثَرِيدٌ فَصُبَّتِ التَّلْبِينَةُ عَلَيْهَا، ثُمَّ قَالَتْ: كُلْنَ مِنْهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (التَّلْبِينَةُ مُجِمَّةٌ لِفُؤَادِ الْمَرِيضِ، تَذْهَبُ بِبَعْضِ الْحُزْنِ). [رواه البخاري: ٥٤١٧]

रिश्तेदार फौत होता और औरतें जमा होकर अपने अपने घरों को वापिस चली जातीं, लेकिन कुरैश की खास खास औरतें रह जातीं तो उनके हुक्म से तलबीना की एक हांड़ी पकाई जाती। फिर सरीद तैयार किया जाता। फिर तलबीना सरीद पर डालकर फरमाते, इसे खाओ, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप फरमाते थे कि तलबीना से मरीज के दिल को आराम मिलता है और किसी कद्र गम भी गलत हो जाता है।

फायदे: तलबीनाँ आटे और दूध से बनाया जाता है। कभी उसमें शहद भी मिलाते हैं। चूंकि सफेदी और नरमी में दूध से मिलता है। इसलिए उसे तलबीना कहा जाता है। यह उस वक्त फायदेमन्द होता है जब खूब पका हुआ और नरम हो। (फतहुलबारी 9/550)

١١ - باب: الأكل من الإناء المفضض

बाब 11: चांदी या चांदी मिलाये हुए बर्तन में खाने का बयान।

١٩٠١ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لَا تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ وَلَا الدِّيبَاجَ، وَلَا تَشْرَبُوا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلَا تَأْكُلُوا فِي صِحَافِهَا، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَنَا فِي الآخِرَةِ). [رواه البخاري: ٥٤٢٦]

1901: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है, लोगों! रेशम और दीबाज न पहनो, सोने चाँदी के बर्तन में न पीओ, और न ही उनसे बनी हुई प्लेटों में खाना खाओ। क्योंकि यह सामान कुफ्फार के लिए दुनिया में है और हमारे लिए आखिरत में होगा।

फायदे: अगरचे हदीस में पीने का जिक्र है, फिर भी मुस्लिम की रिवायत में ऐसे बर्तनों में खाने की भी मनाही है और एक रिवायत में है कि जो कोई सोने, चांदी या उनकी मिलावट से बने हुए बर्तनों में पीता है, वो गोया अपने पेट में आग उंडेल रहा है। (फतहुलबारी 9/555)

---

١٢ - باب: الرَّجُل يَتَكَلَّفُ الطَّعَامَ لإِخْوَانِهِ

बाब 12: जो कोई अपने भाईयों के लिए पुर तकल्लुफ खाने का अहतमाम करे।

١٩٠٢ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ مِنَ الأَنْصَارِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ أَبُو شُعَيْبٍ، وَكَانَ لَهُ غُلاَمٌ لَحَّامٌ، فَقَالَ: اصْنَعْ لِي طَعَامًا، أَدْعُو رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَامِسَ خَمْسَةٍ فَدَعَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَامِسَ خَمْسَةٍ، فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّكَ دَعَوْتَنَا خَامِسَ خَمْسَةٍ، وَهٰذَا رَجُلٌ قَدْ تَبِعَنَا، فَإِنْ شِئْتَ أَذِنْتَ لَهُ، وَإِنْ شِئْتَ تَرَكْتَهُ). قَالَ: بَلْ أَذِنْتُ لَهُ. [رواه البخاري: ٥٤٣٤]

1902: अबू मसऊद अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अनसार में एक आदमी था, जिसे अबू शुएब रजि. कहा जाता था। उसका एक गुलाम कसाई था, उसने उसे कहा, मेरे लिए खाना तैयार करें, क्योंकि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चार आदमियों के साथ दावत करना चाहता हूँ। चूनांचे उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समेत पांच आदमियों को दावत दी, मगर एक और आदमी भी उनके पीछे हो लिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अबू शुएब रजि.! तूने हम पांच आदमियों को दावत दी थी, लेकिन यह (छटा) आदमी भी हमारे साथ चला आया है। लिहाजा तूझे इख्तियार है, चाहे उसे इजाजत दे, चाहे उसे यहीं छोड़ दे। अब अबू शुएब रजि. ने कहा, मैं उसे इजाजत देता हूँ।

फायदे: इससे मालूम हुआ कि इल्म और तकवा के लिहाज से बड़े लोगों को अपने से छोटे लोगों की दावत कबूल करके मजदूर पैशा लोगों की हौसला अफजाई करना चाहिए। (फतहुलबारी 9/560)

बाब 13: खजूर और ककड़ी मिलाकर खाना।

١٣ - باب: القِثَّاء بِالرُّطَبِ

1903. अब्दुल्लाह बिन जाफर बिन अबी तालिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप खजूरें ककड़ी के साथ खा रहे थे।

١٩٠٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ الرُّطَبَ بِالْقِثَّاءِ. [رواه البخاري: ٥٤٤٠]

फायदे: यह दोनों एक दूसरे के सुल्ह करने वाली है, क्योंकि खजूर गर्म और ककड़ी ठण्डी है। यह दोनों एक दूसरे का तोड़ हैं। और मिलावट होने की सूरत में बराबर हो जाती है। (फतहुलबारी 9/573)

बाब 14: ताजा और खुश्क खजूरों का बयान।

١٤ - باب: الرُّطَبُ وَالتَّمْرُ

1904: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मदीना में एक यहूदी था, वो मेरे बाग की खजूरें उतरने तक मुझे कर्ज दिया करता था। मेरे पास वो जमीन थी जो बेर रूमा के रास्ते पर वाकेअ है, एक साल खाली गुजरा कि उसमें खजूरें न हुई और वो साल गुजर गया। कटाई के वक्त वो यहूदी मेरे पास आया, लेकिन मैं काटता क्या? वहां कुछ था ही नहीं। उससे अगले साल तक के लिए मोहलत मांगी। लेकिन वो राजी न हुआ। फिर यह खबर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

١٩٠٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ بِالمَدِينَةِ يَهُودِيٌّ وَكَانَ يُسْلِفُنِي فِي تَمْرِي إِلَى الجَذَاذِ وَكَانَتْ لِجَابِرٍ الأَرْضُ الَّتِي بِطَرِيقِ رُومَةَ، فَجَلَسَتْ، فَخَلَا عَامًا، فَجَاءَنِي اليَهُودِيُّ عِنْدَ الجَذَاذِ وَلَمْ أَجُدَّ مِنْهَا شَيْئًا، فَجَعَلْتُ أَسْتَنْظِرُهُ إِلَى قَابِلٍ فَيَأْبَى، فَأُخْبِرَ بِذٰلِكَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَ لِأَصْحَابِهِ: (امْشُوا نَسْتَنْظِرْ لِجَابِرٍ مِنَ اليَهُودِيِّ). فَجَاؤُونِي فِي نَخْلِي، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُكَلِّمُ اليَهُودِيَّ، فَيَقُولُ: أَبَا القَاسِمِ لَا أُنْظِرُهُ، فَلَمَّا رَأَى النَّبِيُّ ﷺ قَامَ فَطَافَ فِي النَّخْلِ، ثُمَّ جَاءَهُ فَكَلَّمَهُ فَأَبَى، فَقُمْتُ فَجِئْتُ بِقَلِيلِ رُطَبٍ، فَوَضَعْتُهُ

بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ ﷺ فَأَكَلَ، ثُمَّ قَالَ: (أَيْنَ عَرِيشُكَ يَا جابِرُ). فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: (أَفْرُشْ لِي فِيهِ؟). فَفَرَشْتُهُ، فَدَخَلَ فَرَقَدَ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ، فَجِئْتُهُ بِقَبْضَةٍ أُخْرَى فَأَكَلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَامَ فَكَلَّمَ الْيَهُودِيَّ فَأَبَى عَلَيْهِ، فَقَامَ فِي الرِّطَابِ فِي النَّخْلِ الثَّانِيَةَ، ثُمَّ قَالَ يَا جابِرُ: (جُذَّ وَاقْضِ). فَوَقَفَ فِي الْجَدَادِ، فَجَدَدْتُ مِنْهَا مَا قَضَيْتُهُ، وَفَضَلَ مِثْلُهُ، فَخَرَجْتُ حَتَّى جِئْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَبَشَّرْتُهُ، فَقَالَ: (أَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ). [رواه البخاري: ٥٤٤٣]

पहुंची। आपने अपने सहाबा रजि. से फरमाया, चलो हम उस यहूदी से कहें कि वो जाबिर रजि. को और मोहलत दे दे। चूनांचे आप सब मेरे बाग में तशरीफ लाये और यहूदी से बातचीत करने लगे। वो कहने लगा, अबू कासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं जाबिर रजि. को मोहलत नहीं दूंगा। जब आपने यहूदी को देखा तो खड़े हुए और खजूर के पेड़ों में एक चक्कर लगाया। फिर यहूदी से आकर फरमाया, मोहलत दे, लेकिन वो राजी न हुआ। जाबिर रजि. कहते हैं, आखिर मैं खड़ा हुआ और बाग से थोड़ी सी ताजा खजूरें लाकर आपके सामने रख दी। आपने खाकर मुझ से पूछा, ऐ जाबिर रजि.! तेरा ठिकाना कहां हैं? (वो झोंपड़ा जहां तू आराम के लिए बैठता है) मैंने आपको उस जगह की निशानदेही की। आपने फरमाया, जा मेरे लिए वहां बिस्तर कर दे। मैंने फौरन वहां बिछौना बिछा दिया। आपने कुछ देर आराम फरमाया, फिर जागे तो मैं मुट्ठी भर खजूरें ले आया। आपने वो भी खाई। फिर खड़े हुए और यहूदी को समझाया। मगर फिर भी वो अपनी जिद पर कायम रहा। आखिर आप दूसरी बार पेड़ के नीचे खड़े हुए और जाबिर रजि. से फरमाया कि तू खजूरें तोड़ना शुरू कर दे और यहूदी का कर्ज भी अदा कर। फिर आप खजूरें तोड़ने की जगह ठहर गये। चूनांचे मैंने इतनी खजूरें तोड़ी कि उसका कर्ज भी अदा हो गया और उसी कद्र और ज्यादा बच रहीं। सो मैं निकला और आपकी खिदमत में हाजिर होकर खुशखबरी सुनाई। तो आपने खुश होकर फरमाया, मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ।

फायदेः आपने इसलिए गवाही दी कि यह एक खुला मोजिजा था जो अल्लाह की ताईद से जाहिर हुआ। इसी तरह का एक मोजिजा उस वक्त भी जाहिर हुआ जब हजरत जाबिर रजि. के वालिदगरामी का कर्ज उतारा गया था। (फतहुलबारी 9/567, 568)

बाब 15: अजवा खजूर का बयान।

١٥ - باب: الْعَجْوَةُ

1905: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई सुबह के वक्त सात अजवा खजूरें खा ले तो उस दिन कोई जहर या जादू उस पर असर नहीं करेगा।

١٩٠٥ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ تَصَبَّحَ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعَ تَمَرَاتٍ عَجْوَةٍ، لَمْ يَضُرَّهُ فِي ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمِ سُمٌّ وَلَا سِحْرٌ). [رواه البخاري: ٥٤٤٥]

फायदेः अजवा काले रंग की एक खजूर का नाम है, जो मदीना मुनव्वरा के ऊंचे इलाको में पाई जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे जन्नत का फल करार दिया है और निहार मुंह खाने से जहर, जादू और दूसरी बीमारियों से उसमें फायदे की निशानदेही की है।

बाब 16: अंगूलियों के चाटने का बयान।

١٦ - باب: لَعْقُ الأَصَابِعِ

1906: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुममें से कोई खाना खाये तो उस वक्त तक हाथों को साफ न करें, जब तक अंगूलियों को चाट ले या किसी दूसरे को चटा न दे।

١٩٠٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلَا يَمْسَحْ يَدَهُ حَتَّى يَلْعَقَهَا أَوْ يُلْعِقَهَا). [رواه البخاري: ٥٤٥٦]

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम तीन अंगूलियों से खाना खाते और खाने के बाद उन्हें चाटते। इसका (सबब) भी बयान की गई है कि खाने वाले को क्या मालूम कि बरकत किस हिस्से में है? (फतहुलबारी 9/578)

1907: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में हमारे पास तौलिये न थे। पस यही (हथेलियां) बाजू और पांव (से हाथ साफ कर लेते)

١٩٠٧ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قالَ: كُنَّا زَمانَ النَّبِيِّ ﷺ لَمْ يَكُنْ لَنا مَنادِيلُ إلَّا أَكُفَّنَا وَسَوَاعِدَنَا وَأَقْدامَنا. [رواه البخاري: ٥٤٥٧]

फायदे: इस रूमाल से मुराद तौलिया नहीं जो नहाने या वजू करने के बाद इस्तेमाल किया जाता है, बल्कि वो कपड़ा जो खाने के बाद चिकनाहट दूर करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंगूलियां चाटने के बाद फिर रूमाल से उन्हें साफ करने का हुक्म दिया है। (फतहुलबारी 9/577)

बाब 17: खाने से फारिग होने के बाद कौनसी दुआ पढ़ें?

١٧ - باب: ما يَقُولُ إذا فَرَغَ مِنْ طَعامِهِ

1908. अबू उमामा रजि. से रिवायत है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जब दस्तरख्वान उठाया जाता तो आप यह दुआ पढ़ते, ऐ हमारे परवरदिगार अल्लाह का शुक्र है, बहुत सा पाकीजा, बाबरकत शुक्र, ऐसा शुक्र नहीं जो एक बार होकर रह जाये, फिर उसकी जरूरत न रहे।

١٩٠٨ : عَنْ أَبِي أُمامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ إذا رَفَعَ مائِدَتَهُ قالَ: (الحَمْدُ لِلهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبارَكًا فِيهِ، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنا). [رواه البخاري: ٥٤٥٨]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खाने के बाद कई दुआयें बयान हैं, जो भी आसानी से याद हो जाये, उसे पढ़ लेना चाहिए। (फतहुलबारी 9/580)

١٩٠٩ : وَعَنْهُ أَيضًا فِي رواية: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا فَرَغَ مِنْ طَعَامِهِ، قَالَ: (الحَمْدُ للهِ الَّذِي كَفَانَا وَأَرْوَانَا، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَا مَكْفُورٍ). [رواه البخاري: ٥٤٥٩]

1909: अबू उमामा रजि. से ही एक रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खाने से फारिग होते तो यह दुआ पढ़ते, अल्लाह का शुक्र है जिसने हमको पेट भरकर खिलाया और पिलाया। यह शुक्र ऐसा नहीं कि एक बार अदा करने के बाद खत्म हो जाये, फिर ना शुक्री की जाये।

फायदे: अबू दाउद और तिरमंजी में यह मनकूल है "अल्हम्दुल्लिाहील्लजी अतआमम वसकिआ वसव्वगहु वजअल लहु मख्रजन"

١٨ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَٱنتَشِرُوا۟﴾

बाब 18: फरमाने इलाही : "जब तुम खाने से फारिग हो जाओ तो उठ जाओ"

١٩١٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ النَّاسِ بِالْحِجَابِ، كَانَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يَسْأَلُنِي عَنْهُ، أَصْبَحَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَرُوسًا بِزَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، وَكَانَ تَزَوَّجَهَا بِالْمَدِينَةِ، فَدَعَا النَّاسَ لِلطَّعَامِ بَعْدَ ٱرْتِفَاعِ النَّهَارِ، فَجَلَسَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَجَلَسَ مَعَهُ رِجَالٌ بَعْدَمَا قَامَ الْقَوْمُ، حَتَّى قَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَمَشَى وَمَشَيْتُ مَعَهُ، حَتَّى بَلَغَ بَابَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، ثُمَّ ظَنَّ أَنَّهُمْ خَرَجُوا فَرَجَعَ فَرَجَعْتُ مَعَهُ، فَإِذَا هُمْ جُلُوسٌ مَكَانَهُمْ، فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ الثَّانِيَةَ، حَتَّى بَلَغَ بَابَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، ثُمَّ ظَنَّ أَنَّهُمْ خَرَجُوا،

1910: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि पर्दे की आयत का शाने नुजूल सब से ज्यादा मुझे मालूम है। उबे बिन कअब रजि. मुझ से ही पूछा करते थे। हुआ यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जैनब रजि. से नई शादी हुई थी और आपने उनसे मदीना मुनव्वरा में निकाह किया था। आपने लोगों को खाने की उस वक्त दावत दी जब दिन चढ़ आता था। जब लोग खाना खाकर चले गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां बैठे रहे और आपके साथ कुछ

فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ فَإِذَا هُمْ قَدْ قَامُوا، فَضَرَبَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ سِتْرًا، وَأُنْزِلَ الْحِجَابُ. [رواه البخاري: ٥٤٦٦]

आदमी बातों में मसरूफ वहां बैठे रहे। आप उठकर वहां से चले गये तो मैं भी आपके साथ गया। आइशा रजि. के कमरे के पास पहुंचकर आपको यह ख्याल आया कि अब लोग चले गये होंगे। इसलिए वापिस चले आये और आपके साथ मैं भी आ गया। देखा तो वो लोग वहीं अपनी जगह पर बैठे हैं। फिर आप वापिस तशरीफ ले गये। आइशा रजि. के कमरे के पास पहुंचे तो फिर लौट कर आये। मैं भी आपके साथ लौट कर आया तो देखा कि अब लोग जा चुके हैं। फिर आपने मेरे और अपने बीच पर्दा डाल दिया। उस वक्त पर्दे का हुक्म नाजिल हुआ।

फायदे: इमाम बुखारी इस हदीस को इसलिए लाये हैं कि उसमें खाने का एक अदब बयान हुआ है कि जब खाने से फारिग हो जाये तो उठकर चले जाना चाहिए। वहां जमकर बैठे रहना अकलमन्दी नहीं, बल्कि उससे घर वालों को तकलीफ होती है।



किताबुल अकीका

अकीके के बयान में

बाब 1. बच्चे का नाम रखना।

١ - باب: تَسْمِيَةِ المَوْلُودِ

1911: अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे यहां एक लड़का पैदा हुआ तो मैं उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में ले आया। आपने उसका नाम इब्राहिम रखा और खजूर चबाकर उसके तालू में लगाई। और उसके लिए बरकत की दुआ फरमाई। फिर वो बच्चा मुझे दे दिया।

١٩١١ : عَنْ أَبِي مُوسى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وُلِدَ لِي غُلامٌ، فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَسَمَّاهُ إِبْرَاهِيمَ، فَحَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ، وَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ، وَدَفَعَهُ إِلَيَّ. [رواه البخاري: ٥٤٦٧]

फायदे: इमाम बुखारी रह. ने इस हदीस पर इस अल्फाज में उनवान कायम किया है कि ''जो आदमी अकीका न करना चाहे, वो अपने बच्चे का नाम पैदा होते ही रख दे।'' और जिसने अकीका करना चाहा, वो सातवें दिन उसका नाम रखे, इससे यह भी मालूम हुआ कि अकीका वाजिब नहीं है। (फतहुलबारी 9/588)

1912: असामा रजि. के यहां अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. की पैदाईश का वाक्या हदीस हिजरत (1594) में पहले गुजर चुका है और यहां इस तरीके में सिर्फ इतना इजाफा है कि मुसलमानों को

١٩١٢ : حَدِيثُ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهَا وَلَدَتْ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، تَقَدَّمَ فِي حَدِيثِ الهِجْرَةِ وَزَادَ هُنَا: فَفَرِحُوا بِهِ فَرَحًا شَدِيدًا، لِأَنَّهُمْ قِيلَ لَهُمْ: إِنَّ الْيَهُودَ

قَدْ سَحَرَتْكُمْ فَلاَ يُولَدُ لَكُمْ. (راجع: ١٥٩٤) [رواه البخاري: ٥٤٦٩]

उनके पैदा होने पर बहुत खुशी हुई, क्योंकि उनसे लोग कहते थे कि यहूदियों ने तुम पर जादू कर दिया है, अब तुम्हारे यहां औलाद पैदा नहीं होगी।

फायदेः यहूदियो के बहुत ज्यादा प्रोपगण्डे से कुछ मुसलमान भी मुतासिर हुए लेकिन जब मदीने में मुहाजिरीन के यहां हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. पैदा हुए तो उन्होंने बुलन्द आवाज में नारा-ए-तकबीर बुलन्द किया कि मदीने के दरो-दीवार गुंज उठे। (फतहुलबारी 9/589)

٢ - باب: إِمَاطَةُ الأَذَى عَنِ الصَّبِيِّ فِي العَقِيقَةِ

बाब 2: अकीके के दिन बच्चे से तकलीफ देह चीजें हटाने का बयान।

١٩١٣ : عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ الضَّبِّيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَعَ الغُلاَمِ عَقِيقَةٌ، فَأَهْرِيقُوا عَنْهُ دَمًا، وَأَمِيطُوا عَنْهُ الأَذَى). [رواه البخاري: ٥٤٧٢]

1913: सुलेमान बिन आमिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमाते थे, लड़के के साथ उसका अकीका लगा हुआ है। लिहाजा उसकी तरफ से अकीका करो और खून बहाओ। निज (उसके बाल मुण्डवाकर या खत्ना करके उसकी तकलीफ दूर करो।

फायदेः एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यहूदी बच्चे के पैदा होने पर एक मैण्डा जिब्ह करते हैं और बच्ची की पैदाईश पर कुछ भी जिब्ह नहीं करते। तुम लड़के की तरफ से दो और लड़की की तरफ से एक जानवर जिब्ह करो।

(फतहुलबारी 9/592)

٣ - باب: الفَرَعُ

बाब 3: फरआ का बयान।

1914: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, फरआ और अतिरा कोई चीज नहीं है।

١٩١٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ فَرَعَ وَلاَ عَتِيرَةَ).

وَالْفَرَعُ: أَوَّلُ النِّتَاجِ، كَانُوا يَذْبَحُونَهُ لِطَوَاغِيتِهِمْ، وَالْعَتِيرَةُ فِي رَجَبٍ. [رواه البخاري: ٥٤٧٣]

फरआ ऊंट के पहले बच्चे को कहते हैं, जिसे मुशिरकीन अपने बुतों के नाम पर जिब्ह करते थे। अतीरा उस बकरी को कहते हैं जिसकी रज्ब के महीने में कुरबानी की जाती थी।

फायदे: अल्लाह के लिए जिब्ह करने पर कोई पाबन्दी नहीं, हां पहले बच्चे या माह रज्ब की तख्सीस (खास कर लेना) सही नहीं है। इसलिए यह भी मालूम हुआ कि कुछ काम असल के ऐतबार से जाईज होते हैं। लेकिन बेजा तख्सीस की वजह से उन्हें नाजाईज करार दिया जाता है। मसलन मय्यत के लिए सवाब की नियत से अल्लाह को राजी करने के लिए जिब्ह करना जाईज है। लेकिन तीसरे दिन या चहलम (चालीसवें) के मौके पर ऐसा करना जाईज नहीं।



किताबुल जबाइही वस्सयदे

जबीहा और शिकार के बयान में

बाब 1. शिकार पर बिस्मिल्लाह पढ़ने का बयान।

١ - باب: التَّسْمِيَةُ عَلَى الصَّيْدِ

١٩١٥ : عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ صَيْدِ الْمِعْرَاضِ، قَالَ: (ما أَصَابَ بِحَدِّهِ، فَكُلْهُ، وَما أَصَابَ بِعَرْضِهِ فَهُوَ وَقِيذٌ). وَسَأَلْتُهُ عَنْ صَيْدِ الْكَلْبِ، فَقَالَ: (ما أَمْسَكَ عَلَيْكَ فَكُلْ، فَإِنَّ أَخْذَ الْكَلْبِ ذَكاةٌ، وَإِنْ وَجَدْتَ مَعَ كَلْبِكَ أَوْ كِلاَبِكَ كَلْبًا غَيْرَهُ، فَخَشِيتَ أَنْ يَكُونَ أَخَذَهُ مَعَهُ، وَقَدْ قَتَلَهُ فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا ذَكَرْتَ ٱسْمَ ٱللهِ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تَذْكُرْهُ عَلَى غَيْرِهِ). [رواه البخاري: ٥٤٧٥]

1915: अदी बिन हातिम रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस शिकार के बारे में पूछा जो तीर की डण्डी से किया जाये? आपने फरमाया, अगर वो नुकीली तरफ से लगे तो उस शिकार को खाओ और अगर आड़ा तिरछा लगे (और शिकार मर जाये) तो उसे मत खाओ क्योंकि वो मोकूजा (वो जानवर जिसे डण्डे वगैरह फैंक कर मारा जाये) है (जिसे कुरआन ने हराम करार दिया है) फिर मैंने कुत्ते के मारे हुए शिकार के बारे में पूछा तो आपने फरमाया, जिस शिकार को कुत्ता तुम्हारे लिए रोके रखे, उसे तो खाओ, क्योंकि कुत्ते का शिकार को पकड़ना शिकार को जिब्ह करने की तरह है और अगर अपने कुत्ते या कुत्तों के साथ और कुत्ता भी मौजूद हो और तुझे शक हो कि दूसरे कुत्ते ने भी उसके साथ शिकार को पकड़ कर मारा हो तो उसे न खाओ। क्योंकि तूने अपना कुत्ता छोड़ते वक्त

बिस्मिल्लाह पढ़ी थी, दूसरे कुत्ते पर नहीं पढ़ी थी।

फायदेः बाज वगैरह के शिकार का भी यही हुक्म है कि वो सधाया हुआ हो और बिस्मिल्लाह पढ़कर छोड़ा जाये। और वो उस शिकार से खुद न खाये, इसके अलावा कारतूस और छर्रे वाली बन्दूक से शिकार करना भी सही है, बशर्ते बिस्मिल्लाह पढ़कर चलाई जाये।

बाब 2: तीर कमान से शिकार करने का बयान।

٢ - باب: صَيْدُ القَوْسِ

1916: अबू सालबा खुशनी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम अहले किताब के इलाके में रहते हैं। तो क्या उनके बर्तनों में खा पी लें? और हम उस सरजमीन में रहते हैं जहां शिकार बहुत होता है और मैं वहां तीर कमान से और सधाये हुए और बगैर सधाये हुए कुत्ते से शिकार करता हूँ तो उनसे कौनसा तरीका मेरे लिए जाईज है? आपने फरमाया, अहले किताब का जो तुमने जिक्र किया है तो अगर उनके बर्तनों के अलावा दूसरे बर्तन मिल सकेंगे तो अहले किताब के बर्तनों में न खाओ और अगर बर्तन न मिलें तो फिर उन्हें धोने के बाद उनमें खा सकते हो और जो शिकार अपने तीर कमान से बिस्मिल्लाह पढ़कर करो तो उसे खाओ और जो सधाये हुए कुत्ते से बिस्मिल्लाह पढ़कर शिकार करो, उसे भी खाओ और अगर बगैर सधाये कुत्ते से शिकार करो और

١٩١٦ : عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الخُشَنِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا نَبِيَّ ٱللهِ، إِنَّا بِأَرْضِ قَوْمٍ أَهْلِ كِتَابٍ أَفَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ؟ وَبِأَرْضِ صَيْدٍ، أَصِيدُ بِقَوْسِي، وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ وَبِكَلْبِي المُعَلَّمِ، فَمَا يَصْلُحُ لِي؟ قَالَ: (أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ أَهْلِ الكِتَابِ: فَإِنْ وَجَدْتُمْ غَيْرَهَا فَلَا تَأْكُلُوا فِيهَا، وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا غَيْرَهَا فَاغْسِلُوهَا وَكُلُوا فِيهَا. وَمَا صِدْتَ بِقَوْسِكَ فَذَكَرْتَ ٱسْمَ ٱللهِ فَكُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ المُعَلَّمِ فَذَكَرْتَ ٱسْمَ ٱللهِ فَكُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ غَيْرَ المُعَلَّمِ فَأَدْرَكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْ). [رواه البخاري: ٥٤٧٨]

उसे जिब्ह कर सको तो उसे भी खाओ।

फायदेः अगरचे कुछ रिवायतों में सराहत है कि हमारे इलाके के अहले किताब अपने बर्तनों में सूअर का गोश्त पकाते हैं और उनमें शराब भी पीते हैं। फिर भी हदीस के अल्फाज के अमूम का तकाजा यही है कि अहले किताब (यहूद और नसारा) के बर्तनों की जब भी जरूरत पड़े, उन्हें धोकर इस्तेमाल किया जाये। (फतहुलबारी 9/606)

बाब 3: अंगुली से छोटे छोटे संगरेजे फैंकने और गुल्ला मारने का बयान।

٣ - باب: الخذف والبندقة

1917: अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रजि. से रिवायत है, उन्होंने एक आदमी को देखा कि अंगली से छोटे छोटे संगरेजे फैंक रहा है तो उसे कहा, ऐसा मत करो, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इससे मना फरमाते हैं या आप इसे मकरूह कहते थे। और फरमाया कि उस संगरेजे से तो न शिकार होता है और न ही दुश्मन जख्मी होता है। अलबत्ता कभी कभी दांत टूट जाता है या आंख फूट जाती है। बाद अजां अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रजि. ने उस आदमी को फिर कंकर मारते देखा तो उसे फरमाया कि मैंने तुम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस बयान की थी कि आपने इस तरह फैंकने से मना फरमाया या मकरूह समझा है। लेकिन तू बाज आने की बजाये वही काम किये जा रहा है। मैं तुझ से इतने वक्त तक किसी किस्म की बातचीत नहीं करूंगा।

١٩١٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رضي ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأَى رَجُلًا يَخْذِفُ، فَقَالَ لَهُ: لَا تَخْذِفْ، فَإِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الخَذْفِ، أَوْ كَانَ يَكْرَهُ الخَذْفَ، وَقَالَ: (إِنَّهُ لَا يُصَادُ بِهِ صَيْدٌ وَلَا يُنْكَأُ بِهِ عَدُوٌّ، وَلٰكِنَّهَا قَدْ تَكْسِرُ السِّنَّ، وَتَفْقَأُ العَيْنَ). ثُمَّ رَآهُ بَعْدَ ذٰلِكَ يَخْذِفُ، فَقَالَ لَهُ: أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَنَّهُ نَهَى عَنِ الخَذْفِ أَوْ كَرِهَ الخَذْفَ وَأَنْتَ تَخْذِفُ لَا أُكَلِّمُكَ كَذَا وَكَذَا. [رواه البخاري: ٥٤٧٩]

फायदे: गुलैल के गुल्ले से शिकार करना सही है। बशर्ते जानवर को जिब्ह किया जाये। अगर गुल्ला लगने से परिन्दा मर जाये तो उसका खाना जाईज नहीं, वो चोट लगने से मरा है। जिसे मौकूजा कहते हैं, इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि शरई हुक्म की पाबन्दी न करना सलाम और बातचीत छोड़ देने का सबब हो सकता है। बल्कि ऐसा करना दीनी गैरत का तकाजा है। यह उन अहादीस के खिलाफ नहीं, जिनमें तीन दिन से ज्यादा तर्क मुलाकात की मनाही है। क्योंकि ऐसा करना किसी जाति नाराजगी की वजह से मना है।

बाब 4: जो आदमी शिकार या हिफाजत के अलावा बिला जरूरत कुत्ता पालता है।

٤ - باب: مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا لَيْسَ بِكَلْبِ صَيْدٍ أَوْ مَاشِيَةٍ

1918: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी ऐसा कुत्ता रखे जो न मवेशियों की हिफाजत के लिए हो और न ही शिकारी हो तो उसके अज्र से दो किरात रोजाना कमी होती रहती है।

١٩١٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنِ ٱقْتَنَى كَلْبًا، لَيْسَ بِكَلْبِ مَاشِيَةٍ أَوْ ضَارِيَةٍ، نَقَصَ كُلَّ يَوْمٍ مِنْ عَمَلِهِ قِيرَاطَانِ). [رواه البخاري: ٥٤٨٠]

फायदे: कुछ रिवायतों के मुताबिक खेती की हिफाजत के लिए रखा हुआ कुत्ता भी इस हुक्म से अलग करार दिया गया है। और चोरों या दरिन्दों से हिफाजत के लिए घर में रखे हुए कुत्ते को उन पर कयास किया जा सकता है। (फतहुलबारी 9/609)

बाब 5: अगर शिकार (जख्मी होकर) दो तीन दिन तक गायब रहे (फिर मुर्दा मिले तो क्या हुक्म है?)

٥ - باب: الصَّيْدُ إِذَا غَابَ عَنْهُ يَوْمَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةً

1919: अदी बिन हातिम रजि. की हदीस (1915) जो अभी अभी गुजरी है, यहां इसी रिवायत में इतना इजाफा है। अगर तुमने शिकार को तीर मारा और एक दो दिन के बाद तुम्हें मिला तो अगर तीर के जख्म के अलावा और किसी चोट का निशान उस पर न हो तो खाना सही है और अगर पानी में पड़ा मिला है तो उसे मत खाओ।

١٩١٩ : حديث عَدِيِّ بْنِ حاتِمٍ : تَقَدَّمَ قَرِيبًا، وَزادَ في هٰذِهِ الرِّوايَةِ : (وَإِنْ رَمَيْتَ الصَّيْدَ فَوَجَدْتَهُ بَعْدَ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ لَيْسَ بِهِ إِلَّا أَثَرُ سَهْمِكَ فَكُلْ، وَإِنْ وَقَعَ في الماءِ فَلا تَأْكُلْ). (راجع: ١٩١٥) [رواه البخاري: ٥٤٨٤]

फायदे: पानी में गिरे हुए जानवर को खाने से इसलिए मना किया है कि शायद तीर लगने की वजह से नहीं, बल्कि पानी में गिरने की वजह से मौत हुई हो। ऐसे हालत में उसका खाना जाईज नहीं है, चूनांचे मुस्लिम की रिवायत में इसकी तफसील मौजूद है। (फतहुलबारी 9/611)

बाब 6: टिड्डी खाने का बयान।

٦ - باب: أَكْلُ الجَرَادِ

1920: इब्ने अबी औफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ छ: या सात गजवात में शिरकत की और आपके साथ रहते हुए टिड्डी खाते रहे।

١٩٢٠ : عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَواتٍ أَوْ سِتًّا، كُنَّا نَأْكُلُ مَعَهُ الجَرَادَ. [رواه البخاري: ٥٤٩٥]

फायदे: टिड्डी को जिब्ह करने की जरूरत नहीं, क्योंकि हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हमारे लिए दो मुरदार यानी टिड्डी और मछली और दो खून जिगर और तिल्ली हलाल कर दिये गये हैं। (फतहुलबारी 9/621)

बाब 7: नहर और जिब्ह का बयान।

٧ - باب: النَّحْرُ وَالذَّبْحُ

1921: असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक घोड़ा जिब्ह किया था और उसका गोश्त खाया था और हम उस वक्त मदीना मुनव्वरा में थे।

١٩٢١ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: نَحَرْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَرَسًا، وَنَحْنُ بِالْمَدِينَةِ، فَأَكَلْنَاهُ. [رواه البخاري: ٥٥١١]

फायदे: नहर ऊंट में होता है और दूसरे जानवर जिब्ह किये जाते हैं। घोड़े के लिए नहर और जिब्ह दोनों मरवी हैं और इमाम बुखारी ने इन दोनों को बयान किया है और इशारा है नहर और जिब्ह दोनों का हुक्म एक ही है, क्योंकि एक का इस्तेमाल दूसरे पर जाईज है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि घोड़ा हलाल है। (फतहुलबारी 9/642)

बाब 8: शक्ल बिगाड़ने, बांधकर निशाना लगाना और तीर मारना मना है।

٨ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ المُثْلَةِ وَالْمَصْبُورَةِ وَالْمُجَثَّمَةِ

1922: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वो एक ऐसी जमात के पास से गुजरे जो एक मुर्गी को बांध कर उस पर तीन अन्दाजी कर रहे थे। जब उन्होंने उन्हें देखा तो इधर उधर मुन्तशीर हो गये। इब्ने उमर रजि. ने पूछा, यह किसने किया है? ऐसा करने वाले पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लानत फरमाई है।

١٩٢٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّهُ مَرَّ بِنَفَرٍ نَصَبُوا دَجَاجَةً يَرْمُونَهَا، فَلَمَّا رَأَوْهُ تَفَرَّقُوا، فَقَالَ ٱبْنُ عُمَرَ: مَنْ فَعَلَ هٰذَا؟ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَعَنَ مَنْ فَعَلَ هٰذَا. [رواه البخاري: ٥٥١٥]

फायदे: एक रिवायत में है कि जिसने किसी जानदार को निशानेबाजी के लिए बांधा तो उस पर लानत है। दूसरी रिवायत में है कि जिसने किसी के जिस्म के हिस्सों का काटा, तो वो भी लानत का मुस्तहक है। यकीनन लानत के मुस्तहक होने की फटकार उसके हराम होने की दलील है। (फतहुलबारी 9/644)

1923: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही एक रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हैवान का मुसला यानी शक्ल बिगाड़ने वाले पर लानत फरमाई है।

١٩٢٣ : وَعَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا فِي رِوَايَةٍ أَنَّهُ قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ مَنْ مَثَّلَ بِالحَيَوَانِ. [رواه البخاري: ٥٥١٥]

फायदे: मुसनद इमाम अहमद की रिवायत में है कि जिसने किसी जानदार का मुसला बनाया, फिर तौबा के बगैर मर गया तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उसका मुसला करेगा, यानी उसकी शक्ल को बिगाड़ेगा। (फतहुलबारी 9/644)

बाब 9: मुर्गी के गोश्त खाने का बयान।

٩ - باب: لَحْمُ الدَّجَاجِ

1924: अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुर्गी का गोश्त खाते देखा है।

١٩٢٤ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ دَجَاجًا. [رواه البخاري: ٥٥١٧]

फायदे: बुखारी की दूसरी रिवायत (5518) में इसकी तफसील यूं है कि हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. ने एक आदमी को देखा जो मुर्गी का गोश्त नहीं खाता था। क्योंकि उसने गन्दगी खाते हुए देखा था, इस पर अबू मूसा रजि. ने यह हदीस बयान फरमाई।

बाब 10: हर कुचली वाले दरीन्दे को खाना हराम है।

١٠ - باب: أَكْلُ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ

1925: अबू सालबा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

١٩٢٥ : عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى عَنْ

أكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ. [رواه البخاري: ٥٥٣٠]

वसल्लम ने हर कुचली वाले दरिन्दे को खाने से मना फरमाया है।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर नेशदार दरिन्दे और हर चुंगाल वाले परिन्दे को खाने से मना फरमाया। यह उस वक्त जब कोई परिन्दा अपने पंजे से शिकार करे, जैसे बाज और शकरा वगैरह। आपने यह ऐलान फतह खैबर के मौके पर किया था। (फतहुलबारी 6/656)

बाब 11: मुश्क (कस्तूरी) का बयान।

١١ - باب: المِسْكُ

١٩٢٦ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَثَلُ الجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالسُّوءِ، كَحَامِلِ المِسْكِ وَنَافِخِ الكِيرِ، فَحَامِلُ المِسْكِ: إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً. وَنَافِخُ الكِيرِ: إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا خَبِيثَةً). [رواه البخاري: ٥٥٣٤]

1926: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि अच्छे और बुरे हम नशीन की मिसाल मुश्क बरदार और भट्टी धोंकने वाले लोहार की सी है, क्योंकि मश्क बुरदार (इत्र फरोश) या तौहफे के तौर पर कुछ खुश्बू तुझे देगा या तू उससे खुशबू खरीद लेगा। दोनों न सही उम्दा खुशबू तो सूंघ ही लेगा और भट्टी धोंकने वाला लोहार तो आग उड़ाकर तेरे कपड़े जला देगा या उससे सख्त बदबू जरूर सूंघेगा।

फायदे: मुश्क को हिरन की नाफ से निकाला जाता है। जबकि हदीस मे है कि जो जिन्दा से काटा जाये वो मुर्दार के हुक्म में है। इमाम बुखारी इसकी वजाहत जबाएह के बाब में लाये हैं। मुश्क के पाक और ताहिर होने में किसी को इख्तलाफ नहीं, क्योंकि इसकी हालत बदल चुकी है। अगरचे यह जमा हुआ खून होता, यही वजह है खूने शहीद को इससे तस्बीह दी गई है। (फतहुलबारी 9/660)

बाब 12: जानवर को दागने और उसके चेहरे पर निशान लगाने का बयान।

١٢ - باب: الوَسْمُ وَالْعَلَمُ فِي الصُّورَةِ

1927: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चेहरे पर मारने से मना फरमाया है।

١٩٢٧ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُضْرَبَ الصُّورَةُ. [رواه البخاري: ٥٥٤١]

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में सराहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चेहरे को दागने और उस पर मारने से मना फरमाया है और इसे लानत का सबब करार दिया है। इन्सान के चेहरे पर मारने पर भी वईद आई है। (फतहुलबारी 9/671) बच्चों को तालीम देने वालों के लिए यह हदीस गौर करने की तालीम देती है।

❖❖❖



किताबुल अजही

कुरबानी के बयान में

बाब 1: कुरबानी के गोश्त को खाने और जमा करने का बयान।

١ - باب: مَا يُؤكَلُ مِنْ لُحُومِ الأَضَاحِي وَمَا يُتَزَوَّدُ مِنْهَا

1928: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम में से जो कुरबानी करे, उसे चाहिए कि तीन दिन के बाद तक उसका गोश्त न रखे। फिर दूसरा साल आया तो सहाबा किराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या पिछले साल की तरह सब गोश्त तकसीम करें? आपने फरमाया, खाओ, खिलाओ और जमा करो। उस साल चूंकि लोगों पर तंगी थी। इसलिए मैंने चाहा कि तुम इस तरह गरीबों की मदद करो।

١٩٢٨ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ ضَحَّى مِنْكُمْ فَلاَ يُصْبِحَنَّ بَعْدَ ثَالِثَةٍ وَفِي بَيْتِهِ مِنْهُ شَيْءٌ). فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ، قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، نَفْعَلُ كَمَا فَعَلْنَا الْعَامَ الْمَاضِي؟ قَالَ: (كُلُوا وَأَطْعِمُوا وَٱدَّخِرُوا، فَإِنَّ ذٰلِكَ الْعَامَ كَانَ بِالنَّاسِ جَهْدٌ، فَأَرَدْتُ أَنْ تُعِينُوا فِيهَا). [رواه البخاري: ٥٥٦٩]

फायदे: मुस्लिम की कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुरबानी का गोश्त खुद खाओ, खिलाओ और सदका करो। इससे मालूम होता है कि कुरबानी के तीन हिस्से कर लिये जायें। अपने लिए, दोस्त अहबाब के लिए और गरीबों और कमजोरों के लिए। कुरआन में भी इसका इशारा मिलता है। (फतहुलबारी 10/27)

1929: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि उन्होंने पहले ईद की नमाज पढ़ाई फिर खुत्बा इरशाद फरमाया, फरमाने लगे ऐ लोगों! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन दोनों ईदों (ईदुल फितर, और ईदुल अजहा) में रोजा रखने से मना फरमाया है, क्योंकि ईदुल फितर तो तुम्हारे रोजों के इफ्तार का दिन है और ईदुल अजहा तुम्हारे लिए कुर्बानी का गोश्त खाने का दिन है।

١٩٢٩ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ صَلَّى العِيدَ يَوْمَ الأَضْحَى قَبْلَ الخُطْبَةِ، ثُمَّ خَطَبَ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَدْ نَهَاكُمْ عَنْ صِيَامِ هٰذَيْنِ الْيَوْمَيْنِ، أَمَّا أَحَدُهُمَا فَيَوْمُ فِطْرِكُمْ مِنْ صِيَامِكُمْ، وَأَمَّا الآخَرُ فَيَوْمٌ تَأْكُلُونَ فِيهِ مِنْ نُسُكِكُمْ. [رواه البخاري: ٥٥٧١]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि जिस दिन ईद हो उस दिन रोजा रखना मना है और जिस दिन रोजा हो उस दिन ईद नहीं होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोमवार के दिन रोजा रखते थे, क्योंकि उस दिन पैदा हुए थे, लेकिन हमारे यहां इस दिन ईद मिलाद मनाई जाती है, जो इन अहादीस के खिलाफ है।



किताबुल अशरिबा

मशरूबात (पी जाने वाली चीज) का बयान

1930: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने दुनिया में शराब पी और तौबा न की तो उसे आखिरत की शराब से महरूम रखा जायेगा।

١٩٣٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا : أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ شَرِبَ الخَمْرَ فِي ٱلدُّنْيَا، ثُمَّ لَمْ يَتُبْ مِنْهَا، حُرِمَهَا فِي الآخِرَةِ). [رواه البخاري: ٥٥٧٥]

फायदे: एक रिवायत में है कि शराब पीने वाला जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा। अगर अल्लाह माफ कर दे या अपनी सजा पूरी कर ले तो जन्नत में जा सकता है। या फिर मुमकिन है कि यह वईद उस आदमी के लिए हो जो उसे हलाल समझकर पीता हो। (फतहुलबारी 10/32)

1931: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब कोई जिना करता है तो जिना के वक्त मौमिन नहीं होता। इस तरह जब कोई शराब पीता है तो उस शराब पीते वक्त मौमिन नहीं रहता। यूं ही जब कोई चोरी करता है तो उस वक्त मौमिन रहीं रहता।

١٩٣١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (لاَ يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَشْرَبُ الخَمْرَ حِينَ يَشْرَبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ السَّارِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ). [رواه البخاري: ٥٥٧٨]

फायदेः मतलब यह है कि शराब पीने के वक्त ईमान की रोशनी से महरूम हो जाता है, बल्कि रिवायत में है कि शराब और ईमान मौमिन के दिल में जमा नहीं हो सकते, मुमकिन है कि एक दूसरे को निकाल बाहर फैंके। (फतहुलबारी 10/34)

१९٣٢ : وَعَنْهُ في روايةٍ أيضًا: (وَلَا يَنْتَهِبُ نُهْبَةً ذَاتَ شَرَفٍ، يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ أَبْصَارَهُمْ فِيهَا، حِينَ يَنْتَهِبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ). [رواه البخاري: ٥٥٧٨]

1932: अबू हुरैरा रजि. से ही एक रिवायत में यह भी है कि जब कोई डाका डालता है कि लोग उसकी तरफ नजरें उठा उठाकर देखते हैं तो वो लूटमार के वक्त मौमिन नहीं रहता।

١ - باب: الخَمْرُ مِنَ العَسَلِ وَهُوَ البِتْعُ

बाब 1: बितअ नामी शहद की शराब।

١٩٣٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ البِتْعِ وَهُوَ نَبِيذُ العَسَلِ، وَكَانَ أَهْلُ اليَمَنِ يَشْرَبُونَهُ، فَقالَ رَسولُ ٱللهِ ﷺ: (كُلُّ شَرابٍ أَسْكَرَ فَهُوَ حَرامٌ). [رواه البخاري: ٥٥٨٥]

1933: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बितअ के बारे में पूछा गया जो शहद का नबीज (सिरका) होता है और यमन वाले उसे पीते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो शराब नशा लाये वो हराम है।

फायदेः अबू मूसा अशअरी रजि. ने सवाल किया था, क्योंकि यमन में जौ और शहद से शराब तैयार की जाती थी। मालूम हुआ कि हुरमत की का सबब उसका नशा पैदा करने वाला होना है। और हदीस में है कि जिस चीज के ज्यादा पीने से नशा आये उसका थोड़ा पीना भी हराम है। (फतहुलबारी 10/43)

١٩٣٤ : عَنْ أَبي عامِرٍ الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ

1934: अबू आमिर अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि

يَقُولُ: (لَيَكُونَنَّ مِنْ أُمَّتِي أَقْوَامٌ، يَسْتَحِلُّونَ الْحِرَ وَالْحَرِيرَ، وَالْخَمْرَ وَالْمَعَازِفَ، وَلَيَنْزِلَنَّ أَقْوَامٌ إِلَى جَنْبِ عَلَمٍ، يَرُوحُ عَلَيْهِمْ بِسَارِحَةٍ لَهُمْ، يَأْتِيهِمْ لِحَاجَةٍ فَيَقُولُونَ: ارْجِعْ إِلَيْنَا غَدًا، فَيُبَيِّتُهُمُ اللهُ، وَيَضَعُ الْعَلَمَ، وَيَمْسَخُ آخَرِينَ قِرَدَةً وَخَنَازِيرَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٥٥٩٠]

वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा होंगे जो जिना करने, रेशम पहनने, शराब पीने और बाजे बजाने को हलाल समझेंगे और ऐसा होगा कि कुछ लोग पहाड़ के दामन में पड़ाव करेंगे। शाम के वक्त उनका चरवाहा उनके जानवर उनके पास लायेगा तो कोई फकीर उनके पास आकर अपनी जरूरत का सवाल करेगा, वो जवाब देंगे कि कल आना। तो रात के वक्त अल्लाह तआला उन पर पहाड़ गिराकर उनका काम तमाम कर देगा और कुछ लोगों को शक्ल बिगाड़कर बन्दर और सूअर बना देगा। फिर कयामत तक वो इसी सूरत में रहेंगे।

फायदे: इससे मालूम हुआ कि गाने बजाने के सामान हराम है, लेकिन इमाम इब्ने हजम रजि. गाने वगैरह के जवाज के कायल हैं और इस हदीस को मुनकतअ करार देते हैं। हालांकि दूसरी सन्दों से मालूम होता है कि यह हदीस सही और मुतस्सिल है। (फतहुलबारी 10/52)

बाब 2: बर्तनो या लकड़ी के कुण्डो में नबीज बनाने का बयान।

٢ - باب: الانْتِبَاذُ فِي الأَوْعِيَةِ وَالتَّوْرِ

١٩٣٥ : عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ دَعَا النَّبِيَّ ﷺ فِي عُرْسِهِ، فَكَانَتِ امْرَأَتُهُ خَادِمَهُمْ، وَهِيَ الْعَرُوسُ، قَالَتْ: أَتَدْرُونَ مَا سَقَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ أَنْقَعْتُ لَهُ تَمَرَاتٍ مِنَ اللَّيْلِ فِي تَوْرٍ. [رواه البخاري: ٥٥٩١]

1935: अबू उसैद साअदी रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दावते वलीमा दी तो उनकी औरत जो दुल्हन थी सब लोगों की खिदमत कर रही थी, और कहती थी क्या तुम जानते हो कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या

पिलाया था। मैंने आपके लिए रात से ही थोड़ी सी खजूरें कुण्डे में भिगाई थीं। (उनका पानी पिलाया था)

फायदेः इस हदीस से नबीज पीने का सबूत मिलता है। बशर्ते कि जोश पैदा होने से इसका जायका न तब्दील हो जाये। क्योंकि जोश आने से वो हराम हो जाता है। कुछ रिवायतों में वजाहत है कि नबीज तैयार होने से एक दिन और एक रात तक पिया जा सकता है।

(फतहुलबारी 10/57)

٣ - باب: تَرْخِيصُ النَّبِيِّ ﷺ فِي الأَوْعِيَةِ وَالظُّرُوفِ بَعْدَ النَّهْيِ

बाब 3: शराब के बर्तनों से मनाही के बाद फिर आपकी तरफ से उनकी इजाजत देने का बयान।

١٩٣٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الأَسْقِيَةِ، قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: لَيْسَ كُلُّ النَّاسِ يَجِدُ سِقَاءً، فَرَخَّصَ لَهُمْ فِي الْجَرِّ غَيْرِ الْمُزَفَّتِ. [رواه البخاري: ٥٥٩٣]

1936: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शराब से मना फरमाया तो आपसे पूछा कि हर आदमी को बर्तन मुहैया नहीं हो सकता तो आप ने उन्हें ऐसा मटका इस्तेमाल करने की इजाजत दे दी जो रोगनदार न हो।

फायदेः इस्लाम के शुरू के वक्त मदीना में यह हुक्म था कि जिन बर्तनों में शराब तैयार की जाती है, उनमें नबीज न बनाया जाये। ताकि शराब की तरफ रूझान पैदा न हो। जब शराब की हुरमत दिलों में बैठ गई तो इस पाबन्दी को उठा दिया गया। (फतहुलबारी 10/58)

٤ - باب: مَنْ رَأَى أَنْ لَا يَخْلِطَ الْبُسْرَ وَالتَّمْرَ إِذَا كَانَ مُسْكِرًا وَأَنْ لَا يَجْعَلَ إِدَامَيْنِ فِي إِدَامٍ

बाब 4: जिसने पकी खजूरों को मिलाकर भिगोने से मना किया वो या तो नशा आवर होने की वजह से है या इस बिना पर कि दो सालन मिल जाते हैं।

1937: अबू कतादा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गदरी खजूर और पुख्ता खजूर निज खजूर और अंगूर को नबीज बनाने के लिए मिलाकर भिगोने से मना फरमाया है और आपका इरशाद गरामी है, नबीज बनाने के लिए इन चीजों में से हर एक को अलग अलग भिगोया जाये।

١٩٣٧ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُجْمَعَ بَيْنَ التَّمْرِ وَالزَّهْوِ، وَالتَّمْرِ وَالزَّبِيبِ، وَلْيُنْبَذْ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى حِدَةٍ. [رواه البخاري: ٥٦٠٢]

फायदे: इमाम बुखारी का मतलब यह है कि गदरी और पुख्ता खजूर या अंगूर और खजूर को मिलाकर नबीज बनाने की मनाही इसलिए है कि ऐसा करने से जल्दी नशा पैदा हो जाता है। अगर नशा पैदा न हो तो भी दो सालन मिलाकर इस्तेमाल करना सुन्नत के खिलाफ है।

(फतहुलबारी 10/167)

बाब 5: दूध पीने का बयान और फरमाने इलाही कि वो खून और गोबर के बीच से होकर आता है।

٥ - باب: شُرْبُ اللَّبَنِ وَقَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ﴾

1938: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू हुमैद अनसारी रजि. मकामे नकीअ से एक बर्तन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए दूध लाये तो आपने फरमाया, तुम इसे ढांक कर क्यों न लाये। चाहे इस पर लकड़ी का टुकड़ा ही रख देते।

١٩٣٨ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ أَبُو حُمَيْدٍ بِقَدَحٍ مِنْ لَبَنٍ مِنَ النَّقِيعِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَلَّا خَمَّرْتَهُ: وَلَوْ تَعْرِضَ عَلَيْهِ عُودًا). [رواه البخاري: ٥٦٠٥]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि दूध या पानी के बर्तन को ढांक कर रखना चाहिए, क्योंकि खुला रखने से मिट्टी या किसी कीड़े-मकोड़े के

गिरने का डर है।

1939: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बेहतरीन सदका यह है कि दूध देने वाली ऊंटनी या उम्दा बकरी दी जाये जो सुबह व शाम दूध का एक बर्तन भर दे।

١٩٣٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (نِعْمَ الصَّدَقَةُ اللِّقْحَةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً، وَالشَّاةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً، تَغْدُو بِإِنَاءٍ، وَتَرُوحُ بِآخَرَ). [رواه البخاري: ٥٦٠٨]

फायदेः बुखारी की एक रिवायत (2629) में बेहतरीन सदके के बजाये बेहतरीन तौहफे के अल्फाज हैं, जिससे मालूम होता है कि यहां सदका गैर हकीकी मायनों में इस्तेमाल हुआ। क्योंकि अगर सदका हकीकी हो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए जाईज न होता। (फतहुलबारी 5/244)

बाब 6: दूध में पानी मिलाकर पीने का बयान।

٦ - باب: شُرْبُ اللَّبَنِ بِالْمَاءِ

1940: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने एक सहाबी रजि. के साथ किसी अनसारी रजि. के पास तशरीफ ले गये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी से फरमाया, अगर तेरे पास रात का ठण्डा पानी मश्क में है तो लेकर आओ। वरना हम जारी पानी को मुंह लगाकर पी लेते हैं। रावी का बयान है कि वो आदमी अपने बाग में पानी दे रहा था। उसने कहा, ऐ

١٩٤٠ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ هٰذِهِ اللَّيْلَةَ فِي شَنَّةٍ وَإِلَّا كَرَعْنَا). قَالَ: وَالرَّجُلُ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَائِطِهِ، قَالَ: فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ عِنْدِي مَاءٌ بَائِتٌ، فَانْطَلِقْ إِلَى الْعَرِيشِ، قَالَ: فَانْطَلَقَ بِهِمَا، فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ، ثُمَّ حَلَبَ عَلَيْهِ مِنْ دَاجِنٍ لَهُ، فَشَرِبَ

رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ شَرِبَ الرَّجُلُ الَّذِي جَاءَ مَعَهُ. [رواه البخاري: ٥٦١٣]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मेरी झौंपड़ी में तशरीफ रखे। मेरे पास रात का ठण्डा पानी मौजूद है। चूनांचे वो दोनों को वहां ले आया। फिर एक बड़े प्याले में पानी डालकर ऊपर से अपनी घरेलू बकरी का दूध निकाल कर उसमें मिलाया। पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पिया, फिर जो आपके साथ थे, उन्होंने भी पिया।

फायदेः एक रिवायत में जारी पानी को मुंह लगाकर पीने से मनाही फरमाई है। लेकिन उसकी सनद कमजोर है। यह भी मुमकिन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान जाईह होने या इन्तेहाई जरूरत के पेशे नजर ऐसा किया हो। (फतहुलबारी 10/77)

---

٧ - باب: الشُّرْبُ قَائِمًا

बाब 7: खड़े होकर पानी पीना।

١٩٤١ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ أَتَى عَلَى بَابِ الرَّحَبَةِ بِمَاءٍ فَشَرِبَ قَائِمًا، فَقَالَ: إِنَّ نَاسًا يَكْرَهُ أَحَدُهُمْ أَنْ يَشْرَبَ وَهُوَ قَائِمٌ، وَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَعَلَ كَمَا رَأَيْتُمُونِي فَعَلْتُ. [رواه البخاري: ٥٦١٥]

1941: अली रजि. से रिवायत है कि वो (मस्जिद कुफा) में बड़े चबूतरे के दरवाजे पर आये और खड़े होकर पानी पिया फिर कहने लगे कुछ लोग खड़े खड़े पानी पीने को नापसन्द समझते हैं। हालांकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह पानी पीते देखा है, जिस तरह इस वक्त तुम मुझे देख रहे हो।

फायदेः मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर पीने से मना फरमाया है। मुहद्दसीन किराम ने टकराव को दूर करने लिए यह मौकूफ इख्तेयार किया है कि यह नई तंजीही है, हराम नहीं। यानी बेहतर है कि बैठकर पानी वगैरह पिया जाये। (फतहुलबारी 10/84)

1942: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आबे-जमजम खड़े होकर पिया था।

١٩٤٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: شَرِبَ النَّبِيُّ ﷺ قَائِمًا مِنْ زَمْزَمَ. [رواه البخاري: ٥٦١٧]

फायदे: वजूअ से बचा हुआ पानी और आबे-जमजम खड़े होकर पीने के बारे में मुख्तलिफ रिवायत आई है।

बाब 8: मश्क का मुंह मोड़कर उससे पानी पीना जाईज नहीं।

٨ - باب: اخْتِنَاثُ الأَسْقِيَةِ

1943: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मश्क को उल्टाकर उसके मुंह से मुंह लगाकर पानी पीने से मना फरमाया है।

١٩٤٣ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ ٱخْتِنَاثِ الأَسْقِيَةِ. يَعْنِي الشُّرْبَ مِنْ أَفْوَاهِهَا. [رواه البخاري: ٥٦٢٥]

फायदे: इस हुक्मे इन्तेनाई का सबब यह हुआ कि एक आदमी मश्कीजे के मुंह से पानी पीने लगा तो अन्दर से सांप निकला। इसी तरह का एक वाक्या मनाही के बाद भी पेश आया। (फतहुलबारी 10/91)

1944: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मश्कीजे और मश्क हर दो के मुंह से पानी पीने की मनाही फरमाई है। और इससे भी मना फरमाया कि कोई अपने पड़ौसी को अपनी दीवार में खूंटी न गाड़ने दे।

١٩٤٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ الشُّرْبِ مِنْ فَمِ القِرْبَةِ أَوِ السِّقَاءِ، وَأَنْ يَمْنَعَ أَحَدُكُمْ جَارَهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَةً فِي دَارِهِ. [رواه البخاري: ٥٦٢٧]

फायदे: मश्कीजे के मुंह से पानी पीने के बारे में कई वजहें हो सकती

है। मुमकिन है कि अन्दर से कोई जहरीला कीड़ा पेट में चला जाये या तेजी से पानी पीने की वजह से बारीक शरयानों को नुकसान पहुंच जाये या पानी जोर से आने की वजह से उसके कपड़े वगैरह खराब हो जायें या सांस के जरीये भाप पानी में दाखिल हो जायें, जिससे दूसरों को नफरत हो। (फतहुलबारी 10/91)

बाब 9: पीते वक्त बर्तन में सांस लेने की मनाही।

٩ - باب: النَّهْيُ عن التَّنَفُّسِ في الإناء

[باب الشرب بنفسين أو ثلاثة]

1945: अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बर्तन से पानी पीते वक्त तीन बार सांस लिया करते थे।

١٩٤٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ يَتَنَفَّسُ ثَلاثًا. [رواه البخاري: ٥٦٣١]

फायदे: पीने के आदाब में है कि बर्तन के अन्दर सांस न लिया जाये और न ही उसमें फूंक मारी जाये। बल्कि मुंह को बर्तन से अलग कर के सांस लेना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बर्तन को मुंह के करीब करते तो बिस्मिल्लाह कहते और बर्तन को मुंह से हटाते वक्त अल्हम्दुलिल्लाह कहते थे। (फतहुलबारी 10/94)

बाब 10: चांदी के बर्तन में पीने की मनाही।

١٠ - باب: آنِيَةُ الفِضَّةِ

1946: उम्मे मौमिनीन उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी चांदी के बर्तन में पानी पीता है, वो जैसे अपने पेट में दोजख की आग घूंट घूंट कर पीता है।

١٩٤٦ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ورَضِيَ ٱللهُ عَنْها، أَنَّ رَسولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الَّذِي يَشْرَبُ فِي آنِيَةِ الفِضَّةِ إِنَّما يُجَرْجِرُ فِي بَطْنِهِ نَارَ جَهَنَّمَ). [رواه البخاري: ٥٦٣٤]

फायदेः एक रिवायत में है कि जिसने सोने चांदी के बर्तनों में पिया वो कयामत के दिन जन्नत में मिलने वाले सोने चांदी के बर्तनों से महरूम रहेगा। इससे मालूम हुआ कि सोने चांदी के बर्तनों को किसी किस्म के इस्तेमाल में नहीं लाना चाहिए। (फतहुलबारी 10/97)

बाब 11: बड़े प्याले से पानी पीना।

١١ - باب: الشُّرْبُ فِي الأَقْدَاحِ

1947: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सकिफा बनी साअदा में तशरीफ लाये तो फरमाया, ऐ सहल रजि. हमें पानी पिलाओ। तो मैंने उन्हें एक प्याले से पानी पिलाया। रावी कहते हैं कि सहल रजि. ने वही प्याला हमें निकालकर दिखाया, फिर हमने भी उसमें पानी पिया। बाद अजां उमर बिन अब्दुल अजीज रजि. ने दरख्वास्त की, यह प्याला उन्हें हदीया दे। चूनांचे उन्होंने उन्हें बतौरे हिबा दे दिया।

١٩٤٧ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جاءَ النَّبِيُّ ﷺ سَقِيفَةَ بَنِي سَاعِدَةَ فَقَالَ: (ٱسْقِنَا يَا سَهْلُ). فَخَرَجْتُ لَهُمْ بِهٰذَا الْقَدَحِ فَأَسْقَيْتُهُمْ فِيهِ. قَالَ الرَّاوِي: فَأَخْرَجَ لَنَا سَهْلٌ ذٰلِكَ الْقَدَحَ فَشَرِبْنَا مِنْهُ. قَالَ: ثُمَّ ٱسْتَوْهَبَهُ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بَعْدَ ذٰلِكَ فَوَهَبَهُ لَهُ. [رواه البخاري: ٥٦٣٧]

फायदेः दुनियादार किस्म के फासिक व फाजर लोगों की आदत है कि शराब पीने के लिए बड़े बड़े प्यालों का चुनाव करते हैं और बड़े फख्र से शराब पीते हैं। फिर भी अगर शराब न पीना और घमण्ड न करना हो तो ऐसे बर्तनों का इस्तेमाल करना जाइज है। (फतहुलबारी 10/98)

1948: अनस रजि. से रिवायत है कि उनके पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्याला था। उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस प्याले से बहुत मुद्दत

١٩٤٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ كَانَ عِنْدَهُ قَدَحُ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: لَقَدْ سَقَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِي هٰذَا الْقَدَحِ أَكْثَرَ مِنْ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: وَكَانَ فِيهِ حَلْقَةٌ مِنْ

حَدِيدٍ، فَأَرَادَ أَنَسٌ أَنْ يَجْعَلَ مَكَانَهَا حَلْقَةً مِنْ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ، فَقَالَ لَهُ أَبُو طَلْحَةَ: لَا تُغَيِّرَنَّ شَيْئًا صَنَعَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَتَرَكَهُ. [رواه البخاري: ٥٦٣٨]

तक पानी पिलाया है। उस प्याले में लोहे का एक कड़ा भी था। अनस रजि. ने चाहा कि उस लोहे के कड़े की जगह सोने या चांदी का कड़ा डलवायें। तब अबू तलहा रजि. ने उन्हें समझाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बनाई हुई चीज को नहीं बदलना चाहिए। चूनांचे उन्होंने फिर वैसे ही रहने दिया।

फायदे: इस हदीस पर इमाम बुखारी ने यूं उनवान कायम किया है "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्याले और बर्तनों में पानी पीना" इमाम बुखारी का मतलब यह है कि आपकी छोड़ी हुई चीजें सदका है, इसलिए आपकी वफात के बाद इससे फायदा उठाया जा सकता है। (फतहुलबारी 10/99)



किताबुल मरजा

मरीजों के बयान में

बाब 1: कफ्फार-ए-मरीज का बयान।

١ - باب: مَا جَاءَ فِي كَفَّارَةِ المَرَضِ

1949: अबू सईद और अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मुसलमानों को जो परेशानी, गम, रंज, तकलीफ और दुख पहुंचता है, यहां तक कि अगर उसको कोई कांटा भी चुभता है तो अल्लाह तआला उस तकलीफ को उसके गुनाहों का कफ्फारा बना देता है।

١٩٤٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا يُصِيبُ المُسْلِمَ، مِنْ نَصَبٍ وَلاَ وَصَبٍ، وَلاَ هَمٍّ وَلاَ حَزَنٍ وَلاَ أَذًى وَلاَ غَمٍّ، حَتَّى الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا، إِلَّا كَفَّرَ ٱللهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ). [رواه البخاري: ٥٦٤١، ٥٦٤٢]

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार रात के वक्त बहुत ज्यादा तकलीफ की वजह से बिस्तर पर करवटें लेने लगे। तो हजरत आइशा रजि. ने उसके बारे में पूछा। इस पर आपने यह हदीस बयान फरमाई। (फतहुलबारी 10/105)

1950: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मौमिन की मिसाल जैसे खेत का हरा-भरा हिस्सा और नर्म व नाजुक पौधा हो, हवा आई

١٩٥٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَثَلُ المُؤْمِنِ كَمَثَلِ الخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ، مِنْ حَيْثُ أَتَتْهَا الرِّيحُ كَفَأَتْهَا، فَإِذَا اعْتَدَلَتْ تَكَفَّأُ بِالبَلاَءِ. وَالفَاجِرُ

तो झुक गया जब हवा खत्म हो गई तो सीधा हो गया। ऐसे मुसलमान मुसीबत आने से झुक जाता है और काफिर की मिसाल सनूबर के पेड़ की सी है जो सख्त होता है और सीधा रहता है। लेकिन जब अल्लाह चाहता है तो उसे जड़ से उखाड़ फैंकता है।

كالأَرْزَةِ، صَمَّاءَ مُعْتَدِلَةً، حَتَّى يَقْصِمَهَا ٱللهُ إِذَا شَاءَ). [رواه البخاري: ٥٦٤٤]

फायदे: मतलब यह है कि बन्दा मौमिन को दुनिया में तरह तरह की मुसीबतों से वास्ता पड़ता है। वो ऐसे हालात में सब्र व इस्तेकामत का मुजाहरा करता है कि उनके दूर होने पर अल्लाह का शुक्र अदा करता है, जबकि मुनाफिक या काफिर खूब आराम में रहता है, यहां तक कि अचानक मौत से उसे खत्म कर दिया जाता है। (फतहुलबारी 10/107)

1951: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा करता है तो उसे मुसीबत में मुब्तला कर देता है।

١٩٥١ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ يُرِدِ ٱللهُ بِهِ خَيْرًا يُصِبْ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٥٦٤٥]

फायदे: एक और हदीस में है कि बन्दा मौमिन के लिए अल्लाह तआला की तरफ से एक बुलन्द मकाम फिक्स कर दिया जाता है। लेकिन अच्छे कामों के जरीये उसे हासिल नहीं कर सकता तो अल्लाह तआला उसे किसी बीमारी या जहनी तकलीफ में मुब्तला कर के उसे वहां पहुंचा देता है। (फतहुलबारी 10/109)

बाब 2: बीमारी की शिद्दत का बयान।

٢ - باب: شِدَّةُ المَرَضِ

1952: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, मैंने बीमारी की सख्ती

١٩٥٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَشَدَّ

عَلَيْهِ الْوَجَعُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٥٦٤٦]

उस कद्र किसी पर नहीं देखी, जितनी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वाकेअ हुई थी।

फायदेः एक हदीस में है कि बन्दा मौमिन को उसके ईमान व यकीन के मुताबिक आजमाया जाता है। चूंकि हजरत अम्बिया अलैहि. का ईमान बहुत मजबूत होता है। इसलिए उन्हें सख्त मसायब व तकलीफों के दोचार किया जाता है। (फतहुलबारी 10/111)

١٩٥٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ في مَرَضِهِ، وَهُوَ يُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا، وَقُلْتُ: إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا، قُلْتُ: إِنَّ ذَاكَ بِأَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ؟ قَالَ: (أَجَلْ، ما مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى إِلَّا حاتَّ ٱللهُ عَنْهُ خَطَايَاهُ، كَما تَحَاتُّ وَرَقُ الشَّجَرِ). [رواه البخاري: ٥٦٤٧]

1953: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास इस हालत में हाजिर हुआ कि आप सख्त बुखार में मुब्तला थे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको तो बहुत सख्त बुखार है। गालिबन इसलिए कि आपको दोहरा सवाब मिलता है? आपने फरमाया, हां, बेशक मुसलमान को कोई तकलीफ नहीं पहुंचती। मगर अल्लाह उसकी वजह से उसके गुनाह ऐसे झाड़ देता है जैसे पेड़ के सूखे पत्ते झड़ जाते हैं।

फायदेः तबरानी की एक रिवायत में है कि मौमिन पर तकलीफ आने की वजह से उसकी नेकियों में इजाफा और दरजात में बुलन्दी होती है। और उसकी बुराईयों को भी दूर कर दिया जाता है।

(फतहुलबारी 10/105)

٣ - باب: فَضْلُ مَنْ يُصْرَعُ مِنَ الرِّيحِ

बाब 3: जिसे बन्दिश हवा की वजह से मिरगी आये, उसकी फजीलत का बयान।

1954: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने अपने कुछ साथियों से फरमाया, क्या मैं तुम्हें एक जन्नती औरत न दिखाऊं? उन्होंने कहा, जरूर दिखायें। फरमाने लगे यह काली औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई थी और कहा था कि मुझे मिरगी का दौरा पड़ता है और इस हालत में मेरा सतर खुल जाता है। लिहाजा आप अल्लाह से मेरे लिए दुआ कीजिए। आपने फरमाया, तुम चाहो तो सब्र करो और उसके बदले तुम्हें जन्नत मिलेगी और अगर चाहो तो तेरे लिए दुआ करता हूँ कि अल्लाह तुम्हें इस तकलीफ से निजात दे। वो कहने लगी, मैं सब्र करूंगी। फिर कहने लगी, मेरा जो सतर खुल जाता है, उसके लिए अल्लाह से दुआ कीजिए कि यह न खुला करे तो आपने उसके लिए दुआ की (चूनांचे फिर कभी दौरे के दौरान सतर नहीं खुला)

١٩٥٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ قَالَ لِبَعْضِ أَصْحَابِهِ: أَلاَ أُرِيكَ ٱمْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ؟ قَالَ: بَلَى، قَالَ: هٰذِهِ المَرْأَةُ السَّوْدَاءُ، أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنِّي أُصْرَعُ، وَإِنِّي أَتَكَشَّفُ، فَٱدْعُ ٱللهَ لِي، قَالَ: (إِنْ شِئْتِ صَبَرْتِ وَلَكِ الجَنَّةُ، وَإِنْ شِئْتِ دَعَوْتُ ٱللهَ أَنْ يُعَافِيَكِ). فَقَالَتْ: إِنِّي أَصْبِرُ، فَقَالَتْ: إِنِّي أَتَكَشَّفُ، فَٱدْعُ ٱللهَ أَنْ لاَ أَتَكَشَّفَ، فَدَعَا لَهَا.
[رواه البخاري: ٥٦٥٢]

फायदे: आम तौर पर डाक्टरों ने मिरगी की दो वजूहात बयान की हैं कि एक यह कि खून गाड़ा होने की वजह से दिमाग की बारीक नसों में दौरा नहीं कर सकता, जिसकी वजह से दिमागी तवाजुन (बैलेन्स) बरकरार नहीं रहता। इसकी निशानी यह है कि मरीज के मुंह से झाग बहती है। दूसरी यह कि खबीस जिन्नों की खबीस हरकतें मिरगी का सबब है। रिवायत से मालूम होता है कि उस औरत को दूसरी किस्म की मिरगी की बीमारी थी। (फतहुलबारी 10/114, 115)

बाब 4: जिसकी आंखों की रोशनी जाती रहे, उसकी फजीलत।

٤ - باب: فَضْلُ مَنْ ذَهَبَ بَصَرُهُ

١٩٥٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ ٱللهَ تَعالَىٰ قالَ: إِذَا ٱبْتَلَيْتُ عَبْدِي بِحَبِيبَتَيْهِ فَصَبَرَ، عَوَّضْتُهُ مِنْهُمَا الجَنَّةَ). يُرِيدُ: عَيْنَيْهِ. [رواه البخاري: ٥٦٥٣]

1955: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना, अल्लाह तआला का इरशाद गरामी है, मैं अपने जिस बन्दे की दो प्यारी चीजें यानी दोनों आंखें ले लेता हूँ और वो सब्र करता है तो मैं उसके बदले में उसे जन्नत अता करता हूँ।

फायदे: हदीस में मजकूरा बशारत के हुसूल के लिए यह शर्त है कि सदमा पहुंचते ही सब्र करे और अल्लाह तआला से अच्छे बदले की उम्मीद रखें, इस पर किसी किस्म की घबराहट या शिकायत का इजहार न करे। (फतहुलबारी 10/116)

---

٥ - باب: عِيَادَةُ المَرِيضِ

बाब 5: बीमार की देखभाल करना।

١٩٥٦ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: جاءَنِي النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُنِي، لَيْسَ بِرَاكِبِ بَغْلٍ وَلَا بِرْذَوْنٍ. [رواه البخاري: ٥٦٦٤]

1956: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी देखभाल के लिए तशरीफ लाये। न खच्चर पर सवार थे, और न घोड़े पर (बल्कि पैदल तशरीफ लाये)

फायदे: मरीज को देखभाल के वक्त तसल्ली देना चाहिए और उसके लिए दुआ भी करना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी बीमार की देखभाल करते तो फरमाते, खैर है कोई खतरा नहीं, अगर अल्लाह ने चाहा तो यह बीमारी गुनाहों का कफ्फारा होगी।

(फतहुलबारी 10/121)

---

٦ - باب: مَا رُخِّصَ لِلْمَرِيضِ أَنْ يَقُولَ إِنِّي وَجِعٌ أَوْ وَا رَأْسَاه أَو اشتدّ

बाब 6: मरीज का यूं कहना कि मैं बीमार हूँ... इस दलील की वजह से कि

بِي الْوَجَعُ وَقَوْلُ أَيُّوبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: ﴿أَنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

फरमाने इलाही है, हजरत अय्यूब अलैहि. ने कहा, अल्लाह मुझे तकलीफ पहुंची है और तू बहुत रहम करने वाला है।

١٩٥٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قالَتْ: وَارَأْسَاهُ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ذَاكِ لَوْ كانَ وَأَنَا حَيٌّ فَأَسْتَغْفِرَ لَكِ وَأَدْعُوَ لَكِ). فَقَالَتْ عائِشَةُ: وَاثُكْلِيَاهُ، وَٱللهِ إِنِّي لأَظُنُّكَ تُحِبُّ مَوْتِي، وَلَوْ كانَ ذٰلِكَ، لَظَلِلْتَ آخِرَ يَوْمِكَ مُعَرِّسًا بِبَعْضِ أَزْوَاجِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (بَلْ أَنَا وَارَأْسَاهُ، لَقَدْ هَمَمْتُ، أَوْ أَرَدْتُ، أَنْ أُرْسِلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ وَٱبْنِهِ وَأَعْهَدَ أَنْ يَقُولَ القَائِلُونَ، أَوْ يَتَمَنَّى المُتَمَنُّونَ، ثُمَّ قُلْتُ: يَأْبَى ٱللهُ وَيَدْفَعُ المُؤْمِنُونَ، أَوْ يَدْفَعُ ٱللهُ وَيَأْبَى المُؤْمِنُونَ). [رواه البخاري: ٥٦٦٦]

1957: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने हाय सरदर्द कहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फरमाया (तुझे क्या फिक्र है?) अगर इसी दर्द से मेरी जिन्दगी में ही तुम्हारा खात्मा हो जाता है तो मैं तेरे लिए दुआ और इस्तगफार करूंगा। तब आइशा रजि. ने कहा, हाय अफसोस! अल्लाह की कसम! शायद आप मेरी मौत चाहते हैं ताकि मैं मर जाऊं तो आज शाम को ही अपनी किसी दूसरी बीवी के पास रात गुजारें। आपने फरमाया, यह बात हरगिज नहीं, बल्कि मैं तो खुद सरदर्द में मुब्तला हूँ और मैं यह चाहता हूँ या इरादा करता हूँ कि मैं अबू बकर और उनके बेटे रजि. के पास किसी को भेजूं और खिलाफत की वसीयत करूं ताकि बाद में कोई न कह सके और न कोई उसकी आरजू कर सके। फिर मैंने सोचा कि अल्लाह तआला को तो खुद किसी दूसरे की खिलाफत मन्जूर नहीं और न मुसलमान किसी दूसरे की खिलाफत को कबूल करेंगे।

फायदेः चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आरजू और उम्मीद के मुताबिक आपकी वफात के बाद हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. को खलीफा मुन्तखब कर लिया गया।

बाब 7: मरीज को मौत की आरजू करना मना है।

٧ - باب: تَمَنِّي المَرِيضِ المَوْتَ

1958: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में से किसी को रंज और मुसीबत की वजह से मौत की तमन्ना नहीं करना चाहिए। अगर कोई ऐसी ही मजबूरी हो तो यूं कहो, ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिए जिन्दगी बेहतर है, मुझे जिन्दा रख और अगर मेरे लिए मरना बेहतर है तो मुझे उठा ले।

١٩٥٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ المَوْتَ لِضُرٍّ أَصَابَهُ، فَإِنْ كانَ لاَ بُدَّ فَاعِلًا، فَلْيَقُلْ: اَللَّهُمَّ أَحْيِنِي ما كانَتِ الحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي ما كانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي). [رواه البخاري: ٥٦٧١]

फायदे: मौत की आरजू करने के बारे में इमाम बुखारी का यह मौकूफ है कि अगर मौत की निशानियां और आसार दिखाई न दे तो मौत की तमन्ना करना सही नहीं। हां! अगर मौत सामने नजर आ जाये तो अच्छी मौत की तमन्ना करना जाईज है। जैसा कि (हदीस नम्बर 5674) से वाजेह है। (फतहुलबारी 10/130)

1959: खब्बाब रजि. से रिवायत है, उन्होंने अपने जिस्म पर सात दाग लगवाये थे (सख्त बीमारी की वजह से) वो कहने लगे, हमारे साथी मुझ से पहले गुजर गये और दुनिया उनके अज्रो सवाब में कोई कमी न कर सकी और हमने तो दुनिया की दौलत इतनी पाई कि उसको खर्च करने के लिए मिट्टी के सिवा और कोई जगह नहीं। अगर रसूलुल्लाह

١٩٥٩ : عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ ٱكْتَوَى سَبْعَ كَيَّاتٍ، فَقَالَ: إِنَّ أَصْحَابَنَا الَّذِينَ سَلَفُوا مَضَوْا وَلَمْ تَنْقُصْهُمُ الدُّنْيَا، وَإِنَّا أَصَبْنَا ما لاَ نَجِدُ لَهُ مَوْضِعًا إِلَّا التُّرَابَ، وَلَوْلاَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ. [رواه البخاري: ٥٦٧٢]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें मौत मांगने से मना न किया होता तो मैं जरूर अपने लिए मौत की दुआ करता।

फायदे: इस हदीस के आखिर में रावी का बयान है कि हम दोबारा हजरत जनाब खब्बाब रजि. के पास आये तो वो दीवार बना रहे थे। हमें देखकर कहने लगे कि मुसलमान को हर जगह खर्च करने पर सवाब मिलता है। मगर इमारत पर खर्च करने में कोई सवाब नहीं। यह उस सूरत में है, जब जरूरत से ज्यादा तामीरात की जाये। इसकी कुछ अहादीस में वजाहत भी है। (फतहुलबारी 11/93)

١٩٦٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لَنْ يُدْخِلَ أَحَدًا عَمَلُهُ الجَنَّةَ). قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (لاَ، وَلاَ أَنَا، إِلَّا أَنْ يَتَغَمَّدَنِي ٱللهُ بِفَضْلٍ وَرَحْمَةٍ، فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا، وَلاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ المَوْتَ: إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزْدَادَ خَيْرًا، وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعْتِبَ). [رواه البخاري: ٥٦٧٣]

1960: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि किसी आदमी को उसका अमल जन्नत में नहीं ले जा सकेगा (बल्कि अल्लाह का फजलो करम दरकार है) लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको भी नहीं? आपने फरमाया, मुझे भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह तआला मुझे अपने दामने रहमत में छिपा ले। लिहाजा इख्लास से अमल करो और ऐतदाल से मेहनत करो। लेकिन किसी सूरत में मौत की आरजू न करो। क्योंकि अगर नेक आदमी है तो और नेकियां करेगा और अगर गुनाहगार है तो शायद तौबा की तौफीक नसीब हो जाये।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में दाखिला सिर्फ अल्लाह की रहमत से होगा, जबकि कुछ कुरआनी आयात (नहल: 32) से मालूम होता है कि अच्छे काम जन्नत में दाखिल होने का सबब होंगे।

इनमें ततबीक इस तरह है कि बिलाशुबा जन्नत का हुसूल तो रहमते इलाही की बिना पर होगा जो अच्छे कामों के नतीजे में शामिल होगी। अलबत्ता जन्नत में दर्जात का हुसूल और मनाजिल की तकसीम अच्छे कामों की वजह से होगी निज अच्छे काम भी अल्लाह की रहमत और उसकी बहतरीन तौफीक से ही होती हैं। (फतहुलबारी 11/296)

---

८ - باب: دُعَاءُ العائِدِ لِلْمَرِيضِ

बाब 8: देखभाल करने वाला मरीज के लिए क्या दुआ मांगे।

١٩٦١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِي ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، كانَ إِذَا أَتَى مَرِيضًا أَوْ أُتِيَ بِهِ إِلَيْهِ، قالَ: (أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ، ٱشْفِ وَأَنْتَ الشَّافِي، لاَ شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ، شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا). [رواه البخاري ٥٦٧٥]

1961: आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी मरीज के पास तशरीफ ले जाते या कोई मरीज आप के पास लाया जाता तो आप यह दुआ पढ़ते: "परवरदिगार! लोगों की बीमारी दूर कर दे, उन्हें शिफा इनायत फरमा। तेरे अलावा कोई शिफा देने वाला नहीं है। तू ही शिफा देने वाला है और शिफा दर हकीकत तेरी ही शिफा है, जो किसी बीमारी को नहीं रहने देती।"

फायदे: गुजरी हुई अहादीस से मालूम हुआ था कि बीमारी गुनाहों का कफ्फारा और सवाब का जरीया है। ऐसे हालात में दुआ-ए-शिफा की क्या जरूरत है? इस का जवाब यह है कि दुआ एक इबादत है, इस पर भी हमें सवाब मिलता है और बीमारी सवाब और गुनाहों का कफ्फारा आते ही बन जाती है। बशर्ते कि उस पर सब्र और इस्तकामत का मुजाहरा किया जाये। कोई शिकायत जुबान पर न लाई जाये।

(फतहुलबारी 10/132)

किताबुत्तिब
इलाज के बयान में

बाब 1: अल्लाह ने जो बीमारियां पैदा की हैं, उन सबके लिए शिफा भी पैदा फरमाई है।

١ - باب: مَا أَنْزَلَ الله دَاءً إِلَّا أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً

1962: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने कोई ऐसी बीमारी नहीं उतारी जिसकी शिफा पैदा न की हो।

١٩٦٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا أَنْزَلَ ٱللهُ دَاءً إِلَّا أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً). [رواه البخاري: ٥٦٧٨]

फायदे: कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि मौत और बुढ़ापे के लिए कोई इलाज नहीं है। निज हदीस में है कि हराम चीजों में शिफा नहीं, लिहाजा हराम चीज बतौर दवा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

(फतहुलबारी 10/135)

बाब 2: शिफा तीन चीजों में है।

٢ - باب: الشِّفَاءُ فِي ثَلاَثٍ

1963: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि शिफा तीन चीजों में है। शहद पीने में, पछने

١٩٦٣ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الشِّفَاءُ فِي ثَلاَثَةٍ: شَرْبَةِ عَسَلٍ، وَشَرْطَةِ مِحْجَمٍ، وَكَيَّةِ نَارٍ، وَأَنْهَى أُمَّتِي عَنِ الْكَيِّ). [رواه البخاري: ٥٦٨١]

लगवाने में और आग से दाग देने में। लेकिन मैं अपनी उम्मत को दाग देने से मना करता हूँ।

फायदेः आग से दाग देकर इलाज करना हराम नहीं है, बल्कि नही तंजीही (बचना बेहतर है) पर महमूल करना चाहिए। क्योंकि हजरत साद बिन मआज रजि. को आपने खुद दाग दिया था। चूंकि इससे मरीज को बहुत तकलीफ होती है। इसलिए जब कोई दूसरी दवा कारगर न हो तो आग से दाग देकर इलाज किया जा सकता है।

 (फतहुलबारी 10/138)

٣ - باب: الدَّوَاءُ بِالْعَسَلِ وَقَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿فِيهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ﴾

बाब 3: शहद से इलाज करना दलील के साथ : फरमाने इलाहीः "उसमें लोगों के लिए शिफा है।"

١٩٦٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ الله عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ أَخِي يَشْتَكِي بَطْنَهُ، فَقَالَ: (اسْقِهِ عَسَلًا). ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ، فَقَالَ: (اسْقِهِ عَسَلًا). ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: (اسْقِهِ عَسَلًا). ثُمَّ أَتَاهُ فَقَالَ: فَعَلْتُ؟ فَقَالَ: (صَدَقَ الله، وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ، اسْقِهِ عَسَلًا). فَسَقَاهُ فَبَرَأَ. [رواه البخاري: ٥٦٨٤]

1964: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा कि मेरे भाई को पेट की तकलीफ है (दस्त आ रहे हैं) आपने फरमाया, उसे शहद पिलाओ। वो फिर आया तो आपने फरमाया, और शहद पिलाओ। वो फिर लौटकर आया और कहने लगा, मैं शहद पिला चुका हूँ लेकिन फायदा नहीं हुआ। आपने फरमाया, अल्लाह ने सच फरमाया है, शहद में शिफा है, लेकिन तेरे भाई का पेट ही झूटा है। उसे शहद ही पिलाओ। चूनांचे उसने फिर शहद पिलाया तो वो तन्दुरुस्त हो गया।

फायदेः दरअसल इलाज की दो किस्में हैं। एक इलाज बिलमुवाफिक और दूसरी इलाज बिज्जीद। हदीस में इलाज बिलमुवाफिक का बयान

है। इसमें अगरचे शुरू में मर्ज बढ़ता नजर आता है, फिर भी गन्दे मवाद के निकलने के बाद मरीज को आराम आ जाता है।

बाब 4: कलूंजी से इलाज करने का बयान।

٤ - باب: الحَبَّةُ السَّوْدَاء

1965: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, फरमाते थे कि कलूंजी हर मर्ज का इलाज है, मगर साम का नहीं। मैंने कहा कि साम क्या चीज है? आपने फरमाया, "मौत" यानी इसमें मौत का इलाज नहीं है।

١٩٦٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ هٰذِهِ الحَبَّةَ السَّوْدَاءَ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ، إِلَّا مِنَ السَّامِ). قُلْتُ: وَمَا السَّامُ؟ قَالَ: (المَوْتُ). [رواه البخاري: ٥٦٨٧]

फायदे: इस हदीस की शुरूआत यूं है कि हजरत गालिब बिन अबजर रजि. सफर के दौरान बीमार हो गये। शायद उन्हें सख़्त जुकाम की शिकायत थी। तो उनके लिए यह इलाज तजवीज हुआ कि कलूंजी को जैतून के तेल में पीसकर नाक में टपकाया जाये, बिलाशुबा कलूंजी में बहुत से फायदे हैं। (फतहुलबारी 10/144)

बाब 5: कुस्ते हिन्दी और बहरी का नाक में डालना।

٥ - باب: السَّعُوطُ بِالقُسْطِ الهِنْدِيِّ وَالبَحْرِيِّ

1966: उम्मे कैस बिन्ते मिहसन रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे, तुम 'हिन्दी' लकड़ी का इस्तेमाल जरूर किया करो। यह सात बीमारियों में फायदेमन्द है। हलक के वरम (सूजन) के लिए उसे नाक में

١٩٦٦ : عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (عَلَيْكُمْ بِهٰذَا العُودِ الهِنْدِيِّ، فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ: يُسْعَطُ بِهِ مِنَ العُذْرَةِ، وَيُلَدُّ بِهِ مِنْ ذَاتِ الجَنْبِ). وَبَاقِي الحَدِيثِ تَقَدَّمَ. (لم نعثر عليه) [رواه البخاري: ٥٦٩٢]

डाला जाये और पसली के दर्द के लिए हलक में डाला जाये। बाकी हदीस (167) पहले गुजर चुकी है।

फायदे: कुस्ते हिन्दी की तासीर गर्म खुश्क है। हदीस में इसके दो फायदे बयान हुए हैं। बिलाशुबा यह पेशाब लाने, हैज जारी करने, अंतड़ियों के कीड़ों को मारने, आंत को गर्म करने और जहर के असर को दूर करने में बहुत फायदेमन्द है। (फतहुलबारी 10/148)

बाब 6: बीमारी की वजह से पछने लगवाना।

٦ - باب: الحِجَامَةُ مِنَ الدَّاءِ

1967: अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पछने लगवाये और पछने लगाने का काम अबू तय्यबा रजि. ने सरअंजाम दिया। यह हदीस (1004) पहले गुजर चुकी है। मगर इस तरीक में इतना इजाफा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, पछने लगवाना इलाज है और हिन्दी लकड़ी बेहतरीन दवा है। और आपने फरमाया कि हलक की बीमारी में बच्चों को (तालू दबाकर) तकलीफ न दो, बल्कि कुस्त के इस्तेमाल का इन्तेजाम करो (वरम जाता रहेगा)

١٩٦٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: حَدِيث ٱحْتَجَمَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، حَجَمَهُ أَبُو طَيْبَةَ تَقَدَّم، وَقَالَ هُنَا فِي آخِرِهِ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ أَمْثَلَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ ٱلْحِجَامَةُ، وَالْقُسْطُ الْبَحْرِيُّ). وَقَالَ: (لَا تُعَذِّبُوا صِبْيَانَكُمْ بِالْغَمْزِ مِنَ الْعُذْرَةِ، وَعَلَيْكُمْ بِالْقُسْطِ). راجع: ١٠٠٤) [رواه البخاري: ٥٦٩٦]

फायदे: निसाई की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "पछने लगवाना एक बेहतरीन इलाज है, लेकिन बूढ़ों का इससे इलाज नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनके बदन में हरारत बहुत कम होती है और एक हदीस से भी इसका सबूत मिलता है। (फतहुलबारी 10/151)

बाब 7: मंत्र न करने की फजीलत।

1968: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे सामने उम्मते पेश की गई। और एक दो दो नबी भी गुजरने लगे, जिसके साथ जमाअतें थी। मगर किसी नबी के साथ कोई भी न था। फिर एक बहुत बड़ी जमात मेरे सामने लाई गई। मैंने पूछा, यह किसकी उम्मत है। शायद मेरी ही उम्मत हो? मुझ से कहा गया कि यह मूसा अलैहि. और उनकी उम्मत के लोग हैं। अलबत्ता आप आसमान के किनारे पर देखें। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी जमात ने आसमान के किनारे को घेर रखा है। फिर मुझसे कहा गया कि किनारे के इस तरफ देखो, मैंने देखा तो वाकई बहुत बड़ी जमात किनारे को घेरे हुए थी। फिर मुझ से कहा गया कि यह तुम्हारी उम्मत है ओर उनमें से सत्तर हजार ऐसे हैं जो बिला हिसाब जन्नत में दाखिल होंगे। फिर आप कमरे में तशरीफ ले गये और लोगों से यह जाहिर न फरमाया कि वो कौन लोग होंगे? अब सहाबा-ए-किराम रजि. ने आपस में गुफ्तगू

٧ - باب: مَنْ لَمْ يَرْقِ

١٩٦٨ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ وَالنَّبِيَّانِ يَمُرُّونَ مَعَهُمُ الرَّهْطُ، وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ، حَتَّى رُفِعَ لِي سَوَادٌ عَظِيمٌ، قُلْتُ: ما هٰذَا؟ أُمَّتِي هٰذِهِ؟ قِيلَ: هٰذَا مُوسى وَقَوْمُهُ، قِيلَ: ٱنْظُرْ إِلَى الأُفُقِ، فَإِذَا سَوَادٌ يَمْلأُ الأُفُقَ، ثُمَّ قِيلَ لِي: ٱنْظُرْ هَا هُنَا وَها هُنَا فِي آفَاقِ السَّمَاءِ، فَإِذَا سَوَادٌ قَدْ مَلأَ الأُفُقَ، قِيلَ: هٰذِهِ أُمَّتُكَ، وَيَدْخُلُ الجَنَّةَ مِنْ هٰؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ). ثُمَّ دَخَلَ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ، فَأَفَاضَ الْقَوْمُ، وَقَالُوا: نَحْنُ الَّذِينَ آمَنَّا بِٱللهِ وَٱتَّبَعْنَا رَسُولَهُ، فَنَحْنُ هُمْ، أَوْ أَوْلاَدُنَا الَّذِينَ وُلِدُوا فِي ٱلإِسْلاَمِ، فَإِنَّا وُلِدْنَا فِي الجَاهِلِيَّةِ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَخَرَجَ، فَقَالَ: (هُمُ الَّذِينَ لاَ يَسْتَرْقُونَ، وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ، وَلاَ يَكْتَوُونَ، وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ). فَقَالَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ: أَمِنْهُمْ أَنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (نَعَمْ). فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا؟ قَالَ: (سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ). [رواه البخاري: ٥٧٠٥]

शुरू की, कहने लगे हम अल्लाह पर ईमान लाये हैं और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत की है। इसलिए वो लोग हम होंगे या हमारी औलाद होगी जो हालते इस्लाम पर पैदा हुए हैं। क्योंकि हम तो जमाना जाहिलियत की पैदाईश हैं। यह खबर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप बाहर तशरीफ लाये और फरमाया, वो तो ऐसे लोग हैं जो न मंत्र करे और न किसी चीज को मनहूस ख्याल करें और न दाग दें। सिर्फ अपने अल्लाह पर भरोसा रखे।। उक्काशा बिन मिहसन रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं भी उनसे हूँ? आपने फरमाया, हां! फिर कोई दूसरा आदमी खड़ा हुआ और कहने लगा, मैं भी उनमें से हूँ? तो आपने फरमाया, उक्काशा रजि. तुझ से आगे बढ़ चुका है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में सबसे पहले दाखिल होने वाले उन खुशकिस्मत हजरात की कुछ खासियतें यह हैं 1. उनके चेहरे चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहे होंगे। 2. एक दूसरे को पकड़े हुए एक ही वक्त जन्नत में दाखिल होंगे। 3. उनसे किसी किस्म का हिसाब नहीं लिया जायेगा। 4. यह सब जन्नत बकीअ के कब्रिस्तान से उठाये जायेंगे। 5. उनके हर हजार के साथ और सत्तर हजार अफराद शामिले रहमत होंगे। इस तरह उनकी तादाद चार करोड़ नो लाख होगी। (फतहुलबारी 10/414)

बाब 8: मर्जे जुजाम (कोढ़ की बीमारी) का बयान।

٨ - باب: الجُذَام

1969: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, छूत लगना, बदशगुनी लेना, उल्लू का मनहूस होना

١٩٦٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لا عَدْوَى وَلاَ طِيَرَةَ، وَلاَ هَامَةَ وَلاَ صَفَرَ، وَفِرَّ مِنَ الْمَجْذُومِ كَما تَفِرُّ مِنَ الأَسَدِ). [رواه البخاري: ٥٧٠٧]

और माहे सफर को बेबरकत ख्याल करना, सब बुरे ख्यालात हैं। अलबत्ता जुजाम वाले से यूं भाग जैसा कि शेर से भागते हो।

फायदेः दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक जुजामी के साथ खाना खाया तो उसका मतलब यह है कि कमजोर यकीन वाले लोगों को जुजामी आदमी से अलग रहना चाहिए। ताकि किसी गलत अकीदे का शिकार न हो जायें। अलबत्ता ईमान वाले को उनसे करीब रखने में कोई हर्ज नहीं। (फतहुलबारी 10/160)

बाब 9: सफर की कोई हैसियत नहीं।

٩ - باب: لا صَفَرَ

1970: अबू हुरैरा रजि. से ही एक रिवायत में है कि एक देहाती ने ऊपर वाली हदीस को सुनकर कहा, फिर मेरे ऊंट का ऐसा हाल क्यों होता है? वो रेगिस्तान में हिरनों की तरह भागते हैं, फिर एक खारशी ऊंट उनमें आ जाता है तो उसके मिलने से सब खारशी हो जाते हैं। आपने फरमाया, फिर पहले ऊंट को किसने खारशी बनाया था?

١٩٧٠ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، في رواية، قَالَ: قَالَ أَعْرَابِيٌّ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَمَا بَالُ إِبِلِي، تَكُونُ في الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الظِّبَاءُ، فَيَأْتِي الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَيَدْخُلُ بَيْنَهَا فَيُجْرِبُهَا؟ فَقَالَ: (فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟). [رواه البخاري: ٥٧١٧]

फायदेः इमाम बुखारी के नजदीक सफर एक पेट की बीमारी का नाम है, जिसकी हैसियत यह है कि इन्सान के पेट में एक कीड़ा पैदा हो जाता है, जब वो काटता है तो इन्सान का रंग पीला पड़ जाता है। आखिरकार उससे मौत वाकेअ होती है। जाहिलियत के दौर में उसे छुआछूत वाली बीमारी कहा जाता था। जिसका इन्कार किया गया है। (फतहुलबारी 10/171)

बाब 10: पसली के दर्द की दवा का बयान।

١٠ - باب: ذَاتُ الْجَنْبِ

١٩٧١ : عن أنس بن مالك رضي الله عنه قال: أذن رسول الله ﷺ لأهل بيت من الأنصار أن يرقوا من الحمة والأذن. قال أنس: كويت من ذات الجنب، ورسول الله ﷺ حي، وشهدني أبو طلحة وأنس بن النضر وزيد بن ثابت، وأبو طلحة كواني. [رواه البخاري: ٥٧١٩-٥٧٢١]

1971: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अनसारी घराने को इजाजत दी थी कि वो बिच्छू वगैरह के डस जाने और कान के दर्द के लिए दम कर लिया करें। फिर अनस रजि. ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी में पसली के दर्द की वजह से दाग लगवाया था। उस वक्त अबू तलहा, अनस बिन नज्र और जैद बिन साबित रजि. भी मौजूद थे। वाजेह रहे कि अबू तलहा ने मुझे दाग दिया था।

फायदे: एक रिवायत में है कि दम सिर्फ किसी जहरीली चीज के डस जाने या नजरबद के बचाव से होता है। इस हदीस से मालूम हुआ कि कान दर्द के लिए भी दम किया जा सकता है। शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद में दम करने की हदें फैला दी हो। (फतहुलबारी 10/173)

١١ - باب: الحمى من فيح جهنم

बाब 11: बुखार भी जहन्नम का शोला है।

١٩٧٢ : عن أسماء بنت أبي بكر رضي الله عنهما: أنها كانت إذا أتيت بالمرأة قد حمت تدعو لها، أخذت الماء، فصبته بينها وبين جيبها. وقالت: كان رسول الله ﷺ يأمرنا أن نبردها بالماء. [رواه البخاري: ٥٧٢٤]

1972: असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है कि जब उनके पास कोई बुखार वाली औरत लाई जाती तो वो पानी मंगवाकर उसके गिरेबान में डाल देती। और फरमाया करती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इसी तरह बताया है कि बुखार की हरारत को पानी से ठण्डा करें।

फायदे: गोया बुखार दुनिया में दोजख का एक नमूना है। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. को जब बुखार होता तो फरमाते, अल्लाह! हम से इस अजाब को दूर कर दे। (सही बुखारी हदीस 5723) और इस हदीस में बुखार को ठण्डा करने का तरीका बयान हुआ है।

बाब 12: ताउन का बयान।

١٢ - باب: مَا يُذْكَرُ فِي الطَّاعُونِ

1973: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ताउन हर मुसलमान के लिए शहादत का सबब है।

١٩٧٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ). [رواه البخاري: ٥٧٣٢]

फायदे: हदीसे आइशा रजि. में इसके बारे में तीन शर्ते बयान हैं। एक यह कि जहां ताउन फैली है, वहां से किसी दूसरी जगह न जायें, दूसरी यह कि सब्र व इस्तकामत का मुजाहिरा करें, तीसरी यह कि तकदीर पर ईमान और यकीन रखें।

बाब 13: नजर के दम का बयान।

١٣ - باب: رُقْيَةُ الْعَيْنِ

1974: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे या किसी और को इरशाद फरमाया कि जब नजरबद हो जाये तो दम कर लेना जाईज है।

١٩٧٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَمَرَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، أَوْ: أَمَرَ، أَنْ يُسْتَرْقَى مِنَ الْعَيْنِ. [رواه البخاري: ٥٧٣٨]

फायदे: नजर का लग जाना बरहक है। जैसा कि बुखारी (हदीस 5741) में है, नजरबद के लिए (सूरह कलम: 51, 52) पढ़कर दम किया जाये तो उसके बुरे असर दूर हो जाते हैं। यह दम हमारा आजमाया हुआ है।

1975: उम्मे सलमा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके घर एक बच्ची देखी जिसके चेहरे पर काले निशान थे। तो आपने फरमाया, इस पर किसी से दम कराओ। क्योंकि इसे नजर हो गई है।

١٩٧٥ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى فِي بَيْتِهَا جَارِيَةً فِي وَجْهِهَا سَفْعَةٌ، فَقَالَ: (اسْتَرْقُوا لَهَا، فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ). [رواه البخاري: ٥٧٣٩]

फायदे: इस हदीस से उन लोगों की तरदीद होती है जो बुरी नजर के असरात का इन्कार करते हैं। अल्लाह तआला ने नजर में बहुत तासीर रखी है, देखने वाले की आंखों से जहर निकल कर नजर लगने वाले के जिस्म में घुस जाता है। (फतहुलबारी 10/200)

बाब 14: सांप बिच्छू के कांटने से दम।

١٤ - باب: رُقْيَةُ الحَيَّةِ وَالعَقْرَبِ

1976: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर जहरीले जानवर के काटने पर दम करने की इजाजत इनायत फरमाई है।

١٩٧٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الرُّقْيَةِ مِنْ كُلِّ ذِي حُمَةٍ. [رواه البخاري: ٥٧٤١]

फायदे: हदीस में बिच्छू वगैरह से बचाव का एक दम यूं बयान है: "अउजू बि-कलिमातल्लाहित्ताम्माति मिन शर्री मा-खलक" अगर इसे सुबह व शाम पढ़ लिया जाये तो इन्सान अल्लाह के फजल से जहरीली चीज की तकलीफ से महफूज रहता है। (औनुलबारी 5/258)

बाब 15: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दम का बयान।

١٥ - باب: رُقْيَةُ النَّبِيِّ ﷺ

1977: आइशा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरीज के लिए यूं दम किया करते थे : ''अल्लाह की बरकत से हमारी जमीन की मिट्‌टी कुछ कै थूक के साथ अल्लाह ही के हुक्म से बीमार को शिफा देती है।

١٩٧٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ يَقُولُ لِلْمَرِيضِ: (بِسْمِ ٱللهِ، تُرْبَةُ أَرْضِنَا، بِرِيقَةِ بَعْضِنَا، يُشْفَى سَقِيمُنَا، بِإِذْنِ رَبِّنَا). [رواه البخاري: ٥٧٤٥]

फायदे: इमाम नव्वी ने कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना थूक शहादत की अंगूली पर लगाकर उसे जमीन पर रखते और मजकूरा दुआ पढ़ते। फिर वो मिट्‌टी तकलीफ की जगह पर लगा देते। अल्लाह के हुक्म से मरीज को सेहत हो जाती।

 (फतहुलबारी 10/208)

बाब 16: फाल का बयान।

١٦ - باب: الْفَألُ

1978: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, बदशगुनी कोई चीज नहीं, बेहतर तरीका उम्दा फाल है। लोगों ने कहा, फाल क्या चीज है? आपने फरमाया, वो अच्छा कलमा जो तुम किसी आदमी से सुनो।

١٩٧٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لاَ طِيَرَةَ، وَخَيْرُهَا الْفَألُ). قالُوا: وَما الْفَألُ يا رَسولَ ٱللهِ؟ قالَ: (الْكَلِمَةُ الصَّالِحَةُ يَسْمَعُهَا أَحَدُكُمْ). [رواه البخاري: ٥٧٥٤]

फायदे: अगर कोई नापसन्दीदा बात सुने या देखे तो यह दुआ पढ़े ''अल्लाहुम्मा ला याति बिलहस्नाति इल्ला अनता वला यदफउस्सायाति इल्लाह अन्ता वला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह''

(फतहुलबारी 10/214)

बाब 17: कहानत का बयान।

١٧ - باب: الْكَهَانَةُ

1979: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कबीला हुजैल की दो औरतों के झगड़ने पर फैसला किया। हुआ यूं कि एक औरत ने दूसरी हामला औरत के पेट पर पत्थर मार दिया था, जिससे उसके पेट का बच्चा मर गया तो उन्होंने अपना झगड़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फैसला किया कि इस बच्चे के बदले में एक गुलाम या लौण्ड़ी दी जाये। यह सुनकर बदले में देने वाली औरत के सरपरस्त ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं इसके बदले कैसे अदा करूं। जिसने खाया न पीया और न वो बोला न चीखा। इस पर तो कुछ नहीं होना चाहिए, बल्कि काबिले मआफी है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह तो काहिनों का भाई मालूम होता है।

١٩٧٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَضَى في ٱمْرَأَتَيْنِ مِنْ هُذَيْلٍ ٱقْتَتَلَتَا، فَرَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ، فَأَصَابَ بَطْنَهَا وهِيَ حامِلٌ، فَقَتَلَتْ وَلَدَهَا الَّذِي في بَطْنِهَا، فَٱخْتَصَمُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَضَى: أَنَّ دِيَةَ ما في بَطْنِهَا غُرَّةٌ، عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ، فَقَالَ وَلِيُّ المَرْأَةِ الَّتِي غَرِمَتْ: كَيْفَ أَغْرَمُ، يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَنْ لاَ شَرِبَ وَلاَ أَكَلَ، وَلاَ نَطَقَ وَلاَ ٱسْتَهَلَّ، فَمِثْلُ ذٰلِكَ بَطَلَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّمَا هٰذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ). [رواه البخاري: ٥٧٥٨]

फायदेः काहिन उस आदमी को कहते हैं जो आगे होने वाली बातें बताने का दावा करे। एक हदीस के मुताबिक फैसला व तकदीर के फरिश्ते जब बातचीत करते हैं तो शैतान सुनघून लेकर उन काहिनों को बता देते हैं। वो अपनी तरफ से झूट की आमजीश करके लोगों का ईमान, जमीर और पैसा लूटते है। इस्लाम ने उनकी तरदीद फरमाई है। चूंकि यह लोग बड़े वजनदार बात करते थे, इसलिए उस आदमी को काहिन का भाई कहा गया है।

बाब 18: कुछ तकरीरें जादू के असर वाली होती हैं।

١٨ - باب: إنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا

1980: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि अहले मश्रिक (नजद) से दो आदमी आये और उन्होंने तकरीर की। तो लोग उनके अन्दाजे बयान से हैरान रह गये। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुछ बयान जादू की तरह पुर तासीर होते हैं।

١٩٨٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ قَدِمَ رَجُلاَنِ مِنْ أَهْلِ الْمَشْرِقِ فَخَطَبَا، فَعَجِبَ النَّاسُ لِبَيَانِهِمَا، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا، أَوْ: إِنَّ بَعْضَ الْبَيَانِ سِحْرٌ). [رواه البخاري: ٥٧٦٧]

फायदे: बयान की दो किस्में हैं। एक यह कि दिल की बातों का इजहार करना जिस अन्दाज से भी हो, दूसरी यह कि अपना मुद्दा उस अन्दाज से बयान किया जाये जो असर पैदा करने वाले और दिल में बैठ जाने वाले हो। इस दूसरे किस्म के बयान को जादू असर का जाता है। अगर यह अन्दाज हक की हिमायत में हो तो काबिले तहसीन है, वरना दूसरी सूरत में काबिले मजम्मत है (फतहुलबारी 10/237)

बाब 19: किसी की बीमारी दूसरे को नहीं लगती।

١٩ - باب: لا عَدْوَى

1981 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बीमार ऊंट को तन्दुरूस्त ऊंटों के पास न लाया जाये।

١٩٨١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يُورِدَنَّ مُمْرِضٌ عَلَى مُصِحٍّ). [رواه البخاري: ٥٧٧٤]

फायदे: हजरत अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जाति तौर पर कोई बीमारी दूसरे को लगने वाली नहीं है। फिर ऊपर वाली हदीस का मतलब यह

है कि कहीं ऐसा न हो, तन्दुरूस्त ऊंट वाले का यकीन बिगड़ जाये कि मेरे ऊंट को बीमार ऊंटों की वजह से बीमारी लगी है। यानी वहम परस्त लोगों का ईमान बचाने के लिए आपने यह इरशाद फरमाया है।

(फतहुलबारी 10/242)

٢٠ - باب: شُرْبُ السُّمِّ وَالدَّوَاءِ بِهِ وَمَا يُخَافُ مِنْهُ وَالْخَبِيثِ

बाब 20: जहर पीना या जहरीली, खौफनाक या नापाक दवा इस्तेमाल करना।

١٩٨٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَهُوَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَتَرَدَّى فِيهِ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا، وَمَنْ تَحَسَّى سُمًّا، فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَجَأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا). [رواه البخاري: ٥٧٧٨]

1982: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो जानबूझकर पहाड़ से गिर पड़ा और अपने आपको मार डाला, वो हमेशा दोजख में यही अजाब पायेगा कि पहाड़ से गिराया जायेगा और जिसने जहर पीकर खुदकशी की तो दोजख में उसे हमेशा यही अजाब दिया जायेगा कि उसके हाथ में जहर होगा और वो पीता रहेगा। और जिसने अपने आपको किसी हथियार से हलाक किया, उसको दोखज में भी हमेशा ऐसा ही अजाब होगा कि वही हथियार अपने हाथ में लेकर खुद को मारता रहेगा।

फायदे: इमाम बुखारी का मतलब यह है कि ऐसी चीजें जो हराम और नापाक हैं या उनका तकलीफ पहुंचाने वाला यकीनी है, उन्हें बतौरे इलाज इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। हदीस में इनकी मनाही भी है कि अल्लाह तआला ने हराम चीजों में शिफा नहीं रखी।

(फतहुलबारी 10/247)

٢١ - باب: إذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي الإنَاءِ

बाब 21: अगर मक्खी बर्तन में गिर जाये तो क्या करना चाहिए।

١٩٨٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ كُلَّهُ، ثُمَّ لِيَطْرَحْهُ، فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ شِفَاءً وَفِي الآخَرِ دَاءً). [رواه البخاري: ٥٧٨٢]

1983: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर तुम्हारे खाने के बर्तन में मक्खी गिर जाये तो उसे डूबोकर फैंक दो। क्योंकि उसके एक पर में शिफा और दूसरे में बीमारी होती है।

फायदेः एक रिवायत में है कि उसके एक पर में शिफा और दूसरे में इसका जहर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान मौजूदा डाक्टरों की तस्दीक का मोहताज नहीं, फिर भी अकल परस्त लोगों को यकीन दिलाने के लिए यह अर्ज है कि नये डाक्टरों ने इस बात को साबित कर दिया है कि मक्खी जब गन्दी चीजों पर बैठती है तो कुछ कीटाणु उसके पर से चिमट जाते हैं। जबकि कुछ उसके पेट में घुस जाते हैं। पेट में दाखिल होने वाले कीटाणुओं एक ऐसे बहने वाले माद्‌दा की सूरत इख्तेयार कर लेते हैं जो पर से लगे हुए कीटाणुओं को खत्म करने की सलाहियत रखती हैं। मक्खी जब खाने पीने की चीज पर बैठती है तो उसमें बीमारी वाले कीटाणु छोड़ती है। अगर डूबो दिया जाये तो बहने वाले माद्‌दे से वो कीटाणु खत्म हो जाते हैं।



किताबुल लिबास

लिबास के बयान में

बाब 1: जो आदमी टखनों से नीचा कपड़ा पहने वो दोजख में सजा पायेगा।

١ - باب: مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ فَهُوَ فِي النَّارِ

1984: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जिसने अपने तहबन्द को टखनों से नीचा किया, वो आग में जलेगा।

١٩٨٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الإِزَارِ فَفِي النَّارِ). [رواه البخاري: ٥٧٨٧]

फायदे: एक रिवायत में है कि जिसने घमण्ड की वजह से अपने टखनों के नीचे कपड़ा छोड़ा, वो कयामत के दिन नजरे रहमत से महरूम होगा। इस सजा से चार किस्म के लोग अलग हैं। 1. औरतों को हुक्म है कि वो अपना कपड़ा नीचे करें कि चलते वक्त पांव नंगे न हों। 2. बेख्याली में उठते वक्त कपड़ा टखनों से नीचे हो जाये। 3. किसी की तोन्द बड़ी हो या कमर पतली हो, कोशिश के बावजूद कुछ वक्तों में कपड़ा टखनों से नीचे हो जाये। 4. पांव पर जख्म हों तो गर्दो गुबार या मक्खियों से हिफाजत के पेशे नजर कपड़ा नीचे करना।

(फतहुलबारी 10/259)

1985: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब कपड़ों से ज्यादा यही सब्जयमनी चादर पसन्द थी।

١٩٨٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: كانَ أَحَبُّ الثِّيابِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنْ يَلْبَسَها الْحِبَرَةَ. [رواه البخاري: ٥٨١٣]

फायदे: हजरत कतादा रह. से सवाल करने पर हजरत अनस रजि. ने यह हदीस बयान की। कुछ अय्यमा ने बयान किया है कि सब्ज रंग जन्नत वालों का होगा। इसलिए आप इस रंग को पसन्द फरमाते थे। (फतहुलबारी 10/277)

1986: आइशा रजि. से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हो गई तो एक सब्जयमनी चादर आपकी मुबारक लाश पर डाली गई थी।

١٩٨٦ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ حِينَ تُوُفِّيَ سُجِّيَ بِبُرْدٍ حِبَرَةٍ. [رواه البخاري: ٥٨١٤]

फायदे: शायद इमाम बुखारी इस हदीस से हजरत उमर रजि. से मनसूब एक रिवायत की तरदीद करना चाहते हैं कि आप यमनी चादरों के इस्तेमाल से लोगों को मना करते थे कि उन्हें रंगते वक्त पेशाब शामिल किया जाता है। ताकि रंग न उतरे। (फतहुलबारी 10/277)

बाब 3: सफेद लिबास का बयान।

٣ - باب: الثِّيابُ الْبِيضُ

1987: अबू जर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ तो आप सफेद कपड़ा ओढ़े सो रहे थे। फिर दोबारा आया तो आप जाग गये थे। उस

١٩٨٧ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ أَبْيَضُ، وَهُوَ نائِمٌ، ثُمَّ أَتَيْتُهُ وَقَدِ ٱسْتَيْقَظَ، فَقالَ: (ما مِنْ عَبْدٍ قالَ: لا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، ثُمَّ ماتَ عَلَى

ذٰلِكَ إِلَّا دَخَلَ الجَنَّةَ). قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: (وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ). قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: (وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ) قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ (وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ عَلَى رَغْمِ أَنْفِ أَبِي ذَرٍّ).

وَكَانَ أَبُو ذَرٍّ إِذَا حَدَّثَ بِهٰذَا قَالَ: وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أَبِي ذَرٍّ. [رواه البخاري: ٥٨٢٧]

वक्त आपने फरमाया, जिसने कलमा ला इलाहा इल्लल्लाहु पढ़ा फिर इस अकीदा तौहीद पर उसका खात्मा हुआ तो वो जरूर जन्नत में दाखिल होगा। मैंने कहा, अगरचे उसने जिना और चोरी की हो? आपने फरमाया, अगरचे वो जिना और चोरी का करने वाला हो। मैंने फिर कहा, अगरचे उसने जिना और चोरी की हो। आपने फरमाया, हां! अगरचे वो जिना और चोरी का करने वाला हो। मैंने फिर कहा, अगरचे उसने बदकारी और चोरी का एरतकाब किया हो। आपने फरमाया, हां! अगरचे उसने जिना और चोरी का एरतकाब किया हो। चाहे उसमें अबू जर रजि. की रूसवाई ही क्यों न हो? अबू जर रजि. जब यह हदीस बयान करते तो यह अल्फाज जरूर बयान करते। अगर अबू जर को यह नापसन्द हो।

फायदेः इस हदीस के आखिर में इमाम बुखारी फरमाते हैं कि जो बन्दा मरते वक्त या उससे पहले तमाम गुनाहों से तौबा कर ले और शर्मिन्दा हो फिर "ला इलाहा इल्लल्लाहु" कहे तो अल्लाह उसे माफ कर देगा।

---

٤ - باب: لُبْسُ الحَرِيرِ وَافْتِرَاشُهُ

बाब 4: रेशम को पहनना और उसे बिछाकर बैठना कैसा है?

١٩٨٨ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الحَرِيرِ، إِلَّا هٰكَذَا. وَأَشَارَ بِإِصْبَعَيْهِ اللَّتَيْنِ تَلِيَانِ الإِبْهَامَ، يَعْنِي الأَعْلَامَ. [رواه البخاري: ٥٨٢٨]

1988: उमर रजि. से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रेशमी लिबास पहनने से मना फरमाया है। फिर आपने अपनी शहादत और बीच की दोनों अंगूलियों को मिलाकर

दिखाया (सिर्फ इतना जाइज है कि उससे कपड़े का बेलबूटा या हाशिया मुराद है।)

फायदे: कौसेन के बीच हदीस के रावी हजरत अबू उसमान नहदी की वजाहत है। यानी दो अंगूली चौड़ा हाशिया रेशम का लगाया जा सकता है।

बाब 5: रेशम को बिछाने का बयान।

٥ - باب: افْتِرَاشُ الحَرِيرِ

1989: उमर रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने दुनिया में रेशम पहना तो वो आखिरत में रेशम से महरूम रहेगा।

١٩٨٩ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ لَبِسَ الحَرِيرَ فِي ٱلدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الآخِرَةِ). [رواه البخاري: ٥٨٣٠]

फायदे: हजरत अबू उसमान नहदी रजि. का बयान है कि हम आजर बैजान में हजरत उतबा रजि. के साथ थे कि हजरत उमर रजि. ने हमें यह फरमाने नबवी लिख कर रवाना किया था। (सही बुखारी 5830)

1990: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सोने चांदी के बर्तन में खाने पीने और रेशम व दीबाज के पहनने और उस पर बैठने से मना फरमाया है।

١٩٩٠ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَانَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَشْرَبَ فِي آنِيَةِ ٱلذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَأَنْ نَأْكُلَ فِيهَا، وَعَنْ لُبْسِ الحَرِيرِ وَٱلدِّيبَاجِ، وَأَنْ نَجْلِسَ عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٥٨٣٧]

फायदे: हजरत साद बिन अबी वकास रजि. फरमाते हैं कि रेशम की गद्दी पर बैठने के बजाये मुझे आग के अंगारों पर बैठना ज्यादा फायदा है। इससे मालूम हुआ कि रेशम पहनना और उसके गद्दों पर बैठना दोनों हराम हैं। वाजेह रहे कि यह हुक्म सिर्फ मर्दों के लिए है।

(फतहुलबारी 10/292)

बाब 6: जाफरान का इस्तेमाल मर्दों के लिए नाजाईज है।

٦ - باب: النَّهْيُ عَنِ التَّزَعْفُرِ لِلرِّجَالِ

1991: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मर्द को जाफरानी रंग के इस्तेमाल से मना फरमाया है।

١٩٩١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَتَزَعْفَرَ الرَّجُلُ. [رواه البخاري: ٥٨٤٦]

फायदे: इमाम बुखारी की मुराद जिस्म के किसी हिस्से को जाफरान से रंगने की मनाही बयान करना है। क्योंकि कपड़े को जाफरानी रंग देने के बारे में आगे एक उनवान कायम किया है। इस उनवान से मालूम होता है कि औरतें इस इम्तनाई हुक्म में शामिल नहीं है। (फतहुलबारी 10/304)

बाब 7: बालों से साफ या बालों वाली जूती पहनने का बयान।

٧ - باب: النِّعَالُ السِّبْتِيَّةُ وَغَيْرُهَا

1992: अनस रजि. से ही रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जूतियां पहने नमाज पढ़ लिया करते थे, वो कहने लगी हां।

١٩٩٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُئِلَ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. [رواه البخاري: ٥٨٥٠]

फायदे: अरब में अकसर लोग सफाई के बगैर चमड़े की जूतियां पहना करते थे। जिन पर बाल होते। इमाम बुखारी ने अपनी आदत के मुताबिक अमूम से इस्तदलाल किया है कि लफ्जे नअल आम है। चाहे इस पर बाल हों या न हों। बालों के बगैर साफ चमड़े की जूती पहनने का जिक्र अहादीस में आम मिलता है। (सही बुखारी 5851)

1993: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

١٩٩٣ : وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ:

वसल्लम ने फरमाया तुम में से कोई एक जूती पहन कर न चले। दोनों उतारे या दोनों पहनकर चले।

(لاَ يَمْشِي أَحَدُكُمْ فِي نَعْلٍ وَاحِدَةٍ، لِيُحْفِهِمَا جَمِيعًا أَوْ لِيُنْعِلْهُمَا). [رواه البخاري: ٥٨٥٥]

फायदे: इस हदीस पर इमाम बुखारी ने यूं उनवान कायम किया है कि एक पांव में जूता पहनना और दूसरे को नंगा रखना मना है। क्योंकि ऐसा करना बदनुमा मालूम होता है। और इससे पांव को तकलीफ पहुंचने का भी अन्देशा है। (औनुलबारी 5/280)

बाब 8: जूता उतारते वक्त पहले बायां उतारने का बयान।

٨ - باب: يَنْزِعُ نَعْلَهُ الْيُسْرَى

1994: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में से जब कोई जूता पहने तो पहले दायां पांव डाले और जब उतारे तो पहले बायां पांव निकाले। ताकि दायां पांव पहनने में अव्वल और उतारने में आखिर हो।

١٩٩٤ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا ٱنْتَعَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِالْيَمِينِ، وَإِذَا نَزَعَ فَلْيَبْدَأْ بِالشِّمَالِ، لِتَكُنِ الْيُمْنَى أَوَّلَهُمَا تُنْعَلُ وَآخِرَهُمَا تُنْزَعُ). [رواه البخاري: ٥٨٥٦]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक थी कि जिनत व तकरीम के कामों में दायीं तरफ से शुरू फरमाते और उनके उल्टे बायीं तरफ से शुरू करते। मसलन बैतुलखला में दाखिल होना, इस्तनजा करना और जूता उतारना वगैरह।

(फतहुलबारी 10/312)

बाब 9: फरमाने नबवी कि मेरी अंगूठी का नक्श (लिखावट) कोई दूसरा न लिखवाये।

٩ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: لاَ يَنْقُشْ عَلَى نَقْشِ خَاتَمِهِ

١٩٩٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ٱتَّخَذَ خاتَمًا مِنْ وَرِقٍ، وَنَقَشَ فِيهِ: مُحَمَّدٌ رَسُولُ ٱللهِ، وَقَالَ: (إِنِّي ٱتَّخَذْتُ خاتَمًا مِنْ ورِقٍ، وَنَقَشْتُ فِيهِ مَحَمَّدٌ رَسُولُ ٱللهِ، فَلَا يَنْقُشْ أَحَدٌ عَلَى نَقْشِهِ). [رواه البخاري: ٥٨٧٧]

1995: अनस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चांदी की एक अंगूठी बनवाई और उसमें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्फाज लिखवाये। और फरमाया कि मैंने चांदी की एक अंगूठी बनवाकर उसमें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुन्दा कराया है। लिहाजा तुम से कोई यह नक्श न लिखवाये।

फायदे: यह इबारत लिखवाने की वजह यह थी कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अरब के बाहर मुल्को सलातीन को दावती खत लिखने का प्रोग्राम बना तो आपको बताया गया कि यह लोग सरकारी मुहर के बगैर कोई तहरीर कबूल नहीं करते। चूंकि इसकी हैसियत एक सरकारी मुहर की थी। इसलिए लोगों को "मुहम्मद रसूलुल्लाह" के अल्फाज कुन्दा करने से मना फरमा दिया।

 (सही बुखारी 5870)

١٠ - باب: إِخْرَاجُ ٱلْمُتَشَبِّهِينَ بِالنِّسَاءِ مِنَ ٱلْبُيُوتِ

बाब 10: ऐसे जनाने मर्दो को निकाल देना चाहिए जो औरतों की मुसाबहत इख्तियार करें।

١٩٩٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَعَنَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلْمُخَنَّثِينَ مِنَ ٱلرِّجَالِ، وَٱلْمُتَرَجِّلَاتِ مِنَ ٱلنِّسَاءِ، وَقَالَ: (أَخْرِجُوهُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ) قَالَ: فَأَخْرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فُلَانًا وَأَخْرَجَ عُمَرُ فُلَانًا. [رواه

1996: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाने मर्द और मरदानी औरतों पर लानत फरमाई है। और फरमाया कि उन्हें घरों से निकाल दो और इब्ने अब्बास रजि. का बयान है

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक जनाने आदमी को निकाल दिया था। इस तरह उमर रजि. ने भी एक जनाने आदमी को बाहर निकाल दिया था।

البخاري: ٥٨٨٦]

फायदे: मालूम हुआ कि मुसलमानों की आबादी से हर उस आदमी को निकाल देना चाहिए जो इस्लाम वालों को तकलीफ पहुंचाने का सबब हो। जब तक कि वो तकलीफ पहुंचाने से बाज आ जाये और अल्लाह के सामने अपनी तौबा का नजराना पेश करे। (फतहुलबारी 10/334)

बाब 11: दाढ़ी को (अपनी हालत पर) छोड़ देने का बयान।

١١ - باب: إِعْفَاءُ اللُّحَى

1997: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मुश्रिकीन की खिलाफवर्जी करो, दाढ़ियां बढ़ाओ और मूंछे कतरवाओ।

١٩٩٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (خالِفُوا المُشْرِكِينَ: وَفِّرُوا اللُّحَى، وَأَحْفُوا الشَّوَارِبَ). [رواه البخاري: ٥٨٩٢]

फायदे: दाढ़ी को अपनी हालत पर छोड़ना शायद इस्लाम से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका हुक्म दिया है। निज उसे अमूरे फितरत से करार दिया हैं इसकी मुखालफत करना अहले किताब, यहूद व मजूस से मुसाबहत करना है। जिसकी दीने इस्लाम में सख्त मनाही है।

बाब 12: खिजाब का बयान।

١٢ - باب: الخِضَابُ

1998: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यहूद व नसारा खिजाब नहीं नहीं करते, तुम उनकी मुखालफत करो।

١٩٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ اليَهُودَ وَالنَّصَارَى لاَ يَصْبُغُونَ فَخَالِفُوهُمْ). [رواه البخاري: ٥٨٩٩]

फायदेः यह हदीस दाढ़ी और सर के बालों को खिजाब लगाने से मुताल्लिक है। लेकिन खिजाब लगाते वक्त काले रंग से बचना चाहिए। क्योंकि सही मुस्लिम में काला रंग लगाने की मनाही बयान है। (फतहुलबारी 10/355)

बाब 13: घूंघरालू बालों का बयान।

١٣ - باب: الجَعْدُ

1999: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल मुबारक न बिलकुल सीधे और न बहुत घुंघरालू बल्कि कुछ टेठे थे जो कंधे और कानों के बीच रहते थे।

١٩٩٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ شَعَرُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ رَجِلًا، لَيْسَ بِالسَّبِطِ وَلَا الجَعْدِ، بَيْنَ أُذُنَيْهِ وَعَاتِقِهِ. [رواه البخاري: ٥٩٠٥]

फायदेः कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल मुबारक कानों की लो तक थे। हकीकत में जब आप बालों में कंघी करते तो कन्धों तक आ जाते और जब आप उन्हें काटते, कंघी न करते तो कानों तक रहते। (फतहुलबारी 10/358)

2000: अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पांव पुर गोश्त थे। मैंने वैसा खूबसूरत न आपसे पहले किसी को देखा, न आपके बाद और आप की हथेलियां चौड़ी और कुशादा थी।

٢٠٠٠ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَخْمَ اليَدَيْنِ وَالقَدَمَيْنِ، لَمْ أَرَ قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَكَانَ بَسْطَ الكَفَّيْنِ. [رواه البخاري: ٥٩٠٧]

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हथेलियां कुशादा होने का मतलब मुहद्दसीन ने यह बयान किया है कि आप बड़े फयाज और दरियादिल थे। अगरचे हकीकत में ऐसा ही था लेकिन यहां आपकी

शक्लो सूरत की तस्वीर कशी की जा रही है। इस मौजूअ पर हमारी किताब "आइना जमाले नबूवत" का मुताअला फायदेमन्द रहेगा। जिसे मकतबा दारूस्सलाम ने बड़ी परेशानी और मशक्कत से छापा है।

बाब 14: सर के कुछ बाल मुण्डवाने और कुछ छोड़ देने का बयान।

١٤ - باب: القَزَعُ

2001: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप कजअ से मना फरमाते थे।

٢٠٠١ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَنْهَى عَنِ القَزَعِ. [رواه البخاري: ٥٩٢١]

फायदे: बुखारी में कजअ की तारीफ यूं की गई है कि पेशानी और सर के दोनों तरफ बाल छोड़कर बाकी सर मुण्डवा दिया जाये। इसमें मर्द, औरत और बच्चे तमाम शामिल हैं। मनाही की वजह यहूद से मुशाबहत है। (फतहुलबारी 10/365)

बाब 15: औरत का अपने हाथ से खाविन्द को खुश्बू लगाना जाईज है।

١٥ - باب: تَطْيِيبُ المَرْأةِ زوجها بِيَدَيْهَا

2002: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अच्छी से अच्छी खुश्बू जो मिलती थी, वो लगाया करती थी, यहां तक कि मैं खुश्बू की चमक आपके सर और दाढ़ी मुबारक में देखती।

٢٠٠٢ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ النَّبِيَّ ﷺ بِأَطْيَبِ ما يَجِدُ، حَتَّى أَجِدَ وَبِيصَ الطِّيبِ في رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ. [رواه البخاري: ٥٩٢٣]

फायदे: मर्द और औरत की खुश्बू में फर्क यह है कि मर्द की खुश्बू में रंग के बजाये महक होती है और औरत की खुश्बू में महक के बजाये रंग होता है। और औरत को जाईज है कि चेहरे पर खुश्बू लगाये। जबकि मर्द के लिए यह जाईज नहीं। (फतहुलबारी 10/366)

बाब 16: जो आदमी खुश्बू को वापिस न करे।

١٦ - باب: مَنْ لا يَرُدُّ الطِّيبَ

2003: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुश्बू का हदिया वापिस नहीं देते थे।

٢٠٠٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ. [رواه البخاري: ٥٩٢٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया , जब कोई तुम्हें खुश्बू दे तो उसे वापिस न करो। क्योंकि ऐसा करने से इन्सान बौझल नहीं होता। खुद रावी हदीस हजरत अनस रजि. का यही अमल था। (फतहुलबारी 10/371)

बाब 17: जरीरा (मुरक्कब खुश्बू) का बयान।

١٧ - باب: الذَّرِيرَةُ

2004: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने हज्जतुल विदाअ के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अहराम खोलते और बांधते वक्त अपने हाथ से खुश्बू-ए-जरीरा लगाई थी।

٢٠٠٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: طَيَّبْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بِيَدَيَّ، بِذَرِيرَةٍ في حَجَّةِ الْوَدَاعِ، لِلْحِلِّ وَالإِحْرَامِ. [رواه البخاري: ٥٩٣٠]

फायदे: कुछ रिवायतों में वजाहत है कि हजरत आइशा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अहराम बांधते, रमी जमार के वक्त दसवीं जिलहिज्जा को तवाफे जियारत से पहले खुश्बू लगाई थी। (फतहुलबारी 10/372)

बाब 18: जानदार की तस्वीर बनाने वालों की सजा।

١٨ - باب: عَذَابُ المُصَوِّرِينَ يَوْمَ القِيَامَةِ

2005: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो लोग तस्वीरें बनाते हैं, कयामत के दिन उन्हें अजाब दिया जायेगा और कहा जायेगा कि जिसको तुमने बनाया है, उसे जिन्दा भी तुम ही करो।

٢٠٠٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ الَّذِينَ يَصْنَعُونَ هٰذِهِ الصُّوَرَ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ، يُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ). [رواه البخاري: ٥٩٥١]

फायदे: तस्वीर बनाना हराम है। चाहे हाथ से बनाई जाये या कैमरे से, इसका अपना वजूद हो या किसी पर नक्श की जाये। सिर्फ गैर जानदार पहाड़ और पेड़ वगैरह की बनाना जाइज है। हमारे यहां मुख्तलिफ तकरीबात के मौके पर विडियो फिल्म तैयार करना भी नाजाइज है।

बाब 19: तस्वीरों को चाक करना।

١٩ - باب: نَقْضُ الصُّوَرِ

2006: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, अल्लाह तआला का इरशाद गरामी है कि उस आदमी से ज्यादा जालिम कौन हो सकता है जो पैदा करने में मेरी नक्काली करता है। एक दाना या एक चींटी तो पैदा कर दे। एक रिवायत मे इतना इजाफा है कि एक जौ ही पैदा कर के दिखाये।

٢٠٠٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (قَالَ ٱللهُ تعالى: وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ يَخْلُقُ كَخَلْقِي، فَلْيَخْلُقُوا حَبَّةً، وَلْيَخْلُقُوا ذَرَّةً). وزاد في رواية: (فَلْيَخْلُقُوا شَعِيرَةً). [رواه البخاري: ٥٩٥٣]

फायदेः हजरत अबू हुरैरा रजि. ने यह हदीस उस वक्त बयान की जब आपने एक तस्वीर बनाने वाले को देखा कि वो मकान की दीवार पर तस्वीरें बना रहा था। इससे भी मालूम हुआ कि अक्सी और नक्शी हर किस्म की तस्वीरें मना है।



किताबुल आदाब

आदाब के बयान में

बाब 1: अच्छे सलूक का सबसे ज्यादा हकदार कौन है?

١ - باب: مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ الصُّحْبَةِ

२००٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: (أُمُّكَ). قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: (ثُمَّ أُمُّكَ). قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: (ثُمَّ أُمُّكَ). قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: (ثُمَّ أَبُوكَ). [رواه البخاري: ٥٩٧١]

2007: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे अच्छे सलूक का सबसे ज्यादा हकदार कौन है? आपने फरमाया, तेरी मां! पूछा गया, फिर कौन? फरमाया, तेरी मां। कहा गया, उसके बाद कौन? फरमाया, तेरी मां। फिर कहा गया, उसके बाद। तब फरमाया, तेरा बाप।

फायदेः खिदमत के सिलसिले में मां के तीन दर्जे और बाप का एक दर्जा है। क्योंकि उसके मुताल्लिक बहुत तकलीफ उठाती हैं मसलन नौ महीने पेट में रखती है। फिर जन्म के वक्त तकलीफ उठाती है और दूध पिलाती है। (फतहुलबारी 10/402)

बाब 2: आदमी अपने वाल्देन को गाली न दे।

٢ - باب: لا يَسُبُّ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ

٢٠٠٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنْ أَكْبَرِ الْكَبَائِرِ أَنْ يَلْعَنَ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ) قِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَكَيْفَ يَلْعَنُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: (يَسُبُّ الرَّجُلُ أَبَا الرَّجُلِ، فَيَسُبُّ أَبَاهُ، وَيَسُبُّ أُمَّهُ فَيَسُبُّ أُمَّهُ). [رواه البخاري: ٥٩٧٣]

2008: अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सबसे बड़ा गुनाह यह है कि आदमी वाल्देन पर लानत करे। लोगों ने कहा, वाल्देन पर कोई कैसे लानत कर सकता है? आपने फरमाया, इस तरह कि वो किसी के बाप को गाली देगा। नतीजतन वो उसके बाप को गाली देगा और यह किसी की मां को गाली देगा तो वो उसके बदले उसकी मां को गाली देगा।

फायदे: चूंकि यह अपने वाल्देन को गाली देने का सबब बना है। गोया उसने खुद अपने वाल्देन को गाली दी है। इससे मालूम हुआ कि जो काम किसी गुनाह का सबब हो, उसे भी अमल में नहीं लाना चाहिए।

 (फतहुलबारी 10/404)

٣ - باب: إِثْمُ القَاطِعِ

बाब 3: रिश्ता काटने वालों के गुनाह का बयान।

٢٠٠٩ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَدْخُلُ الجَنَّةَ قَاطِعٌ). [رواه البخاري: ٥٩٨٤]

2009: जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि रिश्ता काटने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा।

फायदे: एक रिवायत में है कि जिस कौम में रिश्ता काटने वाला मौजूद है और वो उसकी हौसला अफजाई करे, इस नहुस्त की बिना पर तमाम कौम अल्लाह की रहमत से महरूम कर दी जाती है।

(फतहुलबारी 10/415)

बाब 4: जो रिश्ता कायम रखेगा, अल्लाह उससे ताल्लुक रखेगा।

٤ - باب: مَنْ وَصَلَ وَصَلَهُ الله

2010: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, रहम रहमान से निकाला गया है। अल्लाह तआला ने इससे फरमाया जो तूझे जोड़ेगा, मैं भी उसे जोडूंगा और जो तुझ से जुदा होगा, मैं भी उससे जुदा होऊंगा।

٢٠١٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (إِنَّ الرَّحِمَ شِجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمٰنِ، فَقَالَ ٱللهُ: مَنْ وَصَلَكِ وَصَلْتُهُ، وَمَنْ قَطَعَكِ قَطَعْتُهُ). [رواه البخاري: ٥٩٨٨]

फायदे: अल्लाह ने जब रहम को पैदा किया तो उसने परवरदिगार की कमर थाम ली और कहा, लोग मेरे साथ अच्छा बर्ताव नहीं करेंगे तो अल्लाह ने मजकूरा इरशाद फरमाकर उसकी हौसला अफजाई फरमाई। (सही बुखीर 5987)

बाब 5: रहीम की तरावट की बिना पर उसको तर रखना।

٥ - باب: تَبُلّ الرَّحِمُ بِبِلالِهَا

2011: अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप ऐलानिया फरमा रहे थे कि फलां की औलाद मेरे प्यारों में से नहीं। मेरा दोस्त तो अल्लाह और अच्छे लोग हैं। अलबत्ता उनसे रहीम का रिश्ता है। अगर वो तर रखेंगे तो मैं भी तर रखूंगा।

٢٠١١ : عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ جِهَارًا غَيْرَ سِرٍّ، يَقُولُ: (إِنَّ آلَ أَبِي فُلانٍ لَيْسُوا بِأَوْلِيَائِي، إِنَّمَا وَلِيِّيَ ٱللهُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ، وَلٰكِنْ لَهُمْ رَحِمٌ أَبُلُّهَا بِبِلاَلِهَا). [رواه البخاري: ٥٩٩٠]

फायदेः रिश्ता कायम रखने के कई दीनी फायदे भी हैं। और इससे रिज्क में फराखी और उम्र में वुसअत पैदा होती है। और लोगों में इज्जत और वकार में इजाफा होता है। (फतहुलबारी 10/416)

बाब 6: बच्चे पर शिफकत करना, उसे बोसा (पप्पी) देना और गले लगाना।

٦ - باب: رَحْمَةُ الْوَلَدِ وَتَقْبِيلُهُ وَمُعَانَقَتُهُ

2012: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक देहाती नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा आप तो बच्चों का बोसा लेते हैं। हम तो उनसे प्यार नहीं करते। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं क्या करूं जब अल्लाह तआला ने तेरे दिल से रहम को निकाल दिया है।

٢٠١٢ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: تُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ؟ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَوَ أَمْلِكُ لَكَ أَنْ نَزَعَ ٱللهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ). [رواه البخاري: ٥٩٩٨]

फायदेः यानी जब अल्लाह तआला ने तेरे दिल से शिफकत व मुहब्बत को निकाल दिया है तो मैं उसे वापिस नहीं कर सकता। एक रिवायत में है कि आपने फरमाया, जो किसी पर शिफकत नहीं करता, अल्लाह उस पर मेहरबानी नहीं करेगा। (फतहुलबारी 10/430)

बाब 7: रिश्ता जोड़ने के बदले में अच्छा सलूक करना रिश्ता जोड़ना नहीं है।

٧ - باب: لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِيءِ

2013: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि रिश्ता जोड़ने वाला वो नहीं जो सिर्फ बदला चुकाये, बल्कि रिश्ता जोड़ने वाला वो है जो अपने टूटे हुए रिश्ते को जोड़े।

٢٠١٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِيءِ، وَلٰكِنِ الْوَاصِلُ الَّذِي إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا). [رواه البخاري: ٥٩٩١]

फायदेः रिश्ता जोड़ने के तीन दर्जे हैं। पहला दर्जा मवासिल का है कि रिश्ता टूटने के बावजूद रिश्ता जोड़ता रहे। दूसरा दर्जा मुकाफी का है कि रिश्ता जोड़ने के जवाब में रिश्ता जोड़े। तीसरा काटने वाला यानी रिश्तों को खत्म करन देने वाला ऐसे हालात में जो रिश्ता जोड़ता है, उसे हदीस में वासिल कहा गया है। (फतहुलबारी 10/424)

٢٠١٤ : عَنْ عُمرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ سَبْيٌ، فَإِذَا ٱمْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ تَحْلِبُ ثَدْيَهَا تَسْقِي، إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ، فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ، فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ: (أَتَرَوْنَ هٰذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟). قُلْنَا: لَا، وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لَا تَطْرَحَهُ، فَقَالَ: (للهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هٰذِهِ بِوَلَدِهَا). [رواه البخاري: ٥٩٩٩]

2014: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कुछ कैदी लाये गये जिनमें एक औरत भी थी। जिसकी छातियों से दूध टपक रहा था और वो डर रही थी। इतने में उसे एक बच्चा कैदियों में से मिला, उसने झट से उसे छाती से चिमटाया और दूध पिलाने लगी। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमसे फरमाया, तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या यह औरत अपने बच्चे को आग में झौंक देगी। हमने कहा, हरगिज नहीं जब तक उसे कुदरत होगी, वो अपने बच्चे को आग में नहीं डालेगी। इस पर आपने फरमाया, अल्लाह तआला अपने बन्दों पर इससे ज्यादा मेहरबान है, जितनी वो औरत अपने बच्चे पर मेहरबान है।

फायदेः लफ्ज इबाद (बन्दे) अगरचे आम है, लेकिन इससे मुराद अहले ईमान हैं, जिन्हें मौत दीने इस्लाम पर आई हो, इसकी ताईद उस रिवायत से भी होती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला अपने हबीब को आग में नहीं डालेगा।

(फतहुलबारी 10/431)

बाब 8: अल्लाह ने रहमत के सौ हिस्से किए हैं।

٨-باب: جَعَلَ اللهُ الرَّحْمَةَ فِي مِائَةِ جُزْءٍ

2015: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे कि अल्लाह तआला ने रहमत के सौ हिस्से बनाये हैं। उनमें से निन्यानवें हिस्से अपने पास रखे हैं और एक हिस्सा जमीन पर उतारा है। इस एक हिस्से की वजह से मख्लूक एक दूसरे पर रहम करती है। यहां तक कि घोड़ा भी अपने बच्चे पर से पांव उठा लेता है कि उसको तकलीफ न पहुंचे।

٢٠١٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (جَعَلَ ٱللهُ ٱلرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ جُزْءًا، وَأَنْزَلَ فِي الأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا، فَمِنْ ذٰلِكَ الجُزْءِ يَتَرَاحَمُ الخَلْقُ، حَتَّى تَرْفَعَ الْفَرَسُ حافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا، خَشْيَةَ أَنْ تُصِيبَهُ). [رواه البخاري: ٦٠٠٠]

फायदे: एक रिवायत में इस एक रहमत की मिकदार बयान की गई है कि वो जमीन और आसमान के बीच की खाली जगह को भरने के लिए काफी है। और दूसरी रिवायत में है कि अगर काफिर को अल्लाह के यहां इस कद्र रहमत का यकीन हो जाये तो वो कभी जन्नत में दाखिले से मायूस न होगा। (फतहुलबारी 10/334)

बाब 9: बच्चे को रान पर बैठाने का बयान।

٩ - باب: وَضْعُ الصَّبِيِّ عَلَى الفَخِذِ

2016: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं जब बच्चा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे पकड़कर एक रान पर बैठाते और दूसरी पर हसन रजि. को। फिर दोनों को चिमटा लेते और दुआ

٢٠١٦ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَأْخُذُنِي فَيُقْعِدُنِي عَلَى فَخِذِهِ، وَيُقْعِدُ الحَسَنَ عَلَى فَخِذِهِ الآخَرِ، ثُمَّ يَضُمُّهُمَا، ثُمَّ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ ارْحَمْهُمَا فَإِنِّي أَرْحَمُهُمَا). [رواه

البخاري: ٦٠٠٣]

करते, ऐ अल्लाह इन दोनों पर रहम फरमा, क्योंकि मैं भी इन पर शिफकत करता हूँ।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच्चों के साथ खसूसी शिफकत फरमाया करते थे। कई बार किसी बच्चे को अपनी गोद में बैठा लेते। अगर वो पेशाब भी कर देता तो भी किसी किस्म की नागवारी का इजहार न करते। (सही बुखारी 6002)

١٠ - باب: رَحْمَةُ النَّاسِ وَالْبَهَائِمِ

बाब 10: आदमियों और जानवरों पर रहम करना।

٢٠١٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي صَلاَةٍ وَقُمْنَا مَعَهُ، فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ: اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَمُحَمَّدًا، وَلاَ تَرْحَمْ مَعَنَا أَحَدًا. فَلَمَّا سَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ لِلأَعْرَابِيِّ: (لَقَدْ حَجَّرْتَ وَاسِعًا). [رواه البخاري: ٦٠١٠]

2017: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज के लिए खड़े हुए तो हम भी आपके साथ खड़े हो गये। इतने में एक देहाती नमाज में ही दुआ मांगने लगा, ऐ अल्लाह मुझ पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहम कर और हमारे साथ किसी और पर रहम न कर। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फैरा तो देहाती से कहा, तूने कुशादा यानी अल्लाह की रहमत को तंग कर दिया।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस देहाती पर इसलिए ऐतराज किया कि उसने अल्लाह तआला से तमाम लोगों के लिए रहमो करम मांगने में कंजूसी से काम लिया था।

(फतहुलबारी 10/439)

2018: नोमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तू मुसलमानों को एक दूसरे पर रहम करने, दोस्ती कायम रखने और मेहरबानी का बर्ताव करने में एक जिस्म की तरह देखेगा कि अगर जिस्म का एक हिस्सा बीमार हो जाता है तो तमाम हिस्से बुखार और बेदारी में उसके शरीक होते हैं।

٢٠١٨ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (تَرَى الْمُؤْمِنِينَ: فِي تَرَاحُمِهِمْ، وَتَوَادِّهِمْ، وَتَعَاطُفِهِمْ، كَمَثَلِ الْجَسَدِ، إِذَا ٱشْتَكَى عُضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ جَسَدِهِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى). [رواه البخاري: ٦٠١١]

फायदे: मतलब यह है कि अगर मुस्लिम मआशिरे में एक मुसलमान को कोई तकलीफ हो तो दुनिया भर के मुसलमान उस वक्त तक बेकरार व बेचैन रहें, जब तक उसकी तकलीफ दूर न हो जाये।

 (फतहुलबारी 10/440)

2019: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब मुसलमान ने कोई पेड़ लगाया और उसका फल इन्सानों और जानवरों ने खाया तो लगाने वाले को सदके का सवाब मिलेगा।

٢٠١٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا مِنْ مُسْلِمٍ غَرَسَ غَرْسًا، فَأَكَلَ مِنْهُ إِنْسَانٌ أَوْ دَابَّةٌ، إِلاَّ كَانَ لَهُ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ٦٠١٢]

फायदे: इस हदीस से खेतीबाड़ी की फजीलत का पता चलता है कि अगर उखरवी फौज व फलाह की नियत से यह काम किए जायें तो अल्लाह के यहां बिला हद व हिसाब सवाब का सबब है।

(सही बुखारी 2320)

2020: जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो किसी पर रहम नहीं करेगा, उस पर रहम नहीं किया जायेगा।

٢٠٢٠ : عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ البَجَلِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ). [رواه البخاري: ٦٠١٣]

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, लोगों! तुम जमीन वालों पर रहम करो, तुम पर आसमान वाला यानी अल्लाह तआला रहमो करम फरमायेगा। इसमें अल्लाह की तमाम मख्लूक पर रहम करने की तलकीन की गई है।

 (फतहुलबारी 10/440)

बाब 11: पड़ौसी के हकों का बयान।

١١ - باب: الوَصَاةُ بِالجَارِ

2021: आइशा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती है कि आपने फरमाया, जिब्राईल अलैहि. ने मुझे पड़ौसी के साथ भलाई की इस कद्र ताकीद की कि मुझे ख्याल गुजरा शायद उसे मेरा वारिस ही ठहरा देंगे।

٢٠٢١ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ما زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالجَارِ، حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ). [رواه البخاري: ٦٠١٤]

फायदे: पड़ौसी का ख्याल रखने की बहुत ताकीद की गई है। खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक यहूदी पड़ौसी था जब आप गोश्त के लिए कोई जानवर जिब्ह करते तो उसके घर भी बतौरे हदीया भेजते। (फतहुलबारी 10/442)

बाब 12: जिस आदमी की तकलीफ

١٢ - باب: إِثْمُ مَنْ لَا يَأْمَنُ جارُهُ

بَوَائِقَهُ

पहुंचाने का पड़ौसी को अन्देशा हो, उसका गुनाह।

٢٠٢٢ : عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (وَٱللهِ لاَ يُؤْمِنُ، وَٱللهِ لاَ يُؤْمِنُ، وَٱللهِ لاَ يُؤْمِنُ). قِيلَ: وَمَنْ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (الَّذِي لاَ يَأْمَنُ جارُهُ بَوَائِقَهُ). [رواه البخاري: ٦٠١٦]

2022: अबू शुरेह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह की कसम! मौमिन नहीं हो सकता अल्लाह की कसम! मौमिन नहीं हो सकता अल्लाह की कसम! मौमिन नहीं हो सकता। पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा कौन आदमी है? आपने फरमाया जिसके पड़ौसी को (बजाये आराम के) उसकी तकलीफ पहुंचने का डर हो।

फायदेः एक रिवायत में है कि पड़ौसी के साथ बदसलूकी करने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा, यह इस सूरत में है कि जब पड़ौसी को तंग करना हलाल और जाइज समझता हो। अफसोस कि हमारे मआशिरे में कुछ इस तरह के हालात हैं कि एक घर में खुशियों की शहनाईयों बज रही होती हैं जबकि पड़ौसी के घर में किसी अचानक आने वाली मुसीबत की वजह से सफे मातम बिछी होती है।

١٣ - باب: مَنْ كانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِ جارَهُ

बाब 13: जो आदमी अल्लाह पर ईमान और कयामत पर यकीन रखता हो, अपने पड़ौसी को तकलीफ न दे।

٢٠٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ كانَ يُؤْمِنُ بِٱللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِ جارَهُ، وَمَنْ كانَ يُؤْمِنُ بِٱللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ

2023: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो अल्लाह पर ईमान और कयामत पर यकीन रखता है, उसे अपने पड़ौसी को तकलीफ नहीं

كانَ يُؤمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ). [رواه البخاري:

देनी चाहिए जो आदमी अल्लाह और कयामत पर ईमान रखता हो उसे अपने मेहमान की खातिरदारी करनी चाहिए और जिसको अल्लाह और कयामत पर ईमान है, उसे चाहिए कि अच्छी बात कहे या खामोश रहे।

फायदे: एक रिवायत में पड़ौसी के हकों को बयान किया गया है कि जरूरत के वक्त उसे कर्ज दिया जाये और उसकी मदद की जाये, देखभाल की जाये, खुशी के मौके पर मुबारकबाद कही जाये। गम के वक्त उसे तसल्ली दी जाये। यानी उसकी तमाम जरूरतों का ख्याल रखा जाये। (फतहुलबारी 10/446)

١٤ - باب: كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ

बाब 14: हर अच्छी बात का बता देना सदका देने के बराबर है।

٢٠٢٤ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ٦٠٢١]

2024: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी को कोई अच्छी बात बताने का सवाब सदका देने के बराबर है।

फायदे: दूसरी हदीस में है कि अगर किसी को अच्छी बात न बता सकता हो तो अपनी बुराई से महफूज रखना भी सदका है। (फतहुलबारी 6032)

١٥ - باب: الرِّفْقُ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ

बाब 15: हर उम्र में नरमी और आसानी करना चाहिए।

٢٠٢٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ

2025: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि

يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ). [رواه البخاري: ٦٠٢٤]

वसल्लम ने मुझे इरशाद फरमाया, अल्लाह हर काम में नरमी को पसन्द करता है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह कलमात उस वक्त इरशाद फरमाये जब आपके पास कुछ यहूदी आये और उन्होंने कहा, तुम्हें मौत आये "अस्सामु अलैकुम"। हजरत आइशा रजि. ने इस शरारत को समझ लिया और जवाबन फरमाया कि तुम पर मौत और फटकार हो। इस पर आपने यह कलमा इरशाद फरमाये।

١٦ - باب: تَعَاوُنِ المُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضاً

बाब 16: ईमान वालों का आपस में एक दूसरे से ताउन करना।

٢٠٢٦ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (المُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضاً). ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ جَالِساً، إِذْ جَاءَ رَجُلٌ يَسْأَلُ، أَوْ طَالِبُ حَاجَةٍ، أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: (ٱشْفَعُوا فَلْتُؤْجَرُوا، وَلْيَقْضِ ٱللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا شَاءَ). [رواه البخاري: ٦٠٢٧]

2026: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, एक मौमिन दूसरे मौमिन के लिए इमारत की तरह है। जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को थामे रखता है। फिर अपनी अंगूलियों को एक दूसरे में डाला (कि इस तरह एक दूसरे से मिलकर ताकत देते हैं) और एक बार ऐसा हुआ कि आप तशरीफ फरमा थे, इतने में एक जरूरत मन्द आदमी आया और सवाल करने लगा। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी तरफ मुतवज्जुह हुए और फरमाया, जरूरतमन्दों की शिफारिश किया करो। तुम्हें शिफारिश करने का सवाब मिलेगा। अल्लाह तआला तो अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान से वही फैसला करायेगा जो वो चाहेगा।

फायदे: एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की हर लिहाज से मदद करनी चाहिए। एक हदीस में है कि अल्लाह तआला उस वक्त तक अपने बन्दे की मदद फरमाते हैं जब तक वो दूसरे भाई की मदद मे लगा रहता है। (फतहुलबारी 10/450)

बाब 17: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुरा भला कहने वाले और बदजुबान न थे।

١٧ - باب: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا

2027: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गाली बाज बुराभला कहने वाले, बदजुबान और लानत भेजने वाले न थे। अगर कभी किसी पर नाराज होते तो इतना फरमाते उसको क्या हो गया, उसकी पैशानी खाक अलूद हो।

٢٠٢٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ سَبَّابًا، وَلاَ فَحَّاشًا، وَلاَ لَعَّانًا، كانَ يَقُولُ لأَحَدِنَا عِنْدَ المَعْتِبَةِ: (ما لَهُ تَرِبَ جَبِينُهُ). [رواه البخاري: ٦٠٣١]

फायदे: मालूम हुआ कि गाली गलौच और लान तान एक मुसलमान के शायान शान नही है।

बाब 18: अच्छी आदत व सखावत और नापसन्दीदा कंजूसी का बयान।

١٨ - باب: حُسْنُ الخُلُقِ وَالسَّخاءِ وَما يُكْرَهُ مِنَ البُخْلِ

2028: जाबिर रजि से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, ऐसा कभी नहीं हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कभी कोई चीज मांगी गई हो तो आपने ''नहीं'' में जवाब दिया हो।

٢٠٢٨ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: ما سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ شَيْءٍ قَطُّ فَقالَ: لاَ. [رواه البخاري: ٦٠٣٤]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन्सानियत का यह आलम था कि अगर आपके पास कोई चीज होती तो सवाल करने वाले को उसी वक्त दे देते थे। अगर न होती तो वादा फरमाते या खामोश रहते। दो टूक जवाब देकर सवाल करने वाले की हिम्मत न तोड़ते।

 (फतहुलबारी 10/458)

٢٠٢٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَشْرَ سِنِينَ، فَمَا قَالَ لِي: أُفٍّ، وَلاَ: لِمَ صَنَعْتَ؟ وَلاَ: أَلاَّ صَنَعْتَ. [رواه البخاري: ٦٠٣٨]

2029: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दस बरस तक खिदमत की। आपने उस दौरान मुझे कभी उफ तक न कहा और न यह फरमाया, तूने यह काम क्यों किया या यह काम क्यों नहीं किया?

फायदे: हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो आदत मुबारक बयान हुई है वो आपकी जाति मामलात के बारे में है। फिर भी शरई मामलात में ऐसा न करते थे। क्योंकि भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने पर सख्ती से पाबन्द थे। (फतहुलबारी 10/460)

١٩ - باب: مَا يُنهَى مِنَ السِّبَابِ وَاللَّعْنِ

बाब 19: गाली बकने और लानत करने से मनाही।

٢٠٣٠ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلًا بِالْفُسُوقِ، وَلاَ يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ، إِلَّا ٱرْتَدَّتْ عَلَيْهِ، إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذَلِكَ). [رواه البخاري: ٦٠٤٥]

2030: अबू जर रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे जो कोई किसी मुसलमान को फासिक या काफिर कहे और वो हकीकत में फासिक या काफिर न हो तो खुद कहने वाला फासिक या काफिर हो जायेगा।

फायदे: इस हदीस के पेशे नजर हमें किसी दूसरे को काफिर कहने से बहुत बचना चाहिए। एक और रिवायत में है कि जब इन्सान किसी को लानत करता है तो वो सीधी आसमान की तरफ जाती है। फिर जमीन की तरफ लौट आती है। अगर उसे कहीं पनाह नहीं मिलती तो जिस पर लानत की गई हो, उसकी तरफ पलट जाती है। अगर वो उसके लायक है तो ठीक है, वरना लानत करने वाले पर लौट आती है।

 (फतहुलबारी 10/467)

٢٠٣١ : عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ حَلَفَ عَلَى مِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَلَيْسَ عَلَى ٱبْنِ آدَمَ نَذْرٌ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ فِي ٱلدُّنْيَا عُذِّبَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ لَعَنَ مُؤْمِنًا فَهُوَ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ قَذَفَ مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ). [رواه البخاري: ٦٠٤٧]

2031: साबित बिन जह्हाक रजि. से रिवायत है जो बैत रिजवान में शामिल थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने इस्लाम के अलावा किसी और मजहब की कसम उठाई, तो वो ऐसा ही है, जैसा कि उसने कहा और इब्ने आदम पर उस मिन्नत का पूरा करना जरूरी नहीं जो उसके इख्तियार में न हों और जिसने दुनिया में किसी चीज से खुदकशी की तो उसे कयामत के दिन तक उस चीज से सजा दी जाती रहेगी। और जिसने मौमिन पर लानत की वो उसके कत्ल के बराबर है और जिसने किसी मौमिन पर कुफ्र का इल्जाम लगाया वो भी उसके कत्ल के बराबर है।

फायदे: ख्वारिज की यह आदत थी कि वो मामूली मामूली बात पर इस्लाम वालों को काफिर करार देते। हमें इस किरदार से परहेज करना चाहिए। कलमा गो को काफिर कहना बहुत बड़ा जुर्म है। चाहे उसका ताल्लुक किसी फिरका-ए-इस्लाम से हो।

बाब 20: गीबत और चुगलखोरी की बुराई का बयान।

٢٠ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ النَّمِيمَةِ

2032: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, वो फरमा रहे थे कि चुगलखोर जन्नत में दाखिल नहीं होगा।

٢٠٣٢ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَدْخُلُ الجَنَّةَ قَتَّاتٌ). [رواه البخاري: ٦٠٥٦]

फायदे: चुगली यह है कि किसी दूसरे के अहवाल व वाक्आत को झगड़े की नियत से दूसरों तक पहुंचाना और गीबत यह है कि किसी की गैर मौजूदगी में उसके ऐबों व कमियों को दूसरों से बयान करना। चुगली और गीबत दोनों बड़े गुनाह हैं। (10/473)

बाब 21: किसी की बढ़ा चढ़ा कर तारीफ करना मना है।

٢١ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّمَادُحِ

2033: अबू बकर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक आदमी का जिक्र हुआ तो एक दूसरे आदमी ने उसकी बहुत तारीफ की। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुझे खराबी हो, तूने उसकी गर्दन उड़ा दी। यह जुम्ला आपने कई बार दोहराया। फिर फरमाया, अगर तुम में कोई आदमी ख्वाम-ख्वाह किसी की तारीफ करना चाहे तो इस तरह कहे, मैं उसको ऐसा ऐसा समझता हूँ। अगर वो उसके गुमान में वैसा ही है, जैसा उसने कहा है। बाकी सही इल्म तो अल्लाह ही के पास है और

٢٠٣٣ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلاً ذُكِرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَثْنَى عَلَيْهِ رَجُلٌ خَيْرًا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَيْحَكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ - يَقُولُهُ مِرَارًا - إِنْ كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحًا لاَ مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: أَحْسِبُ كَذَا وَكَذَا، إِنْ كَانَ يُرَى أَنَّهُ كَذَلِكَ، وَحَسِيبُهُ ٱللهُ، وَلاَ يُزَكِّي عَلَى ٱللهِ أَحَدًا). [رواه البخاري: ٦٠٦١]

अल्लाह पर किसी की पाकीजगी नहीं बयान करना चाहिए।

फायदे: किसी की तारीफ में मुबालगा नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से महद व खुदपसन्दगी और घमण्ड का शिकार हो सकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो आदमी मुंह पर तारीफ करता है, उसके मुंह में मिट्टी डालनी चाहिए। (फतहुलबारी 10/477)

बाब 22: एक दूसरे से जलन रखना और मेल-जौल छोड़ना मना है।

٢٢ - باب: ما يُنهى عن التحاسُدِ والتَّدابُرِ

2034: अनस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आपस में दुश्मनी और जलन न करो, मेल-जौल न छोड़ो, अल्लाह के बन्दों! भाई भाई बनकर रहो। किसी मुसलमान को रवा नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज्यादा बातचीत न करे।

٢٠٣٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (لاَ تَبَاغَضُوا، وَلاَ تَحَاسَدُوا، وَلاَ تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ ٱللهِ إِخْوَانًا، وَلاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ). [رواه البخاري: ٦٠٦٥]

फायदे: बुखारी की एक रिवायत के मुताबिक आपस में गुस्सा रखने वालों से बेहतर वो है जो अपना गुस्सा थूक कर सलाम करने में पहल करता है। (सही बुखारी 6077) एक रिवायत में है कि अगर वो सलाम का जवाब दे दे तो दोनों सवाब में बराबर हैं, वरना दूसरा गुनाह को समेट लेता है। (फतहुलबारी 10/490)

2035: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٢٠٣٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ:

(إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلاَ تَحَسَّسُوا، وَلاَ تَجَسَّسُوا، وَلاَ تَنَاجَشُوا، وَلاَ تَحَاسَدُوا، وَلاَ تَبَاغَضُوا، وَلاَ تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا). [رواه البخاري: ٦٠٦٤]

वसल्लम ने फरमाया, बदगुमानी से बचे रहो। क्योंकि बदगुमानी सख्त झूटी बात है। किसी के ऐबों की तलाश और जुस्तजू न करो और न ही बाहमी रिकाबत व रंजीश रखो। जलन व बुग्ज और बातचीत न करने से भी दूर रहो, बल्कि अल्लाह के बन्दे और भाई भाई बनकर रहो।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इस तरह जिन्दगी बसर करो, जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। मुमकिन है कि उस आयते करीमा की तरफ इशारा हो, जिसमें ईमान वालों को आपस आपस में भाई भाई करार दिया गया है। (फतहुलबारी 10/483)

٢٣ - باب: مَا يَجُوزُ مِنَ الظَّنِّ

बाब 23: किस किस्म का गुमान करना जाईज है?

٢٠٣٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَا أَظُنُّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا يَعْرِفَانِ مِنْ دِينِنَا شَيْئًا). وَفِي رِوَايَةٍ: (يَعْرِفَانِ دِينَنَا الَّذِي نَحْنُ عَلَيْهِ). [رواه البخاري: ٦٠٦٧، ٦٠٦٨]

2036: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं गुमान करता हूँ कि फलां और फलां आदमी हमारे दीन की कोई बात नहीं जानते। दूसरे रिवायत में है, जिस दीन पर हम हैं, वो उसे नहीं पहचानते।

फायदे: मतलब यह है कि अगर दूसरों को किसी बुरे किरदार से खबरदार करना हो तो बदगुमानी का इजहार जुर्म नहीं है, अलबत्ता किसी की बेइज्जती और रूस्वाई के लिए बुरा गुमान शरीअत में नापसन्दीदा हरकत है। (फतहुलबारी 10/586)

बाब 24: मौमिन को अपने गुनाह छिपाना जरूरी हैं।

٢٤ - باب: سِتْرُ المُؤمِنِ عَلَى نَفْسِهِ

2037: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, अल्लाह तआला मेरी उम्मत के तमाम लोगों को माफ करेंगे। मगर खुल्लम खुल्ला और ऐलानिया गुनाह करने वालों को माफ नहीं किया जायेगा। और यह बेहयाई की बात है कि आदमी रात के वक्त एक गुनाह करे। अल्लाह ने उसे छिपा रखा हो। लेकिन वो सुबह एक एक से कहता फिरे कि मैंने आज रात यह काम किया यह काम किया। हालांकि अल्लाह तआला ने रात भर उसके ऐब को छिपाये रखा। मगर उसने सुबह को अपने ऊपर से अल्लाह के पर्दे को उतार फैंका।

٢٠٣٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (كُلُّ أُمَّتِي مُعَافًى إِلَّا الْمُجَاهِرِينَ، وَإِنَّ مِنَ الْمَجَانَةِ أَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلاً، ثُمَّ يُصْبِحَ وَقَدْ سَتَرَهُ ٱللهُ، فَيَقُولُ: يَا فُلَانُ، عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا، وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ، وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ ٱللهِ عَنْهُ). [رواه البخاري: ٦٠٦٩]

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि जो गुनाहगार अल्लाह तआला की इस पर्दापोशी को बरकरार रखेंगे, कयामत के दिन अल्लाह तआला फरमायेंगे, मैंने दुनिया में तेरा पर्दा रखा और लोगों में तुझे बदनाम न किया। लिहाजा मैं तुझे आज भी माफ करता हूँ। (सही बुखारी 6070)

बाब 25: फरमाने नबवी: किसी आदमी के लिए जाईज नहीं कि वो अपने भाई को तीन दिन से ज्यादा के लिए छोड़ दे। इसकी रोशनी में बातचीत न करने का बयान।

٢٥ - باب: الهِجْرَةُ وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «لاَ يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثٍ»

٢٠٣٨ : عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ، يَلْتَقِيَانِ: فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلاَمِ). [رواه البخاري: ٦٠٧٧]

2038: अबू अय्यूब अनसारी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी मुसलमान को यह सजावार नहीं कि वो तीन रात से ज्यादा अपने मुसलमान भाई से बातचीत करना बन्द कर दे, यानी उससे खफा रहे। दोनों एक दूसरे को देखकर मुंह फेर लें। उन दोनों में बेहतर है वो जो सलाम (और मुलाकात) करने में शुरूआत करे।

फायदे: अगर कोई जानबूझकर शरई तकाजों को पामाल करता है तो उससे सलाम व कलाम छोड़ लेने की इजाजत है। जैसा कि इमाम बुखारी ने एक उनवान कायम करके हजरत कअब बिन मालिक रजि. के वाक्ये का हवाल दिया है।

---

٢٦ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَكُونُوا۟ مَعَ ٱلصَّٰدِقِينَ﴾ وَمَا يُنْهَى عَنِ الْكَذِبِ

बाब 26: फरमाने इलाही: मौमिनों! अल्लाह से डरो और सच बोलने वालों का साथ दो और झूट की मनाही का बयान।

٢٠٣٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ، وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتَّى يَكُونَ صِدِّيقًا. وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ، وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ، حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ ٱللهِ كَذَّابًا). [رواه البخاري: ٦٠٩٤]

2039: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, सच्चाई इन्सान को नेकी की तरफ ले जाती है और नेकी जन्नत में ले जाती है और आदमी सच बोलता रहता है यहां तक कि वो सिद्दीक का

मर्तबा हासिल कर लेता है। और झूट इन्सान को बुरे कामों की तरफ ले जाता है और बुरे काम आदमी को जहन्नम की तरफ ले जाते हैं और आदमी झूट बोलता रहता है, आखिरकार अल्लाह के यहां उसे झूटा लिख दिया जाता है।

फायदे: एक रिवायत में है कि आदमी जब झूट बोलता है और हर वक्त झूट के लिए कोशिश करता है तो उसके दिल पर काले नुकते लगने से वो बिल्कुल काला हो जाता है। फिर उसे मुस्तकिल तौर पर झूट बोलने वालों में लिख दिया जाता है।

बाब 27: तकलीफ पर सब्र करने का बयान।

٢٧ - باب: الصَّبْرُ فِي الأَذَىٰ

2040: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तकलीफदेह बात सुनकर अल्लाह से ज्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं। लोग (मआज उल्लाह) बकते हैं कि उसकी औलाद है, मगर वो उनसे दरगुजर फरमाकर उन्हें रोजी दिये जाता है।

٢٠٤٠ : عَنْ أَبِي مُوسَىٰ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيْسَ أَحَدٌ، أَوْ: لَيْسَ شَيْءٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ ٱللهِ، إِنَّهُمْ لَيَدْعُونَ لَهُ وَلَدًا، وَإِنَّهُ لَيُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ). [رواه البخاري: ٦٠٩٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि अल्लाह बन्दों के शिर्क के बावजूद उन्हें रिज्क देता है और फौरन अजाब नाजिल नहीं करता।

(फतहुलबारी 10/512)

बाब 28: गुस्से से परहेज करने का बयान।

٢٨ - باب: الحَذَرُ مِنَ الغَضَبِ

2041: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, पहलवान वो नहीं जो कुश्ती में दूसरों को पटक दे। हां पहलवान वो है जो गुस्से के वक्त अपने आपको काबू में रखे।

٢٠٤١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ). [رواه البخاري: ٦١١٤]

फायदेः बुखारी की एक रिवायत में है कि अगर ज्यादा गुस्से के वक्त "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम" पढ़ लिया जाये तो गुस्सा खत्म हो जाता है। (सही बुखारी 6115)

2042: अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि मुझे कुछ वसीयत फरमायें। तो आपने फरमाया, गुस्सा न किया कर। उसने कई बार पूछा, लेकिन आपने यही फरमाया कि गुस्सा न किया कर।

٢٠٤٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَوْصِنِي؟ قَالَ: (لَا تَغْضَبْ). فَرَدَّدَ مِرَارًا، قَالَ: (لَا تَغْضَبْ). [رواه البخاري: ٦١١٦]

फायदेः एक रिवायत में है कि सवाल करने वाले ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, मुझे मुख्तसर सी नसीहत फरमायें। ताकि मैं उस पर अमल करके जन्नत हासिल कर सकूं। तो आपने फरमाया कि गुस्सा न किया कर। इससे तुझे जन्नत मिल जायेगी। (फतहुलबारी 10/519)

बाब 29: हया (शर्म) का बयान।

٢٩ - باب: الحَيَاءُ

2043: इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु

٢٠٤٣ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

अलैहि वसल्लम ने फरमाया, शर्म व हया से हमेशा नेकी ही जन्म लेती है।

(الحَيَاءُ لاَ يَأْتِي إِلَّا بِخَيْرٍ). [رواه البخاري: ٦١١٧]

फायदेः हया की दो किस्में हैं। एक शरई यानी अल्लाह की हदूद को पामाल करने से शर्म करे। इस किस्म की हया को ईमान का हिस्सा करार दिया है दूसरी किस्म हया तबई की है जो शरई हया के लिए मददगार साबित होता है। (फतहुलबारी 10/522)

बाब 30: जब इन्सान बेहया हो जाये तो जो मर्जी करे।

٣٠ - باب: إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ

2044: अबू मसऊद अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया पहली नबूवत की जो बात लोगों ने पाई वो यह है कि अगर तू बेहया है तो फिर जो तेरा जी चाहे करता रह।

٢٠٤٤ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ الأُولَى: إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ). [رواه البخاري: ٦١٢٠]

फायदेः इस हदीस से हया की अजमत का पता चलता है कि यह गुनाहों से रोकने का काम देता है। किसी ने क्या खूब कहा हैः- "बे हया बाश हरचे ख्वाही कुन"

बाब 31: लोगों के साथ खुश दिली से पेश आने और अपने घर वालों से मजाक करने का बयान। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने फरमाया कि लोगों से मेल-मिलाप कायम रखो, लेकिन अपने दीन को जख्मी न करो।

٣١ - باب: الانْبِسَاطُ إِلَى النَّاسِ، قَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: خَالِطِ النَّاسَ وَدِينَكَ لاَ تَكْلُمَنَّهُ وَالدُّعَابَةُ مَعَ الأَهْلِ

2045. अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम बच्चों से भी दिल्लगी किया करते थे। यहां तक कि मेरा एक छोटा भाई था, उससे फरमाया करते थे कि ऐ अबू उमेर! तुम्हारी चिड़िया नुगैर तो बखैर है?

٢٠٤٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَيُخَالِطُنَا، حَتَّى يَقُولَ لأَخٍ لِي صَغِيرٍ: (يَا أَبَا عُمَيْرٍ، مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ). [رواه البخاري: ٦١٢٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि सहाबा किराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप हमसे मजाक करते हैं। फरमाया, हां! लेकिन हक से आगे नहीं बढ़ता हूँ। मालूम हुआ कि उस मजाक में हद से ज्यादा या हद से कम नहीं होना चाहिए।

(फतहुलबारी 10/526)

बाब 32: मौमिन एक सुराख से दो बार नहीं डसा जाता।

٣٢ - باب: لاَ يُلْدَغُ المُؤمِنُ مِنْ جُحْرٍ مَرَّتَيْنِ

2046. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मौमिन एक बिल से दो बार नहीं डसा जाता।

٢٠٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (لاَ يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ). [رواه البخاري: ٦١٣٣]

फायदे: मुसलमानों की बुराई करने वाला एक अबू उज्जा जहमी नामी शायर बदर के मौके पर कैद हुआ और आगे बुराई न करने का वादा करके आजादी हासिल की। मक्का जाकर दोबारा मुसलमानों के खिलाफ शायरी शुरू कर दी। उहद के मौके पर दोबारा कैदी बना और अपनी तंगदस्ती का बयान कर दोबारा आजादी मांगी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नपा-तुला मुहावरा इस्तेमाल किया।

(फतहुलबारी 10/630)

बाब 33: कौनसे शेअर, रजजिया कलाम और हदी पढ़ना जाईज़ है।

٣٣ - باب: مَا يَجُوزُ مِن الشِّعْرِ وَالرَّجَزِ وَالحِدَاءِ وما يُكرَهُ مِنْهُ

2047: अबू बिन कअब रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुछ शेअर तो हिकमत से लबरेज होते हैं।

٢٠٤٧ : عَنْ أُبَيّ بن كَعْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً). [رواه البخاري: ٦١٤٥]

फायदे: जो शेअर दीने इस्लाम के दफाअ और उसकी सरबुलन्दी में कहे जायें वो काबिले तारीफ हैं और इसके उल्टे अगर मुबालगा आमिजी और झूट बयानी पर मुस्तमिल हो तो मजम्मत के लायक हैं।

 (फतहुलबारी 10/540)

बाब 34: शेअरो-शायरी में इस कद्र मशगूल होना मकरूह है कि वो अल्लाह के जिक्र, तालीम के हुसूल और तिलावते कुरआन से भी उसे रोक दे।

٣٤ - باب: مَا يُكرَهُ أنْ يَكُونَ الغَالِبَ عَلَى الإنسَانِ الشِّعْرُ حَتَّى يَصُدَّهُ عَنْ ذِكْرِ الله وَالعِلْمِ وَالقُرآنِ

2048: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर तुममें से किसी का पेट पीप (मवाद) से भर जाये तो यह उससे बेहतर है कि उसे गन्दे शेअर से भरे।

٢٠٤٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا). [رواه البخاري: ٦١٥٤]

फायदे: मतलब यह है कि इस कद्र शाअरी मज्जमत के काबिल है कि दिन रात शेअरगोई में लगा रहे और शेअर के अलावा उसके दिल में और कोई चीज न हो। कुरआन व हदीस से उसे कोई ताल्लुक न हो।

(फतहुलबारी 10/550)

बाब 35: किसी को "तेरी खराबी" कहने का बयान।

٣٥-باب: مَا جَاءَ فِي قَوْلِ الرَّجُلِ: وَيْلَكَ

2049: अनस रजि. के तरीक से मरवी हदीस (1530) गुजर चुकी है, जिसमें उन्होंने फरमाया था कि एक देहाती नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा कि कयामत कब आयेगी? उस रिवायत में उस कौल के बाद तू उसके साथ होगा, जिससे तू मुहब्बत रखता है, इतना इजाफा है कि हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम भी इस तरह आपके साथ होंगे। तो आपने फरमाया, हां!

٢٠٤٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ ٱلْبَادِيَةِ أَتَى ٱلنَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَتَى تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ؟ تَقَدَّمَ وزَادَ فِي هٰذِهِ ٱلرِّوَايَةِ بَعْدَ قَوْلِهِ: (أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ). فَقُلْنَا: وَنَحْنُ كَذٰلِكَ. قَالَ: (نَعَمْ). (راجع: ١٥٣٠) [رواه البخاري: ٦١٦٧ وانظر حديث رقم: ٣٦٨٨]

फायदे: हदीस में यह भी है कि जब उस देहाती ने कयामत के बारे में सवाल किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुझे अफसोस हो, तूने कयामत के लिए क्या तैयारी कर रखी है। वाजेह रहे कि इस तरह के कलमात से बद-दुआ देना मकसूद नहीं है।

बाब 36: लोगों को (कयामत के दिन) उनके बाप का नाम लेकर बुलाया जायेगा।

٣٦ - باب: مَا يُدْعَى النَّاسُ بِآبَائِهِمْ

2050: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन गद्दारों के लिए एक झण्डा गाड़ा जायेगा। और कहा जायेगा

٢٠٥٠ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ ٱلْغَادِرَ يُنْصَبُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ: هٰذِهِ غَدْرَةُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ). [رواه البخاري: ٦١٧٧]

कि यह फलां बिन फलां की गद्दारी का निशान है।

फायदे: इमाम बुखारी का मकसद एक कमजोर रिवायत की तरदीद करना है, जिसके मुताबिक कयामत के दिन लोगों को उनकी मांओं के नाम से पुकारा जायेगा ताकि बाप के बारे में उनकी पर्दादरी न हो। चूनांचे एक हदीस में सराहत भी है कि तुम्हें बाप के नाम से पुकारा जायेगा। (फतहुलबारी 10/563)

बाब 37: फरमाने नबवी: "करम तो मौमिन का दिल है।"

٣٧ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «إِنَّمَا الْكَرْمُ قَلْبُ الْمُؤْمِنِ»

2051: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अंगूर को करम न कहो, क्योंकि करम तो सिर्फ मौमिन का दिल है।

٢٠٥١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَا تُسَمُّوا الْعِنَبَ الْكَرْمَ، إِنَّمَا الْكَرْمُ قَلْبُ الْمُؤْمِنِ). [رواه البخاري: ٦١٨٣]

फायदे: दौरे जाहिलियत में अंगूर को करम इस लिए कहा जाता था कि उससे बनाई हुई शराब पीने से इन्सान करमपेशा बन जाता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी तरदीद फरमाई है। (फतहुलबारी 10/567)

बाब 38: किसी का नाम बदलकर उससे अच्छा नाम रखना।

٣٨ - باب: تَحْوِيلُ الاسْمِ إِلَى اسْمٍ أَحْسَنَ مِنْهُ

2052: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि जैनब रजि. का नाम पहले बर्राहा (नेक और सालेह) रखा गया था इस पर कहा गया कि वो अपने नफ्स की पाकी जाहिर करती है तो रसूलुल्लाह

٢٠٥٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ زَيْنَبَ كَانَ ٱسْمُهَا بَرَّةَ، فَقِيلَ: تُزَكِّي نَفْسَهَا، فَسَمَّاهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ زَيْنَبَ. [رواه البخاري: ٦١٩٢]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका नाम जैनब रख दिया।

फायदेः उम्मे मौमिनिन जुवेरिया रजि. का नाम भी पहले बर्राह था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका नाम बदलकर जुवेरिया रखा और पहले नाम को नापसन्द फरमाया। (फतहुलबारी 10/576)

बाब 39: किसी के नाम से कोई हरफ कम करके पुकारना।

٣٩ - باب: مَنْ دَعا صَاحِبَهُ فَنَقَصَ مِن اسْمِهِ حَرْفاً

2053: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि उम्मे सुलैम रजि. कमजोर औरतों के साथ जा रहे थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनजशा नामी गुलाम ऊंटों पर उन्हें ले जा रहा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अनजश! आहिस्ता चलो, देखना कही यह शीशे टूट न जाये।

٢٠٥٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ فِي الثَّقَلِ، وَأَنْجَشَةُ غُلاَمُ النَّبِيِّ ﷺ يَسُوقُ بِهِنَّ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَنْجَشُ، رُوَيْدَكَ سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ). [رواه البخاري: ٦٢٠٢]

फायदेः चूंकि ऊंट के चलाने वाले शेअर पढ़ने से ऊंटों की रफ्तार में तेजी आ जाती है। इसलिए खतरा था कि ऊंटों पर सवार औरतें कहीं गिर न जायें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे हालात में हजरत अनजशा रजि. को हिदायत जारी फरमाई।

बाब 40: अल्लाह के नजदीक सबसे बुरा नाम कौनसा है?

٤٠ - باب: أبغَضُ الأَسْمَاءِ إِلَى اللهِ عز وجل

2054: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत के

٢٠٥٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَخْنَى الأَسْمَاءِ عِنْدَ ٱللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

رَجُلٌ تَسَمَّى مَلِكَ الأَمْلاَكِ). [رواه البخاري: ٦٢٠٥]

दिन अल्लाह के नजदीक नापसन्दीदा और जलील तरीन वो आदमी है जिसका नाम शहंशाह वगैरह हो।

फायदे: इससे मालूम हुआ कि शाहाने शाह नाम रखना हराम है। इस तरह खालिकुल खलक, अहकमुल हाकिमीन, सुलतानुल सलातिन और अमीरूल उमराअ जैसे नाम रखने भी जाईज नहीं हैं। (फतहुलबारी 10/590) गालिबन इसी वजह से सऊदी हुकूमत का बादशाह अपने आपको खादिमुल हरमैन कहलाता है।

٤١ - باب: الحَمْدُ لِلعَاطِسِ

बाब 41: छींक मारने वाले का "अलहम्दु लिल्लाह" कहना।

٢٠٥٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: عَطِسَ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الآخَرَ، فَقِيلَ لَهُ، فَقَالَ: (هٰذَا حَمِدَ ٱللهَ، وَهٰذَا لَمْ يَحْمَدِ ٱللهَ). [رواه البخاري: ٦٢٢١]

2055: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने दो आदमियों को छींक आई। एक के जवाब में आपने "यरहमुकल्लाह" कहा, दूसरे के लिए कुछ न फरमाया। इस पर कहा गया, तो आपने फरमाया, उसने अलहम्दु लिल्लाह कहा था, जबकि दूसरे ने अलहम्दु लिल्लाह नहीं कहा था।

फायदे: छींक मारने के आदाब यह हैं कि छींक के वक्त अपनी आवाज को धीमी रखें और अलहम्दु लिल्लाह बुलन्द आवाज में कहें। और अपने मुंह पर कोई कपड़ा वगैरह रख लें ताकि पास बैठने वाले को कोई तकलीफ न पहुंचे। (फतहुलबारी 10/602)

٤٢ - باب: مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ العُطَاسِ وَمَا يُكْرَهُ مِنَ التَّثَاؤُبِ

बाब 42: छींक के अच्छे और जमाई (उबासी) के बुरे होने का बयान।

٢٠٥٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ ٱللهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَإِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ وَحَمِدَ ٱللهَ، كَانَ حقًّا عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ أَنْ يَقُولَ لَهُ: يَرْحَمُكَ ٱللهُ، وَأَمَّا التَّثَاؤُبُ: فَإِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا تَثَاءَبَ ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ). [رواه البخاري: ٦٢٢٣]

2056: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह तआला छींक को पसन्द करता है। और उबासी को नापसन्द फरमाता है। सो जब तुम में से किसी को छींक आये तो वो अलहम्दु लिल्लाह कहे, तो सुनने वाले हर मुसलमान पर जरूरी है कि ''यरहमुकल्लाह'' कहे। लेकिन जमाई (उबासी) चूंकि शैतान की तरफ से है, इसलिए जहां तक मुमकिन हो, उसे रोका जाये। क्योंकि तुम में से जब कोई भी जमाई (उबासी) लेता है तो शैतान हंसता है।

फायदे: एक रिवायत में है कि जब जमाई (उबासी) आये तो अपने मुंह पर हाथ रखकर उसे रोका जाये। अगर न रूके तो जमाई (उबासी) के वक्त आवाज न निकाली जाये। (फतहुलबारी 10/611) चूंकि जमाई (उबासी) शैतान की तरफ से होती है। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जमाई (उबासी) न आती थी।

(फतहुलबारी 10/613)



किताबुल इसतिइजानी
इजाजत लेने का बयान

बाब 1: छोटी जमात बड़ी जमात को पहले सलाम करे।

١ - باب: تَسْلِيمُ القليلِ عَلى الكثيرِ

2057: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को और थोड़े आदमी ज्यादा को सलाम करें।

٢٠٥٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ وَالمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ). [رواه البخاري: ٦٢٣١]

फायदे: जमात को एक आदमी की तरफ से सलाम कहना काफी है, और जमात की तरफ से अगर एक आदमी इसका जवाब दे दे तो कोई हर्ज नहीं। अगर तमाम जमात वाले उसका जवाब दें तो भी ठीक है।

बाब 2: चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे।

٢ - باب: تَسْلِيمُ المَاشِي عَلى القَاعِدِ

2058. अबू हुरैरा रजि. से ही एक रिवायत में है कि उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सवार पैदल को, चलने वाला बैठे हुए को और थोड़े आदमी ज्यादा को सलाम करें।

٢٠٥٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فِي رِوايَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى المَاشِي، وَالمَاشِي عَلَى القَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ). [رواه البخاري: ٦٢٣٣]

फायदे: इस रिवायत से यह भी मालूम हुआ कि सवार पैदल चलने वाले को सलाम कहे। अगर दोनों सवार या पैदल हों तो दीनी लिहाज से छोटे औहदे वाला अपने से बड़े औहदे वाले को सलाम कहे।

(फतहुलबारी 5/367)

बाब 3: जान पहचान हो या न हो, सब को सलाम करना।

٣ - باب: السَّلامُ لِلْمَعْرِفَةِ وَغَيْرِ الْمَعْرِفَةِ

2059: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक आदमी ने पूछा, इस्लाम में कौनसा काम बेहतर है? तो आपने फरमाया (मोहताजों को) खाना खिलाना और जान पहचान हो या न हो, सब को सलाम करना।

٢٠٥٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الإِسْلامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: (تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلاَمَ، عَلَى مَنْ عَرَفْتَ، وَعَلَى مَنْ لَمْ تَعْرِفْ). [رواه البخاري: ٦٢٣٦]

फायदे: एक रिवायत में है कि कयामत की निशानियों में से है कि इन्सान सिर्फ अपने पहचानने वाले को सलाम कहेगा। इसलिए बन्दा मुस्लिम को चाहिए कि जान पहचान और अनजान सभी को सलाम कहे।

(फतहुलबारी 11/21)

बाब 4: इजाजत लेने का हुक्म इसलिए है कि नजर न पड़े।

٤ - باب: الاسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ الْبَصَرِ

2060: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर में लकड़ी की कंघी से सर खुजला रहे थे कि एक आदमी ने आपके कमरे में किसी सुराख

٢٠٦٠ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: اطَّلَعَ رَجُلٌ مِنْ جُحْرٍ فِي حُجَرِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَعَ النَّبِيِّ ﷺ مِدْرًى يَحُكُّ بِهِ رَأْسَهُ، فَقَالَ: (لَوْ أَعْلَمُ أَنَّكَ تَنْظُرُ، لَطَعَنْتُ بِهِ فِي

से झांका। आपने फरमाया, अगर मुझे मालूम होता कि तू झांक रहा है तो मैं तेरी आंख में यह लकड़ी मार कर उसे फोड़ देता। इजाजत लेने का हुक्म ही तो इस किस्म की चोर निगाहों के लिए है।

عَيْنِكَ، إِنَّمَا جُعِلَ الاسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ الْبَصَرِ). [رواه البخاري: ٦٢٤١]

फायदे: इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह भी साबित किया है कि अगर कोई आदमी बिना इजाजत किसी के घर में झांके, उस घर वाले अगर उसकी आंख फोड़ डाले तो उस पर सजा नहीं। (सही बुखारी 6900)

बाब 5: शर्मगाह के अलावा दूसरे अंगों से भी जिना होने का बयान।

• - باب: زِنَا الجَوَارِحِ دُونَ الفَرْجِ

2061: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने इब्ने आदम का जिना में हिस्सा रख दिया है जो उससे जरूर होगा। आंख का जिना बुरी नजर से देखना है, जबान का जिना नाजाईज बातचीत है और नफ्स इसकी तमन्ना और ख्वाहिश करता है, फिर शर्मगाह इस ख्वाहिश को सच्चा करती है या झूटला देती है।

٢٠٦١ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَا، أَدْرَكَ ذٰلِكَ لاَ مَحَالَةَ، فَزِنَا الْعَيْنِ النَّظَرُ، وَزِنَا اللِّسَانِ النُّطْقُ، وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي، وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذٰلِكَ أَوْ يُكَذِّبُهُ). [رواه البخاري: ٦٢٤٣]

फायदे: नजरबाजी और नाजाईज बातचीत को भी जिना कहा गया है। क्योंकि हकीकी जिना की दावत देते हैं और इसके लिए रास्ता हमवार करते हैं। बिना इजाजत किसी के घर में झांकना भी इसी में से है। (फतहुलबारी 11/26)

बाब 6: बच्चों को सलाम करना।

٦ - باب: التَّسْلِيمُ عَلَى الصِّبْيَانِ

2062: अनस रजि. से रिवायत है, वो लड़कों के पास से गुजरे तो उन्हें सलाम कहा और फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ऐसा ही किया करते थे।

٢٠٦٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ مَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، وَقَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَفْعَلُهُ. [رواه البخاري: ٦٢٤٧]

फायदे: निसाई की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अनसार की जियारत के लिए जाते तो उनके बच्चों को सलाम कहते, उनके सर पर हाथ फैरते और उनके लिए खैरोबरकत की दुआ फरमाते। (फतहुलबारी 11/33)

बाब 7: अगर घर वाला पूछे, कौन है? तो उसके जवाब में "मैं हूँ" कहने का बयान।

٧- باب: إِذَا قَالَ: مَنْ ذَا؟ فَقَالَ: أَنَا

2063: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ ताकि अपने वालिदगरामी के कर्ज के बारे में कुछ गुजारिश करूं। मैंने दरवाजे पर दस्तक दी तो आपने पूछा कौन है? मैंने कहा, "मैं हूं"। आपने फरमाया, "मैं तो मैं भी हूँ" (नाम क्यों नहीं लेता)। आपने सिर्फ "मैं हूँ" कहने को गलत ख्याल किया।

٢٠٦٣ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي دَيْنٍ كَانَ عَلَى أَبِي، فَدَقَقْتُ الْبَابَ، فَقَالَ: (مَنْ ذَا؟). فَقُلْتُ: أَنَا، فَقَالَ: (أَنَا أَنَا). كَأَنَّهُ كَرِهَهَا. [رواه البخاري: ٦٢٥٠]

फायदे: हजरत जाबिर रजि. को चाहिए था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूछने पर अपना नाम बताते, क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि सिर्फ आवाज से साहिबे खाना किसी को नहीं पहचान सकता। (फतहुलबारी 11/35)

बाब 8: मजलिसों में कुशादगी का बयान।

٨ - باب: التَّفَسُّحُ فِي المَجَالِسِ

2064: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कोई आदमी दूसरे को उस जगह से उठाकर वहां खुद न बैठे बल्कि कुशादगी पैदा करो और दूसरों को जगह दो।

٢٠٦٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ، وَلٰكِنْ تَفَسَّحُوا وَتَوَسَّعُوا). [رواه البخاري: ٦٢٧٠]

फायदे: हजरत इब्ने उमर रजि. इस हदीस के पेशे नजर किसी आदमी को मजलिस से बर्खास्त करके खुद वहां बैठने को बुरा ख्याल करते थे। इस तरह हजरत अबू बकरा रजि. से भी इस किस्म की नापसन्दीदगी मरवी है। (फतहुलबारी 11/63)

बाब 9: दोनों घुटनों को खड़ा करके दोनों हाथों से हलका (घेरा बनाकर) बांध कर बैठने का बयान।

٩ - باب: الاحْتِبَاءُ بِاليَدِ

2065: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काबा के सहन में ऐसे बैठे हुए देखा कि आप अपने हाथों का अपनी पिण्डलियों के पास हलका बनाये थे।

٢٠٦٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بِفِنَاءِ الْكَعْبَةِ، مُحْتَبِيًا بِيَدِهِ هٰكَذَا. [رواه البخاري: ٦٢٧٢]

फायदे: कुछ रिवायतों में वजाहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों पांव मिलाये, घूटनों को खड़ा किया, फिर दोनों हाथों से पिण्डलियों का हलका बनाया। (फतहुलबारी 11/66)

१० - باب: إذَا كانُوا أكثَرَ مِن ثَلاثَةٍ فَلاَ بَأسَ بالمُسَارَّةِ وَالمُناجَاةِ

बाब 10: अगर कहीं तीन से ज्यादा आदमी हो तो दो आदमी सरगोशी (आपस में चुपके से बातचीत) कर सकते हैं।

٢٠٦٦ : عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إذَا كُنْتُمْ ثَلاثَةً، فَلاَ يَتَنَاجَى رَجُلاَنِ دُونَ الآخَرِ حَتَّى تَخْتَلِطُوا بِالنَّاسِ، أَجْلَ أَنْ يُحْزِنَهُ). [رواه البخاري: ٦٢٩٠]

2066: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम कहीं सिर्फ तीन आदमी हो तो तीसरे को जुदा करके दो मिलकर सरगोशी न करें। क्योंकि ऐसा करना तीसरे के लिए परेशानी का कारण है। हां! जब और लोग शामिल हो जायें तो सरगोशी करने में कोई हर्ज नहीं है।

फायदेः एक रिवायत में है कि अगर मजलिस में चार आदमी हों तो उनमें से दो आदमी बाहमी सरगोशी कर सकते है। जैसा कि हजरत इब्ने उमर रजि. से मरवी है कि सरगोशी के वक्त ऐसा कर लेते थे। (फतहुलबारी 11/83)

١١ - باب: لا تُتْرَكُ النَّارُ فِي البَيْتِ عِنْدَ النَّوْمِ

बाब 11: सोने के वक्त घर में चिराग जलता हुआ न छोड़ा जाये।

٢٠٦٧ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قالَ: ٱحْتَرَقَ بَيْتٌ بِالمَدِينَةِ عَلَى أَهْلِهِ مِنَ اللَّيْلِ، فَحُدِّثَ بِشَأْنِهِمُ النَّبِيُّ ﷺ، قالَ: (إنَّ هٰذِهِ النَّارَ إنَّمَا هِيَ عَدُوٌّ لَكُمْ، فَإِذَا نِمْتُمْ فَأَطْفِئُوهَا عَنْكُمْ). [رواه البخاري: ٦٢٩٤]

2067: अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि एक बार मदीना में रात के वक्त किसी के घर में आग लग गई। वो जल गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनका हाल बताया गया। आपने फरमाया, यह आग तो तुम्हारी दुश्मन है, लिहाजा जब तुम सोने लगो तो उसे बुझा दिया करो।

फायदेः दीया जल रहा हो तो उससे भी आग लगने का खतरा होता है। लिहाजा उसे भी बुझा देना चाहिए। अगर दीया लालटेन वगैरह में रखा हो और वहां से गिरने या आग लगने का अन्देशा न हो तो उसके जलते रहने में कोई हर्ज नहीं। (फतहुलबारी 11/86)

बाब 12: इमारत बनाने का बयान।

2068: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में खुद अपना हाल देखा है। सिर्फ एक झौंपड़ा अपने हाथ से बनाया था जो बारिश से बचाता और धूप में साया करता था। इसके बनाने में उसकी मख्लूक में से किसी ने मेरी मदद न की थी।

١٢ - باب: مَا جَاءَ فِي الْبِنَاءِ

٢٠٦٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُنِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَنَيْتُ بِيَدِي بَيْتًا يُكِنُّنِي مِنَ الْمَطَرِ، وَيُظِلُّنِي مِنَ الشَّمْسِ، ما أعانني عَلَيْهِ أَحَدٌ مِنْ خَلْقِ ٱللهِ. [رواه البخاري ٦٣٠٢]

फायदेः जरूरत से ज्यादा इमारत बनाने को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नापसन्द फरमाया। चूनांचे एक रिवायत में है कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ खैर-ख्वाही नहीं चाहते तो वो अपने माल को इमारत बनाने में खर्च करना शुरू कर देता है। (फतहुलबारी 11/93)



किताबुद्अवाती

दुआओं के बयान में

बाब 1: हर नबी की एक दुआ कबूल हुई है।

١ - باب: لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ

2069: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हर नबी के लिए एक दुआ मुस्तजाब होती है। जो वो मांगता है (उसे मिलता है) और मैं यह चाहता हूँ कि अपनी दुआ मुस्तजाब को आखिरत में अपनी उम्मत की शिफाअत के लिए उठा रखूं।

٢٠٦٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ يَدْعُو بِهَا، وَأُرِيدُ أَنْ أَخْتَبِيءَ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي فِي الآخِرَةِ). [رواه البخاري: ٦٣٠٤]

फायदेः एक रिवायत में है कि मैंने जो दुआ आखिरत के लिए उठा रखी है, उससे वो आदमी जरूर मुस्तफिद होगा जिसने मरते दम तक अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया था, इसका मतलब यह है कि शिर्क के अलावा दूसरे जुर्म का मुर्तकब आखिरकार जन्नत में पहुंच जायेगा। (11/97)

बाब 2: सय्यदुल इस्तिगफार।

٢ - باب: أَفْضَلُ الاسْتِغْفَارِ

2070: शद्दाद बिन औस रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٢٠٧٠ : عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:

(سَيِّدُ الاسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لاَ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ ما ٱسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ ما صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ. قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا، فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ، فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا، فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ، فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٦٣٠٦]

वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि सय्यदुल इस्तिगफार यह दुआ है:

“ऐ अल्लाह तू मेरा मालिक है। तेरे अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया है, मैं तेरा बन्दा हूँ और अपनी हिम्मत के मुताबिक तेरे वादे और अहद पर कायम हूँ। मैंने जो बुरे काम किये हैं, उनसे तेरी पनाह चाहता हूँ। मैं तेरे अहसान और अपने गुनाह का ऐतराफ करता हूँ। मेरी खतायें बख्श दे। तेरे अलावा कोई और गुनाह बख्शने वाला नहीं।

आपने फरमाया, जिसने यह दुआ सच्चे दिल से दिन के वक्त पढ़ी, वो उस दिन शाम से पहले मर गया तो जन्नती है और जिसने रात के वक्त उसे साफ नियत से पढ़ा और सुबह होने से पहले मर गया तो वो जन्नत वालों में से है।

फायदेः सय्यदुल इस्तिगफार पढ़ने के बाद मजकूरा फजीलत उस वक्त हासिल होगी जब दिल में इखलास हो और पूरा ध्यान देकर उसे पढ़ा जाये और यकीन व भरोसा भी जरूरी है। (फतहुलबारी 11/100)

٣ - باب: اسْتِغْفَارُ النَّبِيِّ ﷺ فِي اليَوْمِ وَاللَّيْلَةِ

बाब 3: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रात-दिन इस्तिगफार करना।

٢٠٧١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (وَٱللهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ ٱللهَ

2071: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً». [رواه البخاري: ٦٣٠٧]

वसल्लम से सुना, फरमा रहे थे, अल्लाह की कसम! मैं तो हर रोज सत्तर बार से ज्यादा अल्लाह के सामने तौबा और इस्तिगफार करता हूँ।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रोज कम से कम सौ बार इस्तिगफार करते थे। कुछ रिवायतों में यह अल्फाज हैं "अस्तगफिरुल्लाहल्लजि ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्यूम व अतूबु इलैहि"। कुछ रिवायतें इन अल्फाज में इस्तिगफार करते "रब्बिगफिरली व तुब अलैहि इन्नका अन्त-त्तव्वाबुल गफूर"। (फतहुलबारी 11/101)

٤ - باب: التَّوْبَةُ

बाब 4: तौबा के बयान में।

٢٠٧٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ حدَّث بِحَدِيثَيْنِ: أَحَدُهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ - وَالآخَرُ عَنْ نَفْسِهِ، قَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَأَنَّهُ قَاعِدٌ تَحْتَ جَبَلٍ يَخَافُ أَنْ يَقَعَ عَلَيْهِ، وَإِنَّ الْفَاجِرَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَذُبَابٍ مَرَّ عَلَى أَنْفِهِ، فَقَالَ بِهِ هٰكَذَا. ثُمَّ قَالَ: (للهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ مِنْ رَجُلٍ نَزَلَ مَنْزِلاً وَبِهِ مَهْلَكَةٌ، وَمَعَهُ رَاحِلَتُهُ، عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ، فَوَضَعَ رَأْسَهُ فَنَامَ نَوْمَةً، فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ رَاحِلَتُهُ، حَتَّى إِذَا اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْحَرُّ وَالْعَطَشُ أَوْ مَا شَاءَ ٱللهُ، قَالَ: أَرْجِعُ إِلَى مَكَانِي، فَرَجَعَ فَنَامَ نَوْمَةً، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ، فَإِذَا رَاحِلَتُهُ عِنْدَهُ). [رواه البخاري: ٦٣٠٨]

2072: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने दो हदीसें बयान की, एक तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से और दूसरी अपनी तरफ से। आपने फरमाया कि मौमिन को अपने गुनाह से इतना डर लगता है कि जैसे वो पहाड़ के नीचे बैठा हो और उसे अन्देशा हो कि यह पहाड़ मुझ पर न गिर पड़े। इसके उल्टे बदकार आदमी अपने गुनाह को इतना हल्का समझता है कि जैसे नाक पर मक्खी बैठी हो और उसने ऐसा करके उड़ा दिया हो। फिर फरमाया, अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा पर उससे भी ज्यादा खुश होता

है, जिस कद्र वो आदमी खुश होता है जो सफर के दौरान एक ऐसे मकाम पर पड़ाव करे जो हलाकत की जगह थी, ऊंटनी उसके साथ हो, जिस पर खाना-दाना लदा हुआ हो। चूनांचे वो तकिये पर सर रखकर सो जाये। जब उठे तो ऊंटनी साजो-सामान समेत गायब हो, फिर उस आदमी पर भूख और प्यास या जो अल्लाह को मन्जूर हो, उसका गलबा हुआ तो उसे तलाश करने के लिए निकला। आखिर थक हार कर उस जगह वापिस आ जाये, जहां पर वो लेटा था और मौत के यकीन से सो जाये। थोड़ी देर बाद जो आंख खुली तो देखता है कि उसकी ऊंटनी तो (खाने पीने के सामान समेत) उसके सामने खड़ी है।

फायदे: सही मुस्लिम में हजरत अनस रजि. से मरवी हदीस के आखिर में यह अल्फाज हैं कि वो अपनी ऊंटनी की लगाम पकड़कर शिद्दत जज्बात में गैर शऊरी तौर पर यह अल्फाज कहता है कि ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रब हूँ। यानी बहुत ज्यादा मुहब्बत में आकर उसने गलत कलमात अदा कर दिये। इससे मालूम हुआ कि शिद्दत जज्बात में अगर कुफ्र व शिर्क पर मबनी कोई बात मुंह से निकल जाये तो माफी के काबिल है। (11/108)

बाब 5: सोते वक्त क्या दुआ पढ़ें।

٥ - باب: مَا يَقُولُ إِذَا نَامَ

2073: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रात को बिस्तर पर लेटते तो अपना दायां हाथ अपने दायें गाल के नीचे रख लेते और यह दुआ पढ़तेः "ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम से मैं सोता और जागता हूँ।

٢٠٧٣ : عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمانِ رَضِيَ اَللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ، وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهِ، ثُمَّ يَقُولُ: (بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا). وَإِذَا قَامَ قَالَ: (الحَمْدُ للهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ ما أَماتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ). [رواه البخاري: ٦٣١٢]

और नींद से जागते तो यह दुआ

पढ़ते "उस अल्लाह का शुक्र है, जिसने हमें सोने के बाद जगाया और उसी की तरफ जाना है।

फायदे: इस हदीस में नींद पर मौत का इस्तेमाल किया गया है। क्योंकि जाहिरी तौर पर रूह का बदन से ताल्लुक खत्म हो जाता है। गालिबन इस खत्म हो जाने के ताल्लुक की बिना पर नींद को मौत की बहन कहा जाता है। (फतहुलबारी 11/114)

٦ - باب: النَّوْمُ عَلَى الشِّقِّ الأَيْمَنِ

बाब 6: दायीं करवट सोने का बयान।

٢٠٧٤ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَامَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ، ثُمَّ قَالَ: (اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ). [رواه البخاري: ٦٣١٥]

2074: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने बिस्तर पर तशरीफ ले जाते तो दायीं करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ते: "ऐ अल्लाह! मैंने खुद को तेरे सुपुर्द कर दिया। अपना मुंह मैंने तेरी तरफ कर लिया और अपने तमाम काम तुझे सौंप दिये। तेरे अजाब के डर और तेरी उम्मीद के सहारे तुझे ही अपना पुस्तपनाह बना लिया। तुझ से भागने का ठिकाना तेरे अलावा और कहीं नहीं। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने नाजिल फरमाई और तेरे उस नबी को माना जो तूने भेजा।"

फायदे: इस हदीस के आखिर में है कि जो इस दुआ को पढ़कर सो जाये, फिर उसी रात फौत हो जाये तो फितरते इस्लाम पर उसका खात्मा होगा।

٧ - باب: الدُّعَاءُ إِذَا انْتَبَهَ مِنَ اللَّيْلِ

बाब 7: अगर रात के वक्त आंख खुल

जाये तो कौनसी दुआ पढ़ें?

٢٠٧٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ عِنْدَ مَيْمُونَةَ وَذَكَرَ الحَدِيثَ وَقَدْ تَقَدَّمَ، قَالَ: وَكانَ مِن دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: (اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ يَسَارِي نُورًا، وَفَوْقِي نُورًا، وَتَحْتِي نُورًا، وأَمامِي نُورًا، وَخَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا). [راجع: ٩٧] [رواه البخاري: ٦٣١٦]

2075: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं एक रात मैमूना रजि. के पास ठहर गया। फिर उन्होंने पूरी हदीस बयान की जो पहले गुजर (97) चुकी है, उस रिवायत में यह भी है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (रात को उठकर) यह दुआ पढ़ी : "ऐ अल्लाह! मेरे दिल में रोशनी पैदा कर, मेरी आंखों और कानों में नूर पैदा कर, मेरे दायें और बायें, मेरे ऊपर और नीचे, मेरे आगे और पीछे अलगर्ज मुझे सरापा नूर से भर दे।"

फायदे: इस हदीस के आखिर में कुरैब नामी एक रावी का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस्म में सात चीजों के बारे में नूर की दुआ की, वो यह हैं, पट्ठे, गोश्त, खून, बाल, बदन और दो चीजें (जुबान और नफ्स)। (फतहुलबारी 11/118)

बाब 8:

٨ - باب

٢٠٧٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا أَوَى أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُضْ فِرَاشَهُ بِدَاخِلَةِ إِزَارِهِ، فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي ما خَلَفَهُ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَقُولُ: بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ، إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا، وَإِنْ

2076: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम में से कोई अपने बिस्तर पर जाये तो अपने तहबन्द के अन्दर की तरफ के कपड़े से बिस्तर झाड़े, क्योंकि उसे क्या मालूम है कि उसके पीछे उसमें क्या घुस गया है

أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ). [رواه البخاري: ٦٣٢٠]

और यह दुआ पढ़े : "मेरे परवरदिगार तेरा मुबारक नाम लेकर अपना पहलू बिस्तर पर रखता हूँ और तेरे ही मुबारक नाम से उसे उठाऊँगा। अगर तू मेरी जान रोक ले तो उस पर रहम फरमाना और अगर छोड़ दे तो इसकी हिफाजत फरमाना। जैसे तू अपने नेक बन्दों की हिफाजत करता है।"

फायदे: निसाई की एक रिवायत में है कि आप सोते वक्त दायां हाथ गाल के नीचे रखकर यह दुआ तीन बार पढ़ते: "अल्लाहुम्मा केनि अजाबका यवमा तुबअसो इबादका"। (फतहुलबारी 11/127)

٩ - باب: لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ فَإِنَّهُ لا مُكْرِهَ لَهُ

बाब 9: अल्लाह तआला से यकीन के साथ मांगना चाहिए, क्योंकि उस पर कोई जबरदस्ती करने वाला नहीं।

٢٠٧٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ: اللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ، اللَّهُمَّ ٱرْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ، لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ، فَإِنَّهُ لاَ مُكْرِهَ لَهُ). [رواه البخاري: ٦٣٣٨]

2077: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कोई तुम में से यूं दुआ न करे, या अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे बख्श दे, अगर चाहे तो मुझ पर रहम फरमा। बल्कि यकीन के साथ दुआ करे। इसलिए कि उस पर किसी का दबाव नहीं है।

फायदे: दुआ करने वाले के लिए जरूरी है कि वो दुआ करते वक्त अपने मालिक का दामन न छोड़े। निहायत आजिजी और गिरयाजारी से कबूलियत की उम्मीद रखते हुए दुआ करे। मायूसी को अपने पास न भटकने दे। (फतहुलबारी 11/140)

बाब 10: बन्दे की दुआ उस वक्त कबूल होती है, जब वो जल्दी न करे।

١٠ - باب: يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَا لَمْ يَعْجَلْ

2078: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम में से हर एक की दुआ कबूल होती है, बशर्ते कि वो जल्दबाजी का मुजाहिरा न करे। यानी यूं न कहे, मैंने दुआ की थी, मगर कबूल नही हुई।

٢٠٧٨ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يُسْتَجابُ لأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ، يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي). [رواه البخاري: ٦٣٤٠]

फायदे: बन्दा मुस्लिम की दुआ किसी सूरत में बेकार नहीं होती, लेकिन उसकी कबूल होने की कुछ सूरते हैं या मतलूबा चीजें फौरन मिल जाती हैं या उसके ऐवज किसी बुराई को उससे दूर कर दिया जाता है। या फिर आखिरत के लिए उसे जमा कर दिया जाता है।

(फतहुलबारी 11/144)

बाब 11: सख्ती और मुसीबत के वक्त दुआ करना।

١١ - باب: الدُّعاءُ عِنْدَ الكَرْبِ

2079: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसीबत के वक्त यूं दुआ करते: "अल्लाह तआला जो बड़ी अजमत वाला और हिलम (रहम) वाला है, उसके अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं। अल्लाह बड़े तख्त का मालिक है, अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं, वही आसमानो जमीन और अर्शे करीम का मालिक है।"

٢٠٧٩ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: (لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيمُ الحَلِيمُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ، وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ). [رواه البخاري: ٦٣٤٦]

फायदेः यह तारीफी कलमात हैं, इसके बाद मुसीबत व आजमाईश से महफूज रहने की दुआ की जाये। जैसा कि कुछ रिवायतों में इसकी सराहत है या इन तारीफी कलमात में इतनी ताकत है कि इनके पढ़ने से इब्तला व मुसीबत टल लाती है। (फतहुलबारी 11/147)

बाब 12: बला की परेशानी से पनाह मांगने का बयान।

١٢ - باب: التَّعَوُّذُ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ

2080: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आजमाईश की शिद्दत, बदबख्ती की आमद, तकरीद की जहमत और दुश्मनों की फिरहत से पनाह मांगा करते थे। रावी हदीस सुफियान ने कहा, हदीस में सिर्फ तीन बातों का जिक्र था और एक चौथी मैंने बढ़ा दी। अब मुझे याद नहीं पड़ता कि उनमें वो कौनसी है।

٢٠٨٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَتَعَوَّذُ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ. قَالَ سُفْيَانُ - الراوي -: الحَدِيثُ ثَلَاثٌ، زِدْتُ أَنَا وَاحِدَةً، لَا أَدْرِي أَيَّتُهُنَّ هِيَ. [رواه البخاري: ٦٣٤٧]

फायदेः कुछ रिवायतों से पता चलता है कि पहली तीन खसलतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलकीन से हैं और आखरी हजरत सुफियान का इजाफा है। इब्तदाये में इसकी वजाहत कर देते थे। लेकिन यह बात उनके जहन से उतर गई। (फतहुलबारी 11/148)

बाब 13: फरमाने नबवी कि ऐ अल्लाह जिसको मैंने तकलीफ दी है, तू उसके लिए बख्शीश और रहमत बना दे।

١٣ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «مَنْ آذَيْتُهُ فَاجْعَلْهُ لَهُ زَكَاةً وَرَحْمَةً»

2081: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है

٢٠٨١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ

سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ، فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٦٣٦١]

कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमाते थे, ऐ अल्लाह! जिस मौमिन को मैंने बुरा कहा हो, उसके लिए मेरा यह बुरा कहना कयामत के दिन अपनी कुरबत का जरिया बना दे।

फायदे: एक रिवायत में है कि ऐ अल्लाह! मैनें तेरे यहां एक वादा लिया है, जिसका तू खिलाफ नहीं करेगा, जिस आदमी को मैंने बुरा भला कहा है या उसे मारा पीटा है, उसके लिए कफ्फारा बना दे, यह इस सूरत में है कि वो आदमी सजावार न हो। (फतहुलबारी 11/171)

١٤ - باب: التَّعَوُّذُ مِنَ الْبُخْلِ

बाब 14: कंजूसी से पनाह मांगना।

٢٠٨٢ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاص رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ يَأْمُرُ بِهٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ: (اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ ٱلدُّنْيَا - يَعْنِي فِتْنَةَ ٱلدَّجَّالِ - وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ). [رواه البخاري: ٦٣٦٥]

2082: साअद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन कलमात का हुक्म फरमाते थे कि ऐ अल्लाह मैं कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं बुजदिली से तेरी पनाह मांगता हूँ, मैं निकम्मी उम्र तक जिन्दा रहने से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं दुनिया के फितने यानी फितना दज्जाल से तेरी पनाह मांगता हूँ और मैं अजाबे कब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ।

फायदे: दुनिया के फितनों से मुराद फितना दज्जाल है। यह तफसीर एक रावी अब्दुल मलिक बिन उमैर की है। फितना दज्जाल पर दुनिया का इतलाक इसलिए किया गया है कि दुनियावी फितनों में सबसे बड़ा फितना है, खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में इसकी वजाहत फरमाई है। (फतहुलबारी 6/179)

बाब 15: गुनाह और तावान से पनाह मांगने का बयान।

١٥ - باب: التَّعَوُّذُ مِنَ المَأْثَمِ وَالمَغْرَمِ

2083: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अकसर यूं दुआ करते थे: "ऐ अल्लाह मैं सुस्ती, बुढ़ापे, गुनाह, तावान, कब्र के फितने, कब्र के अजाब , जहन्नम के फितने, उसके अजाब और मालदारी के फितना की शर से तेरी पनाह चाहता हूँ। इसी तरह मोहताजी और फितना दज्जाल से भी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बर्फ और ओलों के पानी से धो दे और मेरा दिल गुनाहों से ऐसा साफ कर दे, जैसा कि सफेद कपड़े को मेल-कुचैल से साफ कर देता है। और मुझ में और मेरे गुनाहों में इतना फासला कर दे, जितना पूर्व और पश्चिम में फासला है।

٢٠٨٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ يَقُولُ: (اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ، وَالمَأْثَمِ وَالمَغْرَمِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَعَذَابِ القَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ ٱلدَّجَّالِ، اللَّهُمَّ ٱغْسِلْ عَنِّي خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَما نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ ٱلدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَما بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ). [رواه البخاري: ٦٣٦٨]

फायदे: निसाई की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज्यादातर तावान और गुनाहों से पनाह मांगा करते थे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप ऐसा क्यों करते हैं, फरमाया, आदमी जब तावान जदा हो जाता है तो बात बात पर झूट बोलता है और वादाखिलाफी करता है। (फतहुलबारी 11/177)

बाब 16: दुआ नबवी: "ऐ अल्लाह! दुनिया और आखिरत में भलाई दे।"

١٦ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً»

٢٠٨٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ أَكْثَرُ دُعاءِ النَّبِيِّ ﷺ: (اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ). [رواه البخاري: ٦٣٨٩]

2084: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज्यादातर यूं दुआ किया करते थे, ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में नेकियों की तौफिक और आखिरत में नेकियों की जजा अता फरमा और हमें जहन्नम के अजाब से बचा।

फायदे: हजरत कतादा रह. कहते हैं कि हजरत अनस रजि. यह दुआ बकसरत पढ़ा करते थे और फरमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उसे ज्यादातर वक्तों में पढ़ते थे। क्योंकि यह जामे दुआ दुनिया और आखिरत की तमाम भलाईयों पर मुइतमिल है। (फतहुलबारी 11/191)

١٧ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ»

बाब 17: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यूं दुआ करना: "या अल्लाह! मेरे अगले और पिछले सब गुनाह माफ कर दे।"

٢٠٨٥ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كانَ يَدْعُو: (اللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي، وَإِسْرَافِي فِي أَمْرِي، وَما أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي. اللَّهُمَّ ٱغْفِرْ لِي هَزْلِي وَجِدِّي وَخَطَئِي وَعَمْدِي، وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِي). [رواه البخاري: ٦٣٩٩]

2085: अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं दुआ किया करते थे, परवरदिगार मेरी खता माफ कर दे और मेरी जिहालत और ज्यादती जो भी मैंने तमाम कामों में की और जिसे तू मुझ से ज्यादा जानता है, उसे भी माफ कर दे, ऐ अल्लाह! मेरी भूल चूक, मेरे जानबूझ कर किये हुए बुरे काम, मेरी नादानी और लगवीयत

को माफ कर दे और यह सब मेरे अन्दर मौजूद हैं।

फायदेः इस दुआ के आखिर में यह कलमात भी हैं: ''अल्लाहुम्मगफिरली मा कद्दमतु वमा अख्खरतु वमा असररतु वमा आलन्तु अन्तल मुकद्दिमु व अन्तल मुअख्खिरू व अन्त अला कुल्लि शैइन कदीर'' यह दुआ नमाज में सलाम के दौरान पहले और बाज औकात सलाम के बाद पढ़ते। (फतहुलबारी 11/197)

बाब 18: ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहने की फजीलत का बयान।

١٨ - باب: فَضلُ التَّهْلِيلِ

2086: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो कोई उस दुआ को एक दिन में सौ बार पढ़े तो उसे दस गुलामों की आजादी का सवाब मिलेगा और उसके लिए सौ नेकियां लिखी जायेगी, सौ बुराईयां खत्म कर दी जायेगी और वो तमाम दिन में शैतान के शर से महफूज रहेगा और उससे कोई आदमी बेहतर न होगा। मगर वो जिसने इससे भी ज्यादा पढ़ा हो, दुआ यह है: ''अल्लाह के अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं वो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए तारीफ है, वही हर चीज पर कादिर है।''

٢٠٨٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَالَ: لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ، وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذٰلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلَّا رَجُلٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٦٤٠٣]

फायदेः कुछ रिवायतों में लहुलहम्दु के बाद ''युहयी व युमीतु'' और कुछ में बियदिहिलखैर का भी इजाफा है। एक रिवायत में नमाजे फजर के बाद किसी से बातचीत करने से पहले पढ़ने का जिक्र है। यह कलमा

गुनाहगारों के लिए तो बहुत बड़ी ताकत की हैसियत रखता है। (फतहुलबारी 11/202)

٢٠٨٧ : عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، وَابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالا فِي هٰذَا الحَدِيثِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَالَ عَشْرًا كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ رَقَبَةً مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ). [رواه البخاري: ٦٤٠٤]

2087: अबु यूसुफ अनसारी और इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने इस हदीस (2086) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी नकल किया है कि जिसने इसे दस बार पढ़ा, वो उस आदमी की तरह होगा, जिसने इस्माईल अलैहि. की औलाद से कोई गुलाम आजाद किया हो।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में है कि इस वजीफे से इतना सवाब मिलता है कि गोया उसने हजरत इस्माईल अलैहि. की औलाद से चार गुलाम आजाद किये हों। चूंकि जिक्र करने की तवज्जुह और इनाबत यकसा नहीं होती, इसलिए सवाब में कमी-बेशी है। (फतहुलबारी 11/205)

---

١٩ - باب: فَضْلُ التَّسْبِيحِ

बाब 19: "सुब्हान अल्लाह" कहने की फजीलत।

٢٠٨٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ ٱللهِ وَبِحَمْدِهِ، فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، حُطَّتْ عَنْهُ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ). [رواه البخاري: ٦٤٠٥]

2088: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने "सुब्हान अल्लाही वबिहम्दिही" दिन में सौ बार पढ़ा, उसके तमाम गुनाह माफ कर दिये जायेंगे अगरचे वो समन्दर की झाग के बराबर ही क्यों न हो।

फायदे: इन विरदों व जिक्रों के फजाईल व बरकात उस आदमी के लिए हैं जो बड़े बड़े जराईम से अपने दामन को आलूदा नहीं करता और दीने मतईन की सरबुलन्दी के लिए तैयार रहता है। जो आदमी यह वजीफे पढ़ने के बावजूद अल्लाह के दिन की बेहुरमती से बाज नहीं आता उसके लिए यह वजीफे बिल्कुल ही बे-फायदे हैं।

बाब 20: जिक्रे इलाही की फजीलत का बयान।

٢٠ - باب: فَضْلُ ذِكْرِ الله عَزَّ وَجَلَّ

2089: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अल्लाह का जिक्र करे और जो न करे, उनकी मिसाल जिन्दा और मुर्दा जैसी है।

٢٠٨٩ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ الله عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لاَ يَذْكُرُ مَثَلُ الحَيِّ وَالمَيِّتِ). [رواه البخاري: ٦٤٠٧]

फायदे: अल्लाह के जिक्र से मुराद अल्लाह अल्लाह की जरबें लगाना नहीं, जैसा कि हमारे यहां मस्जिदों में होता है। बल्कि निहायत आजिज़ी से उन कलमात को अदा करना है, जिनकी फजीलत हदीसों में बयान की हुई है।

2090: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह के कुछ फरिश्ते ऐसे हैं जो गली कूचों में गश्त करते हैं और अल्लाह का जिक्र करने वालों को तलाश करते हैं। जब उन्हें जिक्रे इलाही में मशरूफ लोग मिलते हैं तो वो अपने साथियों को पुकारते हैं,

٢٠٩٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ لِلهِ مَلاَئِكَةً يَطُوفُونَ فِي الطُّرُقِ يَلْتَمِسُونَ أَهْلَ ٱلذِّكْرِ، فَإِذَا وَجَدُوا قَوْمًا يَذْكُرُونَ ٱللهَ تَنَادَوْا: هَلُمُّوا إِلَى حَاجَتِكُمْ. قَالَ: فَيَحُفُّونَهُمْ بِأَجْنِحَتِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، قَالَ: فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ، وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ، مَا يَقُولُ عِبَادِي؟ قَالَ: تَقُولُ: يُسَبِّحُونَكَ وَيُكَبِّرُونَكَ وَيَحْمَدُونَكَ

وَيُمَجِّدُونَكَ، قَالَ: فَيَقُولُ: هَلْ رَأَوْنِي؟ قَالَ: فَيَقُولُونَ: لاَ، وَاللهِ ما رَأَوْكَ، قَالَ: فَيَقُولُ: وَكَيْفَ لَوْ رَأَوْنِي؟ قَالَ: يَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْكَ كَانُوا أَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً، وَأَشَدَّ لَكَ تَمْجِيدًا وَتَحْمِيدًا وَأَكْثَرَ لَكَ تَسْبِيحًا، قَالَ: يَقُولُ: فَمَا يَسْأَلُونِي؟ قَالَ: يَسْأَلُونَكَ الجَنَّةَ، قَالَ: يَقُولُ: وَهَلْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ: لاَ، وَاللهِ يَا رَبِّ ما رَأَوْهَا، قَالَ: يَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ أَنَّهُمْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ: لَوْ أَنَّهُمْ رَأَوْها كَانُوا أَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا، وَأَشَدَّ لَهَا طَلَبًا، وَأَعْظَمَ فِيهَا رَغْبَةً، قَالَ: فَمِمَّ يَتَعَوَّذُونَ؟ قَالَ: يَقُولُونَ: مِنَ النَّارِ، قَالَ: يَقُولُ: وَهَلْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ: لاَ وَاللهِ يَا رَبِّ ما رَأَوْها، قَالَ: يَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْهَا كَانُوا أَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا، وَأَشَدَّ لَهَا مَخَافَةً، قَالَ: فَيَقُولُ: فَأُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ. قَالَ: يَقُولُ مَلَكٌ مِنَ المَلاَئِكَةِ: فِيهِمْ فُلاَنٌ لَيْسَ مِنْهُمْ، إِنَّمَا جَاءَ لِحَاجَةٍ. قَالَ: هُمُ الْجُلَسَاءُ لاَ يَشْقَى بِهِمْ جَلِيسُهُمْ».

[رواه البخاري: ٦٤٠٨]

इधर आओ, तुम्हारा मतलूब हासिल हो गया। आपने फरमाया यह फरिश्ते जमा होकर उन लोगों को अपने परों से आसमान दुनिया तक घेर लेते हैं। आपने फरमाया कि फिर उनका परवरदिगार उनसे पूछता है, हालांकि वो खुद उनसे ज्यादा जानता है कि मेरे बन्दे क्या कह रहे थे। यह अर्ज करते हैं कि वो तेरी तस्बीह व तकबीर और हम्दो सना में मसरूफ थे। अल्लाह उन से फरमाता है कि उन्होंने मुझे देखा है? फरिश्ते कहते हैं, नहीं अल्लाह की कसम तुझे उन्होंने नहीं देखा है। अल्लाह फरमाता है, अगर वो मुझे देख लेते तो क्या होता? फरिश्ते कहते हैं, अगर वो तुझे देख लेते फिर तो उससे भी ज्यादा तेरी इबादत करते। तेरी हम्दो सना और तेरी तस्बीह व तकदीस निहायत शिद्दत से करते। आपने फरमाया, फिर अल्लाह फरमाता है, ऐ फरिश्तों! वो मुझ से किस चीज का सवाल करते हैं? फरिश्ते कहते हैं वो तुझ से जन्नत मांगते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है उन्होंने जन्नत को देखा है, फरिश्ते कहते हैं उन्होंने नहीं देखा। अल्लाह तआला कहते हैं अगर देख लेते तो क्या होता। फरिश्ते कहते हैं, वो देख

लेते तो उसे हासिल करने के लिए उससे भी ज्यादा उसकी ख्वाहिश करते। इसमें रगबत करते हुए उसको पाने के लिए ज्यादा कमरबस्ता हो जाते। फिर अल्लाह फरमाते हैं, वो किस चीज से पनाह मांगते हैं? फरिश्ते कहते हैं वो जहन्नम से पनाह मांगते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है, उन्होंने दोजख को देखा है? फरिश्ते कहते हैं तेरी जात की कसम! उन्होंने दोजख को नहीं देखा है। इरशाद होता है, अगर दोजख देख लेते तो उनकी क्या हालत होती? फरिश्ते कहते हैं, अगर वो दोजख देख लेते तो उससे भागते रहते। बेइन्तेहा डरते रहते, फिर अल्लाह इरशाद फरमाता है, ऐ फरिश्तों! मैं तुम्हें गवाह करता हूँ कि उन लोगों को मैंने माफ कर दिया है। एक फरिश्ता कहता है कि उन जिक्र करने वाले लोगों में एक आदमी जिक्र करने वाला नहीं था। बल्कि वो अपनी किसी जरूरत के पेशे नजर वहां गया था। अल्लाह तआला फरमाते हैं हैं कि वो ऐसे लोग हैं कि जिनके पास बैठने वाला भी बदनसीब नहीं हो सकता।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि फरिश्ते आदम की औलाद से मुहब्बत करते हैं। इसके बावजूद औलादे आदम का जिक्र शरफ व मर्तबे में फरिश्तों के जिक्र से कहीं बढ़कर है। क्योंकि उनकी मसरूफियात और काम बेशुमार हैं। जबकि फरिश्तों के लिए किसी किस्म की रूकावटें नहीं होती। वल्लाह आलम। (फतहुलबारी 11/213)



किताबुल रिकाक
नरम दिली का बयान

बाब 1: सेहत और फरागत का बयान निज फरमाने नबवी कि असल जिन्दगी तो आख़िरत की जिन्दगी है।

١ - باب: الصحة والفراغ ولا عيش إلا عيش الآخرة

2091: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तन्दुरूस्ती और फारिगुलबाली दो ऐसी नैमतें हैं जिनकी लोग कद्र नहीं करते, बल्कि अकसर नुकसान उठाते हैं।

٢٠٩١ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رضي الله عنهما قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ: الصِّحَّةُ وَالْفَرَاغُ). [رواه البخاري: ٦٤١٢]

फायदे: गजवा खन्दक के मौके पॅर जबकि सहाबा किराम रजि. खन्दक खोद रहे थे और अपने कन्धों पर मिट्टी उठाकर बाहर ले जा रहे थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि असल जिन्दगी तो आखिरत की जिन्दगी है। मतलब यह है कि आखिरवी ऐश को पाने के लिए सेहत और फरागत को इस्तेमाल करना चाहिए और जो लोग तन्दुरूस्ती और फारिगुल बाली को दुनियावी फायदे को पाने में खर्च करते हैं वो नुकसान उठाते हैं। (फतहुलबारी 11/231)

बाब 2: फरमाने नबवी कि दुनिया में इस तरह रहो, जैसे कोई परदेसी या राहगीर होता है।

٢ - باب: قول النبي ﷺ: «كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ»

٢٠٩٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: (كُنْ فِي ٱلدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ). وَكَانَ ٱبْنُ عُمَرَ يَقُولُ: إِذَا أَمْسَيْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ ٱلصَّبَاحَ، وَإِذَا أَصْبَحْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ ٱلمَسَاءَ، وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ وَمِنْ حَيَاتِكَ لِمَوْتِكَ. [رواه البخاري: ٦٤١٦]

2092: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे दोनों कन्धों को पकड़कर फरमाया, दुनिया में इस तरह रहो, जिस तरह कोई परदेसी या राहगीर गुजारा करता है। इब्ने उमर रजि. फरमाते थे, जब शाम हो तो सुबह का इन्तेजार मत करो और जब सुबह हो तो शाम का इन्तेजार मत करो। बल्कि तन्दुरूस्ती में अपनी बीमारी का सामान और जिन्दगी में अपनी मौत का सामान तैयार करो।

फायदे: जिस तरह कोई मुसाफिर आदमी परदेस और राहगुजर को अपना असली वतन नहीं समझता, उसी तरह मौमिन को भी चाहिए कि वो इस दुनिया को अपना असली वतन न समझे, बल्कि एक रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दुनिया में खुद को कब्र वालों में से शुमार करो। (फतहुलबारी 11/334)

---

٣ - باب: فِي الأَمَلِ وَطُولِهِ

बाब 3: लम्बी लम्बी आरजूऐं, परवरिश करने का बयान।

٢٠٩٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَّ ٱلنَّبِيُّ ﷺ خَطًّا مُرَبَّعًا، وَخَطَّ خَطًّا فِي ٱلْوَسَطِ خَارِجًا مِنْهُ، وَخَطَّ خُطَطًا صِغَارًا إِلَى هٰذَا ٱلَّذِي فِي ٱلْوَسَطِ مِنْ جَانِبِهِ ٱلَّذِي فِي ٱلْوَسَطِ، وَقَالَ: (هٰذَا

2093: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक चो-कोना खत खींचा और उसके बीच से एक बाहर निकला हुआ खत खींचा और उस खत के दोनों तरफ मजीद छोटे

الإنسانُ، وَهٰذا أَجَلُهُ مُحِيطٌ بِهِ - أَوْ: قَدْ أَحاطَ بِهِ - وَهٰذا الَّذِي هُوَ خارِجٌ أَمَلُهُ، وَهٰذِهِ الخُطَطُ الصِّغارُ الأَعْراضُ، فَإِنْ أَخْطأَهُ هٰذا نَهَشَهُ هٰذا، وَإِنْ أَخْطأَهُ هٰذا نَهَشَهُ هٰذا). [رواه البخاري: ٦٤١٧]

छोटे खतूत बनाये और फरमाया, यह दरमियानी खत इन्सान है और यह चोकोना खत उसकी मौत है जो उसे घेरे हुए है। या जिसने उसे घेर रखा है और यह बाहर निकाला हुआ खत इसकी आरजू और उम्मीद है और यह छोटे छोटे खतूत मुसीबतें व हादसें हैं। अगर उससे इन्सान बचा तो उसमें फंस गया। अगर इससे बचा तो उसमें मुब्तला हुआ।

फायदे: इसका मतलब यह है कि इन्सान ऐसी ख्वाहिशात रखता है जो उम्र भर पूरी नहीं हो सकती। लिहाजा ऐसी ख्वाहिश आखिरत से इन्सान को गाफिल कर देती है। इनसे बचना चाहिए। (फतहुलबारी 11/237)

٢٠٩٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قالَ: خَطَّ النَّبِيُّ ﷺ خُطُوطًا، فَقالَ: (هٰذا الأَمَلُ وَهٰذا أَجَلُهُ، فَبَيْنَما هُوَ كَذٰلِكَ إِذْ جاءَهُ الخَطُّ الأَقْرَبُ). [رواه البخاري: ٦٤١٨]

2094: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमीन पर खतूत खींचे, फिर फरमाया यह आदमी की आरजू है और उसकी उम्र है। इन्सान लम्बी आरजू के चक्कर में रहता है। इतने में करीब वाला खत उसे आ पहुंचता है। यानी मौत आ जाती है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है कि मुझे ख्वाहिशात की पैरवी और लम्बी लम्बी तमन्नाओं का ज्यादा खतरा है। क्योंकि ख्वाहिश की पैरवी इन्सान को हक से रोक देती है और लम्बी लम्बी तमन्नाऐं आखिरत से गाफिल कर देती हैं।

(फतहुलबारी 11/236)

٤ - باب: مَنْ بَلَغَ سِتِّينَ سَنَةً فَقَدْ أَعْذَرَ الله إِلَيْهِ

बाब 4: जिसकी उम्र साठ बरस हो जाये तो अल्लाह तआला उसके लिए मआजरत (मजबूरी) का कोई मौका नहीं छोड़ता।

٢٠٩٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَعْذَرَ ٱللهُ إِلَى ٱمْرِىءٍ أَخَّرَ أَجَلَهُ حَتَّى بَلَّغَهُ سِتِّينَ سَنَةً). [رواه البخاري: ٦٤١٩]

2095: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला ने उस आदमी के तमाम बहाने खत्म कर दिये, जिसे लम्बी उम्र बख्शी, यहां तक कि वो साठ बरस को पहुंच गया।

फायदे: इमाम बुखारी ने उस आयत से भी दलील पकड़ी है कि जब काफिर चीख चीख कर जहन्नम से निकलने का मुतालबा करेंगे तो अल्लाह तआला फरमायेगें, क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी थी, जिसमें कोई सबक लेना चाहता तो सबक ले सकता था और तुम्हारे पास आगाह करने वाला भी आ चुका था। (फातिर 37)

٢٠٩٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَزَالُ قَلْبُ ٱلْكَبِيرِ شَابًّا فِي ٱثْنَتَيْنِ. فِي حُبِّ ٱلدُّنْيَا وَطُولِ الأَمَلِ). [رواه البخاري: ٦٤٢٠]

2096: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, बूढ़े आदमी का दिल दो चीजों के मुताल्लिक जवान रहता है, दुनिया की मुहब्बत और लम्बी उम्र की चाहत।

फायदे: इसी तरह की एक रिवायत हजरत अनस रजि. से भी मरवी है कि आदमी तो बूढ़ा हो जाता है, मगर उसके नफ्स की दो खासियतें और ज्यादा जवान और ताकतवर होती रहती हैं, एक दौलत की लालच और दूसरी लम्बी उम्र की चाहत। (सही बुखारी 6421)

٥ - باب: العَمَل الَّذِي يُبْتَغى بِهِ وَجْهُ الله

बाब 5: उस काम का बयान जो खालिस अल्लाह की खुशनूदी के लिए किया जाये।

٢٠٩٧ : عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مالِكٍ الأَنْصارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَنْ يُوَافِيَ عَبْدٌ يَوْمَ القِيَامَةِ، يَقُولُ: لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، يَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ ٱللهِ، إِلَّا حَرَّمَ ٱللهُ عَلَيْهِ النَّارَ). [رواه البخاري: ٦٤٢٣]

2097: इतबान बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत के दिन जो आदमी इस हालत में हाजिर हो कि दुनिया में उसने खालिस अल्लाह की खुशनुदी के लिए "ला इल्लाह इल्लल्लाहु" कहा हो तो अल्लाह तआला उस पर जहन्नम को हराम कर देगा।

फायदे: यहां इस रिवायत को मुख्तसर बयान किया गया है। दरअसल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत इतबान बिन मालिक रजि. की दावत पर उसके घर तशरीफ ले गये। वहां नमाज पढ़ी, खाना खाया, फिर मालिक बिन दुख्शुम के बारे में सवाल किया, किसी ने उसके बारे में मुनाफिक होने की फब्ती कसी। तो आपने यह इरशाद फरमाया।

٢٠٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يَقُولُ ٱللهُ تَعَالَى: ما لِعَبْدِي المُؤْمِنِ عِنْدِي جَزَاءٌ، إِذَا قَبَضْتُ صَفِيَّهُ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا ثُمَّ ٱحْتَسَبَهُ، إِلَّا الجَنَّةُ). [رواه البخاري: ٦٤٢٤]

2098: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं कि जिस बन्दा मौमिन की महबूब चीज मैंने दुनिया से उठा ली और उसने उस पर सब्र किया तो उसकी जजा मेरे यहां सिवाये जन्नत के और कुछ नहीं है।

फायदे: महबूब चीज से मुराद उसका बेटा, भाई और कोई चीज जिससे वो मुहब्बत करता है। अगर उसने सब्र व इस्तकामत के मुजाहिरा किया और किसी किस्म की हर्फ शिकायत अपनी जुबान पर न लाया तो उसे अल्लाह के फजल से जन्नत में ठिकाना मिलेगा। (फतहुलबारी 11/442)

बाब 6: नेक लोगों का दुनिया से उठ जाना।

٦ - باب: ذِهَابُ الصَّالِحِينَ

2099: मिरदास असलमी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया (कयामत के नज़दीक) नेक लोग दुनिया से एक के बाद दूसरे उठ जायेंगे। बाकी जौ के भूसे या खजूर के कचरे की तरह कुछ लोग रह जायेंगे, जिनकी अल्लाह को कोई परवाह नहीं होगी।

٢٠٩٩ : عَنْ مِرْدَاسٍ الأَسْلَمِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَذْهَبُ الصَّالِحُونَ، الأَوَّلُ فَالأَوَّلُ، وَيَبْقَى حُفَالَةٌ كَحُفَالَةِ الشَّعِيرِ، أَوِ التَّمْرِ، لاَ يُبَالِيهِمُ ٱللهُ بَالَةً). [رواه البخاري: ٦٤٣٤]

फायदे: एक रिवायत में है कि ऐसे बदअमल लोगों पर कयामत कायम होगी, जिसका मतलब यह है नेक लोगों का दुनिया से रूख्सत होना कयामत की एक निशानी है। लिहाजा हमें चाहिए कि नेक लोगों की जिन्दगी के मुताबिक अपनी जिन्दगी गुजारें। (फतहुलबारी 11/252)

बाब 7: माल के फितने से डरने का बयान।

٧ - باب: ما يُتَّقَى مِنْ فِتْنَةِ المَالِ

2100: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे अगर इब्ने आदम को दो वादियां माल से भरी हुई मिल जायें

٢١٠٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لَوْ كَانَ لاِبْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لاَبْتَغَى ثَالِثًا، وَلاَ يَمْلأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ، وَيَتُوبُ ٱللهُ

عَلَى مَنْ تَابَ). [رواه البخاري: ٦٤٣٦]

तो यह तीसरी वादी की तलाश में सर पिटेगा और इब्ने आदम का पेट तो मिट्टी ही भरेगी। लेकिन जो अल्लाह की तरफ झुकता है, अल्लाह भी उस पर मेहरबान हो जाता है।

फायदे: तिरमजी की एक रिवायत में है कि हर उम्मत को फितना दरपेश होता था और मेरी उम्मत के लिए खतरनाक फितना माल दौलत की ज्यादती है। (फतहुलबारी 11/253)

٨ - باب: مَا قَدَّمَ مِنْ مَالِهِ فَهُوَ لَهُ

बाब 8: जो कोई जिन्दगी में माल आगे भेजे (खैरात करे) वही उसका माल है।

٢١٠١ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَيُّكُمْ مالُ وَارِثِهِ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ مالِهِ). قالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ما مِنَّا أَحَدٌ إِلَّا مالُهُ أَحَبُّ إِلَيْهِ، قالَ: (فَإِنَّ مالَهُ ما قَدَّمَ، وَمالُ وَارِثِهِ ما أَخَّرَ). [رواه البخاري: ٦٤٤٢]

2101: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम में से कौन ऐसा है जिसको अपने वारिस का माल खुद उसके अपने माल से ज्यादा प्यारा रहा हो? सब ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम सब को अपना ही माल महबूब है। फरमाया अपना माल तो वो है जो अल्लाह की राह में खर्च करे। आगे भेज दिया हो और जो छोड़ कर मरे वो तो वारिसों का माल है।

फायदे: इस हदीस के पेशे नजर बन्दा मुस्लिम को चाहिए कि अपना माल भले कामों में खर्च करे ताकि आखिरत में उसके लिए सूदमन्द हो, क्योंकि जो कुछ मरने के बाद रह गया वो तो उसके वारिसों की जायदाद होगी। (फतहुलबारी 11/260)

बाब 9: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रजि. की गुजर औकात कैसी थी? और उनके दुनिया से अलग रहने का बयान।

٩ - باب: كَيْفَ كَانَ عَيْشُ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ وَتَخَلِّيهِمْ عَنِ الدُّنْيَا

2102: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कसम है उस अल्लाह की जिसके सिवा कोई माबूद हकीकी नहीं। बाज औकात मैं भूक की वजह से जमीन पर पेट लगाकर लेट जाता और कभी ऐसा होता कि इसकी शिद्दत से पेट पर पत्थर बांध लेता। एक दिन मैं सरे राह जहां से लोग गुजरते थे, बैठ गया, सबसे पहले अबू बकर रजि. वहां से गुजरे तो मैंने उनसे कुरआन की एक आयत पूछी। यह सिर्फ इसलिए पूछी कि वो मुझे पेट भर के खाना खिला दें। मगर उन्होंने ख्याल ही न किया और चले गये। फिर उमर रजि. उधर से गुजरे तो मैंने उनसे भी कुरआन मजीद की एक आयत पूछी और यह भी सिर्फ इसलिए पूछी थी कि मुझे पेट भरके खाना खिला दे। मगर उन्होंने भी कोई ख्याल न किया और चुपके से चल दिये। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां से गुजरे तो मुझे देखकर

٢١٠٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: آللهِ الَّذِي لاَ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ، إِنْ كُنْتُ لأَعْتَمِدُ بِكَبِدِي عَلَى الأَرْضِ مِنَ الجُوعِ، وَإِنْ كُنْتُ لأَشُدُّ الحَجَرَ عَلَى بَطْنِي مِنَ الجُوعِ، وَلَقَدْ قَعَدْتُ يَوْمًا عَلَى طَرِيقِهِمُ الَّذِي يَخْرُجُونَ مِنْهُ، فَمَرَّ أَبُو بَكْرٍ، فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ ٱللهِ، مَا سَأَلْتُهُ إِلَّا لِيُشْبِعَنِي، فَمَرَّ وَلَمْ يَفْعَلْ، ثُمَّ مَرَّ بِي عُمَرُ، فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ ٱللهِ، مَا سَأَلْتُهُ إِلَّا لِيُشْبِعَنِي، فَمَرَّ وَلَمْ يَفْعَلْ، ثُمَّ مَرَّ بِي أَبُو القَاسِمِ ﷺ فَتَبَسَّمَ حِينَ رَآنِي، وَعَرَفَ مَا فِي نَفْسِي وَمَا فِي وَجْهِي، ثُمَّ قَالَ: (أَبَا هِرٍّ). قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ قَالَ: (الْحَقْ). وَمَضَى فَتَبِعْتُهُ، فَدَخَلَ، فَاسْتَأْذَنَ، فَأَذِنَ لِي، فَدَخَلَ، فَوَجَدَ لَبَنًا فِي قَدَحٍ، فَقَالَ: (مِنْ أَيْنَ هٰذَا اللَّبَنُ؟). قَالُوا: أَهْدَاهُ لَكَ فُلاَنٌ أَوْ فُلاَنَةُ، قَالَ: (أَبَا هِرٍّ). قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (الْحَقْ إِلَى أَهْلِ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ لِي). قَالَ: وَأَهْلُ الصُّفَّةِ أَضْيَافُ الإِسْلاَمِ، لاَ

يَأْوُونَ إِلَى أَهْلٍ وَلاَ مَالٍ وَلاَ عَلَى أَحَدٍ، إِذَا أَتَتْهُ صَدَقَةٌ بَعَثَ بِهَا إِلَيْهِمْ وَلَمْ يَتَنَاوَلْ مِنْهَا شَيْئًا، وَإِذَا أَتَتْهُ هَدِيَّةٌ أَرْسَلَ إِلَيْهِمْ وَأَصَابَ مِنْهَا وَأَشْرَكَهُمْ فِيهَا، فَسَاءَنِي ذٰلِكَ، فَقُلْتُ: وَمَا هٰذَا اللَّبَنُ فِي أَهْلِ الصُّفَّةِ، كُنْتُ أَحَقَّ أَنَا أَنْ أُصِيبَ مِنْ هٰذَا اللَّبَنِ شَرْبَةً أَتَقَوَّى بِهَا، فَإِذَا جَاءُوا أَمَرَنِي، فَكُنْتُ أَنَا أُعْطِيهِمْ، وَمَا عَسَى أَنْ يَبْلُغَنِي مِنْ هٰذَا اللَّبَنِ، وَلَمْ يَكُنْ مِنْ طَاعَةِ ٱللهِ وَطَاعَةِ رَسُولِهِ ﷺ بُدٌّ، فَأَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَأَقْبَلُوا، فَٱسْتَأْذَنُوا فَأَذِنَ لَهُمْ، وَأَخَذُوا مَجَالِسَهُمْ مِنَ الْبَيْتِ، قَالَ: (يَا أَبَا هِرٍّ). قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (خُذْ فَأَعْطِهِمْ). قَالَ: فَأَخَذْتُ الْقَدَحَ، فَجَعَلْتُ أُعْطِيهِ الرَّجُلَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى، ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ، فَأُعْطِيهِ الرَّجُلَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى، ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى، ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ، حَتَّى ٱنْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ رَوِيَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ، فَأَخَذَ الْقَدَحَ فَوَضَعَهُ عَلَى يَدِهِ، فَنَظَرَ إِلَيَّ فَتَبَسَّمَ، فَقَالَ: (أَبَا هِرٍّ). قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (بَقِيتُ أَنَا وَأَنْتَ). قُلْتُ: صَدَقْتَ يَا رَسُولَ

मुस्कराये और मेरे दिल की बात मेरे चेहरे की हालत से समझ गये और फरमाने लगे, ऐ अबू हुरैरा रजि.! मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया, मेरे साथ आओ। आप चले तो मैं भी आपके पीछे चल पड़ा। आप घर में दाखिल हुए तो मैंने अन्दर आने की इजाजत मांगी। मुझे आपने इजाजत दे दी तो मैं भी मकान में दाखिल हुआ। वहां एक दूध से भरा हुआ प्याला आपने देखा तो फरमाया, यह कहां से आया है? घर वालों ने बताया कि फलां मर्द या औरत ने आपको बतौर तोहफा भेजा है। आपने फरमाया, ऐ अबू हुरैरा रजि.! मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया, जाओ अहले सुफ्फा को भी बुला लाओ। अबू हुरैरा रजि. का बयान है कि अहले सुफ्फा तो सिर्फ इस्लाम के मेहमान थे। उनका वहां कोई घरबार या मालो असबाब न था और न ही कोई दोस्त व आसना जिसके घर जाकर रहते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जो भी सदके का माल आता तो उन लोगों को भेज देते। खुद

اَللهِ، قَالَ: (اُقْعُدْ فَاشْرَبْ). فَقَعَدْتُ فَشَرِبْتُ، فَقَالَ: (اشْرَبْ). فَشَرِبْتُ، فَمَا زَالَ يَقُولُ: (اشْرَبْ). حَتَّى قُلْتُ: لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، مَا أَجِدُ لَهُ مَسْلَكًا، قَالَ: (فَأَرِنِي). فَأَعْطَيْتُهُ الْقَدَحَ، فَحَمِدَ اللهَ وَسَمَّى وَشَرِبَ الْفَضْلَةَ. [رواه البخاري: ٦٤٥٢]

उससे कुछ न लेते। अगर तोहफे के तौर पर कोई चीज आती तो उन्हें बुला भेजते, खुद भी खाते और उन्हें भी खाने में शरीक करते। अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि अहले सुफ्फा का बुला लाना उस वक्त तो मुझे बुरा महसूस हुआ। मैंने अपने दिल में कहा कि यह दूध अहले सुफ्फा को कैसे पूरा हो सकता है? इस दूध का हकदार तो मैं था। ताकि उस में से कुछ पीता तो मुझे जरा ताकत आ जाती और जब अहले सुफ्फा आयेंगे तो आप मुझे फरमायेंगे कि उनको दूध पिलाओ तो जब मैं उन्हें यह दूध दूंगा तो मुझे उम्मीद नहीं कि इससे मेरे लिए भी कुछ बच रहेगा। मगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म मानना जरूरी था। बहरहाल मैं अहले सुफ्फा के पास आया और उन्हें बुलाया। वो आये और अन्दर जाने की इजाजत मांगी तो आपने उन्हें इजाजत दे दी। चूनांचे वो अन्दर आकर अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। आपने फरमाया, ऐ अबू हुरैरा! मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया, इन्हें दूध पिलाओ। मैंने वो प्याला लेकर एक आदमी को दिया। उसने खूब सैर होकर पिया और मुझे वापिस कर दिया। फिर मैंने दूसरे को दिया। उसने भी खूब सैर होकर नोश किया और फिर मुझे वापिस कर दिया। इस तरह सब पी चुके तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारी आयी। उस वक्त अहले सुफ्फा खूब सैर होकर पी चुके थे। आपने प्याला हाथ पर रखा और मेरी तरफ देखकर मुस्कराये और फरमाया, ऐ अबू हुरैरा रजि.! मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया, अब तो मैं और आप सिर्फ दो आदमी बाकी रह गये हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम! बेशक आप सच फरमाते है। आपने फरमाया, अब बैठ जाओ और दूध पीओ। चूनांचे मैंने बैठकर दूध पीना शुरू किया। आपने फरमाया और पिओ, मैंने और पिया। आपने फिर इसरार फरमाया कि और पिओ, आप यही फरमाते रहे, यहां तक कि मैंने कहा, उस परवरदिगार की कसम! जिसने आपको हक देकर भेजा है, अब तो मेरे पेट में कोई जगह नहीं है। आपने फरमाया, अच्छा अब मुझे दे दो। चूनांचे मैंने वो प्याला आपको दे दिया। आपने पहले तो अल्लाह का शुक्रिया अदा किया। फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर बचा हुआ दूध नोश फरमाया।

फायदे: इस हदीस से रावी इस्लाम हजरत अबू हुरैरा रजि. की बड़ाई व पुख्ता इरादा और सब्रो इस्तकामत का पता चलता है कि उन्होंने कैसे कठिन हालत में इस्लाम से वफादारी और जानिसारी का सबूत दिया।

2103: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं दुआ करते थे, ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हस्ब जरूरत रिज्क अता फरमा।

٢١٠٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (اللَّهُمَّ ٱرْزُقْ آلَ مُحَمَّدٍ قُوتًا). [رواه البخاري: ٦٤٦٠]

फायदे: चूनांचे हजरत आइशा रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर कभी पेट भरकर खजूरें खाते तो कभी जौ रोटी मयस्सर न आती, उस तरजे जिन्दगी से तो मालदारी के आफात और फितना फक्र दोनों से निजात मिली थी।

(फतहुलबारी 11/293)

बाब 10: इबादत में दरमियानी तरीका और उस पर हमेशगी का बयान।

١٠ - باب: القَصْدُ وَالمُدَاوَمَةُ عَلَى العَمَلِ

٢١٠٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَنْ يُنْجِيَ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ). قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (وَلاَ أَنَا، إِلَّا أَنْ يَتَغَمَّدَنِي ٱللهُ بِرَحْمَةٍ، سَدِّدُوا وَقَارِبُوا، وَٱغْدُوا وَرُوحُوا، وَشَيْءٌ مِنَ ٱلدُّلْجَةِ، وَالْقَصْدَ الْقَصْدَ تَبْلُغُوا). [رواه البخاري: ٦٤٦٣]

2104: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुममें से किसी को उसके अमल निजात न देंगे। सहाबा किराम ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! न आपके आमाल। आपने फरमाया कि मुझे भी मेरे आमाल निजात नहीं देंगे। मगर यह कि अल्लाह तआला मुझे अपनी रहमत से ढ़ांप ले। तुम्हें चाहिए कि बेहतरी के साथ अमल करते रहो। दरमियानी तरीका इख्तियार करो। हर सुबह और रात के पिछले हिस्से में कुछ इबादत करो। दरमियानी तरीका इख्तियार करो। इस दरमियानी तरीके से तुम अपनी मंजिल मकसूद पर पहुंच जाओगे।

फायदे: बाज कुरआनी आयातें से मालूम होता है कि अच्छे काम जन्नत में दाखिल होने का सबब है। असल बात यह है कि जन्नत में दाखिल होना तो अल्लाह तआला की रहमत से मुमकिन होगा। फिर जन्नत के दरजात व मुनाजिल हस्बे आमाल तकसीम होंगे। (फतहुलबारी 11/295) और अच्छे काम ही रहमते इलाही का सबब बनेंगे।

٢١٠٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى ٱللهِ؟ قَالَ: (أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ). [رواه البخاري: ٦٤٦٥]

2105: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया, अल्लाह तआला को कौन सा काम ज्यादा पसन्द है? फरमाया जो हमेशा किया जाये, चाहे थोड़ी मिकदार में हो।

फायदे: इस हदीस के आखिर में है कि नेकी करने में इतनी तकलीफ उठाओ जितनी ताकत है। मतलब यह है कि अगरचे पसन्दीदा काम वही है, जिस पर हमेशगी की जाये। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि अपनी सेहत से ज्यादा काम करना शुरू कर दो, फिर उकताकर उसे छोड़ दो। (फतहुलबारी 11/299)

बाब 11: अल्लाह तआला से उम्मीद और डर दोनों रखना।

١١ - باب: الرَّجَاءُ مَعَ الخَوْفِ

2106: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि अगर काफिर को अल्लाह के यहां तमाम रहमतों का पता चल जाये तो कभी जन्नत से मायूस न हो। अगर मौमिन को अल्लाह के यहां हर किस्म का अजाब मालूम हो जाये तो वो कभी जहन्नम से बेखौफ न हो।

٢١٠٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لَوْ يَعْلَمُ الكَافِرُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ ٱللهِ مِنَ الرَّحْمَةِ لَمْ يَيْأَسْ مِنَ الجَنَّةِ، وَلَوْ يَعْلَمُ المُؤْمِنُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ ٱللهِ مِنَ العَذَابِ لَمْ يَأْمَنْ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ٦٤٦٩]

फायदे: दरअसल उम्मीद और खौफ की दरमियानी कैफियत का नाम ईमान है। अल्लाह की रहमत से मायूस होना भी कुफ्र है और अपने आमाल पर मुकम्मिल तौर पर भरोसा कर लेना भी हलाकत का सबब है। नेकबख्ती की निशानी यह है कि फरमानबरदारी करते वक्त उसके अजाब का खौफ दामनगिर रहे और बदबख्ती की निशानी यह है कि नाफरमानी में गर्क रहते हुए अल्लाह के यहां अजाब से निजात की उम्मीद रखे। (फतहुलबारी 11/301)

बाब 12: फरमाने नबवी: जिस आदमी को अल्लाह पर ईमान और कयामत के

١٢ - باب: حِفْظُ اللِّسَانِ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا

أَوْ لِيَصْمُتْ

दिन पर यकीन है, उसे चाहिए कि मुंह से अच्छी बात निकाले वरना खामोश रहे के पेशे नजर जुबान की हिफाजत का बयान।"

٢١٠٧ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ ٱلجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٦٤٧٤]

2107: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी मुझे अपने जबड़ों के बीच जुबान और अपनी टांगों के बीच शर्मगाह की जमानत दे दे तो मैं उसके लिए जन्नत की जमानत देता हूं।

फायदे: मालूम हुआ कि दुनिया में मुसीबत और परेशानी में मुब्तला होते वक्त असल किरदार इन्सान की जबान और उसकी शर्मगाह का है। अगर उनकी बुराई से अपने आपको बचा लिया जाये तो बेशुमार गुनाहों से महफूज रहा जा सकता है। (फतहुलबारी 11/301)

٢١٠٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ ٱلعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِٱلْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ ٱللهِ، لَا يُلْقِي لَهَا بَالًا، يَرْفَعُ ٱللهُ بِهَا دَرَجَاتٍ، وَإِنَّ ٱلعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِٱلْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ ٱللهِ، لَا يُلْقِي لَهَا بَالًا، يَهْوِي بِهَا فِي جَهَنَّمَ). [رواه البخاري: ٦٤٧٨]

2108: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, आदमी कभी ऐसी बात मुंह से निकालता है, जिसमें अल्लाह की रजामन्दी होती है। हालांकि वो उसको कुछ अहमियत नहीं देता तो उसकी वजह से अल्लाह उसके दरजात बुलन्द कर देता है और कभी बन्दा अल्लाह की नाराजगी की कोई बात बेपरवाहपन में मुंह से निकाल बैठता है, लेकिन अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे दोजख में डाल देता है।

फायदेः इस हदीस का बुनियादी तकाजा यह है कि जबान की हिफाजत की जाये। जरूरी है कि गुफ्तगू से पहले इसका वजन कर लिया जाये। अगर बात करना जरूरी है तो तो बात करे, बसूरत दीगर खामोश रहे। जैसा कि हदीस में इसकी सराहत भी मौजूद है। (फतहुलबारी 11/311)

बाब 13: गुनाहों से बाज रहना।

١٣ - باب: الانتِهاءُ عن المَعاصي

2109: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं और जो अल्लाह ने मुझे देकर भेजा है, उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे किसी आदमी ने अपनी कौम से कहा कि मैंने दुश्मन का लश्कर अपनी आंखों से देखा है और मैं तुम्हें खुले और वाजेह तौर पर डराने वाला हूं। भागो और उससे बचो। एक गिरोह ने उसका कहना माना, रात ही रात इत्मीनान से निकल गया तो उन्होंने अपनी जान बचा ली और कुछ लोगों ने उसकी बात नहीं मानी। यहां तक कि सुबह के वक्त वो लश्कर आ पहुंचा, फिर उसने उन्हें तबाह कर डाला।

٢١٠٩ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي ٱللهُ، كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ: رَأَيْتُ الجَيْشَ بِعَيْنَيَّ، وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ العُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ النَّجَاءَ، فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ فَأَدْلَجُوا عَلَى مَهْلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْهُ طَائِفَةٌ فَصَبَّحَهُمُ الجَيْشُ فَاجْتَاحَهُمْ). [رواه البخاري: ٦٤٨٢]

फायदेः मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को गुनाहों से आगाह किया है कि अल्लाह का अजाब बिल्कुल तैयार है। इसलिए तौबा करके अपने आपको बचाओ। इसके बाद जिसने बात को मान कर शिर्क व कुफ्र से इज्तनाब किया, वो तो बच गया और जिसने सरकशी की वो मरते ही हमेशगी के अजाब में गिरफ्तार होगा।

बाब 14: दोजख की आग नफसानी ख्वाहिश से ढ़की होती है।

١٤ - باب: حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ

2110: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जहन्नम का पर्दा नफसानी ख्वाहिशात और जन्नत का पर्दा तकलीफ व मुजाहदात है।

٢١١٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ، وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ). [رواه البخاري: ٦٤٨٧]

फायदे: कुरआन करीम में यही मजमून इन अल्फाज में जिक्र किया गया है "जिसने सरकशी करते हुए दुनियावी जिन्दगी को तरजीह दी, दोजख ही उसका ठिकाना होगा और जिसने अपने रब के सामने पेश होने का खौफ किया और नफ्स को बुरी ख्वाहिशात से बाज रखा उसका ठिकाना जन्नत में होगा। (नाजआत 4137)

बाब 15: जन्नत और जहन्नम जूते के फिते से भी ज्यादा नजदीक है।

١٥ - باب: الجَنَّةُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ وَالنَّارُ مِثْلُ ذَلِكَ

2111: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जन्नत तुम्हारी जूती के फिते से ज्यादा करीब है। इसी तरह जहन्नम बेहद करीब है।

٢١١١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الجَنَّةُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ، وَالنَّارُ مِثْلُ ذَلِكَ). [رواه البخاري: ٦٤٨٨]

फायदे: मतलब यह है कि इन्सान सवाब की बात को कमतर ख्याल न करे, शायद अल्लाह को वही पसन्द आ जाये। और उसकी निजात का जरीया बन जाये। इसी तरह गुनाह की बात को मामूली ख्याल न करे, शायद अल्लाह उससे नाराज होकर उसे जहन्नम में झोंक दे।

(फतहुलबारी 11/321)

बाब 16: दुनियादारी में अपने से कम की तरफ देखे और बड़े की तरफ न देखे।

١٦ - باب: لِيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ وَلاَ يَنْظُرْ إِلَى مَنْ فَوْقَهُ

2112: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम में से किसी की नजर ऐसे आदमी पर पड़े जो मालो जमाल में उससे बढ़कर हो तो उसे उन लोगों को भी देखना चाहिए जो उन बातों में उससे कम हों।

٢١١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالخَلْقِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٦٤٩٠]

फायदे: एक हदीस में है कि जो आदमी दुनियावी लिहाज से अपने कमतर को देखकर अल्लाह का शुक्र करता है, और दुनियावी लिहाज से अपने से बेहतर को देखकर उसकी पैरवी करता है उसे अल्लाह के यहां साबिर व शाकिर लिखा जाता है। (फतहुलबारी 11/323)

बाब 17: नेकी या बदी का इरादा करना कैसा है?

١٧ - باب: مَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ أَوْ بِسَيِّئَةٍ

2113: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने अपने परवरदिगार से नकल करते हुए फरमाया कि अल्लाह तआला ने नेकियां और बुराईयां सब लिख दी हैं। फिर उनकी तफसील यूं बयान की है कि जिसने नेकी का सिर्फ इरादा किया उसे अमली जामा न पहना सका तब भी

٢١١٣ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا يَرْوِي عَنْ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ: (إِنَّ ٱللهَ كَتَبَ الحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ ثُمَّ بَيَّنَ ذٰلِكَ. فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا ٱللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا وَعَمِلَهَا كَتَبَهَا ٱللهُ لَهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ، وَمَنْ هَمَّ

بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا ٱللَّهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا ٱللَّهُ عَلَيْهِ سَيِّئَةً وَاحِدَةً). [رواه البخاري: ٦٤٩١]

अल्लाह उसके लिए पूरी नेकी लिख देगा और जिसने नेकी का इरादा किया और उसे बजा भी लाया तो उसके नामा-ए-आमाल में दस से लेकर सात सौ तक बल्कि इससे भी कहीं ज्यादा नेकियां लिख देगा। लेकिन जिसने बदी का इरादा किया, मुर्तकिब न हुआ तो उसके लिए भी अल्लाह तआला एक पूरी नेकी का सवाब लिख देगा। लेकिन जिसने इरादा करके बदी कर डाली तो उसके लिए अल्लाह तआला एक ही बदी लिखेगा।

फायदे: वाजेह रहे कि बदी का इरादा करके छोड़ देना उस वक्त नेकी लिखे जाने का सबब होगा, जब अल्लाह से डरते हुए उसे अमली जामा न पहनाये। लेकिन अगर फुरसत न मिल सकी लोगों से डरते उसे अमल में न ला सका तो बुरी नियत की वजह उसने बुराई को जरूर कमाया है। (फतहुलबारी 11/326)

١٨ - باب رَفْعِ الأَمَانَةِ

बाब 18: दुनिया से अमानतदारी के उठ जाने का बयान।

٢١١٤ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ ٱللَّهِ ﷺ حَدِيثَيْنِ، رَأَيْتُ أَحَدَهُمَا وَأَنَا أَنْتَظِرُ الآخَرَ حَدَّثَنَا: (أَنَّ الأَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ القُرْآنِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ). وَحَدَّثَنَا عَنْ رَفْعِهَا قَالَ: (يَنَامُ الرَّجُلُ النَّوْمَةَ، فَتُقْبَضُ الأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ، فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلَ أَثَرِ الوَكْتِ، ثُمَّ يَنَامُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ فَيَبْقَى أَثَرُهَا

2114: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो हदीसें बयान फरमाई थी। एक का जहूर तो मैं देख चुका हूँ। अलबत्ता दूसरी के जहूर का मुन्तजिर हूँ। पहली हदीस तो यह है कि पहले ईमानदारी अल्लाह की तरफ से लोगों के दिलों की तह में उतरी, फिर लोगों ने कुरआन से इसका हुक्म मालूम

مِثْلَ الْمَجْلِ، كَجَمْرٍ دَحْرَجْتَهُ عَلَى رِجْلِكَ فَنَفِطَ، فَتَرَاهُ مُنْتَبِرًا وَلَيْسَ فِيهِ شَيْءٌ، فَيُصْبِحُ النَّاسُ يَتَبَايَعُونَ، فَلاَ يَكَادُ أَحَدُهُمْ يُؤَدِّي الأَمَانَةَ، فَيُقَالُ: إِنَّ فِي بَنِي فُلاَنٍ رَجُلًا أَمِينًا، وَيُقَالُ لِلرَّجُلِ: مَا أَعْقَلَهُ وَمَا أَظْرَفَهُ وَمَا أَجْلَدَهُ، وَمَا فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ).

وَلَقَدْ أَتَى عَلَيَّ زَمَانٌ وَمَا أُبَالِي أَيَّكُمْ بَايَعْتُ، لَئِنْ كَانَ مُسْلِمًا رَدَّهُ عَلَيَّ الإِسْلاَمُ، وَإِنْ كَانَ نَصْرَانِيًّا رَدَّهُ عَلَيَّ سَاعِيهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ: فَمَا كُنْتُ أُبَايِعُ إِلَّا فُلاَنًا وَفُلاَنًا. [رواه البخاري: ٦٤٩٧]

किया, फिर सुन्नते नबवी से उसके बारे में मालूमात हासिल की। दूसरी हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमानतदारी के उठ जाने के बारे में बयान की। (कि यह बहुत जल्द उठ जायेगी) ऐसा होगा कि आदमी सोयेगा और उसी हालत में अमानतदारी उसके दिल से निकाल ली जायेगी। फिर उसकी जगह सिर्फ एक निशान रह जायेगा जो हल्के दाग की तरह होगा। फिर जब सोयेगा तो बाकी अमानत भी निकाल ली जायेगी। उसका निशान आबले की तरह रह जायेगा। जैसे तू चिंगारी अपने पांव पर डाल दे तो एक छाला फूल आता है, तू उसे उभरा हुआ देखेगा। हालांकि उसके अन्दर कुछ नहीं होता, फिर ऐसा होगा कि लोग खरीदो फरोख्त करेंगे लेकिन उनमें कोई भी अमानतदार नहीं होगा। आखिरकार नबूवत इस जगह पहुंच जायेगी कि लोग कहेंगे, फलां कबीले का फलां आदमी कैसा अमानतदार है वो कैसा अकलमन्द और साहिबे जराफत है और कैसे मजबूत किरदार का हामिल है। हालांकि उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं होगा। हुजैफा रजि. कहते हैं कि मुझ पर एक जमाना ऐसा गुजर चुका है कि मुझे किसी के साथ खरीद-फरोख्त करने में कोई परवाह न होती थी। क्योंकि अगर वो मुसलमान होता तो दीने इस्लाम उसको हक की तरफ फैर लाता और काफिर नस्रानी होता तो उसके हाकिम और मददगार लोग मेरा हक उससे वापिस दिलाते। जबकि आजकल ऐसा वक्त आया है कि मैं किसी से मुआमला ही नहीं करता। हां बस खास लोगों से खरीद व फरोख्त करता हूँ।

फायदेः मतलब यह है कि पहली नींद में तो ईमानदारी का नूर उठ जायेगा और उसकी जगह बेईमानी की तारीकी एक हल्के से दाग की तरह नमुदार होगी, दूसरी नींद में तारीकी ज्यादा होकर आबले के दाग की तरह हो जायेगी जो काफी वक्त तक कायम रहेगा।

٢١١٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّمَا النَّاسُ كَالإِبِلِ المِائَةِ، لاَ تَكَادُ تَجِدُ فِيهَا رَاحِلَةً). [رواه البخاري: ٦٤٩٨]

2115: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, आदमियों का हाल तो ऊंटों की तरह है कि सौ ऊंटों में एक ऊंट भी तेज सवारी के काबिल नहीं मिलता।

फायदेः जो जानवर सवारी के लिए इस्तेमाल होता है, वो नरम मिजाज होता है, इस तरह लोगों में नरम मिजाजी बिलकुल ही नहीं है, ऐसे लोग बहुत कम हैं जो ईमानदार और मामला फहम हों जो अपने दोस्तो के बारे में नरम मिजाजी का मुजाहिरा करने वाले हों।

(फतहुलबारी 11/335)

١٩ - باب: الرِّيَاءِ وَالسُّمْعَةِ

बाब 19: रिया (दिखावे) और शोहरत की मुजम्मत।

٢١١٦ : عَنْ جُنْدَبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ ٱللهُ بِهِ، وَمَنْ يُرَائِي يُرَائِي ٱللهُ بِهِ). [رواه البخاري: ٦٤٩٩]

2116: जुन्दुब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने सुनाने के लिए नेक काम किया, अल्लाह तआला (कयामत को) उसकी बदनियत सबको सुना देगा, जिसने दिखावे के लिए काम किया, अल्लाह तआला उसका दिखलावा जाहिर करेगा।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि नेक कामों को पोशिदा रखना चाहिए, लेकिन जिसकी लोग इक्तदा करते हैं, अगर वो नमूने के तौर पर अपने नेक काम जाहिर भी कर दें तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि इससे लोगों की इस्लाह मकसूद है। (फतहुलबारी 11/337)

बाब 20: तवाजोअ (खाकसारी) व आजिजी (इनकिसारी)।

٢٠ - باب: التَّوَاضُعُ

2117: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद गरामी है, जिसने मेरे दोस्त से अदावत की, मैं उसे खबरदार किए देता हूं कि मैं उसे लडूंगा और मेरा बन्दा जिन जिन इबादतों से मेरा कुर्ब हासिल करता है, उनमें कोई इबादत मुझे उस इबादत से ज्यादा पसन्द नहीं जो मैंने उस पर फर्ज की है और मेरा बन्दा नवाफिल की अदायगी से मेरे इतने करीब हो जाता है कि मैं उसे मुहब्बत करने लगता हूं और जब मैं उससे मुहब्बत करता हूं तो मैं उसका कान बन जाता हूं, जिससे वो सुनता है और उसकी आंख बन जाता हूं, जिससे वो देखता है और उसका हाथ बन जाता हूं, जिससे वो पकड़ता है, और उसका पांव बन जाता हूं, जिससे वो चलता है और मुझ से मांगता है तो मैं उसे देता हूं। वो अगर पनाह मांगता है तो उसे पनाह देता हूं और मुझे किसी काम में जिसे करना चाहता हूं, इतना शको-शुबा नहीं होता

٢١١٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالحَرْبِ، وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا ٱفْتَرَضْتُ عَلَيْهِ، وَمَا يَزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ، فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ: كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ، وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ، وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا، وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا، وَإِنْ سَأَلَنِي لَأُعْطِيَنَّهُ، وَلَئِنِ ٱسْتَعَاذَنِي لَأُعِيذَنَّهُ، وَمَا تَرَدَّدْتُ عَنْ شَيْءٍ أَنَا فَاعِلُهُ تَرَدُّدِي عَنْ نَفْسِ المُؤْمِنِ، يَكْرَهُ المَوْتَ وَأَنَا أَكْرَهُ مَسَاءَتَهُ).

[رواه البخاري: ٦٥٠٢]

जितना अपने मुसलमान बन्दे की जान निकालने में होता है। वो तो मौत को (बवजह तकलीफ जिस्मानी के) बुरा समझता है और मुझे भी उसे तकलीफ देना नागवार गुजरता है।

फायदे: एक रिवायत में है कि मैं अपने बन्दे का दिल बन जाता हूँ, जिससे वो समझता है और उसकी जुबान होता हूँ, जिससे वो गुफ्तगू करता है। इसका मतलब यह है कि जब बन्दा अल्लाह की इबादत में गर्क हो जाता है और मर्तबा महबूबीयत पर पहुंचता है तो उसके हवासे जाहिरी और बातिनी सब शरीअत के ताबेअ हो जाते, वो हाथ, पांव, कान, आंख, जुबान और दिलो-दीमाग से वही काम लेता है, जिसमें अल्लाह की मर्जी होती है। उससे खिलाफे शरीअत कोई काम नहीं होता। (फतहुलबारी 11/344)

बाब 21: जो आदमी अल्लाह से मिलना पसन्द करता है, अल्लाह भी उससे मुलाकात को पसन्द करते हैं।

٢١ - باب: مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ الله أَحَبَّ الله لِقَاءَهُ

2118: उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी अल्लाह से मिलने को अजीज रखता हो तो अल्लाह भी उससे मुलाकात को पसन्द करते हैं और जो अल्लाह तआला से मिलने को बुरा समझता है तो अल्लाह तआला भी उससे मिलने को बुरा जानते हैं। आइशा रजि. या किसी और उम्मे मौमिनीन रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

٢١١٨ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ ٱللهِ أَحَبَّ ٱللهُ لِقَاءَهُ، وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ ٱللهِ كَرِهَ ٱللهُ لِقَاءَهُ). قَالَتْ عائِشَةُ أَوْ بَعْضُ أَزْوَاجِهِ: إِنَّا لَنَكْرَهُ المَوْتَ، قَالَ: (لَيْسَ ذَاكِ، وَلٰكِنَّ المُؤْمِنَ إِذَا حَضَرَهُ المَوْتُ بُشِّرَ بِرِضْوَانِ ٱللهِ وَكَرَامَتِهِ، فَلَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ، فَأَحَبَّ لِقَاءَ ٱللهِ وَأَحَبَّ ٱللهُ لِقَاءَهُ، وَإِنَّ الكَافِرَ إِذَا حُضِرَ بُشِّرَ بِعَذَابِ ٱللهِ وَعُقُوبَتِهِ، فَلَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَهَ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ، فَكَرِهَ لِقَاءَ ٱللهِ وَكَرِهَ ٱللهُ لِقَاءَهُ) [رواه البخاري: ٦٥٠٧]

अलैहि वसल्लम! हम सब मौत को नापसन्द करते हैं। आपने फरमाया, यह मतलब नहीं बल्कि बात यह है कि मौमिन के पास जब मौत आ रही होती है तो उसे अल्लाह की तरफ से रजामन्दी और उसकी सरफराजी की खुशखबरी दी जाती है। वो उस वक्त उन नैमतों से ज्यादा जो उसे आगे मिलना होते हैं, किसी दूसरी चीज को पसन्द नहीं करता तो वो अल्लाह से मिलने की जल्द आरजू करता है और अल्लाह भी उसकी मुलाकात को पसन्द करता है। और जब काफिर की मौत का वक्त आ जाता है और उसे अल्लाह के अजाब व सजा की खबर दी जाती है तो जो कुछ उसे आगे मिलने वाला होता है, उससे ज्यादा उसे कोई चीज नापसन्द नहीं होती, इसलिए अल्लाह से मिलना नापसन्द करता है और अल्लाह भी उससे मिलना पसन्द नहीं करता।

फायदे: हदीस में बयान शुदा मुलाकात के कई एक मायने हैं, एक तो अपने अनजाम को देखना जैसा कि हदीस में बयान हुआ है, दूसरा कयामत के दिन उठना और मौत के मायने में भी इस्तेमाल हुआ है। चूनांचे एक रिवायत में है कि यह मुलाकात मौत के अलावा है। जो आदमी दुनिया से नफरत करता है वो गोया अल्लाह से मुलाकात का चाहने वाला है और जो दुनिया को चाहता है, वो गोया अल्लाह से मुलाकात करना नहीं चाहता। जिस आदमी को अल्लाह से मुलाकात का शौक होता है, उसकी तैयारी करेगा और जिसे अल्लाह के सामने पेश होने का डर होगा वो भी दुनिया में फूंक फूंक कर कदम रखेगा।

(फतहुलबारी 11/360)

बाब 22: मौत की बेहोशी का बयान।

٢٢ - باب: سَكَرَاتُ المَوْتِ

2119: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में कुछ

٢١١٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنها قَالَتْ: كانَ رِجالٌ مِن الأَعْرابِ جُفَاةً يَأْتُونَ النَّبِيَّ ﷺ

فَيَسْأَلُونَهُ: مَتَى السَّاعَةُ؟ فَكَانَ يَنْظُرُ إِلَى أَصْغَرِهِمْ فَيَقُولُ: (إِنْ يَعِشْ هٰذَا لَا يُدْرِكْهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ عَلَيْكُمْ سَاعَتُكُمْ). يَعْنِي مَوْتَهُمْ. [رواه البخاري: ٦٥١١]

उजड किस्म के देहाती आते और पूछते कि कयामत कब आयेगी? आप उनसे एक छोटी उम्र वाले की तरफ देखकर फरमाते इसका बुढ़ापा आने से पहले तुम पर कयामत कामय हो जायेगी। यानी तुम्हें मौत आ जायेगी।

फायदे: इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत को कयामत करार दिया है। चूंकि कयामत के दिन सब लोग बेहोश हो जायेंगे। इसलिए मौत में भी बेहोशी होती है, जैसा कि बुखारी की एक हदीस में सराहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफात के वक्त अपना हाथ पानी में डालते और अपने मुंह पर फैरते। फिर फरमाते, ला इलाहा इल्लल्लाहु, मौत में बड़ी सख्तीयां हैं। (बुखारी 6510)

٢٣ - باب: يَقْبِضُ الله الأَرْضَ يَوْمَ القِيَامَةِ

बाब 23: कयामत के दिन अल्लाह तआला जमीन को मुट्ठी में रख लेगा।

٢١٢٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَكُونُ الأَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خُبْزَةً وَاحِدَةً، يَتَكَفَّؤُهَا الْجَبَّارُ بِيَدِهِ كَمَا يَكْفَأُ أَحَدُكُمْ خُبْزَتَهُ فِي السَّفَرِ، نُزُلًا لِأَهْلِ الجَنَّةِ). فَأَتَى رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ: بَارَكَ الرَّحْمٰنُ عَلَيْكَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، أَلَا أُخْبِرُكَ بِنُزُلِ أَهْلِ الجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: (بَلَى). قَالَ: تَكُونُ الأَرْضُ خُبْزَةً وَاحِدَةً، كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ، فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْنَا

2120: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत के दिन सारी जमीन एक रोटी की तरह हो जायेगी। अल्लाह तआला जन्नत वालों की मेहमानदारी के लिए अपने हाथ से उसे उल्ट-पुल्ट करेगा। जैसा कि तुम में से कोई सफर के दौरान अपनी रोटी को उल्ट-पुल्ट करता हैं इसके बाद एक यहूदी आदमी आया और कहने लगा,

ثُمَّ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ، ثُمَّ قَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكَ بِإِدَامِهِمْ؟ قَالَ: إِدَامُهُمْ بَالاَمٌ وَنُونٌ، قَالُوا: وَمَا هٰذَا؟ قَالَ: ثَوْرٌ وَنُونٌ، يَأْكُلُ مِنْ زَائِدَةِ كَبِدِهِمَا سَبْعُونَ أَلْفًا. [رواه البخاري: ٦٥٢٠]

अबू कासिम सल्ल.! अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दे, क्या मैं आपको बताऊं कि कयामत के दिन अहले जन्नत की मेहमानी क्या होगी? आपने फरमाया, हां बताओ। वो भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह यही कहने लगा कि जमीन एक रोटी की तरह हो जायेगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर हमारी तरफ देखा और इस कद्र हंसे कि आपकी कुचलियां दिखाई देने लगीं। फिर वो यहूदी कहने लगा कि मैं तुम्हें अहले जन्नत के सालन के बारे में बताऊं, वो क्या होगा। (आपने फरमाया, हां) वो कहने लगा उनका सालन बालाम और नून होगा। सहाबा रजि. ने पूछा, बालाम और नून क्या होता है? आपने फरमाया, बैल और मछली उनकी इतनी मोटाई होगी कि सिर्फ कलेजी सत्तर हजार के लिए काफी होगी।

फायदे: अहले जन्नत को बतौर तौहफा यह गिजा दी जायेगी खाने के लिए एक बैल जिब्ह किया जायेगा जो जन्नत में खाता पीता है। फिर सलसबिल नामी चश्मा साफी से पीने के लिए पानी दिया जायेगा।

(फतहुलबारी 11/375)

٢١٢١ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ، كَقُرْصَةِ نَقِيٍّ). قَالَ سَهْلٌ أَوْ غَيْرُهُ: (لَيْسَ فِيهَا مَعْلَمٌ لأَحَدٍ). [رواه البخاري: ٦٥٢١]

2121: सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, कयामत के दिन लोगों का हश्र सफेद गेहूँ की रोटी जैसी साफ और सफेद जमीन पर किया जायेगा। सहल रजि. या किसी और

रावी का बयान है कि यह जमीन बेनिशान होगी।

फायदे: मतलब यह है कि जमीन की मौजूदा हकीकत बदल दी जायेगी। जैसा कि कुरआन करीम में इसकी सिराहत है। इस पर कोई मकान या पहाड़ या दरख्त वगैरह नहीं रहेंगे। और उसे मैदाने महशर बना दिया जायेगा। (फतहुलबारी 11/375)

बाब 24: हश्र का बयान।

٢٤ - باب: الحَشْرُ

2122: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन लोगों के तीन गिरोह होंगे जो (शाम की तरफ) हश्र के लिए जायेंगे। एक गिरोह रहमत की उम्मीद रखे हुए अपने अंजाम से डरता होगा। दूसरा गिरोह एक ऊंट पर दो-दो, तीन-तीन, चार-चार बल्कि दस दस आदमी बैठकर निकलेंगे और तीसरे गिरोह को आग लेकर चलेगी। जहां पर यह लोग दोपहर के वक्त आराम के लिए ठहरेंगे। वहां वो आग भी ठहर जायेगी और जहां रात को ठहर जायेंगे यह आग भी ठहर जायेगी। जहां वो सुबह को ठहरेंगे, वहां वो आग भी उनके साथ ठहर जायेगी और जहां वो शाम करेंगे वहां वो भी शाम करेगी।

٢١٢٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى ثَلاَثِ طَرَائِقَ: رَاغِبِينَ رَاهِبِينَ، وَٱثْنَانِ عَلَى بَعِيرٍ، وَثَلاَثَةٌ عَلَى بَعِيرٍ، وَأَرْبَعَةٌ عَلَى بَعِيرٍ، وَعَشَرَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَتَحْشُرُ بَقِيَّتَهُمُ النَّارُ، تَقِيلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا، وَتَبِيتُ مَعَهُمْ حَيْثُ بَاتُوا، وَتُصْبِحُ مَعَهُمْ حَيْثُ أَصْبَحُوا، وَتُمْسِي مَعَهُمْ حَيْثُ أَمْسَوْا). [رواه البخاري:

फायदे: हश्र की तीन किस्में हैं। एक तो कयामत की निशानी है कि पूर्व की तरफ से आग बदआमद होगी जो लोगों को पश्चिम की तरफ हांक कर लायेगी, दूसरा वो हश्र जब कब्रों से लोग मैदाने महशर में इकट्ठे होंगे। तीसरा हश्र जब फैसले के बाद जन्नत या जहन्नम की तरफ उन्हें रवाना किया जायेगा। (फतहुलबारी 11/378)

2123. आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत के दिन नंगे पावं नंगे बदन और बगैर खत्ना उठाये जाओगे। आइशा रजि. कहती हैं कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मर्द और औरत सब एक दूसरे के सतर को देखेंगे। आपने फरमाया कि वो वक्त तो मौत से भी ज्यादा सख्त और खौफनाक होगा कि वो ऐसा इरादा न कर सकेंगे।

٢١٢٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، قالَتْ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا). قالَتْ عائِشَةُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، الرِّجالُ وَالنِّساءُ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ؟ فَقالَ: (الأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يُهِمَّهُمْ ذَاكِ). [رواه البخاري: ٦٥٢٧]

फायदे: कुछ रिवायतों में है कि जब हजरत आइशा रजि. ने अपनी तबई शर्म व हया का इजहार किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उस दिन हर इन्सान को अपनी पड़ी होगी आदमी, औरतों की तरफ और औरतें मर्दो की तरफ नहीं देखेगी। (फतहुलबारी 11/387)

बाब 25: फरमाने इलाही: क्या यह लोग यकीन नहीं करते कि वो एक बड़े दिन के लिए उठाये जायेंगे, जिस दिन लोग परवरदिगारे आलम के सामने पेश होंगे।"

٢٥ - باب: قَوْلُ اللهِ تَعالَى: ﴿أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

2124: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत के दिन लोगों को इतना पसीना आयेगा कि जमीन में सत्तर गज तक फैल जायेगा। उनके मुंह बल्कि कानों तक पहुंच जायेगा।

٢١٢٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (يَعْرَقُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيامَةِ حَتَّى يَذْهَبَ عَرَقُهُمْ فِي الأَرْضِ سَبْعِينَ ذِراعًا، وَيُلْجِمُهُمْ حَتَّى يَبْلُغَ آذانَهُمْ). [رواه البخاري: ٦٥٣٢]

फायदेः एक रिवायत में है कि काफिर कयामत की शिद्दत की वजह से अपने पसीने में डूबे होंगे। अलबत्ता अहले ईमान तख्तों पर लेटे हुए होंगे और उन पर बादल साया किये होंगे। (फतहुलबारी 11/394)

बाब 26: कयामत में किसास (बदला) लिये जाने का बयान।

٢٦ - باب: الْقِصَاصُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

2125: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन सब से पहले लोगों में खून का फैसला किया जायेगा।

٢١٢٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَوَّلُ مَا يُقْضَى بَيْنَ النَّاسِ فِي ٱلدِّمَاءِ). [رواه البخاري: ٦٥٣٣]

फायदेः एक रिवायत में है कि सबसे पहले नमाज का हिसाब होगा। इन दोनों हदीसों में टकराव नहीं, बल्कि मतलब यह है कि हकूकुल्लाह में सबसे पहले नमाज के बारे में पूछ होगी और हकूकुल इबाद में खून नाहक का फैसला किया जायेगा। (फतहुलबारी 11/396)

बाब 27: जन्नत और जहन्नम के हालात का बयान।

٢٧ - باب: صِفَةُ الجَنَّةِ وَالنَّارِ

2126: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब अहले जन्नत, जन्नत में और अहले जहन्नम जहन्नम में पहुंच जायेंगे तो मौत को जन्नत और दोजख के बीच लाकर जिब्ह कर दिया जायेगा। फिर एक पुकारने वाला मुनादी करेगा, ऐ अहले जन्नत! तुम को मौत नहीं है और ऐ अहले

٢١٢٦ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا صَارَ أَهْلُ الجَنَّةِ إِلَى الجَنَّةِ، وَأَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ، جِيءَ بِالمَوْتِ حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ، ثُمَّ يُذْبَحُ، ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ لاَ مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ لاَ مَوْتَ، فَيَزْدَادُ أَهْلُ الجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ، وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حُزْنِهِمْ). [رواه البخاري: ٦٥٤٨]

जहन्नम! तुम को भी मौत नहीं है। चूनांचे यह ऐलान सुनने के बाद अहले जन्नत को खुशी पर खुशी होगी और अहले जहन्नम के मुसीबत और परेशानी में और ज्यादा इजाफा होगा।

फायदे: कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि मौत को काले और सफेद रंग के मेण्डे की शक्ल में लाकर जिब्ह कर दिया जाये और मुनादी दो दफा आवाज देगा, पहली आवाज खबरदार करने के लिए ताकि लोग मुतव्वजह हो जायें। दूसरी आवाज आगाह करने के लिए कि अब मौत नहीं आयेगी। (फतहुलबारी 11/420)

٢١٢٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَقُولُ لِأَهْلِ الْجَنَّةِ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ فَيَقُولُونَ: لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ، فَيَقُولُ: هَلْ رَضِيتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: وَما لَنَا لاَ نَرْضَى وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا ما لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، فَيَقُولُ: أَنَا أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذٰلِكَ، قالُوا: يَا رَبِّ، وَأَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذٰلِكَ؟ فَيَقُولُ: أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي، فَلاَ أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا). [رواه البخاري: ٦٥٤٩]

2127: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला अहले जन्नत से फरमायेगा, ऐ अहले जन्नत! वो कहेंगे, हाजिर जो इरशाद हो। अल्लाह तआला फरमायेगा, अब तुम राजी हो? वो कहेंगे, अब भी खुश न होंगे, जबकि तूने हमें ऐसी ऐसी नैमतें अता फरमाई हैं जो अपनी सारी मख्लूक में से किसी और को नहीं दीं। फिर अल्लाह तआला इरशाद फरमायेंगे, मैं इससे भी बढ़कर तुम्हें एक चीज इनायत करता हूँ। वो कहेंगे, ऐ अल्लाह! वो क्या चीज है जो इससे बेहतर है? तब अल्लाह तआला फरमायेगा, मैंने अपनी रजा तुम्हें अता कर दी, अब कभी तुम से नाराज नहीं होऊंगा।

फायदे: अल्लाह तआला अहले जन्नत से एक और अन्दाज से भी हमकलाम होंगे और उन्हें अपनी जियारत से इज्जत बख्शेंगे। अल्लाह तआला का दीदार एक ऐसी नैमत होगी कि इससे बढ़कर अहले जन्नत को और कोई नैमत महबूब न होगी। (फतहुलबारी 11/422)

2128: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन काफिर के दोनों शानों के बीच फासला तेज रफ्तार सवार की तीन दिन की दूरी के बराबर होगा।

٢١٢٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا بَيْنَ مَنْكِبَيِ الْكَافِرِ مَسِيرَةُ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ لِلرَّاكِبِ الْمُسْرِعِ). [رواه البخاري: ٦٥٥١]

फायदे: मैदाने महशर में फख्र व गरूर में मुब्तला काफिर को जलील व ख्वार करने के लिए चींटियों की शक्ल में लाया जायेगा। फिर जहन्नम में उनके जिस्म को बढ़ा दिया जायेगा, ताकि अजाब और उसकी शिद्दत में इजाफा हो। (फतहुलबारी 11/224)

2129: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कुछ लोग जहन्नम में जल कर काले पीले होने के बाद वहां से निकलेंगे, जब जन्नत में दाखिल होंगे तो अहले जन्नत उन लोगों का नाम जहन्नमी रखेंगे।

٢١٢٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنَ النَّارِ بَعْدَ مَا مَسَّهُمْ مِنْهَا سَفْعٌ، فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ، فَيُسَمِّيهِمْ أَهْلُ الْجَنَّةِ: الجَهَنَّمِيِّينَ). [رواه البخاري: ٦٥٥٩]

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि उनकी गर्दनों पर "अल्लाह की तरफ से आजाद कर्दा" के अल्फाज लिखे होंगे। और अहले जन्नत

उन्हें जहन्नमी के नाम से पुकारेंगे। फिर वो अल्लाह से दुआ करेंगे तो यह नाम भी खत्म कर दिया जायेगा। (फतहुलबारी 11/430)

2130: नौमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे, कयामत के दिन सबसे हल्के अजाब वाला वो आदमी होगा जिसके दोनों पांव के नीचे दो अंगारे रखे जायेंगे। जिनकी वजह से उसका दिमाग इस तरह उबलेगा, जिस तरह हण्डिया जोश खाती है।

٢١٣٠ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ يُوضَعُ عَلَى أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَتَانِ، يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ كما يَغْلِي الْمِرْجَلُ والْقُمْقُمُ).

[رواه البخاري: ٦٥٦٢]

फायदे: एक रिवायत में है कि देखने वाला उस अजाब को बहुत संगीन ख्याल करेगा। हालांकि उसे इन्तेहाई हल्का अजाब दिया जा रहा होगा। (फतहुलबारी 11/430)

2131: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कोई आदमी जन्नत में दाखिल नहीं होगा, जब तक कि उसे जहन्नम में उसका ठिकाना नहीं दिखाया जायेगा। अगर वो बुरे काम करता ताकि वो ज्यादा शुक्र करे। इस तरह कोई आदमी जहन्नम में दाखिल नहीं होगा, जब तक कि उसे जन्नत में उसका घर नहीं दिखाया जायेगा। अगर वो नेक काम करता ताकि उसके रंज व हसरत में इजाफा हो।

٢١٣١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يَدْخُلُ أَحَدٌ الجَنَّةَ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ لَوْ أَسَاءَ، لِيَزْدَادَ شُكْرًا، وَلاَ يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ لَوْ أَحْسَنَ، لِيَكُونَ عَلَيْهِ حَسْرَةً).

[رواه البخاري: ٦٥٦٩]

फायदे: मुसनद अहमद की एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने हर इन्सान के लिए दो ठिकाने तैयार किये हैं। एक जन्नत में और एक जहन्नुम में। जब कोई मरने के बाद जहन्नुम में पहुंच जाता है तो जन्नत में उसके ठिकाने का वारिस अहले जन्नत को बना दिया जायेगा। (फतहुलबारी 11/442)

बाब 28: हौजे कौसर के बयान में।

٢٨ - باب: في الحَوْضِ

2132: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरा हौज एक माह की मुसाफत रखता है, इसका पानी दूध से ज्यादा सफेद और मुश्क से ज्यादा खुश्बूदार है। इस पर आसमानी सितारों की गिनती के बराबर बर्तन रखे होंगे। जिसने उनमें से एक बार पानी पी लिया तो वो फिर कभी प्यासा नहीं होगा।

٢١٣٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ، مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ المِسْكِ، وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ، مَنْ شَرِبَ مِنْهَا فَلاَ يَظْمَأُ أَبَدًا). [رواه البخاري: ٦٥٧٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि हौजे कौसर का पानी शहद से ज्यादा मीठा, मक्खन से ज्यादा नर्म और बर्फ से ज्यादा ठण्डा होगा। दूसरी रिवायत में है कि जिसने एक बार पिया, उसका चेहरा कभी काला न होगा। (फतहुलबारी 11/472)

2133: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया (कयामत के दिन) तुम्हारे सामने मेरा हौज होगा। वो इतना बड़ा है कि जिस कद्र जरबा से अजरूह के बीच का इलाका है।

٢١٣٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَمَامَكُمْ حَوْضِي كَمَا بَيْنَ جَرْبَاءَ وَأَذْرُحَ) [رواه البخاري: ٦٥٧٧]

फायदे: एक रिवायत में है कि मेरे हौज की लम्बाई और चौड़ाई बराबर, इसकी कुशादगी बयान करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख्तलिफ अन्दाज इख्तियार फरमाये हैं जो मकाम लोग पहचानते थे, इसका जिक्र कर दिया। हकीकी लम्बाई और चौड़ाई तो अल्लाह ही जानता है। (फतहुलबारी 11/471)

٢١٣٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ قَدْرَ حَوْضِي كَمَا بَيْنَ أَيْلَةَ وَصَنْعَاءَ مِنَ الْيَمَنِ، وَإِنَّ فِيهِ مِنَ الأَبَارِيقِ كَعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ).
[رواه البخاري: ٦٥٨٠]

2134: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरा हौज इतना बड़ा है जितना ऐला से सनआ के बीच का इलाका और इस पर आसमान के तारों की गिनती के बराबर बर्तन रखे हुए हैं।

फायदे: एक रिवायत में है कि हौज पर बर्तन सितारों की तरह हैं, यानी चमक व दमक और सफाई व निफास्त में सितारों की तरह होंगे और उन्हें बड़े करीना और सलैफा से वहां सजाया होगा।

٢١٣٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (بَيْنَا أَنَا قَائِمٌ إِذَا زُمْرَةٌ، حَتَّى إِذَا عَرَفْتُهُمْ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَيْنِي وَبَيْنِهِمْ، فَقَالَ: هَلُمَّ، فَقُلْتُ: أَيْنَ؟ قَالَ: إِلَى النَّارِ وَاللهِ، قُلْتُ: وَمَا شَأْنُهُمْ؟ قَالَ: إِنَّهُمْ ارْتَدُّوا بَعْدَكَ عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرَى. ثُمَّ إِذَا زُمْرَةٌ، حَتَّى إِذَا عَرَفْتُهُمْ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَيْنِي وَبَيْنِهِمْ، فَقَالَ: هَلُمَّ، قُلْتُ أَيْنَ؟ قَالَ إِلَى النَّارِ وَاللهِ، قُلْتُ: مَا

2135: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मैं कयामत के रोज हौजे कौसर पर खड़ा होऊंगा तो एक गिरोह मेरे सामने आयेगा। मैं उनको पहचान लूंगा। इतने में मेरे और उनके बीच से एक आदमी निकल कर कहेगा, इधर आओ। मैं कहूँगा, किधर? वो कहेगा दोजख की तरफ। अल्लाह की कसम! मैं कहूँगा, इसकी

شَأْنُهُمْ؟ قَالَ: إِنَّهُمْ ارْتَدُّوا بَعْدَكَ عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرَى، فَلاَ أُرَاهُ يَخْلُصُ مِنْهُمْ إِلَّا مِثْلُ هَمَلِ النَّعَمِ). [رواه البخاري: ٦٥٨٧]

क्या वजह है? वो कहेगा, यह लोग आपकी वफात के बाद दीन से उल्टे पांव बरगुजिश्ता हो गये थे। फिर उनके बाद एक और गिरोह आयेगा, मैं उनको भी पहचान लूंगा। तो मेरे और उनके बीच से एक आदमी निकलेगा वो उनसे कहेगा, इधर आओ। मैं पूछूंगा, किधर? वो कहेगा आग की तरफ। अल्लाह की कसम! मैं कहूँगा किस लिए? वो कहेगा, यह लोग आपकी वफात के बाद उल्टे पांव फिर गये थे। मैं समझता हूँ, उनमें से एक आदमी भी नहीं बचेगा। हां, जंगल में आजाद चरने वाले ऊंटों की तरह कुछ लोग रिहाई पायेंगे।

फायदे: हजरत असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से मरवी इस तरह की एक रिवायत में इब्ने अबी मुलैका का कौल इन अल्फाज में है: " ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते हैं कि ऐड़ियों के बल फिर जायें या दीन के बारे में किसी फितने में मुब्तला हो जायें।" (सही बुखारी, 6003)

٢١٣٦ : عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ الحَوْضَ، فَقَالَ: (كَمَا بَيْنَ المَدِينَةِ وَصَنْعَاءَ). [رواه البخاري: ٦٥٩١]

2136: हारिसा बिन वहब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आपने हौजे कौसर का जिक्र किया तो फरमाया, उसका इतनी लम्बाई और चौड़ाई है, जितना मदीना से सनआ तक का फासला है।

फायदे: सनआ नामी शहर दो मुल्कों में हैं। एक शाम और दूसरा यमन में। हदीस में सनआ से मुराद सनाअ यमन है, जैसा कि एक हदीस में इसकी सराहत मौजूद है। (सही बुखारी 658)



किताबुल कद्र

तकदीर के बयान में

बाब 1. कलम अल्लाह के इल्म पर सूख गया है।

١ - باب: جَفَّ القلمُ على عِلم الله

2137: इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या जन्नत वाले अहले जहन्नम से पहचाने जा चुके हैं? आपने फरमाया, बेशक, उसने कहा, तो फिर अमल करने वाले क्यों अमल करते हैं? आपने फरमाया कि आदमी उसी के लिए अमल करता है, जिसके लिए वो पैदा किया गया है। या उसी के मुवाफिक उसको अमल करने की तौफिक दी जाती है।

٢١٣٧ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُعْرَفُ أَهْلُ الجَنَّةِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ؟ قَالَ: (نَعَمْ). قَالَ: فَلِمَ يَعْمَلُ الْعَامِلُونَ؟ قَالَ: (كُلٌّ يَعْمَلُ لِمَا خُلِقَ لَهُ، أَوْ: لِمَا يُسِّرَ لَهُ).

[رواه البخاري: ٦٥٩٦]

फायदे: चूंकि अपने अंजाम से कोई बन्दा व बशर बाखबर नहीं है। इसलिए उसकी जिम्मेदारी है कि उन कामों को बजा लाने की कोशिश करे, जिनका उसे हुक्म दिया गया है। क्योंकि उसके आमाल उसके अंजाम की निशानी है। लिहाजा भलाई के काम करने में कोताही न करें। अगरचे खात्मा के बारे में यकीनी इल्म अल्लाह के पास है।

(फतहुलबारी 11/493)

बाब 2: अल्लाह का फैसला : पेश आने वाली चीज पेश आकर रहती है।

٢ - باب: وكان أمرُ الله قدرًا مقدورًا

2139: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खुत्बा इरशाद फरमाया और कयामत तक जितनी बाते होनी थी, वो सब बयान फरमाई। अब जिसने इन्हें याद रखना था, उन्हें याद रखा और जिसको भूलना था, वो भूल गया। और मैं जिस बात को भूल गया हूँ, अब उसे जाहिर होता हुआ देखकर इस तरह पहचान लेता हूँ, जिस तरह किसी का साथी गायब होकर जहन से उतर जाये तो फिर जब वो उसको देखे तो पहचान लेता है।

٢١٣٨ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: لَقَدْ خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ خُطْبَةً، مَا تَرَكَ فِيهَا شَيْئًا إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلَّا ذَكَرَهُ، عَلِمَهُ مَنْ عَلِمَهُ وَجَهِلَهُ مَنْ جَهِلَهُ، إِنْ كُنْتُ لأَرَى الشَّيْءَ قَدْ نَسِيتُ، فَأَعْرِفُ مَا يَعْرِفُ الرَّجُلُ إِذَا غَابَ عَنْهُ فَرَآهُ فَعَرَفَهُ. [رواه البخاري: ٦٦٠٤]

फायदे: हजरत हुजैफा रजि. फरमाया करते थे कि मुझे कयामत तक होने वाले फितनों से आगाही है, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन सौ की तादाद में फितने के सरगनों के नाम बनाम निशानदेही फरमाई थी। (फतहुलबारी 11/496)

बाब 3: बन्दे के नजर का तकदीर की तरफ डालना।

٣ - باب: إِلْقَاءُ الْعَبْدِ النَّذْرَ إِلَى الْقَدَرِ

2139: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह का इरशाद गरामी है कि नजर इब्ने आदम के पास वो चीज नहीं लाती जो मैंने उसकी तकदीर में न रखी हो,

٢١٣٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَا يَأْتِي ٱبْنَ آدَمَ النَّذْرُ بِشَيْءٍ لَمْ يَكُنْ قَدْ قَدَّرْتُهُ، وَلٰكِنْ يُلْقِيهِ الْقَدَرُ وَقَدْ قَدَّرْتُهُ لَهُ، أَسْتَخْرِجُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ). [رواه البخاري: ٦٦٠٩]

बल्कि उसको तकदीर, उस नजर की तरफ डाल देती है और मैंने भी उस चीज को उसके मुकद्दर में किया होता है। ताकि मैं इस सबब से कंजूस का माल खर्च कराऊं।

फायदे: कंजूस पर जब कोई मुसीबत आती है तो नजर मांगता है। इत्तेफाक से वो काम हो जाता है तो अब उसे खर्च करना पड़ता है। चूनांचे एक रिवायत में है कि कंजूस जो खर्च नहीं करना चाहता, नजर के जरीये उससे माल निकाला जाता है। (11/580)

---

٤ - باب: المَعْصُومُ مَنْ عَصَمَ اللهُ

बाब 4: मासूम वही है, जिसे अल्लाह बचाये रखे।

٢١٤٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا ٱسْتُخْلِفَ خَلِيفَةٌ إِلَّا لَهُ بِطَانَتَانِ: بِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالْخَيْرِ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ، وَبِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالشَّرِّ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ وَالْمَعْصُومُ مَنْ عَصَمَ ٱللهُ). [رواه البخاري: ٦٦١١]

2140: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो खलीफा होता है, उसके दो अन्दरूनी मशवरे देने वाले होते हैं, जिनमें से एक तो उसे अच्छी बातें कहने और ऐसी ही बातों की तरगीब देने पर मामूर होता है और दूसरा बुरी बातें कहने और उन पर उभारने के लिए होता है। मासूम तो वही है जिसको अल्लाह महफूज रखे।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि हर नबी और खलीफा के दो पौशिदे मश्वरे देने वाले होते हैं। (सही बुखारी 7198) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादगरामी है कि मैं अपने बुरे मुशीर के मश्वरे से महफूज रहता हूँ। (फतहुलबारी 13/190)

٥ - باب: يَحُولُ بَيْنَ المَرْءِ وَقَلْبِهِ

बाब 5: फरमाने इलाही: अल्लाह बन्दे और उसके दिल के बीच पर्दा हो जाता है।

٢١٤١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَثِيرًا مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَحْلِفُ: (لَا وَمُقَلِّبِ القُلُوبِ). [رواه البخاري: ٦٦١٧]

2141: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अकसर यह कसम उठाया करते थे, "नहीं दिलों को फैरने वाले की कसम।"

फायदे: दिलों को फैरने से मुराद उसमें पैदा होने वाली ख्वाहिशात को फैरना है। इससे यह भी मालूम हुआ कि दिल के आमाल का खालिक भी अल्लाह तआला है। (फतहुलबारी 11/527)



किताबुल ऐमाने वलनुजूरे

कसम और नजर के बयान में

बाब 1: कसम और नजर का बयान।

١ - باب: كتاب الايمان والنذور

2142: अब्दुर्रहमान बिन समुरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे इरशाद फरमाया, ऐ अब्दुर्रहमान बिन समुरा रजि.! तुम सरदारी और अमीरी के तलबगार न बनना क्योंकि अगर दरख्वास्त पर तुझे सरदारी मिलेगी, फिर तू उसी को सौंप दिया जायेगा और अगर वो तुझे बगैर मांगे दी गई तो इस पर तेरी मदद की जायेगी और अगर तू किसी बात पर कसम उठाये, फिर उसके खिलाफ करना तुझे अच्छा मालूम हो तो कसम का कफ्फारा दे कर वो काम कर जो बेहतर है।

٢١٤٢ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: (يَا عَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ سَمُرَةَ، لاَ تَسْأَلِ الإِمارَةَ، فَإِنَّكَ إِنْ أُوتِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا، وَإِنْ أُوتِيتَهَا مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ، فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، فَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ وَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ). [رواه البخاري: ٦٦٢٢]

फायदे: अगर कोई इन्सान मांगकर ओहदा (पद) लेता है तो अल्लाह की तौफिक और उसकी रहमत से महरूम रहता है। अगर बगैर मांगे पद दिया जाये तो अल्लाह की तरफ से एक फरिश्ता तैनात कर दिया जाता है, जो उसे सही और दुरूस्त रहने की तलकीन करता रहता है।

(सही बुखारी 13/124)

٢١٤٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). وَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَٱللهِ، لأَنْ يَلِجَّ أَحَدُكُمْ بِيَمِينِهِ فِي أَهْلِهِ آثَمُ لَهُ عِنْدَ ٱللهِ مِنْ أَنْ يُعْطِيَ كَفَّارَتَهُ الَّتِي ٱفْتَرَضَ ٱللهُ عَلَيْهِ). [رواه البخاري: ٦٦٢٥]

2143: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि हम दुनिया में तो पहली उम्मतों के बाद आये हैं, लेकिन कयामत के दिन सबके आगे होंगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया, अगर तुममें से कोई अपने घर वालों के बारे में अपनी कसम पर अड़ा हुआ हो तो यह अल्लाह के नजदीक उसका मुकर्रर किया हुआ कफ्फारा अदा करने से ज्यादा गुनाह है।

फायदे: मतलब यह है कि अगर कोई आदमी गुस्से में अगर ऐसी कसम उठा ले कि उस पर कायम रहने से घर वालों या अहले वफा को नुकसान पहुंचता हो तो ऐसी कसम का तोड़ना बेहतर है और कसम तोड़ने की माफी कफ्फारा से हो सकती है। (फतहुलबारी 11/519)

٢ - باب: كَيْفَ كَانَتْ يَمِينُ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 2: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कसम किस तरह की थी?

٢١٤٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ هِشَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ ابْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا مِنْ نَفْسِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَا، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ). فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: فَإِنَّهُ الآنَ، وَٱللهِ، لأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الآنَ يَا عُمَرُ). [رواه البخاري: ٦٦٣٢]

2144: अब्दुल्लाह बिन हिशाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ही थे, जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमर रजि. का हाथ थामा हुआ था। उमर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मुझे मेरी जान के अलावा हर चीज से ज्यादा प्यारे हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फरमाया, नहीं ऐ उमर रजि.! कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम्हारा ईमान उस वक्त तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक तुम अपने नफ्स से भी ज्यादा मुझ से मुहब्बत न करो। यह सुनकर उमर रजि. ने कहा, अगर यही बात है तो आप मेरी नफ्स से भी ज्यादा मुझे महबूब हैं। आपने फरमाया, हां! उमर रजि.! अब तुम्हारा ईमान पूरा हुआ।

फायदे: इन्सान का अपनी जान से मुहब्बत करना तबई और फितरती काम है। हजरत उमर रजि. ने ऐसी बात के पेशे नजर पहली बात कही। लेकिन जब यह बात जाहिर हो गई कि दुनियावी और आखिरत की हलाकतों से हिफाजत का सबब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जात गरामी और आपकी इत्तबाअ है तो फौरन पहले मौकूफ से रुजूअ करके ऐलाने हक कर दिया। (फतहुलबारी 11/528)

2145: अबू जर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ तो आप काबा के साये में बैठे फरमा रहे थे, रब काबा की कसम! वो लोग बहुत ही नुकसान में हैं, रब काबा की कसम! वो लोग बहुत ही नुकसान में हैं। मैंने सोचा मुझे क्या हुआ, क्या आपको मुझ में कोई ऐब नजर आता है? मैंने क्या किया? आखिरकार मैं आपके पास बैठ गया। आप यही फरमाते रहे तो मैं खामोश न रह सकता। वो रंज व अलम जो अल्लाह को मंजूर था, वो मुझ पर तारी हो गया। फिर मैंने कहा,

٢١٤٥ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱنْتَهَيْتُ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ يَقُولُ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ: (هُمُ الأَخْسَرُونَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ، هُمُ الأَخْسَرُونَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ). قُلْتُ: مَا شَأْنِي أَيُرَى فِيَّ شَيْئًا، مَا شَأْنِي؟ فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ، فَمَا ٱسْتَطَعْتُ أَنْ أَسْكُتَ، وَتَغَشَّانِي مَا شَاءَ ٱللهُ، فَقُلْتُ: مَنْ هُمْ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (الأَكْثَرُونَ أَمْوَالًا، إِلَّا مَنْ قَالَ: هٰكَذَا، وَهٰكَذَا، وَهٰكَذَا). [رواه البخاري: ٦٦٣٨]

ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, वो कौन लोग हैं? आपने फरमाया, वही लोग जिनके पास मालो दौलत की फरावानी है। अलबत्ता उनसे वो अलग हैं जो अपने माल को इधर उधर (सामने, दायें और बायें) खर्च करते रहें यानी अल्लाह की राह में देते रहें।

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अबू जर रजि. से फरमाया कि माल दौलत की कसरत रखने वाले कयामत के दिन कमी का शिकार होंगे। यानी सवाब हासिल करने में पीछे होंगे। हां, अल्लाह की राह में खर्च करने से कमी पूरी हो सकती है। (सही बुखारी 6443)

---

٣ - باب: قوله تعالى: ﴿وَأَقْسَمُوا بِٱللَّهِ جَهْدَ أَيْمَـٰنِهِمْ﴾

बाब 3: फरमाने इलाही: यह मुनाफिक अल्लाह के नाम की बड़ी मजबूत कसमें उठाते हैं।''

٢١٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَا يَمُوتُ لِأَحَدٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَنْ تَمَسَّهُ النَّارُ إِلَّا تَحِلَّةَ الْقَسَمِ). [رواه البخاري: ٦٦٥٦]

2146: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुसलमानों में जिसके तीन बच्चे फौत हो गये, उसको आग न छूयेगी, मगर सिर्फ कसम को पूरा करने के लिए ऐसा होगा।

फायदे: कसम को पूरा करने से उस आयते करीमा की तरफ इशारा है कि तुममें से हर एक को दोजख के ऊपर गुजारा जायेगा। (मरीयम) इसकी तफसीर यूं बयान की गई है कि पुल सिरात को जहन्नम के ऊपर नस्ब किया जायेगा और हर एक इन्सान उसके ऊपर से गुजरेगा।

(फतहुलबारी 11/543)

बाब 4: अगर कसम उठाने के बाद उसे भूल कर तोड़ दे तो क्या है?

٤ - باب: إذا حنث ناسيا في الأيمان

2147: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के वसवसे या दिल के ख्यालात को माफ कर दिया है। जब तक इन्सान उस पर अमल न करे या जुबान से न निकाले।

٢١٤٧ : وعنه رضي الله عنه: أن النبي ﷺ قال: (إن الله تجاوز لأمتي عما وسوست، أو حدثت به أنفسها، ما لم تعمل به أو تكلم). [رواه البخاري: ٦٦٦٤]

फायदे: इमाम बुखारी का यह रूझान मालूम होता है कि भूलकर कसम तोड़ देने में कफ्फारा नहीं है। बल्कि एक रिवायत में सराहत है कि अल्लाह तआला ने भूल-चूक को माफ कर दिया है।

(फतहुलबारी 11/552)

बाब 5: अल्लाह की इताअत के नजर मानने का बयान।

٥ - باب: النذر في الطاعة

2148: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिसने यह कसम उठाई कि मैं अल्लाह की इताअत करूंगा तो उसे पूरा करना चाहिए और जिसने यह कसम उठाई कि मैं अल्लाह की नाफरमानी करूंगा तो उसे नाफरमानी नहीं करनी चाहिए।

٢١٤٨ : عن عائشة رضي الله عنها، أن النبي ﷺ قال: (من نذر أن يطيع الله فليطعه، ومن نذر أن يعصيه فلا يعصه). [رواه البخاري: ٦٦٩٦]

फायदे: नमाज, रोजा, हज या सदका व खैरात करने की नजर माने तो उसका पूरा करना जरूरी है। अगर गुनाह का काम करने की नजर

माने कि फलां कब्र पर चिराग रोशन करूं या उसका तवाफ करूंगा तो उसे हरगिज पूरा न करे।

---

٦ - باب: مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ نَذْرٌ

बाब 6: अगर कोई इस हालत में मरा कि उसके जिम्मे नजर का पूरा करना था।

٢١٤٩ : عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ ٱسْتَفْتَى النَّبِيَّ ﷺ فِي نَذْرٍ كَانَ عَلَى أُمِّهِ، فَتُوُفِّيَتْ قَبْلَ أَنْ تَقْضِيَهُ، فَأَفْتَاهُ أَنْ يَقْضِيَهُ عَنْهَا [رواه البخاري: ٦٦٩٨]

2149: साद बिन उबादा रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह मसला पूछा कि उनकी वाल्दा के जिम्मे एक नजर थी, वो उसे पूरा करने से पहले मौत का शिकार हो गई। आपने फरमाया, तुम उसकी तरफ से उस नजर को पूरा करो।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि मय्यत के जिम्मे हकूके वाजिबा की अदायगी जरूरी है। उसके वारिस उसे अदा करेंगे। वैसे नमाज, रोजा की अदायगी वारिसों के जिम्मे नहीं। अगर किसी ने नमाज या रोजा की नजर मानी हो तो उसे जरूर अदा करना चाहिए।

 (फतहुलबारी 11/584)

---

٧ - باب: النَّذْرُ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ وَفِي مَعْصِيَةٍ

बाब 7: गैर ममलूका (जो उसके कब्जे में नहीं है) या गुनाह की नजर मानना।

٢١٥٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ، إِذَا هُوَ بِرَجُلٍ قَائِمٍ، فَسَأَلَ عَنْهُ فَقَالُوا: أَبُو إِسْرَائِيلَ، نَذَرَ أَنْ يَقُومَ

2150: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा इरशाद फरमा रहे थे। इतने में एक आदमी को देखा

وَلاَ يَقْعُدَ، وَلاَ يَسْتَظِلَّ، وَلاَ يَتَكَلَّمَ، وَيَصُومَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مُرْهُ فَلْيَتَكَلَّمْ وَلْيَسْتَظِلَّ وَلْيَقْعُدْ، وَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ). [رواه البخاري: ٦٧٠٤]

जो (धूप में) खड़ा है। आपने उसके बारे में पूछा तो सहाबा किराम रजि. ने कहा, यह आदमी अबू इस्राईल है। इसने नजर मानी है कि वो दिन भर (धूप में) खड़ा रहेगा बैठेगा नहीं, न साये में आयेगा और न ही किसी से बातचीत करेगा। इसी हालत में अपना रोजा पूरा करेगा। आपने फरमाया, उससे कह दो कि बैठ जाये और साये में आ जाये, बातचीत करे और अपना रोजा पूरा करे।

फायदे: हदीस में नाफरमानी की नजर का जिक्र है। गैर ममलूका चीज की नजर को उस पर कयास किया, क्योंकि किसी की ममलूका चीज पर तसर्रुफ भी गुनाह शुमार होता है। बल्कि एक हदीस में इसकी सिराहत भी है। (फतहुलबारी 11/587)



किताबु कफ्फारातीलऐमान

कफ्फार-ए-कसम के बयान में

١ - باب: صَاعُ المَدِينَةِ وَمُدُّ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 1: मदीना वालों का साअ और मुद्दे नबवी का बयान।

٢١٥١ : عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ الصَّاعُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مُدًّا وَثُلُثًا بِمُدِّكُمُ الْيَوْمَ [رواه البخاري: ٦٧١٢]

2151: साइब बिन यजीद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने का साअ मौजूदा एक मुद्द और उसके तिहाई के बराबर होता था।

फायदेः निज कुरआन के मुताबिक कफ्फार-ए-कसम में दस गरीबों को खाना खिलाना होता है। जो फी मिसकिन एक मुद्द के हिसाब से हो। और उस मुद्द का ऐतबार किया जायेगा, जो अहले मदीना के यहां रायज है। इसकी मिकदार 1/1/3 रतल है। जो राइजुल वक्त नौ छटांक के बराबर है। हजरत सायब बिन यजीद रजि. ने यह हदीस बयान की थी तो उस वक्त मुद्द में बहुत इजाफा कर दिया गया था। यानी एक मुद्द चार रतल के बराबर था। जिसका मतलब यह है कि उसमें अगर 1/3 मुद्द का इजाफा कर दिया जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में रायज एक साअ के बराबर हो जाता जिसकी उस वक्त मिकदार 5/1/3 रतल थी। पुराने वजन के ऐतबार से दो सैर चार छटांक और जदीद आशारी निजाम के मुताबिक

दो किलो सौ ग्राम है। बुखारी की एक हदीस में है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने सदका फितर और कफ्फार-ए-कसम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहद मुबारक राइज मुद्द से देते थे। (सही बुखरीर 6713)

٢١٥٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مِكْيَالِهِمْ، وَصَاعِهِمْ، وَمُدِّهِمْ) [رواه البخاري: ٦٧١٤]

2152: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं दुआ फरमाई: ''या अल्लाह! मदीना वालों के नाप, साअ और मुद्द में बरकत अता फरमा।''

फायदे: यह दुआ उस मुद्द और साअ के लिए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहद मुबारक राइज था। चूनांचे इसमें इस तौर पर बरकत अता फरमाई कि अकसर फुकहा ने मुख्तलिफ कफ्फारों में इसी मुद्द का ऐतबार किया है। (फतहुलबारी 11/599)



किताबुल फराइज

मसाईले विरासत के बयान में

बाब 1: वाल्देन के तरीके से औलाद की विरासत का बयान।

١ - باب: مِيراثُ الْوَلَدِ مِنْ أَبِيهِ وَأُمِّهِ

2153: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मुकर्रर हिस्से वालों को उनका हिस्सा दे दो और जो बाकी बचे वो करीब के रिश्तेदार जो मर्द हो, उसे दे दिया जाये।

٢١٥٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا، فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ). [رواه البخاري: ٦٧٣٢]

फायदे: कुरआन करीम में वारिसों के लिए मुकर्रर हिस्से छः हैं: 1/2, 1/4, 1/8, और 2/3, 1/3, 1/6 यह हिस्से लेने वाले भी मुख्तलिफ शर्तो के साथ तयशुदा हदीस में बयान शुदा मसले की सूरत यूं है कि किसी मरने वाली औरत का खाविन्द, बेटा और चचा जिन्दा हैं तो खाविन्द को 1/4 और बाकी 3/4 करीबी रिश्तेदार बेटों को मिलेगा और चचा चूंकि बेटे के लिहाज से दूर का रिश्तेदार है इसलिए वो महरूम रहेगा।

बाब 2: बेटी की मौजूदगी में पोती की विरासत का बयान।

٢ - باب: مِيرَاثُ ابْنَةِ ابْنٍ مَعَ ابْنَةٍ

٢١٥٤ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ ٱبْنَةٍ وَٱبْنَةِ ٱبْنٍ وَأُخْتٍ، فَقَالَ: لِلابْنَةِ ٱلنِّصْفُ، وَلِلأُخْتِ ٱلنِّصْفُ، وَأْتِ ٱبْنَ مَسْعُودٍ فَسَيُتَابِعُنِي، فَسُئِلَ ٱبْنُ مَسْعُودٍ، وَأُخْبِرَ بِقَوْلِ أَبِي مُوسَى فَقَالَ: لَقَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ ٱلْمُهْتَدِينَ، أَقْضِي فِيهَا بِمَا قَضَى ٱلنَّبِيُّ ﷺ: لِلابْنَةِ ٱلنِّصْفُ، وَلابْنَةِ ٱلابْنِ ٱلسُّدُسُ تَكْمِلَةَ ٱلثُّلُثَيْنِ، وَمَا بَقِيَ فَلِلأُخْتِ. فَأُخْبِرَ أَبُو مُوسَى بِقَوْلِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ، فَقَالَ: لاَ تَسْأَلُونِي مَا دَامَ هٰذَا ٱلْحَبْرُ فِيكُمْ. [رواه البخاري: ٦٧٣٦]

2154: अबू मूसा रजि. से रिवायत है कि उनसे बेटी, पोती और बहन के हिस्से के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, आधा बेटी के लिए और आधा बहन के लिए है। लेकिन तुम इब्ने मसऊद रजि. के पास जाओ और उनसे भी पूछो, उम्मीद है कि वो भी मेरी तरह जवाब देंगे। चूनांचे इब्ने मसऊद रजि. से पूछा गया और अबू मूसा रजि. के जवाब का हवाला भी दिया गया तो उन्होंने फरमाया कि मैं अगर यह फतवा दूं तो गुमराह हुआ और रास्ते से भटक गया तो इस मसले में वही हुक्म दूंगा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया था। यानी बेटी के लिए निस्फ और पोती के लिए छटा हिस्सा (यह दो तिहाई हो गया) बाकी एक तिहाई बहन के लिए है। फिर अबू मूसा रजि. से अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. का यह फतवा बयान किया गया तो उन्होंने फरमाया कि जब तक तुममें यह बड़े आलिम मौजूद हैं, मुझ से कोई मसला न पूछना।

फायदे: मय्यत की कुल जायदाद को छः हिस्सों में तकसीम कर दिया जाये। निस्फ यानी 3 हिस्से बेटी के लिए, छटा यानी एक हिस्सा पोती के लिए। यह दोनों मिलकर 2/3 हो जाते हैं। इसे तकमिला सुलोसेन कहा जाता है। बाकी 1/3 यानी दो हिस्से बहन के लिए होंगे क्योंकि वो बेटी के साथ मिलकर असबा माल गैर बन जाती है। क्योंकि कायदा है कि बेटियों के साथ बहनों को असबा बनाया जाये।

बाब 3: किसी कौम का आजाद किया हुआ गुलाम और उनका भांजा भी उन्हीं में से है।

٣ - باب: مَوْلَى القَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَابْنُ الأُخْتِ مِنْهُمْ

2155: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी कौम का गुलाम जो आजाद किया गया हो, वो उसी कौम में शुमार होगा।

٢١٥٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَوْلَى القَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ). [رواه البخاري: ٦٧٦١]

फायदे: मतलब यह है कि जिस किस्म का अच्छा सलूक और अहसान किसी कौम के साथ होगा, उनका आजाद किया हुआ गुलाम भी उस मुरवत व शफकत का सजावार होगा। विरासत वगैरह में वो हिस्सेदार नहीं होगा। (फतहुलबारी 21/49)

2156: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी कौम का भांजा भी उसी कौम में दाखिल होगा।

٢١٥٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱبْنُ أُخْتِ القَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ). [رواه البخاري: ٦٧٦٢]

फायदे: जाहिलियत के जमाने में लोग अपने नवासों और भांजों से अच्छा सलूक नहीं करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बद सलूक पर जरबे कारी लगाई और उनके साथ उलफत व मुहब्बत करने की तलकीन फरमाई। (फतहुलबारी 12/49)

बाब 4: जो आदमी अपने हकीकी बाप के अलावा किसी दूसरे की तरफ अपनी निसबत करे।

٤ - باب: مَنِ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ

2157: साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे जो आदमी अपने हकीकी बाप के अलावा किसी और को अपना बाप बनाये और वो जानता भी है कि वो उसका बाप नहीं तो उस पर जन्नत हराम है। फिर जब यह हदीस अबू बकरा रजि. से बयान की गई तो उन्होंने फरमाया, हां, मेरे कानों ने भी यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है और मेरे दिल ने उसे याद रखा है।

٢١٥٧ : عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنِ ٱدَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ، وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ غَيْرُ أَبِيهِ، فَالجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ). فَذُكِرَ ذٰلِكَ لأَبِي بَكْرَةَ فَقَالَ: وَأَنَا سَمِعَتْهُ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٦٧٦٦، ٦٧٦٧]

फायदे: हजरत साद रजि. से बयान करने वाले हजरत अबू उस्मान नहदी ने यह हदीस उस वक्त बयान की जब जियाद ने अपनी निस्बत हजरत अबू सुफियान रजि. की तरफ की। हजरत अबू बकर रजि. चूंकि जियाद के मादरी भाई थे, इसलिए उनसे भी इस हदीस का तजकिरा किया गया। (फतहुलबारी 12/54)

2158: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि अपने बाप दादा से इनकार न करो, क्योंकि जो आदमी अपने बाप दादा को छोड़कर दूसरे को बाप बनाये तो उसने यकीनन कुफराने नियामत का ऐरतकाब किया।

٢١٥٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَا تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ أَبِيهِ فَقَدْ كَفَرَ). [رواه البخاري: ٦٧٦٨]

फायदे: जानबूझकर अपने असली बाप को नजरअन्दाज करके किसी और की तरफ खुद को मनसूब करना बहुत बड़ा जुर्म है। जैसा कि कुछ मुगलिया, पठान, सय्यद या शेख कहलाते हैं।



किताबुल हुदूद

हुदूद के बयान में

बाब 1: शराबी को जूतों और छड़ियों से मारना।

١ - باب: الضَّرْبُ بِالجَرِيدِ وَالنِّعَالِ

2159: अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक शराबी को लाया गया तो आपने फरमाया, उसे मारो। अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि आपका इरशाद सुनकर हमने उसको हाथ से मारा। किसी ने जूते से मारा और किसी ने कपड़े से मारा। जब वो पलटा तो किसी ने कहा, अल्लाह तुझे जलील करे। तब आपने फरमाया, ऐसा न कहो, उसके खिलाफ शैतान की मदद न करो।

٢١٥٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ قَدْ شَرِبَ، قَالَ: (ٱضْرِبُوهُ) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَمِنَّا الضَّارِبُ بِيَدِهِ، وَمِنَّا الضَّارِبُ بِنَعْلِهِ، وَمِنَّا الضَّارِبُ بِثَوْبِهِ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ، قَالَ بَعْضُ ٱلْقَوْمِ: أَخْزَاكَ ٱللهُ، قَالَ: (لَا تَقُولُوا هٰكَذَا، لَا تُعِينُوا عَلَيْهِ الشَّيْطَانَ). [رواه البخاري: ٦٧٧٧]

फायदे: शराबी को मारने पीटने के बाद लोगों ने उसे खूब शर्मसार किया। किसी ने कहा, ओ बेशर्म! तुझे शर्म न आई। किसी ने कहा, तुझे अल्लाह का डर न आया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसके लिए बख्शीश और रहमो करम की दुआ करो। (फतहुलबारी 12/67)

٢١٦٠ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كُنْتُ لِأُقِيمَ حَدًّا عَلَى أَحَدٍ فَيَمُوتَ، فَأَجِدَ فِي نَفْسِي، إِلَّا صَاحِبَ الخَمْرِ، فَإِنَّهُ لَوْ مَاتَ لَوَدَيْتُهُ، وَذٰلِكَ أَنَّ رَسُولَ ٱللّٰهِ ﷺ لَمْ يَسُنَّهُ. [رواه البخاري: ٦٧٧٨]

2160: अली बिन अबी तालिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अगर मैं किसी को शरई हद लगाऊं और वो मर जाये तो मुझे कुछ शक न होगा। लेकिन अगर शराबी को हद लगाऊं और वो मर जाये तो उसका हर्जाना दूंगा। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बारे में कोई खास हद मुकर्रर नहीं फरमाई।

फायदे: निसाई की एक रिवायत में वजाहत है, कहा गया कोई हद लगने से मर जाये तो उसका हर्जाना नहीं अलबत्ता शराबी अगर मार पीट से मर जाये तो उसका हर्जाना देना होगा। (फतहुलबारी 12/68)

٢١٦١ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ كَانَ ٱسْمُهُ عَبْدَ ٱللّٰهِ، وَكَانَ يُلَقَّبُ حِمَارًا، وَكَانَ يُضْحِكُ رَسُولَ ٱللّٰهِ ﷺ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ جَلَدَهُ فِي الشَّرَابِ، فَأُتِيَ بِهِ يَوْمًا فَأَمَرَ بِهِ فَجُلِدَ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ القَوْمِ: اللّٰهُمَّ العَنْهُ، مَا أَكْثَرَ مَا يُؤْتَى بِهِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَا تَلْعَنُوهُ، فَوَٱللّٰهِ مَا عَلِمْتُ إِلَّا أَنَّهُ يُحِبُّ ٱللّٰهَ وَرَسُولَهُ). [رواه البخاري: ٦٧٨٠]

2161: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि एक आदमी था, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में लोग अब्दुल्ला अल हिमार कहा करते थे, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हंसाया करता था और आपने उसे शराब पीने पर सजा भी दी थी। एक बार ऐसा हुआ कि लोग उसे गिरफ्तार करके लाये तो उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर कोड़े लगाये गये। कौम में से एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह! उस पर लानत कर, यह कमबख्त कितनी बार शराब पीने में गिरफ्तार हुआ है। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमाया, उस पर लानत न करो, अल्लाह की कसम! मुझे मालूम है कि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करता है।

फायदे: इस हदीस से मुअतजला की तरदीद होती है जो बड़े गुनाह करने वाले को काफिर ख्याल करते हैं। निज यह भी मालूम हुआ कि जिन अहादीस में शराब पीने वाले के ईमान की नफी की गई है, उससे मुराद ईमान कामिल की नफी है। (फतहुलबारी 12/78)

बाब 2: (गैर मुअय्ययन) चोर पर लानत करने का बयान।

٢ - باب: لعن السَّارِق

2162: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, कि आपने फरमाया कि अल्लाह चोर पर लानत करे, कमबख्त अण्डा चुराता है तो उसका हाथ काटा जाता है, रस्सी चुराता है तो उसका हाथ काटा जाता है।

٢١٦٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَعَنَ ٱللهُ السَّارِقَ يَسْرِقُ الْبَيْضَةَ تُقْطَعُ يَدُهُ، وَيَسْرِقُ الْحَبْلَ فَتُقْطَعُ يَدُهُ). [رواه البخاري: ٦٧٨٣]

फायदे: लानत और बद-दुआ के सिलसिले में यूं तो कहा जा सकता है कि उन बूरे औसाफ का हामिल इन्सान काबिले लानत है लेकिन उसकी शख्सीयत का ताईन करके उस पर लानो तान करना जाईज नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से मुमकिन है कि वो जिद में आकर तौबा से महरूम रहे। (फतहुलबारी 12/67)

बाब 3: कितनी मालियत चुराने पर चोर का हाथ काटा जाये।

٣ - باب: قطع اليد وفي كم

2163: आइशा रजि. से रिवायत है, वो

٢١٦٣ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आपने फरमाया, दुनिया की चौथाई या उससे ज्यादा मालियत चुराने पर चोर का हाथ काटा जाये।

عَنْهَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (تُقْطَعُ الْيَدُ فِي رُبُعِ دِينَارٍ فَصَاعِدًا). [رواه البخاري: ٦٧٨٩]

फायदे: जब हाथ मासूम था और किसी ने उस पर ज्यादती करके जाया कर दिया तो हर्जाने के तौर पर सौ ऊंट देने होंगे और उसके बदअक्स जब उस हाथ ने दूसरे की चीज चोरी करके ख्यानत का ऐरतकाब किया तो रूबो दीनार के ऐवज उसे काट दिया जायेगा। यह मासूम और ख्यानत करने वाले हाथ का बाहमी फर्क है। (फतहुलबारी 12/98)

2164: आइशा रजि. से ही रिवायत है, कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक ढ़ाल की कीमत से कम में हाथ नहीं काटा जाता था।

٢١٦٤ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ يَدَ السَّارِقِ لَمْ تُقْطَعْ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا فِي ثَمَنِ مِجَنٍّ، حَجَفَةٍ أَوْ تُرْسٍ. [رواه البخاري: ٦٧٩٢]

फायदे: उस वक्त ढ़ाल की कीमत रूबो दीनार से कम न होती थी, चूनांचे निसाई की रिवायत में है कि हजरत आइशा रजि. से पूछा गया कि ढ़ाल की कीमत कितनी होती थी तो आपने फरमाया कि रूबो दीनार के बराबर। (फतहुलबारी 12/101)

2165: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ढ़ाल की चोरी पर हाथ काटा था, जिसकी कीमत तीन दिरहम थी।

٢١٦٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَطَعَ فِي مِجَنٍّ ثَمَنُهُ ثَلَاثَةُ دَرَاهِمَ. [رواه البخاري: ٦٧٩٦]

फायदे: तीन दिरहम भी रूबो दीनार के बराबर होते है। (फतहुलबारी 12/103) चूनांचे आइशा रजि. ने वजाहत फरमाई कि उस वक्त रूबो दीनार तीन दरहम के बराबर होता था। (फतहुलबारी 12/106)



किताबुल मुहारिबिना मिन अहलिल कुफ्रे वरद्दते

मुसलमानों से लड़ने वाले काफिरों और मुरतदों के बयान में

बाब 1: तनबी और ताजिर की सजा का बयान।

١ - باب: كَمِ التَّعْزِيرُ وَالأَدَبُ

2166: अबू बुरदा अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे कि अल्लाह की हुदूद के अलावा किसी जुर्म में दस कोड़ों से ज्यादा सजा न दी जाये।

٢١٦٦ : عَنْ أَبِي بُرْدَةَ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يُجْلَدُ فَوْقَ عَشْرِ جَلَدَاتٍ إِلَّا فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ ٱللهِ عَزَّ وَجَلَّ). [رواه البخاري: ٦٨٤٨]

फायदे: हद मुकर्रर उस सजा को कहते हैं, जैसे जिना और चोरी वगैरह की सजायें हैं और ताजीर वो सजा जो मुकर्रर न हो। अलबत्ता दस कोड़ों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। जैसे जादू और रमजान में बिना वजह रोजा छोड़ने की सजा। इब्ने माजा की रिवायत में सराहत है कि दस कोड़ों से ज्यादा ताजीद न लगाई जाये। (फतहुलबारी 12/178)

बाब 2: लौण्डी गुलाम पर जिना का इल्जाम लगाना।

٢ - باب: قَذْفُ العَبِيدِ

2167: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने अबू कासिम रजि. से सुना, आप फरमाते थे, अगर किसी ने अपने गुलाम पर या लौण्डी पर इल्जाम

٢١٦٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا القَاسِمِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ قَذَفَ مَمْلُوكَهُ، وَهُوَ بَرِيءٌ مِمَّا قَالَ، جُلِدَ يَوْمَ القِيَامَةِ،

إِلَّا أَنْ يَكُونَ كَمَا قَالَ». [رواه البخاري: ٦٨٥٨]

लगाया, हालांकि वो उससे पाक है तो कयामत के दिन उस आका को दुर्रे लगाये जायेंगे। मगर यह कि उसका हकीकत हाल के मुताबिक हो।

फायदे: अगर गुलाम किसी पर इल्जाम लगाये तो उस पर तोहमद की निस्फ हद जारी की जायेगी। और अगर मालिक अपने गुलाम पर इल्जाम लगाता है तो कयामत के दिन मालिक पर हद जारी की जायेगी। क्योंकि उस वक्त उसकी मल्कीयत खत्म हो चुकी होगी।

(फतहुलबारी 12/185)

❖❖❖



किताबुल दियात

दियतों के बयान में

٢١٦٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَنْ يَزالَ المُؤمِنُ في فُسْحَةٍ مِنْ دِينِهِ، مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرامًا). [رواه البخاري: ٦٨٦٢]

2168: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मौमिन अपने दीन की तरफ से हमेशा कुशादगी ही में रहता है, जब तक वो नाहक खून नहीं करता। यानी नाहक खून करने से तंगी में पड़ जाता है।

फायदे: बुखारी की एक हदीस में है कि नाहक कत्ल के बारे में हजरत इब्ने उमर रजि. का कौल इन अल्फाज में नकल हुआ है कि हलाकत का भंवर जिसमें गिरने के बाद निकलने की उम्मीद नहीं, वो नाहक खून है, जिसे अल्लाह ने हराम किया हो। (सही बुखारी 6863)

٢١٦٩ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْمِقْدَادِ: (إِذَا كانَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ يُخْفِي إِيمَانَهُ مَعَ قَوْمٍ كُفَّارٍ، فَأَظْهَرَ إِيمَانَهُ فَقَتَلْتَهُ؟ فَكَذٰلِكَ كُنْتَ أَنْتَ تُخْفِي إِيمَانَكَ بِمَكَّةَ مِنْ قَبْلُ). [رواه البخاري: ٦٨٦٦]

2169. इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिकदाद रजि. से फरमाया, अगर काफिरों के साथ कोई मौमिन अपना ईमान छुपाये हुए है, फिर उसने ईमान जाहिर किया हो तो तुमने उसे कत्ल कर दिया (यह कैसे सही होगा?) जबकि तुम खुद भी इसी तरह मक्का में अपना ईमान छुपाये रखते थे।

फायदे: इस रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत मिकदाद रजि. से फरमाया, अगर तूने उसे कत्ल कर दिया तो वो ऐसा हो जायेगा, जैसा तू उसके कत्ल करने से पहले था। यानी मजलूम व मासूमुद्दम और तू ऐसा हो जायेगा, जैसा वो इस्लाम लाने से पहले थे। यानी जालिम मुबाहुद्दम। (सही बुखारी 6865)

बाब 1: फरमाने इलाही: और जिसने किसी आदमी को (कत्ल होने से) बचा लिया तो गौया उसने तमाम लोगों को बचा लिया।''

١ - باب: ﴿وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا ٱلنَّاسَ جَمِيعًا﴾

2170: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया, वो हम में से नहीं है।

٢١٧٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا ٱلسِّلاحَ فَلَيْسَ مِنَّا). [رواه البخاري: ٦٨٧٤]

फायदे: इससे मुराद वो आदमी है जो मुसलमानों को डराने के लिए उनके खिलाफ हथियार उठाता है। अगर कोई उनकी हिफाजत के लिए हथियार उठाता है तो अल्लाह के यहां अज्र और सवाब मिलेगा। (फतहुलबारी 12/197)

बाब 2: फरमाने इलाही: ''जान के बदले में जान ली जाये और आंख के बदले में आंख फोड़ी जाये।''

٢ - باب: قَوْلُ ٱللهِ تَعَالَى: ﴿أَنَّ ٱلنَّفْسَ بِٱلنَّفْسِ وَٱلْعَيْنَ بِٱلْعَيْنِ﴾

2171: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

٢١٧١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لا

يَحِلُّ دَمُ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ، يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ، إِلَّا بِإِحْدَى ثَلاَثٍ: النَّفْسُ بِالنَّفْسِ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي، وَالمُفَارِقُ لِدِينِهِ التَّارِكُ لِلْجَمَاعَةِ). [رواه البخاري: ٦٨٧٨]

अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जो मुसलमान इस बात की गवाही देता हो कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं तो तीन सूरतों के बगैर उसका खून करना जाईज नहीं, जान के बदले जान, शादीशुदा जानी और दीने इस्लाम को छोड़ने वाला यानी मुसलमानों की जमात से अलग होने वाला।

फायदे: मुसलमानों की जमात से अलग होने में बगावत करने वाला, रहजन और मुसलमानों से लड़ने वाला, यानी इमाम बरहक की मुस्सलह मुखालफत करने वाला भी शामिल है। कुछ अहले हदीस के नजदीक जानबूझ कर नमाज छोड़ देने का आदी इन्सान भी इस तीसरी किस्म में दाखिल है। (फतहुलबारी 12/204)

---

٣ - باب: مَنْ طلب دَمَ امْرِىءٍ بِغَيْرِ حَقٍّ

बाब 3: किसी का नाहक खून बहाने की फिक्र में लगे रहने का बयान।

٢١٧٢: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللهِ ثَلاَثَةٌ: مُلْحِدٌ فِي الحَرَمِ، وَمُبْتَغٍ فِي الإِسْلاَمِ سُنَّةَ الجَاهِلِيَّةِ، وَمُطَّلِبُ دَمِ امْرِىءٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لِيُهَرِيقَ دَمَهُ). [رواه البخاري: ٦٨٨٢]

2172: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला सबसे ज्यादा उन तीन आदमियों से नफरत रखता है, जो हरम काबा में जुल्मो सितम करे, जो इस्लाम में जाहिलियत के तरीके निकाले और जो नाहक खून बहाने की फिक्र में लगा रहे।

फायदे: इस्लाम लाने के बाद जाहिलियत की रस्मों की इशाअत करना,

मसलन जाहिलियत के जमाने में था कि एक के बजाये दूसरे को पकड़ा जाता या काहिन और बदफाली पर अमल करना। (फतहुलबारी 12/211)

बाब 4: जो आदमी हामिल वक्त से बाला बाला अपना हक या किसास खुद ले ले।

٤ - باب: مَنْ أخذ حقّه أو اقتصّ دُونَ السُّلطان

2173: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, अगर कोई बिना इजाजत तेरे घर में झांके और तू कोई कंकरी मारकर उसकी आंख फोड़ डाले तो तुझ पर कोई पकड़ न होगी।

٢١٧٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لَوِ ٱطَّلَعَ فِي بَيْتِكَ أَحَدٌ، وَلَمْ تَأْذَنْ لَهُ، فَخَذَفْتَهُ بِحَصَاةٍ، فَفَقَأْتَ عَيْنَهُ مَا كَانَ عَلَيْكَ مِنْ جُنَاحٍ) [رواه البخاري: ٦٨٨٨]

फायदे: इस बात पर तकरीबन इत्तेफाक है कि हाकिम वक्त के पास दावा पेश किये बगैर खुद मुद्दा अलैहि से अपना हक वसूल करना जाईज नहीं, क्योंकि ऐसा करने से बद-नजमी पैदा होगी। मजकूरा हदीस में जिस कद्र है, इतना ही जाईज रखना चाहिए। यानी अगर बिना इजाजत कोई दूसरा घर में झांकता है तो उसकी आंख को फोड़ देने से किसास या हर्जाना देना लाजिम नहीं है। (फतहुलबारी 12/216

बाब 5: अंगुलियों के हर्जाने का बयान।

٥ - باب: دِيَةُ الأَصَابِعِ

2174: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि यह अंगूली यानी छंगली और यह अंगूली यानी अंगूठा दोनों हर्जाने में बराबर है।

٢١٧٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (هٰذِهِ وَهٰذِهِ سَوَاءٌ). يَعْنِي ٱلْخِنْصَرَ وَٱلإِبْهَامَ. [رواه البخاري: ٦٨٩٥]

फायदे: हर्जाने के मामले में हाथ और पांव की अंगुलियां बराबर हैं। उनमें छोटी बड़ी का लिहाज नहीं होगा। जैसा कि दांतों का मामला है, हदीस के मुताबिद हर अंगूली का हर्जाना दस ऊंट है।

 (फतहुलबारी 12/226)



किताबो इसतेताबतिलमुस्तदीना वलमुआनदीना वकितालिहिम

मुरतद और बागियों से तौबा कराने और उनसे लड़ाई के बयान में

बाब 1: जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करे, उसका गुनाह।

١ - باب: إثم من أشرك بالله

2175: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमने जो गुनाह जाहिलियत के जमाने में किया है, उन पर मुवाख्जा होगा? आपने फरमाया, जिसने इस्लाम की हालत में अच्छे काम किये हैं, उससे जाहिलियत के गुनाहों का मुवाख्जा नहीं होगा और जो आदमी मुसलमान होकर भी बुरे काम करता रहा, उससे पहले और बाद के गुनाहों का मुवाख्जा होगा।

٢١٧٥ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنُؤَاخَذُ بِمَا عَمِلْنَا فِي ٱلجَاهِلِيَّةِ؟ قَالَ: (مَنْ أَحْسَنَ فِي ٱلإِسْلاَمِ لَمْ يُؤَاخَذْ بِمَا عَمِلَ فِي ٱلجَاهِلِيَّةِ، وَمَنْ أَسَاءَ فِي ٱلإِسْلاَمِ يُؤَاخَذُ بِٱلأَوَّلِ وَٱلآخِرِ). [رواه البخاري: ٦٩٢١]

फायदे: दरअसल इस्लाम लाने से पहले के सारे गुनाह माफ हो जाते हैं, लेकिन अगर कोई इस्लाम लाने के बाद उसके तकाजों को पूरा न करे और तौहीद पर अमल पैरा न हो तो फिर पहले के गुनाहों की भी बाजपुरस होगी। (फतहुलबारी 12/266)



किताबुत्ताबीर

ख़्वाबों की ताबीर के बयान में

बाब 1: नेक लोगों के ख़्वाब।

١ - باب: رؤيا الصالحين

2176: अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, नेक आदमी के अच्छे ख़्वाब नबूवत के छियालिस हिस्सों में से एक हिस्सा है।

٢١٧٦ : عَنْ أَنسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الرُّؤْيَا الحَسَنَةُ، مِنَ الرَّجُلِ الصَّالِحِ، جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ). [رواه البخاري ٦٩٨٣]

फायदे: नेक आदमी का अच्छा ख़्वाब नबूवत के छियालिस हिस्सों में से एक हिस्सा है, इसकी हकीकत अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगरचे कुछ लोगों ने इसका मतलब बयान किया है कि दौरे नबूवत तेईस साल है और पहले छः माह अच्छे ख़्वाबों पर मुश्तमिल थे। इसलिए अच्छे ख़्वाब नबूवत का छियालिसवां हिस्सा है, फिर यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हक़ीक़ी और दूसरों के लिए मजाज़ी मायने पर महमूल होगा। चूंकि इससे नबूवत की नक़बज़नी का चोर दरवाज़ा खुलता है, इसलिए लब खोलने के बजाये इसका इल्म अल्लाह के हवाले कर दिया जाये। फिर ख़्वाब की सदाकत व हकीकत पर मबनी होने के लिहाज से ख़्वाब देखने वालों की तीन किस्में हैं। पहले अम्बिया अलैहि., उनके तमाम ख़्वाब सदाक़त पर मब्नी होते है। बाज़ औक़ात किसी ख़्वाब की ताबीर करना पड़ती है। दूसरे नेक व पारसा लोग, उनके

ज़्यादातर ख्वाब हकीकत पर मब्नी होते और कुछ ऐसे नुमाया होते हैं कि उनकी ताबीर की कोई जरूरत नहीं होती। तीसरे वो लोग जो इनके अलावा हों, उनके ख्वाब सच्चे भी होते हैं और परागन्दगी से लबरेज भी होते हैं। वल्लाह आलम (फतहुलबारी 12/362)।

नोट : अच्छे ख्वाब नबूवत के कमालात और खूबियों में से हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि उसमें नबूवत का हिस्सा आ गया।

 (अलवी)

बाब 2: अच्छा ख्वाब अल्लाह की तरफ से है।

٢ - باب: الرؤيا من الله

2177: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, जब तुम में से कोई आदमी ऐसा ख्वाब देखे जो उसको अच्छा मालूम हो तो समझ ले कि वो अल्लाह की तरफ से है। सो वो अल्लाह का शुक्र अदा करे और आगे भी बयान कर दे और अगर कोई इसके अलावा ख्वाब देखे, जिसे वो नापसन्द करता हो तो वो शैतान की तरफ से है। पस उसके शर से अल्लाह की पनाह मांगे और किसी से बयान न करे। क्योंकि ऐसा करने से फिर वो उसे नुकसान नहीं देगा।

٢١٧٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ رُؤْيَا يُحِبُّهَا، فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ ٱللهِ، فَلْيَحْمَدِ ٱللهَ عَلَيْهَا وَلْيُحَدِّثْ بِهَا، وَإِذَا رَأَى غَيْرَ ذٰلِكَ مِمَّا يَكْرَهُ، فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَلْيَسْتَعِذْ مِنْ شَرِّهَا، وَلَا يَذْكُرْهَا لأَحَدٍ، فَإِنَّهَا لَا تَضُرُّهُ).
[رواه البخاري: ٦٩٨٥]

फायदे: अच्छे ख्वाब को अपने मुख्लीस दोस्त या बाअमल आलिमे दीन से बयान करने में कोई हर्ज नहीं और बुरा ख्वाब चूंकि शैतान की तरफ से होता है, इसलिए बैदार होकर अपनी बायें कन्धे पर तीन बार थूके और अल्लाह की पनाह मांगे और फिर किसी से उसका बयान न करे। (फतहुलबारी 12/370)

बाब 3: अच्छे ख्वाब खुशखबरियाँ हैं।

٣ - باب: المبشرات

2178: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, नबूवत में से अब सिर्फ मुबश्शिरात बाकी रह गये हैं। सहाबा किराम रजि. ने कहा, मुबश्शिरात क्या हैं? आपने फरमाया, वो अच्छे ख्वाब हैं।

٢١٧٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ يَقُولُ: (لَمْ يَبْقَ مِنَ النُّبُوَّةِ إِلَّا المُبَشِّرَاتُ). قَالُوا: وَمَا المُبَشِّرَاتُ؟ قَالَ: (الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ). [رواه البخاري: ٦٩٩٠]

फायदे: मुबशीरात का मतलब यह है कि ईमान वालों को ख्वाब के जरीये उसके दुनियावी या उखरवी अंजाम की खुशखबरी दी जाती है। बाज दफा अगले किसी अन्देशे या खतरे से भी आगाह कर दिया जाता है। ताकि उसके बचने के लिए अभी से तैयारी करे। (फतहुलबारी 12/362)

बाब 4: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख्वाब में देखने का बयान

٤ - باب: مَنْ رَأَى النَّبِيَّ فِي المَنَامِ

2179: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, जो कोई ख्वाब में मुझे देखे, वो जल्द ही मुझे जागने की हालत में भी देखेगा और शैतान मेरी सूरत नहीं इख्तियार कर सकता।

٢١٧٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ رَآنِي فِي المَنَامِ فَسَيَرَانِي فِي اليَقَظَةِ، وَلَا يَتَمَثَّلُ الشَّيْطَانُ بِي). [رواه البخاري: ٦٩٩٣]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख्वाब में देखना, गौया आप ही को देखना है। शैतान को यह कुदरत नहीं कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सूरत में किसी को ख्वाब में नजर आये। निज अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख्वाब में किसी खिलाफे शरीअत का हुक्म दें तो उस पर अमल करना बिल्कुल

जाईज नहीं। जैसा कि कुछ लोग इस बहाने अपने किसी अजीज को मार डालते हैं।

2180: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि "जिस आदमी ने(ख्वाब में) मुझे देखा तो उसने यकीनन हक ही देखा, क्योंकि शैतान मेरी सूरत इख्तियार नहीं कर सकता।"

٢١٨٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدِ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَكَوَّنُنِي). [رواه البخاري: ٦٩٩٧]

बाब 5: दिन के वक्त ख्वाब देखना।

٥ - باب: رُؤْيَا النَّهَارِ

2181: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मे हराम बिन्ते मिलहान रजि. के यहां तशरीफ ले जाया करते थे। और यह उबादा बिन सामित रजि. की बीवी थीं। एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ ले गये तो उन्होंने आपको खाना खिलाया। इसके बाद आपकी जूऐं देखने लगीं, यहां तक कि आप सो गये। फिर जब जागे तो आप हंस रहे थे। उम्मे हराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप किस वजह से हंसते हैं? आपने फरमाया कि मेरी उम्मत

٢١٨١ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَدْخُلُ عَلَى أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا وَكَانَتْ تَحْتَ عُبَادَةَ ابْنِ الصَّامِتِ، فَدَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمًا فَأَطْعَمَتْهُ، وَجَعَلَتْ تَفْلِي رَأْسَهُ، فَنَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ ثُمَّ ٱسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ ٱللهِ، يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هٰذَا الْبَحْرِ، مُلُوكًا عَلَى الأَسِرَّةِ، أَوْ: مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ). قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ٱدْعُ ٱللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ ٱسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ، فَقُلْتُ: مَا يُضْحِكُكَ

يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ ٱللهِ). كَمَا قَالَ فِي الأُولَى، قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ ٱدْعُ ٱللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ: (أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ). فَرَكِبَتِ الْبَحْرَ فِي زَمَانِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، فَصُرِعَتْ عَنْ دَابَّتِهَا حِينَ خَرَجَتْ مِنَ الْبَحْرِ، فَهَلَكَتْ. [رواه البخاري: ٧٠٠٢]

के कुछ लोग मुझे अल्लाह की राह में लड़ते हुए दिखाये गये हैं जो बादशाहों की तरह समन्दर में सवार हैं या बादशाहों की तरह तख्तीयों पर बैठे हैं। उम्मे हराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! दुआ फरमायें, अल्लाह तआला मुझे भी उन लोगों में शरीक करे। चूनांचे आपने उनके लिए दुआ फरमाई। इसके बाद फिर सर रखकर सो गये। फिर जब हंसते हुए जागे तो उम्मे हराम रजि. ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप किस लिए हंसे हैं? आपने फरमाया, मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए फिर मेरे सामने पेश किये गये, जैसा कि आपने पहले दफा फरमाया था। उम्मे हराम रजि. कहती हैं, मैंने कहा, आप अल्लाह से दुआ करें कि मुझे कोई उन लोगों में से कर दे। आपने फरमाया, तुम तो पहले लोगों में शरीक हो चुकी हो। फिर ऐसा हुआ कि उम्मे हराम रजि. अमीर मआविया के जमाने में समन्दर में सवार हुई और समन्दर से निकलते वक्त अपनी सवारी से गिरकर हलाक हो गयीं।

फायदे: इमाम बुखारी का मतलब यह है कि रात और दिन के ख्वाब बराबर है। कुछ ने कहा कि सहर के वक्त ख्वाब ज्यादा सच्चा होता है। इमाम इब्ने सिरीन का कौल इमाम बुखारी ने नकल किया है कि दिन का ख्वाब भी रात के ख्वाब की तरह है।

बाब 6: ख्वाब की हालत में पांव में बेड़ियां देखने का बयान।

٦ - باب: القَيْدُ فِي المَنَامِ

٢١٨٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا ٱقْتَرَبَ الزَّمَانُ لَمْ تَكَدْ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ تَكْذِبُ، وَرُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ). وَمَا كَانَ مِنَ النُّبُوَّةِ فَإِنَّهُ لاَ يَكْذِبُ. [رواه البخاري: ٧٠١٧]

2182: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब कयामत का वक्त करीब आ लगेगा तो मौमिन का ख्वाब झूटा न होगा। क्योंकि मौमिन का ख्वाब नबूवत के छियांलिस हिस्सों में से एक है और जो बात नबूवत से होती है, वो झूटी नहीं हुआ करती।

फायदे: इस हदीस के आखिर में हजरत इब्ने सिरीन का एक कौल बयान हुआ जो उन्होंने हजरत अबू हुरैरा रजि. से नकल किया है कि फंदे का गले में देखना बुरा है और पांव में बेड़ी का देखना अच्छा है। क्योंकि इसकी ताबीर दीन में साबित कदमी है।

 (सही बुखारी 7017)

---

٧ - باب: إِذَا رَأَى أَنَّهُ أَخْرَجَ الشَّيْءَ مِنْ كُوَّةٍ فَأَسْكَنَهُ مَوْضِعًا آخَرَ

बाब 7: जब ख्वाब देखे कि वो एक चीज को एक मकाम से निकालकर दूसरी जगह रख रहा है।

٢١٨٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (رَأَيْتُ كَأَنَّ ٱمْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ، خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ، حَتَّى قَامَتْ بِمَهْيَعَةَ - وَهِيَ الْجُحْفَةُ - فَأَوَّلْتُ أَنَّ وَبَاءَ الْمَدِينَةِ يُنْقَلُ إِلَيْهَا). [رواه البخاري: ٧٠٣٨]

2183: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने एक काली परेशान बालों वाली औरत को ख्वाब में देखा जो मदीना से निकलकर मकामे जुहफा में जा ठहरी है। मैंने उस ख्वाब की यह ताबीर की कि मदीना की बीमारी जुहफा में मुन्तकिल कर दी गई है।

फायदेः हजरत आइशा रजि. से रिवायत है, कि जब हम हिजरत करके मदीना आये तो मदीना में वबाई बीमारियों का गलबा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फरमाई कि इसकी बीमारियों को जुहफा में मुन्तकिल कर दिया जाये। फिर ख्वाब में उसके बारे में आपको खुशखबरी दी गई। (फतहुलबारी 12/424)

बाब 8: ख्वाब के बारे में झूट बोलने का बयान।

٨ - باب: مَنْ كَذَبَ فِي حُلُمِهِ

٢١٨٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ تَحَلَّمَ بِحُلُمٍ لَمْ يَرَهُ كُلِّفَ أَنْ يَعْقِدَ بَيْنَ شَعِيرَتَيْنِ وَلَنْ يَفْعَلَ، وَمَنِ ٱسْتَمَعَ إِلَى حَدِيثِ قَوْمٍ، وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ، صُبَّ فِي أُذُنَيْهِ الآنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ صَوَّرَ صُورَةً عُذِّبَ، وَكُلِّفَ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا، وَلَيْسَ بِنَافِخٍ). [رواه البخاري: ٧٠٤٢]

2184: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जिसने ऐसा ख्वाब बयान किया जो उसने देखा नहीं तो उसे कयामत के दिन दो जौ में गिरह लगाने की सजा दी जायेगी और वो आदमी नहीं लगा सकेगा और जो आदमी ऐसे लोगों की बात पर कान लगाये, जो अपनी बात किसी को सुनाना पसन्द न करते हों तो उसके कानों में सीसा पिघलाकर डाला जायेगा और जिसने किसी जानदार की तस्वीर बनाई, उसे अजाब दिया जायेगा कि अब उसमें रूह फूंक, मगर वो रूह नहीं फूंक सकेगा।

फायदेः ख्वाब भी अल्लाह तआला का पैदा किया हुआ है। जिसकी मानवी शक्लो सूरत होती। झूटा ख्वाब कहने वाला अपने झूट से एक ऐसी मानवी तस्वीर को जन्म देता है जो अम्र वाक्ये से मुताल्लिक नहीं। जैसा कि तस्वीरकशी करने वाला अल्लाह की मख्लूक में एक ऐसी मख्लूक का इजाफा करता है जो हकीकी नहीं। क्योंकि हकीकी मख्लूक वो है, जिसमें रूह हो। इसलिए दोनों को अजाब के साथ साथ ऐसी

तकलीफ भी दी जायेगी जिसकी वो ताकत न रखता हो।

(फतहुलबारी 12/429)

٢١٨٥ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ مِنْ أَفْرَى ٱلْفِرَى أَنْ يُرِيَ عَيْنَيْهِ مَا لَمْ يَرَ). [رواه البخاري: ٧٠٤٣]

2185: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सबसे बड़ा झूट यह है कि इन्सान अपनी आंखों को ऐसी चीज दिखाये जो उन्होंने न देखी हो। यानी झूटा ख्वाब बयान करे।

फायदे: ख्वाब चूंकि नबूवत का एक हिस्सा है और नबूवत अल्लाह की तरफ से होती है। इसलिए झूटा ख्वाब बयान करना गोया अल्लाह पर झूट बांधना है और यह मख्लूक पर झूट बांधने से ज्यादा संगीन है।

(फतहुलबारी 12/428)

---

٩ - باب: مَنْ لَمْ يَرَ الرُّؤيَا لِأَوَّلِ عَابِرٍ إِذَا لَمْ يُصِبْ

बाब 9: अगर पहला ताबीर देने वाला गलत ताबीर दे तो उसकी ताबीर से कुछ न होगा।

٢١٨٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ ٱللَّيْلَةَ فِي ٱلْمَنَامِ ظُلَّةً تَنْطُفُ ٱلسَّمْنَ وَٱلْعَسَلَ، فَأَرَى ٱلنَّاسَ يَتَكَفَّفُونَ مِنْهَا، فَٱلْمُسْتَكْثِرُ وَٱلْمُسْتَقِلُّ، وَإِذَا سَبَبٌ وَاصِلٌ مِنَ ٱلْأَرْضِ إِلَى ٱلسَّمَاءِ، فَأَرَاكَ أَخَذْتَ بِهِ فَعَلَوْتَ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَعَلَا بِهِ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَعَلَا بِهِ، ثُمَّ أَخَذَ

2186: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो बयान करते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने रात को ख्वाब में देखा है कि एक सायबान (छप्पर) हैं, जिससे घी और शहद टपक रहा है और लोग उसे हाथों हाथ ले रहे हैं। किसी ने बहुत लिया और किसी ने कम। इतने में एक रस्सी

بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَانْقَطَعَ ثُمَّ وُصِلَ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، بِأَبِي أَنْتَ، وَٱللهِ لَتَدَعَنِّي فَأَعْبُرَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أُعْبُرْ). قَالَ: أَمَّا الظُّلَّةُ فَالإِسْلَامُ، وَأَمَّا الَّذِي يَنْطُفُ مِنَ الْعَسَلِ وَالسَّمْنِ فَالْقُرْآنُ، حَلَاوَتُهُ تَنْطُفُ، فَالْمُسْتَكْثِرُ مِنَ الْقُرْآنِ وَالْمُسْتَقِلُّ، وَأَمَّا السَّبَبُ الْوَاصِلُ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ فَالْحَقُّ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ، تَأْخُذُ بِهِ فَيُعْلِيكَ ٱللهُ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ مِنْ بَعْدِكَ فَيَعْلُو بِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَعْلُو بِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَنْقَطِعُ بِهِ، ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ فَيَعْلُو بِهِ، فَأَخْبِرْنِي يَا رَسُولَ ٱللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، أَصَبْتُ أَمْ أَخْطَأْتُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَصَبْتَ بَعْضًا وَأَخْطَأْتَ بَعْضًا). قَالَ: فَوَٱللهِ لَتُحَدِّثَنِّي بِالَّذِي أَخْطَأْتُ، قَالَ: (لَا تُقْسِمْ). [رواه البخاري: ٧٠٤٦]

नजर आई जो आसमान से जमीन तक लटकी हुई है। फिर मैंने आपको देखा कि उसे पकड़कर ऊपर चढ़ गये हैं। फिर आपके बाद एक और आदमी उसको पकड़कर ऊपर चढ़ा और उसके बाद एक और आदमी ने उसको पकड़ा और ऊपर चढ़ा। फिर एक चौथे आदमी ने वो रस्सी थामी तो वो टूटकर गिर पड़ी। लेकिन फिर जुड़ गई और वो भी चढ़ गया। अबू बकर रजि. ने यह सुनकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे मां-बाप आप पर फिदा हों, मुझे इजाजत दें कि मैं इस ख्वाब की ताबीर करूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा बयान करो। उन्होंने कहा, वो सायबान तो दीने इस्लाम है और उसमें से जो घी और शहद टपकता है, वो कुरआन और उसकी मिठास है। अब कोई आदमी ज्यादा कुरआन सीखता है और कोई कम मिकदार पर बस कर लेता है। रही रस्सी जो आसमान से जमीन तक लटकी है, उससे मुराद वो हक है, जिस पर आप गामजन हैं, उसके पकड़ने से अल्लाह तआला आपको तरक्की देगा। यहां तक कि अल्लाह आपको उठा लेगा। फिर आपके बाद एक और आदमी उस तरीके को लेगा, वो भी मरने तक उस पर कायम रहेगा। फिर एक और आदमी उसे लेगा, उसका भी यही हाल होगा। फिर एक और आदमी लेगा तो उसका मामला कट जायेगा।

फिर जुड़ जायेगा तो वो भी ऊपर चढ़ जायेगा। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप बतायें कि मैंने यह सही ताबीर दी है या इसमें गलती की है। आपने फरमाया, कुछ ठीक दी है और कुछ गलत। अबू बकर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको अल्लाह की कसम है, जो मैंने गलत कहा है उसकी निशानदेही फरमायें। इस पर आपने फरमाया कि कसम न दो।

फायदे: एक हदीस में है कि ख्वाब की वही ताबीर होती है जो पहले ताबीर करने वाला बयान कर दे। एक और हदीस में है कि ख्वाब परिन्दे के पांवों से अटका होता है, जब तक उसकी ताबीर न की जाये। जब ताबीर कर दी जाये तो वाकेय हो जाता है। इमाम बुखारी का मतलब यह है कि अगर पहला ताबीर देने वाला ख्वाब की ताबीर का आलिम हो तो ताबीर उसके बयान के मुताबिक होगी। दूसरी हालत में जो आदमी भी सही ताबीर करेगा, चाहे दूसरा हो उसके मुताबिक ताबीर होगी।

(फतहुलबारी 12/432)

❖❖❖



किताबुल फेतनी

फितनों के बयान में

बाब 1: फरमाने नबवी: तुम मेरे बाद ऐसे काम देखोगे, जो तुम्हें बुरे लगेंगे।

١ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «سَتَرَوْنَ بَعْدِي أُمُورًا تُنْكِرُونَهَا»

2187: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी अपने अमीर से कोई बुराई होती देखे तो उस पर सब्र करे। क्योंकि जो आदमी इस्लामी हुक्मरान की इताअत से एक बालिस्त भी बाहर हुआ तो वो जाहिलियत की सी मौत मरेगा। इब्ने अब्बास रजि. से एक दूसरी रिवायत में है कि हाकिम में ऐसी बात देखे जिसे वो नापसन्द करता हो तो उसे चाहिए कि सब्र करे। इसलिए कि जो कोई बालिस्त बराबर भी जमात से जुदा हो गया और उसी हालत में उसे मौत आई तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी।

٢١٨٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنَ السُّلْطَانِ شِبْرًا مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً).

وَعَنْهُ فِي رِوَايَةٍ أُخْرَى قَالَ: (مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَصْبِرْ عَلَيْهِ فَإِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الجَمَاعَةَ شِبْرًا فَمَاتَ، إِلَّا مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً).

[رواه البخاري: ٧٠٥٣، ٧٠٥٤]

फायदे: बुखारी की एक हदीस में इस उनवान को वजाहत से बयान किया गया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम मेरे बाद अपनी हक तलफी देखोगे और ऐसे मामलात सामने आयेंगे जिन्हें तुम बुरा ख्याल करोगे। यह सुनकर सहाबा किराम रजि. ने कहा,

ऐसे हालात में आप हमें क्या हुक्म देते हैं? फरमाया, उस वक्त अहले हुकूमत के हुकूक (जकात की अदायगी और जिहाद में शिरकत वगैरह) अदा करो और अपने हुकूक अल्लाह से मांगो। (सही बुखारी 7052) निज इसका मतलब यह नहीं कि हाकिम वक्त की मुखालफत करने वाला काफिर हो जायेगा। बल्कि जैसे जाहिलियत का कोई इमाम नहीं होता, उसी तरह उसका भी कोई सरबराह नहीं होगा। दूसरी रिवायत में है कि जो आदमी जमात से एक बालिश्त बराबर जुदा हुआ, उसने गोया इस्लाम के पट्टे को अपनी गर्दन से उतार फैंका, इन अहादीस से यह मालूम हुआ कि मुसलमान हुकमरान चाहे जालिम व फासिक हो, उनसे बगावत करना सही नहीं है। (फतहुलबारी 12/7)

२١٨٨ : عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَبَايَعْنَاهُ، فَقَالَ فِيمَا أَخَذَ عَلَيْنَا: أَنْ بَايَعَنَا عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ، فِي مَنْشَطِنَا وَمَكْرَهِنَا، وَعُسْرِنَا وَيُسْرِنَا وَأَثَرَةٍ عَلَيْنَا، وَأَنْ لاَ نُنَازِعَ الأَمْرَ أَهْلَهُ، إِلَّا أَنْ تَرَوْا كُفْرًا بَوَاحًا، عِنْدَكُمْ مِنَ ٱللهِ فِيهِ بُرْهَانٌ. [رواه البخاري: ٧٠٥٦]

2188: उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बुलाया तो हमने आपसे बैअत की और बैअत में आपने हमसे यह इकरार लिया कि हम खुशी व नाखुशी और तंगी व फराखी अलगर्ज हर हाल में आपका हुक्म सुनेंगे और उसे बजा लायेंगे। गो हम पर दूसरों को तरजीह ही क्यों न दी जाये और आपने यह भी इकरार लिया कि सल्तनत की बाबत हम हुक्मरान से झगड़ा नहीं करेंगे। मगर इस सूरत में कि जब तुम उसे ऐलानिया कुफ्र करते देखो। ऐसा कुफ्र कि जिसके बारे में अल्लाह की तरफ से तुम्हारे पास दलील भी मौजूद हो।

फायदे: मालूम हुआ कि जब तक हाकिम वक्त के किसी कौल व फेअल की कोई शरई तावील हो सकती हो, उस वक्त तक उसके खिलाफ बगावत करना जाइज नहीं। अगर वो सरीह और वाजेह तौर पर शरीअत

के खिलाफ काम करे या उनका हुक्म दे और कवाईदे इस्लाम से दोगरदानी करे तो उस पर ऐतराज करना सही है। अगर वो न माने तो ऐसे हालत में उसकी इताअत लाजिम नहीं है। (फतहुलबारी 13/8)

बाब 2: फितनों के जाहिर होने का बयान।

٢ - باب: ظُهُورُ الْفِتَنِ

2189. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे, बदतरीन मख्लूक में से वो लोग हैं, जिनकी जिन्दगी में कयामत आ जायेगी।

٢١٨٩ : عَنِ ٱبْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مِنْ شِرَارِ النَّاسِ مَنْ تُدْرِكُهُمُ السَّاعَةُ وَهُمْ أَحْيَاءٌ). [رواه البخاري: ٧٠٦٧]

फायदे: यह फितनों के जहूर का वक्त होगा, जैसा कि इसी रिवायत में है कि हजरत अबू मूसा अशअरी रजि. ने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से कहा कि तुम वो दिन जानते हो, जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खून बहाने के दिन करार दिये हैं? इसके बाद उन्होंने यह हदीस बयान की। इस हदीस से मालूम हुआ कि कयामत के नजदीक अच्छे लोग उठा लिये जायेंगे।

(फतहुलबारी 13/19)

बाब 3: हर दौर के बाद वाला दौर पहले से बदतर होगा।

٣ - باب: لا يَأتِي زَمَانٌ إلَّا الَّذِي بَعْدَهُ شَرٌّ مِنْهُ

2190: अनस रजि. से रिवायत है कि जब उनसे मुसीबतों की शिकायत की गई जो लोगों को हज्जाज से पहुंची थी तो उन्होंने फरमाया कि सब्र करो, क्योंकि तुम पर जो जमाना गुजरेगा, वो पहले

٢١٩٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ وَقَدْ شُكِيَ إِلَيْهِ ما لَقِيَ النَّاسُ مِنَ الحَجَّاجِ، فَقَالَ: ٱصْبِرُوا، فَإِنَّهُ لاَ يَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ إِلَّا والَّذِي بَعْدَهُ شَرٌّ مِنْهُ، حَتَّى تَلْقَوْا رَبَّكُمْ، سَمِعْتُهُ مِنْ نَبِيِّكُمْ ﷺ. [رواه البخاري: ٧٠٦٨]

से बदतर होगा। यहां तक कि अल्लाह से मिल जाओ। मैंने यह बात तुम्हारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी है।

फायदेः पहला वक्त दूसरे दौर से दुनियावी खुशहाली के लिहाज से बेहतर नहीं बल्कि इल्मी, अमली और इख्लाकी लिहाज से बेहतर होगा। चूनांचे हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से इसकी सराहत रिवायत में मौजूद है। (फतहुलबारी 12/21)

बाब 4: फरमाने नबवी: "जो हमारे खिलाफ हथियार उठाये, वो हमसे नहीं है।"

٤ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاحَ فَلَيْسَ مِنَّا»

2191: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तुममें से कोई आदमी अपने भाई के खिलाफ हथियार से इशारा न करे, क्योंकि मुमकिन है कि शैतान उसके हाथ से उसे नुकसान पहुंचा दे, जिसकी बिना पर यह आदमी आग के गड्डे में गिर पड़े।

٢١٩١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (لاَ يُشِيرُ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلاَحِ، فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي، لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ، فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ٧٠٧٢]

फायदेः किसी मुसलमान को डराने धमकाने के लिए हथियार से इशारा करना संगीन जुर्म है। अगर हथियार से उसे नुकसान पहुंचाया जाये तो अल्लाह के यहां सख्त अजाब से दो-चार होने का अन्देशा है। चाहे संजीदगी या मजाक से ऐसा किया जाये। (फतहुलबारी 13/25)

बाब 5: ऐसे फितनों का बयान कि उनमें बैठा हुआ आदमी खड़े हुए से बेहतर होगा।

٥ - باب: تَكُون فِتَن القَاعِد فِيهَا خَيْرٌ مِن القَائِم

2192: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जल्द ही ऐसे फितने होंगे, जिनमें बैठा हुआ चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। जो आदमी दूर से भी उनमें झांकेगा, वो उसको भी समेट लेंगे। लिहाजा ऐसे हालात में इन्सान जहां कहीं कोई ठिकाना या जाये-पनाह पाये उसमें पनाह ले ले।

٢١٩٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (سَتَكُونُ فِتَنٌ، القَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ القَائِمِ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ المَاشِي، وَالمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي، مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ، فَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً، أَوْ مَعَاذًا، فَلْيَعُذْ بِهِ). [رواه البخاري: ٧٠٨٢]

फायदे: इससे मुराद वो फितना है जो मुसलमानों में हुसूले हुकूमत की खातिर रोनुमा हो और यह मालूम न हो सके कि हक किस तरफ है। ऐसे हालात में अलहेदगी और गोशागिरी में ही आफियत है। (फतहुलबारी 13/31)

बाब 6: फितनों के वक्त जंगलों में रहने का बयान।

٦ - باب: التَّعَرُّبُ فِي الْفِتْنَةِ

2193: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है कि वो हज्जाज के पास गये। हज्जाज ने उनसे कहा, ऐ इब्ने अकवा रजि.! तू ऐड़ियों के बल फिर गया और जंगल का बासी बन गया। सलमा रजि. ने फरमाया, ऐसा नहीं है बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे जंगल में रहने की खास इजाजत दी थी।

٢١٩٣ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى الحَجَّاجِ فَقَالَ: يَا ٱبْنَ الأَكْوَعِ، ٱرْتَدَدْتَ عَلَى عَقِبَيْكَ، تَعَرَّبْتَ؟ قَالَ: لاَ، وَلٰكِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَذِنَ لِي فِي الْبَدْوِ. [رواه البخاري: ٧٠٨٧]

फायदे: एक हदीस में है कि हिजरत के बाद जंगल में बसेरा करना बाइसे लानत है। हां, अगर फितना हो तो जंगल में रहना बेहतर है। इस हदीस के पेशे नजर हज्जाज बिन युसूफ ने ऐतराज किया। वाक्या यह है कि शहादते उसमान रजि. के बाद सलमा बिन अकवा रजि. ने मदीने से निकलकर रब्जा में रिहाइश इख्तियार कर ली थी। मरने से कुछ दिन पहले मदीना में आ गये और वहीं आपका इन्तेकाल हुआ।

 (सही बुखारी 7087)

बाब 7: जब अल्लाह किसी कौम पर अजाब नाजिल करता है तो (उसकी जद में हर तरह के लोग आ जाते हैं)।

٧ - باب: إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا

2194: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब अल्लाह तआला किसी कौम पर अजाब नाजिल फरमाता है तो वो अजाब कौम के सब लोगों को पहुंचता है। फिर कयामत के दिन वो अपने अपने आमाल पर उठाये जायेंगे।

٢١٩٤ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا أَنْزَلَ ٱللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا، أَصَابَ ٱلْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ، ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ). [رواه البخاري: ٧١٠٨]

फायदे: ऐसी सूरते हाल उस वक्त सामने आयेगी जब लोग बुराई को देखकर उसे ठण्डे पेट बर्दाश्त कर लेंगे। उनमें नेक व बुरे की तमीज नहीं होगी। कयामत के दिन उनकी नियतों और किरदार के मुताबिक उनसे अच्छा या बुरा सलूक किया जायेगा। जैसा कि मुख्तलिफ हदीसों में यह मजमून आया है। (फतहुलबारी 13/60)

बाब 8: उस आदमी का बयान जो कौम के पास जाकर एक बात कहे, फिर वहां से निकलकर उसके खिलाफ कहे।

٨ - باب: إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلَافِهِ

٢١٩٥ : عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: إِنَّمَا كَانَ النِّفَاقُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَأَمَّا الْيَوْمَ: فَإِنَّمَا هُوَ الْكُفْرُ بَعْدَ الْإِيمَانِ. [رواه البخاري: ٧١١٤]

2195: हुजैफा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया निफाक तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में था। अब ईमान के बाद तो कुफ्र है। यानी इस जमाने में आदमी मौमिन है या काफिर।

फायदे: हजरत हुजैफा रजि. का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद चूंकि वहीअ का सिलसिला बन्द हो गया है। इसलिए किसी के बारे में वाजेह तौर पर मुनाफिकत का हुक्म नहीं लगाया जा सकता। इसलिए कि दिल का हाल मालूम नहीं।

(फतहुलबारी 13/74)

बाब 9: आग का खुरूज (निकलना)।

٩ - باب: خُرُوجُ النَّارِ

٢١٩٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ، تُضِيءُ أَعْنَاقَ الْإِبِلِ بِبُصْرَى). [رواه البخاري: ٧١١٨]

2196: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत उस वक्त तक कायम न होगी यहां तक कि हिजाज की जमीन से एक आग नमुदार होगी। जो बुसरा तक ऊंटों की गरदनें रोशन कर देगी।

फायदे: बुसरा इलाका शाम में है। इस आग की रोशनी वहां तक पहुंचेगी। यह आग सात सौ हिजरी में नमुदार हो चुकी है।

(फतहुलबारी 13/80)

٢١٩٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُوشِكُ

2197: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

الْفُرَاتُ أَنْ يَحْسِرَ عَنْ كَنْزٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَمَنْ حَضَرَهُ فَلاَ يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا). [رواه البخاري: ٧١١٩]

अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वो जमाना करीब है कि दरिया फुरात से एक सोने का खजाना नमूदार होगा। जो वहां मौजूद हो, वो उसमें से कुछ न ले।

फायदेः उस खजाने को पाने के लिए बहुत कत्लो गारत होगी। एक रिवायत में है कि सौ आदमियों में से निन्यानवें मारे जायेंगे। सिर्फ एक जिन्दा बचेगा। हर आदमी यही कहेगा कि मैं उस खजाने को हासिल करने में कामयाब होऊंगा। (फतहुलबारी 13/81)

बाब 10:

١٠ - باب

٢١٩٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ عَظِيمَتَانِ، تَكُونُ بَيْنَهُمَا مَقْتَلَةٌ عَظِيمَةٌ، دَعْوَتُهُمَا وَاحِدَةٌ، وَحَتَّى يُبْعَثَ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ، قَرِيبٌ مِنْ ثَلاَثِينَ، كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ ٱللهِ، وَحَتَّى يُقْبَضَ الْعِلْمُ وَتَكْثُرَ الزَّلاَزِلُ، وَيَتَقَارَبَ الزَّمَانُ، وَتَظْهَرَ الْفِتَنُ، وَيَكْثُرَ الْهَرْجُ، وَهُوَ الْقَتْلُ وَحَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ الْمَالُ، فَيَفِيضَ حَتَّى يُهِمَّ رَبَّ الْمَالِ مَنْ يَقْبَلُ صَدَقَتَهُ، وَحَتَّى يَعْرِضَهُ، فَيَقُولَ الَّذِي يَعْرِضُهُ عَلَيْهِ: لاَ أَرَبَ لِي بِهِ وَحَتَّى يَتَطَاوَلَ النَّاسُ فِي الْبُنْيَانِ وَحَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ وَحَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، فَإِذَا طَلَعَتْ وَرَآهَا النَّاسُ -

2198: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत उस वक्त तक कायम न होगी, जब तक कि ऐसे दो बड़े बड़े गिरोहों में लड़ाई न हो। जिनका दावा एक होगा, उनके बीच खूब खून बहाव होगा। और कयामत उस वक्त तक न आयेगी, यहां तक तीस के करीब छोटे दज्जाल पैदा होंगे। और उनमें से हर एक यह दावा करेगा कि मैं अल्लाह का रसूल हूं। और कयामत के करीब के वक्त इल्म उठा लिया जायेगा। जलजलों की कसरत होगी। वक्त जल्द जल्द गुजरेगा। फितने जाहिर होंगे और कसरत से खूनरेजी होगी। माल की इतनी ज्यादती होगी कि वो पानी की तरह

يَعْنِي آمَنُوا أَجْمَعُونَ - فَذٰلِكَ حِينَ: ﴿لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَـٰنُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامَنَتْ مِن قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِىٓ إِيمَـٰنِهَا خَيْرًا﴾. وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ نَشَرَ الرَّجُلَانِ ثَوْبَهُمَا بَيْنَهُمَا، فَلَا يَتَبَايَعَانِهِ وَلَا يَطْوِيَانِهِ. وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدِ انْصَرَفَ الرَّجُلُ بِلَبَنِ لِقْحَتِهِ فَلَا يَطْعَمُهُ. وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَهُوَ يَلِيطُ حَوْضَهُ فَلَا يَسْقِي فِيهِ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ رَفَعَ أُكْلَتَهُ إِلَى فِيهِ فَلَا يَطْعَمُهَا). [رواه البخاري: ٧١٢١]

बहता फिरेगा। इस कद्र कि माल वालों को फिक्र होगी कि उसका सदका कोई कबूल करे। वो किसी के सामने उसे पेश करेगा तो वो जवाब देगा, मुझे उसकी जरूरत नहीं है और लोग खूब लम्बी लम्बी इमारतें फख्र के तौर पर तामीर करेंगे और यहां तक कि एक आदमी दूसरे की कब्र से गुजरेगा और कहेगा, काश मैं उसकी जगह होता। फिर सूरज मगरिब की तरफ से उगेगा। जब इधर से उगता हुआ सब लोग देख लेंगे तो सबके सब अल्लाह पर ईमान लायेंगे। लेकिन वो ऐसा वक्त होगा कि किसी नफ्स को ईमान लाना फायदा न देगा। जो पहले ईमान न लाया था और न ही उसने ईमान की हालत में कोई नेकी कमाई थी। और कयामत इतनी जल्दी कायम हो जायेगी कि दो आदमी आपस में खरीद-फरोख्त कर रहे होंगे। उन्होंने अपने आगे कपड़े का थान फैलाया होगा, न वो सौदे को पुख्ता कर सकेंगे और न ही थान को लपेट सकेंगे कि कयामत आ जायेगी (कयामत इतनी जल्दी कायम होगी कि) एक आदमी अपनी ऊंटनी का दूध लेकर चला होगा तो वो उसको पी भी नहीं सकेगा, कयामत आ जायेगी और कुछ लोग हौज को मरम्मत कर रहे होंगे, वो अपने जानवरों को उससे पानी भी नहीं पिला सकेंगे कि कयामत आ जायेगी और कोई आदमी निवाला मुंह तक उठा चुका होगा, अभी उसे खा न सकेगा कि कयामत कायम हो जायेगी।

फायदे: इस हदीस में तीन तरह की कयामत की निशानियां बयान हुई हैं। पहली किस्म वो जो जहूर पजीर हो चुकी हैं। जैसे कत्ल व गारत की कसरत, दूसरी वो जिनका आगाज तो हो चुका है लेकिन पूरी तरह

नमुदार नहीं हुई, जैसे जलजलों की कसरत। तीसरी वो जो अभी जाहिर नहीं हुई। आगे होगी, जैसे सूरज का मगरिब से उगना।

(फतहुलबारी 13/84)

❖❖❖

किताबुल अहकाम

अहकाम के बयान में

बाब 1: इमाम की बात सुनना और मानना जरूरी है, बशर्ते कि शरई के खिलाफ और गुनाह न हो।

١ - باب: السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً

2199: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अमीर की बात सुनो और उसकी इताअत करो। अगरचे तुम पर एक हब्शी गुलाम सरदार बनाया जाये, जिसका सर मुनक्का की तरह छोटा हो।

٢١٩٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱسْمَعُوا وَأَطِيعُوا، وَإِنِ ٱسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ). [رواه البخاري: ٧١٤٢]

फायदे: हब्शी गुलाम की खिलाफत सही नहीं, अगर इमाम वक्त उसे हाकिम बना दे तो लोगों को उसकी इताअत करना चाहिए। लेकिन गुनाहों के कामों में इनकार करना जरूरी है। अगर कुफ्र खुल्मखुल्ला का करने वाला हो तो उसे माजूल कर देना चाहिए। (फतहुलबारी 13/123)

बाब 2: सरदारी (हुकूमत) की ख्वाहीश करना नाजाईज है।

٢ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ الحِرْصِ عَلَى الإِمَارَةِ

2200: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से

٢٢٠٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّكُمْ

سَتَحْرِصُون على الإمارَة، وَسَتَكُون نَدَامَةً يَوم القِيامَة، فَنِعْمَ المُرْضِعَةُ وَبِئْسَتِ الفَاطِمَةُ). [رواه البخاري: ٧١٤٨]

बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जल्द ही तुम लोग इमारत और सरदारी की लालच करोगे। कयामत के दिन तुम्हें उसकी वजह से नदामत और शर्मिन्दगी होगी। इसकी शुरूआत अच्छी मालूम होगी, लेकिन अंजाम बुरा होगा। जैसा कि दूध पिलाने वाली दूध पिलाते वक्त अच्छी होती है, मगर दूध छुड़ाते वक्त बुरी लगती है।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखरी मिसाल से यह समझाना चाहते हैं कि जिस काम के अंजाम में रंजो अल्म हो उसे मामूली लज्जत व राहत की खातिर हरगिज इख्तियार नहीं करना चाहिए। (फतहुलबारी 13/126)

٣ - باب: مَنِ اسْتُرْعِيَ رَعِيَّةً فَلَمْ يَنْصَحْ

बाब 3: जो आदमी रियाया का हुक्मरान मुकर्रर किया गया, लेकिन उसने उनकी खैर-ख्वाही न की।

٢٢٠١ : عَن مَعقِل بن يَسارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قال: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَا مِنْ عَبْدٍ اسْتَرْعاهُ اللهُ رَعِيَّةً، فَلَمْ يَحُطْهَا بِنَصِيحَةٍ، إِلَّا لَمْ يَجِدْ رَائِحَةَ الجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٧١٥٠]

2201: मअकिल बिन यसार रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे जिस आदमी को अल्लाह ने किसी रियाया का हाकिम बनाया हो, फिर उसने अपनी रिआया (जनता) की खैरख्वाही न की तो वो जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा।

फायदे: हजरत मअकिल बिन यसार रजि. ने यह हदीस उस वक्त बयान की जब आप शदीद बीमार होते और अब्दुल्लाह बिन जियाद उनकी देखभाल के लिए आये। जब आप हदीस बयान कर चुके तो उसने कहा, आपने मुझे पहले क्यों न बताया। (फतहुलबारी 13/127)

٢٢٠٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا مِنْ وَالٍ يَلِي رَعِيَّةً مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَيَمُوتُ وَهُوَ غَاشٌ لَهُمْ، إِلَّا حَرَّمَ ٱللهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٧١٥١]

2202: मअकिल बिन यसार रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जो बादशाह मुसलमानों पर हुकूमत करता हुआ, उनकी बदख्वाही पर फौत हुआ, उसके लिए जन्नत हराम है।

फायदे: एक रिवायत में है कि जो किसी का अमीर बनाया गया और उसने अदलो-इन्साफ से काम न लिया तो उसे औंधे मुंह जहन्नम में फैंका जायेगा। जुल्म करने वाले हुक्मरानों के लिए उसमें सख्त वईद है। (फतहुलबारी 13/138)

٤ - باب: مَنْ شَاقَّ شَقَّ الله عَلَيْهِ

बाब 4: जिसने लोगों को परेशानी में डाला, अल्लाह उसे परेशानी में डालेगा।

٢٢٠٣ : عَنْ جُنْدُبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ ٱللهُ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، قَالَ: وَمَنْ يُشَاقِقْ يَشْقُقِ ٱللهُ عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ).

فَقَالُوا: أَوْصِنَا. فَقَالَ: إِنَّ أَوَّلَ ما يُنْتِنُ مِنَ الإنْسَانِ بَطْنُهُ، فَمَنِ ٱسْتَطَاعَ أَنْ لَا يَأْكُلَ إِلَّا طَيِّبًا فَلْيَفْعَلْ، وَمَنِ ٱسْتَطَاعَ أَنْ لَا يُحَالَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ مِلْءُ كَفِّهِ مِنْ دَمٍ أَهْرَاقَهُ فَلْيَفْعَلْ. [رواه البخاري: ٧١٥٢]

2203: जुन्दुब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे, जिसने लोगों को सुनाने के लिए नेक काम किया, अल्लाह उसकी रियाकारी कयामत के दिन सुना देंगे और जिसने लोगों पर परेशानी डाली, अल्लाह तआला भी कयामत के दिन उस पर सख्ती करेंगे। लोगों ने कहा, मजीद वसीअत फरमाई! तो आपने फरमाया, पहले इन्सान के जिस्म में से जो चीज खराब होती है और बिगड़ती है, वो उसका पेट है। अब जिस आदमी से हो सके, वो पेट में

हलाल लुकमा ही डाले और जिससे हो सके वो चूल्लूभर खून बेकार में ही बहाकर जन्नत में जाने से अपने आपको न रोके।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि ऐ अल्लाह! जिस आदमी को मेरी उम्मत के मामलात सुपुर्द किये जायें, अगर वो उन पर बिना वजह सख्ती करे तो उसका सख्त हिसाब लेना। (औनुलबारी 5/599)

बाब 5: हाकिम का गुस्से की हालत में फैसला करना या फतवा देना।

٥ - باب: هَلْ يَقْضِي الْقَاضِي أَوْ يُفْتِي وَهُوَ غَضْبَانُ؟

2204: अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, कोई दो आदमियों का फैसला उस वक्त न करे, जबकि वो गुस्से में हो।

٢٢٠٤ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَقْضِيَنَّ حَكَمٌ بَيْنَ ٱثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ). [رواه البخاري: ٧١٥٨]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा दूसरे लोगों को गुस्से की हालत में फैसला करना मना है। इसी तरह सख्त भूख, प्यास और नींद आने के वक्त फैसला नहीं करना चाहिए, क्योंकि उससे फैसले की ताकत कमजोर हो जाती है। (औनुलबारी 5/600)

बाब 6: मुन्शी कैसा होना चाहिए।

٦ - باب: مَا يُسْتَحَبُّ لِلْكَاتِبِ

2205: सहल बिन अबी हसमा रजि. के तरीक से हुवैयसा और मुहय्यासा का किस्सा (हदीस नम्बर 1343) किताबुल जिहाद में गुजर चुका है। यहां इस रिवायत में इतना इजाफा है कि रसूलुल्लाह

٢٢٠٥ : حَديث حوَيِّصَة ومُحَيِّصَة تَقَدَّمَ فِي الجِهَادِ، وَزَادَ هُنَا: (إِمَّا أَنْ يَدُوا صَاحِبَكُمْ، وَإِمَّا أَنْ يُؤْذِنُوا بِحَرْبٍ). (راجع: ١٣٤٣) [رواه البخاري: ٧١٦٢ وانظر حديث رقم: ٣١٧٣]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तो यहूदी तुम्हारे साथी की बैअत दे या फिर लड़ाई के लिए तैयार हो जायें।

फायदे: इमाम बुखारी ने इस हदीस पर जो उनवान कायम किया है, उसमें तीन बातें हैं 1. महरशुदा खत पर गवाही देना, 2. हाकिम वक्त का अपने मातहत अमला को खत लिखना, 3. एक काजी का दूसरे काजी को अपने फैसले से आगाह करना, लेकिन इस किताब के लेखक ने इस उनवान को मुख्तसर कर दिया है। जिससे यह बात वाजेह नहीं होती है। बहरहाल तहरीर पर अमल करना किताबो सुन्नत से साबित है। इस हदीस का आगाज भी यूं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले खैबर को खत लिखा कि मकतूल की बैअत दो या जंग के लिए तैयार हो जाओ। (औनुलबारी 5/602)

बाब 7: इमाम लोगों से किसलिए बैअत ले।

٧ - باب: كَيفَ يُبَايِعُ الإِمامُ النَّاس

2206: उबादा बिन सामित रजि. की हदीस (18) पहले गुजर चुकी है। जिसमें उन्होंने फरमाया कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म सुनने और मानने पर बैअत की। इसमें इतना इजाफा है कि यह भी कहा, जहां कहीं भी होंगे, हक बात कहेंगे। या हक बात पर कायम रहेंगे और अल्लाह की राह में हम किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे।

٢٢٠٦ : حديث عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: بَايَعْنَا رَسُولَ ٱللهِ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ، تقدَّم وزاد في هٰذِهِ الرِّوايَةِ: وَأَنْ نَقُومَ، أَوْ نَقُولَ بِالحَقِّ حَيْثُمَا كُنَّا، لاَ نَخَافُ فِي ٱللهِ لَوْمَةَ لاَئِمٍ. [رواه البخاري: ٧٢٠٠]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि हाकिम वक्त के नज्म की पाबन्दी जरूरी है। चाहे तबीयत के मुवाफिक हो या उसे नागवार गुजरे।

(औनुलबारी 5/603)

2207: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस अम्र पर बैअत करते कि आप का हुक्म सुनेंगे और मानेंगे तो आप फरमाते, यूं कहो, ''जहां तक मुमकिन होगा।''

٢٢٠٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا إِذَا بَايَعْنَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ يَقُولُ لَنَا: (فِيمَا ٱسْتَطَعْتُمْ). [رواه البخاري: ٧٢٠٢]

फायदे: बुखारी की एक रिवायत में है कि हाकिम वक्त की सुनने और मानने पर बैअत लेते वक्त हजरत जुरैर रजि. को बतौर खास यह कलमा तलकीन फरमाया कि मुमकिन हद तक पाबन्दी करूंगा। इससे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर मामले में उम्मत पर आसानी को पेशे नजर रखा है। (औनुलबारी 5/667)

बाब 8: खलीफा मुकर्रर करना।

٨ - باب: الاسْتِخلاف

2208: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया, जब उमर रजि. जख्मी हुए तो उनसे कहा गया, आप कोई अपना जानशीन मुकर्रर नहीं करेंगे? तो उन्होंने फरमाया, अगर मैं खलीफा मुकर्रर करूंगा तो जो मुझ से बेहतर थे, वो खलीफा मुकर्रर करके गये थे और अगर मैं किसी को खलीफा न बनाऊं तो यह भी हो सकता है। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी को खलीफा नामजद नहीं किया था और वो मुझ से कहीं बेहतर थे।

٢٢٠٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ لِعُمَرَ: أَلاَ تَسْتَخْلِفُ؟ قَالَ: إِنْ أَسْتَخْلِفْ فَقَدِ ٱسْتَخْلَفَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي أَبُو بَكْرٍ، وَإِنْ أَتْرُكْ فَقَدْ تَرَكَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٧٢١٨]

फायदे: हजरत उमर रजि. की अहतेयात मुलाहिजे के काबिल है कि उन्होंने खिलाफत के बारे में ऐसा तरीककार वजा फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू बकर रजि. दोनों की सुन्नत को

कायम रखा जो छः रूकनी कमेटी तशकील फरमा दी कि उनसे किसी एक को चुन लिया जाये। (औनुलबारी 5/668)

बाब 9: ٩ - باب

٢٢٠٩ : عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (يَكُونُ ٱثْنَا عَشَرَ أَمِيرًا). فَقَالَ كَلِمَةً لَمْ أَسْمَعْهَا، فَقَالَ أَبِي: إِنَّهُ قَالَ: (كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ). [رواه البخاري: ٧٢٢٢، ٧٢٢٣]

2209: जाबिर बिन समरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, मेरी उम्मत में बारह अमीर होंगे। उसके बाद कुछ इरशाद फरमाया, जिसे मैं नहीं सुन सका। तो मेरे बाप (हजरत समरा रजि.) ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया था कि यह सब कुरैश में से होंगे।

फायदेः इस हदीस के मिस्दाक से मुताल्लिक मुहद्दशीन किराम के मुख्तलिफ अकवाल हैं। राजेह बात यही है कि उनकी तअईन के बारे में अल्लाह तआला ही बेहतर जानते हैं। अलबत्ता उनकी हकूमत के बारे में दो बातें तयशुदा हैं। पहली हुकूमते मुतफिक्का होगी, दूसरी दीने इस्लाम को खूब उरूज हासिल होगा। मुख्तलिफ रिवायत में इसकी सराहत मौजूद है। (औनुलबारी 5/676)



किताबुत्तमन्नी

आरज़ूओं के बयान में

बाब 1: कौनसी तमन्ना मना है?

١ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّمَنِّي

2210: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, अगर मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह न सुना होता कि मौत की आरजू न करो तो मैं उसकी जरूर आरजू करता।

٢٢١٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَوْلاَ أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ تَتَمَنَّوُا المَوْتَ). لَتَمَنَّيْتُ. [رواه البخاري: ٧٢٣٣]

फायदे: अगर किसी मुसलमान को अपने दीन की खराबी या किसी फितने में मुब्तला होने का डर हो तो मौत की आरजू करना जाईज है। जैसा कि एक रिवायत में इसकी वजाहत है। (औनुलबारी 5/678)

2211: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुममें से कोई मौत की तमन्ना न करे। क्योंकि वो नेक है तो और नेकियां करेगा और अगर बदकार है तो तब भी शायद तौबा कर ले।

٢٢١١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ المَوْتَ، إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ يَزْدَادُ، وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ يَسْتَعْتِبُ). [رواه البخاري: ٧٢٣٥]

फायदे: मौत की तमन्ना उसके लिए मना किया गया है कि उसमें जिन्दगी की नैमतों को गिरी नजर से देखना है। और अल्लाह के फैसले

और उसकी तकदीर से इनकार करना है जो अल्लाह तआला को पसन्द नहीं। (औनुलबारी 5/678)



किताबुल इतिसामे बिलकिताबी वस्सुन्नती

किताबो सुन्नत को मजबूती से थामना

बाब 1: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों की पैरवी करना।

١ - باب: الاقْتِدَاءُ بِسُنَنِ رَسُولِ الله ﷺ

2212: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि अल्लाह ने फरमाया, मेरी उम्मत के सब लोग जन्नत में दाखिल होंगे मगर जो इनकार करेगा? सहाबा किराम रजि. ने कहा, वो कौन है जो इनकार करेगा। तो आपने फरमाया, जिसने मेरी इताअत की वो तो जन्नत में दाखिल होगा और जिसने मेरी नाफरमानी की तो उसने गोया इनकार किया।

٢٢١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى). قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَمَنْ يَأْبَى؟ قَالَ: (مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى). [رواه البخاري: ٧٢٨٠]

फायदे: एक रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को अल्लाह तआला की इताअत करार दिया गया है। मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि अल्लाह तआला का एक मुस्तनद नुमाईनदा हैं। इसलिए उनकी इताअत व फरमाबरदारी एक एथोरिटी की हैसियत रखती है। और अल्लाह तआला का फरमान है "जिसने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की।"

2213: जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में कुछ फरिश्ते हाजिर हुए, जिस वक्त कि आप आराम फरमा रहे थे। कुछ फरिश्तों ने कहा, यह इस वक्त सो रहे हैं। कुछ ने कहा, उनकी सिर्फ आंख सोती है, मगर दिल जागता रहता है। फिर उन्होंने कहा, तुम्हारे इस हजरत यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक मिसाल है, वो मिसाल बयान करो। तो कुछ फरिश्तों ने कहा, वो सो रहे हैं और कुछ ने कहा, नहीं सिर्फ आंख सोती है, मगर दिल जागता रहता है। फिर वो कहने लगे, इसकी मिसाल उस आदमी की तरह है, जिसने एक घर बनाया। फिर लोगों की दावत के लिए खाना तैयार किया। अब एक आदमी को दावत देने के लिए भेजा। पस जिन आदमी ने उस बुलाने वाले के कहने को कबूल किया वो मकान में दाखिल होगा और खाना खायेगा और जो बुलाने वाले के कहने को कबूल न करेगा, वो न तो मकान में दाखिल होगा, न खाना खा सकेगा। फिर उन्होंने कहा, इसकी वजाहत करो ताकि वो समझ लें। तो कुछ कहने लगे, यह सो रहे हैं और कुछ ने कहा, सिर्फ आंखें सोती हैं और दिल जागता रहता है। फिर कहने लगे वो मकान जन्नत है और बुलाने वाले हजरत

٢٢١٣ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جاءَتْ مَلاَئِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ نَائِمٌ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هٰذَا مَثَلًا، فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلًا، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ، وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا، وَجَعَلَ فِيهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا، فَمَنْ أَجَابَ ٱلدَّاعِيَ دَخَلَ ٱلدَّارَ وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ ٱلدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، فَقَالُوا: أَوِّلُوهَا لَهُ يَفْقَهْهَا، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: فَالدَّارُ الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ أَطَاعَ ٱللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى ٱللهَ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ فَرَّقَ بَيْنَ النَّاسِ. [رواه البخاري: ٧٢٨١]

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। जिसने हजरत मुहम्मत की इताअत की, उसने जैसे अल्लाह की इताअत की और जिसने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी की, उसने अल्लाह तआला की नाफरमानी की। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गोया अच्छे को बुरे से अलग करने वाले हैं।

फायदे: इस हदीस का आखरी हिस्सा बड़ा मायने खेज है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अच्छे को बुरे से अलग करने वाले हैं, यानी मौमिन और काफिर नेक और बद सआदतमन्द और बदबख्त के बीच खत इम्तेयाज खींचने वाले हैं। (औनुलबारी 5/687)

बाब 2: ज्यादा सवाल करने और बेफायदा तकल्लुफ का बयान।

٢ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنْ كَثْرَةِ السُّؤَالِ وَمَنْ تَكَلُّفَ مَا لاَ يَعْنِيهِ

2214: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, लोग बराबर सवालात करते रहेंगे। यहां तक कि यह भी कहेंगे, यह अल्लाह है, जिसने हर चीज को पैदा किया है तो अल्लाह को किसने पैदा किया है?

٢٢١٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَنْ يَبْرَحَ النَّاسُ يَتَسَاءَلُونَ حَتَّى يَقُولُوا: هٰذَا ٱللهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ، فَمَنْ خَلَقَ ٱللهَ؟). [رواه البخاري: ٧٢٩٦]

फायदे: एक रिवायत में है कि ऐसे शैतानी वसवसे के वक्त इन्सान को चाहिए कि अल्लाह की पनाह में आये, बायीं तरफ थूक दे और "आमन्तु बिल्लाहि वरसूलीहि" कहता हुआ उस ख्याल से अपने आपको रोक ले। (औनुलबारी 5/688)

बाब 3: राय देने और बेकार में ही कयास (अकल लगाने) करने की मजम्मत।

٣ - باب: مَا يُذْكَرُ مِنْ ذَمِّ الرَّأْيِ وَتَكَلُّفِ القِيَاسِ

2215: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, अल्लाह यूं नहीं करेगा कि तुम्हें इल्म देकर फिर यूं ही छीन ले। बल्कि इल्म इस तरह उठायेगा कि उलेमा हजरात फौत हो जायेंगे। उनके साथ ही इल्म चला जायेगा और कुछ जाहिल लोग रह जायेंगे, उनसे फतवा लिया जायेगा तो वो महज अपनी राय से फतवा देकर खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।

٢٢١٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ ٱللهَ لاَ يَنْزِعُ الْعِلْمَ بَعْدَ أَنْ أَعْطَاهُمُوهُ ٱنْتِزَاعًا، وَلٰكِنْ يَنْتَزِعُهُ مِنْهُمْ مَعَ قَبْضِ الْعُلَمَاءِ بِعِلْمِهِمْ، فَيَبْقَى نَاسٌ جُهَّالٌ، يُسْتَفْتَوْنَ فَيُفْتُونَ بِرَأْيِهِمْ، فَيَضِلُّونَ وَيُضِلُّونَ). [رواه البخاري: ٧٣٠٧]

फायदे: अगर किताबो सुन्नत में किसी मसले के बारे में कोई दलील न मिल सके तो भी इन्सान को इख्तियार करना चाहिए। रायजनी से बचते हुए अशबा न नजाइर पर गौर करे और पेश आने वाले मसले का हल तलाश करे। (औनुलबारी 5/694)

बाब 4: फरमाने नबवी: अलबत्ता तुम लोग भी पहले लोगों (यहूदी व नसारा) की पैरवी करोगे।

٤ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ»

2216: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत उस वक्त तक कायम न होगी, जब तक मेरी उम्मत भी पहली उम्मतों की चाल पर न चलेगी। बालिश्त के साथ बालिश्त और हाथ के साथ हाथ के

٢٢١٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَأْخُذَ أُمَّتِي بِأَخْذِ الْقُرُونِ قَبْلَهَا، شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ). فَقِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، كَفَارِسَ وَالرُّومِ؟ فَقَالَ: (وَمَنِ النَّاسُ إِلَّا أُولٰئِكَ). [رواه البخاري: ٧٣١٩]

बराबर की पैरवी करेगी। कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पहली उम्मतों से कौन मुराद हैं या फारसी और रोमी? आपने फरमाया, उनके अलावा और कौन लोग मुराद हो सकते हैं?

फायदे: एक रिवायत में है कि तुम लोग अपने से पहले लोगों यहूद व नसारा की पैरवी करोगे, मतलब यह है कि सियासत व कयादत में तुम फारीस और रूम के नक्शो कदम चलोगे और मजहबी शिकाफत व कलचरल में यहूदियों और ईसाईयों की पैरवी करोगे।

(औनुलबारी 5/697)

बाब 5: शादी शुदा जानी (बदकार मर्द व औरत) के लिए पत्थरों की सजा का बयान।

٥ - باب: الرَّجم للمُحْصَن

2217: उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, यकीनन अल्लाह तआला ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हक के साथ मबऊस फरमाया और अपनी किताब आप पर नाजिल फरमाई। चूनांचे इस नाजिल शुदा किताब में से आयते रज्म भी है।

٢٢١٧ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ ٱللهَ بَعَثَ مُحَمَّداً ﷺ بِالحَقِّ، وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الكِتَابَ، فَكَانَ فِيمَا أُنْزِلَ آيَةُ الرَّجْمِ [رواه البخاري: ٧٣٢٣]

फायदे: इमाम बुखारी इस हदीस को अहले हरमेन के इजमाअ की अहमियत बयान करने के लिए लाये हैं। क्योंकि इस हदीस में मदीना मुनव्वरा को दारे सुन्नत और दारे हिजरत कहा गया है। तो वहां के उलेमा का इज्माअ बड़ी अहमियत का हकदार है, बशर्ते कि किसी नस सरीह के मुखालिफ न हो। (औनुलबारी 5/699)

बाब 6: हाकिम सही या गलत इज्तेहाद करे, दोनों सूरतों में सवाब का हकदार है।

٦ - باب: أجرُ الحاكمِ إذا اجتهد فأصابَ أو أخطأ

2218: अम्रो बिन आस रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप फरमा रहे थे, जब हाकिम इज्तेहाद करके कोई हुक्म दे। अगर वो सही होता है तो उसके लिए दोगुना सवाब है और जब हुक्म लगाने में इज्तेहाद करता है और उसमें खता हो जाती है तो भी उसे एक अज्रो जरूर मिलेगा।

٢٢١٨ : عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا حَكَمَ الحَاكِمُ فَٱجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا حَكَمَ فَٱجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ). [رواه البخاري: ٧٣٥٢]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि हक एक होता है। उसको तलाश करने में अगर खता हो जाये तो तलाशे हक का सवाब बेकार नहीं होता या इस सूरत में होगा, जब मुजतहिद तलाशे हक के वक्त जानबूझकर नस सरीह या इज्माअ-ए-उम्मत की खिलाफवर्जी न करे। (औनुलबारी 5/602)

बाब 7: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किसी काम पर खामोश रहना हुज्जत (दलील) है। किसी दूसरे का हुज्जत नहीं है।

٧ - باب: مَنْ رَأى تَرْكَ النَّكِيرِ مِنَ النَّبِيِّ حُجَّةً لاَ مِنْ غَيْرِه

2219: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि वो इस बात पर कसम उठाते थे कि इब्ने सय्याद ही दज्जाल है। रावी कहता है कि मैंने उनसे कहा, तुम इस पर कसम क्यों उठाते हो? उन्होंने फरमाया, मैंने उमर रजि. को देखा, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने इस बात पर कसम

٢٢١٩ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَحْلِفُ بِٱللهِ: أَنَّ ٱبْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ، قُلْتُ: تَحْلِفُ بِٱللهِ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَحْلِفُ عَلَى ذٰلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ ﷺ. [رواه البخاري: ٧٣٥٥]

उठाते थे और आपने इस पर इनकार नहीं किया।

फायदे: हदीस तमीम दारी रजि. से मालूम होता है कि इब्ने सय्याद वो दज्जाल नहीं जिसे हजरत ईसा अलैहि. कत्ल करेंगे। इसलिए हजरत उमर रजि. की कसम पर रसूलुल्लाह का खामोश रहना इस हकीकत को साबित करता था कि इब्ने सय्याद भी उन दज्जालों से है जो कयामत से पहले रोनुमा होंगे। लेकिन दज्जाल अकबर के बारे में आपको यकीन था कि वो कयामत के नजदीक जाहिर होगा।



(फतहुलबारी 5/703)

❖❖❖

किताबुत्तौहीदि (वर्रद्दि अलल जहमियति वग़ैरिहिम)

तौहीद (की इत्तबाअ) और जहमिया वग़ैरह गुमराह फ़िरक़ों की तरदीद के बयान में

अल्लाह तआला की मार्फ़त दीने इस्लाम का महासिल है और अक़ीदा तौहीद इस मार्फ़त की असास (बुनियाद) है। तौहीद यह है कि अल्लाह तआला अपनी जातो सिफ़ात, उलूहियत व रबूबियत, उबूदीयत, वहाकिमयत और जुम्ला इख़्तियारात में अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। इस अक़ीदा तौहीद का तक़ाज़ा यह है कि किताब व सुन्नत में अल्लाह तआला के बारे में जो सिफ़ात वारिद हैं, उन्हें बिला कैफ़ियत व तमसील इसकी शायाने शान मब्नी बरहक़ीक़त तसलीम किया जाये। लेकिन कुछ मुलहिदीन ने दीने इस्लाम का लबादा औढ़ कर सिफ़ाते बारी तआला का इनकार कर दिया। जिनमें जहम बिन सफवान बर सरे फ़हरिस्त है। फ़िरका जहमिया इसकी तरफ़ मनसूब है। इमाम बुख़ारी ने किताबुत्तौहीद में इसी मौज़ूअ को लिया है और किताबो सुन्नत में जो सिफ़ात बयान हुई है, उन्हें पेश किया गया है। और उन लोगों की तरदीद फ़रमाई है जो इज्माअ उम्मत की आड़ में सिफ़ात बारी तआला का इनकार करते हैं। या उन्हें बर हक़ीक़त तसलीम करने की बजाये उनकी ग़लत तावील करते हैं।

बाब 1: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपनी उम्मत को तौहीद बारी तआला की तरफ़ बुलाना।

١ - باب: مَا جَاءَ فِي دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ إِلَى تَوْحِيدِ الله

2220. आइशा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को किसी लश्कर का सरदार बनाकर रवाना फरमाया। वो जब नमाज पढ़ाता तो अपनी किरअात "कुल हुवल्लाहु अहद" पर ख़त्म करता। फिर जब यह लोग वापिस हुए तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया, इससे पूछो कि वो ऐसा क्यों करता है? लोगों ने उससे पूछा तो उसने बताया कि इस सूरत में रहमान की सिफात हैं। जिसको तिलावत करना मुझे अच्छा लगता है। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इससे कह दो कि अल्लाह तआला उससे मुहब्बत करता है।

٢٢٢٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا عَلَى سَرِيَّةٍ، وَكَانَ يَقْرَأُ لِأَصْحَابِهِ فِي صَلاتِهِ فَيَخْتِمُ بِـ ﴿قُلْ هُوَ ٱللهُ أَحَدٌ﴾. فَلَمَّا رَجَعُوا ذَكَرُوا ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (سَلُوهُ لِأَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذٰلِكَ؟). فَسَأَلُوهُ فَقَالَ: لِأَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمٰنِ، وَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَقْرَأَ بِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَخْبِرُوهُ أَنَّ ٱللهَ يُحِبُّهُ). [رواه البخاري: ٧٣٧٥]

फ़ायदे: इस हदीस में दो चीजों का सबूत है, एक यह कि अल्लाह की सिफ़ात में जितना कि हदीस में इसकी सराहत है। बल्कि यह सूरत तो सिफ़ात बारी तआला पर ही मुश्तमिल है। दूसरी यह कि इस हदीस में अल्लाह तआला के लिए सिफ़ते मुहब्बत को साबित किया गया है। इस सिफ़त को बिला तावील मब्नी बर हक़ीक़त तस्लीम किया जाये। इस इरादा सवाब या नफ्स सवाब पर महमूल न किया जाये। हमारे अस्लाफ़ का सिफ़ात के मुताल्लिक़ यही मौक़ूफ़ है।

(शरह किताबुत्तौहीद: 1/65)

बाब 2: फ़रमाने इलाही: यक़ीनन अल्लाह ही रिज़्क़ देने वाला और वो बड़ी ताक़त वाला है।"

٢ - باب: قَوْلُهُ تَعالَى: ﴿إِنَّ ٱللهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلْقُوَّةِ ٱلْمَتِينُ﴾

2221: अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तकलीफ देह बात सुनकर सब्र करने वाला अल्लाह से बढ़कर और कोई नहीं है। कमबख्त मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है, मगर वो इन बातों के बावजूद उन्हें आफियत और रोजी अता फरमाता है।

٢٢٢١ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ما أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ، يَدْعُونَ لَهُ الوَلَدَ، ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ). [رواه البخاري: ٧٣٧٨]

फायदे: इस हदीस में सिफ़ते सब्र को बयान किया गया है, जो अल्लाह तआला के शायान शान है। निज अच्छे नामों में सबूर भी इस मायने में है। इस सब्र की सिफात से इसकी कुदरत का पता चलता है कि बन्दों की नाफरमानी पर कुदरत के बावजूद मुवाख्जा नहीं करता है बल्कि उन्हें सेहत व रिज्क से नवाजता है। लिहाजा उन सिफात में किसी तावील की गुंजाईश नहीं है। (शरह किताबुत्तौहीद: 1/102)

बाब 3: फरमाने इलाही: अल्लाह ही जबरदस्त और दाना है और तुम्हारा रब्बुल इज्जत उन ऐबों से पाक है जो यह बयान करते हैं। और इज्जत तो अल्लाह और उसके रसूल के लिए है।"

٣ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾ وقوله: ﴿سُبْحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ ٱلْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ﴾ وَقوله: ﴿وَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ﴾

2222: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं कहा करते थे, ऐ वो जात जिसके सिवा कोई माबूद हकीकी नहीं है, ऐ वो जात जिसे मौत नहीं आयेगी, जिन्न व

٢٢٢٢ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: (أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ، الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الَّذِي لَا يَمُوتُ، وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ يَمُوتُونَ). [رواه البخاري: ٧٣٨٣]

इन्सान सब मर जायेंगे, मैं तेरी इज्जत की पनाह मांगता हूं।

फायदेः इस हदीस से भी सिफात बारी तआला का इस्बात मकसूद है। इन्हीं सिफात में से एक सिफ्त इज्जत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस सिफ़त का वास्ता देकर अल्लाह की पनाह लेते थे। इसी तरह सिफात बारी तआला की कसम उठाना भी जायज़ है। यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा कायनात की हर चीज़ को फना से दोचार होना है। (शरह किताबुत्तौहिदः 1/152)

٤ - باب: قوله تعالى: ﴿وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ﴾. وقولُ الله تعالى: ﴿تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ﴾

बाब 4: फ़रमाने इलाहीः अल्लाह तआला तुम्हें अपने नफ़्स से डराता है। नीज़ फ़रमाने इलाहीः जो मेरे नफ़्स में है, वो तू जानता है और जो तेरे नफ़्स में है, मैं नहीं जानता।

٢٢٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَمَّا خَلَقَ اللهُ الخَلْقَ، كَتَبَ فِي كِتَابِهِ، وَهُوَ يَكْتُبُ عَلَى نَفْسِهِ، وَهُوَ وَضْعٌ عِنْدَهُ عَلَى العَرْشِ: إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي). [رواه البخاري: ٧٤٠٤]

2223: अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जब अल्लाह तआला ने मख्लूक को पैदा किया तो अपनी किताब में लिखा है। उसने अपने नफ्स पर लाजिम करार दिया है कि मेरी रहमत मेरे गुस्से पर गालिब है। यह लिखा हुआ अर्श पर उसने अपने पास रखा है।

फायदेः आयते करीमा और हदीस मुबारक में जात बारी तआला के लिए लफ्ज नफ्स का इस्तेमाल हुआ है। इससे मुराद जात मुकद्दसा है जो आला सिफात की हामिल है। कुछ लोगों ने इससे सिफात के बगैर सिर्फ

जात मुराद ली है जो गलत है। अल्लामा इब्ने तैमिया ने वजाहत के साथ इसे बयान किया है। (शरह किताबुत्तौहीदः 1/255)

2224: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद गरामी है, मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं। अगर वो मुझ को याद करता है तो मैं (अपने इल्म और फजलो करम से) उसके साथ होता हूं। अगर उसने मुझे अपने नफ्स में याद किया तो मैं भी उसे अपने नफ्स में याद करूंगा। अगर वो मुझे जमात में (ऐलानिया) याद करता है तो मैं भी उससे बेहतर जमात (फरिश्तों) में याद करता हूँ। अगर वो मेरी तरफ एक बालिस्त आता है तो मैं उसकी तरफ एक गज नजदीक होता हूं। अगर वो एक गज मुझ से करीब होता है तो मैं दो गज उससे नजदीक होता हूं। अगर वो मेरे पास चलता हुआ आये तो मैं दौड़ता हुआ उसके पास आता हूं।

٢٢٢٤ . وعنهُ رضي اللهُ عنهُ قالَ: قالَ النبيُّ ﷺ (يقولُ اللهُ تعالى: أنا عندَ ظنِّ عبدي بي، وأنا معَهُ إذا ذكرَني، فإنْ ذكرَني في نفسِهِ ذكرتُهُ في نفسي، وإنْ ذكرَني في ملإٍ ذكرتُهُ في ملإٍ خيرٍ منهُمْ، وإنْ تقرَّبَ إليَّ شبرًا تقرَّبْتُ إليهِ ذراعًا، وإنْ تقرَّبَ إليَّ ذراعًا تقرَّبْتُ إليهِ باعًا، وإنْ أتاني يمشي أتيتُهُ هرولةً). [رواه البخاري: ٧٤٠٥]

फायदेः इस हदीस में भी नफ्स को जात बारी तआला के लिए साबित किया गया है। मतलब यह है कि अगर बन्दा पोशीदा तौर पर अपने दिल में अपने रब को याद करता है तो अल्लाह भी उसे इस तौर पर याद करता हैं कि किसी को खबर तक नहीं होती और अगर बन्दा ऐलानिया तौर पर भरी मजलिस में अल्लाह को याद करता है तो अल्लाह तआला भी उससे आला और अफजल मजलिस में उसका तजकिरा करते हैं। (शरह किताबुत्तौहीद 1/267)

٥ - باب: قول الله تعالى: ﴿يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ﴾

बाब 5: फरमाने इलाहीः यह चाहते हैं कि उसकी कलाम को बदल डालें।

٢٢٢٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (يَقُولُ ٱللهُ: إِذَا أَرَادَ عَبْدِي أَنْ يَعْمَلَ سَيِّئَةً فَلَا تَكْتُبُوهَا عَلَيْهِ حَتَّى يَعْمَلَهَا، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا بِمِثْلِهَا، وَإِنْ تَرَكَهَا مِنْ أَجْلِي فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَعْمَلَ حَسَنَةً فَلَمْ يَعْمَلْهَا فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا لَهُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةٍ). [رواه البخاري: ٧٥٠١]

2225: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला का इरशादगरामी है, जब मेरा बन्दा कोई बुराई करने का इरादा करता है (तो अल्लाह फरिश्तों से कहता है) अभी इस पर गुनाह मत लिखो, जब तक कि उसका इरतकाब न करे। अगर इरतकाब करे तो उतना ही लिखो, जितना उसने किया है (एक के बदले एक गुनाह) और अगर मुझ से डरते हुए उसे छोड़ दे तो उसको भी एक नेकी तहरीर करो और अगर कोई नेकी करने का इरादा करे। मगर उसे अमल में न ला सके तो भी उसके लिए एक नेकी लिख दो। अगर करे तो दस नेकियों से लेकर सात सौ नेकियां तक लिखो।

फायदेः यह हदीसे कुदसी है और इससे अल्लाह तआला की सिफ़त कलाम को साबित किया गया है और यह कलाम कुरआन करीम के अलावा भी हो सकती है और कलामे इलाही गैर मख्लूक है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई मुसलमान अल्लाह से डरते हुए गुनाह से बचता है, उसके लिए एक कामिल नेकी लिख दी जाती है। इसका मतलब यह है कि अगर लोगों से डरते हुए या आजिजी या किसी और वजह से बुराई का इरतकाब नहीं कर पाता है तो उसे नेकी का सवाब नहीं मिलेगा। बल्कि मुमकिन है कि उसकी बदनियती का जुर्म उसके नाम-ए-आमाल में लिख दिया जाये।

(शरह किताबुत्तौहीदः 2/380, 379)

٢٢٢٦ . وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ عَبْدًا أَصَابَ ذَنْبًا، وَرُبَّمَا قَالَ: أَذْنَبَ ذَنْبًا، فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ ذَنْبًا، وَرُبَّمَا قَالَ: أَصَبْتُ، فَٱغْفِرْ، فَقَالَ رَبُّهُ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ ٱلذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي، ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ ٱللهُ ثُمَّ أَصَابَ ذَنْبًا، أَوْ أَذْنَبَ ذَنْبًا، فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ - أَوْ أَصَبْتُ - آخَرَ فَٱغْفِرْهُ؟ فَقَالَ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ ٱلذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي، ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ ٱللهُ، ثُمَّ أَذْنَبَ ذَنْبًا، وَرُبَّمَا قَالَ: أَصَابَ ذَنْبًا، قَالَ: رَبِّ أَصَبْتُ - أَوْ قَالَ: أَذْنَبْتُ - آخَرَ فَٱغْفِرْهُ لِي، فَقَالَ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ ٱلذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي، ثَلَاثًا، فَلْيَعْمَلْ مَا شَاءَ). [رواه البخاري: ٧٥٠٧]

2226: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे कि जब बन्दा गुनाह को पहुंचता है या यूं कहा जब बन्दा गुनाह करता है, फिर कहता है, ऐ रब! मैंने गुनाह किया है या यूं कहा कि मैं गुनाह को पहुंचा हूं तो अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दे को मालूम है कि कोई उसका रब है जो गुनाह बख्श्ता है और उसका मुवाख्जा करता है। लिहाजा मैंने अपने बन्दे को बख्श दिया। फिर थोड़ी देर तक जिस कद्र अल्लाह ने चाहा, वो ठहरा रहा। फिर वो गुनाह को पहुंचा या उसने गुनाह किया। फिर परवरदिगार से कहने लगा, परवरदिगार! मैंने गुनाह किया या मैं गुनाह को पहुंचा हूं तू उसे माफ कर दे। तो अल्लाह फरमाता है, मेरा बन्दा जानता है कि उसका एक मालिक है जो उनको बख्शता है और गुनाहों पर सजा भी देता है। अच्छा मैंने उसे माफ कर दिया। फिर थोड़ी देर तक जिस कद्र अल्लाह को मन्जूर था, वो बन्दा ठहरा रहा। उसके बाद वो ज्यादा गुनाह को पहुँचा या उसने गुनाह किया। अब फिर परवरदिगार से कहने लगा, ऐ रब! मुझसे गुनाह हो गया या मैं गुनाह को पहुंचा हूं तू उसे माफ कर दे। इस पर अल्लाह तआला फरमाता है, मेरा बन्दा जानता है कि उसका एक मालिक है जो गुनाह बख्शता है और गुनाह पर सजा भी देता है। लिहाजा मैंने अपने

बन्दे को तीन बार ही माफ कर दिया, अब वो जैसे चाहे काम करे (मैं तो उसकी मगफिरत कर चुका)।

फायदे: इस हदीस से भी अल्लाह तआला की सिफ्ते कलाम को साबित करना है। जैसा कि पहले जिक्र हो चुका है। नीज़ यह हदीस बार बार गुनाह करने की गुंजाईश पैदा नहीं करती, क्योंकि गुनाह पर इसरार करना बहुत संगीन जुर्म है, बल्कि इस हदीस का मतलब यह है कि इन्सान गुनाह से माफी मांगने के बाद अगर फिर अपने नफ्स के हाथों मजबूर होकर या शैतान की वसवसा अन्दाजी से परेशान होकर गुनाह कर बैठता है, फिर अल्लाह के अजाब से डरते हुए उसके सामने अपने आपको पेश कर देता है तो अल्लाह उसे माफ कर देते हैं। अगर कोई जुबान से माफी मांगता है, लेकिन दिल में गुनाह का अजम लिए होता है तो उसके लिए कतअन माफी नहीं है। (शरह किताबुत्तौहीद 2/396)

بَاب ٦ : كَلَامُ الرَّبِّ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الأَنْبِيَاءِ وَغَيْرِهِم

बाब 6: अल्लाह का कयामत के दिन अम्बिया अलैहि० और दूसरे लोगों से हमकलाम होना।

٢٢٢٧ . عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ شُفِّعْتُ، فَقُلْتُ: يَا رَبِّ أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ خَرْدَلَةٌ، فَيَدْخُلُونَ، ثُمَّ أَقُولُ: أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنَى شَيْءٍ). فَقَالَ أَنَسٌ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى أَصَابِعِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٧٥٠٩]

2227: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। आप फरमा रहे थे, जब कयामत के दिन मेरी सिफारिश कबूल की जायेगी तो मैं अर्ज करूंगा, ऐ परवरदिगार जिसके दिल में जरा-सा भी ईमान हो, उसे भी जन्नत में दाखिल फरमा। अनस रजि. फरमाते हैं कि जैसे मैं रसूलुल्लाह की अंगुलियों को देख रहा हूँ। (जिनसे आपने समझाया कि इतने थोड़े ईमान पर भी मैं सिफारिश करूंगा।)

फ़ायदे: यह हदीस उनवान के मुताबिक़ नहीं, क्योंकि इसमें अल्लाह तआला का अम्बिया अलैहि॰ से हमकलाम होने का ज़िक्र नहीं है। शायद इमाम बुख़ारी ने हस्बे आदत दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जो हाफ़िज़ अबू नईम ने अपनी मुस्तख़रज में बयान किया है कि मुझसे कहा जायेगा। यानी परवरदीगार फ़ रमायेगा, जिसके दिल में एक जौ बराबर ईमान है या दाना राई के बराबर ईमान है, या कुछ भी ईमान है तो आप उसे जहन्नम से निकाल सकते हैं।

 (फ़तहुलबारी 13/483)

٢٢٢٨ : وعَنْهُ رَضِي ٱللهُ عَنْهُ قالَ: ذَكَرَ حَدِيثَ الشَّفَاعَةِ وقَدْ تَقَدَّم مُطَوَّلًا مِنْ رِوايَةِ أَبي هُرَيْرَة، وزادَ هنا في آخِرِهِ: فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِن عَلَيْكُمْ بِمُحَمَّدٍ ﷺ، فَيَأْتُونِي، فَأَقُولُ: أَنَا لَهَا، فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي، وَيُلْهِمُني مَحامِدَ أَحْمَدُهُ بِهَا لَا تَحْضُرُني الآنَ، فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ المَحَامِدِ، وَأَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا، فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ٱرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَٱشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُولُ: يَارَبِّ، أُمَّتِي أُمَّتِي، فَيُقَالُ: ٱنْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ شَعِيرَةٍ مِنْ إِيمانٍ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ، ثُمَّ أَعُودُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ المَحامِدِ ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا، فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ٱرْفَعْ رَأْسَكَ، وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَٱشْفَعْ تُشَفَّعْ،

2228: अनस रज़ि॰ से मरवी हदीसे शिफ़ाअत जो अबू हुरैरा के तरीक से तफ़सीलन (1751) पहले गुज़र चुकी है, यहां आख़िर में सिर्फ़ इतना इज़ाफ़ा है कि फिर लोग ईसा अलैहि॰ के पास आयेंगे। वो कहेंगे, मैं इस काम के काबिल नहीं। तुम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ। चूनांचे सब लोग मेरे पास आयेंगे। तो मैं कहूंगा, हां, मैं इस काम का सज़ावार हूं। और मैं अपने परवरदिगार के पास जाकर इजाज़त मांगूगा। मुझे इजाजत मिल जायेगी और उस वक्त ऐसा होगा कि परवरदिगार मेरे दिल में ऐसे ऐसे तारीफी कलमात डालेगा जो इस वक्त मुझे याद नहीं हैं। मैं उन कलमात से अल्लाह की तारीफ करूंगा और उसके सामने

فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي، فَيُقَالُ: انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ أَوْ خَرْدَلَةٍ مِنْ إِيمَانٍ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ، ثُمَّ أَعُودُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا، فَيُقَالُ يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ، وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي، فَيَقُولُ: انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنَى أَدْنَى أَدْنَى مِثْقَالِ حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجْهُ مِنَ النَّارِ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ). [رواه البخاري: ٧٥١٠ وانظر حديث رقم: ٣٣٤٠]

सज्दारैज़ हो जाऊंगा। इरशाद होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अपना सर उठाओ, जो आप कहेंगे हम सुनेंगे, आप जो मांगेगे हम देंगे और आप जो सिफ़ारिश करेंगे, हम उसे कबूल करेंगे। मैं कहूंगा, ऐ परवरदिगार! मेरी उम्मत पर रहम कर, मेरी उम्मत पर रहम कर। इरशाद होगा दोजख की तरफ जाओ, जिसके दिल में जौं के बराबर भी ईमान हो, उसे निकाल लाओ। चूनांचे मैं जाकर उन्हें निकाल लाऊंगा। फिर वापिस आऊंगा और वही तारीफ़ और हम्द बजा लाकर सज्दे में गिर पडूंगा। इरशाद होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना सर उठाओ, बात कहो, उसे सुना जायेगा, मांगों दिया जायेगा, सिफ़ारिश करो, उसे शर्फ़े क़बूलियत से नवाज़ा जायेगा। मैं अर्ज़ करूंगा, परवरदिगार! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, मेरी उम्मत पर मेहरबानी फ़रमा। इरशाद होगा, जाओ और जिसके दिल में जर्रा या राई के बराबर भी ईमान हो, उसे भी दोज़ख से निकाल लाओ। तब मैं उन्हें निकाल लाऊंगा। मैं फिर वापिस आऊंगा और वही तारीफ़ बजा लाकर सज्दा रैज हो जाऊंगा। हुक्म होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अपना सर उठाओ और कहो, सुना जायेगा, मांगो दिया जायेगा और सिफ़ारिश करो, कबूल की जायेगी। मैं कहूंगा, ऐ परवरदिगार मेरी उम्मत पर रहम कर, मेरी उम्मत पर मेहरबानी फ़रमा। इरशाद होगा, जाओ, जिनके दिल में राई के दाने से भी कम ईमान हो, उनको भी दोजख से निकाल लाओ। चूनांचे मैं जाकर उन्हें भी निकाल लाऊंगा।

फायदे: मालूम हुआ कि कयामत के दिन वो सिफारिश करेगा, जिसको अल्लाह तआला इजाजत देंगे। और उन लोगों के लिए सिफारिश होगी, जिनके बारे में अल्लाह इजाजत देंगे। निज सिफारिश करने वाला जिन्दा हाजिर होगा। इससे उन लोगों की तरदीद होती है जो मुर्दो से सिफारिश की उम्मीद लगाये बैठे हैं। यही वो शिर्क था जिससे हजरात अम्बिया अलैहि. ने लोगों को खबरदार किया है।

 (शरह किताबुत्तौहीद 2/408)

٢٢٢٩ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ: (ثُمَّ أَعُودُ الرَّابِعَةَ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا)، فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ، وَقُلْ يُسْمَعْ، وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُولُ: يَا رَبِّ ائْذَنْ لِي فِيمَنْ قَالَ لاَ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، فَيَقُولُ: وَعِزَّتِي وَجَلاَلِي وَكِبْرِيَائِي وَعَظَمَتِي لأُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ لاَ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ). [رواه البخاري: ٧٥١٠]

2229: अनस रजि. से ही एक रिवायत में है कि फिर मैं चौथी बार जाऊंगा और उन्हें तारीफी कलमात से तारीफ करके सज्दारैज हो जाऊंगा। तो इरशाद होगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अपना सर उठाओ और कहो सुना जायेगा, मांगो दिया जायेगा, और सिफारिश करो, उसे शर्फे कबूलीयत से नवाजा जायेगा। तो मैं कहूंगा, ऐ परवरदिगार! मुझे उन लोगों को निकालने की भी इजाजत दीजिए जिन्होंने दुनिया में सिर्फ 'ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा हो, परवरदीगार फरमायेगा, मुझे अपनी इज्जत और जलालत और बुजुर्गी की कसम! मैं खुद ऐसे लोगों को दोजख से निकालूंगा जिन्होंने ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा है।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला फरमायेंगे, यह आपका काम नहीं बल्कि ऐसे लोगों को दोजख से निकालना मेरा काम है। एक और रिवायत में है कि अल्लाह तआला फरमायेंगे, फरिश्तों, नबियों और अहले ईमान ने अपनी सिफारिशात से लोगों को

जहन्नम से निकाला है। अब अर्रहमुर्राहिमीन की बारी है। फिर अल्लाह तआला ऐसे लोगों को जहन्नम से निकालेंगे जिन्होंने असल ईमान के बाद कभी अच्छा काम न किया था। इस हदीस से मुअतजला और ख्वारिज की तरदीद होती है, जो कहते हैं कि बड़े गुनाहों के करने वाले हमेशा जहन्नम में रहेंगे और उन्हें किसी की सिफारिश काम नहीं देगी। (औनुलबारी 5/744)

बाब 7: कयामत के दिन आमाल व अकवाल के वजन का बयान।

٧ - باب: مِيزَانُ الأَعْمَالِ والأَقْوَالِ يَوْمَ القِيَامَةِ

2230: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, दो कलमें ऐसे हैं जो रहमान को बहुत प्यारे हैं और जुबान पर बड़े हल्के फुल्के (लेकिन कयामत के दिन) तराजू में भारी और वजनी होंगे। वो यह हैं "सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही सुब्हानल्लाहिलअजीम"

٢٢٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (كَلِمَتَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمٰنِ، خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ: سُبْحَانَ ٱللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ ٱللهِ العَظِيمِ). [رواه البخاري: ٧٥٦٣]

फायदे: इमाम बुखारी का इस हदीस से असल मकसद यह है कि औलाद आदम के आमाल व अकवाल अल्लाह तआला के पैदा किये हुए हैं और इन्हीं अकवाल व आमाल को कयामत के दिन मैजाने अदल में रखा जायेगा। और इस पर जजा व सजा मुरत्तब होगी। कुरआन करीम की किराअत भी इन्सान का जाति अमल है। अगरचे अल्लाह की कलाम गैर मख्लूक है। फिर भी इन्सानी बात और तलफ्फुज़ गैर मख़्लूक नहीं है। इसी तरह तस्बीह व तहमीद और दूसरे अज़कार व औराद भी जब इन्सान की ज़ुबान से अदा होगें तो उन्हें तराज़ू में तौला जायेगा। चूंकि हदीस में है कि मजालिस को अल्लाह की तस्बीह से ख़त्म किया जाये,

इसलिए इमाम बुखारी ने भी अपनी मजलिसे इल्म को अल्लाह की तस्बीह से खत्म किया है। वाजेह रहे कि दो गिरोहों के आमाल व अकवाल का वजन नहीं किया जायेगा। एक वो कुफ्फार जिनकी सिरे से कोई नेकी न होगी, वो बिना हिसाबो मीज़ान जहन्नम में झौंक दिये जायेंगे। कुरआन करीम में है कि ऐसे लोगों के लिए तराजू नहीं रखी जायेगी। दूसरे वो अहले ईमान जिनकी बुराईयां नहीं होगी और बेशुमार नेकिया लेकर अल्लाह के सामने पेश होंगे। उन्हें भी हिसाबो-किताब के बगैर जन्नत में दाखिल कर दिया जायेगा।

चूंकि अम्बिया अलैहि० की दावत की कील तौहीद बारी तआला है। इसलिए इमाम बुखारी ने भी किताबुत्तौहीद पर अपनी किताब को खत्म किया है और दुनिया में इख्लास नियत के साथ आमाल का ऐतबार किया जाता है। इसलिए "इन्नमल आमालो बिन्नियात" से किताब का आगाज फरमाया और आखिरत में आमाल का वज़न किया जायेगा। और इस पर कामयाबी का दारोमदार होगा। इसलिए इस हदीस को आखिर में बयान फरमाया, नीज़ आगाह किया है कि कयामत के दिन ऐसे आमाल का वजन होगा, जो इख्लास नियत पर मब्नी होंगे। अल्लाह तआला से दुआ है कि वो हमें दुनिया में इख्लास की दौलत से मालामाल फरमाये और कयामत के दिन हमारी नेकियों का पलड़ा भारी कर दे। "यवमा ला यनफअू मालुं वला बनूना इल्ला मन अतल्लाहा बिकलबिन सलीमिन"

आज तारीख 12 रबीउल अव्वल 1417 हिजरी बमुताबिक 29 जुलाई 1996 ईसवी बरोज़ सोमवार बवक्त सहर "तजरीद बुख़ारी" के तर्जुमे और बरोज़ जुमेरात तारीख़ 10 मुहर्रमुलहराम 1919 हिजरी बमुताबिक 7 मई 1998 ईसवी को इसकी तालीक़ से फ़राग़त हुई।

अबू मुहम्मद अब्दुस्सत्तार अलहम्माद
मरकज तालीमुल कुरआन, नवाब कॉलोनी, मियां चून्नुं, पाकिस्तान

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन: +91-11-23253514, 23286551, 23244556
फैक्स: +91-11-23277913, 23247899
E-mail: ibsdelhi@del2.vsnl.net.in
islamic@eth.net
Website: www.islamicindia.co.in
www.islamicindia.in


ISBN 81-7231-921-5

Price Rs. 150.00